विहार-दर्पण

[विहार का सम्पूर्ण भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि विवरण]

लेखक

श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ विद्यालंकार

प्रकाशक

ग्रन्थमाला-कार्यालय

बाँकीपुर

प्रस्तावना

अपने देश से यदि हमें सच्चा प्रेम है, तो उसके विषय में जानकारी पाने की स्वाभाविक उत्कंठा हममें जागनी चाहिये। अपने देश-प्रेम के कारण हम देश के विषय में जानना चाहते हैं और देश का ज्ञान फिर हमारे देश-प्रेम को गहरा और स्थायी करता है।

इस दृष्टि से श्री गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ की यह कृति एक सच्ची देश-सेवा है। और वह सेवा ईमानदारी से की गयी है। गदाधरप्रसादजी को जाननेवाले उनकी लगन और उनके मेहनती स्वभाव से परिचित हैं। बिहार के विषय में जो जानकारी उन्होंने सुलभ रूप में जुटा दी है, वह बिहारी स्त्री-पुरुषों में अपने जनपद के लिये प्रेम तो जगायेगी ही, विद्वानों के लिये भी बड़े काम की वस्तु होगी। बारीकी से जाँचने पर इस पुस्तक की कुछ बातों में शायद संशोधन की आवश्यकता दिखायी दे, पर मनुष्य की कौन-सी रचना है जिसमें वैसी आवश्यकता नहीं होती? मुझे आशा है कि गदाधरप्रसादजी इस ग्रन्थ को क्रमशः अधिक प्रामाणिक बनाते जायेंगे और बिहार के सब लोग उन्हें इस काम में मदद देते रहेंगे। साथ ही मुझे विश्वास है कि इस कृति को देखकर भारत के दूसरे जनपदों के निवासियों को भी अपने-अपने जनपद के विषय में ऐसे ग्रन्थ प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिलेगी।

गदाधरप्रसादजी ने "बिहार" से अंगरेजी जमाने के बिहार का अर्थ ले लिया है। वास्तव में मैथिली, मगही और भोजपुरी बोलियों का समूचा क्षेत्र बिहार है। ग्रन्थ के अगले संस्करण में इस बात का भी ध्यान रखा जायगा तो और अच्छा होगा।

पटना
२५ मार्गशीर्ष १९९९ वि० } जयचन्द्र

दो शब्द

वर्षों के परिश्रम के बाद, आज इस पुस्तक को पाठकों के सामने रखने में मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। हमारी शिक्षा का यह बहुत बड़ा दोष है कि हम दूर-दूर देशों के इतिहास, भूगोल तो रटते हैं, पर अपने यहाँ की उन साधारण बातों की भी जानकारी नहीं रखते, जिनका हमारे जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। हम जिस प्रदेश में रहते हैं, वहाँ का ऐतिहासिक गौरव कैसा है, वहाँ किस-किस तरह के लोग रहते हैं, वहाँ के पशु-पक्षी कौन-कौन से हैं और हमारे किस काम के लायक हैं, वहाँ के भिन्न-भिन्न स्थानों की आबहवा कैसी है, वहाँ किस प्रकार की जमीन है, क्या-क्या उपजता है, वहाँ कौन-कौन-से पहाड़, नदी, झील, झरने आदि हैं, वहाँ के खनिज पदार्थ क्या-क्या हैं, कौन-कौन-से कारबार हैं, वहाँ गमनागमन की क्या सुविधा है, वहाँ शिक्षा की क्या हालत है, शासन की क्या व्यवस्था है, वहाँ कौन-कौन-से दर्शनीय स्थान हैं आदि-आदि विषय हमारे अच्छे से अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी बहुत कम जानते हैं।

अँगरेजी में इन विषयों की जानकारी के लिये भिन्न-भिन्न पुस्तकें और रिपोर्ट आदि हैं; पर उनमें कुछ तो अब अप्राप्य हैं और शेष में कुछ बहुत पुराने पड़ गये हैं और कुछ आसानी से मिलने लायक नहीं हैं। अब तक कोई एक ऐसी पुस्तक तो है ही नहीं जिसमें बिहार से सम्बन्ध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातें

दी गयी हों। सम्भवतः अन्य प्रान्तों के सम्बन्ध में भी वहाँ की किसी भाषा में ऐसी पुस्तक नहीं है। ऐसी अवस्था में इस ओर मैंने जो कुछ प्रयत्न किया है, उसमें जो त्रुटियाँ रह गयी हैं, उसके लिये उम्मीद है, विचारवान पाठक मुझे क्षमा करेंगे। मैंने तो अपने तईं जहाँ तक हो सका है इस पुस्तक के वर्णित विषय और आँकड़े प्रामाणिक और अप-टु-डेट बनाने की चेष्टा की है। फिर भी मैं इसे अपने इच्छानुरूप नहीं बना सका, इसका मुझे दुख है।

मैंने इस पुस्तक के लिखने में डा० बुकानन और जेनरल कनिंघम आदि की रिपोर्टों, डा० ग्रियर्सन के लिंग्विस्टिक सर्वे और विहार पीजेन्ट लाइफ, इम्पीरियल और डिस्ट्रिक्ट गजेटियरों, सेन्सस रिपोर्टों, एवं केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के के विभिन्न विभागों के हाल के वार्षिक-विवरणों तथा अन्यान्य उपयोगी ग्रन्थों से सहायता ली है जिसके लिये उनके लेखकों और सम्पादकों का मैं बहुत अनुगृहीत हूँ। श्री जयचन्द्र विद्यालंकार जी का भी अधिक आभारी हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय दे इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की कृपा कर सर्वसाधारण के सामने पुस्तक की प्रतिष्ठा बढ़ायी है। भारत सरकार के आरकोलॉजिकल डिपार्टमेन्ट ने अपने संग्रहीत चित्रों को छापने का अधिकार देकर तथा अन्याम्य मित्रों ने चित्र भेजकर जो सहायता की है, उसके लिये उन्हें अनेक धन्यवाद।

पाठकों की सुविधा के लिये प्रकाशक महाशय ने इसके भिन्न-भिन्न खंड भी अलग-अलग पुस्तक-रूप मे प्रकाशित किये हैं। प्रान्त का वर्णन 'हमारा विहार' नाम से अलग प्रकाशित हुआ है। अलग-अलग सोलहो जिलों का ब्योरा [illegible] सीरीज के रूप में छापा गया है जैसे 'पटना जिला-दर्पण', 'गया जिला-दर्पण' आदि। भाषा के विषय मे जो अध्याय लिखा गया है, वह भी 'विहार की भाषा-समस्या' नाम से अलग प्रकाशित हुआ है। इसी पुस्तक से संग्रह करके 'विहार के दर्शनीय स्थान' नामक पुस्तक भी तैयार की गयी है। इस तरह बहुत व्यय करके प्रकाशक महाशय ने इसके प्रचार की जो पूरी चेष्टा की है, उसके लिये वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

यदि इस पुस्तक से सर्वसाधारण को कुछ लाभ पहुँच सके, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

ग्राम बन्नी
पो० महेशखुँट (मुँगेर)
फाल्गुन कृष्ण पंचमी सं० १९९६

गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ

विषय-सूची

विहार-दर्पण

स्थिति, सीमा और विस्तार

विहार प्रान्त भारतवर्ष के पूरब भाग में २१°५८' और २७°३१' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°१९ और ८८°३२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसकी राजधानी पटना गंगा के किनारे २५°३७' उत्तरीय अक्षांश और ८५°१०' पूर्वीय देशान्तर पर है।

इस प्रान्त के उत्तर में नेपाल राज्य और बंगाल प्रान्त का दार्जिलिंग जिला है। पूरब में बंगाल के जलपाइगुरी, दिनाजपुर, मालदह, मुर्शिदाबाद, वीरभूम, बर्दवान, बाँकुरा और मेदिनीपुर के जिले हैं। दक्षिण में उड़ीसा प्रान्त के मयूरभंज, क्योंझर, बोनाई और गंगपुर के देशी राज्य हैं। पश्चिम में मध्यप्रान्त के जशपुर और सरगुजा के देशी राज्य तथा संयुक्तप्रान्त के मिरजापुर, बनारस, गाजीपुर, बलिया और गोरखपुर के जिले पड़ते हैं। उत्तर में पहाड़ और नदियाँ विहार प्रान्त को नेपाल से अलग करती हैं। जहाँ किसी तरह की प्राकृतिक सीमा नहीं है वहाँ खाई और स्तम्भ से सीमा का काम लिया गया है।

विहार प्रान्त थोड़ा-बहुत समानान्तर चतुर्भुज के रूप में है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ३३२

मील और पूरब से पच्छिम तक अधिक से अधिक चौड़ाई २८८ मील है। इसका क्षेत्रफल ६९,९५० वर्गमील और जनसंख्या ३,२५,५८,०५६ है। प्रान्त के अन्दर सिंहभूम जिले में दो छोटे-छोटे देशी राज्य हैं—सरायकेला और खरसावाँ।

प्राकृतिक बनावट

विहार प्रान्त प्राकृतिक रूप से दो या तीन मुख्य भागों में बँटा हुआ है। गंगा नदी पच्छिम से पूरब की ओर बहकर प्रान्त को दो भागों में बाँट देती है। उत्तरी भाग को उत्तर विहार और दक्षिणी भाग को दक्षिण विहार कहते हैं। लेकिन, दक्षिण विहार के अन्दर प्रायः छोटानागपुर कमिश्नरी और संथाल परगना नहीं गिना जाता है। इस भाग को अक्सर लोग छोटानागपुर की अधित्यका कहते हैं। इस तरह से विहार के तीन प्राकृतिक भाग हो जाते हैं।

फिर समतल भूमि और पहाड़ी भूमि के विचार से प्रान्त के दो भाग किये जाते हैं। उत्तर का भाग समतल भूमि है और दक्षिण का पहाड़ी भूमि। गंगा समतल भूमि होकर बहती है। गंगा और उसकी सहायक नदियों के बहाव से बनने के कारण इस भूमि को गंगा की घाटी या मैदान कहते हैं। इसके अन्दर गंगा के उत्तर का सारा हिस्सा और दक्षिण का थोड़ा-सा हिस्सा पड़ता है। दक्षिण में पच्छिम का भाग तो कुछ चौड़ा है, पर पूरब की ओर यह धीरे-धीरे सँकरा होता चला गया है। दक्षिण में शाहाबाद जिले का दो तिहाई भाग, लगभग सारा पटना जिला, गया जिले का नवादा सबडिविजन, मुंगेर सबडिविजन का अधिकांश भाग, सारा भागलपुर सबडिविजन और संथाल परगने का उत्तर तथा पूरब का थोड़ा-सा भाग

पड़ता है। इस भाग की ऊँचाई समुद्र-तल से ५०० फीट तक है। इस भाग में गंगा के उत्तर, चम्पारण जिले के उत्तर-पच्छिम कोने पर कुछ पहाड़ और जंगल हैं, बाकी सारा भाग समतल मैदान है; लेकिन गंगा के दक्षिण जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ नजर आती हैं। इस भाग में गंगा, सोन, सरयू, गण्डक आदि कई बड़ी-बड़ी नदियाँ बहती हैं। यह भाग बहुत हराभरा, सुन्दर और उपजाऊ है; इसलिये इसको "भारत का उद्यान" भी कहा जाता है।

दक्षिण की पहाड़ी भूमि को छोटानागपुर की अधित्यका कहते हैं। यह भाग पहाड़ों और जंगलों से भरा है। पहाड़ों में कितने ही सुन्दर झरने और जलप्रपात हैं। उत्तरी और पूर्वी हिस्सा कम ऊँचा है। बाकी हिस्से की ऊँचाई अधिक है। इसकी औसत ऊँचाई करीब २,००० फीट है। इस भाग में अधिक उपज नहीं होती है और यहाँ की आबादी बहुत कम है। लेकिन, इस भाग में बहुत तरह के खनिज पदार्थ तथा जंगली चीजें पायी जाती हैं। यहाँ बहुत-सी छोटी-छोटी पहाड़ी नदियाँ बहती हैं। यहाँ के निवासी अधिकतर आदिम जाति के लोग हैं।

पहाड़, झरने और जंगल

गंगा के उत्तर भाग में, चम्पारण जिले के उत्तर-पूरब कोने पर दून और सोमेश्वर की पहाड़ियाँ करीब ३६४ वर्गमील में फैली हुई है। सोमेश्वर की सबसे ऊँची चोटी समुद्रतल से २,८८४ फीट ऊँची है। इसमें भिखनाठोरी, कापन और हरहा घाटियाँ हैं, जिनसे होकर नेपाल जाने के रास्ते हैं। यहाँ की पहाड़ियाँ जंगल से भरी हैं। गंगा के उत्तर पहाड़ का और कहीं नाम-निशान नहीं है।

गंगा के दक्षिण, गंगा-किनारे के अधिकांश भागों में कम पहाड़ हैं; मगर इसके दक्षिण तो पहाड़ ही पहाड़ नजर आते हैं।

ये पहाड़ घने जंगलों से भरे हैं, जहाँ बड़े-बड़े जंगली जानवर पाये जाते हैं। शाहाबाद जिले के दक्षिण में कैमूर की पहाड़ियाँ हैं जो करीब ८०० वर्गमील में फैली हुई हैं। इसमें दो सुन्दर जलप्रपात हैं। रोहतासगढ़ के पास इसकी ऊँचाई १४९० फीट है। पटना जिले के दक्षिण-पूरब कोने पर राजगिरि पहाड़ ३० मील तक फैला हुआ है। यहाँ कितने ही गर्म और ठंढे जल के झरने हैं। इसकी सबसे ऊँची चोटी १४७२ फीट ऊँची है। गया जिले के दक्षिण में बहुत-सी पहाड़ियाँ हैं। सबसे ऊँची दुर्वाशा पहाडी २,२०२ फीट ऊँची है। महावर और बराबर पहाड़ियाँ भी मुख्य हैं। मुंगेर जिले में खड़गपुर की पहाड़ी प्रसिद्ध है। इसमें कितने ही झरने हैं। यहाँ के पंचकुमारी जलप्रपात और झील के दृश्य बहुत ही सुन्दर हैं। मुंगेर के दक्षिण में भी पहाडियाँ हैं, जिनकी ऊँचाई १८०० फीट से भी अधिक है। भागलपुर के दक्षिण में जहाँ-तहाँ छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ मिलती हैं; इनमें मंदार पर्वत बहुत प्रसिद्ध है। सुलतानगंज और कहलगाँव में गंगा के बीच पहाड़ के दृश्य बहुत सुन्दर हैं। संथाल परगने की राजमहल पहाडी जिले की उत्तरी सीमा से लेकर करीब दक्षिणी सीमा तक चली गयी है। इसकी सबसे ऊँची चोटी करीब २००० फीट ऊँची है। यह जंगलों से भरा है। यहाँ कितने ही झरने हैं, जिनमें मोती झरना प्रसिद्ध है। छोटानागपुर की कमिश्नरी तो पहाड़ी भूमि ही है। हजारीबाग जिले में बहुत-सी ऐसी पहाड़ियाँ हैं जो दो हजार से करीब साढ़े चार हजार फीट तक ऊँची हैं। यहाँ की पारसनाथ की पहाड़ी बिहार में सबसे ऊँची पहाड़ी मानी जाती है। इसकी ऊँचाई ४४८१ फीट है। जैन धर्म के सम्बन्ध से यह सारे भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ कितने ही गर्म जल के झरने है। राँची जिले में पहाड़ की ऊँचाई ३,६१५ फीट तक है। राँची जिले का हुंड्रू जलप्रपात प्रान्त का सब-

से बड़ा और प्रसिद्ध जलप्रपात है जो ३२० फीट की ऊँचाई से गिरता है। दूसरा दासो जलप्रपात ११४ फीट की ऊँचाई से गिरता है। पलामू जिले में नेटारहाट की चोटी (३६६६ फीट) सबसे ऊँची है। मानभूम जिले में दलमा और सिंहभूम में बुंदा की पहाड़ी सबसे ऊँची है।

विहार प्रान्त के अन्दर कुल ९,५२९ वर्गमील में जंगल हैं। इनमे १,३८४ वर्गमील जंगल खास सरकार के इन्तजाम में है जिसे रिज़र्व्ड फारेस्ट कहते हैं। १,०५७ वर्गमील सरकार द्वारा सरक्षित जंगल है, इसे प्रोटेक्टेड फारेस्ट कहते हैं। २८८ वर्गमील अन्य तरह के सरकारी जंगल हैं तथा ६,८०० वर्गमील ऐसे जंगल हैं जो सरकार के इन्तजाम में या सरकार द्वारा संरक्षित नही हैं। ये जंगल छोटानागपुर और संथालपरगने तथा चम्पारण के कुछ हिस्से में हैं।

नदियाँ

विहार प्रान्त की नदियों को हम तीन समूहों में बाँट सकते हैं। एक तो उत्तर विहार की नदियाँ हैं जो गंगा की सहायक या उपसहायक के रूप में इससे बायें किनारे पर आकर मिलती हैं। दूसरे समूह में वे नदियाँ हैं जो दक्षिण विहार में गंगा की सहायक या उपसहायक के रूप में इससे दाहिने किनारे पर आकर मिली हैं। तीसरे समूह में छोटानागपुर की अधित्यका की नदियाँ हैं। पहले समूह की नदियों में सरयू, गण्डक, छोटी या बूढ़ी गण्डक, बागमती, बया, कमला, तिलयुगा, कोशी, महानन्दा, और पनार मुख्य हैं। इन सभी नदियों मे नावें चलती हैं।

गंगा—गंगा प्रान्त की सबसे मुख्य और प्रसिद्ध नदी है। यह पच्छिम से पूरब की ओर बहती हुई शाहाबाद जिले के

अन्दर चौसा के पास बिहार की भूमि को छूती है। यहीं पर कर्मनाशा नदी इससे दायीं ओर से आ मिली है। आगे बढ़ने पर उत्तर की ओर से सरयू नदी और दक्षिण की ओर से सोन नदी इससे मिलती है। मुजफ्फरपुर और सारन जिले की सीमा पर सोनपुर के पास गंडक नदी बायीं ओर गंगा में मिली है। यहाँ हरिहरक्षेत्र का मेला लगता है जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा मेला है। इसी के पास गंडकी या मही नदी गंगा में मिलती है। पटना जिले में फतुहा के पास दायीं ओर से पुनपुन नदी मिली है। दरभंगा के समस्तीपुर सबडिविजन में उत्तर की ओर से बया नदी मिलती है। मुंगेर जिले में दक्षिण की ओर से फलगू, क्यूल और मणि नदियाँ तथा उत्तर की ओर से छोटी गण्डक गंगा में प्रवेश करती हैं। भागलपुर जिले में सुलतानगंज और कहलगाँव के पास गंगा के बीच पहाडियाँ हैं जहाँ का दृश्य बहुत ही मनोरम है। पूर्णिया जिले में उत्तर की ओर से कोशी नदी गंगा में मिलती है। फिर थोडी ही दूरी पर काढागोला के पास नगर और लिवरी नाम की दो छोटी नदियाँ बायीं ओर से इसमें मिली हैं। इसके बाद गंगा दक्षिण की ओर झुक गयी है। कुछ दूर चलने पर यह संथालपरगने की पूर्वी सीमा को छोड़कर समुद्र से मिलने के लिये बंगाल में प्रवेश करती है। गंगा के किनारे बक्सर, पटना, बाढ़, मुंगेर, भागलपुर और राजमहल प्रसिद्ध स्थान हैं। गंगा में बड़ी-बड़ी नावें और जहाज चलते हैं। पटने में दीघाघाट से बंगाल में ग्वालन्दो तक कार कम्पनी के बड़े-बड़े जहाज आते-जाते हैं। गंगा में दीघाघाट से बक्सर तक और सरयू में बरहज तक एक छोटा जहाज जाता है। गंगा नदी इस प्रान्त में करीब ३५० मील तक बहती है।

सरयू (घाघरा)—सरयू नदी का नाम घाघरा और देहवा

भी है। यह संयुक्तप्रान्त से आती हुई विहार प्रान्त के अन्दर सारन जिले की सीमा पर ६० मील तक बहती है। छपरा शहर इसके पास ही है। इस प्रान्त में झरही, खनवाँ और दाहा (सुंडी) इसकी सहायक नदियाँ हैं। यह गंगा में गिरती है।

गण्डकी या मही—यह एक छोटी नदी है जो सारन जिले में बहती हुई सोनपुर के पास गंगा में मिलती है। धनै, गंग्री और खटसा इसकी सहायक धाराएँ हैं।

बड़ी गण्डक—गण्डक प्रान्त की एक मुख्य नदी है। इसका पुराना नाम नारायणी, शालिग्रामी और सदानीरा भी है। नेपाल में यह जिस स्थान से निकलती है उसको लोग सप्तगंडकी कहते हैं; क्योंकि यहाँ सात धाराओं के मेल से गडक नदी बनी है। यह चम्पारण, सारन और मुजफ्फरपुर जिले की सीमा पर बहती हुई १९२ मील की यात्रा तय कर सोनपुर के पास गंगा में मिलती है। यहाँ बी. एन. डब्ल्यू. रेलवे का इसपर २,१७६ फीट लम्बा पुल है। पंचनद, सोनाह, लालबेगी, रोहुआ, मनौर और भवसा इसकी सहायक नदियाँ हैं।

छोटी या बूढ़ी गण्डक—यह नदी नेपाल की पहाड़ी से निकलकर चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और मुंगेर जिला होती हुई गोगरी के पास गंगा में मिल गयी है। शुरू में यह नदी हरहा कहलाती है। कुछ लोग इसे सिकरान भी कहते हैं। धनौती, उरिया, धोरम, पंडई, जमबारी और बालान इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

बया—बया गण्डक से निकलकर मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिला होती हुई समस्तीपुर सबडिविजन के धनेशपुर गाँव में गंगा से मिलती है।

बागमती—यह नदी नेपाल से निकलकर चम्पारण,

मुजफ्फरपुर, दरभंगा और मुंगेर जिले होकर बहती हुई चौथम के पास तिलयुगा में मिल जाती है। लालबकेया, भुरंगी, लखनदेई और अधवारा इसकी सहायक नदियाँ हैं। अधवारा को छोटी बागमती भी कहते हैं।

तिलयुगा (घघरी)—यह नदी नेपाल की तराई से निकलकर दरभंगा, मुंगेर और भागलपुर जिले होकर बहती हुई कोशी नदी में मिल जाती है। बागमती, करेह, बती, बालान, धिमरा, दाउस और कटना इसकी सहायक नदियाँ हैं। कटना नदी के द्वारा यह तलवा, परवान, धूसन और लोरन नदियों का जल पाती है। तिलयुगा नदी का आखिरी हिस्सा ही घघरी कहलाता है।

कोशी—कोशी प्रान्त की एक मुख्य नदी है। यह नेपाल में सात धाराओं के मेल से बनी है। इस स्थान को सप्तकौशिकी कहते हैं। यह भागलपुर और पूर्णिया जिले की सीमा के पास करीब ८४ मील तक बहती हुई अन्त में गंगा से मिल गयी है। संगम के पास बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का इसपर एक बड़ा पुल है। यह नदी अपनी धारा बराबर बदलती रहती है। इसकी एक पुरानी धारा को काला कोशी कहते हैं। कोशी की मुख्य सहायक नदी घघरी है।

महानन्दा—महानन्दा या महानदी दार्जिलिंग जिले की पहाड़ी से निकलकर पूर्णिया जिले में बहती हुई बंगाल के मालदह जिले को चली जाती है। डाँक, पिटानू, नागर, बालसन, चेंगा, बूढ़ीगंगी, मेची और केकई इसकी सहायक नदियाँ हैं। पूर्णिया में बहनेवाली पनार नदी पूर्णिया से बाहर होने पर इससे मिली है।

दक्षिण विहार की नदियों में सोन, पुनपुन, फलगू, सकरी, कर्मनाशा, काओ, क्यूल, अजय, मणि, चानन, मोर, ब्राह्मणी,

बसलोई और गुमानी मुख्य हैं। इनमें केवल सोन और पुनपुन में छोटी-छोटी नावें चल सकती हैं। बाकी नदियाँ गर्मी में सूख जाया करती हैं।

सोन—सोन दक्षिण विहार की सबसे बड़ी नदी है। यह मध्यभारत की पहाड़ी से निकलकर विहार प्रान्त के अन्दर शाहाबाद जिले की दक्षिणी और पूर्वी सीमा पर १४५ मील तक बहकर मनेर के पास गंगा में मिलती है। इसके दायें किनारे पर पलामू, गया और पटना जिले हैं। डेहरी और कोयलवर में इस नदी पर ई० आई० आर० के बड़े पुल हैं। डेहरी का पुल हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा पुल है। दुनिया के पुलों में इसको दूसरा स्थान दिया जाता है। सोन में मध्यभारत के २१,३०० वर्गमील के पहाड़ी भाग का पानी आता है; इसलिये वर्षा होने पर इसमें अचानक भयंकर बाढ़ आ जाती है। इसका पुराना नाम सोणभद्र और हिरण्यबाहु है। पलामू जिले में उत्तर कोयल नदी इससे मिलती है। सोन से नहर निकाली गयी है।

पुनपुन—यह नदी पलामू जिले की उत्तरी सीमा के पास से निकलकर गया और पटना जिले होकर फतुहा के पास गंगा में मिलती है। ढावा, बाताने, मदार, मोरहर और दरधा इसकी सहायक नदियाँ हैं। पुनपुन पवित्र नदी समझी जाती है। गया जानेवाले यात्री यहाँ अपना सिर मुड़ाते और स्नान करते हैं।

फलगू—यह नदी हजारीबाग के पूर्वी भाग से निकलकर गया, पटना और मुंगेर जिले होते हुए गंगा में मिली है। फलगू नदी मोहिनी (मोहान) और नीलाञ्जन (लीलाजान) नदियों के मिलने से बनी है। आगे चलकर इसकी फिर दो धाराएँ हो गयी हैं। सोना और कत्तारा ये दोनों फिर मैथुन में मिल गयी हैं। यमुना और धनियैन के मिलने पर इसका नाम कुलुहर हो गया

है। गया में फलगू के किनारे हिन्दू लोग पितरों को पिंड देते हैं।

कर्मनाशा—यह कैमूर पहाड़ी के दक्षिण से निकलकर चौसा के पास गंगा में मिलती है। गढ़वत और दुर्गावती इसकी सहायक नदियाँ हैं। दुर्गावती अपने साथ कुदरा और सूआरा का पानी लाती है। कर्मनाशा को हिन्दू लोग अपवित्र समझते हैं। कहते हैं कि आकाश में उल्टे लटके हुए राजा त्रिशंकु के मुँह की लार से यह नदी बनी है।

काओ—यह शाहाबाद जिले से निकलकर वहीं गायघाट के पास गंगा में मिल जाती है।

सकरी और पंचाना—गया जिले से निकली हुई पाँच धाराओं के एक साथ मिलने पर पंचाना नदी बनती है। विहार शहर इसी के किनारे है। यह नदी सकरी नदी में मिल गयी है, जो हजारीबाग से निकलकर गया और मुंगेर जिले में बहती है।

क्यूल—यह हजारीबाग जिले से निकलकर मुंगेर जिले में बहती हुई सूर्यगढ़ा के पास गंगा में मिल गयी है। बरनर, अलई, अंजन, हलहोहर इसकी सहायक धाराएँ हैं।

अजय—कई धाराओं के मिलने से यह नदी बनी है जो मुंगेर और संथालपरगना होकर बहने के बाद बंगाल के बर्द्वान जिले में गंगा से मिल गयी है।

मणि—यह मुंगेर जिले में खड़गपुर की पहाड़ी से निकलकर वहीं घोरघाट में गंगा से मिलती है।

चानन—यह देवघर के पास से निकलकर भागलपुर जिला होकर बहती हुई अपने साथ कई धाराओं के जल को लेकर गंगा में गिरती है।

मोर, ब्राह्मणी, बंसलोई और गुमानी—ये नदियाँ संथाल-परगने की पहाड़ियों से निकलकर जिले से बाहर होकर पूरब की ओर गंगा में मिल गयी हैं।

छोटानागपुर की अधित्यका की मुख्य नदियाँ उत्तर-कोयल, दक्षिण-कोयल, सुवर्णरेखा, दामोदर, बराकर, शंख और कासाई हैं। कनहर पलामू जिले की पच्छिमी सीमा पर बहती है। उत्तर और दक्षिण कारो, रोरो, देव और कोइना सिंहभूम जिले की छोटी-छोटी नदियाँ हैं। धर्मकिशोर मानभूम जिले में बहती है। सकरी, मोहिनी और नीलाजंन हजारीबाग जिले से निकलकर गया जिले को जाती हैं जिनका वर्णन पहले हो चुका है।

उत्तर-कोयल—उत्तर-कोयल राँची जिले के पूर्वी भाग से निकलकर पलामू जिले के मध्य-भाग होकर बहती हुई उत्तरी सीमा पर सोन से मिल गयी है। इसकी लम्बाई करीब पौने दो सौ मील है। औरंगा और अमानत इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

दक्षिण-कोयल—दक्षिण-कोयल राँची जिले से निकलकर सिंहभूम जिला होती हुई प्रान्त से बाहर जाकर शंख नदी में मिल गयी है। कारो, चत, बोनाय, परास और कोइना इसकी सहायक नदियाँ हैं।

सुवर्णरेखा—यह राँची जिले से निकलकर मानभूम जिला होकर बहती हुई प्रान्त से बाहर मयूरभंज और मेदिनीपुर जिले को जाती है। खरकै, कोकरो, काँची और करकरी इसकी सहायक नदियाँ हैं। हुंड्रू जलप्रपात इसी नदी से बना है।

दामोदर—इसका दूसरा नाम देवनद भी है। यह पलामू जिलेसे निकलकर हजारीबाग और मानभूम जिले होकर बहती हुई बंगाल जाकर हुगली नदी में मिल गयी है। प्रान्त के अन्दर

इसकी सहायक नदियाँ गरही (टंडवा), हहरो, नैकारी, भारामरह, भेर, कोनार, खंजरो, यमुनिया, कतरी, गोवई और बराकर हैं।

बराकर—यह हजारीबाग जिले से निकलकर मानभूम जिले की सीमा पर बहती हुई दामोदर नदी में मिल गयी है। लंरूज, गोखान, अकटा, किसको, बरेतो, अरगा, उसकी, बरहकथा और खुदिया इसकी सहायक धाराएँ हैं।

शंख—यह राँची जिले के उत्तरी भाग से निकलकर दक्षिण की ओर बहती है। प्रान्त से बाहर दक्षिण-कोयल के मिलने पर सम्मिलित धारा का नाम ब्राह्मणी हो गया है। शंख की सहायक नदियाँ हैं—पलमन्द और बोमपै।

कासाई—यह मानभूम जिले से निकलती है और वहीं से बंगाल के बाँकुरा जिले में प्रवेश कर जाती है।

वैतरणी—यह सिंहभूम जिले की दक्षिणी सीमा पर बहती है। कुछ लोग इसे पुराण-प्रसिद्ध वैतरणी नदी बताते हैं।

जलवायु और स्वास्थ्य

विहार प्रान्त की जलवायु साधारणतः शुष्क और स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ की मुख्य तीन ऋतुएँ हैं—जाड़ा, गर्मी और बरसात। बैसाख-जेठ गर्मी के, सावन-भादो वर्षा के और पूस-माघ जाड़े के मुख्य महीने हैं। गंगा के मैदान और छोटानागपुर की अधित्यका की जलवायु में काफी फर्क पड़ता है। गर्मी के दिनों में गंगा के मैदान में बहुत गर्मी पड़ती है। यहाँ का तापमान इन दिनों साधारणतः करीब १००°-०५° रहता है। पर कभी-कभी ११०°-१४° तक चला जाता है। पर, छोटानागपुर की अधित्यका में इस समय साधारणतः ९५°-१००° तक गर्मी रहती है। हाँ, कभी-

कभी इससे चार-पाँच डिगरी अधिक भी गर्मी पड़ती है। जाड़े के दिनों में गंगा के मैदान में साधारण जाड़ा पड़ता है; मगर छोटानागपुर की अधित्यका में काफी जाड़ा पड़ता है। यहाँ अक्सर रात में पाला पड़ा करता है और बाहर रखा हुआ पानी कभी-कभी जम-सा जाता है। प्रान्त के अन्दर वर्षा सबसे अधिक पूर्णिया में होती है। यहाँ साल में करीब सत्तर-पचहत्तर इंच तक पानी बरसता है। हिमालय की निकटता के कारण चम्पारण के उत्तरी भाग में भी खूब वर्षा होती है। गंगा के मैदान की उत्तरी सीमा के पास साल में ५० से ५५ ईंच तक वर्षा होती है, उसी तरह छोटानागपुर की अधित्यका में भी करीब इतनी ही वर्षा होती है। हाँ, किसी-किसी साल इन स्थानों में ६०" भी वर्षा हो जाती है। मगर, प्रान्त के मध्य-भाग में ४० से ५० ईंच तक वर्षा होती है। हवा साधारणतः पूर्वी और पच्छिमी बहती है। पूर्वी हवा तर और पच्छिमी शुष्क रहती है। प्रान्त में पूर्णिया जिला और चम्पारण का उत्तरी भाग बहुत अस्वास्थ्यकर समझा जाता है। उत्तर भागलपुर में भी कोशी के पास का भाग अस्वास्थ्यकर है। राँची, राजगृह, पुरुलिया, देवघर, कोयलबर (शाहाबाद और सिमलतला (मुंगेर) आदि स्थान स्वास्थ्य के लिये लाभदायक समझे जाते हैं।

प्रान्त के अन्दर अंधों की संख्या ४२,२३० बहरे-गूंगों की २१,३५२ कोढ़ियों की १३,४३४ और पागलों की ६,८२७ है। अंधों को छोड़कर बाकी रोगियों में पुरुषों की संख्या स्त्रियों की संख्या से कहीं अधिक है। मुजफ्फरपुर, गया, पुरुलिया और देवघर और लोहरदगा में कुष्टाश्रम हैं। शहरों के अन्दर बड़े-बड़े अस्पताल हैं। पटने में एक बहुत बड़ा अस्पताल है जहाँ प्रायः दूसरे-दूसरे प्रान्तों के भी आदमी इलाज के लिये आते हैं। इस

अस्पताल के साथ एक मेडिकल कॉलेज है। यहाँ 'रेडियम इन्सटिच्यूट' भी है जो सन् १९२८ में राँची से यहाँ लाया गया है। पटने में एक आयुर्वेदिक स्कूल और एक तिब्बी स्कूल है जहाँ यूनानी चिकित्सा-प्रणाली सिखायी जाती है। एक-दो होमियो-पैथिक स्कूल भी हैं। प्रान्त के अन्दर शहरों और देहातों में १९३५-३६ में ६०४ अस्पताल थे। प्रायः हर थाने में अब कम से कम एक अस्पताल खुल गया है। इटकी (राँची) में क्षय-रोग का एक अस्पताल है। सन् १९३५-३६ में यहाँ १३२ रोगी थे। रोगियों की संख्या बढ़ रही है; पर जगह की यहाँ बहुत कमी है। राँची में यूरोपियनों के लिये एक पागलखाना है जिसमें तमाम उत्तर भारत के रोगी आते हैं। सन् १९३५-३६ में यहाँ २०६ रोगी थे। राँची के हिन्दुस्तानी पागलखाने में उस साल १४२८ रोगी थे। इस पागलखाने में करीब पौने तीन सौ स्त्री-रोगियों की भी जगह है। पटना, बाढ़, बिहार, गया, राँची, हजारीबाग, चक्रधर-पुर, बेतिया, छपरा, मुंगेर और भागलपुर में जनानी अस्पताल हैं।

जानवर

गंगा के दक्षिण भाग की अपेक्षा उत्तर भाग में मवेशियों की दशा अच्छी है। उत्तर भाग के मवेशी साधारणतः हृष्ट-पुष्ट और कद में बड़े होते हैं। इनमें भी पूर्वी भाग की अपेक्षा पच्छिमी भाग के पशु अच्छे हैं। तिरहुत मवेशियों के लिये बहुत दिनों से प्रसिद्ध है। यहाँ चारा भी काफी मिलता है। गंगा के दक्षिण, गंगा के पास के भाग में पशुओं की दशा कुछ अच्छी है। यहाँ भी पूर्वी भाग की अपेक्षा पच्छिमी भाग के पशु अच्छी हालत में हैं। छोटानागपुर की अधित्यका के पशु

तथा गंगा के दक्षिण के पूर्वी भाग के तथा पूर्णिया के पशु प्रायः कमजोर और कद में नाटे होते हैं। इन भागों में कहीं-कहीं लोग भारी बोझ की गाड़ी में तीन बैल जोतते हैं। गंगा के उत्तरी भाग में मिट्टी मुलायम होने के कारण हल में केवल बैल जोते जाते हैं, भैंसे नहीं। मगर, दक्षिणी भाग में बैल के अलावा भैंसे भी काफी तादाद में हल में जोते जाते हैं। उत्तरी भाग में भैंस केवल दूध के लिये पाली जाती है। इसके पाड़े (काड़े) बिक्री होकर दक्षिणी भाग में चले आते हैं। पूर्णिया जिले में जहाँ मुसलमानों की आबादी अधिक है, हल मे गायें जोतने की भी चाल है। राँची जिले में भी आदिम जाति के लोग गाय को हल में जोतते हैं। ये लोग, खासकर मुंडा जाति के लोग, दूध के लिये गाय नहीं पालते; गाय का दूध पीना वे पाप समझते हैं। उनका कहना है कि दूध गाय के बच्चे के लिये छोड़ देना चाहिये। हजारीबाग और राँची मे भैंस पालने और उसकी नस्ल बढ़ाने की चाल नहीं है। वहाँ लोग हल में भैंसे कम जोतते है। यहाँ भैंसे बाहर से मँगाये जाते हैं। पालतू जानवरों में हाथी, घोड़ा, बकरी, भेंड़, गधा, सूअर आदि हैं। सूअर डोम, मुसहर आदि तथाकथित छोटी जाति के लोग पालते हैं। गड़ेरिये भेंड़ पालकर उनके ऊन से कम्बल तैयार करते हैं।

मवेशियों के इलाज के लिये बिहार तीन भागों (Range) में बाँट दिया गया है—उत्तर बिहार, मध्य बिहार और छोटानागपुर। सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर बिहार के अन्दर छपरा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, सीतामढ़ी, लहेरियासराय, मोतिहारी, बेतिया, बेगूसराय, सुपौल, सीवान, हाजीपुर, समस्तीपुर, मधुबनी और बगहा में; मध्यबिहार के अन्दर मुंगेर, दुमका, बाँकीपुर, गया, आरा, हजारीबाग, भागलपुर, दानापुर, गिरिडीह, हिरनपुर

और जमुई में तथा छोटानागपुर के अन्दर पुरुलिया, राँची, धनबाद और जमशेदपुर में पशु-अस्पताल हैं। कुछ डाक्टर घूम-घूमकर भी इलाज करते हैं। पटने में जानवरों का इलाज करना सिखाने के लिये एक कालेज है। यहाँ इंगलैण्ड के साँढ़ से एक नयी जाति की गाय पैदा की गयी है। पशुओं की नस्ल सुधारने की प्रान्त के कितने ही स्थानों में चेष्टा हो रही है। विहार प्रान्त के अन्दर सन् १९३० में मवेशियों की संख्या इस प्रकार थी—साँढ़ १,२८,२००; बैल ५७,७९,४०९; गाय ४७,०७,४६० ; बाछा-बाछी ३६,८४,३६५ ; भैंसा ८,९६,४३७; भैंस १५,६१, ४७३; पाड़ा-पाड़ी १०,५५,७७१; भेंड़ १०,७५,३२२; बकरियाँ ५१,४१, ९६४; घोड़ा-घोड़ी १,९१,५४४; गधा ३१,४०५ ; खच्चर ८६६ और ऊँट ३५१।

गंगा के उत्तर भाग में पूर्णिया और चम्पारण के कुछ हिस्सों को छोड़ कहीं जंगल या पहाड़ नहीं हैं ; इसलिये जंगली जानवर यहाँ बहुत ही कम पाये जाते हैं। लेकिन, दक्षिण भाग के सभी जिलों में बड़े-बड़े जंगली जानवर मिलते हैं। छोटा-नागपुर तो पहाड़ी और जंगली भाग ही है। वहाँ बाघ, चीते, भालू, भेड़िये, सूअर आदि काफी तादाद में पाये जाते हैं। हर साल पचासों आदमी और सैंकड़ों-हजारों पशु इनके शिकार होते हैं । जंगली हाथी अब कहीं नहीं पाया जाता।

बड़ी-बड़ी नदियों में घड़ियाल, सोंस, बोचा (मगर) आदि जलचर जीव पाये जाते हैं। कोशी, घघरी आदि नदियों में कितने ही आदमी बोचे के शिकार होते हैं। बड़ी नदियों और तालाबों में मछलियाँ अधिक पायी जाती हैं।

जंगली और पालतू पक्षी भी यहाँ बहुत तरह के पाये जाते हैं।

इतिहास

विहार का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण इतिहास है। यह प्रान्त सभी कालों में इस देश के अन्दर अपना एक विशेष स्थान रखता आया है। प्रागैतिहासिक काल में भी, जिसका वर्णन हमें वैदिक और पौराणिक साहित्य एवं रामायण और महाभारत से मिलता है, इस प्रान्त की धवल कीर्ति चारों ओर फैली थी। दूसरे प्रान्तवासियों ने मुक्तकंठ से बहुत ठीक ही इस बात को स्वीकार किया है कि भारत के किसी भी प्रान्त का अतीत विहार की भाँति ज्योतिर्मय और शानदार नहीं है। सच पूछिये तो विहार का प्राचीन इतिहास ही भारत का इतिहास है। अत्यन्त प्राचीन काल में भी, जिस समय का कोई वर्णन मिलता है, विहार का स्थान सर्वश्रेष्ठ रहा है। भारत के प्राचीनतम राज्यों में विहार के विदेह, लिच्छवि, अंग और मगध के राज्य थे, जिनका प्रबल प्रताप सर्वत्र छाया था और जिनकी धाक सभी मानते थे। इधर भी ऐतिहासिक युग के आरम्भ से लेकर मुसलमानों के आने तक अर्थात् हजार दो हजार वर्षों तक भारत का राजनीतिक केन्द्र मगध ही रहा।

विदेह राज्य—विहार में पहले पहल आर्यों का विस्तार मिथिला में हुआ। शतपथ ब्राह्मण से पता चलता है कि आर्य लोग सरस्वती नदी के तीर से माधव विदेघ के नेतृत्व में पूरब की ओर बढ़ते हुए सदानीरा (वर्तमान गण्डक) नदी को पार कर मिथिला पहुँचे। लिखा है कि अग्निदेव उनके आगे-आगे चलते थे। इससे मालूम होता है कि आर्य लोग जंगलों में आग लगाकर उन्हें साफ करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़े थे। मिथिला पहुँचकर उन लोगों ने एक समृद्धिशाली राज्य की स्थापना की। सदानीरा के पच्छिम का भाग उस समय कौशल देश के नाम से प्रसिद्ध था।

पुराणों में लिखा है कि इक्ष्वाकु के पुत्र निमि थे जो पीछे विदेह कहलाये। इन्होंने ही विदेह राज्य की स्थापना की और इन्हीं के कारण इनके वंश का नाम विदेह-वंश पड़ा। इनके पुत्र मिथि थे जिन्हें लोग जनक भी कहते थे। इन्हीं मिथि के नाम पर इस प्रदेश का नाम मिथिला और राजधानी का नाम मिथिला नगर पड़ा। पीछे मिथिला का नाम तीरभुक्ति या तिरहुत भी पड़ा। विदेहवंश के लोग पीछे अपने नाम के आगे जनक शब्द लगाने लगे और यह कुल की उपाधि हो गया। मिथि या जनक के पुत्र नन्दिवर्द्धन हुए। इसके बाद क्रम से सुकेतु, देवरात, बृहद्रथ, महावीर्य, सत्यधृति, धृष्टकेतु, हर्यश्व, मरु, प्रतिबंधक, कृतरथ, कृति, विवुध, महाधृति, कृतिरात, महारोमा, सुवर्णरोमा, ह्रस्वरोमा और सीरध्वज हुए। सीरध्वज बड़े प्रसिद्ध राजा हुए। इन्हें लोग विशेषतः जनक के ही नाम से जानते हैं। इन्हीं की लड़की जानकी या सीता हुई जिनका विवाह अवध-नरेश रामचन्द्रजी से हुआ था। सीरध्वज के एक भाई कुशध्वज थे। सीरध्वज जनक केकय देश के राजा अश्वपति के समकालीन थे। ये बहुत बड़े विद्वान, तत्त्वदर्शी और आत्मज्ञानी हुए। जनक के दरबार में सारे भारत के खासकर कोशल, कुरु और पाँचाल आदि देशों के बड़े-बड़े विद्वान्, पंडित, ऋषि, महर्षि आया-जाया करते थे। इनके दरबारी पंडितों में याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी गार्गी और मैत्रेयी के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। याज्ञवल्क्य ने ही शुक्ल यजुर्वेद के संकलन का काम किया था। महाभारत के अनुसार शतपथ ब्राह्मण और वाजसनेयी संहिता की रचना इन्होंने ही की।

सीरध्वज के बाद इस वंश के ३३ राजे हुए जिनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं—भानुमान, शतद्युम्न, शुचि, उर्ज्जवह, सत्यध्वज, कुनि, अंजन, ऋतुजित, अरिष्टनेमि, श्रुतायु, सूर्याश्व, संजय,

क्षेमारि, अनेना, मीनरथ, सत्यरथ, सत्यरथी, उपगु, श्रुत, शाश्वत, सुधन्वा, सुभाष, सुश्रुत, जय, विजय, ऋत, सुनय, वीतहव्य, संजय, क्षेमाश्व, धृति, बहुलाश्व और कृति। कृति के बाद इस राजवंश का अन्त हुआ और विदेह राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। काशी के राजाओं ने बराबर इसपर चढ़ाई कर इसे और भी तहस-नहस कर डाला।

वृज्जिसंघ—विदेह राजवंश के अन्त होने के साथ-साथ मिथिला नगरी से कुछ ही दूरी पर एक दूसरा समृद्धिशाली राज्य-संघ कायम हुआ। इसे वृज्जिसंघ कहते हैं। इसमें कई छोटे-छोटे राज्य सम्मिलित थे, जिनमें विदेह और लिच्छवि प्रमुख थे। संघ की राजनीतिक कार्यशीलता का केन्द्र वैशाली नगर हुआ जिसे लोग आज बनिया-बसाढ़ के नाम से जानते हैं। संघ-शासन कायम होने के बहुत दिन पहले से ही वैशाली एक छोटा-सा राज्य था। रामायण में लिखा है कि इक्ष्वाकु के एक लड़के विशाल ने विशाल नगर बसाया जो कुछ दिनों के बाद वैशाली नाम से मशहूर हुआ। विशाल के वंश में क्रम से हेमचन्द्र, सुचन्द्र, धूम्राश्व, सृञ्जय, सहदेव, कुशाश्व, सोमदत्त, काकुष्ठ और सुमति नाम के राजे हुए। बहुत दिनों के बाद भगवान बुद्ध के जीवनकाल में वृज्जियों का संघ-शासन बहुत ही शक्तिशाली हो गया था।

अंग—अंग राज्य महाराज अंग द्वारा बसाया बताया जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण में राजा अंगवैरोचन के अभिषेक का उल्लेख हुआ है। वायुपुराण से मालूम होता है कि इस देश को उत्तर में गंगा नदी मिथिला से और पश्चिम में क्यूल नदी कीकट अर्थात् मगध देश से अलग करती थी। दक्षिण में खड़गपुर की पहाड़ी और पूरब में राजमहल तक इसका विस्तार था। सम्भवतः क्यूल को लोग पहले चम्पा नदी कहते थे। अंग राज्य

की राजधानी चम्पा या चम्पामालती नगरी थी। वर्तमान भागलपुर या इसके पास ही कहीं चम्पानगरी का होना मालूम पड़ता है। पुराणों में लिखा है कि दीर्घतमा नामक ऋषि ने बलि नामक राक्षसराज की स्त्री से अंग, बंग, कलिंग, सुह्म और पौंड्र नाम के पाँच पुत्र उत्पन्न किये थे, जिन्होंने पाँच राज्य कायम किये। इस समय अंग पूर्वी विहार, बंग पूर्वी बंगाल, पुंड्र उत्तरी बंगाल, कलिंग उड़ीसा और सुह्म पच्छिमी बंगाल है। राजा अंग के वंश में क्रम से पार, दिविरथ, धर्मरथ, चित्ररथ, और दशरथ हुए। दशरथ लोमपाद नाम से प्रसिद्ध थे। इन्होंने अपने मित्र कोशल-नरेश दशरथ की कन्या शान्ता को पोष्यपुत्री बनाया था। शान्ता का विवाह ऋष्यशृंग मुनि से हुआ था। विवाह के बाद मुनि राजा लोमपाद के दरबार में ही बहुत दिनों तक रहे। इन्होंने ही कोशल-नरेश दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था।

राजा लोमपाद के तरंग नामक पुत्र हुआ। तरंग के पुत्र पृथुलाक्ष और पृथुलाक्ष के पुत्र चम्पा हुए। इन्होंने ही अपने नाम पर चम्पानगरी बसायी। चम्पा के वंश में क्रम से हार्यङ्ग, भद्र-रथ, वृहद्रथ, वृहत्कर्मा, वृहद्भानु, वृहन्मना, जयद्रथ, विजय, धृति, धृतव्रत, सत्यकर्मा और अधिरथ राजा हुए। अधिरथ ने ही कुमारी कुन्ती द्वारा सूर्य से उत्पन्न पुत्र कर्ण को काठ के बक्से में गंगा में बहते हुए पाया था। अधिरथ ने उन्हें अपना पोष्यपुत्र बनाया। कर्ण धनुर्विद्या में अत्यन्त निपुण हुए। महाभारत-काल में अर्जुन को छोड़ इनसे बढ़कर दूसरा कोई धनुर्द्धर नहीं था। ये दानी भी अद्वितीय हुए। महाभारत के सभापर्व में लिखा है कि राजसूय यज्ञ के अवसर पर दिग्विजय के लिये जब भीम हस्तिनापुर से पूरब की ओर आये थे तो उन्होंने अंग देश के राजा कर्ण को जीता था और अधीनता स्वीकार करने पर फिर

राज्य वापस कर दिया था। इसके बाद भीम ने अंग के पड़ोसी राज्य मुद्गिरि (वर्तमान मुंगेर) पर चढ़ाई की और वहाँ के राजा को युद्ध में मार डाला। मगध और अंग के साथ झगड़ा चला करता था। लेकिन, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन कर्ण का बहुत बड़ा सहायक और मित्र था। प्राग्ज्योतिषपुर (वर्तमान आसाम) के राजा भगदत्त ने जब अपनी कन्या भानुमती का स्वयंवर किया था तो सभी निमन्त्रित राजाओं के सामने कर्ण ने मगध-नरेश जरासंध को परास्त कर भानुमती को जीता था और इसे दुर्योधन को दे अपने उपकार का बदला चुकाया था। महाभारत की लड़ाई में कौरवों की ओर से लड़कर कर्ण ने अपने प्राण न्योछावर किये। यह राजा कर्ण इतने प्रसिद्ध हुए कि पीछे बहुत-से राजाओं ने अपना नाम यही रक्खा। जैन सम्प्रदाय के अन्दर भी इस नाम का एक राजा हुआ। किसी समय अंग राज्य मगध राज्य से अधिक शक्तिशाली था। इस बात का उल्लेख मिलता है कि मगध के राजा भट्टिय को अंग देश के राजा राजा ब्रह्मदत्त ने परास्त किया था ; मगर पीछे मगध प्रबल प्रतापी राज्य हो गया और लगभग सारा भारतवर्ष इसके अधीन आ गया। मगध ने अंग से तुरत ही बदला ले लिया। भट्टिय के लड़के बिम्बिसार ने ही अंग राज्य को जीतकर अपने अधीन कर लिया।

मगध—साधारणतः गया जिले का उत्तरी हिस्सा और पटना जिला ही मगध समझा जाता रहा है। कभी-कभी मुद्गिगरि (मुंगेर) से चरणाद्रि (चुनार) तक और गंगा से लेकर दक्षिण विंध्य पर्वत-श्रेणी तक मगध की प्राचीन सीमा समझी जाती थी। विहार के अन्य भागों में आर्यों के फैल जाने पर भी मगध में उनका प्रवेश बहुत पीछे हुआ जान पड़ता है। मगध में कभी प्राचीन आर्य-सभ्यता और संस्कृति का विकास नहीं हुआ। आर्य लोग

मगध को घृणा की दृष्टि से देखते रहे। बौद्धायन धर्मसूत्र और स्मृति आदि ग्रन्थों में, अंग, बंग, कलिंग और मगध देश में जाने का निषेध है। लेकिन, इनमें मगध ही सबसे अधिक अपवित्र देश समझा जाता रहा। कुछ लोग कहते हैं कि यहाँ यज्ञ-सामग्री नहीं मिलने से आर्यों को यहाँ आने की मनाही थी। यह भी अनुमान किया जाता है कि यहाँ अनार्यों का बोलबाला रहने से उनके द्वेषवश या घृणावश आर्यों ने अपने लिये यह नियम बनाया हो। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य लोग अनार्यों और उनके देशों को बहुत घृणा की दृष्टि से देखते थे। निरुक्त आदि ग्रंथों में मगध का दूसरा नाम कीकट भी आया है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में भी मगध का उल्लेख हुआ है। लेकिन, वेदों और उपनिषद् आदि ग्रंथों में मगधवासियों को दस्यु, अनार्य, पक्षी, बुद्धिहीन, श्रद्धाहीन आदि कहा गया है, उनकी मूर्ति बनाकर बलि देने का भी जिक्र आया है। लेकिन, मालूम पड़ता है, यह बात अधिक दिनों तक नहीं रही। धीरे-धीरे मगध से अनार्यों का प्रभुत्व जाता रहा। रामायण-काल के कुछ दिन पहले से ही आर्य लोग मगध में आने लगे। रामायण में लिखा है कि गिरिव्रज (वर्तमान राजगिरि) को राजा वसु ने बसाया था। प्राचीन काल में मगध में विश्वामित्र आदि कई ऋषियों के रहने का उल्लेख आया है; पर यह भी देखा जाता है कि उन्हें अनार्यों या राक्षसों का बहुत उत्पात सहना पड़ता था। लेकिन, यहाँ के आर्यों को उत्तरी आर्यगण नीची निगाह से देखते थे और उन्हें "व्रात्य" कहते थे। दीर्घतमा ऋषि, जिनका जिक्र ऊपर आया है, मगध के ही रहनेवाले थे। कहते हैं कि ये यहाँ के वैशाल राजवंश के राजा करंधम के पुरोहित अंगिरा के कुल में वर्णसंकर पैदा होने के कारण गंगा में छोटी नौका पर बहा

दिये गये थे। ये अन्व देश मे जाकर ऊपर हुए। यही अन्व पीछे अंग देश कहलाया।

महाभारत-काल के १६ चक्रवर्ती राजाओं में बिहार के वृहद्रथ और गय राजा थे। गय की राजधानी वर्तमान गया थी और वृहद्रथ की गिरिव्रज या राजगृह। वृहद्रथ राजा बसु के ही कुल मे उत्पन्न हुए थे। वृहद्रथ का पुत्र सुप्रसिद्ध जरासंध हुआ। यह बड़ा प्रतापी और शूरवीर था। इसने आसपास के सभी देशों को जीतकर अपने अधीन कर लिया। पच्छिम में इसका आधिपत्य मथुरा तक था। मथुरा के राजा कंस से इसने अपनी दो बेटियाँ ब्याही थीं। जब श्रीकृष्ण ने कंस को मारा तो यह बहुत क्षुब्ध हुआ और इसका बदला चुकाने के लिये मथुरा पर बार-बार चढ़ाई करने लगा। अन्त में तंग आकर श्रीकृष्ण सारे यदुवंशियों को लेकर समुद्र के किनारे द्वारका को चले गये। कुछ दिनों के बाद श्रीकृष्ण भीम और अर्जुन को लेकर राजगृह पहुँचे। यहाँ भीम ने गदायुद्ध में जरासंध को मार डाला।

जरासंध की मृत्यु के बाद मगध का वह प्रबल प्रताप जाता रहा पर मगध-राजवंश नष्ट नहीं हुआ। जरासंध का लड़का सहदेव था जो महाभारत की लड़ाई में मारा गया। पुराणों से मालूम होता है कि जरासंध के बाद ये सब राजे करीब हजार वर्षों तक मगध पर राज्य करते रहे—सहदेव, सोमापी, श्रुतवान, अयुतायु, निर्मित्र, सुक्षत्र, वृहत्कर्मा, सुश्रम, दीर्घसेन, सुमति, सुबल, सुनीति, सत्यजित, विश्वजित और रिपुंजय। रिपुंजय अपने मन्त्री सुनक द्वारा मारा गया। सुनक ने राज्य अपने लड़के प्रद्योत को दिया। प्रद्योत-वंश के पाँच राजे राज्य करते रहे—प्रद्योत, पालक, विशाखयुप, जनक और नन्दिवर्द्धन। इनके बाद ईसा के ६०० वर्ष पूर्व शिशुनाग गद्दी पर बैठा। शिशुनाग के वंश में नौ राजे

हुए—काकवर्ण, क्षेमधर्म, क्षेत्रज्ञ, बिम्बिसार, अजातशत्रु, दरभक, उदयश्व, नन्दिवर्धन और महानन्द। उनमें बिम्बिसार और अजातशत्रु प्रसिद्ध राजे हुए। कुछ लोग कहते हैं कि बिम्बिसार भट्टिय का पुत्र था। उसने अपने पिता का बदला चुकाने के लिये पिता के जीवनकाल में ही अंग राज्य को जीतकर मगध में मिला लिया था और प्रतिनिधि-रूप में वहाँ शासन करने लगा था। उसने मगध में वृज्जियों की बढ़ती हुई शक्ति को रोका। वृज्जियों को दबाने के लिये ही इसने गंगा के किनारे पाटलिपुत्र ग्राम में एक किला बनवाया। अवन्ती और गांधार देश के राजाओं के साथ भी बिम्बिसार का सम्पर्क था। इसने पुराने राजगृह से अपनी राजधानी हटाकर नये राजगृह में राजधानी बनायी। इसकी कितनी ही रानियाँ थीं, जिनमें मुख्य कोशल और वैशाली की राजकन्या थीं। कोशल-नरेश से इसे दहेज में काशी मिली थी। वैशाली की स्त्री से इसे अजातशत्रु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। कहते हैं कि अजातशत्रु अपने पिता को मारकर गद्दी पर बैठा था। उसने कोशल-नरेश और वैशाली-राष्ट्रसंघ के साथ लड़कर उन्हें परास्त किया था। बिम्बिसार और अजातशत्रु ने मिलकर मगध को एक शक्तिशाली राज्य बना दिया।

भगवान बुद्ध और महावीर—बिम्बिसार और अजातशत्रु के समय में ही बौद्ध और जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध और महावीर हुए, जिनका मगध के इन राजाओं के यहाँ आना-जाना होता था। संसार के इन दो सर्वश्रेष्ठ और महान् धर्मों का जन्म और प्रश्रय देने का गौरव विहार की भूमि को ही है। इनमें बौद्ध धर्म का प्रचार तो दुनिया के दूर-दूर देशों तक हुआ। इस समय भी ईसाई धर्म के बाद दुनिया में बौद्ध धर्म का ही सबसे अधिक प्रचार है। बहुत-से विद्वानों का कहना है कि

ईसाई धर्म भी बौद्ध धर्म के आधार पर ही कायम हुआ था। चीन, जापान, तिब्बत, ब्रह्मा, लंका आदि देशों के करीब आधे अरब लोग बौद्ध धर्म के माननेवाले हैं। ये लोग विहार की वसुन्धरा को परम पावन समझकर इसके सामने नतमस्तक होते हैं। भगवान बुद्ध का जन्म वर्तमान विहार में तो नहीं, पर विहार की सीमा के पास ही कपिलवस्तु में हुआ था। लेकिन, इन्हे ज्ञान की प्राप्ति यहीं हुई, यहीं इन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया और विहार को ही इन्होंने अपना मुख्य कार्यक्षेत्र बनाया। राज्य त्याग कर इन्होंने राजगृह में तपस्या की और गया में इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ईसा के ४७७ वर्ष पहले इन्होंने ८० वर्ष की उम्र में अपना शरीर छोड़ा। जैन धर्म के प्रवर्त्तक या सुधारक महावीर का जन्म वैशाली-राजपरिवार में और मृत्यु भगवान बुद्ध की मृत्यु के दस वर्ष बाद पावापुरी (पटना जिला) मे हुई। महावीर अजातशत्रु के नातेदार भी होते थे। जैन धर्म का प्रचार विदेशों मे न हुआ; पर भारतवर्ष में अब भी लाखों आदमी इस धर्म को माननेवाले हैं।

अजातशत्रु का लड़का उदयन या उदयभद्र मगध की राजधानी राजगृह से हटाकर पाटलिपुत्र ले आया। तब से पाटलिपुत्र एक प्रसिद्ध नगर हो गया। उदयन के बाद नन्दवंश तक कौन-कौन राजे हुए, इस विषय में मतभेद है। कुछ लोगों का कहना है कि उदयन के बाद क्रम से अनिरुद्ध, मुंड और नागदशक राजा हुए। उसके बाद राज्य मन्त्री शिशुनाग के हाथ में चला गया। उसने अवन्ती, काशी, कोशल और वत्स भी अपने राज्य में मिला लिये। शिशुनाग के बाद उसका पुत्र कताशोक गद्दी पर बैठा। उसकी मृत्यु होने पर उसके दस लड़कों ने बाईस वर्षों तक एक साथ राज्य किया। इसके बाद नन्दवंश का राज्य आरम्भ हुआ।

नन्दवंश—नन्दवंश का पहला राजा महापद्म या उग्रसेन था जो ईसा के ३६१ वर्ष पूर्व गद्दी पर बैठा। वह एक बड़ा प्रतापी और शक्तिशाली सम्राट् हुआ। उसने अपना साम्राज्य सारे उत्तर भारत में फैलाया। उसके समय में पंजाब, सिन्ध, बेलूचिस्तान, उड़ीसा, मैसूर का उत्तरी और बम्बई का दक्षिणी हिस्सा मगध राज्य के अन्दर चला आया। यह सम्राट् विद्या-प्रेमी भी पहले दरजे का था। व्याकरण के सुप्रसिद्ध आचार्य पाणिनि और उसके सूत्रों पर वार्तिक लिखनेवाले वररुचि इसी के दरबार में थे। महापद्म के उत्तराधिकारी उसके आठ पुत्र हुए। ये पिता-पुत्र नवनन्द के नाम से मशहूर हैं।

मौर्य्यवंश—नन्दवंश के बाद ईसा के ३२१ वर्ष पूर्व मौर्य्यवंश का राज्य आरम्भ हुआ। इस वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था जो नन्दवंश के अन्तिम राजा का मन्त्री था। नन्द-राज्य से विद्रोह कर यह भारत के उत्तर-पच्छिम सीमा के पास सिकन्दर से जा मिला। वहाँ से भी हटकर इसने अपनी एक सेना तैयार की और उत्तर-पच्छिम के कई राज्यों को जीतकर पीछे नीतिनिपुण चाणक्य की सहायता से मगध के नंद-राजवंश का नाश किया और मगध की गद्दी पर बैठा। इसके बाद इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस से भारत के कन्धार, काबुल, बेलूचिस्तान और हेरात प्रान्तों को छीनकर अपने राज्य में मिलाया। फिर, इसने दक्षिण भारत के कुछ भाग पर तथा पच्छिम के सौराष्ट्र पर कब्ज़ा जमाया। इस तरह ऐतिहासिक युग में सारे भारत को और आज के भारत से भी महान भारत को—एक शासन-सूत्र में लानेवाला पहला सम्राट् चंद्रगुप्त हुआ। इसके दरबार में सेल्यूकस का भेजा यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने उस समय के भारत तथा पाटलिपुत्र की म्युनिसिपैलिटी आदि का विस्तृत

विवरण लिखा है। ईसा के २६७ वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका लड़का बिंदुसार गद्दी पर बैठा। उसके समय में यहाँ यूनान (ग्रीस) का राजदूत डिमेकस था। विन्दुसार ने दक्षिण भारत के पूर्वी और पश्चिमी तट के सारे भाग को अपने अधीन कर लिया था। बिंदुसार का ही लड़का सुप्रसिद्ध अशोक हुआ। इसे सिर्फ एक कलिंग (उड़ीसा) के साथ युद्ध करना पड़ा था, बाकी अपनी सारी शक्ति इसने शासन-सुव्यवस्था कायम करने तथा प्रजा की भलाई के नाना प्रकार के कार्य करने में लगायी। यह बहुत बड़ा लोकप्रिय सम्राट् हुआ। इसका दूसरा महान् कार्य बौद्ध धर्म को सारे भारत मे और दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में फैलाना था। भारत मे भगवान बुद्ध के पवित्र स्थानों में इसने बहुत-से स्तूप और स्तम्भ बनवाये, जिनमे कितने अब तक मौजूद हैं। स्तम्भों तथा पर्वत के शिला-खंडों पर इसने धर्म-लेख लिखवाये। इसका प्रचारित बौद्ध धर्म सभी धर्मों की सार वस्तु है। चीन, जापान, तिब्बत, लंका, ब्रह्मा, जावा, सुमात्रा, कम्भोज, गांधार, मिस्र, सीरिया, मेसिडोनिया आदि देशों मे इसने बौद्ध धर्म के प्रचारक भेजे। लंका में तो इसने अपने प्रिय पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को धर्म-प्रचार के लिये भेजा। आज भी हर साल लंका के निवासी इन दोनों की स्मृति बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

अशोक के बाद मगध साम्राज्य फिर घटने लग गया। बहुत-से अधीनस्थ प्रदेश स्वतन्त्र हो गये। बौद्ध धर्म की शिक्षा ने बहुत हद तक राज्य के सैनिक-बल को धक्का पहुँचाया। वायुपुराण के अनुसार अशोक के उत्तराधिकारी क्रम से कुणाल, बन्धुपालित, इन्द्रपालित, देववर्मन, शतधन्वा और वृहद्रथ हुए तथा मत्स्य-

पुराण के अनुसार दशरथ, सम्प्रति, शतधन्वा और बृहद्रथ। कुछ दूसरे पुराण कुछ दूसरे नाम भी कहते हैं। बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र या पुष्पमित्र ने मारकर सुंग-राजवंश की स्थापना की।

सुंगवंश—पुराणों में सुंगवंश के दस राजाओं के राज्य करने का वर्णन आया है। वे राजे हैं—पुष्यमित्र, अग्निमित्र, सुज्येष्ठ, वसुमित्र, आर्द्रक, पुलिंदक, बसु, वज्रमित्र, भागवत और देवमूर्ति। सुप्रसिद्ध विद्वान् पतंजलि पुष्यमित्र के पुरोहित बताये जाते हैं। सुंगवंश के राजा ब्राह्मण धर्मानुयायी थे। इस वंश का अन्तिम राजा ईसा के ७३ वर्ष पूर्व अपने मन्त्री वसुदेव द्वारा मार डाला गया।

कण्ववंश—वसुदेव ने कण्व-राजवंश की स्थापना की। इस वंश में वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुवर्मन राजे हुए। ईसा के ३१ वर्ष पूर्व कण्व राज्य का अन्त हुआ। इसके बाद आन्ध्र लोगों का आधिपत्य मगध में फैला।

आंध्रवंश—आंध्र लोगों का यहाँ अधिक दिनों तक शासन नहीं रहा। वे केवल पचास वर्षों तक राज्य कर सके। उनके समय में कुशानवंशी राजाओं का आक्रमण होता रहा। इस परिस्थिति से लाभ उठाकर लिच्छवि लोगों ने करीब एक शताब्दी तक मगध पर अपना आधिपत्य कायम रखा।

कुशानवंश—ईसा की दूसरी सदी के आरम्भ में कुशानों ने मगध पर कब्जा किया और यहाँ के लोगों को बहुत सताया। इन लोगों ने हिन्दू धर्म नष्ट करने की बहुत चेष्टा की। लेकिन, इसी समय चम्पावती (वर्तमान भागलपुर) में नागवंशी राजाओं का बल बढ़ा और उन लोगों ने हिन्दू धर्म की रक्षा की तथा अपना प्रताप उत्तर भारत तक फैलाया। इस समय मगध में

कोटवंश का राजा सुन्दरवर्मन नागवंशियों के अधीन राज्य करता था। इसी का पोष्यपुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय था जिसने चौथी सदी के आरम्भ में गुप्तवंश की स्थापना की।

गुप्तवंश—गुप्त-राजवंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त बहुत अत्याचारी कहा जाता है। इसका पुत्र समुद्रगुप्त हुआ। इसने भारत के पूर्वी, पच्छिमी और दक्षिणी भागों को जीतकर अपना एक विशाल साम्राज्य कायम किया था। चारों ओर विजय पाकर इसने एक अश्वमेध यज्ञ किया। यह विद्वान् और ग्रन्थकार भी बताया जाता है। इसका पुत्र चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य हुआ। इसे चन्द्रगुप्त द्वितीय भी कहते हैं। भारत में आयी एक नयी जाति शकों पर विजय प्राप्त करने के कारण लोग इसे शकारि भी कहते थे। यह बड़ा प्रसिद्ध सम्राट् हुआ। सारे भारत पर अधिकार कर लेने के बाद इसने देखा कि जब तक इस विशाल साम्राज्य की राजधानी एक केन्द्रीय स्थान में नहीं बनायी जाय तब तक इसे कायम रख सकना मुश्किल है; इसलिये पाटलिपुत्र से हटाकर इसने अपनी राजधानी उज्जैन में बनायी। चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद स्कन्दगुप्त नामी सम्राट् हुआ। इसे हूणों के साथ लड़ाई लड़नी पड़ी थी। स्कन्दगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य घटने लगा। इस समय क्रम से पुरागुप्त, बालागुप्त, कुमार द्वितीय, बुद्धगुप्त, भानुगुप्त, तथागतगुप्त राजे हुए। भानुगुप्त और तथागतगुप्त एक ही समय में राज्य करते थे। भानुगुप्त उज्जैन का और तथागतगुप्त पाटलिपुत्र का शासक था। इस तरह गुप्त साम्राज्य बँट-सा गया था। गुप्त साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने से इस समय हूणों का अधिकार भारतवर्ष के कुछ अंशों में हो गया। तथागतगुप्त के बाद मगध पर क्रम से बालादित्य द्वितीय और वज्र का शासन रहा; पर ये लोग यशोधर्मन के साम्राज्य के अधीन थे। इसी समय एक शक्ति-

शाली मनखरी राज्य का कायम होना देखा जाता है। मनखरी जाति की एक शाखा संयुक्त प्रान्त में और दूसरी गया में राज्य करती थी। गया के मनखरी राजा यज्ञवर्मन, शार्दूलवर्मन और अनन्तवर्मन थे। कुछ समय तक मनखरियों ने गुप्त राजाओं को दबा दिया था। इसी समय थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन का बल बढ़ता गया। हर्षवर्द्धन ने भारत के अधिकांश भाग पर अधिकार जमा लिया। इस समय मगध की गद्दी पर माधवगुप्त था। इसने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली। इसी के समय में सुप्रसिद्ध चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) भारत आया था। उसने पाटलिपुत्र, गया, नालन्द, वैशाली आदि विहार के बहुत-से स्थानों का वर्णन किया है। वह सुप्रसिद्ध नालन्द-विश्वविद्यालय में बहुत दिनों तक अध्ययन भी करता रहा। हर्षवर्द्धन के बाद उसका मन्त्री अर्जुन उसकी गद्दी पर बैठा। कहते हैं कि वह विहार में ही शासन करता था। उसने एक चीनी राजदूत को तंग किया था जिससे तिब्बत और नेपाल की सहायता से चीनियों ने विहार पर चढ़ाई की और बहुत लूटपाट मचायी।

थानेश्वरवंश के पतन के बाद गुप्तवंश ने फिर अपना साम्राज्य कायम किया और इस बार इस साम्राज्य का केन्द्र फिर मगध ही रहा। गुप्त साम्राज्य के वैभव का जीर्णोद्धार करनेवाला आदित्यसेन बताया जाता है। इसके बाद आदित्यगुप्त द्वितीय हुआ। इसे कन्नौज के राजा यशोवर्मन ने युद्ध मे मार डाला। धीरे-धीरे गुप्त-राजवंश का नाश हो गया। यहाँ का अन्तिम गुप्त राजा जीवितगुप्त बताया जाता है।

पालवंश—गुप्तवंश के बाद यहाँ पालवंश का राज्य आरम्भ हुआ। इस वंश के लोग ८वीं सदी के आरम्भ से लेकर १२वीं

सदी तक राज्य करते रहे। इस वंश का संस्थापक राजा गोपाल था। यह मगध में ४५ वर्षों तक राज्य करता रहा। इसके बाद इसका लड़का धर्मपाल सन् ७६९ में गद्दी पर बैठा। इसने उत्तरी भारत के बहुत हिस्सों पर अपना अधिकार जमाया। बौद्ध धर्म को फैलाने में भी इसका बहुत हाथ रहा। कहते हैं कि विक्रमशिला का प्रसिद्ध बौद्ध विश्व विद्यालय इसी ने बनवाया था। भागलपुर जिले के सुलतानगंज या कहलगाँव के पास पत्थर घाट को लोग विक्रमशिला का स्थान समझते हैं। धर्मपाल के बाद देवपाल ८१५ ई० में राजा हुआ और ३९ साल तक राज्य करता रहा। इसने उत्कल (उड़ीसा) और कामरूप (आसाम) को जीता था। इसे जावा और सुमात्रा के राजाओं के साथ भी संबंध था। देवपाल के बाद विग्रहपाल या सुरपाल गद्दी पर बैठा। यह आध्यात्मिक प्रकृति का था; इसलिये इसने अपने जीवनकाल में ही अपने पुत्र नारायणपाल को राज्य दे दिया। नारायणपाल ८५७ से ९११ ई० तक राज्य करता रहा। इसे गुर्जर और राष्ट्रकूटवंशी राजाओं से लड़ाई लड़नी पड़ी थी। इसके मरने पर क्रम से इस वंश में राज्यपाल, गोपाल द्वितीय, विग्रहपाल द्वितीय, महिपाल, नयपाल, विग्रहपाल तृतीय, महिपाल द्वितीय और सुरपाल राजे हुए। इन राजाओं के समय में मगध की शक्ति क्षीण हो गयी थी। सुरपाल के बाद रामपाल राजा हुआ। इसने उत्कल, कलिंग और कामरूप को फिर से मगध राज्य में मिलाया। लेकिन, इसके मरने के बाद ही इस वंश का राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इसके उत्तराधिकारी कुमारपाल, गोपाल और मदनपाल हुए; पर इनके समय में राज्य घटता ही गया। मदनपाल ११५० ई० तक पटना और मुंगेर जिले के आसपास शासन करता रहा। इसके उत्तराधिकारी कौन-कौन हुए, इसका पता नहीं।

पाल राजाओं की राजधानी उद्दन्तपुरी (या ओदन्तपुरी) में थी जिसे आज विहार शरीफ कहते हैं। कई पाल राजे बौद्ध थे। उन्होंने और जगहों के साथ-साथ अपनी राजधानी में भी बहुत-से बौद्ध विहार बनवाये, जिससे इस स्थान का नाम ही विहार पड़ गया। यहाँ का बौद्ध विश्वविद्यालय अपने समय में काफी प्रसिद्ध था। विहार का अन्तिम स्वतन्त्र राजवंश पालवंश था जिसने एक समय अपना प्रताप लगभग सारे उत्तरी भारत में फैलाया था। पालवंश के अन्त होने के साथ ही विहार के स्वतंत्र और गौरव-पूर्ण इतिहास का भी अन्त हो गया और इसके बाद के विहार का इतिहास एक अधीनस्थ प्रदेश का इतिहास रह गया।

जिस समय मगध में पाल-राजवंश का अन्त हो रहा था उस समय बंगाल मे सेनवंश का उदय हुआ था और पश्चिम में एक दूसरे राजवंश का। ये दोनों दोनों ओर से विहार पर कब्जा करते जा रहे थे। सेनवंशी राजे विजयसेन, बल्लालसेन और लक्ष्मणसेन कुछ दिनों से तिरहुत पर कब्जा किये हुए थे। अंत में मगध के हिस्सों पर भी इनका अधिकार हो गया। लेकिन, इसी समय यहाँ मुसलमानों का आक्रमण हुआ और सब के सब मुसलमानों के अधीन हो गये।

मुसलमानी शासन—विहार पर सन् ११९९ ई० में मुहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने चढ़ाई की और बहुत आसानी से इसे दखल में कर लिया। मुसलमानों ने उदंत-पुरी तथा विक्रमशिला के विहारों को नष्ट कर दिया और वहाँ के बौद्ध भिक्षुओं को भी मार डाला, सिर्फ थोड़े से लोग जहाँ-तहाँ भागकर अपनी जान बचा सके। मुसलमानी विजय के बाद विहार एक शासक प्रदेश नहीं, बल्कि एक शासित प्रदेश रह गया। यहाँ के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक

इतिहास में एक नये अध्याय का आरम्भ हुआ। विहारभूमि अब पहले की भाँति हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मों की केन्द्रस्थलि नहीं रही और न रही शिक्षा और सभ्यता के लिये संसार की मार्ग-दर्शिका। सब लोग निष्प्राण-से हो गये। मुसलमानों का दौरदौरा खूब बढ़ा। मुसलमानी शिक्षा और सभ्यता ने अपनी जड़ जमायी। लोग तेजी से मुसलमान बनाये जाने लगे और बड़े-बड़े मुसलमान फकीरों की भीड़ लग गयी।

लेकिन, मुसलमानी काल के आरम्भ में सारे विहार की एक-सी हालत नहीं रही। दक्षिण विहार तो शुरू से ही प्रत्यक्ष रूप से मुसलमानों के अधिकार में आ गया; पर उत्तर विहार में हिन्दू राजाओं की धाक बनी रही और वहाँ बहुत दिनों तक हिन्दू-संस्कृति और सभ्यता का विकास होता रहा। मुसलमानों ने इस सूबे के दक्षिण भाग की राजधानी विहार नगरी में बनायी, जहाँ पहले पालवंशी राजाओं की राजधानी थी। यहाँ पहले बहुत-से मुसलमान पीर हुए, इस वजह से लोग आज इसे विहार-शरीफ कहने लगे हैं। इस सूबे का नाम विहार उसी समय इसकी राजधानी नगरी विहार के नाम पर पड़ा। लेकिन, मुसलमानी युग के आरम्भ मे विहार का मतलब केवल दक्षिण विहार था।

विहार पर बख्तियार खिलजी मुसलमानी आधिपत्य जमाकर चला गया और यहाँ पर अपने लड़के इख्तियार को शासन करने के लिये छोड़ दिया। यह दक्षिण विहार में शासन-कार्य करता रहा। सन् १२०५-६ में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद मुहम्मद शेर अजमुद्दीन यहाँ का शासक हुआ। इसके मरने पर दिल्ली के बादशाह कुतुबुद्दीन ने बंगाल-विहार पर अपना प्रभुत्व जमाया और अलीमर्दन खिलजी को यहाँ का

गवर्नर नियुक्त किया। कुतुबुद्दीन के मरने पर यह स्वतन्त्र हो गया। जब इसकी मृत्यु हुई तो हसनउद्दीन गयासुद्दीन के नाम से यहाँ का शासक हुआ। इसने तिरहुत पर भी चढ़ाई की थी। इसके समय में दिल्ली के बादशाह अलतमश ने विहार और बंगाल पर अपना आधिपत्य जमाना चाहा। उसने गयासुद्दीन को पराम्त कर अलाउद्दीन जानी को यहाँ का गवर्नर बनाया; लेकिन उसके लौटते ही गयासुद्दीन ने नये गवर्नर को मार भगाया। इसपर अलतमश ने अपने लड़के नासिरुद्दीन को बंगाल-विहार पर विजय प्राप्त करने के लिये भेजा। गयासुद्दीन को लड़ाई में मारकर वह खुद यहाँ का गवर्नर हुआ। इसके बाद क्रम से अलाउद्दीन और तोगरल तोगन खाँ यहाँ का शासक रहा। तोगरल खाँ ने तिरहुत पर भी चढ़ाई की थी। १२३६ ई० में दिल्ली की रानी रजिया बेगम के मरने पर जब शाही ताकत कमजोर पड़ गयी तो अवध के नवाब तीफर खाँ ने विहार पर कब्जा कर लिया। लेकिन, जब बलबन दिल्ली की गद्दी पर बैठा तो उसने बंगाल-विहार को अधीनता में लाने की कोशिश की और बोगरा शाह को यहाँ का गवर्नर बनाया। १२८७ ई० में बलबन के मरने पर बोगराशाह खुदसर बन बैठा। उसके उत्तराधिकारी रुकुनुउद्दीन, कैकोजशाह, शमसुद्दीन, फिरोजशाह और हातिम खाँ हुए। १३२० ई० में दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन तुगलक ने विहार को बंगाल से अलग कर दिया। मुहम्मद तुगलक के आखिरी वक्त में मलिक इब्राहीम बया उर्फ बज्जू विहार का गवर्नर था। सन् १३९७ से सन् १४८६ तक विहार जौनपुर के राजा के अधीन रहा। इसके बाद लोदीवंश के संस्थापक बहलोल लोदी ने जौनपुर पर अपना प्रभुत्व कायम किया। सिकन्दर लोदी ने उत्तरी और दक्षिणी विहार पर भी चढ़ाई की

थी। लेकिन, इसके बाद बंगाल के शासक हुसेनशाह का पूर्वी और उत्तरी विहार पर शासन रहा। मुंगेर का किला उसके लड़के दनियाल का ही बनवाया या मरम्मत कराया बताया जाता है। शेरशाह के वक्त तक इसी वंश के लोगों का यहाँ शासन रहा। यह तो हुई दक्षिण विहार की बात, लेकिन उत्तर विहार में बहुत दिनों तक स्वतंत्र या अर्द्ध स्वतंत्र हिन्दू राजे राज करते रहे।

सिमराँव-राजवंश—१३वीं सदी के आरम्भ में, जब विहार में मुसलमानी सल्तनत शुरू हुई थी, इसके उत्तरी हिस्से में एक हिन्दू राजवंश की नींव पड़ी थी। इस वंश के लोग सौ वर्ष तक तिरहुत पर राज्य करते रहे। सन् १३२३ में तुगलकशाह ने चढ़ाई कर इस राजवंश की स्वतंत्रता छीनी। यह राजवंश सिमराँव-राजवंश के नाम से प्रसिद्ध है। सिमराँव चम्पारण जिले की सीमा पर नैपाल राज्य में पड़ता है। इस वंश को कायम करनेवाले नान्यदेव थे। इन्होंने मिथिला और नैपाल पर अपना राज्य कायम किया था। पीछे इनका एक लड़का नैपाल का और दूसरा, जिसका नाम गंगादेव था, मिथिला का शासक हुआ। गंगादेव के बाद नरसिंहदेव मिथिला पर राज्य करने लगा। उसका अपने सम्बन्धी नैपाल के राजा के साथ झगड़ा हो गया, तब से नैपाल मिथिला से सदा के लिये अलग हो गया। नरसिंहदेव का लड़का रामसिंहदेव के समय में मिथिला में वेद के कई भाष्य तैयार हुए। इसके बाद शक्तिसिंह और हरसिंह देव शासक हुए। कुछ लोग इन दोनों के बीच में एक भूपालसिंह को भी शासक बताते हैं। कहते हैं कि हरसिंहदेव ने ही मैथिल ब्राह्मणों को श्रोत्रिय, योग और जैबार, इन तीन श्रेणियों में बाँटा था तथा मैथिल ब्राह्मणों और मैथिल कायस्थों में कुलपंजी

(वंशावली) लिखने की परिपाटी चलायी थी, जो अब भी जारी है।

ठाकुरवंश—हरसिंहदेव के तुगलकशाह से हार खाकर भाग जाने पर तुगलकशाह ने कामेश्वर ठाकुर को तिरहुत का राज्य दिया। इसने सुगाँव में अपनी राजधानी कायम की। तिरहुत पर ठाकुरवंश का राज्य १६वीं सदी के आरम्भ तक रहा। १३५३ ई० में फिरोजशाह ने कामेश्वर ठाकुर को गद्दी से उतारकर उसके छोटे लड़के भोगेश्वर ठाकुर को राज्य दिया। इसके बाद क्रम से गुणेश्वरसिंह, वीरसिंह, कीर्तिसिंह, भावसिंह, देवीसिंह और शिवसिंह राजा हुए। इनमें शिवसिंह की बहुत प्रसिद्धि हुई। सुप्रसिद्ध कवि विद्यापति इन्हीं के दरबार में थे। शिवसिंह मुसलमानों की अधीनता स्वीकार नहीं कर स्वतंत्र बन बैठे। इसपर शाही सेना की इनपर चढ़ाई हुई और ये गिरफ्तार कर दिल्ली ले जाये गये। इनके बाद पद्मसिंह और हरिसिंह राजे हुए। कहते है कि हरिसिंह के प्रोत्साहन से ही कई स्मृति ग्रंथों की रचना हुई थी। हरिसिंह के बाद नरसिंह, धीरसिंह, भैरवसिंह, रामभद्र और लक्ष्मीनाथ राजे हुए। सुप्रसिद्ध पं० वाचस्पति मिश्र भैरवसिंह के वक्त में हुए थे। मालूम पड़ता है कि बंगाल के शासक हुसेनशाह के लड़के नसरतशाह ने १५३२ ई० के लगभग इस राजवंश का नाश कर तिरहुत में भी मुसलमान शासकों को नियुक्त किया। लेकिन, तिरहुत के दक्षिण भाग पर मुसलमानों का प्रत्यक्ष शासन बहुत दिन पहले से था। हाजी इलियासशाह ने सन् १३३९ से १३५८ के बीच तिरहुत का कुछ भाग जीतकर, हाजीपुर बसाया था। इसके वक्त से लेकर शेरशाह के वक्त तक हाजीपुर सूबा विहार के उत्तरी भाग की राजधानी बना रहा। सिमराँव-राजवंश और ठाकुरवंश के समय में मैथिल पण्डितों

ने काव्य, व्याकरण, अलंकार, ज्योतिष, संगीत, कामशास्त्र, स्मृति, न्याय, तन्त्र आदि विषयों पर कितने ही मौलिक ग्रन्थ और भाष्य आदि लिखे।

शेरशाह—मुसलमानी सल्तनत में बिहार कभी सीधे दिल्ली के बादशाह के हाथ में, कभी बंगाल के साथ और कभी जौनपुर के राजा के अधिकार में रहा। बल्कि, बहुत समय तक तो कुछ भाग बंगाल के साथ और कुछ दिल्ली के बादशाह के हाथ में भी था। १६वीं सदी के आरम्भ में बिहार में फरीद खाँ उर्फ शेर खाँ नाम का एक जागीरदार हुआ। उसने धीरे-धीरे अपनी ताकत बढ़ायी। वह पहले जौनपुर के दरबार में, फिर दक्षिण बिहार के सूबेदार के पास और इसके बाद बाबर के साथ रहा। इसने अन्त में दक्षिण बिहार के सूबेदार जलालुद्दीन को भगाकर इसपर अपना पूरा कब्जा कर लिया। उत्तर बिहार के सूबेदार से भी इसने दोस्ती जमायी और चुनारगढ़ को अपने दखल में किया। रोहतासगढ़ में, जो महाराज रोहिताश्व का बनाया बताया जाता है, एक हिन्दू राजा राज्य करता था। इसे शेर खाँ ने धोखा देकर मार भगाया। इसने राजा से कहला भेजा कि मैं बंगाल विजय करने जाता हूँ, आप मेरे घर की स्त्रियों और खजाने को अपने किले में आश्रय दीजिये, राजा ने उसकी बात स्वीकार कर ली। इसपर शेरशाह ने डोलियों में स्त्रियों और खजाने की जगह अस्त्र-शस्त्र तथा सैनिक भेजकर राजा पर हमला कर दिया। राजा जान लेकर भागा। इसका शासन सारे झारखंड पर अर्थात् वर्तमान छोटानागपुर पर था; इसलिये भाग जाने पर सारे छोटानागपुर पर शेर खाँ का दखल हो गया। शेर खाँ ने बंगाल को जीतकर अपने को बादशाह घोषित कर दिया और हुमायूँ को परास्त कर सन् १५४० ई०

में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह एक सुयोग्य बादशाह हुआ और प्रजा की भलाई के लिये उसने कितने ही काम किये। उसने उत्तर विहार और दक्षिण विहार को मिलाकर एक प्रदेश कर दिया और पटने में किला बनवाकर यहीं विहार की राजधानी कायम की। मुसलमानी शासन में विहार इसी समय एक सूत्र में बाँधा गया। शेरशाह १५४५ ई० में मरा। उसकी लाश सस्सराम लाकर दफनायी गयी, जहाँ उसका सुन्दर मकबरा अब भी ज्यों-का-त्यों कायम है। दिल्ली की गद्दी शेरशाह और उसके वंशजों के अधिकार में सिर्फ १५-१६ वर्षों तक रही। फिर, हुमायूँ ही बादशाह हुआ।

मुगलकाल—शेरशाह के वंशजों ने मुहम्मद खाँ सूर को उत्तर विहार का और मियाँ सुलेमान को दक्षिण विहार का गवर्नर बनाया था। मुहम्मद खाँ सूर ने तमाम विहार को अपने हाथ में कर लिया। इसका उत्तराधिकारी क्रम से खिज्र खाँ या बहादुरशाह और गयासुद्दीन जलालशाह हुआ। इसके बाद मियाँ सुलेमान फिर गवर्नर हुआ। इसके पोते दाउद खाँ के वक्त तक विहार अफगानों के हाथ में रहा।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अफगान और मुगल विहार में अपना-अपना अधिकार कायम करने के लिये लड़ाई लड़ते रहे। सम्राट् अकबर अफगानों को दबाने के लिये खुद विहार पहुँचा, उस समय दाउद खाँ यहाँ का शासक था। हाजीपुर और पटने के किले पर अकबर ने चढ़ाई कर दी; दाउद खाँ भाग गया। टोडरमल पर पूर्वीय प्रान्तों के दूसरे हिस्सों को जीतने का भार सौंपकर अकबर लौट गया। सन् १५८० में टोडरमल मुंगेर में अपना अड्डा जमाकर विद्रोहियों से लड़ता रहा। सारा प्रान्त मुगलों के अधीन हो गया। अकबर के समय में

मुनिन खाँ, खाँजहाँ, मुजफ्फर खाँ, आजम खाँ, शाहबाज खाँ, सइद खाँ और राजा मानसिंह बंगाल-विहार और उड़ीसा के गवर्नर रहे। मानसिंह ने रोहतासगढ़ में अपनी राजधानी बनायी, जहाँ उसके महल आदि अब भी मौजूद हैं। उसने भागलपुर में सेना एकत्र कर उड़ीसा पर चढ़ाई की थी।

आइने-अकबरी से मालूम होता है कि बादशाह अकबर के वक्त में विहार में ७ सरकारें और १९९ परगने थे। उस वक्त इसका रकबा १३,२०० वर्गमील था, जब कि इस वक्त ६९,९५० वर्गमील है। उस समय की ७ सरकारों में विहार, मुंगेर, सारन, चम्पारण, हाजीपुर, तिरहुत और रोहतास की सरकारें थीं। छोटानागपुर को जहाँगीर ने जीतकर विहार में मिलाया। वहाँ का राजा दुर्जनसाल गिरफ्तार कर दिल्ली ले जाया गया था। लेकिन, पीछे बादशाह ने उसके हीरे पहचानने के गुण पर खुश होकर उसे छोड़ दिया। मानभूम को शाहजहाँ ने वहाँ के जमींदार वीरसिंह को हराकर विहार मे मिलाया था। उस समय वीरभूम विहार के साथ था, बहुत पीछे वह इससे अलग किया गया। अकबर ने बंगाल, विहार और उड़ीसा को एक ही गवर्नर के अधीन रखा था; लेकिन जहाँगीर ने विहार के लिये एक अलग गवर्नर रखा। इसके समय मे यहाँ का गवर्नर जहाँगीर कुली खाँ और अफजल खाँ था। १६२४ ई० में शाहजहाँ ने जब अपने पिता के साथ बगावत की तो उसने अपना अड्डा विहार में ही जमाया और रोहतास के किले में अपने परिवार को रखा। उसके शासन समय में भोजपुर के राजा ने सन् १६३७ में विद्रोह किया था। इसपर अबदुल्ला खाँ गवर्नर होकर आया और उसने भोजपुर के राजा को अपने वश में किया, तथा पीछे उसे मारकर उसकी रानी को अपने हरम में रख लिया। इसके

बाद क्रम से शाइस्ता खाँ, सादुल्ला खाँ, शियार शेको और अली-वर्दी खाँ गवर्नर हुए। जहाँगीर और शाहजहाँ के वक्त में पटने में कितनी ही मस्जिद और महल बने। पटने की पत्थर की मस्जिद उसी समय १६२६ ई० में गोरखपुर जिले के एक किले और मंदिर के सामान से बनी।

सन् १६५७ के अन्त में शाहजहाँ के बीमार पड़ने पर उसके चारों लड़के गद्दी के लिये लड़ने लगे। इसमें विहार भी लड़ाई का एक क्षेत्र रहा। शाहजादा शुजा, जो बंगाल का गवर्नर था, गद्दी के लिये दिल्ली की ओर चला। विहार का गवर्नर अली-वर्दी खाँ उससे मिल गया। लेकिन, आगे बढ़ने पर शुजा को हार खानी पड़ी; वह फिर विहार लौट आया। लेकिन, यहाँ भी उसका पीछा किया गया। वह पटना से मुंगेर, मुंगेर से साहेबगंज और साहेबगंज से राजमहल पहुँचा। लेकिन, पीछा करनेवाला मीर जुमला खड़गपुर (मुंगेर) के राजा बहरोज को मिलाकर एक पहाड़ी रास्ते से राजमहल तक पहुँच गया। आखिर शुजा वहाँ से भी हार खाकर भागा। औरंगजेब के वक्त में विहार में ज्यादा हलचल नहीं रही। उस समय यहाँ क्रम से इब्राहीम खाँ, शाहजादा आजम और सईफ खाँ गवर्नर हुए। इसके बाद औरंगजेब का पोता अजीम-उश्शान बंगाल, विहार और उड़ीसा का सूबेदार होकर आया। वह पटने में बस गया। उसने पटने को दिल्ली के मुकाबले का शहर बनाना चाहा। उसने यहाँ बहुत-से अमीर-उमराओं को बसाया और इसका नाम अजीमाबाद रखा। जहाँ उसके दीवान लोग रहते थे उस महल्ले को आज दीवान-महल्ला कहते हैं।

औरंगजेब के बाद शाहआलम उर्फ बहादुरशाह और उसके बाद जहाँदार दिल्ली की गद्दी पर बैठा। अजीम-उश्शान का

लड़काफरुखशियर विहार के गवर्नर हुसेन अली और उसके भाई की सहायता से जहाँदारशाह को मारकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। लेकिन, जब फरुखशियर ने इन दोनों भाइयों के पंजे से बाहर होना चाहा तो इन दोनों ने उसे मारकर एक-एक कर तीन आदमियों को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया। औरंगजेब के बाद दिल्ली की गद्दी पर ११ बादशाह बैठे; पर सभी नाम के ही बादशाह रहे।

इधर विहार फरुखशियर की सल्तनत के शुरू में अमीर जुमला और सर बुलन्द के अधीन रहा। बाद में मुर्शिदकुली खाँ, नसरतयार खाँ और फखरुद्दौला यहाँ के गवर्नर बने। इसके बाद शुजाउद्दीन बंगाल-विहार का नवाब हुआ और अलीवर्दी खाँ विहार का नायब नवाब या नायब गवर्नर। अलीवर्दी खाँ ने लुटेरे बंजारों को दबाया और बेतिया, भोजपुर, टिकारी आदि के राजाओं पर चढ़ाई कर उन्हें वश में किया। इसके बाद बंगाल-विहार के नवाब शुजाउद्दीन के उत्तराधिकारी सर्फराज खाँ को मारकर यह खुद ही नवाब हो गया। अलीवर्दी खाँ के वक्त में सबसे बड़ी घटना बंगाल-विहार पर मरहठों की चढ़ाई थी जो सन् १७४२ में हुई थी। वे लोग पटना के बाद दाउदनगर, टिकारी, गया, विहार, मुंगेर, भागलपुर और वीरभूम होते हुए बंगाल की ओर गये। अलीवर्दी खाँ ने उन्हें सेना-खर्च के लिये २२ लाख रुपया दिया और चौथ देने का भी वादा किया। इसके बाद अलीवर्दी खाँ ने विहार के विद्रोही अफगानों को दबाने की चेष्टा की। विद्रोही गुलाम मुस्तफा खाँ के बुलाने पर मराठे लोगों ने फिर बंगाल-विहार पर चढाई की। मरहठों को हटाने में अलीवर्दी खाँ को बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। इधर अलीवर्दी के दामाद जैनुद्दीन खाँ ने विद्रोही अफगानों को मिलाकर अपने बूढ़े ससुर

की नवाबी लेनी चाही ; मगर अफगानों ने जैनुद्दीन खाँ को मार डाला और उसके बीबी-बच्चों को भी कैद कर लिया। इसपर अलीवर्दी खाँ अफगानों को दबाने के लिये खुद विहार पहुँचा और ६ महीने तक पटने में रहा। उसने अपने नाती सिराजुद्दौला को विहार का नायब नाजिम बनाया, लेकिन वह अभी छोटा था, इसलिये उसकी जगह पर राजा जानकीराम विहार का शासन करने लगा। सन् १७५६ में अलीवर्दी खाँ के मरने पर सिराजुद्दौला बंगाल-विहार का नवाब हुआ। उसने राजा रामनारायण को विहार का गवर्नर नियुक्त किया ; लेकिन पूर्णिया को अलग कर उसे फौजदार शौकतजंग के अधीन रखा। शौकतजंग सिराजुद्दौला से स्वतंत्र होने की चेष्टा करने लगा। इसपर सिराजुद्दौला अपने सेनापति मोहनलाल को साथ लेकर पूर्णिया आ पहुँचा और राजा रामनारायण को भी बुला भेजा। लड़ाई में शौकतजंग मारा गया। इसके बाद मोहनलाल पूर्णिया का फौजदार बहाल हुआ। राजा रामनारायण ने भोजपुर, टिकारी और सिरिस कुटुम्बा के जमींदारों को मेल में रखने का प्रबन्ध किया और सब जगह शान्ति स्थापित की। लेकिन, १७५७ ई० के प्लासी के युद्ध ने राजनीतिक परिस्थिति में बिलकुल तबदीली ला दी।

अंगरेजी शासन—अंगरेज लोग बादशाह जहाँगीर के वक्त में ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी कायम कर भारत में व्यापार करने के लिये आये थे। विहार में पहले-पहल वे १६२० ई० में पहुँचे और यहाँ एक फैक्टरी खोली ; पर शाहजादा परवेज ने, जो यहाँ गवर्नर होकर आया था, उन्हें यहाँ से निकाल दिया। बारह वर्ष बाद पीटरमुंडी नामक एक अंगरेज बैलगाड़ियों पर पारा और सिन्दूर लादकर यहाँ बेचने आया। फिर, वर्षों बाद सन् १६५१

ई० में अंगरेजों ने पटना में एक फैक्टरी खोलने का प्रबन्ध किया। इसके लिये शाइस्ता खाँ और शाहशुजा को कीमती उपहार भेंट किया गया। अंगरेज लोग यहाँ से शोरा खरीदते और कपड़ा, सीसा, पारा वगैरह बेचते थे। धीरे-धीरे उन्होंने तिरहुत तथा विहार के उत्तरी हिस्सों में कई फैक्टरियाँ खोल दीं। सन् १६८१ ई० में नवाब शाइस्ता खाँ ने अंगरेजों को शोरा खरीदने से रोका और पटना-फैक्टरी के प्रधान को जेल भेज दिया। सन् १६८६ और १७०२ ई० मे भी पटने के अंगरेजों का माल जब्त किया गया और वे जेल भेज दिये गये। प्लासी युद्ध के बाद अंगरेजों का बल बढ़ा। लड़ाई में सिराजुद्दौला चुपचाप भागकर राजमहल चला आया था; पर पता चलने पर वह गिरफ्तार कर मुर्शिदाबाद भेज दिया गया, जहाँ वह मार डाला गया। सिराजुद्दौला के बाद बंगाल-विहार का नवाब मीरजाफर हुआ, जो अंगरेजों के हाथ का कठ-पुतला था। मीरजाफर ने हजारीअली के बदले कादिम हुसेन को पूर्णिया का फौजदार बनाया। क्लाइव और मीरजाफर अंगरेजी सेना के साथ पटना पहुँचे, मीरजाफर का लड़का मीरन विहार का नवाब बनाया गया और राजा रामनारायण उसका नायब।

सन् १७५८ में बंगाल-विहार को अंगरेजों के हाथ से छुड़ाने के लिये इलाहाबाद के गवर्नर मुहम्मद कुली खाँ, अवध के नवाब शुजाउद्दौला, बनारस के राजा बलवन्त सिंह, टिकारी के सुन्दर सिंह और भोजपुर के पहलवान सिंह ने मिलकर मुगल शाहजादा अली गौहर को, जो पीछे शाहआलम के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा, विहार पर कब्जा करने के लिये बुलाया। पर, पीछे इन लोगों में आपस में ही फूट हो गयी। कुछ दिनों के बाद फिर शाहआलम अवध के नवाब को साथ लेकर विहार पर कब्जा जमाने आया; लेकिन अंगरेजी सेना से उसे हार खानी पड़ी।

पूर्णिया के नवाब कादिलशाह शाहआलम के पक्ष में हो गया था ; इसलिये अंगरेजी सेना के साथ मीरन ने उसका पीछा किया ; परन्तु बिजली गिरने से वह रास्ते में ही मर गया । इसके कुछ समय बाद सन् १७६० में मीरकासिम नवाब हुआ ।

मीरकासिम ने दिल्ली के बादशाह से सुलह कर ली और उसे २४ लाख रुपया सालाना देना कबूल किया । उसने राजा रामनारायण को परिवार के साथ कैद कर लिया । राजा रामनारायण का महल पटने में अब भी दीख पड़ता है । रामनारायण के बाद क्रम से राजा राजवल्लभ, राजा नौबतराय और मीरमेहदी दीवान बहाल हुए । मीरकासिम ने विहार के जमींदारों को पूरी तरह दबाया और १७६१ ई० में अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटाकर मुंगेर लाया । कुछ दिनों के बाद ही मीरकासिम का अंगरेजों के साथ झगडा हो गया । अंगरेज लोग यहाँ के व्यापार पर कब्जा किये हुए थे । कम्पनी तो टैक्स देती ही नहीं थी, उसके कर्मचारी लोग भी टैक्स नहीं देने लगे । इधर देशी व्यापारियों को भारी टैक्स देना पड़ता था । इससे करीब सारा कारबार अंगरेजों के हाथ में चला गया था । नवाब को इससे बड़ा नुकसान पहुँचा । उसने इसकी शिकायत की । झगड़ा इसी पर बढ़ गया । पटना-फैक्टरी के मि० एलिस ने पटने को दखल में कर लिया । लेकिन, मीरकासिम की सेना ने शीघ्र ही पटने को अंगरेजों के हाथ से छुड़ाकर बहुत-से अंगरेजों को कैद कर लिया । परन्तु, बंगाल से अंगरेजी सेना पहुँच गयी और उसने मीरकासिम की सेना को कई स्थानों पर हराया । इसपर मीरकासिम मुंगेर से निकल पड़ा और अपने स्त्री-बच्चों को रोहतास के किले में भेज दिया । पटना आकर उसने सारे अगरेज कैदियों को मार डाला । पर, अंगरेजी सेना आगे बढ़ती हुई मुंगेर को

और फिर पटने को अपने अधिकार में कर बैठी। मीरकासिम भाग निकला और पीछे शाहआलम और अवध के नवाब शाहशुजा की सहायता से सन् १७६४ में अंगरेजों पर चढ़ाई की। लेकिन, बक्सर के पास चौसा की लडाई में वे लोग हार गये। इस विजय से अंगरेज लोग बंगाल-विहार के मालिक बन बैठे। सन् १७६५ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल-विहार की दीवानी मिली। राजा सिताबराय और धीरजनारायण अंगरेजों को दीवानी के काम में सहायता देने के लिये रखे गये।

इसके बाद अंगरेजों ने धीरे-धीरे अपना शासन मजबूत किया और प्रान्त के जमींदारों से आधिपत्य स्वीकार कराया। लेकिन, १८५७ में जब सारे भारत में अंगरेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हुआ तो विद्रोह की आग विहार में भी भभकी। यह विद्रोह सिपाही-विद्रोह के नाम से प्रसिद्ध है। विहार में इस विद्रोह के सरदार जगदीशपुर (शाहाबाद) के बाबू कुँवरसिंह थे। विद्रोह की आग साल-डेढ़ साल तक धधकती रही। इसके बाद वह दबा दी गयी। इसके पश्चात् दिल्ली का नाममात्र का सम्राट् भी हटा दिया गया। भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से बृटिश सरकार ने सीधे अपने हाथ में ले लिया। सन् १९१२ ई० में विहार-उड़ीसा बंगाल से अलग कर एक प्रान्त बनाया गया और पटने में राजधानी रही। सन् १९३६ में उड़ीसा भी अलग कर दिया गया और विहार एक अलग प्रान्त रह गया। बृटिश भारत के गवर्नरों द्वारा शासित ग्यारह प्रान्तों में विहार एक है। यह ४ कमिश्नरियों और १६ जिलों में बँटा हुआ है।

जनता और धर्म

जनसंख्या—सन् १९३१ की गणना के अनुसार विहार प्रान्त का रकबा ६९,९५० वर्गमील और आबादी ३,२५,९८,०५६ है, जिसमें १,६३,३६,६१८ पुरुष और १,६२,२१,४३८ स्त्रियाँ हैं। सन् १८८१ ई० में यहाँ की आबादी २,६७,४६,८४० थी। इस आधी शताब्दी में यहाँ ५८,११,२१६ आदमी अर्थात् सैकड़े २२ आदमी बढ़े। यहाँ ६८,५५१ गाँव और ६९ शहर हैं। इन शहरों की कुल जनसंख्या १४,६२,४०८ है। यह प्रान्त जनसंख्या में हिन्दुस्तान का करीब ११ वाँ भाग और क्षेत्रफल में करीब २६ वाँ भाग है। प्रान्तों के अन्दर बंगाल, युक्तप्रान्त और मद्रास जनसंख्या में इससे बड़े हैं; लेकिन क्षेत्रफल में इनके अलावे पंजाब, बम्बई, मध्यप्रदेश और ब्रह्मा भी बड़े हैं। इस प्रान्त में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ४६५ आदमी रहते हैं। जनसंख्या की सघनता में केवल बंगाल इससे बड़ा है।

संसार के दूसरे देशों के साथ इस प्रान्त की तुलना करने पर मालूम पड़ता है कि यह प्रान्त क्षेत्रफल और जनसंख्या में कितने ही शक्तिशाली राष्ट्रों के मुकाबले में है, बल्कि बहुतों-से बढ़ा-चढ़ा भी है। लेकिन, इसकी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आदि दशा इतनी गिरी हुई है कि उन राष्ट्रों के सामने इसकी कोई गिनती ही नहीं हो सकती। दुनिया की एक जबरदस्त ताकत ग्रेट ब्रिटेन, जो इस मुल्क का शासक है, उत्तरी आयरलैंड को मिलाकर भी रकबा या आबादी में हिन्दुस्तान के इस छोटे टुकड़े से डेढ़ गुना भी बड़ा नहीं है। फ्रांस की जनसंख्या पूरी सवा गुनी भी नहीं है। दुनिया में तहलका मचानेवाले जर्मनी देश की और सारे इटली साम्राज्य की जनसंख्या यहाँ की जनसंख्या से दूनी से भी कम है। विशाल राष्ट्र अमेरिका में भी इस प्रान्त से सिर्फ

चार गुने अधिक आदमी रहते हैं। पोलैंड, स्पेन, पोर्तुगाल, रोमानियां, जैकोस्लोवेकिया, युगोस्लेविया, बेलजियम, हंगरी, बलगेरिया, ग्रीस (यूनान), नारवे, स्वीडन, स्विटजरलैंड, डेनमार्क, आयरिश फ्री स्टेट, आस्ट्रेलिया, कनाडा, मिस्र (ईजिप्ट), टर्की, पैलेस्टाइन, अरब, इराक, ईरान (फारस), अफगानिस्तान आदि देशों की जनसख्या तो विहार की जनसंख्या से बहुत ही कम है। जनसंख्या की सघनता में बेलजियम और ग्रेट ब्रिटेन को छोड़कर संसार का कोई देश इसके मुकाबले में नहीं है। इस सम्बन्ध में कुछ आँकड़े अलग दिये हुए हैं जिनसे पता चलेगा कि दुनिया के प्रमुख देशों और भारत के बड़े प्रान्तों के बीच विहार का क्या स्थान है। विहार के विभिन्न जिलों के क्षेत्रफल और जनसंख्या का व्योरा भी अलग दिया गया है।

विहार प्रान्त के अन्दर दो छोटे-छोटे देशी राज्य हैं—सरायकेला और खरसावाँ। इनका क्षेत्रफल ६०२ वर्गमील और जनसंख्या १,८६,६२२ है। यहाँ ६७२ गाँव हैं। इनका शासन गवर्नर जेनरल के एजेण्ट द्वारा होता है, जो पूर्वीय देशी राज्यों के एजेण्ट कहलाते हैं।

आवास-प्रवास—विहार एक पिछड़ा हुआ प्रान्त होने के कारण विदेशियों और दूसरे प्रान्तवासियों का एक जबरदस्त अड्डा बन गया है और ये लोग यहाँ की जमीन, यहाँ की खान, यहाँ के उद्योग-धंधे, यहाँ के व्यापार और यहाँ की नौकरियों पर काफी दखल जमाये हुए हैं। सन् १९३१ की गणना के समय यहाँ हजार में १४ आदमी ऐसे थे जो जन्म से विदेशी थे। इनके अलावे ऐसे लोगों की संख्या भी बहुत थी जो विदेशी तो थे, पर जिनका उनका जन्म यहीं हुआ था। लेकिन, इन विदेशियों के अन्दर नैपालियों की भी गिनती है जिनकी संख्या सबसे अधिक है। ये करीब

३६,००० हैं। ये लोग यहाँ अधिकतर छोटी-छोटी नौकरियाँ करते हैं। विदेशियों में दूसरा स्थान यूरोपियनों का है और तीसरा अफगानी काबुलियों का। सन् १९३१ में विदेशों में जनमे यूरोपियनों की संख्या यहाँ ४,००० से कुछ कम थी, पर सब मिलाकर यूरोपियन ६,००० से अधिक ही थे। इन लोगों ने यहाँ के बड़े-बड़े कारबारों और नौकरियों पर अधिकार जमाया है। काबुली यहाँ हजार, डेढ़ हजार की संख्या में जमे हुए हैं। ये यहाँ कपड़े का व्यापार करते और सूद पर रुपये लगाते हैं।

विहार के अन्दर भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये हुए लोगों में बंगालियों की तादाद सबसे ज्यादा है। सन् १९३१ में बंगाल से विहार-उड़ीसा में आये हुए लोगों की संख्या १,६६,९२२ थी। सबसे अधिक और सबसे घनी आबादीवाले प्रान्त बंगाल के लिये विहार एक अच्छा उपनिवेश मिल गया है। बंगाल में अंगरेजी शिक्षा सबसे पहले और बहुत तेजी के साथ फैली। विहार प्रान्त बंगाल के अधीन रहने से पिछड़ी हुई अवस्था में रहा। इसलिये, बंगालियों को यहाँ आकर यहाँ की जमीन, खान, उद्योग-धंधे तथा सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों पर कब्जा करने में बड़ी आसानी रही। ये लोग वर्षों से यहाँ आकर बहुत बड़ी संख्या में बसते चले जा रहे हैं। रोजी-रोजगार मिलने के अलावे उन्हें यहाँ अपने यहाँ की अपेक्षा अच्छी आबहवा भी मिल जाती है; इसलिये इस ओर आने का उनका आकर्षण और भी बढ़ गया है। सन् १९२१ में यहाँ बंगालियों की संख्या १४,९८,७१९ थी। सन १९३१ में वे १८,६१,५३६ हो गये हैं। इस तरह पिछले १० वर्षों में यहाँ ३,६२,८१७ बंगाली बढ़े। औसत का हिसाब लगाने से मालूम पड़ता है कि यहाँ हर साल करीब ३६३ हजार

बंगाली बढ़ रहे हैं। सरकार के सभी नहीं तो अधिकांश विभागों में अधिकतर बड़ी-बडी नौकरियाँ बंगालियों के हाथ में हैं। बिहार की राजधानी पटने में ही जहाँ सन १९२१ ई० में ४,२५० बंगाली थे वहाँ सन् १९३१ ई० में ६,५४५ हो गये हैं। यहाँ बंगालियों की बड़ी-बड़ी कोठियाँ हैं। पिछली मनुष्य-गणना के समय बिहार में बाहर से आये हुए लोगों में सैकड़े ३३ बंगाली, २७ युक्तप्रान्ती और १९ मध्यप्रान्ती थे। बंगालियों के बाद संयुक्तप्रान्तियों की ही संख्या यहाँ बढ़ रही है। सन् १९३१ में यहाँ युक्तप्रान्त से आये हुए लोगों की संख्या १,२६,५०० थी। पिछले दस वर्षों में यहाँ १०,७०० युक्तप्रान्ती बढ़े हैं, लेकिन इन लोगों के लिये यहाँ सरकारी नौकरी पाना आसान नहीं है और प्रायः ये सरकारी नौकरी में हैं भी नहीं। यहाँ ये लोग खेती और उद्योग-धंधे को अपनाये हुए हैं। अधिकांश संयुक्तप्रान्ती शाहाबाद, सारन और चम्पारण जिले में हैं। मानभूम में उनकी संख्या १०,००० और पटने में ६,००० है। पूर्णिया जिले तथा भागलपुर और मुंगेर जिले के उत्तरी भाग में युक्तप्रान्तियों ने बहुत जमीन हासिल की है। पूर्णिया में युक्तप्रान्त से गये हुए लोगों की संख्या ५,००० से अधिक है। बिहार-उडीसा के अन्दर मध्यप्रान्त से जितने लोग आये हैं उनमें अधिकांश हजारीबाग, मानभूम और सिंहभूम में बसे हुए हैं, जहाँ उनकी संख्या ४५,००० है। यहाँ इन लोगों ने जमीन, खान और दूसरे-दूसरे व्यवसायों पर कब्जा किया है। यहाँ इन लोगों का अड्डा बहुत दिनों से जमा हुआ है। १९२१ ई० में हजारीबाग में केवल ४,००० मध्यप्रान्ती थे, पर १९३१ ई० में १५,००० हो गये हैं। बंगालियों की तरह युक्तप्रान्तियों और मध्यप्रान्तियों की भिन्न जाति या भाषा नहीं रहने के कारण बंगालियों के समान यह ठीक-ठीक पता नहीं लगाया जा सकता

है कि शुरू से लेकर अब तक यहाँ वे कितने की संख्या में रहते आये हैं। मद्रास के करीब एक हजार आदमी मानभूम और सिंहभूम में हैं। सिंहभूम में वे सन् १९२१ ई० में ३,५०० थे, पर सन् १९३१ तक बढ़कर ये ८,००० हो गये हैं। सन १९२१ की अपेक्षा सन १९३१ में पंजाब से आये हुए लोग यहाँ दूने हो गये हैं। इन लोगों की संख्या मुख्यतः ताता फैक्टरी के कारण बढ़ी है। राजपूताने के लोग सारे बिहार में फैले हुए हैं। लेकिन, मानभूम और सिंह-भूम में ये सबसे ज्यादा हैं। इनमें केवल मारवाड़ियों की संख्या ही बिहार में १५ हजार से अधिक है। यहाँ ये लोग बड़े धनी हो गये हैं। इन लोगों का मुख्य पेशा व्यापार है। इन लोगों ने यहाँ जमीन भी बहुत हासिल की है।

बाहर के लोग तो बिहार में आसानी से अपना पैर जमा लेते हैं, पर बिहारियों को बाहर जगह मिलना मुश्किल होता है। कुछ दिन तक भी स्थायी रूप से काम करने के लिये बाहर गये हुए यहाँ के लोगों की संख्या बहुत थोड़ी है। भारत से बाहर यहाँ के गये हुए थोड़े से लोगों में पढ़नेवाले और घूमने-फिरनेवाले हैं। यूरोपियनों के उपनिवेश अफ्रिका आदि में भी कुली आदि के काम के लिये यहाँ से बहुत थोड़े लोग गये हैं। फसल के समय कुछ कुली और व्यापारी नेपाल जाते हैं। वहाँ जंगल आबाद करने को मिलता है, लेकिन वहाँ की आबहवा अच्छी न होने तथा जंगली जानवरों के उत्पात के डर से और वहाँ अच्छा व्यवहार न पाने की वजह से भी लोग वहाँ जाकर खेती करना और रहना पसन्द नहीं करते हैं। सीमा के पास यहाँ के कुछ दूकानदार रहते हैं, लेकिन वे भी अपना घर-द्वार वहाँ भर सक नहीं बनाते हैं और भीतरी नैपाल में घुसना नहीं चाहते हैं। बिहार के लोग बंगाल और आसाम

के लोगों की अपेक्षा कुछ अधिक मजबूत होते हैं, इसलिये इन प्रान्तों में यहाँ के कुलियों की कुछ मांग रहती है। हर साल खास मौसिम मे थोड़े दिनों के लिये यहाँ के कुली बहुत बड़ी संख्या में वहाँ जाते हैं, लेकिन वहाँ जाकर वे विशेष कुछ कमा नहीं सकते; बल्कि बुरी आबहवा मे स्वास्थ्य खोकर ही लौटते हैं। सन् १९३१ में विहार-उड़ीसा से बंगाल गये हुए लोगों की संख्या ११,३८,८५० और आसाम गये हुए लोगों की संख्या ४,७१,७८६ थी। सन् १९२१ की अपेक्षा इस साल बंगाल मे ८८, ७५७ आदमी और आसाम मे ९८,८५६ आदमी कम गये थे। इससे मालूम पड़ता है कि वहाँ जानेवालों की संख्या बहुत घटती जा रही है। विहार के लोगों को बंगाल के किसी भी भाग में जमीन पर अधिकार करने नहीं दिया जाता है। यहाँ तक कि खेतों में भी इन्हें साधारणतः मजदूरी करने नहीं दी जाती है।* युक्तप्रान्त मे विहार के लोग प्रायः रोजी-रोजगार के लिये या बसने के लिये नहीं जाते। वहाँ लोग चन्द रोज के लिये घूमने-फिरने, तीर्थ आदि करने या भेंट-मुलाकात के लिये जाते हैं। अक्सर सीमा पर के जिलेवाले पच्छिम की ओर युक्तप्रान्त मे ही लड़कियों की शादी करना अधिक पसन्द करते हैं, इससे भी युक्तप्रान्त में गये हुए लोगों की संख्या बहुत बढ़ी है विहार-उड़ीसा से युक्तप्रान्त में गये हुए लोगों की संख्या सन् १९३१ में ६९,७३३ थी। इनमें थोड़े से को छोड़ सभी खास विहार

---

* Nowhere in Bengal is the Behari or the Oriya permitted to acquire rights in land and neither is commonly employed as an agricultural labourer—*Census Report of Bengal Part I Page 143*

के ही थे। मध्यप्रान्त में सन् १९३१ में बिहार-उड़ीसा से जाने वाले लोग ५१,९१९ थे। ये लोग भी बसने के लिये नहीं गये थे। ब्रह्मा में इस साल इन दो प्रान्तों से १८,७३२ आदमी गये थे। वहाँ जानेवालों की संख्या भी घट रही है। सन १९२१ की अपेक्षा सन् १९३१ मे वहाँ करीब २,००० कम आदमी गये थे। अब तो ब्रह्मा के अलग हो जाने से वहाँ जाना और भी मुश्किल हो गया है। ब्रह्मा जानेवाले बिहारी केवल कुली के रूप में वहाँ नहीं गये हैं। वहाँ इन लोगों ने कुछ जमीन भी ली है और वहाँ के उद्योग-धंधे में भी शरीक हुए हैं। बिहार से अधिकतर शाहाबाद के लोग वहाँ गये हैं। करीब ४५ वर्ष पहले वहाँ के पेगू और टोंगू जिले में शाहाबाद के जमींदार को वहाँ की जमीन आबाद करने के लिये दो स्टेट मिले थे। बिहार-उड़ीसा से बाहर गये हुए लोगों में सैकड़े ९१ बंगाल-आसाम, करीब ४ युक्तप्रान्त, करीब ३ मध्यप्रान्त और १ ब्रह्मा जानेवाले हैं। सन् १९३१ में बिहार-उड़ीसा से बाहर जानेवाले लोग १७,७०,१७३ और बाहर से यहाँ आनेवाले लोग ४,४६,५६३ थे। लेकिन, आने और जानेवालों में फर्क यह है कि जहाँ बाहर से लोग प्रायः यहाँ स्थायी या अस्थायी रूप से बसने और बड़े-बड़े काम खोजने आते हैं, वहाँ यहाँ से जानेवालों में थोड़े-से को छोड़ सभी चन्द रोज के लिये कुली का काम करने या दूसरे साधारण काम के लिये जाते हैं।

जीवनकाल—बिहारियों के जीवन काल पर विचार करने से मालूम होता है कि दूसरे उन्नतिशील देशों की अपेक्षा यहाँ के लोग बहुत कम उम्र तक जीते हैं। प्राचीन काल में, जब यह देश धनधान्यपूर्ण था और यहाँ शिक्षा की भी कमी नहीं थी, यहाँ के लोग बड़े दीर्घजीवी होते थे। पर, अब वह दशा नहीं

रह गयी है। पिछली मनुष्यगणना के अनुसार विहार-उड़ीसा प्रान्त में ६० वर्ष से ऊपर के आदमी हजार में ४० थे, जब कि उनकी संख्या जापान में ७७, इंगलैण्ड और वेल्स में ९४ तथा फ्रांस में १४० थी। बालमृत्यु भी उन्नतिशील देशों की अपेक्षा यहाँ अधिक है। १९३१ में अन्त होनेवाले दस साल के अन्दर विहार-उड़ीसा के बृटिश जिलों में कुल ९०,९३,४९४ मृत्यु हुई थी जिनमें एक वर्ष से नीचे के शिशु की मृत्यु-संख्या १७,६०,८०२ और एक से पाँच वर्ष तक के शिशु की मृत्यु-संख्या १७,७७,८७४ थी। ज्यादा हिफाजत करने पर भी लडकियों की अपेक्षा लड़कों की मृत्यु अधिक होती है। लड़के जहाँ हजार में १५२ मरते हैं वहाँ लड़कियाँ १३२। दूसरे देशों के मुकाबले विहार-उड़ीसा में फी हजार कितने लड़के-लड़कियों की मृत्यु होती है, यह नीचे के आँकड़े से मालूम होगा।

मैक्सिको	१९८	जर्मनी	१०८
लंका (सिलोन)	१८२	फ्रांस	९२
हंगरी	१८०	इंगलैण्ड और वेल्स	७२
भारतवर्ष	१७९	अमेरिका	७१
जापान	१४८	स्विटजरलैंड	५९
विहार-उड़ीसा	१४३	नारवे	५१
	इटली	१२४	

सामाजिक दशा—विहार प्रान्त में स्त्री-पुरुषों की संख्या में बहुत फर्क नहीं है। यहाँ एक हजार पुरुषों में ९९३ स्त्रियाँ हैं। प्रान्तों के अन्दर उड़ीसा में स्त्रियों का अनुपात सबसे अधिक है और पंजाब मे सबसे कम। इङ्गलैंड और वेल्स में हजार पुरुषों मे स्त्रियों की संख्या १,०८७, जर्मनी में १,०६७, उड़ीसा में १.०५९, मद्रास में १,०२५, विहार में ९९३, जापान में ९९०, अमेरिका मे

९७६, आस्ट्रेलिया में ९६७ और सारे हिन्दुस्तान में ९४० है। हिन्दू की प्रमुख जातियों में ग्वाला आदि कई जातियों की अपेक्षा कायस्थ में स्त्रियों की सख्या कम है। राजपूत और भूमिहार ब्राह्मण में स्त्रियों का अनुपात और भी कम है। चमार और ताँती आदि में स्त्रियाँ अधिक हैं।

बिहार में भारत के अन्य प्रान्तों की तरह बाल विवाह बहुत होता है। पाश्चात्य देशों में इसकी अपेक्षा कहीं अधिक उम्र में शादी होती है। इसका कारण वहाँ भी आबहवा और शिक्षा है। बिहार-उड़ीसा प्रान्त में किस उम्र के पुरुष और स्त्री की हजार में कितने अविवाहित, विवाहित और विधुर या विधवा हैं, यह नीचे के आँकड़े से पता चलेगा। अविवाहिता स्त्रियों के अन्दर वेश्याओं और रखेलियों की भी गिनती है।

पुरुष

उम्र	अविवाहित	विवाहित	विधुर
०—५	९६८	३१	१
५—१०	८३३	१६३	४
१०—१५	७१८	७५	७
१५—२०	३९६	५८६	१८
२०—२५	२३९	७३४	२७
२५—३०	८६	८७१	४३
३०—४०	४७	८८९	६४
४०—५०	२६	८५८	११६
५०—६०	२०	७९२	१८८
६० से ऊपर	१८	६७८	३०४

स्त्रियाँ

उम्र	अविवाहिता	विवाहिता	विधवा
०—५	९४८	५०	२
५—१०	७१९	२७३	८
१०—१५	५१९	४६७	१४
१५—२०	१०५	८६०	३५
२०—२५	३८	९१०	५२
२५—३०	१४	८७९	१०७
३०—४०	१०	७७८	२१२
४०—५०	६	५७०	४२४
५०—६०	५	३६७	६२८
६० से ऊपर	५	२०७	७८८

इङ्गलैंड-वेल्स और विहार-उड़ीसा की सामाजिक दशा की तुलना के लिये इन दोनों स्थानों की विभिन्न उम्रों के अविवाहित स्त्री-पुरुषों की फी हजार संख्या नीचे दी जाती है :—

उम्र	पुरुष		स्त्रियाँ	
	विहार-उड़ीसा	इंगलैंड-वेल्स	विहार-उड़ीसा	इङ्गलैंड-वेल्स
०—५	९६८	१,०००	९४८	१,०००
५—१०	८३३	१,०००	७१९	१,०००
१०—१५	७१८	१,०००	५१९	१,०००
१५—२०	३६६	९९६	१०५	९८२
२०—२५	२३६	८२२	३८	७२६
२५—३०	८६	४४६	१४	४१०
३०—४०	४७	१९७	१०	२३२
४०—६०	२४	१२२	६	१६७
६० से ऊपर	१८	९२	५	१४२

खास विहार प्रान्त में विधवाओं की कुल संख्या २५,३८,३८६ है, जिसमें ५,४६८ विधवाएँ ५ वर्ष तक की, ४९,६७३ विधवाएँ ५ से १५ वर्ष तक की, ७,४५,०४० विधवाएँ १५ से ४० वर्ष तक की और १७,३८,२०५ विधवाएँ ४० से अधिक उम्र की हैं। विभिन्न जिलों की विधवाओं का ब्योरा अलग दिया गया है। विहार में हिन्दू की कुछ प्रमुख जातियों की फी हजार स्त्रियों में विधवाओं की संख्या इस प्रकार है :—

ब्राह्मण	२४२	कोयरी	१५६
भूमिहार ब्राह्मण	२४०	ग्वाला	१५१
राजपूत	२३८	तेली	१५०
कायस्थ	२१५	चमार	१३८
तांती	१७५	मुसहर	१०४

धर्म और जातियाँ—विहार के विभिन्न धर्मावलम्बियों की संख्या इस प्रकार है :—

हिंदू	२,६०,४२,७४५	जैन	३,६२६
मुसलमान	४१,४२,७४३	बौद्ध	५२३
आदिम जाति	२०,३०,०१६	पारसी	२२१
ईसाई	३,३२,५४९	अन्य जाति	२७
सिक्ख	५,६०६		

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से हिन्दू प्रति सैकड़े ८०, मुसलमान १३, आदिम जाति ६ और ईसाई १ हैं। पिछले दस वर्षों में हिंदू सैकड़े १०, मुसलमान सैकड़े १६ और ईसाई सैकड़े ३४ बढ़े हैं। इस तरह हिंदू की अपेक्षा मुसलमान ड्योढ़ी गति से और ईसाई तिगुनी-चौगुनी गति से बढ़ रहे हैं। ईसाई पिछले तीस वर्षों में दूने से अधिक हो गये हैं। पिछले दस वर्षों में ही यहाँ ८३,४८४ ईसाई बढ़े हैं। मुसलमान अधिकतर सूबे

के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं। दक्षिण भाग में धीरे-धीरे उनकी संख्या कम होती गयी है। पूर्णिया जिले में मुसलमानों का अनुपात सबसे अधिक है। वहाँ सैकड़े ४० मुसलमान हैं। ईसाई मिशनरियों का अड्डा छोटानागपुर है। यहाँ के जिलों में तथा संथालपरगना, पटना, चम्पारण और मुंगेर जिले में ईसाई बहुत बड़ी संख्या में हैं। लेकिन, प्रांत के तीन चौथाई से भी अधिक ईसाई केवल राँची जिले में हैं। बिहार प्रान्त के विभिन्न जिलों में लोग कितनी तेजी से ईसाई बनाये जा रहे हैं और उनकी संख्या पिछले तीस वर्षों से कितनी बढ़ रही है, यह अलग दिये हुए आँकड़े से मालूम होगा।

हिंदू एक व्यापक शब्द है। साधारण तौर पर हिंदुस्तान में उत्पन्न हुए धर्म को माननेवाले हिंदू कहलाते हैं। इसके अंदर सिक्ख, बौद्ध, जैन, आदिम जाति सभी की गिनती हो जाती है। मनुष्य-गणना के समय जो सिक्ख, बौद्ध, जैन या आदिम जाति के लोग अपने को हिंदू लिखाते हैं उनकी गिनती तो हिंदू में हो जाती है और जो अपने भिन्न सम्प्रदाय के नाम लिखाते हैं उनकी उन्हीं में गिनती होती है। हिन्दुओं की दलित जाति और आदिम जाति के अन्दर किसकी गणना की जाय किसकी नहीं, यह एक बहुत कठिन काम है। कुछ आदिम जाति की गिनती दलित जाति या हरिजन में हो जाती है। कितनी ही आदिम जातियों और दलित जातियों के लोग अपने को अब क्षत्रिय आदि कहने लगे हैं और उन्हीं में मिल-जुल गये हैं या मिलते-जुलते जाते हैं। सभी गिरी हुई जातियाँ अब अपने को ऊपर उठा रही हैं। चमार अपने को चंद्रवंशी क्षत्रिय, दुसाध दुःशासनवंशी क्षत्रिय, कहार कुरुवंशी क्षत्रिय, कोयरी कुशवंशी क्षत्रिय, अहीर यादव या चंद्रवंशी क्षत्रिय और कलवार हैहयवंशी क्षत्रिय कहलाने लगे हैं।

नाई अपने को नापित ब्राह्मण और बढ़ई, लोहार, सोनार अपने को विश्वकर्मा ब्राह्मण बताते हैं। उन्नति की ओर बढ़नेवाली प्रायः सभी जातियों की यही हालत है। हिन्दू की प्रमुख जातियों में सबसे अधिक संख्या ग्वालों की है जो ३४ लाख हैं। उसके बाद ब्राह्मण का स्थान है जो १५ लाख हैं। इसके पश्चात क्रम से, संथाल, कुरमी, राजपूत, कोयरी, दुसाध, चमार, जोलहा, तेली, भूमिहारब्राह्मण आदि की संख्या है। हिन्दुओं की कुछ प्रमुख जातियों की संख्या अलग दी हुई है।

पिछली मनुष्य-गणना के समय विहार-उड़ीसा में ३१ जातियों को दलित जाति या हरिजन के अन्दर गिना गया था। उन्हें व्यवस्थापिका सभाओं में निश्चित स्थान दिया गया है और उनके चुनाव का अलग प्रबन्ध हुआ है। इन ३१ जातियों में नीचे लिखी २२ जातियाँ विहार में प्रमुख हैं। शेष ९ जातियाँ—घुसुरिया, गोदरा, गोखा, इरिका, कन्दरा, केला, महुरिया, मंगन और सियाल या तो विहार में नहीं हैं या हैं भी तो नाममात्र के लिये हैं। विहार में हरिजनों की संख्या करीब ५१,१७,००० है; अर्थात् ६ में एक आदमी यहाँ हरिजन हैं। जिन जातियों को सार्वजनिक कुँओं पर पानी भरने और सार्वजनिक मंदिरों में जाने की इजाजत नहीं है उन्हीं की गिनती हरिजनों में की गयी है। उन जातियों की संख्या नीचे दी जाती है।

दुसाध	१२,९०,९३६	भोगत	६२,०००
चमार	१२,५५,६९८	तूरी	५३,०००
मुसहर	७,२०,०५१	घासी	४६,०००
भुइयाँ	५,१५,०९३	मोची	२३,०००
धोबी	२,६६,००८	हलालखोर	२२,२८९

भूमिज	१,७२,३९८	पन	११,०००
पासी	१,७१,३४१	नट	९,६२८
डोम	१,५१,६२१	चौपाल	२,७३७
बौरी	१,४५,०००	कंजर	२,५६६
रजवार	१,३३,०००	कुररियार	६३१
हाड़ी	६३,०००	लालबेगी	१५७

दुसाध, चमार, मुसहर, धोबी, पासी, डोम और भुइयाँ विहार के सभी स्थानों में ; हलालखोर उत्तर विहार में ; कंजर, कुररियार, चौपाल केवल पूर्णिया में और लालबेगी पटना में मिलते हैं। हाड़ी मुख्यत: भागलपुर, पूर्णिया, संथालपरगना, हजारीबाग, मानभूम और सिंहभूम में ; बौरी संथालपरगना और मानभूमि में ; भोगता गया, हजारीबाग, राँची और पलामू में ; मोची संथालपरगना और मानभूम में ; नट पटना-कमिश्नरी, सारन और पूर्णिया में ; पन राँची में ; रजवार पटना और छोटानागपुर की अधित्यका में ; तूरी पूर्णिया, गया और छोटानागपुर की अधित्यका में तथा घासी और भूमिज छोटानागपुर में पाये जाते हैं। डोम, हलालखोर और लालबेगी मुसलमान भी देखे जाते हैं। बौरी और रजवार के कुछ लोग ईसाई भी हैं। इसी तरह भोगता, भूइयाँ, भूमिज, घासी, पन और तूरी हिन्दू के अलावे ईसाई धर्म और आदिम जाति के भी हैं।

आदिम जाति के लोग मुख्यत: छोटानागपुर की अधित्यका में पाये जाते हैं। मुंडा और द्राविड़, इनकी दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। विहार में पिछली मनुष्य-गणना के समय इन दो श्रेणियों की नीचे लिखी २१ मुख्य जातियाँ थीं।

संथाल—	१४,११,९५०	खेतौरी—	२६,७८७
ओराँव—	५,५३,७८५	गोंद—	१८,२८८

भूइयाँ—	५,१५,०९३	चेरो—	१७,९०६
मुंडा—	४,७४,२०७	कोरवा—	१३,०२१
हो—	३,३८,८२७	करमाली—	८,६३२
भूमिज—	१,७२,३९८	बिरहोर—	२,०४६
खरिया—	८१,३६०	असुर—	२,०२४
खरवार—	६३,१२४	बिरजिया—	१,५५०
सौरिया पहड़िया—	५९,८९१	बथूडी—	९९८
माल पहड़िया—	३७,४३७	सवर—	७६२
	थारू— ३७,३३८		

ऊपर लिखी जातियों की कुल संख्या ३८,४१,४२४ है, जिनमें आधे से अधिक ने अपने को हिन्दू-धर्मावलम्बी, आधे से कम ने आदिम जाति का धर्म माननेवाला और शेष ने अपने को ईसाई बताया है। इनके अलावे बौरी, रजवार, भोगता, तूरी, पन, घासी, घटवार, महली, चिकबरैक, कोरा, किसान, गोरैत और बिंझिया भी आदिम जाति के ही हैं। इनमें प्रथम ६ की गिनती दलित जाति या हरिजन में भी हुई है। उपर्युक्त १३ जातियों की कुल संख्या करीब ६½ लाख है। इनमें से थोड़े-से ने अपने को ईसाई और आदिम जाति का धर्म माननेवाला बताया है। बाकी सभी हिन्दू जाति में मिल-जुल गये हैं और अपने को हिन्दू बताते हैं। इस तरह बिहार में करीब ४५ लाख आदिम जाति के लोग होते हुए भी केवल २०,३०,०१६ लोगों ने ही अपने को आदिम जाति का धर्म माननेवाला लिखाया है। छोटानागपुर के आदिम जाति के लोगों ने अभी हाल में अपना एक संगठन किया है और अपने संगठन का नाम 'आदिवासी सभा' रखा है।

खेती और पैदावार

विहार प्रान्त का रकबा ४,४३,२४,१९४ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इस रकबे में से १,९९,१६,६०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ६५,४२,४६० एकड जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ५१,३३,५०१ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी कभी जोती-बोयी नहीं जाती और बेकार पड़ी रहती है। ६२,९२,३६६ एकड़ जमीन पहाड़, नदी आदि के कारण खेती के काम मे नहीं लायी जा सकती। ६४,२९,२६७ एकड़ जमीन जंगल से ढकी है। फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम पड़ता है कि प्रान्त की सैकड़े ६० भाग जमीन जोत के अन्दर है, जिसमें ४५ भाग जमीन उस साल बोयी गयी थी और १५ भाग परती पड़ी रह गयी थी। सैकड़े ११ भाग जमीन खेती के लायक होने पर भी बराबर बेकार पडी रहती है। सैकड़े १४ भाग जमीन खेती के लायक है ही नहीं, और १५ भाग जमीन में जंगल भरा है। प्रान्त के उत्तर भाग की जमीन और दक्षिण भाग मे गंगा के किनारे की जमीन अनुपात से जोत-बावग के अन्दर अधिक है। यही भूभाग खेती के लिये विशेप उपयोगी है और यहाँ पैदावार भी अधिक होती है। छोटानागपुर की अधिकतर तो जंगलों और पहाड़ों से भरा है। यहाँ की जमीन का सिर्फ एक चौथाई भाग जोता-बोया जाता है। यह भाग खेती के लिये नहीं, पर खनिज-पदार्थ के लिये प्रसिद्ध है।

प्रान्त मे फसल मुख्यतः तीन प्रकार की होती है—भदई, अगहनी और रबी। सबसे मुख्य रबी फसल है। सन् १९३६-३७ में यहां ९९,०८,१०० एकड़ जमीन में रबी फसल,

८२,३९,७०० एकड़ में अगहनी, ६३,२१,६०० एकड़ में भदई और ४,१७,९०० एकड़ में कन्द, मूल, फल और तरकारी हुई थी। फी सैकड़े का हिसाब लेने से मालूम होता है कि यहाँ सैकड़े ३९ भाग में रबी, ३३ भाग में अगहनी, २६ भाग में भदई तथा २ भाग में फल, तरकारी आदि होती है। रबी फसल में मुख्य गेहूँ, जौ, बूट, मटर, अरहर, तीसी, रेंड़ी, तम्बाकू आदि; भदई में धान, मकई, मरुआ, ज्वार, बाजरा आदि और अगहनी में मुख्य धान है। प्रान्त के ४५,७०,७०० एकड़ जमीन में, अर्थात् जोती-बोयी जानेवाली जमीन के सैकड़े २३ भाग में एक से अधिक फसल होती है। छोटानागपुर की अधित्यका में दो-तीन फसलवाली जमीन बहुत ही कम है। वहाँ जोत के अन्दर आयी हुई जमीन में बहुत-सी जमीन ऐसी है जो दो साल, तीन साल और चार साल परती रहने के बाद बोने के काबिल होती है। प्रान्त के बाकी भागों में जोत के अन्दर आयी हुई कुछ जमीन अगर परती रही भी तो एक साल के बाद ही बोने लायक हो जाती है।

प्रान्त की कितनी जमीन में कौन-सी फसल होती है, यह सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार नीचे लिखा है :—

फसल	एकड़	खैहन	एकड़
खैहन अन्न—	२,०१,९९,८००	धान—	९९,४८,५००
तेलहन—	१५,४०,८००	मकई—	१६,४१,९००
ऊख—	४,६०,५००	बूट—	१३,७३,७००
कन्दमूलफलतरकारी	४,१७,९००	जौ—	१२,७१,९००
जूट—	२,११,०००	गेहूँ—	११,२९,०००
तम्बाकू—	१,२६,८००	मरुआ—	६,१५,७००
मसाला—	७८,४००	अरहर—	३,९२,२००

फसल	एकड़
रूई—	३१,५००
सन के सिवा रेशेदार पौधे	११,५००
चारा—	२३,५००
चाय—	४,०००
नील—	१,४००
विविध अन्न—	१०,६०,६००
विविध पैदावार—	३,१९,६००
	२,४४,८७,३००

खैहन	एकड़
ज्वार (जिनेरा)—	७२,९००
बाजरा—	६५,६००
अन्य खैहन—	३६,८८,४००
	२,०१,९९,८००

तेलहन	एकड़
तीसी—	५,५०,३००
राई-सरसो—	५,३३,२००
तिल—	१,१५,१००
रेंडी—	३२,७००
अन्य तेलहन—	३,०६,५००
	१५,४०,८००

धान विहार की मुख्य फसल है। सारी जमीन के करीब आधे हिस्से में केवल धान पैदा होता है, आधे में बाकी सब फसलें होती हैं। हिन्दुस्तान में धान की सबसे अधिक खेती बंगाल में, फिर बर्मा मे और उसके बाद विहार मे होती है। धान की भदई और अगहनी दोनों फसलें होती है। लेकिन, भदई धान की अपेक्षा अगहनी धान बहुत होता है। धान की पचासों किस्में होती हैं। यहाँ की दूसरी मुख्य फसल मकई है। यों तो यह सब जिले में होती है, पर तिरहुत और भागलपुर कमिश्नरी में इसकी उपज अधिक है। बूट पटना कमिश्नरी और मुंगेर जिले में अधिक उपजाया जाता है। जौ, गेहूँ, प्रायः बराबर रकबे में ही बोये जाते हैं। छोटानागपुर की अधित्यका मे गेहूँ बहुत थोड़ा होता है। मरुआ की खेती दरभंगा, भागलपुर, राँची और हजारीबाग जिले में सबसे अधिक होती है। ज्वार की फसल पटना, शाहाबाद, सारन और मुंगेर में अधिक होती है।

बिलकुल उठ-सी गयी है; क्योंकि विदेशों से नकली नील सस्ती कीमत में यहाँ आने लगे हैं। सन् १८९६ में जहाँ इस प्रान्त के अन्दर ३½ लाख एकड़ में नील उपजाया जाता था, वहाँ अब डेढ़ हजार एकड़ में भी नहीं उपजाया जाता है। फल की खेती अधिकतर मुजफ्फरपुर और दरभंगे जिले में होती है। मुजफ्फरपुर आम, लीची, अमरूद और नीबू के लिये प्रसिद्ध है। हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) में केला बहुत होता है।

खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती है; तब भी सिंचाई का कुछ प्रबन्ध है ही। प्रान्त में उपजाऊ जमीन के सैकड़े २३ भाग में सिंचाई होती है। करीब ८ भाग तालाबों से, ४ भाग खानगी नहरों से, ३.३ भाग सरकारी नहरों और कुओं से तथा ५ भाग दूसरे जरियों से सींचा जाता है। कितनी एकड़ जमीन किस जरिये से सींची जाती है, यह नीचे लिखा है।

	एकड़
तालाब—	१५,०६,६२०
खानगी नहर—	८,३२,०९८
सरकारी नहर—	६,६३,११८
कुआँ—	५,७०,७९५
दूसरे जरिये—	९,८९,०११
	४५,६१,६४२

सिंचाई का सबसे ज्यादा प्रबन्ध पटना कमिश्नरी में है। उसके बाद पूर्णिया को छोड़ भागलपुर कमिश्नरी में। छोटा-नागपुर की कमिश्नरी में सबसे कम सिंचाई का इन्तजाम है, लेकिन मानभूम और सिंहभूम जिले में सिंचाई का इन्तजाम साधारणतः अच्छा है। तिरहुत के जिलों में सबसे अधिक सारन में सिंचाई होती है, और जिलों में करीब एक-सी ही। सरकारी

नहर पटना, गया, शाहाबाद और चम्पारण जिले में हैं। सरकारी नहरों से सबसे अधिक जमीन शाहाबाद जिले में सींची जाती है। पटना, गया और शाहाबाद में सरकारी नहरें सोन नदी से निकाली गयी हैं। चम्पारण में ढाका और त्रिवेणी की नहरें हैं। छोटानागपुर के जिले तथा पूर्णिया को छोड बाकी सभी जिलों में खानगी नहरें हैं। लेकिन, इन नहरों से सिंचाई का सबसे अधिक प्रबन्ध गया, पटना और भागलपुर जिले में है। तालाबों से हर जिले में सिंचाई होती है, लेकिन गया में सबसे अधिक और राँची तथा पूर्णिया में नाममात्र के लिये। कुओं से सारन, गया, शाहाबाद और पटना में अधिक सिंचाई होती है, और जिलों में कम।

खेती की उन्नति के लिये सरकार ने एक महकमा खोल रखा है। इस महकमे के बड़े अफसर डाइरेक्टर कहलाते हैं। खेती के सम्बन्ध में अनुसंधान करना और उसका फल कृषकों तक पहुँचाना इस महकमे का काम है। सबौर (भागलपुर) में कृषि-अनुसंधान-शाला बहुत दिनों से काम करती आ रही है। यहाँ भिन्न-भिन्न अन्नों के बीजों तथा खेती के औजारों को उन्नतावस्था में लाने की चेष्टा की जाती है। बहुत तरह के उन्नत बीज तैयार हो गये है। प्रान्त के अन्दर कुल १९ फार्म खोलकर उनकी आजमाइश की जा रही है। कई फार्मों में मवेशियों की नस्ल सुधारने की कोशिश भी हो रही है। मुजफ्फरपुर के पास मुशहरी नामक स्थान में ऊख के लिये अनुसंधान-शाला खुली है। खेती के काम के लिये प्रान्त ४ छोटे रकबों में बाँट दिया गया है—उत्तर विहार रेंज, दक्षिण विहार रेंज (पटना, गया और शाहाबाद जिले) दक्षिण-पूरब विहार रेंज (भागलपुर और मुँगेर के दक्षिणी हिस्से तथा संथालपरगना) और छोटानागपुररेंज।

पहले का सदर आफिस मुजफ्फरपुर, दूसरे का पटना, तीसरे का सबौर और चौथे का कांके है। सेपाया (सारन—गोपालगंज) में बड़ा कृषि-फार्म तथा मुजफ्फरपुर, सीवान, दरभंगा और पूर्णिया में छोटे कृषि-फार्म हैं। बिरीह (चम्पारण) में प्रदर्शन के लिये एक फार्म है। साउथ विहार रेंज में पटना में बड़ा फार्म तथा विक्रमगंज (शाहाबाद), गया, नवादा और सिरीस (गया—औरंगाबाद) में छोटे फार्म हैं। दक्षिण-पूरब विहार रेंज के अन्दर भागलपुर में बड़ा फार्म तथा जमुई, मुँगेर और बाँका (भागलपुर) में छोटे फार्म हैं। छोटानागपुर रेंज में कांके में बड़ा फार्म तथा पुरूलिया, चाइबासा, नेटारहाट और चियांकी (दोनों पलामू जिले में) में छोटे फार्म हैं। कृषक इन फार्मों तथा उन्नतावस्था के बीजों, औजारों तथा मवेशियों से लाभ उठा सकते हैं।

विहार प्रान्त में, जहाँ सैकड़े ७९–८० आदमी कृषि पर निर्भर करते हैं, कृषि-सम्बन्धी एक भी स्कूल-कालेज का न रहना बहुत खटकता है। कुछ दिन पहले भारतीय सरकार ने पूसा (दरभंगा) में एक बहुत बड़ा कृषि-अनुसंधानशाला और कृषि-कालेज खोला था; पर उसे लोकप्रिय बनाने की चेष्टा नहीं की गयी, जिससे इस प्रान्त को उससे विशेष लाभ नहीं पहुँचा। यह संस्था कुछ वर्ष हुए दिल्ली ले जायी गयी है। लेकिन, अब भी वहाँ भारतीय सरकार की ओर से विहार-उड़ीसा के कृषि-सम्बन्धी कुछ काम के लिये दो अफसर रहते हैं। कृषि-प्रधान इस प्रान्त में सरकार कृषि के लिये काफी खर्च नहीं करती। सन् १९३६-३७ में जहाँ युक्तप्रान्त की सरकार ने अपने प्रान्त के अन्दर इस मद में २१ लाख रुपया, अर्थात् १० पाई प्रति एकड़ और पंजाब सरकार ने अपने प्रान्त के अन्दर २८ लाख रुपया, याने २२ पाई प्रति एकड़ खर्च किया था, वहाँ विहार सरकार ने सिर्फ ५ लाख रुपया, अर्थात्

४ पाई प्रति एकड़ खर्च किया। यह बात अत्यन्त ही शोचनीय है।

विहार के कृषि-प्रधान प्रांत होने पर भी यहाँ की उपज की यह हालत है कि लोगों को भरपेट अन्न नहीं मिलता। दो फसल-वाली जमीन का दूना रकबा मान लेने पर यहाँ की जोती-बोई जानेवाली जमीन कुल २,४४,८७,३०० एकड़ होती है और यहाँ के वाशिन्दे ३,२५,५८,०५६ हैं। इस तरह आदमी पीछे यहाँ सिर्फ ३/४ एकड़ जमीन पड़ती है। उपज की जो हालत है उससे कोई भी आदमी समझ सकता है कि पौन एकड़ जमीन से किसी का साल भर गुजर कैसे हो सकता है। यहाँ के २,०१,९९,८०० एकड़ जमीन में खेहन (दलहन सहित) अन्न उपजता है और कुल खेहन अन्न करीब १७,९०,००,००० मन होते हैं। इसमें करीब १,००,००,००० मन अन्न बीज के लिये रखने की जरूरत पड़ जाती है। इस तरह सिर्फ १६,९०, ००,००० मन अन्न खाने के लिये रह जाते हैं। यदि प्रति व्यक्ति के लिये एक शाम का दलहन सहित औसतन ६ छटाक अन्न मान लिया जाय तो प्रान्त की कुल आबादी के लिये २२,२८,००,००० मन अन्न चाहिये; लेकिन उपज इससे ५,३८,००,००० मन कम ही होती है। इस तरह प्रति दिन करीब ८० लाख आदमी, अर्थात् सारी जनसंख्या के करीब एक चौथाई आदमी भूखे रहते हैं या कहिये कि करीब आधे आदमी बराबर अधभूखे रहते हैं। यह तो साधारण समय की बात है; लेकिन अकाल के समय में तो और भी हाहाकार मच जाता है। यह ध्यान देने की बात है कि ऊपर जो खाने के लिये बचा हुआ अन्न बताया गया है उसी में से कुछ अन्न लोग अपने मवेशियों को भी खिलाते हैं। यहाँ के उद्योग-धंधे की हालत अच्छी नहीं रहने से खनिज पदार्थों के अलावे कुछ अन्न भी

जीवन के अन्य आवश्यक चीजों की खरीद में बाहर चला जाता है। लेकिन, उसकी जगह में लोगों को कुछ कन्द-मूल-फल, मांस-मछली और सागपात आदि खाने को मिल जाते हैं। जो हो, इतना तो ठीक है कि यहाँ जो अन्न पैदा होता है वह यहाँ के सिर्फ तीन चौथाई लोगों के खाने भर के लिये ही होता है। इसलिये, इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि उद्योग-धंधे को बढ़ाने के अलावे यहाँ की खेती की दशा सुधारकर उपज बढ़ायी जाय और जो थोड़ी-सी जमीन जोत के अन्दर आने के लायक होने पर भी अभी जोत में नहीं आयी है उसे जोत के अन्दर लायी जाय, नहीं तो यहाँ की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये और कोई उपाय नहीं है।

पेशा और उद्योग-धंधा

सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ के हजार आदमियों में ४२० आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। काम करनेवाले ४२० आदमियों में ३३१ आदमी कृषि और पशु-पालन में, २८ उद्योग-धंधे में, १४ व्यापार में, ३ गमनागमन, अर्थात् डाक, रेल, जहाज, नाव, सड़क आदि में, ३ पंडा-पुरोहित, वकील-मुख्तार, डाक्टर-वैद्य, शिक्षक आदि के पेशे में, १ शासन-कार्य में तथा ४० विविध कामों में लगे हुए हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से काम करनेवालों में सैकड़े ७६ आदमी खेती और पशु-पालन के काम में लगे हैं। हिन्दू की भिन्न-भिन्न जातियों के अधिकांश लोग अपने पुस्तैनी धंधे में लगे हुए हैं।

उन्नतिशील पाश्चात्य देशों की अपेक्षा यहाँ का उद्योग-धंधा बहुत ही गिरी हुई हालत में है। लेकिन, यहाँ लोहा, कोयला आदि खनिज पदार्थ काफी तौर से पाये जाने के कारण उद्योग-धंधों के बढ़ने की काफी गुंजाइश है। ऐसी सुविधा हिन्दुस्तान के किसी प्रान्त को नहीं है। पर, लोगों का ध्यान इस ओर नहीं होने से यहाँ कलाकौशल की वृद्धि नहीं हो रही है। यहाँ के उद्योग-धंधे पुराने तरीके से छोटे-छोटे पैमानों पर चल रहे हैं। आधुनिक आवश्यकता की बहुत कम चीजें यहाँ तैयार होती हैं, प्रायः सारी चीजें लोगों को बाहर से ही मँगानी पड़ती है। कल-कारखानों का यहाँ बहुत ही अभाव है। पाश्चात्य देशों के अन्दर इतने बड़े मुल्क में जहाँ हजारों फैक्टरियाँ रहती हैं वहाँ इस प्रान्त में छोटी-बड़ी फैक्टरियाँ केवल दो-तीन सौ की संख्या में

हैं। सन् १९३६ में फैक्टरी-ऐक्ट के अनुसार यहाँ कुल ३३७ फैक्टरियों के नाम दर्ज थे, जिनमें ६३ फैक्टरियाँ साल भर से बन्द ही थीं और केवल २७४ फैक्टरियाँ काम कर रही थीं। चालू फैक्टरियों का ब्यौरा इस प्रकार है—आटा, चावल, दाल और तेल की फैक्टरियाँ ८७, चीनी फैक्टरी ३९, रेलवे कारखाना २४, इंजीनियरिंग २४, लाह फैक्टरी १३, प्रेस १३, बिजली कारखाना १३, चाय फैक्टरी ७, ईंट और टाइल फैक्टरियाँ ६, सिमेन्ट, चूना और बर्तन की फैक्टरियाँ ५, शराब फैक्टरी ५, नील फैक्टरी ५, जूट फैक्टरी ४, लोहा और स्टील फैक्टरी ३, धातुओं की फौंडरी ३, तम्बाकू और सिगरेट फैक्टरी ३, काटन मिल, ऊन फैक्टरी, अबरख फैक्टरी, ताम्बा ढालने की फैक्टरी, बर्फ फैक्टरी लकडी चीरने की फैक्टरी, पत्थर के बर्तन बनाने की फैक्टरी, घोडा गाडी बनाने की फैक्टरी तथा बिस्कुट आदि बनाने की फैक्टरी एक-एक और दूसरी तरह की फैक्टरियाँ ११ हैं। इन फैक्टरियों का जिलेवार ब्यौरा इस प्रकार है—पटना ३०, गया ९, शाहाबाद १०, सारन १४, चम्पारण १४, मुजफ्फरपुर १८, दरभंगा २४, मुँगेर १६, भागलपुर २४, पूर्णिया १८, संथालपरगना १२, हजारीबाग ४, राँची १२, पलामू १, मानभूम ४५, और सिंहभूम २३।

गुड़ और चीनी—विहार का उन्नतिशील और मुख्य व्यवसाय गुड और चीनी का व्यवसाय है। इस समय दुनिया में सबसे ज्यादा गुड़ और चीनी हिन्दुस्तान में ही तैयार होती है। सरकार ने जबसे इस व्यवसाय के संरक्षण की नीति अख्तियार की है तब से इसकी उन्नति बड़ी तेजी से हो रही है। सन् १९३१-३२ से लेकर सन १९३६-३७ तक देश के अन्दर यह कारबार करीब ६ गुना बढ़ गया है और इसका आयात बहुत तेजी से घट रहा है। सन् १९३१-३२ में हिन्दुस्तान में २, ५०,००० टन गुड़

और चीनी आयी थी ; लेकिन घटते-घटते १९३६-३७ का अयात सिर्फ २८,००० टन रह गया। इस व्यवसाय में युक्त-प्रान्त, बिहार, बंगाल और पंजाब ने अच्छा भाग लिया है। सन १९३६-३७ में बिहार में ४,६०,००० एकड़ में ऊख की फसल थी, जब कि सारे हिन्दुस्तान में ४२,३२,००० एकड़ में थी। उस साल सारे हिन्दुस्तान में ११,५०,६०० टन गुड़ चीनी तैयार हुई थी जिस में केवल बिहार का हिस्सा ६,७५,००० टन था। सन् १९३५-३६ में बिहार की ४५ फैक्टरियों में ६ तो साल भर से बन्द थीं; बाकी ३९ अपना काम कर रही थीं। यहाँ की फैक्टरियों की संख्या सारे भारत की फैक्टरियों की संख्या की एक चौथाई थी। इन फैक्टरियों में १६,००० आदमी काम करनेवाले थे और ७,६०,००,००० मन ऊख पेरा गया था। ये फैक्टरियाँ अधिकतर उत्तर बिहार में हैं। सारन जिले में चालू फैक्टरियों की सख्या १०,चम्पारण में ८, दरभंगा और भागलपुर में ५-५, मुजफ्फरपुर और शाहाबाद में ३-३, पूर्णिया में २, तथा पटना और गया में १-१ है। इनके अलावे देहातों के अन्दर गुड़ तैयार करने के बहुत-से छोटे-छोटे कारखाने हैं। पहले बिहार में ऊख की खेती बहुत होती थी ; लेकिन बीच में कुछ दिनों के लिये बहुत घट गयी थी और इसकी जगह नील ने ले ली थी। इधर बारह-चौदह वर्षों से इस व्यवसाय की बड़ी तरक्की है और यहाँ की तीन चौथाई फैक्टरियाँ इसी दरमियान में खुली हैं। सन् १९३१-३२ में यहाँ केवल १२ सूगर फैक्टरियाँ थीं।

लाह—बिहार में लाह का व्यवसाय पुराना और मुख्य है। दुनिया में जितनी लाह खर्च होती है उसका ९० प्रतिशत भाग हिन्दुस्तान से जाता है और बिहार उसका आधा तैयार करता है। सन् १९३५ में बृटिश भारत में ४०,२५० टन लाह तैयार

हुई थी जिसकी कीमत थी १,५८,४६,३५५ रु०। हिन्दुस्तान में केवल २ प्रतिशत लाह खर्च होती है, बाकी सब विदेश चली जाती है। हिन्दुस्तान में लाह अधिकतर लकड़ी पर पालिश करने और लहठी बनाने में खर्च होती है। विदेशों में लाह की सबसे ज्यादा खपत ग्रामोफोन में होती है। ४० से ५० प्रतिशत लाह इसी काम में लगायी जाती है। बिहार में लाह छोटानागपुर, संथालपरगना तथा गया जिले में तैयार होती है। इस काम में हजारों आदमी लगे हुए हैं। १९ वीं सदी के अन्तिम भाग में जब इंगलैंड और अमेरिका में पहले पहल लाह की माँग बढ़ी थी तो यहाँ की लाह के व्यवसाय की बड़ी उन्नति हुई थी। लेकिन, इस समय इसका व्यवसाय बहुत घट रहा है। यहाँ से कच्चा और शुद्ध दोनों तरह की लाह बाहर जाती है। सन् १९३६ मे इस प्रान्त के अन्दर फैक्टरी ऐक्ट के मुताबिक चलने-वाली लाह की १३ फैक्टरियाँ थीं। इनके अलावे ५ फैक्टरियाँ साल भर से बन्द थीं। चालू फैक्टरियों में ८ मानभूम में, ४ राँची में और १ संथालपरगने में थीं। इनके सिवा लाह के छोटे-छोटे कारखाने बहुत जगहों में चल रहे थे। लाह के कीड़े सबसे अधिक पलास के पेड़ पर पाले जाते हैं। कुसुम, बैर, पीपल, गूलर, पाकर आदि के पेड़ पर भी ये पलते हैं। कुसुम पर की लाह कीमती होती है, पर अधिक नहीं होती। बैर और पलास पर की लाह भी अच्छी होती है। जब वृक्ष की टहनियों पर लाह जम जाती है तो उन्हे काटकर निकाल लिया जाता है और फिर कई क्रियाओं द्वारा विशुद्ध लाह तैयार की जाती है। इसकी फसल बैशाख और कातिक में तैयार होती है। इनमें मुख्य बैशाख की फसल है। लाह के बड़े-बड़े कारखाने अधिकतर बाहरी लोगों के हाथ में हैं।

कपड़ा—पहले विहार में कपड़ा काफी परिमाण में तैयार होता था। यहाँ के लोग अपनी आवश्यकता से भी अधिक कपड़े तैयार करते थे और वे कपड़े बाहर भेजे जाते थे। कपड़े महीन से महीन और सुन्दर से सुन्दर तैयार होते थे। लेकिन, विदेशियों ने आकर यहाँ के कपड़े के व्यवसाय को नष्ट किया। आज करीब सौ सवा सौ वर्षों से इंगलैण्ड के मैंचेस्टर और लंकाशायर आदि स्थानों के कपड़े दिनोंदिन अधिक परिमाण में आ रहे हैं। इधर कुछ वर्षों से जापानी कपड़े भी आने लगे हैं। तोभी अभी थोड़े बहुत कपड़े यहाँ बन ही रहे हैं। यहाँ चरखे के सूत से करघे पर बुने कपड़े तैयार होते थे। चरखे का तो करीब-करीब नाश ही हो गया; लेकिन मिल के सूत बिननेवाले करघे बहुत बच गये हैं। महात्मा गाँधी के १९२१ के असहयोग आन्दोलन से चरखे का पुनरुद्धार हुआ है। अभी भी जरूरत का करीब एक तिहाई कपड़ा यहाँ करघे पर ही तैयार होता है। प्रायः हर थाने में इस काम को करनेवाले ताँती, पटवा और जोलाहे लोग मिलते हैं। छोटानागपुर और संथालपरगने में आदिम जाति के लोग मिल के कपड़ों की अपेक्षा मजबूती और मोटेपन के ख्याल से करघे के कपड़े ही अधिक पसन्द करते हैं। इसलिये, वे काफी परिमाण में कपड़े तैयार करते हैं। तिरहुत का कोकटी का कपड़ा अब भी मशहूर है। जहाँ-तहाँ सुन्दर-सुन्दर दरी, नेवार और कालीन भी तैयार होते हैं। पटने में जरदोजी का काम अभी भी कुछ हद तक होता है। सोने-चाँदी के असली तार तैयार किये जाते हैं और उनसे मखमल आदि सुन्दर कपड़ों पर कसीदे और बेलबूटे काढ़े जाते हैं। पटने के पास 'विहार काटन मिल' नाम की कपड़े की एक मिल खुली है; लेकिन इसकी हालत अच्छी नहीं है। भागलपुर जिले के

सुल्तानगंज नामक स्थान में भी एक मिल खोलने की तैयारी हो रही है।

रेशमी और तसर—विहार तसर के कपड़े के लिये मशहूर है। ये कपड़े छोटानागपुर, संथालपरगना, भागलपुर और गया में तैयार होते हैं। छोटानागपुर में सिंहभूम इस व्यवसाय का केन्द्र है। रेशमी, तसर, अंडी आदि के कपड़े कीड़े द्वारा तैयार किये रेशे से बनते हैं। जो कीड़े तूत पर पाले जाते हैं उनसे रेशम का सूत तैयार होता है। आसन, सिध और धौ आदि पेड़ों पर पले हुए कीड़े तसर के सूत तैयार करते हैं। अंडी पर पले कीड़े से अंडी कपड़े का सूत बनता है। कीड़े पत्तों को खाकर बड़े अंडे के रूप में कोए तैयार करते हैं। कोए को उबालकर उससे सूत तैयार किया जाता है। कुछ कोए स्वाभाविक रूप से जंगलों में मिलते हैं और कुछ कीड़े पालकर तैयार किये जाते हैं। कोए के कई भेद होते हैं, जैसे—सरिहन, लंगा, मूगा, फूका, आदि। इनमें मूगा सबसे अच्छा समझा जाता है। बहुत-से रेशमी कपड़े विदेशी सूत से भी तैयार किये जाते हैं। भागलपुर में कपड़े अधिक तैयार किये जाते हैं; पर यहाँ कोए छोटानागपुर या संथालपरगने से मँगाये जाते हैं। भागलपुर मे 'सिल्क इन्स्टीट्यूट' नाम की एक सरकारी संस्था है जहाँ कुछ लोगों को रेशमी और तसर के कीड़े पालने, कोए तैयार करने, सूत निकालने और कपड़ा बिनने की शिक्षा दी जाती है। विहार से कोए और रेशमी तथा तसर के कपड़े बाहर भी भेजे जाते हैं।

ऊनी कपड़े—प्रान्त के भिन्न-भिन्न स्थानों मे गड़ेरिये छोटे-छोटे पैमाने पर भेड के ऊन से कम्बल तैयार करते है। ये कम्बल बहुत रुखड़े और मामूली दरजे के हुआ करते हैं और साधारणतः बिछावन के काम में आते हैं। भागलपुर में ऊन का

कपड़ा तैयार करने की एक मिल है। गया में ऊन बिनना सिखाने के लिये एक सरकारी संस्था है—ऊन वीभिंग इन्सटिट्यूट। १९३६ ई० में यहाँ १४ आदमी शिक्षा पा रहे थे। सन् १९३० में विहार प्रान्त मे भेड़ों की संख्या १०,७५,३२२ थी।

खादी—सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन में स्वदेशी कपड़े, खासकर हाथ के कते और हाथ के बिने खादी कपड़े के लिये विशेष आन्दोलन किया गया। एक अखिल भारत चरखा-संघ कायम हुआ और उसने खादी के व्यवसाय को अपने हाथ में लिया। इसके अलावे बहुत-से लोग स्वतन्त्र रूप से भी खादी तैयार करने लगे। चरखा-संघ सूती के अलावे कुछ रेशमी और ऊनी कपड़े भी तैयार करता है। सन् १९३७ में विहार प्रान्त में ८,९०,६४५ वर्गगज सूती कपड़ा तैयार हुआ था जिसकी कीमत थी २,९८,९९३ रु०। सन् १९३६ से इस साल १,२५,९१२ गज कपड़ा अधिक तैयार हुआ। कीमत के हिसाब से भी सन् १९३६ की अपेक्षा सन् १९३७ में ५४,७५२ रु० अधिक का खादी कपड़ा बना। सन् १९३७ की रिपोर्ट के अनुसार हिन्दुस्तान के अन्दर माप में और कीमत में सबसे अधिक कपड़ा तामिलनाड प्रान्त तैयार करता है ; उसके बाद युक्तप्रान्त। माप में विहार का स्थान तीसरा और कीमत में पाँचवाँ आता है—कीमत में तीसरा और चौथा स्थान क्रम से महाराष्ट्र और आन्ध्र का आता है। माप में तामिलनाड ने विहार से ड्योढ़ा कपड़ा तैयार किया और कीमत में दूना से भी अधिक। हिन्दुस्तान में कुल तैयार हुए खादी सूती कपड़े में विहार ने माप या कीमत के हिसाब से ८ वाँ हिस्सा कपड़ा तैयार किया। विहार के अन्दर सन् १९३७ में रेशमी खादी ५०७५ वर्गगज तैयार हुई थी जिसकी कीमत थी ६,५१३ रु०। पिछले साल की अपेक्षा इस साल कम ही रेशमी

कपड़ा तैयार हुआ। सबसे अधिक रेशमी खादी तैयार करनेवाला प्रान्त बंगाल बिहार से २७ गुना अधिक रेशमी कपड़ा तैयार करता है। सन् १६३७ में बिहार के अन्दर खादी की उत्पत्ति के ३४ केन्द्र और बिक्री के २० केन्द्र थे। १६ जिलेवाले प्रान्त में सिर्फ २० बिक्री-केन्द्र का रहना स्पष्ट जाहिर करता है कि खादी अभी सबकी पहुँच के अन्दर नहीं है। इन केन्द्रों की कुल बिक्री थी ५,१२,४०३ रु०। खादी-काम में लगे हुए कार्यकर्त्ताओं की संख्या २००, बुनकारों की १०२६ और कत्तिनों की २७,३८७ थी। जाति के हिसाब से कत्तिनों में फी सैकड़े ५८ और बुनकरों में फी सैकड़े ९२ मुसलमान थे। सन् १९३६ की अपेक्षा सन् १९३७ में कत्तिनों की संख्या ड्योढ़ी और बुनकरों की संख्या सवाई बढ़ी है। सन् १९३८ में यह संख्या और भी बढ़ी है। बिहार के कुल १०३६ गाँवों में चरखे चलते हैं। १६३७ में प्रान्त के अन्दर खादी के व्यवसाय से कत्तिनों में मजदूरी के रूप में १,२८,२५६ रु० और बुनकरों में ४४,२१२ रुपये बँटे थे। हिसाब से यह साफ जाहिर होता है कि खादी के व्यवसाय का आधे से कहीं ज्यादा रुपया मुसलमानों के ही हाथ में जाता है; लेकिन यह ताज्जुब की बात है कि खादी पहनने या इस व्यवसाय को प्रोत्साहन देने में मुसलमान बहुत पीछे हैं।

लोहा और स्टील के कारखाने—सिंहभूम जिले में जमशेदपुर का लोहा और स्टील का कारखाना—ताता आयरन एण्ड स्टील वर्क्स सन् १६०७ में कायम हुआ था। अब यह हिन्दुस्तान का ही सबसे बड़ा कारखाना नहीं, बल्कि दुनिया का एक बड़ा कारखाना हो गया है। इसे बम्बई के जमशेदजी ताता ने खोला था। यह दस करोड़ रुपये की पूँजी से चल रहा है। अब जमशेदपुर के अन्दर लोहे और स्टील का कारबार करनेवाली

कई देशी और विदेशी कम्पनियाँ कायम हो गयी हैं, जिनमें कुछ मुख्य ये हैं—टिन प्लेट कम्पनी आफ इण्डिया, एग्रिकल्चरल इम्प्लीमेन्ट्स लि०, इनफिल्ड केबुल कम्पनी आफ इण्डिया, इनैमेल्ड आयरन वेयर लि०, इण्डिया और स्टील वायर प्रोडक्ट्स। मानभूम जिले में भी लोहे का एक बड़ा कारखाना है। पटने में दो आयरन मिल हैं जिनमें ईख पेरने की कल और रेलिंग वगैरह तैयार होते हैं। यहाँ की दूसरी कई मिलों में भी लोहे की कुछ चीजें बनती हैं। पटने में लोहे के पिंजड़े भी बनते हैं। रेलवे के कारखानों में लोहे के ही काम होते हैं। प्रान्त के अन्दर मुँगेर में तथा मानभूम जिले के झालदा और तनासी में बन्दूकें बनती हैं तथा तलवार, गुप्ती, छडी आदि चीजें भी तैयार होती हैं। पहले यह कारबार बड़े स्केल में होता था; पर अब बहुत ही थोडी चीजें बनती हैं। गाँवों के अन्दर लोहार गृहस्थों के काम के लायक लोहे की छोटी-छोटी चीजें तैयार करते हैं।

सिगरेट और तम्बाकू के कारखाने—मुँगेर में सिगरेट की एक फैक्टरी है जो पी. टी. (पेनिनसुलर टुबैको) फैक्टरी कहलाती है। यह दुनिया की एक बड़ी सिगरेट फैक्टरी समझी जाती है। यह फैक्टरी एक अमेरिकन कम्पनी की है। अब यहाँ का कुछ कारबार उठकर दूसरी जगह चला गया है। सन् १९३६ में दरभंगा जिले में तम्बाकू की दो फैक्टरियाँ थीं। गया का मसाले-दार कीमती पीनी तम्बाकू बहुत प्रसिद्ध है।

रेलवे कारखाने—प्रान्त के,अन्दर रेलवे के २४ कारखाने हैं मानभूम जिले में ७, मुँगेर जिले में ४, पटना और सिंहभूम जिले में ३-३, तथा गया, शाहाबाद, सारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णिया और हजारीबाग जिले में १-१। मुँगेर जिले के जमालपुर

का कारखाना सबसे बड़ा है। यहाँ पहले करीब २५ हजार आदमी काम करते थे, पर अब यहाँ का कुछ कारबार उठ गया है।

कत्थ—कत्थ हजारीबाग और पलामू जिले में तैयार किये जाते हैं। कत्थ पेड़ की लकड़ी को टुकड़ा-टुकड़ा कर उसे पानी में उबालकर रस तैयार किया जाता है। उसी रस को जमाने से कत्थ तैयार होता है। यह काम जाड़े में किया जाता है। मामूली कत्थ को खैर और बढ़िया को पखरा कहते हैं। सन् १९२४ में केवल पलामू जिले मे ३,००० मन कत्थ तैयार हुआ था।

नील—विहार में नील की खेती बहुत दिनों से होती थी और नील भी बनता था। लेकिन, पहले-पहल यूरोपीय तरीके पर इसकी खेती और नील तैयार करने का काम तिरहुत के प्रथम कलक्टर फ्रांकोइज ग्रैंड ने करीब १७८२ ई० में आरम्भ किया। १७८५ ई० में उसकी तीन कोठियाँ खुलीं। इसके बाद और अँगरेजों ने भी इस व्यवसाय मे हाथ डाला और धीरे-धीरे सैकड़ों-हजारों छोटी-बड़ी कोठियाँ खुल गयीं। नील का लगभग सारा कार-बार अँगरेजों के हाथ में था और नील की खेती करनेवाले बहुत सताये जाते थे। १८९६ ई० में विहार में ३,४२,३०० एकड़ में नील की खेती होती थी और पचासों हजार मन नील तैयार होता था। नील करीब पौने दो सौ दो सौ रुपया मन बिकता था। नील की खेती और नील के कारखाने उत्तर विहार मे फैले हुए थे। लेकिन, पीछे यूरोप में नकली नील सस्ती दर पर तैयार होने लगा जिससे यहाँ के कारबार को बहुत क्षति पहुँची और धीरे-धीरे वह करीब-करीब बन्द ही हो गया। सन् १९३६-३७ में विहार में केवल १,४०० एकड़ में नील की खेती होती थी—मुजफ्फरपुर जिले में ८०० एकड़ में और दरभंगा जिले में ६०० एकड़ में। सन् १९३६ में प्रान्त के अन्दर नील की ५ फैक्टरियाँ चालू थीं—२ मुजफ्फरपुर

जिले में और १-१ दरभंगा तथा मुँगेर जिले में। सरकारी रजिस्टर में १० और फैक्टरियों के नाम दर्ज थे; पर वे फैक्टरियाँ चालू नहीं थीं।

जूट फैक्टरी—बंगाल के बाद जूट की खेती बिहार में ही होती है। तब भी बंगाल का केवल दशमांश जूट ही यहाँ पैदा होता है। यहाँ सन् १९३६ में २,११,००० एकड़ में जूट की खेती हुई थी। उस साल जूट का सूत तैयार करने और उसे बिनने की बिहार में ३ फैक्टरियाँ थीं—२ पूर्णिया जिले में और १ दरभंगा जिले में। पूर्णिया में एक जूट प्रेस भी था। प्रान्त के अन्दर उस साल २ और जूट प्रेस थे; पर वे बराबर बन्द ही रहे।

चाय फैक्टरी—चाय की खेती सबसे ज्यादा आसाम में, उसके बाद बंगाल में होती है। चाय पैदा करने में प्रान्तों के बीच बिहार का सातवाँ स्थान है। यहाँ पूर्णिया और राँची, इन दो जिलों मे करीब दो-दो हजार एकड़ में चाय की खेती होती है। सन् १९३६ में पूर्णिया जिले में ४ और राँची जिले में २ चाय फैक्टरियाँ चल रही थीं।

आटा, चावल, दाल और तेल की कलें—प्रान्त के अन्दर सबसे अधिक मिलें इन्हीं चीजों की हैं। सन् १९३६ में इनकी ८७ मिलें चालू थीं और ३५ मिलें बन्द पड़ी थीं। चालू मिलों का जिलेवार ब्यौरा इस प्रकार है—पटना १०, गया ४, शाहाबाद ३, चम्पारण ६, मुजफ्फरपुर ४, दरभंगा १३, मुँगेर ३, भागलपुर १४, पूर्णिया ८, संथालपरगना ९, राँची २, मानभूम ५ और सिंहभूम ६। ये तो फैक्टरी-ऐक्ट के अनुसार चलनेवाली मिलें हैं। इनके अलावे आटा पीसने की छोटी-छोटी कलें बहुत-सी हैं। इन चीजों की मिलों या कलों से जनसाधारण को लाभ नहीं, बल्कि नुकसान है। मिलों द्वारा और चीजें अधिक सुन्दर और

अधिक उपयोगी रूप में तैयार होती हैं ; पर आटा, चावल, दाल या तेल मिलों से खराब ही तैयार होता है। हाथ से बनी इन चीजों की अपेक्षा मिल की तैयार हुई चीजें स्वाद में भी खराब और स्वास्थ्य के लिये भी नुकसानदेह होती हैं। इन मिलों के कारण गरीबों की रोजी जाती है और पूँजीपति मिल-मालिक अधिकाधिक धनी होते जाते हैं।

शराब फैक्टरी—सन् १९३६-३७ में बिहार में शराब चुलाने की ५ फैक्टरियाँ थीं। ये फैक्टरियाँ गया, सारन, मुँगेर, भागलपुर और राँची जिले में थीं। बिहार सरकार ने नशाखोरी बन्द करने का प्रोग्राम अख्तियार किया है, इससे उम्मीद की जाती है कि ये फैक्टरियाँ अब बन्द हो जायँगी।

कागज—बिहार में पहले कई जगहों में छोटे-छोटे पैमाने पर हाथ से कागज बनते थे। १८७२ ई० मे शाहाबाद जिले के हरिहरगंज मे कागज के २१ छोटे-छोटे कारखाने थे। उस साल यहाँ दस भिन्न-भिन्न किस्म के १२९३ रीम कागज तैयार हुए थे। मिल के बने कागजों से मुकाबला न कर सकने के कारण यहाँ के करीब सब कारखाने बन्द हो गये। अब बहुत थोड़ा कागज तैयार होता है। कागज पूर्णिया जिले मे भी तैयार होता था। वहाँ कागज तैयार करनेवाले मुसलमान कागजी मुसलमान कहलाते हैं। बिहार में कागज तैयार करने के लिये कच्चा माल-साबे घास, बाँस वगैरह काफी तौर से पाये जाते हैं। यहाँ से साबे घास कलकत्ते की कागज की मिलों में भेजी जाती है। शाहाबाद जिले के डालमियानगर (डेहरी) में कागज की मिल खोलने का प्रबन्ध हो रहा है।

बटन फैक्टरी—चम्पारण जिले के मेहसी नामक स्थान में एक बटन फैक्टरी है जो बहुत तरह के सीप के बटन तैयार करती है।

प्रेस—विहार में प्रेसों की संख्या सौ से अधिक होगी, पर फैक्टरी के अन्दर केवल १३ प्रेसों की गिनती है, जिनमें ९ पटने में और एक-एक गया, मुँगेर, भागलपुर और सिंहभूम में हैं। यहाँ पुस्तक प्रकाशन का व्यवसाय इने-गिने लोग करते हैं; वह भी छोटे पैमाने पर।

ताड़ी—ताड़ और खजूर के पेड़ का रस—ताड़ी चुआना विहार का एक मुख्य व्यवसाय है। इस व्यवसाय से विहार सरकार को लगान में एक बहुत बड़ी रकम मिलती है। बंगाल और मद्रास में लोग इस रस से गुड़ और चीनी भी तैयार करते हैं; पर यहाँ इसका रवाज नहीं है। यह रस एक पौष्टिक भोज्य-पदार्थ है, पर लोग इसको नशीला बनाकर पीते हैं, जिसके कारण लाभ के बदले इससे हानियाँ ही होती हैं। सरकार ने नशीली वस्तुओं के साथ इस रस का भी वहिष्कार करने का प्रोग्राम अख्तियार किया है। यदि रस को दूसरी तरह से उपयोग में लाने का बन्दोबस्त नहीं करके इसका चुआना ही बन्द कर दिया गया तो एक भोज्य-पदार्थ के अभाव में विहार को बहुत बड़ी क्षति उठानी पड़ेगी।

अन्य उद्योग-धन्धे—ऊपर लिखे उद्योग-धन्धों के अलावे बहुत-से छोटे-मोटे धंधे ऐसे हैं जिन्हें भिन्न-भिन्न जातियों के लोग किया करते हैं। जैसे चमड़े का काम अक्सर चमार लोग करते हैं। पर, कुछ दिनों से चमड़े के छोटे-छोटे कारखाने दूसरी जाति के लोग भी खोलने लगे हैं, जिनमें नये ढंग के जूते और चमड़े की दूसरी चीजें तैयार होती हैं। लेकिन, चमड़ा कमाने (शोधने) का कोई कारखाना यहाँ नहीं है। प्रायः जूते आदि तैयार करने के लिये शोधा हुआ चाम लोग बाहर से मँगाते हैं। काँसा, पीतल और फूल के बर्तन बनाने का काम सभी बड़े-बड़े स्थानों में ठठेरी लोग करते हैं। देहातों के अन्दर लोग

बर्तनों की फेरी भी करते हैं। गया में पीतल की मूर्तियाँ बनायी जाती हैं। सीवान (छपरा) में कई धातुओं की मिलावट से सुन्दर बर्तन और गुड़गुड़ी वगैरह बनाये जाते हैं। सोना-चाँदी के गहने हर जगह सोनार लोग तैयार करते हैं। पटने और खड़्गपुर (मुँगेर) के सोने-चाँदी के गहने बहुत प्रसिद्ध हैं। पटने में चाँदी के पानदान, इतरदान, गुलाबपाश वगैरह तथा सोने-चाँदी के तबक तथा बेल-बूटा काढ़ने के लिये असली तार बनते हैं। लकड़ी की चीजें सब जगह बढ़ई तैयार करते हैं। पहले लकड़ी पर चित्रकारी का काम बहुत होता था। सिंहभूम जिले में लकड़ी चीरने की एक मिल है। मिट्टी के बर्तन, खपड़ा, कुएँ का पाट वगैरह कुम्हार बनाते हैं। ससराम (शाहाबाद), सीवान (सारन) और बिहपुर (भागलपुर) के मिट्टी के रंगीन सुन्दर बर्तन प्रसिद्ध हैं। ईंट दूसरी जाति के लोग भी तैयार करते हैं। मानभूम जिले में ईंट और टाइल बनाने की ६ बड़ी फैक्टरियाँ हैं। डोम लोग बाँस की टोकरी, सूप वगैरह बनाते हैं। ताड़, खजूर, बेंत और नरकट आदि की चटाइयाँ तैयार की जाती हैं। साबे, मूँज आदि की रस्सियाँ बनायी जाती हैं। कई जगहों में आतिशबाजी की चीजें बनती हैं। पटने में बर्फ की एक बड़ी फैक्टरी है। पटने के काटेज इन्स्टि-ट्यूट में लकड़ी के खेलौने अच्छे बनते हैं। पटना और बिहार-शरीफ (पटना) में नैचा बनता है। बड़े-बड़े जेलों में कैदियों से कपड़े, दरी, कालीन, कम्बल वगैरह तैयार करने, रस्सी बाँटने, तेल पेरने आदि का काम लिया जाता है। मामूली साबुन तैयार करने की पटने आदि कई जगहों में छोटे-छोटे कारखाने हैं, पर बदन में लगानेवाले अच्छे साबुन यहाँ कहीं नहीं बनते। पहले बिहार में सरकार के प्रबन्ध में अफीम की खेती बहुत

होती थी और कई जगह अफीम की फैक्टरियाँ थीं; पर अब इसका कारबार बन्द हो गया है। पटने में सन् १९२५-२६ में दियासलाई की एक फैक्टरी चल रही थी। वह अब बन्द हो गयी है। मछलियों का कारबार भी एक मुख्य कारबार है जिसमें लाखों आदमी लगे हुए हैं। सरकार ने इसके लिये एक अलग महकमा खोल रक्खा है जिसकी ओर से तरह-तरह की मछलियाँ पालने और उनके बच्चे बाँटने का प्रबन्ध है।

खनिज पदार्थ—विहार के उद्योग-धंधों में खानों का प्रमुख स्थान है। इनके बारे में अलग लिखा गया है।

औद्योगिक विद्यालय—लोगों को औद्योगिक शिक्षा देने के लिये सन् १६३६ में विहार में सरकारी और सरकारी सहायताप्राप्त औद्योगिक विद्यालय १४ थे। उनके नाम और छात्रों की संख्या इस प्रकार है—विहार कालेज आफ इंजीनियरिंग, पटना (२४८ छात्र), कॉटेज इंडस्ट्रियल इन्सटिट्यूट, पटना (७५ छात्र), प्रिंटिंग एण्ड बुक बाइन्डिंग क्लास, गवर्नमेण्ट प्रेस, गुलजारबाग, पटना (३५ छात्र), टेकनिकल स्कूल, राँची (१६५ छात्र), तिरहुत टेकनिकल इन्सटिट्यूट, मुजफ्फरपुर (९३ छात्र), वर्कशाप इन्डस्ट्रियल क्लास, डेहरी (शाहाबाद) (१४ छात्र), ईभनिंग माइनिंग क्लास, झरिया और सिजुआ (मानभूम) (क्रम से ३९ और १७ छात्र), सिल्क इन्सटिट्यूट, भागलपुर (४२ छात्र), ऊल वीभिंग इंसटिट्यूट, गया (१४ छात्र), हाफ टाइम वीभिंग स्कूल, विहार शरीफ (पटना) (६३ छात्र), टेकनिकल स्कूल, जमालपुर (मुँगेर) (२३८ छात्र), टेकनिकल नाइट स्कूल, जमशेदपुर (४१० छात्र), नीटिंग स्कूल, बेतिया (चम्पारण) (३५ छात्र), वीभिंग स्कूल, खूँटी (राँची) (८ छात्र)। इनके अलावे कुछ खानगी औद्योगिक विद्यालय

भी हैं, जैसे वीभिंग स्कूल, सीवान (सारन), टेकनिकल स्कूल, मुँगेर, इन्डस्ट्रियल स्कूल, दरभंगा, शिल्प-कार्यालय, सैनापत (दरभंगा), वीभिंग स्कूल, सिरौना (ढाका—चम्पारण)। इतने बड़े और इतने पिछड़े हुए प्रान्त के लिये इतने कम औद्योगिक विद्यालय हों, यह बहुत दुःख की बात है। जो सरकारी या सरकारी सहायता-प्राप्त विद्यालय हैं उनमें भी चार-पाँच को छोड़ शेष में बहुत ही कम छात्र लेने का प्रबन्ध है। भर्ती होने के लिये जितने छात्र आते हैं उनमें से कहीं तो एक चौथाई, कहीं आधे या कहीं इससे कुछ अधिक लड़के लिये जाते हैं। शेष को निराश लौट जाना पड़ता है। सरकार का इस ओर ध्यान जाना चाहिये था।

———

खनिज पदार्थ

विहार भूमि रत्नगर्भा है। यहाँ जितने प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं उतने हिन्दुस्तान के किसी प्रान्त में नहीं पाये जाते। मगर, दुःख की बात है कि यहाँ की अधिकांश खानें बिहारियों के अधिकार में नहीं होकर बाहरी लोगों के, खासकर विदेशियों के हाथ में हैं। इन खानों में अच्छे-अच्छे पद पर काम करनेवाले भी अधिकतर बाहरी लोग हैं। बिहारी प्रायः कुलियों का काम करते हैं। बिहार में सब तरह के मुख्य खनिज पदार्थ बहुतायत से पाये जाने के कारण यह अनुमान किया जाता है कि यह प्रान्त एक न एक दिन भारत के उद्योग-धंधे का प्रधान केन्द्र होगा। यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ नीचे लिखे हैं:—

कोयला—हिन्दुस्तान में सबसे अधिक परिमाण में पाया जानेवाला खनिज पदार्थ कोयला है। सबसे अधिक कीमत भी इसी से आती है। हिन्दुस्तान में हर साल जितना कोयला निकाला जाता है उसका आधे से कुछ अधिक हिस्सा बिहार की खानों से ही निकलता है। सन् १९३५ में बिहार में १,२७,४७,३४० टन कोयला निकला था, जिसकी कीमत थी ३,२९,६६,३५४ रुपया। इस प्रान्त के बाद क्रम से बंगाल और मध्यप्रान्त में कोयला निकलता है। बिहार की खानों में औसतन रोजाना करीब एक लाख आदमी काम करते हैं। यहाँ के कोयले के मैदान ३ हिस्सों में बाँटे जाते हैं—कोयल घाटी कोयले का मैदान, दामोदर घाटी कोयले का मैदान तथा उत्तर हजारीबाग और संथालपरगना कोयले का मैदान। पहला हिस्सा पलामू जिले में है जहाँ डाल्टन-

गंज, हुतार और औरंगा में खानें हैं। दूसरे हिस्से के अन्दर हजारीबाग जिले में उत्तर करनपुरा, दक्षिण करनपुरा, बोकारो और रामगढ़, तथा मानभूम जिले के अन्दर झरिया और रानीगंज कोयले के मैदान हैं। रानीगंज कोयले के मैदान का अधिकांश और मुख्य हिस्सा बर्दवान (बंगाल) में है । तीसरे हिस्से के अन्दर हजारीबाग जिले में इटखुरी, चोप और गिरिडीह में तथा संथालपरगना जिले में अजय घाटी-समूह के अन्दर जयन्ती, सहजोरी और कुंडित करैया में तथा राजमहल पहाड़ी-समूह के अन्दर ब्राह्मणी नदी किनारे, दुबराजपुर, पचवारा, चपरभीटा, गिलहुरिया और हुरा में कोयले की खानें हैं। खानों में सबसे बड़ी झरिये की खान है।

लोहा—कल-कारखाने के युग में खनिज पदार्थों में सबसे अधिक उपयोगी लोहा है। हिन्दुस्तान में लोहा भी सबसे ज्यादा बिहार प्रान्त में ही पाया जाता है। देश के अन्दर आधा से कहीं अधिक लोहा इसी प्रान्त मे निकाला जाता है। सन् १९३५-३६ में यहाँ करीब १२ लाख टन लोहा निकाला गया था और इस काम में औसतन रोजाना २७,५१३ आदमी लगे हुए थे। बिहार का लोहा भी बहुत अच्छा समझा जाता है। यहाँ अधिकतर सिंहभूम जिले के धरवार, मारन्द (कोलहान), बुड़ा बुरु, नोटू बुरु और पनसिरा बुरु आदि स्थानों में लोहा मिलता है। राँची, पलामू, हजारीबाग, मानभूम, संथालपरगना तथा दक्षिणी भागलपुर के कुछ हिस्सों में भी लोहा पाया जाता है। यहाँ से कच्चा लोहा विदेशों को भेजा जाता है।

ताँबा—हिन्दुस्तान में ताँबा भी आधा से अधिक बिहार में ही पाया जाता है। सन् १९३५-३६ में यहाँ ३,५०,८०१ टन ताँबा निकला था जिसकी कीमत थी करीब ३५ लाख रुपया। पुराने

जमाने में भी यहाँ बहुतायत से ताँबा निकाला जाता था। छोटा-नागपुर के अन्दर ताँबे की पुरानी खानों के चिह्न जहाँ-तहाँ अब भी देखने में आते हैं। इस समय ताँबा सबसे अधिक सिंह-भूम जिले में पाया जाता है, जहाँ मीलों तक इसकी खान फैली हुई थी। हजारीबाग जिले के बरगुण्डा और गुलगो नामक स्थानों में, संथालपरगने के बेरुकी और बौधबाँध में तथा कुछ मानभूम और पलामू जिलें में भी इसकी खानें हैं।

अबरक—अबरक के लिये तो विहार सारी दुनिया में मशहूर है। दुनिया के अबरक का ६ में ५ भाग हिन्दुस्तान में और वह भी करीब-करीब सब विहार में ही पाया जाता है। सन् १९३५-३६ में ४८,६७४ हंडरवेट अबरक विहार की खानों से निकला था। इसमें ३७,६७६ हंडरवेट हजारीबाग मे और शेष मानभूम, गया और मुँगेर ज़िले में पाया गया था। इन खानों में करीब २० हजार आदमी लगे हुए थे। अबरक की खानों में पिचब्लैण्ड नामक धातु पायी जाती है। इसी से रेडियम नामक पदार्थ तैयार किया जाता है जो अत्यन्त ही कीमती होता है। अबरक बिजली के यन्त्र, ग्रामोफोन के साउन्ड बक्स, लालटेन के शीशे, आइने, एक प्रकार का चमकीला कागज वगैरह बनाने के काम में आता है।

मैंगनिज—यह लोहे की जाति की एक धातु है जिससे बढ़िया इस्पात तैयार होता है। यह विहार के अन्दर सिंहभूम में पाया जाता है। सन् १९३५-३६ में प्रान्त से १६,६६७ टन मैंगनिज निकाला गया था।

क्रोमाइट—यह भी लोहे की तरह की धातु है। इसे लोहे में मिला देने से लोहे में जंग नहीं लगती। इस मिश्रित धातु से अस्तुरा,

चाकू वगैरह तैयार किये जाते हैं। क्रोमाइट चाइबासा से पच्छिम पोरू, बुरु और किमसी बुरु नामक स्थानों में पाया जाता है।

प्लैटिनम—यह एक उजली और चमकीली धातु है जो सोने से भी अधिक कीमती होती है। इससे बिजली के यन्त्र बनते हैं। यह मानभूम जिले मे दुधका नामक स्थान के पास पाया जाता है।

टिन—यह धातु हजारीबाग जिले के सिपरीतारी, पिहिरा, डोमचाँच, चप्पाटाँड और तुरगो नामक स्थानों मे पायी जाती है। यह राँगे की जाति की है और इसमे जंग नही लगती।

जस्ता—यह धातु संथालपरगना और हजारीबाग जिले मे पायी जाती है। यह बर्तन आदि बनाने के काम मे आती है।

सोना—सोना छोटानागपुर में खासकर राँची, मानभूम और सिंहभूम जिले मे पाया जाता है। लोग गरहा, शंख, दक्षिण कोयल, संजय, सोना और सुवर्णरेखा नदियों के बालू से सोना निकालने का काम करते हैं। लेकिन, दिन भर के परिश्रम के बाद अगर सोना मिलता भी है तो प्रायः चार-पाँच आने का ही। इसलिये, बहुत कम लोग इस काम मे लगे हुए है। सन् १९३५-३६ मे बिहार प्रान्त से कुल ३३ औंस सोना निकाला गया था। १८८८ ई० सिंहभूम के उत्तर सोनपत घाटी मे सोने की बड़ी खान होने का अनुमान किया गया था और सोना निकालने के लिये ३२ कम्पनियाँ कायम हो गयी थीं जिनकी करीब १½ करोड़ रुपये की पूँजी थी। पर, सफलता नहीं मिलने से सभी कम्पनियाँ टूट गयीं।

हीरा—छोटानागपुर में कोयल नदी की घाटी में पुराने जमाने में हीरा पाये जाने की बात कही जाती है। मुसलमानी काल के इतिहास में इसका उल्लेख मिलता है।

चाँदी और सीसा—पलामू जिले के बनखप नामक स्थान में; हजारीबाग जिले के हिसातू, मुकुन्दगंज न्याटंड, नौवारडीह, खेसमी, परसेया, बरकुंडा, महाबंक आदि में; मुँगेर जिले के चकाई और खड़गपुर पहाड मे; भागलपुर जिले के दुदीजोर, खरिखर, केजुरिया आदि स्थानों में; संथालपरगने के बौरुकी, तुरी पहाड, अकासी पहाड़, सनकोरा पहाड़ मे; तथा राँची, मानभूम और सिंहभूम जिले के भिन्न-भिन्न स्थानों में चाँदी और सीसा पाये जाने की बात कही जाती है। मानभूम में दधका के पास टेकिया में सीसा मिलता है।

अलमिनियम यह एक हलकी धातु है जिससे बर्तन आदि बनते हैं। यह राँची और पलामू जिले मे मिलती है।

चूना के कंकड़—चूना एक प्रकार के कंकड़ को जलाकर तैयार किया जाता है। यह कंकड़ छोटानागपुर के प्रायः हर जिले मे तथा शाहाबाद और संथालपरगने में पाया जाता है। इससे सिमेन्ट भी बनता है। शाहाबाद जिले के रोहतास और डेहरी तथा पलामू जिले के जपला नामक स्थानों में चूना और सिमेन्ट की प्रसिद्ध फैक्टरियाँ हैं। मानभूम और सिंहभूम में भी इसके कई कारखाने हैं। यह कंकड़ सड़क तैयार करने के काम में भी आता है। बढ़िया चूना सीप को जलाकर तैयार किया जाता है। सन् १९३५-३६ में विहार में करीब तीन लाख टन चूना तैयार हुआ था।

स्लेट और पत्थर—मुँगेर जिले के अन्दर खड़गपुर पहाड़ी के मारूक, सुखाल, टिकाई, गढ़िया, अमरसनी और

सीताकोबर नामक स्थानों में छत के स्लेट और लिखने के स्लेट मिलते हैं। स्लेट निकालने और तैयार करने का काम अम्बलर एण्ड कम्पनी के हाथ में है। सिंहभूम में भी कुछ स्लेट पाये जाते हैं। सन् १९३५-३६ में एक हजार टन से अधिक स्लेट तैयार हुए थे। शाहाबाद, गया, मुँगेर और छोटानागपुर के पहाड़ों मे चक्की के पत्थर मिलते हैं। जहाँ-तहाँ पहाड़ों के कुछ पत्थर मकान बनाने के काम में भी आते हैं। गया, मानभूम और सिंहभूम जिले के भिन्न-भिन्न स्थानों में पत्थर की मूर्तियाँ, खेलौने और बर्तन बनते हैं।

चीनी मिट्टी—इस मिट्टी से बर्तन बनाये जाते हैं, जो चीनी के बर्तन कहलाते हैं। यह मिट्टी संथालपरगने के राजमहल पहाड़ी में तथा सिंहभूम और भागलपुर जिले में मिलती है जो कलकत्ता पॉटरी कम्पनी के पास भेजी जाती है। बिहार में इसके बर्तन बनाने का काम नहीं होता। सन १९३५-३६ में यहाँ से दो हजार टन चीनी मिट्टी बाहर गयी थी।

ईंट की मिट्टी—संथालपरगना, मानभूम, सिंहभूम तथा पलामू जिले में कई रंग की एक खास तरह की मिट्टी मिलती है जिससे औव्वल दरजे की ईंट बनायी जा सकती है जो स्टोरब्रिज ईंट के मुकाबले की होगी। इसका कारबार बड़े स्केल पर चलाने से सारे हिन्दुस्तान को अच्छी ईंट दी जा सकती है।

शीशा या काँच के बालू—शीशा या काँच तैयार करने के लिये संथालपरगना की भिन्न-भिन्न जगहों में कई तरह के बालू मिलते हैं। इनसे नीली, काली और हरी रंग की बोतलें बन सकती हैं। सन् १९०७-८ में यहाँ के बालू से बोतल वगैरह बनाने की चेष्टा की गयी थी, पर खर्च अधिक पड़ जाने के

कारण काम आगे नहीं बढ़ सका। पटना सिटी में काँच की कुछ अच्छी चीजें बनती हैं।

शोरा—किसी समय विहार में शोरा का कारबार बहुत बढ़ा हुआ था। बारूद इसी से तैयार की जाती थी, इस कारण इसका राजनीतिक महत्व बहुत अधिक था। सारी दुनिया में मुख्यतः यहीं से शोरा जाया करता था। पीछे जब दूसरी चीजों से बारूद बनने लगी तो इसका कारबार मंदा पड़ गया। गत यूरोपीय महायुद्ध के समय इसकी माँग बढ़ी थी। सन् १९१६ में विहार मे ७,४२० टन शोरा तैयार हुआ था। इसमें ७-८ सौ टन शाहाबाद, गया, मुँगेर और पटना जिले में और बाकी तिरहुत के चारों जिलों में तैयार हुआ था। पंजाब और युक्तप्रान्त में भी उस साल करीब इतना ही शोरा बना था। सरकार के 'उत्तरी हिन्दुस्तान नमक लगान महकमा' (नार्दर्न इंडिया साल्ट रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट) से लाइसेन्स लेकर ही कोई शोरा तैयारकर सकता है।

नमक—पहले तिरहुत और पटना कमिश्नरियों में शोरा के साथ-साथ नमक भी तैयार होता था और साल में हजार टन से कुछ अधिक ही तैयार हो जाता था; पर अब यह बिलकुल बन्द है। अँगरेजी राज्यकाल में नमक बनानेवाले सरकारी लाइसेन्स लेकर ही नमक बनाते थे।

रेह, खरी, सज्जी मिट्टी—इसे भी तैयार करने के लिये सरकारी लाइसेन्स लेना पड़ता है। सन् १९१७-१८ में विहार में यह मिट्टी २२,५६९ टन तैयार की गयी थी जिसमें १४,०६२ टन सारन में, ६२९६ टन चम्पारण में और २,२११ टन मुजफ्फरपुर में तैयार हुई थी। कहते हैं कि नवादा (गया) और शेखपुरा (मुँगेर) में भी यह मिट्टी पायी जाती है। यह

चमड़ा सुरक्षित रखने, मवेशी को खिलाने और खाद के काम में आती है।

कसीस—कसीस शाहाबाद जिले में मिलता है।

गेरू—यह लाल और पीले रंग का एक तरह का पत्थर है जो शाहाबाद, मुँगेर और छोटानागपुर के जिलों मे पाया जाता है।

गंधक—यह सिंहभूम जिले में पायी जाती है।

कीमती पत्थर—मुँगेर तथा छोटानागपुर के पहाड़ों में भिन्न-भिन्न रंगों के कीमती पत्थर, जैसे बेरिल, गारनेट, काइनाइट आदि मिलते हैं।

संगमरमर—राजमहल की पहाड़ी तथा चाइबासा के पास की पहाड़ी में संगमरमर मिलता है। इसे स्फटिक शिला भी कहते हैं। यह बर्फ की तरह सफेद और चमकीला होता है।

लीथोग्राफ का पत्थर—शाहाबाद के रोहतासगढ़ में कुछ लीथोग्राफ के पत्थर मिलते हैं।

ग्रेफाइट—इस खनिज पदार्थ से पेन्सिल का लेड तैयार किया जाता है। यह डालटनगंज के पास तथा मुँगेर जिले में कटोरिया से ४ मील उत्तर बाघमरी में पाया जाता है। लेकिन, इसका उपयोग नहीं हो रहा है।

मैगनेसाइट—यह एक प्रकार की उजली चमकीली धातु है जिसे जलाकर मैगनेस्यिा नामक औषधि तैयार की जाती है। यह सिंहभूम जिले के कोलहन स्टेट में पाया जाता है।

अन्य खनिज पदार्थ—उपर्युक्त वस्तुओं के अलावे और भी कितने प्रकार के खनिज पदार्थ यहाँ पाये जाते हैं, जिनका उपयोग दवा में तथा भिन्न-भिन्न कामों में होता है, जैसे कोरंडम,

मोलिबडेनम ओर, टंग्स्टन ओर, आरसेनिक (शंखिया जहर), बिसमुथ ओर, फासफेट, स्टीटाइट आदि आदि ।

खनिज जल—झरनों से निकलनेवाला जल, जिसमें तरह-तरह के खनिज पदार्थ मिले रहते हैं, अनेक रोगों को दूर करने के लिये उपयोगी होते हैं। ऐसे खनिज जल विहार के बहुत-से स्थानों में पाये जाते है, पर दुख की बात है कि इनका उपयोग नहीं किया जा रहा है। सिर्फ कुछ कुंडों से दो-एक अँगरेजी कम्पनियाँ खारा पानी और मीठा पानी तैयार करती हैं। कई झरनों के जल दवा के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। विहार के ऐसे झरनों में पटना जिले के राजगिरि के झरने ; मुँगेर जिले के सीताकुंड, पंचभूर, शृंगरिख, ऋषिकुंड, रामेश्वर कुंड, भुरका, जन्मकुंड और भीम बाँध के झरने ; हजारीबाग जिले के लुरगुरथा, पिंडारकुंड. दोआरी, सूर्यकुंड, बेलकप्पी और केसोडीह के झरने तथा संथालपरगने के भुभका, तुनबिल, सुरुमपानी, तापतपानी, ततलोई, झरियापानी, बरमसिया और लौलौदह के झरने मुख्य हैं।

आने-जाने के साधन

रेलवे—पहले नदियाँ और कच्ची-पक्की सड़कें ही आने जाने के मुख्य मार्ग थे, पर पिछले ६०-७० वर्षों से रेलवे सबसे प्रधान मार्ग हो गया है। विहार में करीब सवा तीन हजार मील तक रेलवे लाइनें फैली हुई हैं और उनपर ६ रेलवे कम्पनियों की गाड़ियाँ दौड़ती हैं—बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे, ईस्ट बंगाल रेलवे, दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, ईस्ट इंडियन रेलवे, बंगाल नागपुर रेलवे और लाइट रेलवे। पहली तीन रेलवे लाइन उत्तर-विहार में और पिछली तीन दक्षिण-विहार में हैं।

बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे—इसे संक्षेप में बी० एन० डब्ल्यू० आर० कहते हैं। इसका अर्थ है बंगाल और उत्तर-पश्चिमीय रेलपथ। उत्तर विहार में सबसे मुख्य लाइन यही है और यह एक हजार मील से कुछ अधिक दूर तक फैली हुई है। इसकी मुख्य लाइन पूरब की ओर कटिहार से चलकर पश्चिम की ओर बरौनी, सोनपुर, छपरा, सीवान वगैरह होती हुई २५४ मील दूर मैरवा के बाद युक्तप्रान्त में प्रवेश कर कानपुर को जाती है। इस लाइन पर के स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं—कटिहार, सेमापुर, काढ़ागोला, कुरसेला, कटरिया, नौगछिया, खरीक, बिहपुर, नारायणपुर, पसराहा, महेशखुंट, मनसी, खगड़िया, साहबपुरकमाल, लक्ष्मिनिया, लाखो, बेगूसराय, तिलरथ, बरौनी जंकशन, बरौनी फ्लैग, तेघरा, बछवारा, बाजिदपुर, महीउद्दीन नगर, शाहपुर पटोरी, महनाररोड, सहदेई बुजुर्ग, देसरी, चकसिकन्दर, बिद्दुपुर, हाजीपुर, सोनपुर, परमानंदपुर,

नयागाँव, शीतलपुर, दिघवारा, सन्ता, गोल्डनगंज, छपरा-कचहरी, छपरा, कोप सम्हौता, दाउदपुर, एकमा, चैनवा, दरौंद, पचरुखी, सीवान, भाटापोखर और मैरवा। मुख्य लाइन में कई शाखा-लाइनें फूटी हैं। बिहपुर से एक लाइन लत्तीपुर होती हुई ९ मील दूर महादेवपुर घाट आती है। यहाँ स्टीमर से लोग गंगा पार कर बरारी घाट में फिर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे को पकड़ते हैं और वहाँ से बरारी और भागलपुर-कचहरी होकर भागलपुर पहुँचते हैं। दक्षिण बिहार में यह लाइन बस यहीं ८–९ मील तक आयी है। मनसी से एक लाइन उत्तर की ओर बदलाघाट, धमहराघाट, कोपरिया, सिमरी बख्तियारपुर, सोनबरसा-कचहरी, सहरसा, पचगछिया, परसरमा, सुपौल और थुरभीठा होकर भपटियाही पहुँचती है जिसकी दूरी ६१ मील है। सहरसा से एक लाइन पूरब की ओर बैजनाथपुर होकर १० मील दूर मधेपुरा जाती है। मुख्य लाइन पर खगड़िया से एक लाइन ओलापुर, इमली, सलौना, हसनपुररोड, नयानगर, रोसरा, नरहन और अंगारघाट होकर ५९ मील दूर समस्तीपुर जाती है। साहबपुरकमाल से एक ब्रांच लाइन गंगा के किनारे मुँगेरघाट जाती है। बरौनी एक बड़ा जंकसन है, यहाँ से एक लाइन गंगा के किनारे सिमरिया घाट गयी है। इस लाइन से माल बहुत आता-जाता है। गंगा के बाद ईस्ट इण्डियन रेलवे का मोकामा-घाट स्टेशन है। बरौनी जंकसन से एक दूसरी लाइन बछवारा के बाद दलसिंगसराय और उजियारपुर होकर समस्तीपुर पहुँचती है। सोनपुर से हाजीपुर होकर एक लाइन सराय, भगवानपुर, गरौल, कुढ़नी और तुरकी होकर ३३ मील की दूरी पर मुजफ्फर-पुर पहुँचती है। सोनपुर भी एक बहुत बड़ा जंकसन है। इसका प्लैटफार्म दुनिया में सबसे बड़ा समझा जाता है। यहाँ गण्डक

पर का पुल उत्तर विहार का सबसे बड़ा पुल है। सोनपुर से एक लाइन गंगा के किनारे पहलेजा घाट और बनवारचक को जाती है। बाढ़ के दिनों में बनवारचक को तथा और दिनों में पहलेजा घाट को गाड़ी जाती है। गंगा पार कर लोग पटना जाते हैं। फिर, छपरा से एक लाइन छपरा-कचहरी, खैरा, पटेरही, मरहौरा, मशरक, राजापट्टी, दिघवा-दुबौली, सिधवलिया, रतनसराय, माँझगढ़ और हरखुआ होकर ६२ मील दूर थावे पहुँचती है और दूसरी रिवीलगंज और रिवीलगंज घाट होकर ११ मील पर माँझी के बाद युक्तप्रांत में प्रवेश कर बनारस जाती है। दरौंदा से एक लाइन ४ मील पर महाराजगंज को गयी है। सीवान से एक लाइन सीवान-कचहरी, अमलोरी सरसर, हथुआ, थावे, सासामुशा और जलालपुर होते हुए युक्तप्रांत में घुसकर गोरखपुर पहुँचती है। विहार में इस लाइन की लम्बाई ३० मील है।

इस रेलवे में समस्तीपुर भी एक बड़ा जंकशन है। यहाँ से एक लाइन खगड़िया और एक बछवारा तक है, यह पहले बताया जा चुका है। समस्तीपुर से एक लाइन उत्तर को ओर मुक्तापुर, किसनपुर, हायाघाट और लहेरियासराय होकर २४ मील पर दरभंगा पहुँचती है, और दूसरी उत्तर-पश्चिम की ओर मुजफ्फरपुर और मोतीहारी होकर १३२ मील नरकटिया-गंज जाती है। इस दूसरी लाइन पर के स्टेशनों के नाम हैं-- समस्तीपुर, पूसारोड, ढोली, सिलौट, मुजफ्फरपुर, काँटी, मोतीपुर, महवल, मेहसी, चकिया, पि.रा, जीवधारा, मोतीहारी, सेमरा, सुगौली, मझवलिया, बेतिया, चनपटिया, साठी और नरकटियागंज। नरकटियागंज से एक लाइन अमोलवा और गौनहा होकर २३ मील पर नैपाल-सीमा के पास भिखनाठोरी पहुँचती है और दूसरी हरिनगर, भैरवगंज और खरपोखरा

होकर २६ मील पर गंडक के किनारे बगहा। गण्डक के बाद छितौनी घाट स्टेशन पड़ता है। सुगौली से एक लाइन रामगढ़वा होकर १६ मील पर रक्सौल जाती है।

दरभंगा से एक लाइन ११९ मील उत्तर-पच्छिम नरकटिया-गंज गयी है। बीच में ये सब स्टेशन हैं—मुहम्मदपुर, कमतौल, जोगियारा, जनकपुररोड, बाजपट्टी, सीतामढ़ी, रीगा, धाँग, बैरगनिया, कुंदवा-चैनपुर, घोड़ासहन, चौरादानो, आदापुर, रक्सौल, भेलवा, सिकटा और गोखुला। दरभंगा से एक दूसरी लाइन तारसराय, सकरी, मनिगाछी, लोहनारोड, झंझारपुर, तमुरिया, घोघरडीहा, निरमली और रहरिया होकर भवटियाही जाती है, जो ५३ मील पर है। सकरी से एक लाइन उत्तर की ओर पंडौल, मधुबनी, राजनगर, खजौली और जयनगर जाती है, जिसकी दूरी २६ मील है। जयनगर नैपाल राज्य की सीमा के पास है।

ईस्ट बंगाल रेलवे—इसे संक्षेप में ई० बी० आर० भी कहते हैं। इसका अर्थ है पूर्वी बंगाल-रेलपथ। यह रेलवे लाइन मुख्यतः बंगाल और आसाम में फैली हुई है। इसका बहुत थोड़ा-सा हिस्सा बिहार के पूर्णिया जिले में पड़ता है। इसकी लाइनें तीन दरजे की हैं। बिहार में आयी हुई लाइन मझोले दरजे की है, जैसा कि बी० एन० डब्ल्यू० आर० की। यहाँ यह करीब २१० मील में फैली हुई है। बंगाल प्रान्त से ईस्ट बंगाल रेलवे की दो लाइनें कटिहार पहुँचती हैं, एक तो दिनाजपुर की ओर से और दूसरी मालदह की ओर से। दिनाजपुर से आनेवाली लाइन का बिहार के अन्दर पहला स्टेशन कचना है। इसके बाद बरसोई-जंकशन, सलमरी, झौआ, सोनैली, दंडखोरा और कटिहार हैं। कटिहार से कचना की दूरी करीब ३१ मील है। मालदह से

आनेवाली लाइन का विहार में पहला स्टेशन लाभा है, उसके बाद कुरेठा तब कटिहार। कटिहार से एक लाइन दक्षिण की ओर मनसाही और मनिहारी होकर गंगा के किनारे मनिहारी घाट पहुँचती है, जिसकी दूरी करीब १८ मील है। गंगा पार कर लोग ई० आई० आर० की सकरीगली घाटवाली ब्राँच लाइन से साहेबगंज लूप लाइन पकड़ते हैं। कटिहार से एक लाइन उत्तर की ओर नैपाल की सीमा के पास जोगबनी को गयी है, जिसकी दूरी करीब ६७ मील है। बीच में रौतारा, रानीपटरा, पूर्णिया, कसबा, गढ़बनैली, जलालगढ़, कुसियारगाँव, अररिया-कोर्ट, अररिया, सिमरहा, फारबिसगंज और बथनाहा स्टेशन पड़ते हैं। पूर्णिया से एक लाइन पच्छिम मुरलीगंज को गयी है, जिसकी लम्बाई २९½ मील है। बीच में पूर्णिया-कोर्ट, कृत्यानन्द-नगर, मरसी, बनमाँखी-जंकशन और जानकीनगर स्टेशन हैं। बनमाँखी से औराही और बरहरा-कोठी होकर बिहारीगंज को लाइन गयी है। बारसोई से एक लाइन उत्तर की ओर सुधानी, दलकोलहा और काँकी होकर किसुनगंज को जाती है। किसुनगंज से आगे दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे लाइन गयी है।

दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे—किसुनगंज से यह रेलवे लाइन विहार प्रान्त के अन्दर दार्जिलिंग जिला और नैपाल की सीमा के पास गलगलिया स्टेशन तक गयी है, जिसकी दूरी ३९ मील है। बीच में ये सब स्टेशन पड़ते हैं—किसुनगंज सिटी, पंजीपारा, इकारचला, गौसाल, धनटोला, गुंजरिया, इस्लामपुरथाना, अलुआबारी-रोड, पोठिया, तैयबपुर, ठाकुरगंज और पिपरीथान।

ईस्ट-इण्डियन रेलवे—इसे संक्षेप में ई० आई० आर० कहते हैं और इसका अर्थ है पूर्व-भारतीय रेलपथ। यह विहार में ११५० मील तक फैली हुई है। इसकी मुख्य या कार्ड लाइन

हावड़ा से आकर संथालपरगने में मिहिजाम स्टेशन के पास विहार में प्रवेश करती है और मधुपुर, जसीडीह, झाझा, क्यूल, मोकामा, बख्तियारपुर, फतुहा, पटना, दानापुर, आरा और बक्सर होते हुए चौसा के बाद विहार से बाहर हो जाती है। इसकी लम्बाई २७१ मील है। यहाँ से मोगलसराय सिर्फ ५० मील रह जाता है। सोन नदी में इस लाइन पर एक बहुत बड़ा पुल है। इस लाइन पर के कुल स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं—मिहिजाम, जामतारा, करमाटार, मधुपुर, जसीडीह, सिमतला, झाझा, गिद्धौर, जमुई, मननपुर, क्यूल, लक्खीसराय, मनकट्टा, बरहिया, डुमरा, मुकामा घाट, मुकामा जंकशन, मोर, पंडरक, बाढ़, अठमलगोला, बख्तियारपुर, करौटा, खुसरूपुर, हरदास-बीघा, फतुहा, बाँकाघाट, पटना-सिटी, गुलजारबाग, पटना-जंकशन, फुलवारी-शरीफ, दाना-पुर, न्यौरा, सदीसोपुर, बिहटा, कोयलवर, कुलहरिया, आरा, करीसाठ, बिहिया, बनही, रघुनाथपुर, ट्विनिंगगंज, डुमराव, बरूना, बक्सर और चौसा। इस लाइन पर मधुपुर से एक लाइन जगदीशपुर और महेशमुंडा होकर गिरिडीह को गयी है जिसकी दूरी २४ मील है। जसीडीह से एक लाइन वैद्यनाथ धाम को गयी है, जो १७ मील पर है। ई० आई० आर० की मुख्य लाइन पर क्यूल एक बड़ा जंकशन है। यहाँ साहबगंज लूप लाइन आ मिली है। यहाँ से एक लाइन लक्खीसराय और नवादा होकर गया गयी है, जो साउथ विहार ब्रांच लाइन कहलाती है। इसकी लम्बाई ८१ मील है। इसपर लक्खीसराय, गरसंडा, सिरारी, एकसरी, शेख-पुरा, सहनौरा, काशीचक, गोसपुर, वारसलीगंज, लीलाबीघा, बाघी-बरडीह, पौरा, आँटी, नवादा, जलालबीघा, चटार, गारो-बीघा, मौआ, तिलैया, बैजनाथपुर, मौझवे, जमुआवन, अरहवन, वजीरगंज, कोलहना, करजारा, पैमर, मानपुर और गया स्टेशन

हैं । मुख्य लाइन पर बख्तियारपुर से राजगिरि और फतुहा से इस्लामपुर को लाइट रेलवे गयी है । पटना जंकशन से ई० आई० आर० की ब्रांच लाइन गया जाती है जिसकी दूरी ५७ मील है । इसके बीच सिमरा, पुनपुन, क्योरा, नदवन, तरेगना, नदौल, जहानाबाद, इरकी, तेहटा, मकदुमपुर, बेला और चाकंद स्टेशन हैं । आरा से एक लाइट रेलवे ससराम को गयी है ।

साहेबगंज लूप लाइन खाना जंकशन से चलकर संथाल-परगने में पाकुर स्टेशन के पास विहार में प्रवेश करती है और बरहरवा, तिनपहाड़, सकरीगली, साहबगंज, भागलपुर और जमालपुर होकर क्यूल पहुँचती है, जिसकी दूरी ९३ मील है । इस लाइन पर के स्टेशनों के नाम हैं—पाकुर, कोनलपुकुर, बरहरवा, बाकूडीह, तिनपहाड़, तलझरी, महराजपुर, सकरीगली, साहबगंज, मिरजाचौकी, पिरपैंती, कहलगाँव, घोघा, सबौर, भागलपुर, नाथनगर, मुरारपुर, अकबर-नगर, मासी, सुलतान-गंज, घोरघाट, कल्याणपुर, वरियारपुर, रतनपुर और जमालपुर । बरहरवा से बन्देल-बरहरवा ब्रांच लाइन हावड़ा गयी है । तिन-पहाड़ जंकशन से एक लाइन राजमहल गयी है, जो १७ मील दूर है । सकरीगली जंकशन से एक लाइन गंगा किनारे सकरीगली घाट गयी है जो ४ मील पर है । गंगापार में ई० बी० रेलवे मिलती है । भागलपुर से एक लाइन मंदारहिल तक गयी है जो ३६ मील के फासले पर है । इसपर कोयली-खुटहा, गनीधाम, हाटपुरैनी, टिकनी, सॉझा, धौनी, पुनसिया, बाराहाट, पंजवारा-रोड, मधुसूदन-नगर और मंदारहिल स्टेशन हैं । जमालपुर से एक लाइन सोफियासराय और पूरबसराय होकर मुँगेर गयी है, जिसकी लम्बाई ६ मील है । यहाँ जहाज पर गंगा पार करने से बी० एन० डबल्यू० रेलवे लाइन मिलती है ।

से मिली है, जिसकी लम्बाई २५६ मील है। इस लाइन पर के स्टेशन हैं—चन्द्रपुरा, फुसरो, अमलो, बरमो, जरंगडीह, गोमिया, दनिया, चैनपुर, राँचीरोड, अरगदा, बरकाकाना, भुरकुंडा, पतरातू, हेंडेगिर, राय, खलारी, मैक-क्लास्कीगंज, महुआमिलन, तोरी, रिचुघुटा, लतेहर, कुमानडीह, छिपदोहर, बरवाडीह, केचकी, डाल्टनगंज, रफरा, गढ़वा रोड, सिगसिगो, उन्तारीरोड, मुहम्मदगंज, कोसियारा, हैदरनगर, जपला, नावाडीह, नबीनगर, चैनपुर, अनकोरहा और सोन-ईस्टबैंक।

बंगाल-नागपुर रेलवे—इसे संक्षेप में बी० एन० आर० भी कहते हैं। यह रेलवे प्रान्त के दक्षिण-पूरब भाग में करीब ५६० मील में फैला हुआ है। इसकी दो प्रकार की लाइन है, एक बड़ी और दूसरी छोटी। इस प्रान्त के अन्दर पुरुलिया से राँची और लोहरदगा जानेवाली लाइन छोटी और बाकी लाइनें बड़ी हैं। कलकत्ता से जो लाइन बम्बई को जाती है वह सिंहभूम जिले के चकुलिया स्टेशन के पास बिहार प्रान्त में घुसती है और जरायकेला के पास प्रान्त से बाहर हो जाती है। इसकी दूरी करीब १२५ मील है। इसपर चकुलिया, दालभूमगढ़, घाटशिला, गालूडीह, राखा, आसनबोनी, तातानगर, गोमहरिया, सीनी, महलीमरूप-राज-खरसावाँ, बाराबम्बो, चक्रधरपुर, लोटापहाड़, सोनुआ, गोयलकेरा, पोसोयटा, मनहरपुर और जरायकेला रेलवे स्टेशन हैं। तातानगर से एक लाइन दक्षिण की ओर बादाम पहाड़ को गयी है, जो आरम्भ में करीब २५ मील बिहार प्रान्त के अन्दर है। इसमें एक स्टेशन हालुदपोखर है। खरसावाँ से भी एक लाइन दक्षिण की ओर गुआ तक गयी है, जिसकी दूरी ६६ मील है। इसके बीच में पंड़ामाली, चाइबासा, झींकपानी,, केंदपोसी, मालुका, दंगोआपोसी, नोआमुंडी और

बाराजमदा स्टेशन हैं। आसनसोल से दक्षिण-पश्चिम की ओर आनेवाली लाइन मधुकुण्डा के पास प्रान्त में प्रवेश कर आद्रा, पुरुलिया और चाण्डिल होकर सीनी जंकशन में बम्बई जानेवाली लाइन में मिल गयी है। इसकी दूरी ९२ मील है। इस लाइन पर ये सब स्टेशन हैं—मधुकुंडा, मुरादी, रामकनाली, बेरो, जयचंडी-पहाड़, आद्रा, गढ़ध्रुवेश्वर, अनारा, बगलिया, कुस्तौर, थरी, पुरुलिया, तमना, काटाडीह, उरमा बराहभूम, बीरमडीह, नीमडीह, चंडिल मानीकुई, कंद्रा और सीनी। चंडिल से एक लाइन तातानगर को भी गयी है। खड़गपुर से उत्तर-पश्चिम की ओर जानेवाली लाइन इन्द्रबिल के पास प्रान्त में घुसकर आद्रा, संका, कनी, संतालडीह, भोजूडीह, शिवबाबूडीह, तालगरिया, सुदामडीह, भागा, करकेंद, लायाबाद, मलकेरा, मोहुदा, खरकरी और खानूडीह होकर गोमोह को जाती है। इसकी लम्बाई ४८ मील है। यह लाइन कोयले की खानों के कारण खुली है। चंडिल से एक लाइन उत्तर की ओर मुरी जंकशन होकर बरकाकाना तक गयी है जिसकी लम्बाई ७४ मील है। इस लाइन पर ये सब स्टेशन हैं—चडिल, परकीदी, दुलमी, ईचाडीह, तिरुलदी, सुइसा, तोरंग, मुरी, बरलंगा, सोनडिमरा, गोलारोड, माइल, रामगढ़ टाउन और बरकाकाना।

बी० एन० आर० की छोटी लाइन पुरुलिया से राँची होकर लोहरदगा गयी है, जिसकी लम्बाई ११७ मील है। इस लाइन पर गौरीनाथ धाम, चासरोड, गढ़जयपुर, बेगुनकोदर, झालदा, थुलिन, मुरी, सीली, कीता, बरवादाग, जोनहा, तातीसिलवई, नामकोम, राँची, अरगोरा, पिसका, इटली, तांगेरबांसली, नरकोपी, नागजुआ, इरगाँव और लोहरदगा स्टेशन हैं।

लाइट रेलवे—दक्षिण बिहार में चार लाइट रेलवे लाइनें हैं—

बख्तियारपुर-विहार लाइट रेलवे, फतुहा-इस्लामपुर लाइट रेलवे, आरा-ससराम लाइट रेलवे और डेहरी-रोहतास लाइट रेलवे। इन रेलवे लाइनों की लम्बाई क्रम से ३३, २७, ६० और २४ मील है। बख्तियारपुर-विहार लाइट रेलवे लाइन पर बख्तियारपुर, चेरो, हरनौत, वेना, भगनबीघा, पचसा, सोह, विहार-कचहरी, विहारशरीफ, दीपनगर, नालंद, सिलाव और राजगिर-कुंड रेलवे स्टेशन हैं। फतुहा-इस्लामपुर लाइन पर ये सब स्टेशन हैं—फतुहा, दनियावाँ, सिंगरियावाँ, दियावाँ, लोहंडारोड, हिलसा, रामभवन, एकंगरसराय, औगरी और इस्लामपुर। आरा-ससराम लाइन पर आरा, उदवन्त नगर, कसाप, गरहनी, चरपोखरी, धनौती, पीरू, हसनबाजार, विक्रमगंज, घुसियाकलाँ, सुजिहौली, गढ़नोखा, खाराडीह और ससराम स्टेशन हैं। डेहरी-रोहतास रेलवे लाइन पर के स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं—डेहरी-ऑन-सोन, डेहरी सिटी, तिलोथू बाजार, तिलोथू, रामडिहरा-आन-सोन, तुम्बा, बंजारी और रोहतास।

सड़कें—विहार में सड़कें करीब तीस हजार मीलों में फैली हुई हैं, जिनमें ३ हजार मील पक्की सड़कें, १६ हजार मील कच्ची सडकें और ११ हजार मील ग्रामीण सड़कें हैं। थोड़ी-सी सड़कें पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के हाथ में, बाकी सब की सब डिस्ट्रिक्ट बोर्डों, लोकल बोर्डों और डिस्ट्रिक्ट कमिटी के हाथ में हैं। छोटानागपुर में सड़कें कम हैं, पर वहाँ की सड़कों की दशा अच्छी है। सड़कों में सबसे बड़ी और प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड है जिसे १५४० ई० में शेरशाह ने बनवाया था। यह धनबाद के पास विहार में प्रवेश कर पारसनाथ, शेरघाटी, औरंगाबाद और ससराम होते हुए विहार से बाहर जाती है।

जल-मार्ग—नदियों के प्रकरण से मालूम होगा कि यहाँ गंगा,

सोन, सरयू, बड़ी गण्डक, छोटी गण्डक, कोशी, महानन्दा, पुन-पुन, कोयल, शंख, दामोदर, बराकर, सुवर्णरेखा आदि-आदि कितनी ही छोटी-बड़ी नदियाँ हैं जिनमें सब दिन या थोड़े दिनों के लिये बड़ी या छोटी नावें चलती हैं जिनसे लोग यात्रा करते और माल यहाँ से वहाँ ले जाया करते हैं। गंगा और कुछ दूर तक सरयू में छोटे-बड़े स्टीमर भी चलते हैं। सोन और त्रिवेणी की नहरों में भी नावें चलती हैं तथा बाँस और लकड़ियाँ आदि बहा ले जायी जाती हैं। मनिहारी घाट, महादेवपुर घाट, मुँगेर घाट, सिमरिया घाट और पहलेजा घाट में रेलवे स्टीमर उत्तर-विहार और दक्षिण-विहार की लाइनों को मिलाती हैं। नदियों को पार करने के लिये मुख्य-मुख्य जगहों में नावें रहती हैं।

सवारी—पहले हाथी, घोड़े, घोड़ागाडी, बैलगाड़ी, और पालकी आदि मुख्य सवारियाँ थीं, लेकिन अब शहरों और कस्बों में मोटरें भी काफी चलने लगी हैं। साइकिलों का तो बहुत ज्यादा प्रचार हुआ है। लम्बी सफर के लिये अच्छी-अच्छी सड़कों पर मोटरलारियाँ चलती हैं। छोटानागपुर में जहाँ रेलवे लाइनें कम हैं, लारियाँ अधिक चलती हैं। कहीं-कहीं रेल-गाड़ियों की प्रतिद्वन्दिता में भी लारियाँ चलायी जाती हैं।

शिक्षा

विहार हिन्दुस्तान के अन्दर शिक्षा में सबसे अधिक पिछड़ा हुआ प्रान्त है। सन् १९३१ की मर्दुमशुमारी के मुताबिक यहाँ की ३,२५,५८,०५६ की आबादी में २,७६,३४,३७६ आदमी ५ वर्ष से अधिक उम्र के हैं, जो चाहते तो सब के सब पढ़ लिख सकते थे। मगर, पढ़े-लिखे लोग सिर्फ १३,५०,२०३ हैं, जिनमें १२,४४,६९३ पुरुष और १,०५,५१० स्त्रियाँ हैं। यहाँ अंग्रेजी पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या १,३३,७५६ और अंग्रेजी पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या ११,६१९ है। पढ़े-लिखों में ऐसे लोगों की गिनती है जो किसी तरह चिट्ठी पढ़ और लिख सकते हैं। फी हजार का हिसाब लगाने से ५ वर्ष से अधिक उम्रवाले यानी पढ-लिख सकने लायक व्यक्तियों में हजार मे केवल ४६ आदमी पढ़े-लिखे हैं। कुल आदमियों में तो हजार में सिर्फ ४१ का ही हिसाब बैठता है। स्त्रियों में फी हजार केवल ८ ही स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी हैं। विभिन्न प्रान्तों की तुलना मे विहार शिक्षा में कितना गिरा हुआ है, यह नीचे लिखे आँकड़े से मालूम होगा :—

प्रान्त	फी हजार पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष	फी हजार पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ
वर्मा	३६८	१६५
बंगाल	११०	३२
मद्रास	१०८	३०
वम्बई	१०२	२९
आसाम	९१	२३
मध्य प्रान्त	६०	११

प्रान्त	फी हजार पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष	फी हजार पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ
उड़ीसा	६०	८
पंजाब	५९	१५
संयुक्त प्रान्त	५५	११
बिहार	४९	८

बिहार के भिन्न-भिन्न जिलों में ५ वर्ष से अधिक उम्रवाले पुरुषों और स्त्रियों में एक हजार में कितने व्यक्ति पढ़े-लिखे हैं यह नीचे दिये आँकड़ों से पता चलेगाः—

	फी ह० पढ़े-लिखे व्यक्ति	फी ह० पढ़े-लिखे पु०	फी ह० पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ	फी ह० अंग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति
बिहार प्रान्त	४९	८९	७.७	५.२
पटना	११३	१९४	२३.६	१४.
शाहाबाद	६२	११५	८.१	५.४
गया	६०	११०	७.१	३.३
मानभूम	५५	९७	९.७	८.६
सिंहभूम	५३	९२	१२.७	१४.१
पूर्णिया	५१	९४	४.७	४.३
मुजफ्फरपुर	४७	८८	७.१	३.६
दरभंगा	४६	८७	४.९	३.
भागलपुर	४३	७९	६.१	५.५
सारन	४३	८२	४.७	३.५
मुँगेर	४०	७३	७.५	४.६
देशी राज्य	३७	६७	७.४	४.४
संथालपरगना	३५	६४	६.	६.४

जिला	फी ह० पढ़े-लिखे व्यक्ति	फी ह० पढ़े-लिखे पु०	फी ह० पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ	फी ह० अंग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति
चम्पारण	३४	६२	५.	२.९
राँची	३४	५५	१२.७	४.५
हजारीबाग	३१	५७	४.५	४.७
पलामू	३०	५५	४.५	२.२

धार्मिक सम्प्रदाय के हिसाब से ईसाइयों में शिक्षा-प्रचार सबसे अधिक है। ५ वर्ष से अधिक उम्रवाले हजार ईसाइयों में १२० ईसाई पढ़े-लिखे हैं। इनमें स्त्री-शिक्षा भी औरों की अपेक्षा बहुत अधिक है और अंग्रेजी पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष भी बहुत हैं। हिन्दू की अपेक्षा मुसलमान-समाज में पढ़े-लिखे लोग ज्यादा हैं; क्योंकि मुसलमान लोग शहरों में बहुत हैं। मुसलमानों में फी हजार ५६ और हिन्दुओं में फी हजार ५३ पढ़े-लिखे लोग हैं। आदिम जातियों में हजार में ६ आदमी पढ़े-लिखे हैं। हिन्दू-समाज में किन-किन जातियों में शिक्षा का विशेष प्रचार है, यह नीचे के आँकड़े से मालूम होगा।

जाति	फी ह० पढ़े-लिखे व्यक्ति	फी ह० अंग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति
कायस्थ	३७२	१००
ब्राह्मण	१९५	२०
भूमिहार ब्राह्मण	१३६	७.८
राजपूत	१२०	८.४
तेली	५४	१.७
कुरमी	४९	२
ग्वाला	२०	.९

प्रान्त में शिक्षा-प्रचार के लिये सन् १९१७ से एक युनिवर्सिटी कायम है जिसे पटना युनिवर्सिटी कहते हैं। इस युनिवर्सिटी से हर साल हज़ारों विद्यार्थी भिन्न-भिन्न परीक्षाएँ पास करते हैं। उड़ीसे के विद्यार्थी भी इसी युनिवर्सिटी में परीक्षा देते हैं। विहार के बहुत-से विद्यार्थी कलकत्ता और बनारस युनिवर्सिटी में भी भिन्न-भिन्न परीक्षाएँ देते हैं। पटना युनिवर्सिटी में सन् १९३५–३६ में किस परीक्षा में कितने विद्यार्थी भेजे गये थे और कितने पास हुए थे, यह नीचे दिया जाता है :—

परीक्षाओं के नाम	भेजे गये विद्यार्थी	पास हुए विद्यार्थी
मैट्रिक	५,२०६	२,८२५
आई० ए०	८४८	४४३
आई० एस-सी०	४०८	१८०
बी० ए०	६६१	३३२
बी० एस-सी०	११५	७३
एम० ए०	१०३	६९
एम०-एस-सी०	१६	१४
बी० एल०	२४४	११४
आई० सी० ई० (इंजीनियरिंग)	२८	२५
बी० सी० ई० ,,	१४	१०
एम० बी० बी० एस० (मेडिकल)	६१	४१
डिप० इन इ-डी०	६४	५७

विहार में कहाँ-कहाँ कालेज हैं और उनमें छात्रों की संख्या कितनी है, यह नीचे लिखा है :—

कालेज के नाम और स्थान	१९३५-३६ में छात्र-संख्या
१. पटना कालेज, पटना (एम० ए० तक)	६६७
२. साइन्स कालेज, पटना (एम० एस-सी० तक)	३५४
३. बिहार नेशनल (बी० एन०) कालेज, पटना (बी० ए०, बी० एस-सी० तक)	७३४
४. ग्रियर भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर (बी० ए०, बी० एस-सी० तक)	४५२
५. तेज नारायण जुबली कालेज, भागलपुर (बी० ए०, बी० एस-सी० तक)	५६०
६. सेंट कोलम्बस कालेज, हजारीबाग (बी०ए० तक)	१७७
७. मिथिला कालेज, दरभंगा (बी० ए० तक) [सन् १९३८ ई० में स्थापित]	...
८. राजेन्द्र कालेज, छपरा (बी० ए० तक) [सन् १९३८ में स्थापित]	...
९. नालन्दा कालेज, बिहार शरीफ, पटना (आई० ए० तक)	५४
१०. डाइमन्ड जुबली कालेज, मुँगेर (आई० ए० तक)	६७
११. राँची जिला स्कूल का कालेज-विभाग (आई० ए० तक)	६९
१२. ला कालेज, पटना	३२०
१३. ट्रेनिंग कालेज, पटना	४६
१४. प्रिन्स आफ वेल्स मेडिकल कालेज, पटना	२६७
१५. बिहार कालेज आफ इंजीनियरिंग, पटना	२४८
१६. भेटेरीनरी कालेज, पटना	६४
	४,०७९

प्रान्त के अन्दर हाई इंगलिश, मिड्ल इंगलिश, मिड्ल वर्नाकुलर और हिन्दुस्तानी लड़कों के प्राइमरी स्कूल कितने हैं, यह नीचे दिया जाता है। प्राइमरी स्कूलों के अन्दर संस्कृत और उर्दू प्राइमरी स्कूल भी शामिल हैं। प्राइमरी स्कूलों में लोअर प्राइमरी स्कूलों की संख्या ही बहुत अधिक है, अपर प्राइमरी की बहुत कम। हाई स्कूलों के छात्रों की संख्या आधा लाख, मिड्ल स्कूलों के छात्रों की संख्या एक लाख और प्राइमरी स्कूलों के छात्रों की संख्या ७ लाख है।

	हाई इंग० स्कूल १९३७–३८	मिड्ल इंग० स्कूल १९३७-३८	मिड्ल व० स्कूल १९३७–३८	प्राइमरी स्कूल १९३५-३६
विहार प्रान्त	२०८	७२६	९६	१९,२१२
पटना	२५	४६	९	१,४४५
गया	१३	४१	२	१,७४१
शाहाबाद	१७	५६	२	१,२२८
सारन	२३	८८	१	१,२४१
चम्पारण	९	४६	१	१,०५४
मुजफ्फरपुर	१८	७७	×	१,६५६
दरभंगा	१७	६६	१९	१,९३३
मुँगेर	१५	६७	९	१,३९३
भागलपुर	१८	५५	५	१,३८१
पूर्णिया	८	३२	११	१,१७६
संथालपरगना	१०	३२	२	१,१०९
हजारीबाग	४	१९	७	६२०
राँची	११	३१	१३	१,२६०
पलामू	४	९	१०	४५९

	हाई इंग० स्कूल १९३७-३८	मिड्ल इंग० स्कूल १९३७-३८	मिड्ल व० स्कूल १९३७-३८	प्राइमरी स्कूल १९३५-३६
मानभूम	११	३९	१	१,१०६
सिंहभूम	५	२२	४	४१०

संस्कृत-शिक्षा—संस्कृत की शिक्षा के लिये सरकार ने प्रान्त में एक संस्कृत-एसोसियेशन कायम किया है जो संस्कृत-शिक्षा-संस्थाओं की देखरेख और परीक्षाओं का प्रबन्ध करता है। एसोसियेशन की ओर से प्रथमा, मध्यमा और आचार्य्य, ये तीन परीक्षाएँ होती हैं। आचार्य्य-परीक्षा चार खंडों में बँटी है। एसोसियेशन की परीक्षा में प्राइवेट तौर से बैठनेवाले छात्र भी बहुत होते हैं। सन् १९३५-३६ में १,८९९ छात्र प्रथमा और ५८४ छात्र मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। आचार्य्य परीक्षा के चार खंडों में क्रम से ३१८, २९६, १८७ और १४० छात्र उत्तीर्ण हुए थे। इनमें प्रथमा परीक्षा पास करनेवाली ४ और आचार्य्य के द्वितीय खंड की परीक्षा पास करनेवाली २ लड़कियाँ भी थीं। विहार के बहुत-से छात्र काशी की संस्कृत-परीक्षाएँ भी देते हैं। विहार में सिर्फ एक संस्कृत-कालेज है—धर्मसमाज-संस्कृत-कालेज, मुजफ्फरपुर—जिसमें सन् १९३५-३६ में ३८४ छात्र थे। विहार-उड़ीसा प्रान्त में उस साल संस्कृत स्कूलों और उनके छात्रों की संख्या इस प्रकार थी :—

शिक्षा-संस्थाएँ		छात्र
स्वीकृत संस्कृत टोल	३६२	११,१६४
अस्वीकृत ,, ,,	१४	५०५
स्वीकृत संस्कृत प्राइमरी स्कूल	८०५	२२,८३९
अस्वीकृत ,, ,, ,,	६६	१,४६०

अरबी-फारसी की शिक्षा—अरबी-फारसी की शिक्षा के लिये मदरसा-इक्जामिनेशन-बोर्ड है। इसके द्वारा मुल्ला, मौलवी, आलिम और फाजिल, ये चार इम्तहान लिये जाते हैं। फाजिल सबमें ऊँचे दरजे का इम्तहान है। इन इम्तहानों में सन् १९३५-३६ में विहार-उड़ीसा से क्रम से ६९, ५४, ४१ और १२ लड़के पास हुए थे। अरबी-फारसी की ऊँची शिक्षा के लिये पटने में एक बड़ा मदरसा है जिसका नाम है मदरसा इस्लामिया शमशुल हुदा। इसमें सन् १९३५-३६ में ३४३ लड़के थे। उस साल विहार-उड़ीसा के अन्दर मदरसों और उनके लड़कों की तादाद इस तरह थी :—

मदरसा		लड़के
मंजूर मदरसा	४६	३,५१२
खानगी मदरसा	४८	२,२८५

मेडिकल, आयुर्वेदिक और तिब्बी स्कूल—मेडिकल स्कूल दरभंगे में है, जहाँ सन् १९३५-३६ में २५० लड़के थे। आयुर्वेदिक स्कूल और तिब्बी स्कूल पटने में हैं और इनमे उस साल क्रम से १०५ और ५९ लड़के पढ़ते थे।

टेकनिकल और कमर्सियल स्कूल—विहार के टेकनिकल अर्थात् कलाकौशल-सम्बन्धी स्कूलों में राँची टेकनिकल स्कूल, तिरहुत टेकनिकल इन्सटिट्यूट मुजफ्फरपुर, जमालपुर टेकनिकल स्कूल और जमशेदपुर टेकनिकल नाइट स्कूल मुख्य हैं। इनमें सन् १९३५-३६ में क्रम से १६५, ८८, १५८ और ३७८ विद्यार्थी थे। इनके अलावे कलाकौशल और उद्योगधंधा-सम्बन्धी कई छोटे-छोटे स्कूल हैं। कमर्सियल स्कूल भी कई हैं जहाँ टाइप राइटिंग, शार्ट हैण्ड (शीघ्र-लेखन-प्रणाली), टेलिग्राफी, बुक-कीपिंग (बही-खाता) आदि विषय सिखाये जाते हैं।

ट्रेनिंग स्कूल—बी० ए० तक पढ़े शिक्षकों के, ट्रेनिंग के लिये, यानी शिक्षण-कला सिखाने के लिये पटने में ट्रेनिंग-कालेज है, जिसका जिक्र हो चुका है। मैट्रिक और आई० ए० या आई० एस-सी० परीक्षा पास शिक्षकों के ट्रेनिंग के लिये हर कमिश्नरी-शहर में एक-एक ट्रेनिंग-स्कूल हैं जिन्हें सेकेन्ड्री ट्रेनिंग-स्कूल कहते हैं। मिडूल पास शिक्षकों के लिये एलिमेन्ट्री ट्रेनिंग-स्कूल हैं। बिहार-उड़ीसा में ऐसे ट्रेनिंग-स्कूलों की संख्या सन् १९३५-३६ में ७७ थी।

स्त्री-शिक्षा—बिहार प्रान्त मे ५ वर्ष से अधिक उम्रवाली, अर्थात् पढ़-लिख सकने लायक उम्रवाली स्त्रियों की संख्या १,३६, ९८,७९१ है। इनमे सिर्फ १,०५, ५१०, अर्थात् १०,००० में सिर्फ ७७ पढ़ी-लिखी और इनके अन्दर ११, ६१९ अँगरेजी पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ हैं, जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

बिहार में स्त्रियों की शिक्षा के लिये अलग कोई कालेज नहीं है। हाँ, हाई स्कूलों की संख्या ९ है। इनमे २ पटने में, २ भागलपुर में तथा मुजफ्फरपुर, गया, संथालपरगना, हजारीबाग और राँची में एक-एक हैं। मिडूल इंगलिश स्कूलों की संख्या २७ और मिडूल वर्नाकुलर स्कूलों की ९ है। मुजफ्फरपुर, दरभंगा और भागलपुर जिले में मिडूल स्कूल नहीं हैं। राँची जिले में ६, हजारीबाग और संथालपरगने में ४-४, शाहाबाद, चम्पारण और मानभूम जिले में ३-३ तथा पटना, गया, मुँगेर, पूर्णिया, पलामू और सिंहभूम जिले में २-२ स्कूल हैं। छपरे में अभी हाल में एक मिडूल स्कूल खुला है। इनमें करीब-करीब आधे स्कूल ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाये जाते हैं। मिशनरियों ने स्त्री-शिक्षा का बहुत प्रचार किया है। प्रान्त के अन्दर लड़कियों के प्राइमरी स्कूल करीब २,००० हैं। अध्या-

पिकाओं को शिक्षण-कला सिखाने के लिये भी कई स्कूल हैं।

यहाँ सह-शिक्षा का प्रचार बढ़ रहा है। लड़कों के स्कूल-कालेजों में लड़कियाँ भी पढ़ने लगी हैं। सन् १९३५-३६ में बिहार-उड़ीसा प्रान्त के अन्दर किस दरजे के लड़कों के स्कूलों में कितनी लड़कियाँ पढ़ रही थीं, यह नीचे दिया जाता है:—

स्कूल-कालेज	लड़कियाँ
कालेज	२०
हाई-स्कूल	१४०
मिडल स्कूल	१,५८०
प्राइमरी स्कूल	७६,९०६

अंधे, गूँगे और कोढ़ियों के स्कूल—पटने और राँची में अंधों के लिये स्कूल हैं जिनमें सन् १९३५-३६ में क्रम से ३५ और ७८ छात्र थे। कागज पर कुछ उभड़ी हुई बिन्दियों द्वारा अक्षर बनाये जाते हैं जिन्हें लड़के हाथ से टटोलकर पढ़ते हैं। गूँगों के लिये हाल में पटने में एक स्कूल खुला है। कोढ़ियों को पढ़ाने के लिये पुरुलिया के कुष्टाश्रम में प्रबन्ध है। सन् १९३५-३६ में वहाँ २७१ छात्र थे।

भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा बिहार में स्कूल और कालेज जानेवाले छात्रों (लड़के-लड़कियों) की संख्या औसतन बहुत कम है। फी हजार आदमियों में किस प्रान्त में कितने आदमी स्कूल और कालेजों में पढ़ते हैं, यह नीचे दिया जाता है। यह संख्या सन् १९३५ के कुछ समय पहले की है :—

मद्रास	६२	आसाम	४०
बम्बई	६०	युक्तप्रान्त	३०
बंगाल	५४	मध्यप्रान्त	२९
पंजाब	५१	बिहार	२८

सन् १९३५-३६ में विहार और उसके विभिन्न जिलों के अन्दर कितने हिन्दुस्तानी लड़के और लड़कियाँ स्कूलों में थीं और उनकी संख्या आबादी का कितना प्रतिशत थी, यह नीचे लिखा है:—

	लड़के	लड़कियाँ	आबादी का प्रतिशत
विहार	८,७२,८३४	१,१८,२२५	३·०
पटना	७१,९६४	११,२४३	४·५
गया	६३,१४०	८,०५४	३·०
शाहाबाद	६६,४६६	५,३१९	३·६
सारन	७६,५०८	४,७००	३·३
चम्पारण	४२,६८५	५,४२०	२·२
मुजफ्फरपुर	७१,०३१	६,९९७	२·७
दरभंगा	८०,७०८	९,६६५	२·९
मुँगेर	६४,७१३	९,६६२	३·३
भागलपुर	६०,९९३	९,८८७	३·२
पूर्णिया	५३,२१३	१०,४५५	२·९
संथाल परगना	४९,१०३	६,०९०	२·७
हजारीबाग	२६,१५४	३,६४६	२·०
राँची	५०,९७८	१४,५२३	४·२
पलामू	१८,०८६	२,५३३	२·५
मानभूम	५१,३३५	६,३५३	३·२
सिंहभूम	२५,७५७	३,६७८	३·२

अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा—विहार में प्राइमरी दर्जे तक की अनिवार्य शिक्षा राँची म्युनिसिपैलिटी के अन्दर तथा गया जिले के जम्हौर युनियन के कुछ हिस्सों में जारी है। निःशुल्क शिक्षा सारन जिले और डाल्टनगंज म्युनिसिपैलिटी के अन्दर मिड्ल स्कूलों तक है।

रात्रि-पाठशालाएँ—बिहार में सरकारी शिक्षा-विभाग से मंजूर रात्रि-पाठशालाओं की संख्या १०० से कुछ अधिक है।

अन्य शिक्षा-संस्थाएँ—बिहार में सरकारी शिक्षा-संस्थाओं के अलावे कई स्वतन्त्र शिक्षा-संस्थाएँ भी हैं जो बहुत प्रतिष्ठित हैं। इनमें बिहार-विद्यापीठ, देवघर-साहित्य-महाविद्यालय, गुरुकुल, हरपुरजान (सारन) और गुरुकुल, देवघर मुख्य हैं। बिहार-विद्यापीठ एक नेशनल युनिवर्सिटी है जो असहयोग आन्दोलन के आरम्भ में पटना युनिवर्सिटी के मुकाबले में खुली थी। उस समय प्रान्त के प्रायः हर सबडिविजन और कितने ही थानों में इसके अधीन नेशनल हाईस्कूल खुल गये थे। मिडल और प्राइमरी स्कूल भी सैकड़ों की संख्या में थे। इस समय इसका कालेज-विभाग बन्द हो गया है; पर हाई स्कूल तथा छोटे-छोटे स्कूल अभी बहुत-से हैं।

प्रान्तीय साहित्यिक संस्थाएँ—प्रान्तीय साहित्यिक संस्थाओं में बिहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, बिहार प्रान्तीय लाइब्रेरी-एसोसियेशन और उर्दू-एसोसियेशन हैं। इनमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन पुरानी और सुसंगठित संस्था है। इसका कार्यालय पटने में है जहाँ इसका अपना मकान और पुस्तकालय है। इसकी कई जिला-शाखाएँ भी हैं। प्रान्त के अन्दर छोटी-बड़ी लाइब्रेरियों की संख्या करीब एक हजार है। इनमें पटने की सिन्हा लाइब्रेरी, खुदाबक्स लाइब्रेरी, युनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बिहार-हितैषी-पुस्तकालय, गया की मन्नूलाल-लाइब्रेरी, दरभंगा महाराज की लाइब्रेरी, आरा की सेन्ट्रल जैन ओरियन्टल लाइब्रेरी, आरा-नागरी-प्रचारिणी-सभा का पुस्तकालय तथा भागलपुर का भगवान-पुस्तकालय और सरस्वती-पुस्तकालय मुख्य हैं।

निरक्षरता-निवारण—सन् १९३८ में प्रान्त की सरकार ने निरक्षरता-निवारण के लिये एक जबर्दस्त आन्दोलन किया और स्कूल-कालेज के अध्यापकों तथा छात्रों से इसमे भाग लेने की अपील निकाली। इसके फलस्वरूप कुछ ही दिनों के अन्दर हजारों बे-पढ़े-लिखे लोग पढ़ना-लिखना सीख गये हैं। इस आन्दोलन को स्थायी रूप से चलाने का प्रबन्ध हो रहा है।

वर्धा-शिक्षा-योजना—काँग्रेस सरकार प्राइमरी से लेकर कालेज तक की शिक्षा में मौलिक परिवर्तन करने का विचार कर रही है और इसके लिये इसने एक कमिटी बैठायी है। शिक्षा में औद्योगिक शिक्षा को खास स्थान देने के खयाल से वर्धा स्कीम को कार्यरूप में परिणत करने के लिये आजमाइश के तौर पर चम्पारण जिले का बेतिया थाना चुना गया है।

पत्र-पत्रिकाएँ—विहार से समय-समय पर बहुत-सी अँगरेजी, हिन्दी और उर्दू की पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रही हैं। इस समय पटने से 'सर्चलाइट' और 'इंडियन नेशन' नाम के दो अँगरेजी दैनिक पत्र निकल रहे हैं। 'सर्चलाइट' एक तरह से काँग्रेस का मुख-पत्र और 'इंडियन नेशन' दरभंगा महाराज का पत्र है। पटने से ही डा० सच्चिदानन्द सिन्हा का एक सुन्दर मासिक पत्र 'हिन्दुस्तान रिव्यू' अँगरेजी में निकलता है। 'पटना टाइम्स' मुसलमानों का और 'विहार हेरल्ड' बंगालियों का साप्ताहिक अँगरेजी पत्र है। मुसलमानों का एक पत्र 'सेन्टिनल' अँगरेजी में पूर्णिया से निकलता है। पटने से अँगरेजी में 'ला जर्नल्स' नाम का त्रैमासिक कानूनी पत्र निकलता है। विहार की ईसाई मिशनरियाँ अँगरेजी में पैम्फ्लेट की तरह छोटी-छोटी मासिक पत्रिकाएँ निकालती हैं। उनके नाम हैं—'एपोस्टल्स', 'पटना मिशन लेटर', और 'लाइट आफ ईस्ट'। ये सभी राँची में छपती हैं। यंग बुद्धिस्ट पब्लिशिंग

हाउस, गया से "दि बुद्धिस्ट मिशन वर्कर" नाम की छोटी-सी मासिक पत्रिका निकलती है। सेन्ट्रल जैन ओरियन्टल लाइब्रेरी, आरा से 'जैन एेन्टिक्वेरी' नाम का त्रैमासिक पत्र अँगरेजी और हिन्दी में निकलता है। बिहार के प्रायः सभी बड़े कालेजों और बहुत-से स्कूलों से मासिक या त्रैमासिक पत्र अँगरेजी में या अँगरेजी और हिन्दी में निकलते हैं।

इस समय पटने से 'नवशक्ति', 'योगी', 'जनता' और 'शिक्षा' ये चार साप्ताहिक पत्र निकल रहे हैं। इनमें 'नवशक्ति' का प्रचार सबसे अधिक है। बिहार के कई प्रमुख काँग्रेसी नेता इसके संचालक रहे हैं। 'जनता' किसानों और साम्यवादियों का पत्र है। 'शिक्षा' शिक्षा-सम्बन्धी पत्र है। बिहार प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन की ओर से 'साहित्य' नाम का त्रैमासिक पत्र निकलता है। बाल-शिक्षा-समिति, बाँकीपुर से एक किशोरोपयोगी सुन्दर मासिक पत्र 'किशोर' निकल रहा है। सरकार के कृषि-विभाग की ओर से 'किसान' नाम का त्रैमासिक पत्र और को-ऑपरेटिव विभाग से 'गाँव' नामक मासिक पत्र निकलता है। आरा से 'स्वाधीन भारत', 'हितैषी' और 'अग्रदूत', मोतिहारी से 'किसान-सेवक', छपरा से 'नारद', मुजफ्फरपुर से 'तिरहुत-समाचार' और 'नवयुवक', दरभंगा से 'मिथिला-मिहिर', मुँगेर से 'प्रभाकर', भागलपुर से 'हलधर' तथा पूर्णिया से 'पूर्णिया-दर्पण' नाम के साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। गुमला (राँची) से 'झारखंड', पुस्तक-भंडार लहेरियासराय से 'बालक', भागलपुर से 'बीसवीं सदी' और 'छाया', मुजफ्फरपुर से 'जीवन-संदेश' मासिक पत्र निकलते हैं। इनके अलावे बिहार प्रान्त से कई जातीय पत्र भी निकल रहे हैं। बिहार प्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन का पटने से एक त्रैमासिक पत्र निकलता है। वैशाली-प्रेस, मुजफ्फरपुर से 'विभूति' नाम

का मासिक पत्र मैथिली में निकल रहा है। ईसाई मिश्नरियाँ राँची से हिन्दी में पैम्फ्लेट की तरह 'एवेंजेलिकल पत्रिका', 'सत्संग' 'निष्कलंक', और 'घरबन्धु' नाम के मासिक पत्र निकालती हैं। राँची में 'धरवक' नाम का एक माहवारी बुलेटिन चर्च-सम्बन्धी समाचार के लिये संथाली भाषा में छपता है।

विहार प्रान्त के अन्दर उर्दू की भी कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। पटना से 'इत्तहाद' और 'मुस्लिम लीग', फुलवारी शरीफ (पटना) से 'मसावात', गया से 'हमजाद', और पूर्णिया से 'आफताब' नाम के साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। मासिक पत्रों में हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना से 'हिन्दुस्तानी', गया से 'नदीम', दरभंगा से 'मुजल्लाए-सलफिया', पूर्णिया से 'तलबा' और कुजुहा (सारन) से 'इस्लाह' नाम की मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। फुलवारी शरीफ (पटना) से 'नक़ीब' नाम का पाक्षिक पत्र निकलता है।

इसके पहले भी विहार से भिन्न-भिन्न समयों में अँगरेजी, हिन्दी और उर्दू में बहुत-सी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती थीं। अँगरेजी में निकलनेवाले पत्रों में 'माडर्न विहार', 'विहार टाइम्स', 'विहारी', 'इक्सप्रेस' और 'मदरलैण्ड' प्रसिद्ध थे।

हिन्दी में पटने से निकलनेवाले बंद हुए पत्रों में चैतन्य-चन्द्रिका, हरिश्चन्द्र-कला, भारतरत्न, द्विजपत्रिका, भाषा-प्रकाश, विद्या-विनोद, ब्राह्मण (प्रतापनारायण मिश्र), सर्वहितैषी, पाटलिपुत्र, प्रजाबन्धु, विहारबन्धु, हिन्दी-विहारी, खत्री-हितैषी, क्षत्रिय-पत्रिका, आर्यावर्त, मोतीचूर, गोलमाल, देश, तरुण-भारत, लोक-संग्रह, सहयोग, युवक, महावीर, श्रीकृष्ण, जनक, जन्मभूमि, नालन्द, (विहार शरीफ), जीवन, आलोक, बिजली आदि के नाम हैं। आरा से मनोरञ्जन, साहित्य-पत्रिका, मारवाड़ी-सुधार, राम, स्वदेश और पाटलिपुत्र ; गया से हरिश्चन्द्र-कौमुदी (जम्हौर स्थान से), उपन्यास-

कुसुमांजलि, लक्ष्मी, गृहस्थ, साहित्यमाला और विद्या ; सारन से सारण-सरोज और महिला-दर्पण ; चम्पारण से चम्पारण-चंद्रिका (बेतिया), कुसुमांजलि और चम्पारण-हितकारी ; मुजफ्फरपुर से सत्ययुग, आर्यबाल-हितैषी, भूमिहार ब्राह्मण-पत्रिका, रौनियार-हितैषी, मध्यदेशीय वणिक-पत्रिका, आयुर्वेद-प्रदीप और वैशाली ; दरभंगा से मिथिला-हितैषी, भारत-हितोपदेश और मैथिली ; मुँगेर जिले से भक्ति-प्रचारक (गोगरी), देश-सेवक (मुँगेर) और प्रकाश (बेगूसराय) ; भागलपुर से पीयूष-प्रवाह, आत्म-विद्या, यंग विहार (अंगरेजी और हिन्दी में), श्री कमला, सुरभि, प्रभात, शान्ति, गंगा और हलधर ; संथाल परगना से अनंग तथा राँची से नागरी-प्रचारिणी पत्रिका और आर्यावर्त आदि समय-समय पर निकलते रहे हैं ।

उर्दू के पुराने पत्रों में दैनिक के अन्दर पटने का अक़दाम, द्विदैनिक के अन्दर पटने का मुस्लिम, इस्तक़लाल, आज़ाद, अल-अहलाल ; साप्ताहिक के अन्दर पटने का आजाद, अल अदल, लाल मिर्च, अलपंच, बेबाक, कसकोल, अलमुबश्शिर, पयाम, जम्हूर और जीवन, दरभंगे का अलबद्र, मुजफ्फरपुर का अलमुजफ्फर, सीवान का अलहक, आरा का स्टार, विहार शरीफ का विहार-पंच, पाक्षिक के अन्दर फुलवारी शरीफ (पटना) का अमारत तथा मासिक के अन्दर पटने का बहार, नवेद, कारवाँ, बहारिस्तान, मौजेनसीम, फुलवारी शरीफ का मा-आरिफ, विहार शरीफ का तरबियत और राजगिरि (पटना) का फितरत मशहूर था ।

बिहार की भाषा-समस्या

सन् १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार बिहार प्रान्त में ३,२५,५८,०५६ आदमी रहते हैं। इनमें मातृभाषा के रूप में २,९७,०८,७४८ आदमी भारतीय आर्य भाषाएँ, २२,८०,५५० मुंडा-भाषाएँ, ५,५४,००० द्राविड़-भाषाएँ, २,०२१ भारत की अन्य भाषाएँ, ३३६ भारतीय-भिन्न एशियाई भाषाएँ और १२,४०१ यूरोपीय भाषाएँ बोलनेवाले हैं। फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से भारतीय आर्य-भाषाएँ बोलनेवाले सौ में ९१, मुंडा-भाषाएँ बोलनेवाले ७, और द्राविड़-भाषाएँ बोलनेवाले १ होते हैं। इन भाषा-समूहों में भिन्न-भिन्न भापाएँ या बोलियाँ बोलनेवालों की संख्या नीचे लिखी है :—

भारतीय आर्य भाषाएँ—

	२,९७,०८,७४८
हिन्दुस्तानी	२,७५,७७,२१७
बँगला	१८,६१,५३६
उड़िया	२,३३,८०४
मारवाड़ी	१५,१५५
पंजाबी	८,३९९
नैपाली	७,२५३
गुजराती	४,१०८
अन्य	१,२७६

मुंडा भाषाएँ—

	२२,८०,५५०
संथाली	१३,३८,४१८
मुंडारी	४,४८,४१०
हो	३,३९,७६८
खरिया	६९,६४६
भूमिज	३९,१३५
माहिली	१२,४६९
कोरवा	११,८६७
करमाली	१०,०४७
कोड़ा	६,२०८
असुरी	२,७६७
तूरी	६९७
बिरजिया	६१२
बिरहोर	४७२
अगरिया	२९
जुआँग	५

द्राविड़ भाषाएँ—	५,५४,०००
ओराँव (कुड़ुख)	४,७४,६७८
माल्टो	६७,४०३
तेलगू	७,३८८
तामिल	३,१०४
गोंड़ी	९२७
अन्य	४३०

भारत की अन्य भाषाएँ—	२,०२१
पश्तो	१,३६३
जिप्सी	५९८
विविध	६०
भिन्न एशियाई भाषाएँ—	३३६
यूरोपीय भाषाएँ—	१२,४०१
अँगरेजी	११,९६१
अन्य	४४०

विहार की मुख्य भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है। इसकी मुख्य तीन बोलियाँ हैं—मैथिली, मगही और भोजपुरी। फिर, इनमें हरेक की कई उपबोलियाँ हैं। यदि हिन्दुस्तानी बोलनेवाले पौने तीन करोड़ लोगों को मोटे तौर पर इन तीन बोलियों में बाँटें तो साधारणतः मैथिली और भोजपुरी बोलनेवाले करीब एक-एक करोड़ और मगही बोलनेवाले करीब पौन करोड़ होंगे।

मैथिली—मैथिली विहार प्रान्त की एक मुख्य बोली है; मुख्य इस दृष्टि से कि इसमें कुछ पुराना साहित्य भी है। जैसा कि सब बोलियों का दस्तूर है, मैथिली हर जगह एक-सी नहीं बोली जाती, थोड़ी-थोड़ी दूर पर बदलती रहती है। यह दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुँगेर, पूर्णिया और संथाल परगने में भिन्न-भिन्न रूपों में बोली जाती है। स्टैण्डर्ड या शुद्ध मैथिली, जिसे कुछ साहित्य का रूप प्राप्त है या दिया जा रहा है, मधुबनी और दरभंगा सबडिवीजन के थोड़े-से हिस्से में बोली जाती है। डा० ग्रियरसन ने इसके पूरब की बोली को पूर्वी मैथिली, पच्छिम

की बोली को पच्छिमी मैथिली और दक्षिण की बोली को दक्षिणी मैथिली कहा है। पूर्वी मैथिली को घरवारी भी कहा गया है। इसके अलावे छीका-छीकी भी मैथिली का एक अलग भेद है। मिथिला के मुसलमानों की विकृत बोली को जोलाही बोली कहते हैं। पच्छिमी मैथिली भोजपुरी मिली हुई बोली है, जो मुजफ्फर-पुर जिले में बोली जाती है।

मैथिली की इन उपबोलियों में छीका-छीकी प्रधान है। दक्षिणी मैथिली छीका-छीकी से बहुत कुछ मिलती है। पूर्वी मैथिली को तो बिलकुल छीका-छीकी ही समझना चाहिये। इस तरह मुँगेर, भागलपुर, पूर्णिया और संथाल परगने की बोली छीका-छीकी है, यह एक उपबोली नहीं, बल्कि एक भिन्न बोली कही जा सकती है। शुद्ध मैथिली की अपेक्षा इसके बोलनेवालों की संख्या कई गुनी अधिक है। शुद्ध मैथिली एक जिले के एक कोने में बोली जाती है, लेकिन यह कई जिलों में बोली जाती है। पूर्वी पूर्णिया में बँगला तथा दक्षिण और पच्छिम मुँगेर में मगही का खासा प्रभाव पड़ने से इसका रूप बदल गया है। संथाल परगने में छीका-छीकी के अलावे बँगला और संथाली आदि कई अनार्य बोलियाँ भी काफी बोली जाती हैं। १८ वीं सदी के अन्त में फादर ऐनटोनियो ने 'Gospel and Acts' का छीका-छीकी में अनुवाद किया था। कहते हैं कि उत्तर भारत की भाषाओं में इसका पहला अनुवाद छीका-छीकी में ही हुआ। मि० जान क्रिश्चियन ने भी बाइबिल के कुछ अंश का अनुवाद इस बोली में करके मुँगेर में लीथो से प्रकाशित किया था। इस बोली में हाल के बने बहुत-से गीत हैं, जिनमें कुछ पुस्तक-रूप में भी छप गये हैं।

मैथिली में सबसे बड़े कवि विद्यापति हुए, जिनका जन्म १४वीं सदी के अन्त में हुआ था। इनकी गिनती हिन्दुस्तान के इने-

गिने कवियों में है। इनके अलावे उमापति, नन्दीपति, मोद-नारायण, रमापति, महिपति, जयानन्द, चतुर्भुज, सरसराम, जयदेव, केशव, भंजन, चक्रपाणि, भानुनाथ, हर्षनाथ, मानबोध झा तथा लाल आदि और भी कितने कवि मैथिली भाषा में हुए हैं। इन लोगों के रचे संस्कृत नाटकों में कुछ मैथिली गान हैं। विद्यापति के फुटकर पद्य बहुत मिलते हैं, जिनके कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन, इन्होंने पुस्तक-रूप में जितनी रचनाएँ कीं, सब मुख्यतः संस्कृत में। गोविन्द कवि के मैथिली गीतों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। चन्दा झा ने मिथिला भाषा में रामायण की रचना की है। विद्यापति-लिखित पुरुष-परीक्षा का भी इन्होंने मैथिली में अनुवाद किया है। डा० ग्रियरसन ने An Introduction to the Maithili Language of North Behar (उत्तर विहार की मैथिली भाषा की प्रस्तावना) नामक पुस्तक लिखी है। डा० ग्रियरसन और मि० हार्नेल ने मिलकर दो भागों में Comparative Dictionary of Behari Languages (विहारी भाषाओं का तुलनात्मक शब्द-कोष) का सम्पादन किया है। डा० ग्रियरसन ने सात भागों में विहारी भाषाओं का व्याकरण भी लिखा है। यह व्याकरण और शब्द-कोष मैथिली, मगही और भोजपुरी, इन तीनों पर प्रकाश डालता है। मैथिली के पुनरुद्धार के नये आन्दोलन के फल-स्वरूप आजकल भी कुछ लोगों के दो-चार नाटक, उपन्यास आदि प्रकाशित हुए हैं। कई वर्ष हुए 'मैथिली' नामक मासिक पत्रिका निकली थी जिसमें मैथिली भाषा में कुछ लेख और कविताएँ प्रकाशित होती थीं। 'तिरहुत - समाचार' और 'मिथिला - मिहिर' नामक साप्ताहिक पत्र में भी मैथिली भाषा में कुछ खबरें दी जाती हैं। वैशाली-प्रेस, मुजफ्फरपुर से मैथिली में 'विभूति'

नामक मासिक पत्र प्रकाशित होता है। कई जगहों में मैथिल-साहित्य-परिषदें कायम हुई है। मैथिली भी बँगला से मिलती-जुलती एक पुरानी लिपि है जिसे कुछ इने-गिने पुराने मैथिल ब्राह्मण जब-तब व्यवहार मे लाते है। हाल में नये आन्दोलनकारियों ने उस लिपि का टाइप भी ढलवा लिया है और उसी लिपि में मैथिली की किताबे छापना चाहते हैं। कुछ किताबें छपी भी हैं। ये लोग मैथिली भाषा और मैथिली लिपि को पटना युनिवर्सिटी में प्रवेश कराने और उसे अपने यहाँ के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। कलकत्ता और इलाहाबाद की युनिवर्सिटियों ने इसे एम० ए० के लिये एक पाठ्य विषय तथा मैट्रिक के लिये एक वर्नाक्यूलर मान लिया है। विहार के संस्कृत एसोसियेशन ने भी इसे एक वर्नाक्युलर स्वीकार किया है।

मैथिली और छीका-छीकी के विभिन्न रूपों के कुछ नमूने डा० ग्रियरसन के लिंग्विस्टिक सर्वे से नीचे दिये जाते हैं :—

(शुद्ध मैथिली) (दरभंगा जिला)

कोनो मनुष्य कैं दुइ बेटा रहैन्हि। ओहि में सँ छोटका बाप सँ कहलकैन्हि जे औ बाबू, धन-सम्पत्ति में सँ जे हमर हिस्सा होय से हमारा दीअ। तखन ओहुनका अपन सम्पत्ति बाँटि देलथिन्ह। थोड़ेक दिन बितला उत्तर छोटका बेटा सब किछु एकट्ठा कै बड़ दूर देश चलि गेल, ओ ओतए लुचपनी में अपन सम्पत्ति उड़ा देलक।

एक पत्र

स्वस्ति चिरंजीवि चम्पाबती कें आशीख। आगा लछुमनक जुबानी ओ चीठी सौं अहाँ सभक कुशल-क्षेम बूझल, मन आनन्द भेल। श्री लछमी देवि कें नेना छोट छैन्हि, जेहि सौं ओकर परवरिश होइक से अवश्यक कर्त्तव्य थीक। हुनिका माता नहिं।

अहँ लोकनिक भरोस तेलकुड़क निवाह रहैन्हि। एक बकस पठाओल अछि, से अहाँक हेतु, अहाँ राखब। बकस में छ टा रुपैया छैक, ओ मसाला सभ छैक। से बकस खोलि दुइटा रुपैया ओ आधा-आधा सभ मसाला लछमी दाइ कें अपने चुप्पे देवैन्हि। दुइटा रुपैया ओ मसाला बकस अपने राखब, अहैं लै भेजाओल अछि। कोनो बातक मन में अन्देशा मति राखी। चीज-वस्तु सभ अहाँक नोकसान भेल अछि से सभ पहुँचत, तखन हम निश्चिन्त हैब।

श्री समधी जी कें प्रणाम। आगा भोला साहु कें बहुत दिन भेलैन्हि। अहाँ लोकनि तकाजा नहिं करैछिएन्हि। हमर बेटा जेहन छथि से खूब जनैछी। जल्दी रुपैया असूल करू, नहिं त पीछू पछताएब। बखारीक धान सभ बेंच लेलन्हि। एहि बेकूफ कें कहाँ तक नीक अकिल हैतैन।

निम्न श्रेणी के हिन्दुओं द्वारा
बोली जानेवाली मैथिली **(दरभंगा जिला)**

एक गोटा के दुइ बेटा रहैक। छोटका बाप सों कहलकैक जे हमर हिस्सा सब धन दै दह। बाप ओकर हिस्सा धन बाँटि देलकैक। थोड़ैक दिन पर छोटका बेटा अपन सभ धन एकट्ठा कै बडि दूर देश चलि गेल। ओत अपन सभटा धन कुकरम में ओहा देलक। ओकर सभ धन जखन ओहा गैलैक, ओहो देश में भारी अकाल पड़लै। तखन ओ ओही देश में एक गोटाक ओही ठाम सूगर चरैवा पर नौकर रहल।

दक्षिणी मैथिली **(मधेपुरा, भागलपुर)**

कोय आदमी के दुइ बेटा छलै। छोटका बेटा अपना बाप के कहलकै कि हम्मर हिस्सा धन बाँयट देअ। ओकर बाप दूनों भाय कै धन बाँयट देल कै। कुछ दिनक बाद छोटका बेटा धन सब

जमा करि के कोनो आउर मुलुक चैल देल कै। तब आपन धन सब सौंखिनिक पाछाँ बेरबाद कै देलकै। जखन ऊ सब खरच कै देलकै तब ओने बैर अकाल पैड़ गेलै। तब ऊ आदमी गरीब होवै लागल। तब शहर में कोनो आदमी कोते ऊ नौकर रहि गेल।

दक्षिणी मैथिली (बेगूसराय, मुँगेर)

कोय गाँव में एगो जोलहा रहै। जब उ कमायत-कमायत दस-पन्द्रह रुपैया जौर कैलक तब अपना मौगी से कहलक कि ऐ रुपैया से हम भैंस मोल लेब आर ओकर दूध-दही खायब। ओय पर जोलहनियाँ कहलकै कि हम हूँ दूध दही लैहर पठायल करब। ई बात सुनिकै जोलहवा खिसिआय कें ओकरा बर मारि मारलकै, आर कहलकै कि हम त दूध-दही खैबे न कैलिअह, ई लैहरे पठैती। तै पर ओकर मौगी रूस कें लहिरा चललै। तब जोलहवा ओकरा पाछु-पाछु फिरावै लेल चलल। जायत-जायत अपन ससुरार गेल। जब ओकर सार ओकरा से आबै के हाल पूछे लागलै तब ऊ सब बात बनाय-बनाय कें कहलकै। तैपर ओकर सार ओकरा बर मारि मारलकै आर कहलकै कि ऐंरे, तोहर भैंस हमर टाटी रोज किए उजारै अहि। तैपर ऊ जोलहवा कहे लागलै कि आएँ हो, एखने त हम भैंसियो न लेलौं अछ, तोहर टाटी कैसें उजारै छ। तैपर ओकर सार कहलकै कि अरे बुरबक, भैंस तों लेलें नै तब हमर बहिन दूध कहाँ भेजलकौ जे तों ओकरा मारपीट गारी-गजन कैलहीं अछ। तब जोलहवा बुझलक, आर अपना बहु के हाथ पकरि लेलक आर दुनु बेकती अपना घर आयल, आर सुख से रहै लागल।

पूर्वी मैथिली (मध्य और पश्चिमी पूर्णिया)

एक गोटा के दुइ बेटा रहैन। वोकरा में सं छोटका बाप से कहलक के हो बाप हमर बखरा जे समपत होयतह हमरा दे दा।

तखनी ऊ ओकरा समपत बाँटी देलकै और थोड़ेक। दिन बितले से छोटका बेटा सभै बटोरी कै दूर देस चल गेलै, और ओते अपन समपत लुचपनी में बुड़ैलकै और जेखनी सभै बुड़ै चुकल, ऊ देस मे भारी अकाल भेलै और ऊ विपत में गिरे लागल। तखनी ऊ देसक एक धनीकक पठंगा पकड़लक। ऊ अपन खेत सभ में सुगर चरावै भेजल कैन।

शुद्ध मैथिली गीत

जाइत देखलि पथ नागरि सजनि गे,
आगरि सुबुधि सयानि।
कनक-लता सनि सुन्दर सजनि गे,
विहि निरमाओल आनि।
हस्ति-गमन जकाँ चलइत सजनि गे,
देखइत राजकुमारि।
जिनकर एहनि सोहागिनि सजनि गे,
पाओल पदारथ चारि।
नील बसन तन घेरल सजनि गे,
सिर लेल चिकुर सँभारि।
तापर भमरा पिबए रस सजनि गे,
बइसल पाँखि पसारि।
केहरि सम कटि-गुन अछि सजनि गे,
लोचन अम्बुज धारि।
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे,
गुन पाओल अवधारि।

—विद्यापति

छीका-छीकी (दक्षिण भागलपुर)

एक आदमी के दू बेटा रहै। ओकरा में से छोटका अपनों बाप से कहलकै कि बाबू, जे धन हमरा बखरा में होय, ऊ हमरा दै दे। एकरा पर ऊ अपनो धन ओकरा बाँटि देल कै। आरो थोड़े दिन भी नै बितलै कि ओकरो छोटका बेटा सब अपनो धन इकट्ठा करी के कोय दुसरो देस घूमै लै चल्लो गेलै, आरो वहाँ अपनो सब धन के ऐश-जैश में खरच करी देल कै। तबै हौ मुलुक में बड़ी अकाल पड़लै आरू ऊ कंगाल होय गेलै। ऊ हौ देस के नगरवासी के यहाँ गेलै आरो वहाँ रहै लगलै। ऊ ओकरा अपनों खेत में सूअर चरावै लै भेजी देल कै।

छीका-छीकी (पूरब मुँगेर)

कोय आदमी के दू बेटा छलै। ओकरा में से छोटका बाप से कहलकै कि हो बाप, जे कुछ धन संपत् छौं, ओय में जे हमरो हिस्सा होयछे से हमरा दै द। तब ऊ धन-संपत के बाँटी देलकै। बहुत दिन भी नै भेलय कि ओकर छोटका बेटा सब चीज कै इकट्ठा करी धरी कै बहुत दूर मुलुक चलल गेलै आरो वहाँ लुच्चापनी में दिन-रात रही कै सभै धन-संपत खोय देलकै। जब कि सब धन-संपत चल्लो गेलै तब ऊ गाँव में अकाल भेलै आरो ऊ बिलल्ला होय गेलै। तब ऊ एक वहै गाँव के रहवैया कन रहै लागल जे ओकरा सूगर चरावै लेल अपना खेत में भेजल कै।

छीका-छीकी गीत

आहे कुँवर कहाँ तोहें जाइछो हे,
जैबे बंगाला घर में अकेला कुँवर केना क रहबै हे।
आहे धानि कानै छ कहिने हे,
जैबो बंगाला आनबो मोहनमाला धानि तोरेके देबो हे।

छोका-छीकी गीत

अच्छे अच्छे अँगूठी गढ़िहें भैया रे सोनरा,
मोरी धीया जैती ससुरार।
पिन्हीये ओढ़ीये बेटी ठाढ़ी होली एँगना,
नयना से ढरे लगल नीर।
मचिया बैठली तोहें माई हे मंदोदरि,
माई जी से अरज बहुत।
कहलो सुनलो माई मन जनि हे राखिहो,
नित उठि करिहो पुछार।
सभा माँ बैठल तोहें बाबा हो बड़इतन,
बाबा जी से अरज बहुत।
कहलो सुनलो बाबा मन जनि हे राखिहो,
नित उठि करिहो पुछार।
जुअवा खेलत तोहें भइया हो बड़इतन,
भइया जी से अरज बहुत।
कहलो सुनलो भइया मन जनि हे राखिहो,
नित उठि करिहो पुछार।
माई जे बोलय नित तोही मँगाएब,
बाबा बोलय छ हो मास।
भइया जे बोलय तोही बरिसें मँगायब,
भौजो के हृदय कठोर।

पच्छिमी मैथिली या मैथिली-भोजपुरी (उत्तर मुजफ्फरपुर)

एक केहु आदमी कें दू लड़िका रहै। ओह में से छोटका बाप से कहलक, हो बाबू, धन-सरबस में से जे हम्मर हिंस्सा बखरा होय

से हमरा के दे द । त ऊ ओकरा कें अपन धन बाँट देलक । बहुत दिन न भेलैक कि छोटका लड़िका सब किछिओ जमा करके दूर देस चल गेल और उहाँ लम्पटै में दिन गमवैत अप्पन सरबस गमा देलक । और जब ऊ अप्पन सब किछिओ उड़ा देलक, तब ओ देश में भारी अकाल परलैक, और ऊ कंगाल हो गेल । और ऊ जा के ओही देस के एक लमहर आदमी कने रहे लागल । ऊ ओकरा के अपना खेत में सूगर चरावे ला भेजलक ।

पच्छिमी मैथिली या (उत्तर मुजफ्फरपुर)
मैथिली-भोजपुरी

हम भैंस खोल क मुहै के दूरा पर से लेले जाइत रही । पैंड़ा में चौकीदार से भेंट हो गैल । ऊ हमरा के ध क थाना में ले गेल । हम्मर मन रहे कि भैंस के देवापुर, जहाँ हम्मर समधी रहै छथ बेला आई । बेचे के मन न रहे । हम्मर खेत दू बेर ई भैंस चर गेल ह । हमरा रामकिसुन के अखज हवे । दू पाँजा धान काट लेले छथ । देवापुर कररिया से ६ कोस है ।

पच्छिमी मैथिली या (मध्य और दच्छिण
मैथिली-भोजपुरी मुजफ्फरपुर)

एक जना के दुगो बेटा रहलइन । ओकरा में से छोटका अपना बाबू से कहलकइन, हो बाबू, धन के बखरा जे कुछ हम्मर हो से द त ऊ ओकनी के बाँट देलकइन । त कुछ दिन बितला पर छोटका बेटा सब जमा कलकइन । तेकरा बाद बड़ा दूर परदेस चल गेलइन । उहाँ जा के सब धन कुकर्म में निघटा देलकइन । पीछे सब निघटला पर ऊ देस में बड़ा अकाल पड़लइ । ओकरा खाए पीए के दुःख होए लगलइ । तब ऊ गाँव में कोय बरियार

के इहाँ जा के गिरलइन। तो ओकरा अपना खेत में सूअर चरावे ला भेज देलकइन।

मैथिली (जोलाही) **(दरभंगा जिला)**

कोनो आदमी के दो बेटा छलैन। ओइ में से छोटका बेटा अपना बाप से कहलन, "हे बाप, धन में से जे हम्मर हिस्सा होय से हमरा बाँट दए। तब ऊ उनका अप्पन धन बाँट देलखिन। बहुत दिन ने भेलैन की छोटका बेटा सब कुछ एक जगह क के बहुत दूर देस चल गेल और उहाँ लुचपन में थोरा दिन में अपन धन उड़ा देलक। जब ऊ सब कुछ उड़ा देलक तब ओई देस में मेंहगी पड़लैक और उह गेरीब हो गेल। और ऊ जाके ओ देस के रहवैया में से एक के इहाँ रहै लागल। ऊ घरवाला ओकरा खेत में सूअर चरावे भेजलकै।

मगही—मगही मागधी का अपभ्रंश है। साधारणतः गया जिले का उत्तरी भाग और पटना जिला मगध कहलाता है। मगही मुख्यतः यहीं बोली जाती है। इस बोली के उत्तर में मैथिली और भोजपुरी, पच्छिम में भोजपुरी, उत्तर-पूरब में छीका-छीकी, दक्षिण-पूरब में बँगला तथा दक्षिण में उड़िया और आदिम जाति की भाषाएँ हैं। डा० ग्रियरसन ने मगही का दो रूप बताया है—शुद्ध मगही और पूर्वी मगही। शुद्ध मगही पटना और गया जिले, मुँगेर जिले के पश्चिमी और दक्षिणी भाग, हजारीबाग जिले के उत्तरी भाग और पलामू जिले के पूर्वी भाग की बोली है। पूर्वी मगही हजारीबाग, राँची, मानभूम और सिंहभूम के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। राँची की पूर्वी मगही का एक रूप पंच-परगनिया है, जो सिल्ली, बरंडा, रहे, बंदु और तमार परगने में बोली जाती है। तमार में खास तौर से बोले जाने के कारण इसे

तमारिया भी कहते हैं। मानभूम की पूर्वी मगही पर बँगला का खासा प्रभाव पड़ा है। इसे खासकर कुर्मी जाति के लोग बोलते हैं। ये कुर्मी हिन्दू नहीं, द्राविड़ हैं। इस बोली को कुरमाली थार, कोरथा, खत्ता या खत्ताही भी कहते हैं। यह मानभूम में बँगला लिपि में लिखी जाती है; इससे कुछ लोगों को भ्रम हो जाता है कि यह बँगला की एक बोली है। यही हालत हजारीबाग की मगही की भी है। बंगाल के अन्दर मालदह और उड़ीसा के अन्दर कुछ देशी राज्यों में भी पूर्वी मगही बोली जाती है। सिंहभूम में कुछ लोग शुद्ध मगही भी बोलते हैं। यह याद रखना चाहिये कि छोटानागपुर के जिलों में भिन्न-भिन्न आदिम जातियों की बोलियाँ भी बोली जाती हैं। डा० ग्रियरसन ने १९ वीं सदी के अन्तिम भाग में शुद्ध मगही बोलनेवालों की संख्या ५९ लाख और पूर्वी मगही बोलनेवालों की संख्या ३ लाख बतायी थी। मगही में साहित्य नहीं है, हाँ, कुछ ग्रामीण गीत मिलते हैं। १८२६ ई० में ईसाइयों ने New Testament का और १८९० ई० में सेन्ट मार्क लिखित A Revised Version of Gospel का मगही में अनुवाद प्रकाशित किया था। मगही के भिन्न-भिन्न रूपों के नमूने नीचे दिये जाते हैं।

शुद्ध मगही (गया जिला)

एक आदमी के दुगो बेटा हलथिन। उनकन्हीं में से छोटका अपन बाप से कहलक के ए बाबूजी तोहर चीज बतुस में से जे हमर बखरा हो है से हमरा दे द। तब ऊ अपन सब चीज बतुस उनकन्हीं दुनों में बाँट देलक। ढेर दिन बीते ना पौलक के छोटका बेटवा अपन सब चीज बटोर-सटोर के कोय बड़ी दूर देस में चलल गेल। उहाँ जाके अपन सब पुंजी कुचाली में

जीआन कर देलक। आउ जब सब गवाँ चुकल तब ऊ देस में बड़ी भारी अकाल पड़ल आऊ ओकरा दिकसिक होए लगलइ। तब हुआँ के एगो रहवैया होंआँ जाके रहे लगल। ऊ ओकरा अपन खेत में सुअर चरावे ला पठौलकइ।

शुद्ध मगही **(गया जिला)**

कोय जंगल में एगो साधु रह हलन। उनका भीरी एगो राजा भुलाते-भुलाते जा पहुँचलन। आउ साधु के देख के पाँवों लागके बइठ गेलन। साधु उनका पियासल जानके थोड़ा ऐसन जंगल के चीज खाय ला देलथिन, आउ पानी पिला देलथिन। राजा खाके आउ पानी पीके बहुत खुश भेलन, आउ ठंढा हवा में थोड़े बेर बैठला से थकैनी निकल गेलइन। तब राजा साधुजी से हाथ जोड़के पुछलन के महाराज, हमरा कुछ सिखावन के बात कहीं के जेकरा से हमरा कलेआन होय।

शुद्ध मगही **(पटना जिला)**

जूहन सिंह—ए गुमास्ता जी, अपने से हम का कहीं। जगमोहन सिंह, मोहन राय, गंगा लाल आउर पोखन के खेत के पानी काट के अप्पन खेत में ले गेलन। से ही अहीं सामने हथू, पूछ लेहुन। ऊपर गँड़ाँड़ी भी बाँध देलथी आउर निचला खेत सभ पटा लेलथी। अब पानी आबे के दौर न हई। उपरका सभ खेते टाँड़ हो गेल है।

गुमास्ता—जगमोहन सिंह, ई का बात हई?

जगमोहन सिंह—जूहन सिंह से एक चीलिम गाँजा ला झगरा हो गेलहल अपने चल के देख ल। हम कहाँ गँड़ाँड़ी बाँधली हे। गँड़ाँड़ी बाँधके तो भतुनी कहारिन सभ पानी लेगेलइल।

शुद्ध मगही (पटना जिला)

जब हम रहलूँ सासू लड़िका अबोधवा,
कि तबले सहलूँ तोहर बतिया रे ना।
अब हम भेलूँ सासू तरुनी जुअनिया,
कि अब ना सहबों तोहर बतिया रे ना।
एक बेरी सहबों सासू दूई बेरी सहबों,
कि तीसरे धरबों तोहर झोंटिया रे ना।

शुद्ध मगही (पलामू जिला)

हे भाई हम का कहियो। झूठ डर के मारे अइसन डरइत हली कि जेकर हाल हम न कह सकियो। का भेल कि कल्ह जब हम सब पहार के किनारे-किनारे बजार से अवइत हली तब पहार के ऊपरे बाघ बहुत जोर से गरजइत हल। हमनो सब ढेर आदमी हली, कुछ डर न लगल। लेकिन आज ओही रास्ता से हम अपन मामा के गाँव में ठीक दूपहर के बेर अकेले गेली हल, जब पहार के जरी तर नदी आरा पहुँचली हेअ, तब एकदम बड़ा खड़बड़ाहट बन में नदी तरफ सुनली हेअ, जेह से मेजाज हमर सुध में न रहल। हम बुझली कि बाघ आएल और हमरा के धएलक।

शुद्ध मगही (सिंहभूम जिला)

कोई आदमी के दू बेटा हलई। ओकर में से छोटका अपन बाप से कहलइ कि ए बाप, धन-दौलत के जे हमर बखरा होव हइ से हमरा दे दे। तब ऊ अपन धन-दौलत बाँट देलइ। ढेर दिन नइ बितलइ कि छोटका बेटा सब जमा करलइ अवर दूर देस चल गेलइ। अवर ऊ हुआँ धन-दौलत लुचइ में उड़ा देलइ। अवर जब ऊ सब उड़ा चुकलइ तब हुआँ बड़ी अकाल पड़लइ, अवर ओकर दुःख होवे

शुरू होलइ। अवर ऊ देश के एक आदमी के इहाँ जाके रहे लगलइ। अवर ऊ ओकरा सूअर चरावे ला अपन खेत में पेठैलइ।

शुद्ध मगही **(सिंहभूम जिला)**

एगो सूम अपन सब धन-संपत बेच के सोना किनलइ, अवर ओकरा ऊ गला के ईंटा नियर बनाके धरती में गाड़ के रोज ओकर पहरा दे हलइ। ओकर कोई पड़ोसिया ई भेद अटकर से बूझे पइलइ, अवर ओकर घर सुन्ना पाके गड़ल सोनवाँ निकाल लेलइ। केतना रोज पीछे ऊ सूम ऊ ठाँव कोड़लइ। अवर खाली देख के रोए लगलइ। ओकर रोआई सुनके ओकर दोस्त-मोहीम अइलथीन, अवर ओकरा बुझा के कहे लगलथीन, 'ए भाई, तू काहे खातिर सोच हें। जब लग सोनवाँ तोर पास हलउ, तब लग तू ओकर पहरदार छोड अवर कुछ तो नइ हले। एइ से तू ऊ गड़हा-ठो में एगो पत्थर रख ले, अवर ओकरे भुलाएल सोनवाँ बुझ लेहीं।

पूर्वी मगही—कुरमाली थार **(मानभूम जिला)**

एक लोकेर दूटा बेटा छालिया रेहेक। तारादेर मइधे छूट्ट बेटा टाय। अकर बाप के केहलाक जे बाप हे, हामराकर दौलत कर जे मँय हिँसा पायम से मोके दे। तखन ताकर बाप आपन दौलत बाँटिके अकर हिँसा देंइ देलाक। थोड़ेक दिन बादे छूट्ट बेटा छाउयाटा आपन धन-दरिब लेइके विदेश गेल। से ठिने जाइके उजबक हइके सभे घुचाउलक। जभे खरचा केरिके सभे शिराउलाक तभे अहेमुलुक केर बेड़ी आकाल हेलेक। ताकरे खातिर अकर दुख हेंलेइ तेणे सेई मुलुककेर एक बेड़े धानिनेक घारे रहलाक। अहे धनिन टा अकराके टाँइड़े सूअर चाराउलाइ गोरखिया राखले रहे।

पूर्वी मगही **(मानभूम जिला)**

एक अभियुक्त का बयान

हजूर, मँय दोकाने बेसिके मिठाई बेचे हेलँउ। चारटा बाबू आइ के मिठाइ केर केतेक दर शुधाउलाक। मँय केहलँउ सब जिनिसे त एक दर नेखेख। अहे बाबू गुलाएँ शुनिके केहलाक "सभे दरिब मिलाँयके एक सेर हामरा के देहाक।" मँय एक सेर मिठाइ देलँइँ, आर आठ आना दाम खुजलँउ। तखन बाबूगुलाहँ केहलाक जे हामराकर सँगे पयसा नेखत। अहे लदि ला आहेक। उँहा जाइके दाम देवेंइ। मँय भद्रान मानुष देखिके मँय कन्ह निहि केहलँउ। टेर खेन हेलि पयसा निहि देलाक देखिके मँय लदी तक गेर रहूँ। जाइके देखलँउ लाटा सेठिन ने थई।

पूर्वी मगही **(हजारीबाग जिला)**

एक लोकेर दू बेटा छिल। तकर में छोट बेटा आपन बाप से कलइ, "ए बाप, चीजके जे बखरा हाम पायेब से हामरा देइ दे।" तकर में से चिज भाग कर देलेन। थोरना दिन में छोट बेटा समस्त एक संग करके दूर देश चलि गेला। आर से जगन में नाहक खरच करके सब चिज आपन खोय देलक। से सब चिज खरच करने बाद से मुलुक में भारि आकाल भेल ओ से दुख में पड़े लागला। तब से धाय के से देशेर एक लोकेर आश्रय लेलक। से लोक तकरा आपन खेते सूअर चरने पाठाइ देलेन।

पूर्वी मगही **(राँची जिला)**

(पंचपरगनिया या तमारिया)

कोनो एक आदमी केर दुइटा छुआ रोहे। तेकर माहने छोट छुआटा आपन बाप के कोहलक, "बाप, मयँ धन केर जे हिसा पामुं से मोके देउ।" तेकर माह ने ओकर बाप से धन हिसा कइर

भाग) और मिरजापुर (दक्षिणी भाग) में बोली जाती है। नागपुरिया छोटानागपुर की, खासकर राँची की, भोजपुरी को कहते हैं। इसपर विशेषकर मगही का और कुछ पच्छिम की छत्तीसगढ़ी का प्रभाव पड़ता है। इसमें अनार्य भाषाओं के शब्द भी आये हैं। इसे सदान या सदरी भी कहा जाता है। मुंडा लोग इसे दिकु-काजी कहते हैं अर्थात् दिकुओं यानी आर्यों की भाषा। रेवरेन्ड ई० एच० हिटली ने नागपुरिया पर Notes on Nagpuria Hindi नामक किताब लिखी है और रेवरेन्ड पी० इडनोज ने नागपुरिया में Gospel का अनुवाद किया है। चम्पारण की भोजपुरी को मधेसी कहा जाता है। मैथिली और भोजपुरी भाषा-भाषी प्रान्तों के बीच पड़ने के कारण इस बोली का नाम मध्यदेशीय या मधेसी पड़ा। थारू विहार प्रान्त के अन्दर चम्पारण जिले के उत्तर-पच्छिम कोने पर और बाहर यहाँ से लेकर बहराइच तक की नैपाल की तराई मे बोली जाती है। थारू एक जाति का नाम है जो द्राविड़ श्रेणी की है। यह जाति हिमालय की तराई में रहती है। इसकी अपनी कोई भाषा नहीं है। इस जाति के लोग जिस स्थान में रहते हैं उस स्थान के पास की आर्य-भाषा की अपभ्रंश बोली ही बोलते हैं। चम्पारण के थारू की बोली एक तरह की भोजपुरी ही है। भोजपुरी में पुराना साहित्य नहीं है। हाँ, ग्रामीण स्त्री-पुरुषों के गाने के इसमें बहुत-से गीत हैं। भोजपुरी बोलनेवाले अपनी बोली का बहुत गौरव रखते हैं। मगही या छीका-छीकी बोलनेवाले को इसका गौरव नहीं के बराबर है। हाँ, कुछ मैथिल अपनी बोली का बहुत गौरव रखते हैं। भोजपुरी बोलनेवाले अच्छे पढ़े-लिखे दो अपरिचित व्यक्ति भी आपस में प्रायः भोजपुरी ही में बातें करते हैं। लेकिन, यह बात और बोलीवालों में नहीं देखी जाती।

भोजपुरी बोली के कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं। विहार के

बाहर के जिलों में जो भोजपुरी बोली जाती है, उसके नमूने यहाँ नहीं हैं।

शुद्ध भोजपुरी (शाहाबाद जिला)

एक आदमी का दू बेटा रहे। छोटका अपना बाप से कहलस की ए बाबूजी, "धन में जे हमार हिस्सा होखे से बाँट दीं।" तब ऊ दूनो के बाँट देलस। थोड़ ही दिन में छोटका बेटा सभ धन बटोरके दूर देस चल गइल। उहाँ सभ धन कुचाल में उड़ा देलस। जब सब खरच के देलस तब ओह देस में बड़ा अकाल पड़ल। ओकरा बड़ा दुख होखे लागल। तब ऊ ओह देस का एक आदमी इहाँ जाके रहे लागल जे ओकरा के अपना खेत में सूअर चरावे खातिर भेज देलस।

शुद्ध भोजपुरी (शाहाबाद जिला)

अदालती इजहार

हम नवादा में मालिक हईं। मुदई मुदालह के चिन्ही ले। साबिक में मकान हमरे पट्टी में रहल हा। बटवारा भइला पर हमरे पट्टी में बा। मुतरफा अगाड़ी ढोढ़ा से पावत रलीं हाँ, अब मुदई से पाईं ले। ढोढ़ा दू भाई रहे। एक के नाम ढोढ़ा दोसरा के दसई। भन्दू अगाड़िये से नोकरी चाकरी करे जात रले हा। अब हूँ जाले। बरिस दिन से बहरे रले हा। घर में दसई बहु के छोड़ गइल रले हा। अठारह ओनइस दिन भइल मकान पर गइल रले हा। मुदई गोबरी राय आ हम गोवरधन राय की हाँ गइलीं। कहलीं की एकर मकान ह, छोड़ दीं। मुदालेह कहलस की ना छोड़ब। ओह मकान में मुदालेह के गोरू बँधा ला। हमनीक कहला पर कहलस की जा जे मन में आवे से करी ह। हम ना छोड़ब।

शुद्ध भोजपुरी **(सारन जिला)**

एक आदमी कोय रहे। ओकरा दुइ गो बेटा रहे। छोटका बाप से अपना कहलस की धन हमार आधा बाँट द। वोकर बाप धन बाँट दीहल। चार दिन में छोटका बबुआ धन एकट्टा करके बहरा चल गैले। ओहा गैले लुच्चाबाजी में सजे धन उड़ाय दिहले। सजे धन उनकर सध गैल तब बड़ा अकाल पड़ल। वोह देस में गरीब होए गैले। ओजिनी केहु कीहाँ रहे लगले। इहे कहले की खेती में सुअर चराव।

शुद्ध भोजपुरी **(सारन जिला)**

एगो सियार रहले, एगो गाय रखले रहले। त उनकर जात लोग पूछल, ए भाई, कैसे मोटाइल बाड़। कहलन कि हम सुजिरे का बेरा मुँह धोईले, एक गाल रोजो आँकर चबाइले, गंगाजी के पानी एक चिरुआ पीले। सियार लोग इहे कैलन त सबके दाँत भहरा गईल। त ऊ सब बिगड़ गैलन कहलन की दाँत हमार तूर दिहलन। चल ओकरा के मारीं। गैल लोग त ना भेंटाइल।

शुद्ध भोजपुरी **(पलामू जिला)**

कउनो आदिमी के दुइठे लरिका रहुए। उन्हि में से छोटका बाबूजी से कहलसि की ए बाबूजी धन में से जे किछु हमार बखरा होई से हमरा के बाँट दीं। तब उहाँ का आपन धन बाँट दिहलीं। बहुत दिन ना बीतल की छोटका आपन कुल धन लेके परदेस में चल गउए और वहाँ लुचई में आपन धन उड़ा दिहलसि। जब उन्हि आपन कुल धन ओड़ा दिहुअन तब ऊ देसे वड़ा सुखार परलि और उन्हि गरीब भ गउए। तब उन्हि जा के ऊ देस के एक आदमी कीहाँ रहे लगुअन। ऊ आदिमी उनका के अपना खेते सूअर चरावे के भेजलसि।

शुद्ध भोजपुरी गीत

गोड़ तोहि लागिले, बाबा हो बड़इता से, आहो राम,
धनवाँ मुलुक जनि ब्याह हो राम।
सासु मोरे मरिहें, गोतिनि गरिअइहें से, आहो राम,
लहुरी ननदिया ताना मरिहें हो राम।
रातिये फुलइबो राम, दिन डसिनइहें से, आहो राम,
धनवाँ चलावत घामे तलफबि हो राम।
सेवर जे रहिहैं राम, वोकरा ना बनिहें से, आहो राम,
छुटि जैहें देह के मइलिया हो राम।
चार महीना बाबा, एहि तरे बितिहें से, आहो राम,
खाए के माँड़ गिल भतवा हो राम।
राजकुमारी सखि, कहि समुझावे से, आहो राम,
बिना सहूर सब दुखवा हो राम।

भोजपुरी गीत

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोर प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया।
एक ओर घेरे रामा हिम कोतबलवा से,
तिन ओर सिन्धु घहरावे रे बटोहिया।

—रघुवीर प्रसाद

शुद्ध भोजपुरी (पलामू जिला)

ए भाया हम का कहीं। झूठे डर से अइसन डेरात रहईं की जेकर हाल हम ना कहि सकीं। का भउए की कालिह जब हमनिका पहार के पँजरे-पँजरे पेंठिया से आवत रहुईं तब पहार के उपराँ बाघ बड़े जोर से गरजत रहुए। हमनिका ढेर आदिमी रहलीं, किछ डर ना लागल। मगर आजु ओही रहते हम आपन

मामा का गाँवें ठीक दूपहरे अकेले गइल रहुईं। जब पहार के तरे नदी अरे पहुँचुईं तब अचक्के बड़ी हड़हड़ी बन में नदी ओरे सुनाइलि, जेहि से हमार जीव सुध में ना रहल। हम बुझुईं की बाघ आइल और हमरा के धइलस।

भोजपुरी (नागपुरिया) (राँची जिला)

कोनो आदमी केर दूझन बेटा रहैं। ऊमन मधे छोटका बाप के कहलक, ए बाप खुरजी मधे जे हमर बटवारा है से हम के दे। तब ऊ ऊमन के अपन खुरजी बाँइट देलक। थोरको दिन नइ भेलक कि छोटका बेटा सोब कुछ जमा कइर के दूर देस चइल गेलक और वहाँ लुचपनई में दिन बिताते अपन खुरजी उड़ाए देलक। जब ऊ सोब उड़ाए चुकलक तब ऊ मुलुक में बड्डा अकाल भेलक और ऊ गरीब होए गेलक। और ऊ जाय के ऊ मुलुक केर आदमी मन मधे एक झन ठिन रहे लागलक, जे ऊ के अपन खेत में सुवइर चराएक भेजलक।

भोजपुरी (नागपुरिया) (राँची जिला)

मंगरू—बैठू। कने कने आली ?

भदई—इनहे भाई, राउर केर मुकदमा सुइन के हम आली हई, जे में जानब कि का भेलक।

मंगरू—ए भाई, का कहब। दुनिया ऐसन अँधेर भलक। भला देखू तो, हम जोतली, कोड़ली, बुनली और से में बुधु हमर होअल धान के जबरजस्ती काइट लेलक।

भदई—राउरे से खन कहाँ रही, जे ऊ आए के ऐसन जबरजस्ती काटे लागलक ?

मंगरू—ए भाई, का कहब ; से दिना केर दिन में हम लाह किने ले बाजार जाए रही।

भदई—से खन का घरे कोई नहीं रहैं ?

मंगरू—छउआ मन तो रहै। मगर का करवै। बुझब कि बुधु अपन संगे दस जवान लाठी ले के और पन्द्रह बनिहार लेके आए रहे। अइ बिरिया हम के बाजार में हाल मिललक।

भोजपुरी (मधेसी) (चम्पारण जिला)

कवनो आदमी का दुगो बेटा रहे। छोटका बाप से कहलक के ए बाबू धन में जे हमार बखरा होखे से हमार दे दीं। तब ऊ ओकनी के आपन धन बाँट देलक। ढेर दिन नाहीं बीतल के छोटका बेटा सजी चीज जुगता के बहरा चल गइल। आ उहाँ लुचपन में अपन सजी लुटा देलक। जब ऊ सब उड़ा देलक तब वोह देस में बड़ा अकाल पड़ल आ ऊ तकलीफ में हो गइल। तब जाके उहाँ का एक आदमी कीहा रहे लागल। आ ऊ ओकरा के अपना खेत में सूअर चरावे के भेजलक।

भोजपुरी (मधेसी) (चम्पारण जिला)

एगो राजा का सात बेटी रहे। एक दिन राजा अपना सातो बेटी के बोलौले, आ सातो से पुछलन के तूँ लोगनी केकरा करम से खालू। तब छव गो स कहली के हम तोहरे करम से खाइला। तब राजा सुन के बड़ा खुस भइले। तब अपना छोटकी बेटी से पुछलन के तूं त कुछ ना बोललू। तब ऊ कहलक के हम अपना करम से खाइला। तब इ पर राजा बड़ा जोर से खिसिअइले, आ ओकर बियाह एगो कोढ़ी का साथे कर दिहलन, आ दुनो के बन में निकाल देलन। तब ऊ बेचारी ओही कोढ़िया के माथ अपना जाँघ पर ध के वोह बन में जार-बेजार रोअत रहे। ओकरा रोअला से बन के पछी सजी रोअत रहे।

भोजपुरी (थारू) **(चम्पारण जिला)**

एक मनसे के दुइ बेटा रहलई । ऊ माँ से छुटुका बेटवा कहली आपन बाबा से अरे बाबा धन बित जौन बरई तौन मोर बखरा फाँट लगाय दे । तब ओकर बाबा धन बित छोटकहवा बेटवा के बखरा बाँटि देली । बखरा लेल पर बहुत दिन हैनी भेलई त छोटकहवा बेटवा आपन धन बखरा लेले दोसर देसवा चलि गेली । तब उहवाँ लयेटइ काम करली । तब आपन धन छुटी उड़ाय देली । जब छुटी धन उड़ाय देली आपन, तब ऊ देसवा माँ खू अकाल पड़लई । तब ऊ मनसवा बड़ा कंगाल भेली, तब ऊ देसवा के एक मनसे के घर रहे लगली । तब ओकरा के आपन खेतवा माँ सूअर चरावै के पठौली ।

हिन्दुस्तानी से भिन्न जो कई भारतीय आर्य-भाषाएँ यहाँ प्रचलित हैं, वे इस प्रान्त की नहीं है । वे दूसरे-दूसरे प्रान्तों से स्थायी या अस्थायी रूप से आये हुए लोगों की भाषाएँ हैं, इसलिये यहाँ उनके विशेष उल्लेख की आवश्यकता नहीं है । ये लोग प्रायः सभी हिंदी समझ लेते हैं और बहुत-से इसका व्यवहार भी करते हैं । हाँ, बंगाली लोग हिन्दी की बहुत उपेक्षा करते हैं । अन्य भारतीय आर्य-भाषाएँ बोलनेवालों की संख्या जो १२७६ दी गयी है, उसमें मराठी और सिंधी मुख्य हैं । मराठी बोलने-वाले सिंहभूम में ६९७ और मानभूम में १३८ हैं । सिंधी बोलने-वाले सिंहभूम में १५७ हैं । मराठी और सिंधी बोलनेवाले दूसरे जिलों में भी मिलते हैं ।

मुंडा और द्राविड़ भाषाएँ और बोलियाँ—मुंडा और द्राविड़ बोलियाँ बोलनेवालों की संख्या विहार में २८,३४,५५० है । ये लोग मुख्यतः छोटानागपुर और संथाल परगने में रहते

हैं। इनकी करीब दो दर्जन बोलियाँ यहाँ प्रचलित हैं। ये बोलियाँ और इस श्रेणी की कुछ दूसरी बोलियाँ बंगाल, उड़ीसा और मध्यप्रान्त के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती हैं। द्राविड़ बोलियाँ मुख्यतः दक्षिण भारत की बोलियाँ हैं। दक्षिण भारत के द्राविड़ लोग बड़े सभ्य और सुसंस्कृत हैं। उनकी भाषाएँ और साहित्य उच्च कोटि के हैं। लेकिन, बिहार के निवासी अधिकांश द्राविड़ लोग जंगली हालत में ही हैं। यहाँ की सभी मुंडा और द्राविड़ बोलियों को विदेशी ईसाई मिशनरियाँ अलग-अलग भाषा बनाने की चेष्टा कर रही हैं और उनमें अपनी धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कर रही हैं।

मुंडा-भाषा-श्रेणी—मुंडा-भाषा-श्रेणी की १५ बोलियाँ यहाँ प्रचलित हैं। नीचे सबका जिक्र अलग-अलग दिया जाता है। खरिया और जुआँग को छोड़ बाकी बोलियों को कुछ लोग खेरवारी भाषा की विभिन्न बोलियाँ कहते हैं।

संथाली—मुंडा-भाषा-श्रेणी में संथाली बोली बोलनेवालों की संख्या यहाँ सबसे ज्यादा है। बिहार के अन्दर यह बोली सबसे अधिक संथाल परगने में, उसके बाद क्रम से मानभूम, हजारीबाग, सिंहभूम, पूर्णिया, देशी राज्य, भागलपुर और मुंगेर जिले में बोली जाती है। इसके बोलनेवाले संथाल जाति के लोग हैं। इस बोली में एक मार्के की बात यह है कि यह सब जगह प्रायः एक-सी बोली जाती है। इसपर आर्य-भाषाओं का प्रभाव भी कम पड़ा है, जो कुछ पड़ा है वह केवल शब्दों पर; इसकी शैली में या साधारण रूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। संथाली की मुख्य दो बोलियाँ हैं—माहिली और करमाली। संथाली में New Testament और Old Testament के कई अनुवाद हैं। लोअर क्लास के लिये रेवरेन्ड कैनोन कोल ने तीन रीडरें—पहिल

पुथी, दूसर पुथी और तीसर पुथी लिखी हैं जो सन् १९१४ से ही टेक्स्टबुक-कमिटी द्वारा मंजूर हैं और स्कूलों में पढ़ायी जाती हैं। संथाल-मिशन-प्रेस, पाकुर ने संथालों के ग्राम-जीवन के सम्बन्ध में मि० कोर्ट स्टेयर लिखित एक उपन्यास प्रकाशित किया है। संथाली भाषा के सम्बन्ध में दूसरी किताबें अँगरेजी में ये हैं—

J. Phillips—An Introduction to the Santal Language. Calcutta, 1852.

E. G. Mann—Sonthalia and the Sonthals. London, 1867.

Rev. E. L. Puxley—A Vocabulary of the Santali Language. London, 1868.

Rev. L. O. Skrefsrud—A Grammar of the Santhal Language. Benares, 1873.

T. Cole—A Santhali Primer. Pokhuria, 1896.

W. Martin—English-Santali Vocabulary. Benares, 1898.

A. Campbell—A Santali-English Dictionary. Pokhuria, 1899.

कैथोलिक-प्रेस, राँची से चर्च-सम्बन्धी समाचार के लिये संथाली में 'धरवक' नामक एक मासिक बुलेटिन निकलता है।

मुंडारी—मुंडा भाषा में संथाली के बाद मुंडारी बोली का स्थान है। इसे मुंडा जाति के लोग बोलते हैं। बिहार में इसके बोलनेवाले करीब ४½ लाख आदमी हैं। इनमें ३ लाख ८३ हजार तो सिर्फ राँची जिले में, ५४ हजार सिंहभूम में, ६ हजार देशी राज्यों में, १ हजार पूर्णिया जिले में और बाकी दूसरी जगहों

में हैं। मुंडारी से संथाली, हो और भूमिज बोलियाँ बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं। मुंडारी का ही एक रूपान्तर होरो-लिया-झगर बोली है। रेवेरेन्ड डाक्टर नौट्राट ने मुंडारी बोली में बाइबिल का अनुवाद किया है। सबसे पहले जे० सी० ह्विटली ने १८७३ ई० में एक मुंडारी प्राइमर लिखा था। उसके बाद १८९१ ई० में एस० जे० डी० स्मेट ने अँगरेजी में मुंडारी का एक व्याकरण लिखा। जे० हैफमैन ने १८९६ ई० में मुंडारी फर्स्ट प्राइमर और १९०३ ई० में मुंडारी व्याकरण लिखा था। ये सब किताबें कलकत्ते से प्रकाशित हुई थीं। अँगरेजी में एक इनसाइक्लोपीडिया मुंडारिका १० जिल्दों में छपा है।

हो—हो बोली हो जाति के लोग बोलते हैं। इसे हो काजी भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है हो जाति की बोली। इसके बोलनेवालों की संख्या बिहार में ३ लाख ३९ हजार है, जिसमें ३ लाख ५ हजार तो सिर्फ सिंहभूम में और ३४ हजार व्यक्ति देशी राज्यों में हैं। यह बोली मुंडारी से बहुत मिलती-जुलती है, लेकिन व्याकरण और शब्दावली में कुछ अन्तर पड़ता है। ग्रामीण और जंगली जीवन में व्यवहृत होनेवाले शब्दों और भावों के लिये यह बहुत उन्नत है। मि० लायनेल बरोज ने हो बोली का एक बड़ा व्याकरण लिखा है। इसके पहले १८८६ ई० में भीमराम सुलंकी द्वारा लिखा हुआ एक व्याकरण बनारस से प्रकाशित हुआ था, उसका नाम था हो काजी।

खरिया—खरिया बोली बोलनेवाले बिहार में ६९ हजार से कुछ अधिक आदमी हैं, जिनमें ६६ हजार तो सिर्फ राँची में और बाकी मानभूम और सिंहभूम जिले में हैं। इस बोली पर आर्य-भाषाओं का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इसके मूल रूप

का धीरे-धीरे अन्त हो रहा है। श्री गगनचन्द्र बनर्जी ने खरिया का एक प्राइमर लिखा है, जिसमें खरिया जाति के रीति-रवाज का भी जिक्र है। यह १८९४ ई० में प्रकाशित हुआ था।

भूमिज—इसे भूमिज जाति के लोग बोलते हैं। इसके बोलनेवाले बिहार में ३९ हजार आदमी हैं। यह सबसे अधिक सिंहभूम में और उसके बाद क्रम से देशी राज्यों और मानभूम में बोली जाती है। यह मुंडारी से बिलकुल ही मिलती-जुलती है।

माहिली—माहिली एक तरह से संथाली का एक भेद है, जिसे माहिली जाति के लोग बोलते हैं। इसके बोलनेवाले करीब १२½ हजार आदमी हैं। यह अधिकतर संथाल परगना, सिंहभूम और देशी राज्यों में बोली जाती है। यह बोली कारमाली से बहुत मिलती-जुलती है।

कोरवा—इसके बोलनेवाले ११,८६७ आदमी हैं, जिनमें ११ हजार पलामू में और बाकी राँची, पूर्णिया, हजारीबाग और सिंहभूम में है। यह बोली असुरी बोली से बहुत मिलती-जुलती है। कुछ कोरवा लोग मुंडारी और संथाली से मिलती-जुलती बोली बोलते हैं। हिन्दू संस्कृति में आये हुए राँची के कोरवा लोगों की छत्तीसगढ़ी की अपभ्रंश बोली को सदरी कोरवा कहा जाता है। यह मुंडा-भाषा-श्रेणी की कोरवा बोली से भिन्न है।

कारमाली—यह भी संथाली का ही एक भेद है। इसे कोल, काल्ह या कारमाले जाति के लोग बोलते हैं, जो खासकर लोहा गलाने का काम करते हैं। इस बोली के बोलनेवाले १० हजार आदमी हैं जिनमें ८ हजार संथाल परगने में, १½ हजार मानभूम मे और बाकी भागलपुर और पूर्णिया में रहते हैं। यह बोली हजारीबाग, मानभूम आदि जिले के कुरमियों की बोली कुड़माली से, जो मगही का एक रूप है, बिलकुल भिन्न है।

कोड़ा—इसके बोलनेवाले बिहार में ६ हजार आदमी हैं, जिनमें ४½ हजार मानभूम में, १¼ हजार संथाल परगने में और बाकी मुँगेर में रहते हैं। कोड़ा को कोडा, काओरा और खैरा कोआरी भी कहते हैं।

असुरी—यह असुर जाति की बोली है, जिसके बोलनेवाले २१८४ आदमी राँची जिले मे और ५८३ पलामू जिले में हैं। यह अगरिया और बिरजिया बोली से मिलती है। अगरिया और बिरजिया जातियाँ असुरो की ही शाखाएँ हैं। असुरी बोली में द्राविड़ भाषाओं के भी बहुत शब्द आये हैं। इसका व्याकरण संथाली और मुंडारी से बहुत मिलता-जुलता है। रेवरेन्ड फर्ड हैन ने असुरी बोली का एक प्राइमर लिखा है।

तूरी—तूरी बोली कुछ मुंडारी से और कुछ संथाली से मिलती है। इसके बोलनेवाले ६९० आदमी राँची जिले में और ७ पलामू जिले में हैं।

बिरजिया—बिरजिया बोली बोलनेवाले ६१२ आदमी इस प्रान्त में केवल पलामू जिले में हैं। इस बोली को लोग कोराँटी भी कहते हैं।

बिरहोर—यह बोली संथाली और मुंडारी से कुछ-कुछ मिलती है। यह धीरे-धीरे मिट रही है। इसके बोलनेवाले बिहार प्रान्त में ४७२ आदमी हैं जो हजारीबाग, पलामू, मानभूम और राँची जिले में रहते हैं।

अगरिया—इस बोली के बोलनेवाले २९ आदमी मानभूम में रहते हैं। अगरिया और बिरजिया बोली असूरी से बहुत मिलती है।

जुआँग—इस जाति को लोग पतुआ भी कहते हैं, क्योंकि इस जाति की स्त्रियाँ पत्तों से अपना बदन सजाती हैं। जुआँग बोली

बोलनेवाले उड़ीसा में अधिक हैं। विहार में तो इसके बोलनेवाले सिर्फ ५ आदमी पूर्णिया जिले में गिने गये थे। यह बोली खरिया से बहुत मिलती-जुलती है।

द्राविड़-भाषाश्रेणी—विहार में द्राविड़-भाषाश्रेणी की कुल ८ भाषाएँ या बोलियाँ प्रचलित हैं जिनके बोलनेवाले ५॥ लाख से कुछ अधिक आदमी हैं। इन बोलियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है :—

ओराँव या कुड़ुंख—द्राविड़ भाषाओं या बोलियों में विहार के अन्दर ओराँव बोली सबसे मुख्य है। इसे ओराँव जाति के लोग बोलते हैं। इस बोली को कुड़ुङ्ख या कुड़ुङ्ख कत्था भी कहते हैं। इसके बोलनेवाले विहार में ४$\frac{3}{4}$ लाख आदमी हैं। इनमें ३$\frac{3}{4}$ लाख केवल राँची जिले में, करीब ५७ हजार पलामू जिले में, करीब १४ हजार पूर्णिया जिले में, १० हजार सिंहभूम जिले में, ५$\frac{3}{4}$ हजार संथाल परगने में, ५$\frac{1}{2}$ हजार चम्पारण में, ४ हजार हजारीबाग जिले में, १ हजार देशी राज्यों में, करीब १ हजार मानभूम में तथा शेष शाहाबाद, भागलपुर और पटना जिले में रहते हैं। पहले पहल रेवरेन्डे ओ० फ्लेक्स ने अँगरेजी में ओराँव बोली पर एक किताब लिखी थी जो १८७४ ई० में कलकत्ते से प्रकाशित हुई थी। उसके बाद रेवरेन्ड फर्ड हैन ने ओराँव पर कई किताबें लिखीं जिनमें मुख्य हैं—कुड़ुंख व्याकरण (सन् १९००), कुड़ुंख-अँगरेजी डिक्सनरी (सन १९०३) और कुड़ुंख रीति-रिवाजों का संग्रह तथा अँगरेजी अनुवाद (सन् १९०५)। इन्होंने कुड़ुंख भाषा और देवनागरी लिपि में बाइबिल का अनुवाद किया है तथा छोटी-छोटी और भी कई किताबें लिखी हैं।

अभी सन् १९३७ की बात है कि राँची-निवासी एक भारतीय ईसाई श्री सेमुएल रंका ने ओराँव या कुड़ुंख भाषा की एक

वर्णमाला और लिपि ईजाद की है। कहते हैं कि इसके बनने में करीब ३० वर्ष लगे हैं। इसमें ३२ व्यंजन, १० स्वर, ५ अनुस्वार और संयुक्त आदि तथा १० अंक के चिह्न हैं। अक्षरों के नाम चीजों के नाम पर रखे गये हैं और आकार उन चीजों के आकार के अनुसार ही बनाये गये हैं। जैसे च अक्षर का नाम चन्दो रखा गया है और उसका आकार अर्द्ध चन्द्र के समान बना लिया गया है। ङ, ञ, ण, प, क्ष, त्र, ज्ञ, ऋ, लृ अक्षर नहीं रखे गये हैं। स्वरों के चिह्न हिन्दी की तरह अक्षरों के चारों ओर लगाने का नियम न रखकर अँगरेजी की तरह सिर्फ आगे लगाने का नियम रखा गया है।

माल्टो—यह खासकर राजमहल पहाड़ी के दक्षिण भाग में मलेर या मले पहाड़िया लोगों द्वारा बोली जाती है। इस बोली को राजमहाली भी कहते हैं। यह ओराँव से बहुत मिलती-जुलती है। संथाली और आर्य-भाषाओं का भी इसपर बहुत असर पड़ा है। इसके बोलनेवाले ६७,४०३ आदमियों में ६७,०५२ संथाल परगने में, १८७ भागलपुर में और १६४ पूर्णिया में रहते हैं। The Psalms, The Four Gospels और The Acts of Apostles का अनुवाद इस भाषा में रोमन लिपि में हुआ है। रेवरेन्ड ई० ड्रोइज का लिखा हुआ इस बोली का एक व्याकरण १८८४ ई० में प्रकाशित हुआ था।

तेलगू और तामिल—यहाँ तेलगू बोलनेवाले ७½ हजार और तालिम बोलनेवाले ३ हजार आदमी हैं। ये उन्नत भाषाएँ हैं, पर य यहाँ की नहीं, दक्षिण भारत की भाषाएँ हैं; इसलिये यहाँ इनके विशेष विवरण की आवश्यकता नहीं है। इन बोलियों के बोलनेवाले यहाँ खासकर सिंहभूम और मानभूम की

फैक्टरियों और खानों में काम करने आये हैं। ये लोग हजारीबाग वगैरह और भी कई जिलों में पाये जाते हैं।

गोंड़ी—विहार में इस बोली के बोलनेवाले ९९७ आदमियों में ९९५ आदमी सिर्फ सिंहभूम में हैं। इसके बोलनेवाले अधिकतर लोग मध्यप्रान्त और उड़ीसा में पाये जाते हैं। इस बोली को कोय भी कहा जाता है। इसकी कई उपबोलियाँ हैं। इस बोली में रोमन, देवनागरी और तेलगू अक्षरों मे बाइबिल का अनुवाद हुआ है। रेवरेन्ड ई० एच० विलियमसन ने अँगरेजी मे इस बोली का एक व्याकरण और कोष लिखा है जो १८९० ई० में लंडन से प्रकाशित हुआ था।

अन्य द्राविड़ भाषाएँ—अन्य द्राविड़ भाषाएँ बोलनेवालों में से जो ४३० आदमी गिनाये गये हैं, उनमें १० कंधी, कोंध या कुई बोलनेवाले हैं, शेष मलयालम और कनाड़ी। कुई बोलनेवाले मुख्यतः उड़ीसा में रहते हैं। मेजर जे. मैकडोनल्ड-स्मिथ ने इस बोली पर एक किताब लिखी थी जो १८७६ ई० मे कटक से प्रकाशित हुई थी। उसका नाम था A Practical Handbook of the Khond Language. सन् १९०२ में लेचमजी लिंगम ने इसपर एक व्याकरण लिखा था, नाम था An Introduction to the Grammar of the Kui or Kondh Language. मलयालम और कनाड़ी दक्षिण भारत की भाषाएँ हैं जो उन्नतावस्था में हैं। इनके बोलनेवाले खासकर सिंहभूम की फैक्टरियों और खानों में काम करने आये हैं। सिंहभूम में मलयालम बोलनेवालों की संख्या ३५५ और कनाडी बोलनेवालों की संख्या ३८ है।

भारत की अन्य भाषाएँ, भारतीय-भिन्न एशियाई भाषाएँ और यूरोपीय भाषाओं के विशेष उल्लेख की आवश्यकता नहीं

है। भारत की अन्य भाषाओं में जिप्सी भाषा का भी जिक्र हुआ है। इसके अन्दर डोमरा, गुलगुलिया, मालर और नटी बोलियाँ हैं। इनमें डोमरा मुख्य है। इसके बोलनेवाले एक प्रकार के डोम हैं, जो अधिकतर सिंहभूम में रहते हैं। नटी नट लोगों की और गुलगुलिया गुलगुलिया जाति की बोली है।

हिन्दुस्तानी—संसार के सब देशों और सब प्रान्तों में भिन्न-भिन्न देशों या प्रान्तों के लोग आते-जाते रहते हैं। इसलिये, कोई ऐसा देश या प्रान्त नहीं है जहाँ नाना भाँति की भाषाएँ न बोली जाती हैं। फिर भी, किसी देश या प्रान्त की अपनी एक खास साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा होती है। बिहार की साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा हिन्दुस्तानी है जिसे प्रान्त के ८५ प्रतिशत व्यक्ति मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। बाकी १५ प्रतिशत में से ९ की बोली मुंडा या द्राविड़ बोली है जिसका न कोई पुराना साहित्य रहा है और न लिखावट ही। सैकड़े ६ व्यक्ति अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों या देशों से आकर यहाँ रहते हैं और ये अपने घरों में अपनी भाषाएँ बोलते हैं। इन १५ प्रतिशत व्यक्तियों में स्त्री-बच्चे सभी, जिन्हें कुछ समझने का शऊर है, प्रायः हिन्दुस्तानी मजे में समझ लेते हैं और कमोबेश बोल और लिख भी लेते हैं।

हिन्दुस्तानी भाषा के दो रूप हैं—हिन्दी और उरदू। अधिकतर संस्कृत शब्दों से भरी भाषा को हिन्दी और अधिकतर अरबी-फारसी शब्दों से भरी भाषा को उरदू कहते हैं। हिन्दू प्रायः हिन्दी और मुसलमान प्रायः उरदू लिखते हैं। इस समय कुछ लोग हिन्दी-उरदू की जगह साधारण बोलचाल की भाषा से एक बीच की भाषा बनाने और इसी को हिन्दू-मुसलमान, दोनों की भाषा कायम करने की बात कह रहे हैं। लेकिन, ऐसी भाषा

तो केवल साधारण काम-काज की भाषा हो सकती है और है भी। साहित्यिक भाषा होने में यह कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। क्योंकि, उच्च कोटि का साहित्य तैयार करने के लिये, ऊँची भावनाओं और विचारों को प्रकट करने के लिये, तथा विभिन्न कला और विज्ञान-सम्बन्धी विषयों के पारिभाषिक शब्द गढ़ने के लिये संस्कृत, अरबी-फारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्द-भंडार ढूँढ़ने ही पड़ेंगे। संस्कृत तथा अरबी-फारसी से दूर रहकर हिन्दी-उरदू के बीच की भाषा बनाने की चेष्टा करके संयुक्तप्रान्त की हिन्दुस्तानी-एकेडमी असफलता प्राप्त कर चुकी है; फिर भी लोग इससे सबक नहीं सीख रहे हैं।

बात तो असल यह है कि जब तक हिन्दू और मुसलमान की सभ्यता और संस्कृति एक नहीं हो जाती तब तक दोनों की बिलकुल एक भाषा होना हर्गिज सम्भव नहीं है। और, यह काम एक दिन में होने का नहीं, इसके लिये काफी समय चाहिये। जितनी हद तक इन दोनों जातियों की सभ्यता में समानता आ गयी है उतनी हद तक दोनों की भाषाएँ भी एक हो गयीं हैं और कालक्रम से बिलकुल एक हो भी जाँयगी। पर, उस भाषा में न केवल संस्कृत के या न केवल अरबी-फारसी के शब्द रहेंगे, बल्कि दोनों के ही काफी शब्द होंगे। मगर, एक भाषा बनने का यह काम स्वाभाविक रूप से ही होगा। बलपूर्वक यह काम करने से लाभ के बदले हानि ही है।

भाषा का पार्थक्य केवल जाति पर ही निर्भर नहीं रहता, स्थान पर भी निर्भर करता है। विहार और पंजाब की हिन्दुस्तानी न एक है और न एक हो सकती है। पंजाब के हिन्दुओं की अरबी-फारसी शब्दों से भरी जो आम बोली है उसे विहार के साधारण मुसलमान भी नहीं समझ सकते, हिन्दुओं की तो कोई बात ही

नहीं । इसलिये, भिन्न-भिन्न स्थानों की हिन्दुस्तानी में कुछ-कुछ भिन्नता रहेगी ही । पंजाब की हिन्दुस्तानी में जहाँ अधिकतर अरबी-फारसी के शब्द रहेंगे वहाँ बिहार की हिन्दुस्तानी मे अधिकतर संस्कृत के । लेकिन, कुछ लोग बलपूर्वक यहाँ की हिन्दुस्तानी में भी अरबी-फारसी के शब्द बेतरह भर रहे हैं। इस प्रकार यहाँ हिन्दुस्तानी नाम की आड़ में उरदू का प्रचार हो रहा है। मुसलमानों को खुश करने के लिये या मुसलमानों के समझ सकने लायक भाषा बनाने के मिथ्या भ्रमवश यहाँ की कोर्स की किताबों में साधारण बोलचाल में आनेवाले संस्कृत शब्द भी चुन-चुनकर निकाले जा रहे हैं और अधिकाधिक अरबी-फारसी के शब्द घुसाये जा रहे हैं और इसी को हिन्दुस्तानी नाम दिया जा रहा है। स्वाभाविक रूप से आनेवाले अरबी-फारसी के शब्दों पर किसी को एतराज नहीं है। ऐसे हजारों शब्द यहाँ की हिन्दी में आ गये हैं और आते जा रहे हैं तथा आवश्यकतानुसार व्यवहृत भी होते हैं; मगर एक-एक कर संस्कृत के सभी चालू तत्सम और तद्भव शब्दों को हटाकर उनकी जगह पर केवल अरबी-फारसी के तत्सम और तद्भव शब्दों को रखना बेशक जुल्म है। ऐसा करना यहाँ के हिन्दुओं के लिये ही नहीं, मुसलमानों के लिये भी घातक है। ऐसी दुर्बोध भाषा द्वारा यहाँ की दोनों जातियों के लिये शिक्षा कठिन बनायी जा रही है। प्रान्त के २१ लाख बंगालियों और उड़ियों के लिये ऐसी भाषा समझना और भी मुश्किल होगा। यहाँ के अधिकांश मुसलमान भी, अरबी-फारसी के शब्द कभी-कभी ही इस्तेमाल करते हैं। बिहार में मुसलमान फी सैकड़े सिर्फ १३ हैं जिनकी बोलचाल हिन्दुओं जैसी ही है। जहाँ के हिन्दू मैथिली बोली बोलते हैं वहाँ के मुसलमान भी मैथिली ही बोलते हैं और जहाँ के हिन्दू भोजपुरी बोलनेवाले

हैं वहाँ के मुसलमान भी भोजपुरी ही बोलते हैं। बंगाली मुसलमान तो उरदू से और भी दूर हैं। इस तरह यह बिलकुल स्पष्ट है कि यहाँ के मुसलमान भी अधिकतर हिन्दी ही समझते हैं और यहाँ हिन्दू-मुसलमान दोनों की भाषा प्रायः एक ही है और वह है हिन्दी।* लेकिन, अगर हम यह भी मान लें कि सभी मुसलमान अरबी-फारसी शब्दों से लदी भाषा ही समझते हैं तो भी क्या १०० में १३ के लिये बाकी की सुविधाओं और अधिकारों की कोई परवाह नहीं की जानी चाहिये ?

विभिन्न बोलियाँ—अब हम प्रान्त की कुछ बोलियों पर विचार करेंगे। विहार की हिन्दी या हिन्दुस्तानी को लोग पूर्वी हिन्दी या हिन्दुस्तानी कहते हैं। अक्सर इसे विहारी हिन्दी भी कहा जाता है। भाषा का यह विभेद स्थानीय बोलियों के अनुसार किया गया है, क्योंकि स्थानीय बोलियों का प्रभाव उस स्थान की साहित्यिक भाषा पर निश्चित रूप से पड़ता है। भाषा के अन्दर बोलियों का यह विभेद विहार की कोई खास बात नहीं है। दुनिया के सभी देशों या प्रान्तों की भाषाओं की बहुत-सी बोलियाँ होती हैं। कभी-कभी

---

* It is naturally easier to preserve the purity of the Urdu language in a land of Oriya speakers than in a land of Hindi speakers where there is a constant tendency to lapse into the idioms of local dialects. The boundry between Hindi and Urdu is an impossible one to draw with any degree of definition in this province. The language spoken by Hindus and many Muhammadans is realy the same, though the latter may use an occasional Persian word or phrase, and the great majority of Muhammadans in writing use the ordinary Kaithi script.

—Census Report of B. & O., Part I, 1921, Pages 211-212.

तो इन बोलियाँ में इतना फर्क रहता है कि अक्सर एक ही भाषा की एक बोली बोलनेवाले उसी भाषा की दूसरी बोली बोलनेवाले की बात नहीं समझ सकते हैं। इस देश के अन्दर विहार के बगल-वाले प्रान्तों की ही बात लीजिये। बंगाल में बँगला भाषा की कितनी ही बोलियाँ हैं। पूर्वी बंगाल के लोग यदि अपनी घराऊ बोली बोलें तो पच्छिमी बंगाल के लोग उसे कुछ भी नहीं समझ सकेंगे। उसी तरह पच्छिमी बंगाल की बोली पूर्वी बंगालवाले नहीं समझ पायेंगे। विहार के एक मानभूम जिले में ही, जहाँ लोग एक विकृत बँगला भाषा बोलते हैं, कई बोलियाँ हैं, जैसे—कसाई पारी, खास पोनी, तामाड़ि, करमाली आदि। ❀ इसी तरह पूर्णिया की बँगला बोली को सिरिपुरिया और संथाल परगने के मालपहाड़िया जाति द्वारा बोली जानेवाली बँगला को मालपहाड़िया बोली कहते हैं।

शुद्ध भाषा के साथ बोलियों की काफी भिन्नता होते हुए भी बंगाल में किसी बोली को बोलनेवाले इस बात की चेष्टा नहीं करते कि वे अपनी बोली में ही साहित्य की रचना करें और उसे ही शिक्षा का माध्यम बनायें; लेकिन विहार में कई बोलीवाले अपनी-अपनी बोलियों को ही अपने-अपने यहाँ शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते हैं और उन्ही में उन लोगों ने साहित्य की रचना भी शुरू कर दी है। युक्त प्रान्त में व्रजभाषा, अवधी आदि कई उन्नत बोलियाँ हैं, जिनका मुकाबला विहार की कोई बोली नहीं कर सकती। उनमें कितने ही प्राचीन अनमोल साहित्यिक ग्रन्थ भरे पड़े हैं; फिर भी कोई बोलीवाले आज अपनी बोली को वर्तमान साहित्यिक हिन्दी का स्थान देना नहीं चाहते।

दूसरे देशों को भी लीजिये। भारतवर्ष का शासक देश

❀ दे०—मानभूम जेलार भूविवरण, पृष्ठ ५०

इंगलैंड जन-संख्या या क्षेत्रफल में न्यूनाधिक विहार प्रान्त के ही बराबर है। वहाँ की भाषा, अँगरेजी दुनिया के अन्दर एक प्रमुख भाषा मानी जाती है। उस इंगलैण्ड के अन्दर भी बहुत-सी स्थानीय बोलियाँ हैं। आयरलैण्ड की तो कोई बात ही नहीं, स्काटलैण्ड और वेल्स की भी अलग-अलग बोलियाँ हैं जिन्हें कुछ हद तक भाषा का रूप प्राप्त है। स्काटलैण्ड की बोली स्कौच या गेलिक कहलाती है। अँगरेजी और वेल्स भाषाओं में इतना फर्क है कि कुछ ही मील की दूरी पर रहनेवाले आदमी एक दूसरे की बात समझ नहीं सकते।* खास इंगलैण्ड के अन्दर भी ३८ बोलियाँ बतायी जाती हैं, जिनमें कितने में कुछ पुराना साहित्य भी है।† इतना होते हुए भी सबकी साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा एकमात्र अँगरेजी है। यूरोप की अन्य भाषाओं की भी अलग-अलग बोलियाँ हैं। साहित्यिक फ्रेंच की प्रोवेंकल (Provencal) और नारमन बोलियाँ हैं। फिर, इनकी भी कई उपबोलियाँ हैं। जर्मन भाषा की भी यही हालत है। जर्मन के एक भाग के लोग दूसरे भाग के लोगों की बोलियाँ नहीं समझ सकते, लेकिन सबकी साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा एक जर्मन है।

---

*But the English language though backed by the sword, has never been able to conquer Wales, a surprising fact when we consider how often the two countries are separated by a merely legal boundry, a few miles on either side of which the speech of one or the other may fail to be understood.—The New World of to-day by A. R. Hope Mongriefe Vol. 1, Page 42.

† A Dictionary of Archaism and Provincialism, Pages 9 to 36.

दुनिया के सब देशों और सब कालों में भाषा से कुछ भिन्न उसकी कुछ बोलियाँ होती हैं और वे बोलियाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही बदलती रहती हैं। भाषाएँ सदैव ऊँची श्रेणी के पढ़े-लिखे लोगों के लिये और बोलियाँ जनसाधारण के लिये होती हैं। बोलियों का नाश नहीं किया जा सकता। उनकी भी अपनी एक उपयोगिता है। विभिन्न बोलियों से भाषा के विकास में सहायता मिलती है। जैसे, कूप या सरिता विभिन्न सोतों से अपना जीवन पाकर भरी-पूरी रहती हैं, उसी तरह भाषाएँ भी अपनी बोलियों से जीवन-बल प्राप्त करती हैं। बोलियाँ उपेक्षा की चीज नहीं होनी चाहिये। इस बात की आवश्यकता है कि भाषा के विद्वान लोग बोलियों का अध्ययन करें, उनमें अगर कोई साहित्य हो तो उसकी खोजकर उनकी रक्षा करें, उनके मुहावरे, उनकी कहावतों और शब्दावलियों का संग्रह करें जिससे भाषा और साहित्य का भंडार भरे। युनिवर्सिटी इस काम को कर सकती है। वह किसी भाषा के विद्वान को, उस भाषा की किसी सम्पन्न बोली का खास अध्ययन करने को प्रोत्साहन देकर उसकी अच्छी-अच्छी चीजों को भाषा में लाने पर उसे उपाधि आदि दे सकती है। मगर, अलग-अलग बोलियों को भाषा और साहित्य का रूप देकर शिक्षा का माध्यम बनाने की चेष्टा करना हास्यास्पद है—एक भारी नासमझी है। किसी भाषा का साहित्य-भंडार एक दिन में नहीं भरा जाता, इसके लिये सदियाँ लगती हैं और लाखों-करोड़ों विद्वानों और प्रतिभावानों का घोर परिश्रम लगता है। कालिदास और भवभूति, तुलसी और सूर, सेक्सपियर और मिल्टन जब चाहें तब किसी भाषा में पैदा नहीं कर लिये जा सकते। बिहार में मैथिली, संथाली, ओराँव आदि भाषाओं की सृष्टि करनेवाले और इन्हें शिक्षा का माध्यम बनाने की चेष्टा करने-

वाले क्या कभी गम्भीरता-पूर्वक यह भी सोचते हैं कि उनका साहित्य-भंडार कितने दिनों में भरा जायगा और उसके भरने-वाले अभी कितने आदमी हैं ? थोड़ी-सी कोर्स की किताबें बना लेने से तो कुछ हो नहीं जाता। जब तक भाषा का साहित्य-भंडार नहीं भरता तब तक उस भाषा के द्वारा लोगों को शिक्षा देना उन्हें सदा के लिये अज्ञानांधकार में छोड़ रखना है। हिन्दी के आज १३ या १४ करोड़ लोगों की भाषा होने और कुछ हद तक अपना साहित्य रखने तथा उसके साहित्य-भंडार भरने योग्य हजारों बड़े-बड़े विद्वानों के मौजूद रहने पर भी उसके द्वारा ऊँचे दरजे की शिक्षा देने में अभी कई तरह की कठिनाइयाँ अनुभव की जाती हैं; तो मैथिली, संथाली और ओराँव आदि भाषाओं का क्या कहना। माना कि मैथिली में दो-चार कवियों की पुरानी सुन्दर कविताएँ है। लेकिन इतने से क्या होने का है। इस सम्बन्ध में आन्दोलन करनेवाले मैथिलों को समझना चाहिये कि आखिर शुद्ध मैथिली बोलनेवाले तो दरभंगा जिलान्तर्गत सिर्फ दो सबडिविजनों के थोड़े-से हिस्सों के लोग हैं। भला इतने की एक अलग भाषा, एक अलग लिपि और एक अलग साहित्य क्या होगा। मैथिली की अन्य उपबोलियों का रूप शुद्ध मैथिली से इतना भिन्न है कि कोई भी उपबोलीवाले हिन्दी को छोड़ मैथिली को साहित्यिक भाषा स्वीकार नहीं कर सकते। आदिम जाति की संथाली और ओराँव आदि बोलियों में साहित्य की रचना हो सकना और भी मुश्किल है। असल में जिनकी प्रेरणा से भिन्न-भिन्न बोलियों को भाषा का रूप देने की चेष्टा हो रही है उनका उद्देश्य यहाँ राष्ट्रीयता पैदा न होने देना और यहाँ के लोगों को शिक्षा से वंचित रखना है। आज उन बोलियों के बोलनेवाले कुछ लोग तो अपने मालिकों के इशारे पर निजी स्वार्थ-साधन के लिये और कुछ लोग महा

अज्ञानतावश अलग-अलग डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाने के प्रयत्न में लगकर अपने देश और समाज को भीषण हानि पहुँचा रहे हैं।

लिपियाँ—भाषा के अलावे, यहाँ की लिपि का प्रश्न भी पेचीदा बनाया जा रहा है। यहाँ की मुख्य लिपि देवनागरी या हिन्दी लिपि है जिसे सभी पढ़े-लिखे हिन्दू और आदिम जाति के लोग व्यवहार करते हैं। मुसलमानों मे भी पढ़े-लिखे बहुत-से आदमी इस लिपि को मजे मे पढ़ लेते हैं। यह लिपि सबसे सुगम, सुबोध, सरल और वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण है। लेकिन, जब से हिन्दुस्तानी की चर्चा चली है तब से यहाँ के १३ प्रतिशत संख्यावाले मुसलमानों के कारण बाकी ८७ भी उरदू लिपि सीखने को मजबूर किये जा रहे हैं, जिससे लोगों का समय और शक्ति व्यर्थ ही नष्ट होगी। उरदू लिपि एक बहुत ही पेचीदी और वैज्ञानिक दृष्टि से अपरिपूर्ण है। इसके अक्षर खंडित रूप से लिखे जाते है और इसमें मात्रा भी नहीं लगायी जाती है। इसलिये, इस लिपि में लिखे शब्द उच्चारण के अनुसार ठीक-ठीक नहीं पढ़े जा सकते। एक शब्द कई तरह से पढ़ा जाता है। इसलिये, किसी शब्द को लोग अन्दाज से ही पढ़ते हैं। लिपि जान लेने से ही कोई शब्द पढ़ा नहीं जा सकता जब तक वह शब्द पहले से ही मालूम नहीं हो। इन कठिनाइयों के कारण उरदू लिपि में लिखी या छपीं चीजें उतनी तेजी से नही पढ़ी जा सकतीं जितनी देवनागरी में। इस लिपि में सुन्दर टाइप बनाने की भी सुविधा नहीं है; इसलिये अधिकतर हाथ से लिखे अक्षरों को पत्थर पर जमाकर ही उसे प्रेस पर चढ़ाया जाता है। इसमें बहुत ज्यादा वक्त लगता है और शीघ्रता में कोई काम नहीं हो सकता। इस तरह यह लिपि विद्या-प्रचार मे काफी कठिनाई और रुकावट पैदा करनेवाली है। इसलिये, यह मुसलमानों के लिये भी अहितकर है। इस वैज्ञानिक युग में उन्नति और

प्रगति-शील राष्ट्रों की होड़ में चलने के लिये कोई मुल्क ऐसी लिपि लेकर आगे नहीं बढ़ सकता। उरदू लिपि के अनेक दोषों के कारण इसका प्रयोग मुसलमानों में भी सभी प्रान्तों के अन्दर बहुत तेजी के साथ घटता जा रहा था, लेकिन कुछ दिनों से कट्टर मुसलमानों ने इसके लिये फिर आन्दोलन किया है। परन्तु केवल भावुकता के बल पर यह अधिक दिनों तक प्रचार नहीं पा सकती। उड़ीसा के मुसलमान या बिहार के उड़िया मुसलमान अब भी उड़िया या हिन्दुस्तानी भाषा को उरदू लिपि में नहीं लिखकर उड़िया लिपि में लिखते हैं।*

हिन्दी और उरदू लिपि के अलावे यहाँ एक और लिपि है जिसे कैथी लिपि कहते हैं। मुख्यत: लिखने का काम करनेवाली कायस्थ जाति द्वारा लिखे जाने के कारण इस लिपि का नाम कैथी पड़ा है। यह उत्तर भारत से लेकर गुजरात तक व्यवहृत होती है। हाँ, जहाँ-तहाँ इसकी लिखावट में कुछ फर्क पड़ता है। इसका टाइप केवल गुजरात और बिहार में बना। गुजरात की तो यह साहित्यिक लिपि हो गयी है, लेकिन यह सिर्फ सौ-डेढ़ सौ वर्ष के अन्दर की ही बात है। गुजराती की पुरानी किताबें देवनागरी लिपि में ही मिलती हैं। बिहार मे इस लिपि का खूब प्रचार है। कुछ ही दिन पहले तक बिहार के अधिकांश सरकारी कागज इसी लिपि में छपते थे। लेकिन, अब छपाई में देवनागरी इसकी जगह बहुत हद तक ले चुकी है। साधारण पढ़े-लिखे लोग अभी तक कैथी लिपि का ही व्यवहार करते हैं। अधिकांश मुसलमान भी आसानी के कारण उरदू की जगह इस लिपि को काम में लाते हैं।

---

*The Urdu of Orissa is commonly written into Oriya, and not in the Persian, script—Census Report of Behar and Orissa, Part I, 1931, Page 232.

जमींदारी, कचहरी आदि लाइनों में सभी हिन्दू और बहुत-से मुसलमान प्रायः इसी का व्यवहार करते हैं। इस लिपि में एक खास गुण है कि यह बहुत तेजी से लिखी जा सकती है; मगर इसमें शुद्ध-शुद्ध लिखने में कठिनाई होती है। लिखावट में ह्रस्व, दीर्घ और संयुक्ताक्षर का विचार नहीं रहता। इस दोष के कारण यह लिपि भी त्याज्य है।

इसके अलावे महाजनी या कोठवाली भी एक लिपि है जो मारवाड़ी लिपि से मिलती-जुलती है। इसे इस प्रान्त के महाजन, व्यापारी और दूकानदार लोग व्यवहार करते हैं। मात्रा नहीं लगाये जाने के कारण इसका पढ़ना बहुत मुश्किल होता है। इसके सम्बन्ध में एक मशल मशहूर है कि किसी ने लिखा 'बड़े भाई अजमेर गये, बड़ी बही भेज दो', वह पढ़ा गया 'बड़े भाई आज मर गये बड़ी बहू भेज दो'।

विहार में इन तीन-चार लिपियों के प्रचलित रहते हुए भी कुछ लोग मैथिली, ओराँव वगैरह नयी-नयी लिपियाँ पैदा कर उलझन और भी बढ़ा रहे हैं। जहाँ कुछ राष्ट्रीयता के प्रेमी और दूरदर्शी महापुरुष यह चाहते हैं कि यूरोप के देशों की भाँति भारत की सभी प्रान्तीय भाषाएँ एक ही लिपि में लिखी जाँय जिससे यहाँ के सभी लोग एक दूसरे की भाषा, साहित्य एवं भावों और विचारों से बहुत कुछ परिचित रहें वहाँ कुछ विचारहीन व्यक्ति एक प्रांत के अन्दर ही अनेकों लिपियाँ पैदा करते जा रहे हैं। इस नयी लिपियों से मुख्यतः उन्ही की हानि है जिनके लिये ये इजाद की जा रही हैं। देश की एक व्यापक भाषा और लिपि को छोड़कर एक नयी भाषा और लिपि ग्रहण करना अपने को एक संकीर्ण दायरे में बंद करना है। एक को दूसरे से पृथक करने में भाषा से अधिक लिपि का हाथ रहता है। हिन्दी-उरदू करीब-करीब एक भाषा होते

हुए भी लिपि के कारण ही बिलकुल दो भाषा हो जाती है। हिंदी दुनियावाले न उरदू दुनिया की बात जानते हैं और न उरदू दुनिया-वाले हिंदी दुनिया की। हिंदू-मुसलमान, दोनों के एक साथ रहते हुए भी दोनों के दो संसार होते हैं। भिन्न-भिन्न लिपियाँ रहने की इस भयंकर बुराई की ओर यथेष्ट ध्यान नहीं है, यह बहुत आश्चर्य की बात है। विदेशी शक्तियाँ इन जरियों से देश को खंड-खंड करने और लोगों में पार्थक्य डालने में बेतरह लगी हुई हैं, इसे भी लोग नहीं देखते।

संथाल परगना और छोटानागपुर की विदेशी मिशनरियों ने अपने धर्म-ग्रंथ वहाँ की बोलियों में अङ्गरेजी या हिंदी लिपि में प्रकाशित किये हैं। वहाँ के आदिमवासी हिंदी सीख जाने से हिंदी साहित्य पढ़कर हिंदुओं के व्यापक धर्म और सभ्यता को ग्रहण करने लगे हैं। उन्हें इस ओर से मोड़ने के लिये अब ईसाई मिशनरियाँ उन लोगों की अलग-अलग लिपियाँ ईजाद करने में लगी हुई हैं। ओराँव लिपि इसी चेष्टा का एक फल है। मिशनरियों की इस चेष्टा से आदिमवासियों तक केवल मिशनरियों की ही बातें पहुँच पावेंगी, वे बाहरी दुनिया से अलग हो जायंगे और साथ ही भाषा सम्बन्धी प्रांतीय एकता भी नष्ट होगी। अतएव, इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि राष्ट्र और राष्ट्र-भाषा के प्रेमी आदिम-वासियों के बीच राष्ट्रीय या प्रांतीय भाषा एवं लिपि हिंदी-हिंदुस्तानी का प्रचार कर उन्हें भीषण हानियों से बचावें।

इसमें संदेह नहीं कि विहार की भाषा और लिपि एकमात्र हिंदी-हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। दूसरी भाषा या लिपि चलाने की चेष्टा करना अत्यन्त ही हानिकर है और इसमें अन्त में असफलता होना निश्चित है।

शासन-प्रबन्ध

शासन में परिवर्तन—सन् १९१२ में बिहार-उड़ीसा बंगाल से अलग किया जाकर एक प्रान्त बनाया गया और पटना उसकी राजधानी रहा। गर्मी के दिनों के लिये राँची राजधानी चुना गया जो अब तक भी बना हुआ है। यहाँ का शासन-भार एक लेफ्टिनेन्ट-गवर्नर के ऊपर छोडा गया और शासन-सम्बन्धी कार्यों में सलाह देने के लिये एक व्यवस्थापिका सभा कायम हुई जिसके ४५ मेम्बर थे। उस समय लेफ्टिनेन्ट-गवर्नरों के प्रान्तों में से केवल इसी प्रान्त में व्यवस्थापिका सभा थी। सन् १९१९ में मांटेगू-चेम्सफोर्ड शासनसुधार के अनुसार यह गवर्नर का प्रान्त बना दिया गया। यहाँ की कौंसिल के मेम्बरों की संख्या बढ़ाकर १०३ की गयी। अधिकांश मेम्बर चुनाव से आने लगे। गवर्नर की सहायता के लिये एक कार्य-समिति (इक्जिक्यूटिव कौंसिल) स्थापित की गयी जिसके दो मेम्बर होते थे, एक हिन्दुस्तानी और दूसरे अँगरेज। इसके अलावे गवर्नर व्यवस्थापिका सभा के निर्वाचित मेम्बरों में से दो व्यक्तियों को मिनिस्टर नियुक्त करते थे। शासन के सारे विषय दो भागों में बाँट दिये गये। एक भाग में 'संरक्षित' विषय और दूसरे भाग में 'हस्तान्तरित' विषय रखे गये। गवर्नर संरक्षित विषयों का शासन अपने इक्जिक्यूटिव मेम्बरों की सहायता से और हस्तान्तरित विषयों का शासन मिनिस्टरों की सहायता से करते थे। इस प्रकार दो तरह के शासन होने से इस शासन को द्वैध शासन कहा जाता था। मिनिस्टर कुछ हद तक व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी होते थे और सभा उनपर अविश्वास का प्रस्ताव लाकर उनको हटा सकती थी और उनका वेतन घटा-बढ़ा सकती थी। बिहार

के पहले गवर्नर लार्ड सिन्हा थे जो स्थायी रूप से नियुक्त किये गये एकमात्र हिन्दुस्तानी गवर्नर हुए। लेकिन, एक वर्ष के बाद ही उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। सन् १९२१ में सर हेनरी ह्वीलर, सन् १९२७ में सर ह्यू लैन्सडान स्टेफेन्सन, सन् १९३२ में सर जेम्स डेविड सिफ्टन और सन् १९३६ में सर मॉरिस जार्ज हैलेट गवर्नर नियुक्त हुए।

सन् १९३६ की अप्रैल से उड़ीसा विहार से अलग कर दिया गया और विहार एक अकेला प्रान्त रह गया। सन् १९३७ में यहाँ नया शासन-सुधार लागू हुआ। इसके अनुसार द्वैध शासन तोड़ दिया गया और प्रान्त में एक के बदले दो व्यवस्थापिका सभाएँ कायम हुईं। निचली सभा का नाम रहा लेजिस्लेटिव एसेम्बली और उपरली सभा का लेजिस्लेटिव कौंसिल। प्रान्तीय एसेम्बली के १५२ मेम्बर होते हैं जिनमें सब के सब चुनाव द्वारा ही आते हैं। एसेम्बली में किस चुनाव-क्षेत्र से कितने मेम्बर आते हैं यह इस प्रकार है:—साधारण चुनाव-क्षेत्र से ७१, हरिजन-चुनाव-क्षेत्र से १५, पिछड़े इलाके और पिछड़ी जाति के क्षेत्र से ७, मुसलमान-चुनाव-क्षेत्र से ३९, एंग्लो-इंडियन चुनाव क्षेत्र से १, यूरोपियन चुनाव क्षेत्र से २, भारतीय ईसाई-चुनाव-क्षेत्र से १, व्यवसाय, उद्योगधंधे, खान और बागवालों (प्लैन्टरों) के चुनाव-क्षेत्र से ४, जमींदार चुनाव-क्षेत्र से ४, युनिवर्सिटी-चुनाव-क्षेत्र से १, मजदूर चुनाव-क्षेत्र से ३, साधारण स्त्री-चुनाव-क्षेत्र से ३, तथा मुसलमान स्त्री-चुनाव-क्षेत्र से १। उपरली सभा-लेजिस्लेटिव कौंसिल में ३० मेम्बर होते हैं, जिनमें ९ साधारण चुनाव-क्षेत्र से, ४ मुसलमान-चुनाव-क्षेत्र से, १ यूरोपियन-चुनाव-क्षेत्र से और १२ प्रान्तीय एसेम्बली से चुने जाकर तथा ४ गवर्नर द्वारा मनोनीत होकर आते हैं।

प्रान्तीय शासन में अब गवर्नर का मनमानापन बहुत हद तक दूर हो गया है और प्रजातन्त्र शासन की नीति थोड़ी बहुत बरती जाने लगी है। यहाँ की सरकार का संगठन बृटिश सरकार के संगठन के अनुरूप रखा गया है, अर्थात् यहाँ भी पार्लमेन्ट्री ढंग की सरकार कायम हुई है। कानूनन गवर्नर को शासन में हस्तक्षेप करने का बहुत बड़ा अधिकार है। लेकिन, भारत के अधिकांश बड़े प्रान्तों की एसेम्बलियों में देश के महान शक्तिशाली दल काँग्रेस का बहुमत कायम हो जाने पर शासन-कार्य में अड़ङ्गा लगाने की आशंका से बृटिश सरकार की ओर से गवर्नरों ने यह आश्वासन दिया है कि वे व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी मन्त्रियों के कार्य में साधारणतया हस्तक्षेप नहीं करेंगे। कहा गया है कि यहाँ के शासन की बहुत-सी बातें इंगलैण्ड की तरह दस्तूर (Convention) से कायम होंगी। लिखित विधान कड़ाई के साथ नहीं बरता जाकर अलिखित विधान भी कायम होगा। शासन-विधान या संगठन में वही लोच रहेगी जो इगलैण्ड के शासन-विधान में है। गवर्नर एसेम्बली के बहुमत-दल के नेता को बुलाकर उससे मन्त्रिमण्डल बनाने कहते हैं। नेता अपने दल की राय से आवश्यकतानुसार मन्त्री चुनता है और खुद प्रधान मन्त्री का काम करता है। विहार के मन्त्रिमण्डल में प्रथम बार चार मन्त्री चुने गये हैं, गरचे संख्या बढ़ाना-घटाना आवश्यकता पर निर्भर करेगा। शासन के सभी विषय मन्त्रियों में बाँट लिये गये हैं। प्रत्येक मन्त्री अपने मुख्य विषय के नाम से जाना जाता है। हरएक मन्त्री के लिये दो पार्लमेन्ट्री सेक्रेटरी नियुक्त हुए हैं, गरचे इनकी संख्या भी आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है। पार्लमेन्ट्री सेक्रेटरी का काम केवल पार्लमेन्ट के मामले में मिनिस्टरों की मदद करना ही

नहीं बल्कि कुछ शासन-सम्बन्धी कामों को भी करना और फाइल वगैरह देखना भी है। मिनिस्टर या पार्लमेन्ट्री सेक्रेटरी सरकार के स्थायी कर्मचारी नहीं समझे जाते हैं। इनका सम्बन्ध व्यवस्थापिका सभाओं से रहता है। इनका मुख्य काम शासन-सम्बन्धी नीति निर्धारित करना और शासन-सम्बन्धी कार्यों की निगरानी रखना है। निचली व्यवस्थापिका सभा या शासन-भार लेनेवाले दल के बदलने के साथ-साथ ये लोग तथा एडवोकेट-जेनरल बदलते रहते हैं। बिहार के प्रथम काँग्रेस मन्त्रि-मण्डल में माननीय श्रीकृष्ण सिंह, प्रधान मन्त्री ; मा० अनुग्रह नारायण सिंह, अर्थ-मन्त्री ; मा० डाक्टर सैयद महमूद, शिक्षा-मन्त्री और मा० जगलाल चौधरी, आबकारी-मन्त्री तथा इनमें प्रत्येक के दो-दो पार्लमेंट्री सेक्रेटरी क्रम से इस प्रकार हुए—सर्वश्री कृष्णवल्लभ सहाय, शिवनन्दन मण्डल, जगतनारायण लाल, जीमूत वाहन सेन, शार्ङ्गधर सिंह, जगजीवन राम, विनोदानन्द झा और सईदुल हक।

केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाएँ—केन्द्रीय एसेम्बली में मांटेगू-चेम्सफोर्ड शासनसुधार के अनुसार वर्तमान काल में बिहार-उड़ीसा से १२ मेम्बर हैं, ८ गैरमुस्लिम-चुनाव-क्षेत्र से, ३ मुस्लिम चुनाव-क्षेत्र से और १ जमींदार-चुनाव-क्षेत्र से। एक नामजद किये मेम्बर भी यहाँ से रहते हैं। केन्द्रीय कौंसिल आफ स्टेट में इस समय यहाँ से ४ मेम्बर लिये जाते हैं, ३ गैर मुसलमानों की ओर से और १ मुसलमानों की ओर से। लेकिन, सन् १९३५ के ऐक्ट से भावी फेडरल एसेम्बली में बिहार से ३० मेम्बर लिये जायँगे—साधारण चुनाव-क्षेत्र से १४, हरिजनों की ओर से २, मुसलमानों की ओर से ९ यूरोपियनों से १, भारतीय ईसाइयों से १, जमींदारों से १, मजदूरों के प्रतिनिधियों

से १ और स्त्रियों से १। केन्द्रीय कौंसिल ऑफ स्टेट में विहार से कुल १६ मेम्बर जायँगे। इनमें साधारण चुनाव-क्षेत्र से १०, हरिजनों से १, मुसलमानों से ४ और स्त्रियों से १ मेम्बर चुनकर भेजे जायँगे।

सेक्रेटरियट—प्रान्त में गवर्नर के निजी स्टाफ में सेक्रेटरी, मिलिटरी (सैनिक) सेक्रेटरी, ए-डी-कैम्प और आनरेरी ए-डी-सी रहते हैं। गवर्नर का सालाना वेतन करीब एक लाख है। गवर्नर शासन के सभी काम मिनिस्टरों की सहायता से करता है। प्रान्त के सरकारी दफ्तर—सेक्रेटरियट में भिन्न-भिन्न विभागों के प्रधान अफसर, सेक्रेटरी, डाइरेक्टर, इन्सपेक्टर-जेनरल, कमिश्नर, रजिस्ट्रार आदि कहलाते हैं। इन अफसरों का ब्योरा इस प्रकार है :—

सरकारी	चीफ सेक्रेटरी,		राजनीतिक और नियुक्ति-विभाग
,,	सेक्रेटरी	,	अर्थ-विभाग
,,	,,	,	लगान-विभाग
,,	,,	,	न्याय-विभाग
,,	,,	,	पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट
,,	,,	,	शिक्षा और डेवलपमेन्ट-विभाग
,,	,,	,	स्थानीय स्वायत्त-शासन
,,	,,	,	व्यवस्थापिका सभा
डाइरेक्टर		,	शिक्षा-विभाग
,,		,	सार्वजनिक स्वास्थ्य
,,		,	कृषि-विभाग
,,		,	औद्योगिक-विभाग
,,		,	पशु-चिकित्सा-विभाग
कमिश्नर		,	आबकारी-विभाग
चीफ आरगेनाइजर		,	ग्रामोत्थान-विभाग

इन्सपेक्टर-जेनरल आफ पुलिस

इन्सपेक्टर-जेनरल आफ सिविल हास्पिटल
इन्सपेक्टर-जेनरल आफ प्रिजन (जेल)
रजिस्ट्रार को-ओपरेटिव सोसाइटी
कन्जरवेटर आफ फारेस्ट

शासन-विभाग—शासन के क्रम से प्रांत ४ कमिश्नरियों १६ जिलों, ५३ सब-डिवीजनों और ४०५ थानों में बँटा है। प्रांत की कमिश्नरियों में पटना कमिश्नरी, तिरहुत कमिश्नरी, भागलपुर कमिश्नरी और छोटानागपुर कमिश्नरी हैं। पटना कमिश्नरी में पटना, गया और शाहाबाद, तिरहुत कमिश्नरी में मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन और चम्पारण, भागलपुर कमिश्नरी में भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया और संथाल परगना तथा छोटानागपुर कमिश्नरी में राँची, पलामू, हजारीबाग, सिंहभूम और मानभूम जिले हैं। तिरहुत कमिश्नरी का सदर आफिस मुजफ्फरपुर और छोटानागपुर कमिश्नरी का राँची है। शेष दो कमिश्नरियों के सदर आफिस कमिश्नरियों के नामवाले शहर में ही हैं। जिले दो प्रकार के हैं—रेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट और ननरेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट। ननरेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट मे छोटानागपुर के जिले और संथाल परगना हैं। शेष सभी जिले रेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट हैं। ननरेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट में पिछड़ी हुई जातियाँ बहुत अधिक संख्या में पायी जाती हैं; इसलिये वहाँ के शासन-संबंधी सभी काम साधारण कानून से नहीं किये जाकर कुछ विशेष कानून भी लागू किये जाते हैं। इन जिलों के जिला-अफसर डिप्टी-कमिश्नर कहलाते हैं और इन्हें दूसरे जिलों के जिला अफसरों से कुछ विशेष अधिकार रहता है। प्रान्त के बाकी जिलों के अफसर को कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहा जाता है। सारन जिले का सदर आफिस छपरा, चम्पारण का मोतिहारी, शाहाबाद का आरा, संथाल परगने का नया दुमका,

पलामू का डाल्टनगंज, मानभूम का पुरुलिया और सिंहभूम का चाईबासा है। शेष जिलों के सदर आफिस जिले के नामवाले शहर है। जिला कई सब-डिवीजनों में और सब-डिवीजन कई थानों में बँटे हैं। सब-डिवीजन का प्रधान अफसर सब-डिवीजनल अफसर या एस० डी० ओ० कहलाता है। किस जिले में कौन-कौन सब-डिवीजन हैं, यह नीचे लिखा है :—

पटना—सदर (बाँकीपुर), पटना सिटी, दानापुर, बाढ़ और बिहार। गया—गया, जहानाबाद, नवादा और औरंगाबाद। शाहाबाद—आरा, बक्सर, ससराम, भभुआ। मुजफ्फरपुर—मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी और हाजीपुर। दरभंगा—दरभंगा, मधुबनी और समस्तीपुर। सारन—छपरा, गोपालगञ्ज और सिवान। चम्पारण—मोतिहारी और बेतिया। भागलपुर—भागलपुर, बाँका, मधेपुरा और सुपौल। मुँगेर—मुँगेर, जमुई, और बेगुसराय। पूर्णिया—पूर्णिया, अररिया और किसुनगंज। संथाल परगना—नया दुमका, देवघर, गोड्डा, जामतारा, पाकुर, और राजमहल। राँची—राँची, गुमला, खूँटी और सिमदगा। पलामू—डाल्टनगंज और लतेहर। हजारीबाग—हजारीबाग, गिरिडीह और चतरा। मानभूम—पुरुलिया और धनवाद। सिंहभूम—चाईबासा और धालभूम।

न्याय—न्याय के काम के लिये प्रान्त के सदर आफिस पटने में एक हाईकोर्ट है जहाँ जिला-अदालतों के मामले की अपील सुनी जाती है। हाईकोर्ट में एक चीफ जस्टिस—प्रधान न्यायाधीश और कई जज होते हैं। जिले की अदालत में फौजदारी और दीवानी मामला सुनने के लिये अलग-अलग प्रबन्ध है। जिले में प्रायः एक ही व्यक्ति सेशन जज की हैसियत से फौजदारी मामले को सुनता है और डिस्ट्रिक्ट जज की हैसियत से दीवानी मामले को।

दीवानी मामलों को सुनने के लिये मुन्सिफ भी रहते हैं। फौजदारी मामले को जिला मजिस्ट्रेट और उनके सहायक डिप्टी और सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट देखते हैं। मजिस्ट्रेट पहले, दूसरे और तीसरे इन तीन दरजे के होते हैं। सब-डिवीजनों में भी छोटे-छोटे फौजदारी मामले की सुनवाई सब-डिवीजनल अफसर और उनके सहायक डिप्टी और सब-डिप्टी-मजिस्ट्रेट के हाथ में तथा दीवानी मामले की सुनवाई मुन्सिफ के हाथ में रहती हैं। छोटे-छोटे मामलों को सुनने के लिये जगह-जगह आनरेरी मजिस्ट्रेट रहते हैं। ननरेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट में मजिस्ट्रेटों को प्रायः लगान-सम्बन्धी मुकदमे भी देखने का हक होता है।

सेना और पुलिस—शान्ति-रक्षा के लिये प्रान्त में सेना और पुलिस का प्रबन्ध है। सेना की बड़ी छावनी दानापुर में है। मुजफ्फरपुर में एक छोटी-सी छावनी है। राँची में भी घुड़सवार सैनिक रखे जाते हैं। पुलिस चार तरह की है—साधारण पुलिस, रेलवे पुलिस, मिलिटरी पुलिस और गुप्तचर पुलिस (सी० आई० डी०—क्रिमिनल इन्भेस्टिगेशन डिपार्टमेन्ट)। पुलिस का सारा इन्तजाम इन्स्पेक्टर-जेनरल आफ पुलिस के हाथ में रहता है। उनकी सहायता के लिये ३-४ डिप्टी-इन्सपेक्टर जेनरल रहते हैं। जिले में पुलिस का बड़ा अफसर सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ पुलिस होता है जो जिला-कलक्टर की सलाह से सब प्रबन्ध करता है। उसकी सहायता के लिये असिस्टेन्ट या डिप्टी-सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं। उनके नीचे कई इन्स्पेक्टर, सब-इन्स्पेक्टर, असिस्टेन्ट सब-इन्स्पेक्टर, हवलदार और कानिस्टबिल रहते हैं। पुलिस के काम के लिये जिला कई थानों में बँटा रहता है। थाने का अफसर इन्स्पेक्टर या सब-इन्स्पेक्टर होता है जो दारोगा भी कहलाता है। गाँवों के अन्दर चौकीदार और दफेदार रहते हैं।

दफेदार सब जिलों में नहीं होते। ननरेगुलेटेड जिलों में घाटों, अर्थात् रास्तों की रक्षा के लिये घटवाल रहते हैं जिनकी गिनती पुलिस में है। जब जमींदारों के हाथ में पुलिस का प्रबन्ध था तभी से डाकुओं और लुटेरों से मुसाफिरों को बचाने के लिये यह इन्तजाम जारी है। घटवालों के कई दरजे होते हैं। भिन्न-भिन्न दरजे के लोग तरफ सरदार, सदियाल, सरदार, ताबेदार, दिगवार, नायब दिगवार आदि कहलाते हैं। इन्हें मेहनताना प्रायः जमीन के रूप में मिलता है। अब इनकी आवश्यकता बहुत घट गयी है। बिहार सूबे के अन्दर सन् १९३६ में पुलिस के एक इन्स्पेक्टर जेनरल, ३ डिप्टी-इन्स्पेक्टर जेनरल, २४ सुपरिन्टेन्डेन्ट, २५ असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट, २८ डिप्टी-सुपरिन्टेन्डेन्ट, २६ सारजेन्ट मेजर, १७ सार्जेन्ट, १३५ इन्स्पेक्टर, ९८७ सब-इन्स्पेक्टर, ७७९ असिस्टेन्ट सब-इन्स्पेक्टर, १५४ हवलदार, ९,७७७ कानिस्टबिल और ५४,७२७ चौकीदार (घटवाल आदि सहित) थे।

जेल—प्रान्त के अन्दर ४ सेन्ट्रल जेल, ९ जिला जेल और ४० छोटे जेल हैं। सेन्ट्रल जेल बकसर, भागलपुर, गया और हजारीबाग में हैं। जिला जेल बाँकीपुर, छपरा, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णिया, दुमका, राँची और मानभूम में हैं। जिले के सदर आफिस मुंगेर, आरा, चाइबासा और डाल्टनगंज में जिला जेल नहीं छोटे जेल हैं, पर इधर कई सालों से आरा, चाईबासा और डाल्टनगंज के छोटे जेल अस्थायी रूप से जिला जेल का काम कर रहे हैं। छोटे जेल कुछ सदर सब-डिवीजनों को छोड बाकी सभी सबडिवीजनों में हैं। मुंगेर में नाबालिगों के लिये जेल है जो जुवेनाइल जेल कहलाता है। हजारीबाग के रिफार्मेट्री जेल में बंगाल, आसाम, बिहार और उड़ीसा इन चारों प्रांतों के छोटी उम्र के कैदियों को पढ़ाने और उद्योगधंधा सिखाने

का प्रबंध है। सन १९३५-३६ में यहाँ २०५ लड़के शिक्षा पाते थे।

रजिस्ट्री आफिस—जमीन की खरीद-बिक्री की रजिस्ट्री के लिये प्रांत के ११५ स्थानों में रजिस्ट्री आफिस हैं। भिन्न-भिन्न जिलों के रजिस्ट्री आफिसों की संख्या इस प्रकार है:—पटना ७, गया ६, शाहाबाद ६, सारन १२, चम्पारण ७, मुजफ्फरपुर १४, दरभंगा १३, मुँगेर ९, भागलपुर ८, पूर्णिया ८, संथाल परगना ६, हजारीबाग ४, राँची ५, पलामू ३, मानभूम ५ और सिंहभूम २।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबँगला, वगैरह बनवाने, प्रायमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करने, तालाब, कुआँ वगैरह खुदवाने और घाट, अस्पताल, फाटक (अरगड़ा) आदि का प्रबन्ध करने के लिये संथाल परगने को छोड़ प्रान्त के सभी जिलों में जिला बोर्ड हैं। बोर्ड के प्रायः तीन-चौथाई मेम्बर आम लोगों से चुनकर और बाकी पद की हैसियत से तथा नामजद होकर आते हैं। हजारीबाग, राँची, पलामू और सिंहभूम बोर्ड के चेअरमैन नामजद किये हुए सरकारी अफसर (आफिसियल) होते हैं। बाकी बोर्डों के चेअरमैन निर्वाचित गैर सरकारी आदमी होते हैं। संथाल परगने में डिस्ट्रिक्टबोर्ड कमिटी है जिसका चेअरमैन डिप्टी कमिश्नर होता है और वही उसके कुछ मेम्बरों को भी चुनता है। यह कमिटी प्रायः वही काम करती है जो और जिलों में डिस्ट्रिक्टबोर्ड करता है। डिस्ट्रिक्टबोर्ड अपने छोटे-मोटे काम अपने अधीनस्थ लोकलबोर्ड से लेता है। राँची, पलामू और सिंहभूम में लोकलबोर्ड नहीं हैं। हजारीबाग में केवल गिरिडीह में लोकल-बोर्ड है। पटना जिले के सीटी सब-डिवीजन में भी लोकलबोर्ड नहीं है। प्रान्त के बाकी सभी सब-डिवीजनों में लोकलबोर्ड हैं। किसी सब-डिवीजन से डिस्ट्रिक्टबोर्ड के लिये चुने गये मेम्बर

बिहार प्रान्त की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जनसंख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	३४,५५,१४१	कायस्थ	३,६६,०३१
ब्राह्मण	१५,४०,३०६	हो	३,३८,८२७
संथाल	१४,११,९५०	बढ़ही	३,०५,०००
कुरमी	१३,५७,३०२	धोबी	२,६६,००८
राजपूत	१३,४२,४६६	केवट	२,०२,०००
कोयरी	१३,०१,९८८	बनिया	१,९३,३३१
दुसाध	१२,९०,९३६	भूमिज	१,७२,३९८
चमार	१२,५५,६८९	पासी	१,७२,०००
जोलाहा	९,८३,२६७	डोम	१,५१,६२१
तेली	८,९८,५२०	बौरी	१,४५,०००
भूमिहार ब्राह्मण	८,९५,०००	रजवार	१,३३,०००
मुसहर	७,२०,०५१	खरिया	८५,३६०
ओराँव	५,५३,७८५	घटवार	७३,०००
धानुक	५,४५,०००	माली	७२,०००
कहार	५,२४,०००	खरवार	६३,१२४
ताँती	५,१८,०००	हाड़ी	६३,०००
भुइयाँ	५,१५,०९३	भोगता	६२,०००
काँदू	५,०६,३८४	गौरा	६०,०००
मुंडा	४,७४,२०७	सौरिया पहड़िया	५९,८९१
कुम्हार	४,६२,१७८	महली	५६,०००
मल्लाह	४,५८,०००	तूरी	५३,०००
हजाम	४,५६,७६९	घासी	४६,०००
कमार	४,३४,९१९	माल पहड़िया	३७,४३७

जनसंख्या और क्षेत्रफल में संसार के प्रमुख देशों और भारत के प्रान्तों के बीच विहार का स्थान

देश या प्रान्त	जनसंख्या	क्षेत्रफल	सघनता फी मील
चीन	४४,५१,८१,३८६	३८,७८,६२३	११५
भारतवर्ष	३५,२८,३७,७७८	१८,०८,६७९	१९५
रूस	१६,५७,६८,४००	८२,४१,९२१	२०
अमेरिका	१३,७०,०८,४३५	३७,३८,३९५	३७
जापान साम्राज्य	९,०३,९६,०४८	२,६०,६४४	३४७
जर्मनी	६,३१,८१,०००	१,८१,७२३	३४८
बंगाल	५,१०,८७,०००	८२,९५५	६१६
युक्तप्रान्त	४,९६,१५,०००	१,१२,१९१	४४२
ग्रेट-ब्रिटेन व उ.आय.	४,६३,५६,०००	९४,६३३	४९०
इटली साम्राज्य	४,५१,६३,२५४	७,८०,९४४	५८
मद्रास	४,४२,०४,०००	१,४०,८९५	३१४
फ्रांस	४,१८,३५,०००	२,१२,६५०	१९७
विहार	३,२५,५८,०५६	६९,९५०	४६५
पोलैंड	३,१९,४८,०२७	१,४९,२७४	२१४
पंजाब	२,८४,९१,०००	१,३६,९६४	२०८
स्पेन	२,४९,४७,११६	३,२५,३०३	७७
बम्बई	२,२५,१२,०००	१,०५,२९५	२१४
रोमानिया	१,८०,२५,०३७	१,२२,२८२	१४७
मध्यप्रदेश	१,७९,९०,०००	१,३१,०९५	१३७
पोर्तुगाल	१,५१,९१,९८०	८,३४,४५५	१८
जेकोस्लोवेकिया	१,४७,२६,१५८	५४,२२६	२७२
बर्मा	१,४६,६७,०००	२,३३,४९२	६३

देश या प्रान्त	जनसंख्या	क्षेत्रफल	सघनता फी मील
इजिप्ट (मिस्र)	१,४२,१७,८६४	३,८३,०००	३७
युगोस्लेविया	१,३९,३४,०३८	९५,५५८	१४६
टर्की	१,३६,४८,२७०	२,९४,४१६	४६
उड़ीसा	१,२७,६२,०००	६४,७२७	१९७
अफगानिस्तान	१,२०,००,०००	२,४५,०००	४९
कनाडा	१,०३,७७,०००	३७,२९,६६५	३
ईरान (फारस)	१,००,००,०००	६,२८,०००	१६
आसाम	९२,४८,०००	६७,३३४	१३७
आस्ट्रेलिया	६६,२४,०००	२९,७४,५८१	२
हंगरी	८६,८८,३१९	३५,८७५	२१४
बेलजियम	८२,१३,४४९	११,७५२	६९९
आस्ट्रिया	६५,३४,४८१	३२,३६९	२०२
ग्रीस	६२,०४,६८४	५०,२५७	१२३
स्वीडन	६१,९०,३६४	१,७३,३४९	३६
नेपाल	५६,००,०००	५४,०००	१०४
अबिसीनिया	५५,००,०००	३,५०,०००	१६
लंका (सिलोन)	५३,१२,५००	२५,३३२	२१०
सीमाप्रान्त	४६,८४,०००	३६,३५६	१२९
अरब	४५,००,०००	१,५०,०००	३०
स्विटजर लैंड	४०,६६,४००	१५,९४०	२२५
सिंध	३८,८७,०००	४६,३७८	८४
डेनमार्क	३५,५०,६५६	१६,५७६	२१४
आयरिश फ्री स्टेट	२९,७२,०००	२७,०००	११०
नारवे	२८,१४,१९४	१,४८,९९३	१९
पैलेस्टाइन	१०,५५,०००	९,०००	११७

विहार प्रान्त का क्षेत्रफल, जनसंख्या, सघनता, शहर और गाँव (सन् १९३१)

प्रान्त और जिला	क्षेत्रफल वर्ग-मील मे	सन् १९३१ की जनसंख्या	सघनता फी वर्गमील	गाँवों की संख्या
विहार प्रान्त	६९,९५०	३,२५,५८,०५६	४६५	६८,५५१
पटना	२,०६८	१८,४६,४७४	८९३	२,३१५
गया	४,७१४	२३,८८,४६२	५०७	६,०५८
शाहाबाद	४,३७२	१९,९३,४८९	४५६	४,७३५
सारन	२,६८३	२४,८६,४६८	९२७	४,३०५
चम्पारण	३,५३१	२१,४५,६८७	६०८	२,५४८
मुजफ्फरपुर	३,०३६	२९,४१,०२५	९६९	४,०५९
दरभंगा	३,३४८	३१,६६,०९४	९४६	३,१३५
मुङ्गेर	३,९२७	२२,८७,१५४	५८२	२,६१०
भागलपुर	४,२२६	२२,३४,६३२	५२९	३,०८०
पूर्णियाँ	४,९७२	२१,८६,५४३	४४०	४,१६०
संथाल परगना	५,४५८	२०,५१,४७२	३७६	१०,१६०
हजारीबाग	७,०२१	१५,१७,३५७	२१६	६,०८७
राँची	७,१०२	१५,६७,१४९	२२१	३,८३८
पलामू	४,९१६	८,१८,७३६	१६७	३,१३४
मानभूम	४ ०९५	१८,१०,८९०	४४२	४,६४२
सिंहभूम	३,८७९	९,२९,८०२	२४०	३,०१३
देशी राज्य	६०२	१,८६,६२२	३१०	६७२

(लगातार)

	शहरों की संख्या	शहरों की जनसंख्या	सन् १८८१ की जनसंख्या	आधी सदी में वृद्धि प्र० सै०
विहार प्रांत	६९	१४,६२,४०८	२,६७,४६,८४०	२२
पटना	८	२,८१,९३७	१७,५५,४१६	५
गया	७	१,३५,९९३	२१,२६,०७९	१४
शाहा०	६	१,१७,६३०	१९,४७,११८	२
सारन	३	७०,४७५	२२,९५,००१	८
चम्पा०	२	४५,४८६	१७,२१,६०८	२५
मुज़०	५	८२,२४१	२५,८४,६६०	१४
दर०	५	१,०४,८२३	२६,३०,४९६	२०
मुँगेर	६	१,२६,००८	१९,७१,८५२	१६
भाग०	२	८९,०८०	१९,६७,६३५	१४
पूर्णियाँ	४	४६,२२३	१८,४८,१०७	१८
संथा०	५	५२,२२१	१५,६४,६९०	३१
हजा०	३	५०,८५७	११,०४,७४२	३७
राँची	३	६४,५८१	१०,५७,८३१	४८
पलामू	२	२४,०२५	५,५१,४१३	४८
मान०	४	५६,३९३	१०,५८,२२८	७१
सिंह०	४	१,१४,४३५	४,५३,७७५	१०५
देशी०	×	×	१,०८,१८९	७३

विहार प्रांत के विभिन्न धर्मावलम्बियों की जनसंख्या (सन् १९३१)

प्रांत और जिला	हिन्दू	सिक्ख	जैन	बौद्ध	आदिम जाति
विहार प्रांत	२,६०,४२,७४५	५,६०६	३,६२६	५२३	२०,३०,०१६
पटना	१६,३९,८२९	२२०	२०४	१६	१९
गया	२१,३३,५४१	१८३	५६४	१९	१२
शाहाबाद	१८,३८,८६२	३९७	५१२	११	×
सारन	२१,७६,९८४	१२	६	×	१
चम्पारण	१७,८७,२७४	३२	५	×	४८५
मुजफ्फरपुर	२५,४९,००६	१८	९	१	६
दरभंगा	२७,२५,४२७	४४	५५	×	×
मुँगेर	२०,४९,१९२	८	२४	४	७,५०८
भागलपुर	१९,८०,२६२	५०	२८०	×	३,०४४
पूर्णियाँ	१२,८५,३१४	६९९	१७२	×	१२,१६७
संथाल परगना	९,४९,१९८	७३	२५	×	८,६५,१२८
हजारीबाग	१२,०८,०९९	२२१	७९४	२२१	१,३३,१५६
राँची	८,६९,४९२	१९	६९८	१३	३,६८,२४७
पलामू	६,६९,९६१	११	९	×	६५,६४७
मानभूम	१५,९२,५२७	७९	८३	६	९९,१६
सिंहभूम	४,६०,०७५	३,४९८	१८६	२३२	४,१९,३३८
देशी राज्य	१,२७,७०२	४२	×	×	५६,०8

(लगातार)

	मुसलमान	कुल ईसाई	यूरोपियन	एँग्लो०	पारसी	अन्य
विहार प्रांत	४१,४२,७४३	३,३२,५४६	६,०५४	५,६०८	२२१	२७
पटना	२,०२,६५५	३,५०३	१,१७६	१,३३७	२६	२
गया	२,५३,५६०	५७६	६५	३०५	७	×
शाहाबाद	१,५१,३६८	२,३३५	१६	१५६	४	×
सारन	३,०६,००५	४६०	१३७	११०	×	×
चम्पारण	३,५४,२३५	३,६५५	१७०	३४	१	×
मुजफ्फरपुर	३,६१,०६१	८८७	२५३	६०	६	१
दरभंगा	४,४०,०३७	५३१	१४१	१०३	×	×
मुँगेर	२,२८,४६७	१,६१७	५०२	८२३	४	×
भागलपुर	२,४६,४३६	१,५६०	८६	१४३	×	×
पूर्णियाँ	८,८६,३६८	१,८२३	६६	१६३	×	×
संथाल पर०	२,२३,७०२	१३,३४६	३२६	२०४	×	×
हजारीबाग	१,७१,६६४	३,१६६	२५६	१०८	१	२
राँची	६६,०४७	२,६२ ६०८	६३०	२०५	४	२१
पलामू	७४,५०१	८,६०७	४२	२०	×	×
मानभूम	१,११,३७७	७,६५६	१,१५६	१,११०	१	१
सिंहभूम	२६,७५४	१६,५५२	६६७	१,००८	१६७	×
देशी राज्य	२,४१६	३६४	२०	१६	×	×

विहार के शहर और उनकी जनसंख्या
(सन् १६३१)

शहर	जनसंख्या	शहर	जनसंख्या
पटना	१,५६,६६०	हजारीबाग	२०,६७७
गया	८८,००५	हाजीपुर	१६,२६६
भागलपुर	८३ ८४७	मधुबनी	१८,७८६
जमशेदपुर (सिंह०)	८३,७३८	मोतिहारी	१७,५४५
दरभंगा	६०,६७८	धनबाद	१६,३५६
मुँगेर	५२,८६३	साहबगंज (संथा०)	१५,८८३
राँची	५०,५१७	कटिहार (पूर्णियाँ)	१५,८६४
आरा	४८,६२२	पूर्णियाँ	१५,४७४
छपरा	४७,४४८	डुमराँव (शाहाबाद)	१४,४२१
विहार शरीफ	४६,६६४	मोकामा (पटना)	१४,२६०
मुजफ्फरपुर	४२,८१२	देवघर	१४,२१७
जमालपुर (मुँगेर)	३०,३४६	सिवान	१४,२१५
बेतिया	२७,६४१	शेखपुरा (मुँगेर)	१४,०१७
पुरूलिया	२५,६७४	बक्सर	१३,४४६
ससराम	२५,१७५	खगड़िया (मुँगेर)	१२,२३०
दानापुर	२४,२२१	डाल्टनगंज	१२,०४०
गिरिडीह	२१,१२२	गढ़वा (पलामू)	११,६८५

(*लगातार*)

शहर	जनसंख्या	शहर	जनसंख्या
दाऊदनगर (गया)	११,६६६	चतरा (हजा०)	८,७५८
चक्रधरपुर (सिंह०)	११,१६१	जुगसलाई (सिंह०)	८,७२१
चाइबासा	१०,७८५	बेगूसराय	७,७३६
सीतामढ़ी	१०,७०१	लोहरदगा	७,५७७
दानापुर छावनी	१०,२१७	नवादा	७,४८५
समस्तीपुर	६,८६१	औरंगाबाद	७,४२८
बाढ़	६,७५०	खगौल (पटना)	७,४१२
जगदीशपुर (शाहा०)	६,६६१	रघुनाथपुर (मान०)	७,१३६
दुमका	६,४७१	हिसुआ (गया)	७,१३१
फतुहा (पटना)	६,३६३	झालदा (मान०)	६,६२४
लालगंज (मुज०)	६,१६२	जयनगर (दरभंगा)	६ ५६८
मधुपुर (संथा०)	८,६६५	बुंडू (राँची)	६ ४८७
किसुनगंज (पूर्णियाँ)	८,६४६	भभुआ	६,००२
रोसरा (दर०)	८,८६६	फारबिसगंज (पूर्णि०)	५,६३६
लक्खीसराय (मुँगेर)	८,८१३	टिकारी (गया)	५,४८१
रिवीलगंज (सारन)	८,८१२	कहलगाँव (भाग०)	५ २३३
जहानाबाद	८,७६४	राजमहल	३,६८५

मुजफ्फरपुर छावनी २३७

विहार में पढ़े-लिखे व्यक्तियों की जनसंख्या

(सन् १९३१)

प्रान्त और जिला	पढ़े-लिखे पुरुष	पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ	अँगरेजी पढ़े पुरुष	अँगरेजी पढ़ी स्त्रियाँ	फी सै० पढ़े लोग
विहार प्रांत	१२,४४,६९३	१,०५,५१०	१,३३,७५९	११,६१९	४·१४
पटना	१,६०,९९३	१७,९१६	२०,५८९	२,३४५	९·६८
गया	१,१२,०७५	८,०२९	६,४०८	३३९	५·०२
शाहाबाद	९९,०८९	६,८३२	८,६६८	४८७	५·३१
सारन	८६,१२०	५,१९१	७,०९४	२२३	३·६६
चम्पारण	५७,८६९	४,४९१	५,०२९	३६५	२·९०
मुजफ्फरपुर	१,०९,९५३	९,१८३	८,४६७	४५४	४·०५
दरभंगा	१,१७,४२९	६,७११	७,६५१	४५३	३·९२
मुँगेर	७१,६९६	७,२८०	८,१२८	७५८	३·४५
भागलपुर	७६,३७६	५,६८७	९,७६९	७१८	३·७१
पूर्णियाँ	९१,०१६	४,१२४	८,००७	३३५	४·३५
संथाल परगना	५४,४०८	५,०९१	९,८५२	१,०५९	२·४१
हजारीबाग	३५,२१८	२,७९१	५,२११	६०१	२·५०
राँची	३५,१९३	८,१९३	४,७१५	९८२	२·७६
पलामू	१८,३९०	१,४८५	१,३७७	५६	२·४२
मानभूम	७७,४६९	७,०७९	१२,३३०	१,२१५	४·६६
सिंहभूम	३६ २९२	४,८४४	९,८१८	१,२०३	४·४२
देशी राज्य	५,१०७	५८३	६४६	२६	३·०४

विहार में ईसाइयों की वृद्धि
(सन् १९०१-१९३१)

प्रांत और जिला	१९०१	१९११	१९२१	१९३१
विहार प्रान्त	१,६३,७८५	२,२१,८३६	२,४९,०६५	३,३२,५४६
पटना	२,५६२	२,५८५	३,१७५	३,५०३
गया	२५३	३४९	४२८	५७६
शाहाबाद	३७५	७००	२,१६२	२,३३५
सारन	३१४	४३७	३७३	४६०
चम्पारण	२,४१७	२,७७५	२,७८२	३,६५५
मुजफ्फरपुर	७१९	८९३	८१९	८८७
दरभंगा	७१०	७६६	५२१	५३१
मुँगेर	१,४३३	१,८०६	१,६४९	१,९१७
भागलपुर	७७५	१,१०२	१,०८२	१,५६०
पूर्णियाँ	४३९	५००	१,३५०	१,८२३
संथाल परगना	९,८७५	१०,१६३	११,००१	१३,३४६
हजारीबाग	१,१६३	१,७८६	२,१२३	३,१६९
राँची	१,२४,९५८	१,७७,४७३	१,९७,२१६	२,६३,६०८
पलामू	७,९०८	७,७८३	७,२८३	८,६०७
मानभूम	२,९१०	४,५००	५,६४७	७,६५६
सिंहभूम	६,९६१	८,२००	११,३०९	१९,५५२
देशी राज्य	१३	१८	१४५	३६४

विहार में विधवाओं की संख्या
(सन् १६३१)

प्रान्त और जिला	०—५ (उम्र)	५—१५ (उम्र)	१५—४० (उम्र)	४० से अधिक (उम्र)
विहार प्रान्त	५,४६८	४६,६७३	७,४५,०४०	१७,३८,२०५
पटना	६०	१,६११	३५,७८८	१,०६,३६०
गया	२३७	३,७७७	५२,०३३	१,३३,८७८
शाहाबाद	२०७	१,८५२	५३,३३२	१,२५,५०६
सारन	२२४	१,७८०	६०,७४५	१,५२,५३७
चम्पारण	२३६	१,६६३	४३,७१३	१,०८,७५२
मुजफ्फरपुर	४७६	४,४५३	७०,२१३	१,६२ ७३०
दरभंगा	१,५५६	१०,७७२	७८,६८६	१,७८,८६५
मुँगेर	३८६	३,७२१	४३,६००	१,२५,१७०
भागलपुर	४२८	४,८१४	५१,६१६	१,१८,२०६
पूर्णियाँ	३१६	३,६४६	६३,५०४	१,०३,५५८
संथाल परगना	३२६	२,६७२	४२,३२६	८५,३१६
हजारीबाग	२८२	२,८६४	३६,६५७	६६,२४२
राँची	१५६	१,१४३	२७,२४६	६८,३४७
पलामू	१२३	६८६	१६,५४४	३४,३८३
मानभूम	३३७	२,८८८	४६,८३०	८७,६४८
सिंहभूम	७६	५२५	१७,५८०	३८,६३४
देशी राज्य	×	१७६	४,०२४	६,०३७

पेशा, उद्योग-धन्धा और व्यापार (सन् १९३१)

फी हजार कमानेवाले व्यक्ति

प्रान्त और जिला	कुल कमानेवाले	कृषि-पशुपालन में	उद्योग-धन्धा में	गमनागमन में	व्यापार में	शासन में	पेशा में	विविध में	खेती में लगे फी सै० लोग
विहारप्रांत	४२०	३३१	२८	३	१४	१	३	४०	७९
पटना	४४६	२७२	३८	६	२४	१	९	९६	६१
गया	४४३	२८८	३९	३	१६	—	६	९१	६५
शाहाबाद	४६०	३४७	४८	४	२४	२	७	२८	७५
सारन	४२४	३७९	१६	१	९	२	२	१५	८९
चम्पारण	४५१	४११	१०	१	७	—	१	२१	९१
मुजफ्फ०	३९५	३४१	१७	१	११	२	३	२०	८६
दरभंगा	३६१	२८७	१४	१	१०	—	३	४६	८०
मुँगेर	४६०	२९१	२९	४	२०	१	५	११०	६३
भागलपुर	४२०	३३४	२१	१	१५	१	३	४५	८०
पूर्णियाँ	३५७	३०६	२०	३	१६	२	२	८	८६
संथालप०	५२६	४७८	१४	२	१०	—	२	२०	९१
हजारी०	३९४	३२३	२६	४	८	१	२	३०	८२
राँची	३२६	२७४	२०	१	८	१	३	१९	८४
पलामू	४६५	३८८	२४	४	१६	१	२	३०	८४
मानभूम	३६०	२३९	५९	११	१४	१	३	३३	६६
सिंहभूम	३२६	२२८	५३	७	१२	१	३	३२	६८
देशी राज्य	५२०	४३४	३४	४	७	२	२	३७	८३

पागलों, बहरे-गूँगों, अंधों व कोढ़ियों की संख्या (१६३१)

प्रांत और जिला	पगले	बहरे-गूँगे	अन्धे	कोढ़ी
विहर प्रांत	६,८२७	२१,३५२	४२,२३०	१३,४३४
पटना	३२८	६३८	२,८००	५८०
गया	४२६	१,२७१	५,७६८	१,७८६
शाहाबाद	४७१	१,०८२	५,२२८	५४१
सारन	३१३	१,१३७	१,६४७	४२१
चम्पारण	२८७	३,३५६	२,४३७	६४६
मुजफ्फरपुर	४४२	२,६५४	३,५८८	६७७
दरभंगा	५७२	२,५०२	३,६८७	७६२
मुँगेर	२६२	६६५	२,३२७	४८६
भागलपुर	१६३	७६०	१,४६८	७२६
पूर्णियाँ	३८५	१,६४३	१,३६८	४३७
संथाल परगना	३०२	१,१००	१,५६८	२,०५६
हजारीबाग	२३१	१,०६४	१,६७३	२४४
राँची	१,८८७	१,२४६	२,५२४	२६८
पलामू	१६५	४०६	१,७६७	२२१
मानभूम	४४७	१,६१४	३,३६४	३,०३२
सिंहभूम	६६	१५६	५५४	१५३
देशी राज्य	२०	१६	७२	२६

प्रांत के अन्दर अन्धे पुरुष २०,२३६ और अन्धी स्त्रियाँ २१,६६१, पगले पुरुष ४,४६१ और पगली स्त्रियाँ २,३३६, बहरे-गूँगे पुरुष १२,६६५ और बहरी-गूँगी स्त्रियाँ ८,३५७, कोढ़ी पुरुष १०,०६७ और कोढ़ी स्त्रियाँ ३,३३७ हैं।

पटना जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

पटना जिला दक्षिण विहार में गंगा के किनारे २४°५८′ और २५°४४′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°४२′ और ८६°२′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका मुख्य शहर पटना विहार प्रान्त की राजधानी है जो २५°३७′ उत्तरीय अक्षांश और ८५°१०′ पूर्वीय देशान्तर पर है।

इस जिले के उत्तर में गंगा नदी, दक्षिण में गया जिला और पूरब में मुँगेर जिला हैं। पच्छिम में सोन नदी इसे शाहाबाद जिले से अलग करती है। पटना जिले के उत्तर में गंगा के दूसरी ओर सारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और मुँगेर के जिले पड़ते हैं।

पूरब से पच्छिम तक पटना जिले की लम्बाई ८२ मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई २८ से ४२ मील तक है। यह प्रान्त का सबसे छोटा जिला है। सारन को छोड़ विहार के सभी जिले प्रायः इससे डेढ़गुना या इससे भी अधिक बड़े हैं। प्रान्त के सबसे बड़े जिले राँची और हजारीबाग इससे लगभग ३½ गुना बड़े हैं।

प्राकृतिक बनावट

समतल भूमि—दक्षिण पूरब कोने पर के कुछ पहाड़ और जंगल को छोड़कर बाकी सारा पटना जिला समतल भूमि है जो उत्तर की ओर ढालू होती चली गयी है। पर गंगा के किनारे-

किनारे करीब चार मील चौड़ी जमीन कुछ ऊँची है जिससे दक्षिण पच्छिम से आती हुई नदियाँ सीधे गंगा में नहीं मिलकर पूरब की ओर बह गयी हैं। नदियों की इस रुकावट के कारण पटना सिटी, बाढ़ और मोकामा के दक्षिण की नीची जमीन बरसात में पानी से भरी रहती है। लोग एक जगह से दूसरी जगह नावों पर ही जाते हैं। इस नीची जमीन में पेड़ लगने नहीं पाते। बहुत दूर तक मैदान ही मैदान नजर आता है। गरमी के दिनों में लोगों को इधर चलने में बहुत कष्ट होता है। जिले के और भागों में बहुत से हरे-भरे वृक्ष हैं।

पहाड़ और जंगल—दक्षिण पूरब कोने पर राजगिर पहाड़ ३० मील तक इस जिले को गया जिले से अलग करता है। इसकी सबसे ऊँची चोटी हंडिया पहाड़ी है जो १,४७२ फीट ऊँची है। दूसरी चोटियाँ एक हजार फीट और उससे भी कम ऊँचाई की हैं। इसकी चोटियों में रतनगिरि, विपुलगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि और बैभर मुख्य हैं। यहाँ की आबहवा बहुत अच्छी है। इन पहाड़ों के आसपास कुछ जंगल भी हैं। बिहार शरीफ में भी एक छोटी पहाड़ी है जो पीर पहाड़ी कहलाती है।

नदियाँ

पटना जिले में गंगा और सोन ये दो मुख्य नदियाँ हैं। गंगा जिले की उत्तरी सीमा बनाती है तो सोन पच्छिमी सीमा। इनके अलावे छोटी छोटी कई नदियाँ हैं जो उत्तर-पूरब की ओर बहती हुई गंगा में मिलती हैं। इन नदियों से बहुत सी नहरें निकाली गयी हैं जिससे साल में ज्यादे समय तक ये नदियाँ प्रायः सूखी ही रहती हैं। केवल पुनपुन, मोरहर और पंचाना इन तीन नदियों में कुछ पानी रहा करता है।

गंगा—जहाँ सोन नदी गंगा से मिलती है, वहाँ से लेकर ९३ मील तक गंगा नदी इस जिले की उत्तरी सीमा बनाती हुई चली गयी है। जाड़े के दिनों में पटना के पास इसकी चौड़ाई करीब ६०० गज रहती है। सोन नदी हरदी-छपरा के पास गंगा से मिली है। वहाँ से सोन की एक धारा फूट कर दीघा चली आयी है और वहीं गंगा से मिली है। इस धारा से एक नहर निकाली गयी है। दीघा व्यापार का केन्द्र हो गया है। कार कम्पनी के बड़े बड़े जहाज यहाँ से ग्वालन्दो (बंगाल) तक जाते आते हैं। एक छोटा जहाज यहाँ से बक्सर तक और दूसरा घाघरा नदी में बरहज तक जाता है। पटना के पास उत्तर से गंडक नदी गंगा में मिलती है। पुनपुन नदी कुरथा में गंगा से मिली है। जिले की और नदियाँ जिले से बाहर जाने पर गंगा से मिलती हैं।

सोन—सोन नदी पटना और शाहाबाद जिले के बीच सीमा का काम करती है। सोन-गंगा संगम से कई मील दक्षिण सोन नदी पर ईस्ट इण्डियन रेलवे का बहुत बड़ा पुल है। यह नदी पहाड़ी भागों से बहकर आयी है, इससे बरसात के दिनों में इसमें एकाएक भयानक बाढ़ हो जाती है। पर यह बाढ़ थोड़े ही दिनों तक रहती है। इस नदी का बालू सोने सा चमकता है इसी कारण इसका नाम सोन पड़ा। लोग इसे शोणभद्र भी कहते हैं। पहले इसका नाम था हिरण्यबाहु, जिसका अर्थ है सोने सी बाँहवाली। पहले यह नदी अपने स्थान से बहुत पूरब की ओर बहती थी और फतुहा के पास गंगा में मिलती थी। इस स्थान पर आज पुनपुन नदी बह रही है।

पुनपुन—पुनपुन नदी शाहजादपुर के पास जिले में प्रवेश कर ४४ मील चलती हुई फतुहा में गंगा से मिलती है। इसके गंगा में मिलने के ९ मील पहले मोरहर और दरधा नदियाँ इसमें

आकर मिली हैं। पुनपुन में साल भर तक पानी रहता है, लेकिन इतना नहीं कि नावें सब दिन चल सकें। इसका बहुत सा पानी नहर के काम में आता है। पुनपुन को हिन्दूलोग बहुत पवित्र दृष्टि से देखते हैं। गया जानेवाले हिन्दू यात्री यहाँ अपना सिर मुड़ाना और स्नान करना धर्म समझते हैं।

मोरहर और दरधा—पुनपुन से पूरब मोरहर और दरधा नाम की नदियाँ बहती हैं। ये दोनों करीब एक ही जगह पुनपुन से मिली हैं। ये दोनों नदियाँ एक ही नदी की दो शाखाएं हैं जो गया जिले में फूटी हैं। साल में ज्यादे वक्त तक ये नदियाँ सूखी रहती हैं, क्योंकि इससे खेत की सिंचाई का काम लिया जाता है।

फलगू—फलगू नदी थोड़ी दूर तक इस जिले में बहने के बाद तेलहरा के पास दो शाखाओं में बट जाती है। एक का नाम सोना नदी और दूसरे का नाम कन्तार नदी हो जाता है। ये दोनों आगे जाकर मैथुन नदी में मिल जाती हैं।

मैथुन—यह नदी ढोआ और सोना नदी के मिलने से बनी है। यह करीब समूचे बाढ़ सब-डिविजन में गंगा के समानान्तर बही है। रास्ते में यमुना नदी और धनियैन नदी के मिलने पर इसका नाम कुलुहर हो गया है।

पंचाना—पाँच धाराओं से बनने के कारण इस नदी का नाम पंचाना पड़ा। ये पाँच धाराएं गया जिले से आकर विहार सब-डिविजन में गिरियक के पास मिली हैं। विहार शहर इस नदी के किनारे है। यह नदी बहुत पतली धारा में बहती हुई अन्त में सकरी नदी से मिल गयी है।

सकरी—सकरी पटना जिले के पूरबी हिस्से में बहती हुई मुँगेर जिले में प्रवेश कर गयी है। पंचाना की तरह यह भी बहुत

छोटी नदी है। सिचाई के काम के लिये इससे दो नहरें निकाली गयी हैं जिससे इसमें पानी बहुत कम रह गया है।

जलवायु और स्वास्थ्य

पटना जिले की जलवायु साधारणतः अच्छी है। यहाँ पूस-माघ में जाड़ा और जेठ-वैशाख में गरमी काफी पड़ती है। जाड़े के दिनों में गरमी लगभग ४०° रहती है और गर्मी के दिनों में वही बढ़कर ११०° से ११४° तक हो जाती है। मुख्य हवाएँ पूर्वी और पच्छिमी हैं। पूर्वी हवा तर और पच्छिमी सूखी होती हैं। पूस से जेठ तक प्रायः पच्छिमी हवा और उसके बाद साधारण तौर पर पूर्वी हवा चलती है। आषाढ़ से वर्षा थोड़ी बहुत शुरू हो जाती है और सावन भादो में खूब होती है। साल में करीब चालीस पैंतालीस इंच वर्षा होती है।

जिले की आम बीमारी बुखार, हैजा, प्लेग, चेचक आदि है। कुछ वर्ष पहले यहाँ प्लेग खूब जोरों से हुआ करता था और हजारों आदमी इससे मरते थे। चेचक से बचने के लिये सरकार ने टीका दिलाने का प्रबन्ध किया है।

हर तरह के रोगियों के इलाज के लिये सरकारी प्रबन्ध से जगह जगह अस्पताल खुले हैं। पटना शहर के अन्दर पटना सिटी, गुलजारबाग, बाँकीपुर, गरदनीबाग और दानापुर मे अस्पताल हैं। बाँकीपुर का अस्पताल प्रान्त का सबसे बड़ा अस्पताल है। सरकारी प्रबन्ध में अब यहाँ एक आयुर्वेदिक औषधालय भी खुला है। इनके अलावे मुफस्सिल में भी जहाँ तहाँ अस्पताल हैं। सन् १९३५–३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के ३२ अस्पताल थे।

पटना जिले में सबसे अच्छा स्वास्थ्यप्रद स्थान राजगिर है। स्वास्थ्य सुधार के लिये यहाँ दूर दूर से लोग आकर रहते हैं।

जानवर

जिले के पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, घोड़ा, बकरी, भेड़, गधा, सूअर, कुत्ता आदि हैं। हाथी और ऊँट भी जहाँ तहाँ पाये जाते हैं। इन सब में गाय-बैल सबसे उपयोगी जन्तु हैं। यहाँ साधारण देशी गायों के अलावे दो जाति की गायें और भी तैयार की गयी हैं। एक तो हाँसी के साँढ़ के संयोग से और दूसरे अंगरेजी साँढ़ के संयोग से। हाँसी जाति के गाय-बैल बहुत बड़े होते हैं। बैल तो गाड़ी और हल में जोतने के लिये बहुत उपयोगी होते हैं पर गायें अधिक दूध देनेवाली नहीं होतीं। दूसरी जाति के गाय-बैल बहुत बड़े नहीं होते पर गायें बड़ी दुधार होती हैं। करीब ७०-८० वर्ष पहले कमिश्नर टेलर ने पटना के लोहानीपुर महल्ले में एक पशु-शाला खोली थी और इस जाति की गायें पैदा करायी थीं। पीछे डिस्ट्रिक्टबोर्ड ने आस्ट्रेलियन और मॉण्टगुमरी साँढ़ भी मँगाये जिससे नयी जाति के गाय-बैलों का ह्रास नहीं होने पावे। देशी गायों से नयी जाति की गायें दूध अधिक देती हैं सही मगर इनका दूध मीठा नहीं होता है। हल में प्रायः बैल जोते जाते हैं पर धान के खेतों में गहरा पाँक तैयार करने के लिये भैंसे भी जोते जाते हैं। कभी-कभी गाड़ी में भी भैंसे जोते जाते हैं। भेंड़ जिले के पच्छिम भाग में पाले जाते हैं। बकरियाँ सभी गाँवों में पाली जाती हैं। डोम, दुसाध वगैरह माँस खाने के लिये सूअर पालते हैं। देहातों में छोटे-छोटे घोड़े काम में आते हैं, लेकिन पटना शहर में टमटम वगैरह के घोड़े बहुत बड़े होते हैं। जिले में जानवरों के लिये चारे का अच्छा प्रबन्ध नहीं है।

जानवरों की खरीद-बिक्री के लिये बिहटा में फागुन और बैशाख में मेला लगता है। विक्रम थाने के ऐंखन बाजार में भी इस तरह का मेला लगा करता है। बाँकीपुर और दानापुर में जानवरों का अस्पताल है। बाढ़ और विहार में भी जानवरों के इलाज का प्रबन्ध किया गया है। कुछ डाक्टर देहातों में घूम-घूम कर भी इलाज करते हैं। पशु-चिकित्सा सिखाने के लिये पटना में वेटेरिनरी कालेज है।

जिले के अन्दर बाघ, चीता, भेड़िया आदि भयंकर जंगली जानवर राजगिर पहाड़ के जंगलों में ही मिलते हैं। जंगली सूअर, नील गाय वगैरह प्रायः हर जगह पाये जाते हैं।

इतिहास

प्राचीन मगध—वर्तमान पटना जिला प्राचीन मगध का एक भाग है। पटना और गया जिले का भू-भाग ही मुख्यतः मगध कहलाता था। मगध का इतिहास विहार का ही नहीं भारतवर्ष का इतिहास है। परम प्राचीन काल से लेकर आधुनिक कालतक इस भू-भाग का इतिहास बहुत गौरवपूर्ण रहा है। वेदों में भी मगध का नाम बहुत बार आया है। लेकिन विहार के अन्य भागों में आर्यों के फैल जाने पर भी मगध में उनका प्रवेश बहुत पीछे हुआ। प्रारम्भ में आर्यलोग मगध को घृणा की दृष्टि से देखते थे। यहाँ अनार्यों का बहुत दिनों तक बोलबाला रहा। वेदों और उपनिषद् आदि ग्रन्थों में मगधवासियों को दस्यु, अनार्य, पक्षी, बुद्धिहीन, श्रद्धाहीन आदि कहा गया है। आर्यों के धर्मग्रन्थों में यहाँ आना निषेध लिखा है। परन्तु द्वेष या घृणा की यह भावना अधिक दिनों तक नहीं रही और आर्यलोग धीरे-धीरे मगध

में बसने लगे। परन्तु यहाँ के आर्यों को दूसरे आर्य नीची निगाह से देखते थे और इन्हें ब्रात्य कहते थे। मगध का दूसरा नाम कीकट भी था।

रामायण और महाभारत काल—मगध की प्राचीन राजधानी थी वर्तमान राजगिर। इसका पुराना नाम था गिरिव्रज। राजगृह नाम बहुत पीछे पड़ा, इसे लोग अब राजगिर भी कहने लगे हैं। रामायण में लिखा है कि गिरिव्रज को राजा वसु ने बसाया। जब राम और लक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ मिथिला जा रहे थे तो विश्वामित्र ने उन्हें दूर से गिरिव्रज को दिखाया था। महाभारत काल में गिरिव्रज या राजगृह का राजा बृहद्रथ था जो वसु के वंश का बताया जाता है। बृहद्रथ का ही पुत्र सुप्रसिद्ध जरासंध हुआ जो प्रबल प्रतापी और शूरबीर निकला। इसने आसपास के सभी देशों को जीतकर अपने अधीन कर लिया था। अंग, वंग, कलिंग और पुंड्र सभी इसके कब्जे में थे। पूर्वोत्तर सीमापर का किरात राजा भगदत्त भी इसके वश में था। काशी और कोशल पर भी इसका दबदबा रहा। चेदिराज शिशुपाल ने इसका प्रधान सेनापति होना स्वीकार किया था। पश्चिम में इसका आधिपत्य मथुरा तक फैला हुआ था। मथुरा के राजा कंस से इसने अपनी दो बेटियाँ ब्याही थीं। जब श्रीकृष्ण ने कंस को मारा तो यह बहुत क्षुब्ध हुआ। इसका बदला चुकाने के लिये इसने मथुरा पर कई बार चढ़ाई की। आखिर तंग आकर श्रीकृष्ण सारे यदुवंशियों को लेकर समुद्र के किनारे द्वारका को चले गये। कुछ दिनों के बाद भीम और अर्जुन को लेकर श्रीकृष्ण राजगृह पहुँचे। यहाँ भीम ने गदायुद्ध में जरासंध को मारडाला। जरासंध का लड़का सहदेव महाभारत की लड़ाई में मारा गया।

महाभारत के बाद—जरासंध के मरने के बाद मगध का वह

प्रबल प्रताप जाता रहा, पर मगध राजवंश नष्ट नहीं हुआ। पुराणों से मालूम होता है कि जरासंध के बाद ये सब राजा करीब हजार वर्ष तक मगध पर राज्य करते रहे—सहदेव, सोमापी, श्रुतवान, अयुतायु, निर्मित्र, सुक्षत्र, बृहत्कर्मा, सुश्रम, दीर्घसेन, सुमति, सुबल, सुनीति, सत्यजित, विश्वजित, रिपुंजय, सुनक, प्रद्योत, पालक, विशाखयुप, जनक और नन्दिवर्द्धन। इनके बाद ईसाके ६०० वर्ष पूर्व शिशुनाग गद्दी पर बैठा। इसके वंश में नौ राजे हुए—काकवर्ण, क्षेमधर्म, क्षेत्रज्ञ, बिम्बिसार, अजातशत्रु, दरभक, उदयन, नन्दिवर्द्धन और महानन्द। इनमें बिम्बिसार और अजातशत्रु प्रसिद्ध राजे हुए। बिम्बिसार ने वृज्जियों को दबाने के लिये गंगा के किनारे पाटलिपुत्र ग्राम में एक किला बनवाया। वह पुराने राजगृह से अपनी राजधानी हटाकर नये राजगृह में लाया। कहते हैं कि इसका लड़का अजातशत्रु इसे मार कर गद्दी पर बैठा था।

बुद्ध और महावीर—बिम्बिसार और अजातशत्रु के समय में ही भगवान बुद्ध और महावीर हुए थे। पिता का घर छोड़ने के बाद भगवान बुद्ध पहले-पहल राजगृह में ही टिके और यहाँ दो ब्राह्मणों से शिक्षा पायी। बोध गया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी बुद्धदेव बिम्बिसार के पास राजगृह आये थे। यहाँ से ये बनारस गये। फिर तो ये बराबर यहाँ आते-जाते रहे। राजगृह में यष्टिवन और गृद्धकूट इनके प्रिय स्थान थे। य पाटलिपुत्र ग्राम में भी आये थे और इसके एक प्रसिद्ध नगर होने की भविष्यवाणी की थी। इनकी मृत्यु के बाद पहली बौद्ध महासभा राजगृह के सत्तपानी गुफा में हुई। जैन धर्म के प्रवर्त्तक या सुधारक भगवान महावीर भी राजगृह बराबर आया-जाया करते थे। बिम्बिसार के साथ इनकी नातेदारी भी थी। इनकी मृत्यु

विहार सब-डिविजन के पावापुरी नामक स्थान में हुई। जिस तरह मगध बौद्ध धर्म का केन्द्र स्थान था उसी तरह जैन धर्म का भी। जैन धर्म के दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदाय के चलाने वाले भद्रबाहु और स्थूलभद्र पाटलिपुत्र के ही थे।

नन्दवंश के पूर्व—अजातशत्रु का पोता उदयन या उदयश्व मगध की राजधानी राजगृह से हटा कर पाटलिपुत्र ले आया। उदयन के बाद नन्दवंश तक कौन कौन राजे हुए इस विषय में मतभेद है। कुछ लोग कहते हैं कि अनिरुद्ध, मुंड और नागवंशक के बाद राज्य मन्त्री शिशुनाग के हाथ में चला गया। उसने अवन्ती, काशी, कोशल और वत्स देश को अपने राज्य में मिला लिया। शिशुनाग के बाद उसका लड़का कताशोक राजा हुआ। उसके मरने पर उसके दस लड़कों ने बाइस वर्षों तक राज्य चलाया। फिर नन्दवंश कायम हुआ।

नन्दवंश—नन्दवंश का पहला राजा महापद्म या उग्रसेन था जो ईसा के ३६१ पूर्व गद्दी पर बैठा। वह बड़ा प्रतापी और शक्तिशाली सम्राट् हुआ, उसने अपना साम्राज्य सारे उत्तर भारत में फैलाया। आचार्य्य पाणिनी और वररुचि इसी के दरबार में थे। महापद्म के उत्तराधिकारी उसके आठ पुत्र हुए। ये पिता-पुत्र नवनन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मौर्य्यवंश—नन्दवंश के बाद ईसा के ३२१ वर्ष पूर्व मौर्यवंश का राज्य आरम्भ हुआ। इस वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य्य नन्दवंश के अन्तिम राजा का मन्त्री था। नन्द राज्य से विद्रोह कर यह भारत के उत्तर-पश्चिम सीमा के पास सिकन्दर से जा मिला। वहाँ से भी हटकर इसने अपनी एक सेना तैयार की और उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ राज्यों को जीता। फिर नीति-निपुण चाणक्य की सहायता से नन्दवंश को नाश कर मगध की गद्दी

पर बैठा। इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस से भारत के कंधार, काबुल, वेलूचिस्तान और हेरात प्रान्तों को छीन कर अपने राज्य में मिलाया। दक्षिण भारत के कुछ भागों पर तथा पच्छिम के सौराष्ट्र पर भी इसने कब्जा जमाया था। इसके दरबार में सेल्यूकस का भेजा यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने उस समय के भारत तथा पाटलिपुत्र की म्युनिसिपैलिटी आदि का विस्तृत विवरण लिखा है। ईसा के २९७ वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका लड़का बिदुसार गद्दी पर बैठा। बिन्दुसार का ही लड़का सुप्रसिद्ध अशोक हुआ। इसे सिर्फ कलिंग के साथ युद्ध करना पड़ा था। इसने प्रजा की भलाई के बहुत से काम किये। इसने उपदेशक भेज कर बौद्ध धर्म को सारे भारत में और दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में फैलाया तथा भगवान बुद्ध के पवित्र स्थानों में बहुत से स्तम्भ और स्तूप बनवाये, जिनमें कुछ तो अब तक भी मौजूद हैं। अशोक के बाद मगध साम्राज्य का बल घटने लगा।

सुंगवंश—मौर्य्यवंश के अन्तिम राजा वृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र या पुष्पमित्र ने मार कर सुंग राजवंश की स्थापना की। पुराणों में सुंगवंश के दस राजाओं के राज्य करने का वर्णन आया है। इस वंश का अन्तिम राजा ईसा के ७३ वर्ष पूर्व अपने मन्त्री वसुदेव द्वारा मारा गया।

कण्ववंश—वसुदेव ने कण्व राजवंश की स्थापना की जो ईसा के ३१ वर्ष पूर्व तक चलता रहा। इसके बाद आन्ध्र लोगों का आधिपत्य मगध में फैला।

आन्ध्र वंश—यहाँ आन्ध्र लोगों का अधिक दिनों तक शासन नहीं रहा। वे यहाँ केवल पचास वर्षों तक राज्य कर सके। उनके समय में कुशानवंशी राजाओं का आक्रमण होता रहा था। कहते

हैं कि इस समय लिच्छवि लोग बहुत दिनों तक मगध पर कब्जा किये रहे।

कुशान वंश—ईसा की दूसरी सदी के आरम्भ में कुशानों ने मगध पर अधिकार जमाया और यहाँ के लोगों को बहुत सताया, पर इन लोगों का बल अधिक दिनों तक कायम नहीं रहा। मगध पर चम्पावती (वर्तमान भागलपुर) के नागवंशी राजाओं के अधीन कोटवंशी राजा राज्य करते रहे। इस वंश का अन्तिम राजा सुन्दर वर्मन था।

गुप्त वंश—सुन्दर वर्मन के पोष्यपुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त राजवंश की स्थापना की। इसके पुत्र समुद्रगुप्त ने मगध साम्राज्य को फिर एक विशाल साम्राज्य बनाया और देश देशान्तर को जीत कर एक अश्वमेध यज्ञ किया। इसका लड़का चन्द्रगुप्त द्वितीय था जो विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने पाटलिपुत्र से अपनी राजधानी हटा कर भारत के केन्द्रीय स्थान उज्जैन में राजधानी बनायी। चन्द्रगुप्त-विक्रमादित्य के लड़के स्कन्दगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य घटने लगा, पर गुप्तवंश की एक शाखा के लोग मगध पर राज्य करते रहे। उस समय के मगध देश और पाटलिपुत्र का वर्णन हमें चीनी यात्री फ़ाहियान के यात्रा-वृत्तान्त से मिलता है। वह सन् ४०५ से ४११ तक भारत में रहा। उसने अपना तीन वर्ष का समय सिर्फ मगध में बिताया। यहाँ रहकर उसने संस्कृत पढ़ी और अपने यहाँ ले जाने के लिये यहाँ की अच्छी अच्छी पुस्तकों की नकल की। वह पाटलिपुत्र के टूटे-फूटे महलों को देखकर चकित था। गुप्त साम्राज्य के पतन के समय थानेश्वर के राजाओं का बल बढ़ रहा था। थानेश्वर के राजा हर्षवर्द्धन के समय में मगध की गद्दी पर माधव गुप्त था। इसने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली।

इसी के समय में दूसरा चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) भारत आया था। वह सुप्रसिद्ध नालन्द विश्वविद्यालय में बहुत दिनों तक अध्ययन करता रहा। उसने अपने यात्रा-वृत्तान्त में पटना जिले के नालन्द, राजगृह, उदन्तपुरी, पाटलिपुत्र आदि स्थानों का वर्णन किया है। उसने पाटलिपुत्र को बिलकुल तहस-नहस की हालत में देखा था। हर्षवर्द्धन के बाद उसका मन्त्री अर्जुन उसकी गद्दी पर बैठा। कहते हैं कि वह बिहार प्रान्त में ही रहता था। उसने एक चीनी राजदूत को तंग किया था, जिससे तिब्बत और नेपाल की सहायता से चीनियों ने बिहार पर चढ़ाई की और मगध तक पहुँच कर बहुत लूटपाट मचायी। थानेश्वर वंश के पतन के बाद गुप्तवंश ने फिर अपना साम्राज्य कायम किया और इस बार इस साम्राज्य का केन्द्र मगध ही रहा। पर अन्त में धीरे धीरे गुप्त सामाज्य का नाश हो गया।

पालवंश—गुप्तवंश के बाद यहाँ पालवंश का राज्य आरम्भ हुआ। इस वंश के लोग ८ वीं सदी से लेकर १२ वीं सदी तक राज्य करते रहे। इस वंश का संस्थापक गोपाल था। इस वंश में गोपाल, धर्मपाल, देवपाल, नारायणपाल, रामपाल आदि प्रसिद्ध राजे हुए। पाल राजाओं की राजधानी उदन्तपुरी (या ओदन्तपुरी) में थी जिसे आज बिहार-शरीफ कहते हैं। कई पाल राजे बौद्ध थे। उन्होंने और जगहों के साथ साथ अपनी राजधानी में भी बहुत से बौद्ध-विहार बनवाये, जिससे इस स्थान का नाम ही बिहार पड़ गया। पाल-राजाओं ने उदन्तपुरी और विक्रमशिला के बौद्ध विश्वविद्यालय स्थापित किये थे। बिहार का अन्तिम स्वतन्त्र राजवंश पालवंश ही था जिसने एक समय अपना प्रताप लगभग सारे उत्तर भारत में फैलाया। पालवंश के

अन्त होने के साथ ही बिहार के स्वतन्त्र और गौरवपूर्ण इतिहास का भी अन्त हो गया।

मुसलमानी शासन—जिस समय पाल राजवंश शक्तिहीन हो रहा था उसी समय सन् ११९९ में मुहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने इस पर चढ़ाई की और बहुत आसानी से इसे दखल में कर लिया। मुसलमानों ने उदन्तपुरी के विहारों को नष्ट कर दिया और वहाँ के बौद्ध भिक्षुओं को भी मार डाला, सिर्फ़ थोड़े से लोग जहाँ तहाँ भाग कर अपनी जान बचा सके। इसके पश्चात एक के बाद दूसरे मुसलमान गवर्नर यहाँ शासन करते रहे। मुसलमानों ने इस प्रान्त की राजधानी विहार नगर में ही रखी। पीछे प्रान्त की राजधानी नगरी विहार के नाम पर प्रान्त का नाम बिहार पड़ गया! बिहार शहर मुसलमानों का अड्डा बन जाने के कारण यहाँ बहुत से पीर हुए जिससे मुसलमान लोग इसे बिहार-शरीफ कहने लगे हैं।

शेरशाह के वक्त में प्रान्त की राजधानी बिहार-शरीफ से हटाकर पटना लायी गयी। उसने पाँच लाख रुपया खर्च करके पटने में एक किला बनवाया जिसकी निशानी अब भी मौजूद है। जो पटना सैकड़ों वर्षों से उजाड़ पड़ा था उसकी चहल-पहल फिर बढ़ गयी और फिर यह एक राजनैतिक केन्द्र बन गया।

आरम्भ में विद्रोही अफगानों को दबाने के लिये मुगल बादशाहों को बराबर इधर आता रहना पड़ा। १५२९ ई० में पहला मुगल बादशाह बाबर अफगान सरदारों को दबाने के लिये मनेर तक आया था। हुमायूँ ने यहाँ आकर शेरशाह को परास्त करने की पूरी कोशिश की। १५७३ ई० में दाऊद खाँ बंगाल-बिहार का स्वतन्त्र शासक बन गया और पटना तथा पास के हाजीपुर के किले में अड्डा जमाकर उसने मुगल सेना का

सामना किया। दाऊद खाँ को वश में करने के लिये बादशाह अकबर को पटना तक आना पड़ा था। इसके बाद यह भूभाग बराबर मुगलों के अधीन रहा। मुगल बादशाहों के सम्बन्धी यहाँ कई बार सूबेदार हुए। १६१२ ई० में खुसरू ने पटने में लूटपाट मचायी और अपने को बादशाह घोषित किया। दस वर्ष बाद शाहजहाँ ने अपने पिता से बगावत करके पटना को अपने दख़ल में कर लिया और कुछ दिनों तक यहाँ अपना दरबार कायम रखा। १६२६ ई० में जहाँगीर का एक दूसरा लड़का परवेज शाह ने अपने शासन के स्मारक स्वरूप पटना में एक मस्जिद बनायी जो पत्थर की मस्जिद नाम से मशहूर है। १६६४ ई० में औरंगजेब का चाचा शाइस्ता खाँ यहाँ का सूबेदार होकर हिन्दुओं से जजिया टैक्स वसूलता था। १६७८ ई० में औरंगजेब का तीसरा लड़का मुहम्मद आजिम यहाँ का सूबेदार हुआ। इसके बाद फिर शाइस्ता खाँ यहाँ पहुँचा।

१६९७ ई० में औरंगजेब का पोता अजीम उश्शान यहाँ सूबेदार होकर आया। वह यहाँ बस गया। उसके समय में पटने की बहुत उन्नति हुई। १७०४ ई० में उसने अपने नाम पर पटने का नाम अजीमाबाद रखा। दिल्ली के बहुत से अमीर-उमरा यहाँ बुलाये गये और उनके रहने के लिए एक अलग जगह बनी जो पीछे महल्ला कैवाँ शिकोह के नाम से मशहूर हुआ। वही आज कावाकोह कहलाता है। दीवान लोगों के लिये एक अलग महल्ला बसाया गया जो दीवान महल्ला कहलाया। इसी तरह मुगलों का महल्ला मुगलपुरा और अफगान लोदियों का महल्ला लोदी कटरा कहलाया। वह पटने को दूसरी दिल्ली ही बनाना चाहता था, लेकिन उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। औरंगजेब के मरने के बाद उत्तराधिकारियों में आपस में लड़ाई

छिड़ गयी और वह १७१२ ई० में मारा गया। उसके मरने के बाद उसका लड़का फरुखशियर पटना पहुँचा और वह बादशाह घोषित किया गया। वह यहाँ के सूबेदार हुसेनअली को लेकर दिल्ली गया और जहाँदार शाह को मारकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। पटने के बहुत से अमीर-उमरा दिल्ली लौट गये। मुहम्मद शाह के वक्त में जब फक्रुद्दौला बिहार का सूबेदार होकर आया तो उसने पटने के बचेबचाये अमीरों को भी मार भगाया। पीछे फक्रुद्दौला सूबेदारी से हटा दिया गया और बिहार बंगाल के साथ मिलाया गया।

अंगरेजी शासन—अंगरेजों ने पहले-पहल १६२० ई० में पटने में पैर रखा। यहाँ कपड़े का व्यवसाय बहुत बढ़ा-चढ़ा था। यहाँ से कपड़ा खरीद खरीद कर ले जाने के लिये आगरे से दो अंगरेज भेजे गये। पर यहाँ से आगरा और आगरे से सूरत कपड़ा ढो ले जाने में इतना खर्च बैठा कि दूसरे साल ही यह उद्योग छोड़ देना पड़ा। १६३२ ई० में इसके लिये फिर कोशिश हुई पर इस बार भी वे लोग असफल रहे। जब बंगाल में समुद्र के किनारे अंगरेजों ने अड्डा जमाया तो यहाँ से व्यापार करने में उन्हें सुविधा हुई। ये लोग यहाँ सस्ते में शोरा खरीद कर यूरोप भेजने लगे। उस समय यूरोप में बारूद के लिये इसकी बड़ी माँग थी। फिर और चीजों का भी व्यापार चल पड़ा। डच और हालैण्ड के व्यापारी भी यहाँ से शोरा, रेशमी कपड़ा और अफीम वगैरह ले जाते थे।

आरम्भ में अंगरेजों को यहाँ व्यापार में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। कई बार उनके माल-असबाब जप्त किये गये, लेकिन वे लोग बड़े धैर्य्य से काम में लगे रहे और धीरे-धीरे तरक्की ही करते गये। जब यहाँ उनका पैर जम गया तो

वे यहाँ के शासन कार्य में भी दखल देने लगे। पलासी-युद्ध के बाद यहाँ के सूबेदार उनके हाथ की कठपुतली हो गये; लेकिन नवाब मीरकासिम के साथ उनकी नहीं बनी। १७६१ ई० में आयरकूट सेनापति होकर पटना आया। आते ही मीरकासिम के साथ उसका झगड़ा हो गया। वह यहाँ से हटा दिया गया और उसकी जगह पर एलिस आया, परन्तु उसके समय में झगड़ा और भी बढ़ा। यहाँ का करीब सब व्यापार ईस्ट इण्डिया कम्पनी और उसके कर्मचारियों के हाथ में चला गया था और वे लोग टैक्स नहीं देते थे; टैक्स देनेवाले केवल थोड़े से बचे बचाये देशी व्यापारी थे। इसी बात को लेकर नवाब मीरकासिम को अंगरेजों से अनबन था। एलिस ने नवाब को दबाना चाहा। उसने अपनी सेना के बल पर पटना को अपने कब्जे में कर लिया। पर नवाब ने शीघ्र ही अंगरेजों के हाथ से पटना छीन कर उन सबों को कैद कर लिया। अंगरेजी सेना बंगाल से नवाब की सेना को परास्त करती हुई चली आ रही थी। उसने नबाब की राजधानी मुँगेर पर भी दखल जमा लिया। जब यह खबर पटना में मीरकासिम को लगी तो उसने सब अंगरेज कैदियों को कत्ल करवा कर एक कूएँ में डलवा दिया, जहाँ इस समय उनका स्मारक बना हुआ है। राजा रामनारायण तथा टेकारी के फतहसिंह और बुनियादसिह पहले ही मरवा दिये गये थे। जब अंगरेजी सेना पटना पहुँची तो मोरकासिम भाग गया। दिल्ली के बादशाह शाहआलम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सहायता से मीरकासिम फिर लड़ने आया, लेकिन अन्त में हारकर सब के सब भाग गये।

अब अंगरेजों का दबदबा खूब बढ़ गया। दूसरे ही साल सन् १७६५ में उन लोगों ने बंगाल, विहार और उड़ीसा की

दीवानी ली। दीवानी क्या ली मालिक ही बन बैठे। क्लाइव ने पहले राजा रामनारायण के भाई धीरज नारायण को, फिर पीछे सिताब राय को पटने में विहार का नायब दीवान नियुक्त किया। १७७० ई० में एक रेवेन्यू कौंसिल कायम की गयी जिसके सब मेम्बर अंगरेज थे। नायब दीवान को इस कौंसिल की अधीनता में काम करने का हुक्म हुआ। बहुत दिनों बाद कौंसिल तोड़ दी गयी और इसके स्थान में एक रेवेन्यू चीफ रहने लगा। लेकिन १७८७ ई० में यह पद भी हटा दिया गया। मुसलमानी समय में सूबा कई सरकारों में बँटा था जिनमें एक सरकार विहार भी था। यही सरकार विहार जिला विहार कायम किया गया और यहाँ एक कलक्टर बहाल हुआ। विहार जिले के अन्दर वर्तमान पटना जिला और गया जिले का उत्तरी भाग तथा कुछ और हिस्से थे। इसका सदर आफिस गया था।

१७९० ई० में जब अंगरेजों ने न्याय विभाग भी अपने हाथ में लिया तो उस साल पटना में लोगों की नालिश सुनने के लिये एक मजिस्ट्रेट बहाल हुआ। उस समय उसका दायरा सिर्फ पटना सीटी, बाँकीपुर और जयवर पुलिस सर्कल था। फिर धीरे धीरे दायरा बढ़ाया गया। १८२५ ई० में पटना जिला कायम किया गया और यहाँ भी एक कलक्टर नियुक्त हुआ। उस समय तक विहार और राजगिर गया के ही साथ थे। १८६५ ई० में दोनों पटना के साथ मिलाये गये।

१८५७ के सिपाही-विद्रोह आन्दोलन में पटना ने काफी भाग लिया। यहाँ इस आन्दोलन के अगुआ कई मुसलमान थे। ये लोग पकड़ पकड़ कर फाँसी पर लटका दिये गये। दानापुर छावनी के बहुत से सिपाही विद्रोह कर आरा में कुँवर सिंह से जा मिले। कुछ दिनों के बाद आन्दोलन दबा दिया गया।

सन् १९१२ में बंगाल से हटाकर विहार-उड़ीसा, एक अलग प्रान्त बनाया गया और पटना उसकी राजधानी रहा। १९१६ ई० में यहाँ एक हाईकोर्ट और १९१७ में एक युनिवर्सिटी कायम की गयी। सन् १९३६ में उड़ीसा भी अलग कर दिया गया और विहार एक अलग प्रान्त रहा। पटना विहार की राजधानी बना हुआ है।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ में पटना जिले की आबादी १७,५५,४१६ थी; सन् १९३१ में यह १८,४६,४७४ हो गयी है, जिसमें ९,५६,१२४ पुरुष और ८,९०,३५० स्त्रियाँ हैं। इस तरह आधी सदी में यहाँ ९१,०५८ आदमी अर्थात् सैकड़े ५ आदमी बढ़े हैं। जिले के अन्दर एक वर्गमील में औसतन ८९२ आदमी रहते हैं। सिटी सब-डिविजन में एक वर्गमील के अन्दर ३,६५०; दानापुर सब-डिविजन में ८७५; बाँकीपुर सब-डिविजन में ८६१; विहार सब-डिविजन में ८३० और बाढ़ सब-डिविजन में ७९९ आदमी हैं। सन् १९२१ में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ८६,०१२ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,३२,९१४ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई। इस जिले में छोटे बड़े ८ शहर हैं—पटना, दानापुर, दानापुर-छावनी, बाढ़, बिहार, खगोल, फतुहा और मोकामा। इन शहरों की कुल जन-संख्या २,८१,९३७ है। जिले के गाँवों की संख्या २,३१५ है।

इस जिले की बोली मगही है। मगह या मगध के नाम पर इस बोली का ऐसा नाम पड़ा। मगही में साहित्य की रचना नहीं हुई है। विहार की बोलियों में मैथिली या भोजपुरी बोली बोलने

वाले अपनी बोलियों के लिये जैसा गौरव रखते हैं वैसा गौरव मगही बोली वाले अपनी बोली के लिये नहीं रखते। पढ़े-लिखे लोग आपस में हिन्दुस्तानी बोलते और देवनागरी तथा उर्दू लिपि लिखते हैं। सर्वसाधारण में कैथी-लिपि का प्रचार है। जिले की जन-संख्या में १८,३५,३७७ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी; ६,९३८ की बंगला; ४७८ की उड़िया; २८९ की नेपाली; २६५ की पंजाबी; १०१ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; १८७ की मुंडा, द्राविड़ तथा पश्तो आदि और २,६३७ की यूरोपियन भाषाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू ...	१६,३६,८२६	जैन ...	२०४
मुसलमान ...	२,०२,६५५	पारसी ...	२६
ईसाई ...	३,५०३	आदिमजाति...	१६
सिक्ख ...	२२०	बौद्ध ...	१६

अन्य धर्मावलम्बी—२

फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से हिन्दू करीब ८९ फी सैकड़ा और मुसलमान करीब ११ फी सैकड़ा हैं। हिन्दू जाति में यहाँ अहीर की सख्या सबसे अधिक है। इसके बाद क्रम से कुरमी, दुसाध, भूमिहार, कहार, राजपूत, कोयरी, चमार, ब्राह्मण, मुसहर आदि की संख्या है। इन सभी जातियों की संख्या ५० हजार से अधिक है। पूरा ब्यौरा दूसरी जगह दिया गया है।

यह जिला बौद्ध, जैन और सिक्ख धर्मों का प्रधान स्थान रहा है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति मगध में ही हुई और यहीं से संसार के भिन्न-भिन्न देशों में यह धर्म फैला पर आज यहाँ इस धर्म का

लोप सा हो गया है। लेकिन जैन धर्म को मानने वाले यहाँ अब भी बहुत से लोग हैं। पटना, बिहार और पावापुरी उनके तीर्थ-स्थान हैं। सिक्ख जाति को वीर सैनिक-जाति बनानेवाले गुरु गोविन्द सिंह का जन्मस्थान पटना ही है। मुसलमानों के वहावी आन्दोलन का अड्डा यही जिला था।

पटना में ईसाई मिशन १६२० ई० में कायम हुआ था। इस समय बाँकीपुरमें अदालत के पास इनका एक कन्वेन्ट (धार्मिक समिति) है जो दो अनाथालय चला रहा है, एक हिन्दुस्तानी ईसाइयों के लिये और दूसरा यूरोपीय ईसाइयों के लिये। यहाँ मैट्रिक क्लास तक का एक स्कूल है। पटना में दीघाघाट के पास कुर्जी गाँव में मैट्रिक दरजे तक का एक यूरोपियन स्कूल है। बाँकीपुर में पटना गया-रोड पर ईसाई लड़कियों के लिये एक स्कूल है। पटना सिटी के तिरपोलिया महल्ले में इन सब ने एक जनाना अस्पताल खोला है जिसे लोग तिरपोलिया अस्पताल के नाम से जानते हैं। खगौल और दानापुर में भी ईसाइयों का अड्डा है। ऊपर जो ईसाइयों की संख्या ३५० दी गयी है उसमें १,१७६ यूरोपियन आदि; १,३३७ ऐंग्लो इंडियन और ९९० भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

पटना जिले का क्षेत्रफल १३,५९,६३४ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से ९,५६,२०० एकड़ जमीन जोती बोयी गई थी और १,९७,५८१ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ४४,८७६ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी जोती बोयी नहीं जाती और बेकार पड़ी रहती है। १,६०,९७७ एकड़ जमीन पहाड़ और नदी आदि

के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम पड़ता है कि जिले की सैकड़े करीब ८५ भाग जमीन जोत के अन्दर है। सैकड़े सिर्फ ३ ही भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी जोता बोया नहीं जाता। सैकड़े १२ भाग तो खेती के काम के लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े २८ भाग में दो फसल होती है।

फसल साधारणतः तीन प्रकार की होती है—भदई, अगहनी और रब्बी। उपजाऊ जमीन के आधे से अधिक भाग में रब्बी की फसल होती है। रब्बी फसल में सबसे अधिक बूट, मटर, कलाई, अरहर आदि दलहन अन्न होता है। उसके बाद जौ, गेहूँ, तीसी, सरसो, आलू आदि का स्थान है। अगहनी फसल में मुख्य अगहनी धान है। अगहनी धान आबाद जमीन के एक तिहाई हिस्से में होता है। अगहनी जनेरा और ऊख की गिनती भी अगहनी फसल में है, भदई फसल बहुत थोड़ी जमीन में पैदा होती है। भदई में सबसे अधिक मकई होती है, उसके बाद मरुआ, कोदो, धान, जनेरा वगैरह। इस जिले में मूंगफली (चिनिया बादाम) की खेती भी होती है। कुछ दिन पहले यहाँ अफीम की खेती बहुत होती थी। १८८२ ई० में २६,३१४ एकड़ में अफीम उपजायी जाती थी। १९११ में जब पटने की अफीम की फैक्टरी बन्द हो गयी तो अफीम की खेती भी धीरे धीरे उठती जाकर १९१७ ई० में बिलकुल ही उठ गयी।

जिले की जमीन साधारणतः चार भागों में बाँटी जाती है—उत्तर की ओर गंगा किनारे की दियारे की जमीन, उसके बाद गंगा के समानान्तर की ऊँची जमीन, फिर इसके दक्षिण की नीची जमीन और विहार सबडिविजन की जमीन। दियारे की जमीन सबसे अधिक उपजाऊ है और इसमें भदई तथा रब्बी

फसल होती है। ऊँची जमीन ईस्ट इण्डियन रेलवे लाइन के उत्तर पड़ती है और इसमें भी रब्बी और भदई फसल ही होती है। हाँ, दानापुर में पटना–गया नहर के पास कुछ धान की खेती होती है। नीची जमीन भी तीन हिस्सों में बाँटी जा सकती है। इसमें सबसे पच्छिम की जमीन पुनपुन, मोरहर और दरधा नदियों से सींची जाती है। इसके पूरब की जमीन में नहरों से सिचाई का प्रबन्ध है। अन्तिम पूर्वी हिस्से की जमीन, जो बाढ़ सबडिविजन के अन्दर है, ताल जमीन कहलाती है, जहाँ हर साल पुनपुन आदि नदियों की बाढ़ आया करती है। इस नीची जमीन में रब्बी की फसल अधिक होती है, भदई की बहुत कम। विहार सबडिविजन की जमीन दो हिस्सों में बाँटो जाती है—दक्षिण की पहाड़ी जमीन और उत्तर की नीची जमीन। सारे सबडिविजन में छोटो छोटी पहाड़ी धाराएँ बहती हैं, जिनसे सिंचाई का काम लिया जाता है।

पटना जिले की जमीन मुख्यतः चार तरह की हैं—केवाल, दोरस, बलसुनरी और दियारा। कहीं कहीं कुछ उजली सी मिट्टी पायी जाती है जिसे रेहर कहते हैं। जिस जमीन में इतनो अधिक रेह रहती है कि उपज नहीं हो सकती उसको ऊसर जमीन कहते हैं। गाँव के आसपास की जमीन को भीठ या डीह कहते हैं।

पटना जिले में आबाद जमीन के सैकड़े ५९ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है। इतने अधिक हिस्से में विहार के और जिलों में सिंचाई नहीं होती। आधे से अधिक सींची जमीन में धान की खेती होती है। अगहनी धान की प्रायः कुल खेती सिंचाई से ही होती है। सिंचाई का सबसे अधिक काम नहरों से होता है। नहरों में एक सरकारी नहर है बाकी खानगी नहर हैं। बाँकीपुर

शरीफ में रेशमी कपड़े, तस्सर और वाफ्ता बुने जाते हैं। मस्लिन भी वहाँ तैयार किये जाते हैं। मसौढ़ी थाना में कम्बल बुने जाते हैं। पटना सिटी में दरी, कालीन और नेवार तैयार होते हैं। यहाँ अच्छे अच्छे कपड़ों पर कामदानी और जरदोजी का भी काम होता है। पटने में विहार-काटन-मिल नाम का कपड़े का एक मिल हाल में खुला है।

पटने में सोने-चाँदी का काम अच्छा होता है। यहाँ चाँदी के पानदान, इतरदान और गुलाबपाश बनाये जाते हैं तथा सोने-चाँदी के तबक भी तैयार होते हैं। यहाँ पीतल के वर्तन भी अच्छे बनते हैं। खेलौने और आतिशबाजी की चीजें तथा साबून भी तैयार किये जाते हैं। बोतल, ग्लास, गुलदान तथा रोशनी जलाने के लिये झाड़, कंडील वगैरह शीशे की चीजें यहाँ पुराने तरीके से छोटे पैमाने पर बनायी जाती हैं। जाता, सील, लोढ़ा तथा पत्थर की मूर्तियाँ पटना सिटी में बनती हैं। कुछ नगीने का काम भी होता है। विहार में नैचा बनाया जाता है तथा बाढ़ में चमेली का तेल तैयार होता है।

लकड़ी की चीजें पटना, बाँकीपुर और खासकर दानापुर में बहुत तैयार होती हैं। पटने में पुराने घरों को देखने से पता चलता है कि पहले यहाँ लकड़ी पर चित्रकारी का काम बहुत होता था। पर अब रुचि बदल जाने से लोग घर के खम्भों या किवारों पर चित्रकारी का काम नहीं कराते हैं।

पटने में कल-कारखाने इधर बहुत बढ़े हैं। फुलवारी-शरीफ में काटन (कपड़े का) मिल और बिहटा में सूगर (चीनी के) मिल हैं। जिलेके अन्दर चावल, दाल, आटे और तेल के १० मिल हैं। इनमें से कई मिलों में लोहे की चीजें भी बनती हैं। खास लोहे के भी दो मिल हैं, जहाँ ऊख पेरने के छोटे

छोटे कल तथा रेलिंग वगैरह बनते हैं। पटना सिटी में बर्फ का एक कारखाना है। मोकामा में बी० एन० डब्ल्यू० के, खगोल में ई० आई० आर० के तथा दीघाघाट में कार कम्पनी के कारखाने हैं। कार कम्पनी के कारखाने में जहाज मरम्मत किये जाते हैं। पटने में ९–१० ऐसे बड़े प्रेस हैं जिनमें फैक्टी एक्ट लागू है।

पटने में चमड़े का काम भी होता है। घोड़े का साज-सामान और जूते तैयार किये जाते हैं। यहाँ काँसा और पीतल के बर्तन भी बहुत बनते हैं। छोटे पैमाने पर लोहे के काम भी होते हैं। यहाँ का लोहे का पिंजरा प्रसिद्ध है।

इस जिले में बाहर से आने वाली चीजों में कोयला, करासन तेल, लोहा, इस्पात, नमक, गेहूँ, चावल, कपड़ा और आधुनिक आवश्यकता की चीजें मुख्य हैं। बाहर भेजी जाने वाली चीजों में गेहूँ, दलहन, फल, तरकारी, तीसी और चीनी प्रधान हैं। जिले के अन्दर व्यापार के मुख्य केन्द्र पटना, दानापुर, बाढ़, बिहार, मोकामा, इस्लामपुर, फतुहा और हिल्सा हैं। इस जिले में राजगिर और बिहटा में बहुत बड़ा मेला लगता है। छोटे छोटे मेले कई स्थानों में लगते हैं।

आने जाने के मार्ग

रेलवे—आने जाने के मुख्य साधन आजकल रेलगाड़ियाँ हैं। १८६२ ई० में ईस्ट इण्डियन रेलवे की मुख्य लाइन पटना जिले होकर ले जायी गयी। पूरब में बरहिया के पास से पच्छिम में बिहटा तक यह लाइन इस जिले के अन्दर ८६ मील तक गयी है। इस लाइन पर जिले के अन्दर डुमरा, मोकामाघाट, मोकामा-जंकशन, मोर, पंडरक, बाढ़, अठमलगोला, बख्तियारपुर, करौटा, खुसरूपुर, हरदास बीघा, फतुहा, बांकाघाट, पटना सिटी, गुलजारबाग,

पटना-जंकशन, फुलवारी-शरीफ, दानापुर, न्यौरा, सदीसोपुर और बिहटा स्टेशन हैं। बिहटा के पास सोन नदी पर इस लाइन में एक बहुत बड़ा पुल है। इस लाइन से एक छोटी ब्रांच लाइन पटना-जंकशन से गंगा के किनारे दीघाघाट गयी है, जहाँ गंगा पार कर लोग बी० एन० डब्ल्यू० आर० की लाइन पकड़ते हैं। मोकामाघाट में भी लोग गंगा पार कर बी० एन० डब्ल्यू० आर० की लाइन में जाते हैं। १८७९ ई० में पटना-गया रेलवे लाइन खुली थी। यह लाइन पटना-जंकशन से चलकर दक्षिण में नदौल तक इस जिले में २३ मील गयी है। इस लाइन पर पटना-जंकशन के बाद सिमरा, पुनपुन, क्योरा, नदवन, तरेगना और नदौल स्टेशन हैं। सन् १९०३ में बख्तियारपुर-विहार लाइट रेलवे लाइन खुली जो अब राजगिर तक गयी है। इस लाइन की कुल लम्बाई ३२ मील है। इधर फतुहा-इस्लामपुर रेलवे लाइन खुली है जो २७ मील तक गयी है। बख्तियारपुर-विहार लाइट रेलवे लाइन पर बख्तियारपुर, चेरो, हरनौत, वेना, भगनबीघा, पचसा, सोह, विहार कचहरी, विहार-शरीफ, दीपनगर, नालंद, सिलाव और राजगिर-कुंड रेलवे स्टेशन हैं। फतुहा-इस्लामपुर लाइन पर फतुहा, दनियावाँ, सिगरियावाँ, दियावाँ, लोहंडा-रोड, हिलसा, रामभवन, एकंगर-सराय, औंगरी और इस्लामपुर रेलवे स्टेशन हैं।

सड़क—सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड की पक्की सड़कें १७७ मील और कच्ची सड़कें ५०४ मील थीं। इनके अलावे छोटी-छोटी देहाती सड़कें ७८६ मीलों में फैली हुई थीं।

जिले में दो बहुत पुरानी सड़कें हैं जिनका वर्णन इतिहास में आया है। पहली सड़क कोयलवर घाट से मनेर, दानापुर, पटना और बाढ़ होती हुई इस जिले में दरियापुर तक गयी है और

वहाँ से मुँगेर भागलपुर की ओर बढ़ी है। विहार से बंगाल जाने की यह पुरानी सड़क है। दूसरी पुरानी सड़क फुलवाड़ी, नौबतपुर और विक्रम होते हुए फतवा तक गयी है। वहाँ से वह सोन नदी के समानान्तर में गया जिला चली गयी है। यह पटना से दिल्ली जाने की पुरानी सड़क है।

जलमार्ग—गंगा जिले का मुख्य जलमार्ग है जो जिले के उत्तरीय किनारे होकर ९३ मील तक गयी है। इसमें कार कम्पनी के जहाज चलते हैं। इस कम्पनी का हेड आफिस दीघा में है। यहाँ से बड़े-बड़े जहाज माल लाद कर बंगाल में ग्वालन्दो तक जाते हैं। दीघा से छोटे-छोटे जहाज गंगा में बक्सर तक और सरयू में बरहज तक जाते हैं। पटना जिले में कार कम्पनी का जहाज घाट हरदी-छपरा, मारूफ-गंज, फतुहा, बख्तियारपुर, बाढ़ और मोकामा में हैं। सोन में छोटी-छोटी नावें चलती हैं पर वे व्यापार-वाणिज्य के लिये उपयोगी नहीं होतीं। १८७७ ई० में पटना-गया नहर खोली गयी। वह भी आने-जाने का साधन बन गयी है। उसमें नावें चलती हैं। खगोल से महाबलीपुर तक एक छोटा स्टीमर भी चलता है।

नदियों को पार करने के लिये जगह-जगह नावों का प्रबन्ध रहता है। दानापुर सब-डिविजन में मुख्य घाट हरदी-छपरा, शेरपुर और दाऊदपुर हैं। इसी तरह बाढ़ सब-डिविजन में बख्तियारपुर, बाढ़, अठमलगोला और मोकामा में मुख्य घाट हैं। पटना में मुख्य घाट ये हैं—दीघा, महेन्द्रू, रानीघाट, पथरीघाट, अदरक, मारूफ-गंज, दमरुयाही और जेठुली।

शिक्षा

पटना जिला प्राचीन काल में विद्या-बुद्धि का मुख्य केन्द्र था। आर्य्यभट, पाणिनी, चाणक्य और उमास्वाति जैसे विद्वान यहीं रहते थे। दूर दूर देशों के पंडित और शास्त्रकार पाटलिपुत्र में आकर परीक्षा दिया करते थे। नालन्दा और ओदन्तपुरी बौद्ध-काल में शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे। लेकिन राजनीतिक अवनति के साथ साथ शिक्षा की भी बड़ी अवनति हुई। जब अंगरेज लोग इस देश में राज्य करने लगे तो शुरू में उन्होंने शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया। उस वक्त जहाँ तहाँ गाँवों में संस्कृत पाठशाला और मकतब थे। अच्छी तरह पढ़-लिख सकने वालों की सख्या अन्दाजन सैकड़े एक से कुछ अधिक थी।

१८४५ ई० में अंगरेजों ने अपनी शिक्षा यहाँ फैलाना चाहा। सन् १६६०–६१ में इस जिले में ९ वर्नाकुलर स्कूल हुए। १८६२ ई० में पटना कालेज कायम किया गया। धीरे धीरे और स्कूल-कालेज खुले। इस समय पटना में साधारण शिक्षा के लिये दो कालेज हैं—एक पटना कालेज, जहाँ एम० ए० तक की पढ़ाई होती है और दूसरा बी० एन० (विहार नेशनल) कालेज, जहाँ बी० ए० तक की पढ़ाई होती है। इनके अलावे कुछ खास खास विषयों के अलग अलग कालेज हैं, जैसे साइन्स कालेज, मेडिकल कालेज, लॉ कालेज, ट्रेनिंग कालेज, इंजिनियरिंग कालेज और वेटेरिनरी कालेज। विहार-शरीफ में नालन्दा कालेज है जिसमें आई० ए० तक की पढ़ाई होती है।

इस समय जिले के अन्दर हाई स्कूलों की संख्या २५ है जिनमें १६ सिर्फ पटना और दानापुर में हैं। पटना और दानापुर के स्कूल इस प्रकार हैं—पटना सिटी स्कूल, एम० ए० ए० स्कूल पटना सीटी,

पटना कालिजियट स्कूल, बी० एन० कालिजियट स्कूल, राममोहन राय सेमिनरी, टी० के० घोषेज एकेडमी, एंग्लो संस्कृत स्कूल, पाटलिपुत्र स्कूल, मिलर स्कूल, गर्दनीबाग हाई स्कूल, मीठापुर हाई स्कूल, बॉकीपुर गर्ल्स स्कूल, सेंट जोसेफ कन्वेन्ट, सेंट माइकल हाई स्कूल कुरजी, बलदेव हाई स्कूल दानापुर और डी० ए० भी० स्कूल दानापुर। विहार-शरीफ में दो हाई स्कूल तथा खगोल, बाढ़, मोकामा, भरतपुरा, बिहटा, विक्रम और इस्लामपुर में एक एक स्कूल हैं।

सन् १९३७-३८ में पटना जिले के अन्दर मिडल इंगलिश स्कूलों की संख्या ४६ और मिडल वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या ९ थी। सन् १९३५-३६ में इस जिले में १,४४५ प्राइमरी स्कूल थे जिनमें ५२,४६५ छात्र पढ़ रहे थे। छोटी-छोटी संस्कृत पाठशालाओं और मकतबों की गिनती प्राइमरी स्कूलों में ही है।

पटना में आयुर्वेदिक चिकित्सा सिखाने के लिये आयुर्वेदिक स्कूल और यूनानी चिकित्सा सिखाने के लिये तिब्बी स्कूल हैं। होमियोपैथिक चिकित्सा के लिये भी एक दो स्कूल हैं। यहाँ कई कमर्शियल स्कूल हैं जहाँ लड़कों को शार्ट हैण्ड, टाइपराइटिंग, बुक-कीपिंक (बही-खाता) वगैरह सिखाया जाता है। अंधों के लिये एक स्कूल बहुत दिनों से चल रहा है। बहरे-गूँगों के लिये भी एक स्कूल हाल में खुला है। अरबी-फारसी की शिक्षा देने के लिये यहाँ एक बड़ा मदरसा है।

स्त्री-शिक्षा दिनों दिन बढ़ रही है। १८८० ई० में जिले के अन्दर सिर्फ एक कन्या-पाठशाला थी पर अब तो दो सौ से अधिक कन्या-पाठशालाएँ हैं। बाँकीपुर में लड़कियों का एक हाई स्कूल है। पटना-सिटी के बेतिया हाउस में लड़कियों के लिये मिडल ट्रेनिंग स्कूल है उसमें अब हाई स्कूल के क्लास भी खुल रहे हैं। लड़कों के स्कूलों में भी बहुत सी लड़कियाँ पढ़ती हैं। सन् १९३५-

३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ११,२४३ थी।

पटना जिले में यूरोपियनों की शिक्षा के लिये सबसे पुराना स्कूल सेंट जोसेफ्स स्कूल है जो १८५३ ई० में कायम हुआ था। यह एक हाई स्कूल है जहाँ लड़कियाँ और छोटे छोटे बच्चे पढ़ते हैं। दूसरा स्कूल कुरजी का सेंट माइकल स्कूल है जहाँ मैट्रिक तक की पढ़ाई होती है। इसका सम्बन्ध कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी से है। इस स्कूल की जमीन १८५४ ई० में भारतीय ईसाइयों के संगठन के काम से खरीदी गयी थी। १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह में सभी ईसाई तितर-बितर कर दिये गये। जब शान्ति हुई तो यहाँ सिपाही विदोह में बचे हुए अनाथ यूरोपीय बच्चों के लिये अनाथालय खोला गया, वही आज एक हाई स्कूल के रूप में है। एक तीसरा यूरोपियन स्कूल खगोल में है जो ईस्ट इण्डियन रेलवे के प्रबन्ध में है। बाँकीपुर में ईसाई लड़कियों के लिये एक अलग मिड्ल स्कूल है।

पटना में सिन्हा लाइब्रेरी, युनिवर्सिटी लाइब्रेरी, खुदाबख्श लाइब्रेरी, गेट लाइब्रेरी, विहार-हितैपी-पुस्तकालय, आर्यकुमार-पुस्तकालय, महेश-पुस्तकालय महेन्द्र और बंगला पुस्तकालय मुख्य हैं। जिले के अन्दर छोटे-बड़े और भी बहुत से पुस्तकालय हैं। पटना से अंगरेजी, हिन्दी और उर्दू के कई पत्रपत्रिकाएँ निकलती हैं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या १,६०,९९३ और पढ़ी लिखी स्त्रियों की संख्या १७,९१६ है। अङ्गरेजी पढ़े लिखे पुरुष २०,५८९ और स्त्रियाँ २,३४५ हैं। फी सैकड़े का हिसाब लगाने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े करीब १० है। सन् १९३५-३६ में

इस जिले के अन्दर स्कूलों में ८३,२०७ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जन-संख्या के सैकड़े ४·४ हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन के काम से पटना जिला पाँच सब-डिविजनों में बँटा है—पटना सिटी, बाँकीपुर, दानापुर, बाढ़ और विहार। एक-एक सब-डिविजन कई थानों में बँटे हुए हैं। जिले के अन्दर ३२ थाने हैं। किस सब-डिविजन में कौन-कौन थाने हैं यह सब-डिविजनों के वर्णन में मिलेगा।

शासन और न्याय—पटना सिटी सब-डिविजन का सबसे बड़ा अफसर एडिशनल जिला मजिस्ट्रेट कहलाता है। उसकी सहायता के लिये एक डिप्टी मजिस्ट्रेट रहता है। दानापुर में सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट के अलावे छावनी के लिये एक खास फौजी मजिस्ट्रेट है। बाँकीपुर, बाढ़ और विहार सब-डिविजन में सब-डिविजनल अफसर की सहायता के लिये डिप्टी मजिस्ट्रेट और मुन्सिफ हैं। मुन्सिफ लोग दीवानी मामलों को देखते हैं, फौजदारी मामलों को देखने के लिये दौरा जज, जिला मजिस्ट्रेट और दूसरे मजिस्ट्रेट होते हैं। बाँकीपुर, झाऊ गंज, बाढ़, विहार, दानापुर, खगोल और सदीसोपुर में आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। जिले का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। जिले के सब कामों को जिम्मेवारी उसी पर रहती है।

पुलिस—पुलिस का काम लोगों की रक्षा करना है। जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट या कप्तान कहलाता है। पटने में दो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट और कई असि-स्टेन्ट और डिपटी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। इनके नीचे इन्स-

पेक्टर, सब-इन्सपेक्टर और असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर होते हैं। इन्सपेक्टरों और सब-इन्सपेक्टरों को दारोगा भी कहा जाता है। पटना जिले में सन् १९३६ में ७ इन्सपेक्टर, ८१ सब-इन्सपेक्टर, ५२ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, ४ सर्जेन्ट-मेजर, ३ सर्जेन्ट, ९२ हवलदार और १,३३३ कानिस्टिबिल थे। जिले में चौकीदारों की संख्या ३,३०५ थी।

जेल—बाँकीपुर में जिला जेल है जिसमें ४११ कैदी रह सकते हैं। पटना-सिटी, बाढ़ और विहार में छोटे जेल हैं। बाढ़ जेल में २८ और विहार जेल में ३५ कैदियों के रहने का स्थान है।

रजिस्ट्री आफिस—पटना जिले में जमीन की खरीद-बिक्री आदि की रजिस्ट्री के लिये सन् १९३६ में बाँकीपुर, बाढ़, विहार, दानापुर, हिल्सा, मसौढ़ी और विक्रम में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—जिले के अन्दर गाँवों में प्रायमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करने, सड़क-पुल वगैरह बनवाने, तालाब एवं कूआँ वगैरह खुदवाने तथा अस्पताल और फाटक आदि का प्रबन्ध करने के लिये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है, जिसमें ४० मेम्बर रहते हैं। इनमें ३० का चुनाव प्रजा द्वारा होता है, ३ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं और ७ मेम्बर नामजद किये जाते हैं। बोर्ड का आमद-खर्च करीब १५-१६ लाख रुपया है। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के अधीन सब-डिविजनों में लोकलबोर्ड हैं जो अपने अपने इलाके में डिस्ट्रिक्टबोर्ड के बताये छोटे-मोटे काम करते हैं। बाँकीपुर लोकलबोर्ड में ५ निर्वाचित और १ नामजद किये, बाढ़ लोकलबोर्ड में ७ निर्वाचित और २ नामजद किये, विहार लोकल बोर्ड में ११ निर्वाचित और ३ नामजद किये तथा दानापुर लोकल बोर्ड में ७ निर्वाचित और २ नामजद किये मेम्बर होते हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—इस जिले के अन्दर पटना-सिटी, बाढ़,

विहार, खगोल और दानापुर में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के लिये जो काम देहातों में हैं वही काम म्युनिसिपैलिटियों के लिये शहरों में हैं। पटने में जहाँ नयी राजधानी बसी है वहाँ के इन्तजाम के लिये पटना-एडमिनिस्ट्रेशन-कमिटी है। पटना-सिटी म्युनिसिपैलिटी सन् १८६४ में कायम हुई थी। इसके ४० मेम्बर होते हैं जिनमें ३२ चुने जाते हैं। इसका दायरा पटना-सिटी और बाँकीपुर है। इसका सालाना आमद-खर्च करीब १३–१४ लाख रुपया है। विहार में १८६९ ई० में और दानापुर में १८८७ ई० में म्युनिसिपैलिटियाँ कायम हुई थीं। बाढ़ में १८७० ई० में म्युनिसिपैलिटी बनी। पहले दोनों म्युनिसिपैलिटियों के २०–२० मेम्बर और बाढ़ म्युनिसिपैलिटी के १० मेम्बर होते हैं। खगोल की म्युनिसिपैलिटी १९०७ ई० में कायम हुई थी। इसके ११ मेम्बर होते हैं। इन चारों म्युनिसि-पैलिटियों का कुल आमदखर्च करीब सवा लाख रुपया है।

राजधानी पटना

पटना भारतवर्ष का एक सबसे पुराना ऐतिहासिक नगर है। यह २५°३७′ उत्तरीय आक्षांश और ८५°१०′ पूर्वीय देशान्तर पर गंगा के किनारे बसा है। यहाँ विहार प्रान्त की राजधानी और पटना कमिश्नरी तथा पटना जिले का सदर आफिस है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या १,५९,६९० है जिसमें १,१९,६४४ हिन्दू, ३८,२३८ मुसलमान, १,५७० ईसाई, १४९ सिक्ख, ३३ जैन, १५ आदिम जाति तथा ४१ अन्य जाति के लोग हैं।

पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र, कुसुमपुर, पुष्पपुर आदि है। यह नगर जैसा प्राचीनकाल में बिलकुल लम्बा :सा था प्रायः

वैसा ही अब भी है। इस नगर ने बड़े बड़े सम्राटों का उत्थान और पतन देखा। प्राचीन पाटलिपुत्र रेलवे लाइन के दक्षिण का और थोड़ा सा उत्तर का भाग है। कुम्हरार और बुलन्दी-बाग में जो खोदाई हुई है उससे मौर्य सम्राटों के महल का एक पत्थर का खम्भा, लकड़ी की दीवाल, रथ का पहिया तथा कितनी ही दूसरी चीजें मिली हैं। इसीके पास अगम कूआँ है जो अशोक के वक्त का बताया जाता है। इसका पुराना नाम अगम सर था। कहते हैं कि यह कूआँ नरक जैसा था और अशोक बौद्ध होने के पहले दुष्टों को पकड़ पकड़ कर इसी में डलवा देता था। इन दिनों आषाढ़ में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। इसी के पास कुक्कुटाराम संघाराम था जहाँ अशोक ने बौद्ध महासभा बुलायी थी। अगम कूआँ से दक्षिण बड़ी पहाड़ी, छोटी पहाड़ी और पंच पहाड़ी नाम के टील्हे हैं, जो बौद्धकाल के स्तूप समझे जाते हैं। उस काल का एक और चिन्ह भिखना-पहाड़ी में है। यहाँ लोग एक टील्हे की पूजा करते हैं जो भिखनाकुँवर के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि यह वही पहाड़ी टील्हा है जिसे अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र के रहने के लिये बनवाया था। गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के पास कमलदह नाम का एक तालाब है। यहाँ एक जैन मंदिर है जो स्थूलभद्र का निवास-स्थान बताया जाता है। यहाँ से कुछ दूरी पर घोरसर या ज्ञानसर है जो पाटलिपुत्र के सप्तसर में से एक सर समझा जाता है। इसी के पास शाह अरजनी की दरगाह है। इस शाह साहब की मृत्यु १६२३ ई० में हुई थी। जिस टील्हे पर दरगाह है उसे लोग चन्द्रगुप्त के सुप्रसिद्ध गंगप्रासाद का स्थान बताते हैं। बाबा प्यारेराम के बाग के पास, जहाँ शीतला देवी का मन्दिर है, सप्तसर में से रामसर और श्यामसर थे। रामसर को अब लोग रामकटोरा और

श्यामसर को सेवैं कहते हैं। मंगल तालाब भी सप्तसर में से ही एक है। यह नाम अब पटना के एक कलक्टर मि० मैंगलस के नाम पर पड़ा है।

पटना-सिटी मुसलमानी वक्त का बसा हुआ शहर है। अजीम उश्शान ने इस शहर का नाम अपने नाम पर अजीमाबाद रखा था। यह शहर चारों ओर से घिरा था। इसमें दो मुख्य दरवाजे थे—पूरब दरवाजा और पच्छिम दरवाजा। इन दरवाजों के चिह्न अपने स्थान पर अब भी देखने में आते हैं। शहर की दीवाल भी टूटे फूटे रूप में कई जगह देखने में आती है। शेरशाह के बनवाये किले के कुछ हिस्से इस वक्त भी मौजूद हैं। चौक थाना के पास मदरसा मस्जिद है जो १६२६ ई० की बनी बतायी जाती है। चौक-थाना वह स्थान है जहाँ चेहलसतून नामक मशहूर इमारत थी। यहीं फरुकशियर और शाहआलम बादशाह घोषित किये गये थे। यहीं सिराजुद्दौला का पिता सूबेदार हेयावत जंग मारा गया था। उसकी कब्र बेगमपुर में है जो उसकी स्त्री चिमनी बेगम के नाम पर मशहूर है। कब्र के पास पाटलिपुत्र के सप्तसर में से एक सर है जहाँ भादों में मेला लगा करता है। गंगा के किनारे महाराजघाट में राजा रामनारायण का महल है। इनके अलावे शेरशाह की मस्जिद, अम्बर मस्जिद, पीर-बहोर का मंदिर, फक्रुद्दौला की बनायी मस्जिद आदि पुराने जमाने की इमारतें हैं। पटना-सिटी के पूरब बाग-जफरखाँ है, जहाँ मुसलमानी वक्त में लोगों को फाँसी आदि की सजा दी जाती थी। वहाँ बक्शी घर और सूली घर के चिह्न अब भी देखने में आते हैं। उसी ओर गुरु का बाग है जहाँ की बावली देखने योग्य है।

पटना-सिटी में दो प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर हैं—एक बड़ी
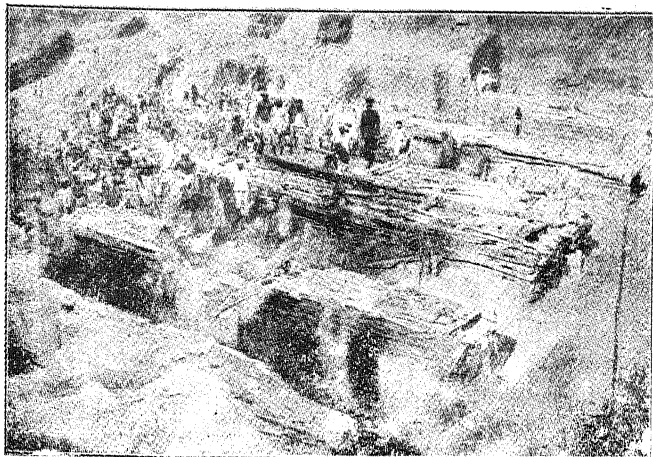
पाटलिपुत्र की खुदाई का एक दृश्य
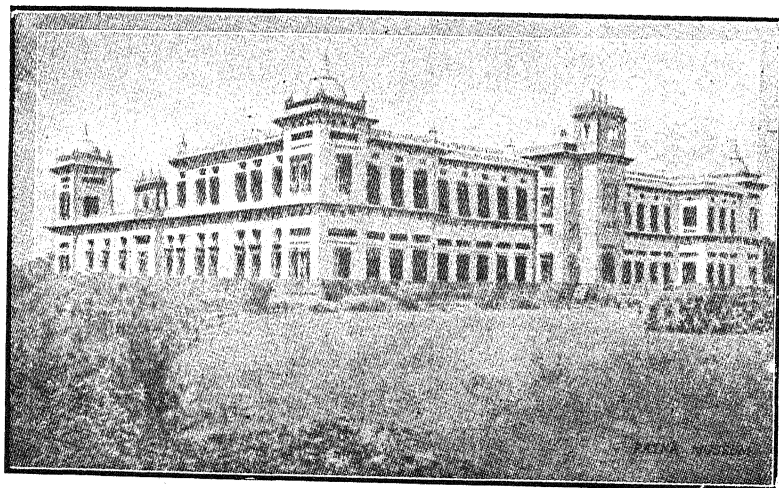
पटने का अजायबघर
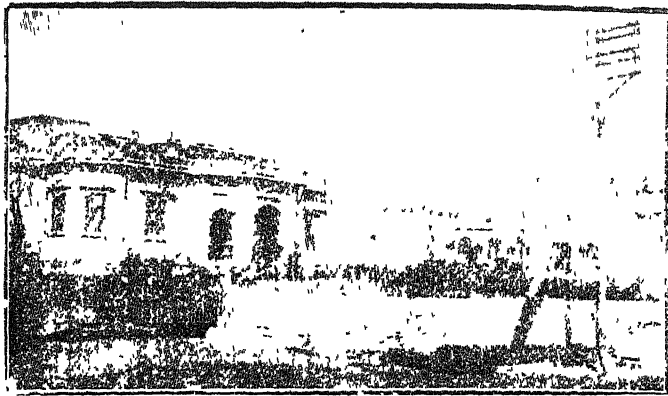
खुदाबख्श ओरियन्टल लाइब्रेरी, पटना
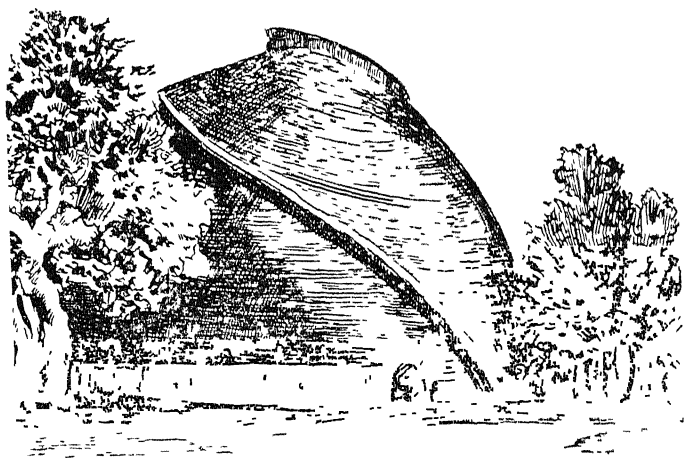
गोलघर, पटना

पटनदेवी का, दूसरा छोटी पटनदेवी का। सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह का जन्म पटना-सिटी में ही हुआ था। यहाँ उनके जन्म-स्थान पर एक मंदिर बना है जिसे हर-मंदिर कहते हैं। यहाँ गुरु गोविन्द सिंह के खड़ाऊँ, जूता, तलवार तथा दूसरे हथियार पाये जाते हैं। ग्रन्थ साहब पर उनका हस्ताक्षर भी है। सिक्ख लोग इसे अपना एक प्रसिद्ध तीर्थ मानते हैं। मीर कासिम ने जहाँ २०० अंगरेजों को मारकर एक कूएँ में डलवा दिया था वहाँ उस कूएँ पर एक मीनार बना दी गयी है।

अंगरेजों के वक्त में शहर धीरे-धीरे पच्छिम की ओर बढ़ने लगा। इधर पहले शहर के धनी लोगों के बाग थे, पीछे घर भी बनने लगे। आखिर शहर बढ़कर बाँकीपुर तक आया। अभी हाल में जब विहार बंगाल से अलग किया गया और पटना विहार की राजधानी बना तो शहर और भी दक्षिण-पच्छिम जाकर गर्दनीबाग तक पहुँचा। यहाँ इन दिनों लाट साहब की कोठी, उनका दफ्तर सेक्रेटरियट और कौंसिल-भवन देखने लायक चीजें हैं। गर्दनीबाग सेक्रेटरियट के क्लर्कों के लिये बसाया गया है। यहाँ से थोड़ी दूर पर हाईकोर्ट है। पटना जंकशन के पास से एक सड़क उत्तर-दक्षिण की ओर गयी है जो पटना-गया-रोड कहलाती है। इस सड़क के किनारे सूबे का सबसे बड़ा पोस्ट आफिस, सर्चलाइट अखबार का दफ्तर, इलाहाबाद बैंक, अजायब घर और कलक्टर की कोठी हैं। अजायब घर को अनपढ़ लोग जादूघर कहते हैं, मगर यह नाम गलत है। पटना-गया-रोड के पास ही सिन्हा लाइब्रेरी है। यह पटने की ही नहीं बल्कि प्रान्त की सबसे बड़ी सार्वजनिक अंगरेजी लाइब्रेरी है। इसे श्रीयुत सच्चिदानन्द सिन्हा ने कायम किया है।

पटना-गया-रोड के उत्तरी छोर के पास गोलघर है।

१७७० ई० में जब विहार-उड़ीसा में बहुत बड़ा अकाल पड़ा तो उस समय के बड़े लाट सर जानशोर ने सोचा कि एक ऐसा मकान बनाया जाय जिसमें खूब अन्न भर के रखा जा सके और अकाल के समय में उस अन्न से लोगों की सहायता की जाय। १७८६ में यह मकान बनकर तैयार हुआ, लेकिन इसमें कभी अन्न नहीं रखा गया। यह ९६ फीट ऊँचा है। इसके ऊपर चढ़ने से पटना एक बाग सा मालूम पड़ता है। गोलघर के पास एक बहुत बड़ा मैदान है।

मैदान के पास से दो सड़क पूरब की ओर गयी हैं, एक को उपरली सड़क और दूसरी को निचली सड़क कहते हैं। उपरली सड़क ही शहर की मुख्य सड़क है। इसी सड़क पर कलक्टरी और अदालत कचहरी, बी० एन० कालेज, बड़ा अस्पताल, मेडिकल कालेज, खुदाबक्स लाइब्रेरी, ला (कानून) कालेज, पटना कालेज, युनिवर्सिटी हॉल, साइन्स कालेज और इंजि-नियरिंग कालेज हैं। खुदाबक्स लाइब्रेरी में अरबी फारसी की बहुत पुरानी और अच्छी अच्छी किताबें हैं, जिसके लिये यह दुनिया में मशहूर है। निचली सड़क पर ट्रेनिंग कालेज और कई-स्कूल हैं। पच्छिम पटना-सिटी की ओर बढ़ने पर रास्ते में पत्थर की मस्जिद मिलती है, जिसे १६२६ ई० में बादशाह जहाँगीर के बेटे ने बनवाया था। गुलजारबाग में सरकारी प्रेस है।

पटना-सिटी सब-डिविजन

इस सब-डिविजन का क्षेत्रफल ४ वर्ग मील और जन-संख्या १,५३,२९४ है। इसका दायरा पटना-सिटी, बाँकीपुर और आस-पास के थोड़े से स्थान तक है। इस में पीरबहोर, सुल-तानगंज, खाजेकलाँ, आलमगंज, चौक और मालसलामी थाने हैं। इसके अन्दर सिर्फ एक पटना शहर और २४ गाँव हैं।

बाँकीपुर (सदर) सब-डिविजन

इस सब-डिविजन का क्षेत्रफल २९१ वर्ग मील और जन-संख्या २,५०,६२८ है। इसमें फुलवाड़ी, पटना, दीघा, पभेड़ा, पुनपुन और मसौढ़ी थाने हैं। इसके अन्दर ४१४ गाँव हैं। इस सब-डिविजन के नीचे लिखे मुख्य स्थान हैं:—

बाँकीपुर—पटना शहर के एक हिस्से को बाँकीपुर कहते हैं।

दीघा—गंगा के किनारे यह व्यापार का केन्द्र है। यहाँ कार कम्पनी (रिभर्स स्टीम नेभिगेशन कम्पनी) का हेड आफिस और कारखाना है। यहाँ से बड़े-बड़े जहाज ग्वालन्दो (बंगाल) तक और छोटे-छोटे जहाज गंगा में बक्सर तक और सरयू में बरहज तक जाते हैं। पटना-जंकशन से ई० आई० आर० की लाइन यहाँ तक आयी है। पहले बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जहाज यहीं लगता था, पर अब वह कुछ पूरब हटकर लगता है। दीघा थाने की जन-संख्या १४,११६ है, जिसमें ११,८८५ हिन्दू, २,००१ मुसलमान, और २३० ईसाई हैं।

पुनपुन—यह स्थान बाँकीपुर से ८ मील दक्षिण है। तीर्थ के लिये गया जानेवाले यात्री यहाँ सिर मुड़ाते हैं और पुनपुन नदी में स्नान करते हैं।

फुलवाड़ी—पटना और दानापुर के बीच रेलवे लाइन के पास यह एक कसबा है। महम्मद साहब का यहाँ कोई स्मृतिचिह्न है। मुसलमान इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं और इसे फुलवाड़ी शरीफ कहते हैं। साल में यहाँ एक बार मेला लगता है। फुलवाड़ी थाने की जन-संख्या ६५,३३१ है जिसमें ५८,०७२ हिन्दू, ७,२५२ मुसलमान और ७ ईसाई हैं।

दानापुर सब-डिविजन

इस सब-डिविजन का क्षेत्रफल ४३० वर्ग मील और जन-संख्या ३,७६,०७५ है। इसमें दानापुर, दानापुर-छावनी और खगोल ये तीन शहर तथा ४९१ गाँव हैं। यहाँ दानापुर, खगोल, विक्रम, मनेर, नौबतपुर और पालीगंज थाने हैं। इस सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

दानापुर—यह दानापुर सब-डिविजन का सदर आफिस है। पटना से थोड़ी ही दूर पर यह एक शहर है जिसकी आबादी २४,२२१ है। यहाँ आटे और तेल के मिल हैं। लकड़ी की चीजें यहाँ बहुत बनती हैं। विहार सरकार की यहाँ छावनी है, जहाँ पलटन रहती है। इस छावनी की जन-संख्या १०,२१७ और दानापुर थाने की जन-संख्या ७१,२७२ है। थाने के अन्दर ६१,५२६ हिन्दू, ८,६७८ मुसलमान १०६७ ईसाई और १ दूसरी जाति के लोग हैं।

खगौल—दानापुर सब-डिविजन का यह एक छोटा सा शहर है। यहाँ की जन-संख्या ७४१२ है। ई० आई० रेलवे का दानापुर स्टेशन इसी स्थान पर है, इसी कारण यह एक मुख्य स्थान हो गया है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। ईसाई धर्म प्रचारकों का भी यहाँ अड्डा है। खगोल थाने की जन-संख्या १०,८४० है, जिसमें ८,२४३ हिन्दू, २,१०७ मुसलमान और ४९० ईसाई हैं।

नौबतपुर—इस थाने की जन-संख्या ५२,८९२ है, जिसमें ५०,०७० हिन्दू, २,८१२ मुसलमान और १० अन्य जाति के लोग हैं।

पालीगंज—पालीगंज थाने की जन-संख्या ५२,००६ है, जिसमें ४८,२९५ हिन्दू, ३,७०३ मुसलमान हैं और ८ ईसाई हैं।

विक्रम—इस थानें में ९७,६९१ आदमी हैं, जिनमें ८९,५५५ हिन्दू, ८,१३४ मुसलमान और २ अन्य जाति के लोग हैं।

विहटा—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। ऊख का एक मिल यहाँ कायम हुआ है। फागुन महीने में शिवरात्रि के समय इस स्थान पर एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

भगवानगंज—इस गाँव में एक स्तूप का चिन्ह है जो चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् द्वारा वर्णित द्रोणस्तूप समझा जाता है। उसमें लिखा है कि भगवान बुद्ध के शरीर की राख को ब्राह्मण द्रोण ने घड़े में लेकर तत्कालीन ८ राजाओं में बाँट दिया था। अन्त में वह अपने हिस्से में वही घड़ा लेता आया और उस पर अपने गॉव में एक स्तूप बनवाया। बहुत दिनों के बाद जब अशोक राजा हुआ तो उसने वह घड़ा उखाड़ मँगवाया और फिर वहाँ स्तूप बनवा दिया। इस स्तूप के पास ही पुनपुन नदी बहती है।

भरतपुरा—यहाँ १८ वीं सदी में भरतसिंह नाम के एक जमींदार रहते थे. जिन्होंने यहाँ एक किला बनवाया था।

मनेर—इस स्थान की छोटी दरगाह और बड़ी दरगाह प्रसिद्ध हैं। छोटी दरगाह का मकान बहुत ही सुन्दर है। ये दोनों दरगाह सतरहवीं सदी के शुरू में बनायी गयी थीं। बड़ी दरगाह शेख यहिया की कब्र है। इनकी मृत्यु १२९० ई० में हुई थी। बादशाह बाबर और सिकन्दर लोदी भी यहाँ तीर्थ के लिये आये थे। मनेर थाने की जन-संख्या ९४,५१२ है जिसमें ८६,४२५ हिन्दू, ८,०६४ मुसलमान और २३ अन्य जाति के लोग हैं।

बाढ़ सब-डिविजन

इस सब-डिविजन का क्षेत्रफल ५१९ वर्गमील और जन-संख्या ४,१४,४४४ है। इसके अन्दर बाढ़, फतुहा और मोकामा

ये ३ शहर और ४६९ गाँव हैं। यहाँ बाढ़, बख्तियारपुर, फतुहा, मोकामा और सरमेरा ये ५ थाने हैं। इस सब-डिविजन के प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे हैं:—

बाढ़—यह बाढ़ सब-डिविजन का सदर आफिस है। यहाँ की जन-संख्या ९,७५० है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है। बाढ़ में चमेली का तेल बहुत दिनों से तैयार किया जाता है। यहाँ बराबर नदियों की बाढ़ होते रहने के कारण इस स्थान का नाम ही बाढ़ पड़ गया। मुसलमानी वक्त में यहाँ कई लड़ाइयाँ हुई थीं। मुँगेर से पटना आते वक्त मीरकासिम यहाँ ठहरा था और यहीं मुर्शिदाबाद के जगतसेठ और सरूपचंद को मार डाला था। बाढ़ थाने की जन-संख्या १३६,५८८ है जिसमें १,२७,२५९ हिन्दू, ९,३१५ मुसलमान और १४ ईसाई हैं।

अठमलगोला—यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है। विहार से बंगाल जाने के मुख्य रास्ते की हेफाजत के लिये अठारहवी सदी में यहाँ सिपाहियों का अड्डा था।

पुनरक—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। विहार से बंगाल जाने के रास्ते में सैनिकों का यहाँ एक पड़ाव था। इस गाँव में सूर्य भगवान का एक मंदिर है।

फतुहा—यह एक छोटा शहर है। यहाँ की जन-संख्या ९,३९३ है। यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। रेशमी और सूती कपड़े इस स्थान में तैयार किये जाते हैं। इसके आसपास मुसलमानी वक्त में कई लड़ाइयाँ हुई थीं। फतुहा थाने की जन-संख्या ८६,४८९ है, जिसमें ७८,३४६ हिन्दू, ८,१३७ मुसलमान और ६ अन्य जाति के लोग हैं।

बख्तियारपुर—यहाँ थाना, डाक बंगला, धर्मशाला और ई० आई० आर० का स्टेशन हैं। यहाँ से एक छोटी लाइन विहार

और वहाँ से राजगिर तक गयी है जिसकी लम्बाई ३२¾ मील है। बख्तियारपुर थाने की जन-संख्या ८५,३९६ है, जिसमें ८१,३६४ हिन्दू और ४,०३२ मुसलमान हैं।

वैकुंठपुर—खुशरूपुर रेलवे स्टेशन से एक मील उत्तर गंगा के किनारे यह एक गाँव है। बादशाह अकबर के मन्त्री राजा मानसिंह की माता यहीं मरी थीं। कहते हैं कि राजा मानसिंह ने ही इस गाँव को बसाया था।

मोकामा—बाढ़ सब-डिविजन का यह एक छोटा सा शहर है। यहाँ की जन-संख्या १,४२६० है। यहाँ से ई० आई० रेलवे की एक लाइन गंगा के किनारे मोकामा घाट तक गयी है, जहाँ बी० एन० डब्ल्यू० का जहाज़ आकर मिलता है। मोकामा थाने की जन-संख्या ८०,४०० है जिसमें ७४,८७९ हिन्दू, ५,४४० मुसलमान और ८१ ईसाई हैं।

सरमेरा—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या २६,५१६ है। यहाँ २५,५१६ हिन्दू और १००० मुसलमान रहते हैं।

विहार सब-डिविजन

विहार सब-डिविजन का क्षेत्रफल ७८६ वर्गमील है। यहाँ की जन-संख्या ६,५२,०३३ है। यहाँ विहार, गिरियक, सिलाव, स्थावाँ, हिलसा, चण्डी, एकंगरसराय और इस्लामपुर ये ८ थाने हैं। इसमें १ शहर और ९१७ गाँव हैं। प्रसिद्ध स्थान ये हैं—

विहार—पंचाना नदी के किनारे यह विहार सब-डिविजन का सदर आफिस है। इस शहर की जन-संख्या ४६,९९४ है। पहले इस स्थान का नाम उदन्तपुरी था। ८ वीं सदी से लेकर १२ वीं सदी तक यहाँ पाल-राजाओं की राजधानी थी। गोपाल ने यहाँ बहुत बड़ा विहार बनवाया था। इसी से इस स्थान का नाम

भी विहार पड़ गया। [illegible] खिलजी ने आकर इसे तहस-नहस कर डाला। शेरशाह के पटना में किला बनवाने तक दक्षिण विहार के मुसलमान सूबेदार यहीं रहते थे। यहाँ बहुत से पीरों की दरगाह हैं, जिससे मुसलमान लोग इसे विहार शरीफ कहते हैं। यहाँ एक छोटी सी पहाड़ी है जो पीर पहाड़ी कहाती है। यहाँ बुद्धदेव कुछ दिन ठहरे थे। पीछे यहाँ कपोतिका संघाराम बना। चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् ने इस संघाराम को देखा था। यहाँ एक मुसलमान पीर मलिक इब्राहिम की दरगाह है। इस पीर की मृत्यु १३५३ ई० में हुई थी। इस पीर के कारण ही लोग इस पहाड़ी को पीर पहाड़ी कहते हैं। शहर के अन्दर अकबर के वक्त की दो मस्जिद हैं जिनमें एक जुम्मा-मस्जिद है। यहाँ की छोटी दरगाह और मकदुम शाह की दरगाह भी मशहूर है। इस शहर में गुप्त-राजाओं के वक्त का १४ फीट ऊँचा स्तम्भ है जिस पर कुमार गुप्त और स्कन्द गुप्त का उल्लेख है। १७६३ ई० में बादशाह शाह आलम ने यहाँ अपनी राजधानी बनायी थी। यहाँ एक पुराने किले का चिन्ह अब भी देखने में आता है। जहाँ तहाँ पुराने स्तूप टील्हे के रूप में दिखाई पड़ते हैं। विहार थाने की जन-संख्या १,७८,६२२ है जिसमें १,४८,४१८ हिन्दू और ३०,१८६ मुसलमान, १४ आदिम जाति और ४ ईसाई हैं।

इस्लामपुर—यहाँ से एक छोटी लाइन जाकर फतुहा में ई० आई० आर० से मिली है। यहाँ एक बड़े बौद्ध मठ का चिह्न है। इस्लामपुर थाने की जन-संख्या ८३,९८१ है, जिसमें ७५,११८ हिन्दू, ८,७६८ मुसलमान और ९५ अन्य जाति के लोग हैं।

एकंगरसराय—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ३६.७५७ है जिसमे ३४,५५१ हिन्दू और २,२०६ मुसलमान हैं।

गिरियक—पंचाना नदी के किनारे यह एक गाँव है। गाँव के

पच्छिम जो पहाड़ी है उसे बौद्ध लोग इन्द्रशिला समझते हैं जहाँ, कहा जाता है कि, बुद्धदेव ने इन्द्र के प्रश्नों का उत्तर दिया था। यहाँ बहुत से विहार और स्तूप के चिह्न हैं—गिरियक पर्वत जंगलों से भरा है। पर्वत पर देखने लायक चीजें हैं—जरासंध की बैठक, हंस स्तूप, गिद्धद्वारी गुफा, असुरबाँध, [illegible] और अग्नि-धारा। गिरियक थाने की जन-संख्या ३९,६९८ है जिसमें ३६,३५० हिन्दू, ३,३२३ मुसलमान और २५ अन्य जाति के लोग हैं।

चण्डी—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ८०,१३९ है जिसमें ७३,३५६ हिन्दू और ६,७८३ मुसलमान हैं।

घोसरावाँ—यह स्थान विहार से ७ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ बौद्धकाल के बहुत से टूटे-फूटे मठों और स्तूपों के टील्हे हैं। इनमें दो प्रधान हैं, एक वह जिसपर आशा देवी का मंदिर है और दूसरा वह जो वज्रासन विहार का बचा हुआ अंश समझा जाता है।

तेतरावाँ—यह गाँव विहार से ६ मील दक्षिण पूरब है। यहाँ दो बड़े सुन्दर पोखर हैं—दिग्घी पोखर और बालम पोखर। यहाँ बहुत से टील्हे हैं जो पुराने बौद्धमठ मालूम पड़ते हैं। विद्वानों का कहना है कि यहाँ बहुत बड़ा बौद्ध विहार रहा होगा।

तेलरहा—यह गाँव विहार से बहुत दूर दक्षिण है। कहते हैं कि यह वही तैलधक स्थान है जहाँ एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था जिसमें एक हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। सातवी सदी में चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् यहाँ आया था। जमीन खोदने पर अब भी बौद्धकाल की बहुत सी चीजें यहाँ मिलती हैं।

नालन्दा—यह स्थान नालन्दा स्टेशन से तीन मील पर बड़-गाँव नामक गाँव के पास है। आज से हजार वर्ष पहले यहाँ बहुत बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय था जो दुनिया भर में नामी था। यहाँ भारतवर्ष, चीन, जापान, तिब्बत, लंका आदि देशों के

हजारों विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन् च्वाङ् ने भी यहाँ कई वर्षों तक पढ़ा था। जमीन खोदने पर यहाँ बहुत से पुराने मकान के चिन्ह मिले हैं। यहाँ सूर्यकुंड के पास कार्तिक में छठ पर्व के अवसर पर मेला लगा करता है।

पावापुरी—जैनधर्म को फैलानेवाले महावीर स्वामी की मृत्यु इसी स्थान पर हुई थी। यहाँ दो मंदिर हैं—एक जल मंदिर और दूसरा थल मंदिर। कहते हैं कि जहाँ महावीर स्वामी मरे थे वहाँ थल मंदिर और जहाँ वे जलाये गये थे वहाँ जलमंदिर है। यह मंदिर एक तालाब के अन्दर है। दोनों मंदिरों के बीच एक टील्हे पर छोटे से मंदिर में महावीर स्वामी के पैर के चिह्न हैं। पावापुरी का पुराना नाम अपापापुरी बताया जाता है।

बड़गाँव—दे०—"नालन्दा"।

राजगीर—राजगिर या राजगृह विहार से १३½ मील दक्षिण पच्छिम है। बी० बी० लाइट रेलवे लाइन यहाँ समाप्त होती है। यह मगध राज्य की प्राचीन राजधानी है। रामायण काल के पहले राजा वसु ने यहाँ अपनी राजधानी बनायी थी। महाभारत काल में यहाँ जरासंध राज्य करता था। उन दिनों इस स्थान का नाम गिरिव्रज था। जरासंध के किले की पत्थर की दीवाल अब भी देखने में आती है। इसे लोग जरासंध की बाँध कहते हैं। यहाँ के एक स्थान को लोग जरासंध का अखारा बताते हैं, जहाँ जरासंध और भीम में गदायुद्ध हुआ था। ऐतिहासिक युग में बिम्बिसार यहाँ का राजा हुआ। उसी समय इसका नाम राजगृह पड़ा था। अजातशत्रु ने पहाड़ी से कुछ दूर उत्तर हटकर अपनी नयी राजधानी बसायी थी। इसे नया राजगृह कहते हैं। वर्तमान राजगिर गाँव इसी स्थान पर है। बुद्धदेव ने पहले पहल यहीं दो ब्राह्मणों से शिक्षा पायी थी। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी
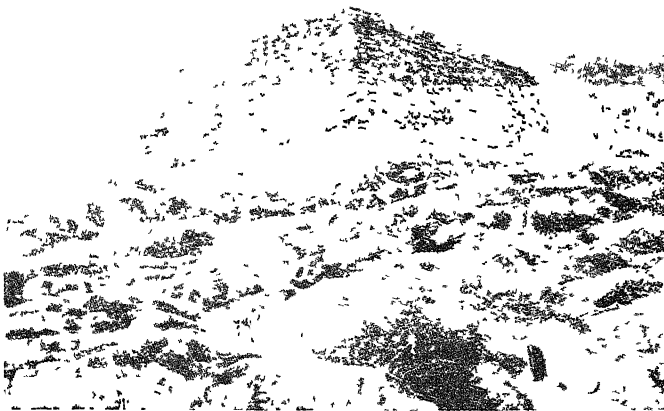
जरासंध की बैठक, राजगृह (पटना)
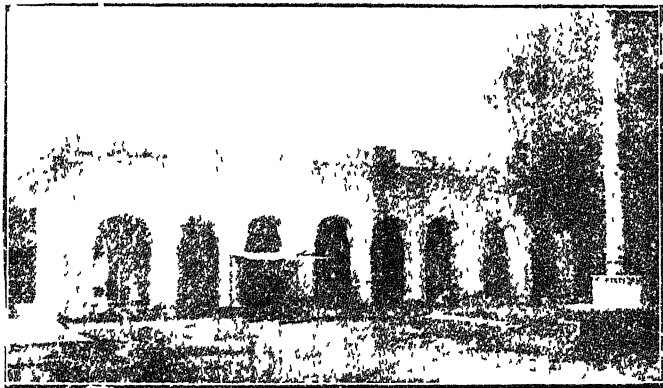
हरमंदिर—गुरु गोविन्द सिंह का जन्मस्थान, पटना सिटी
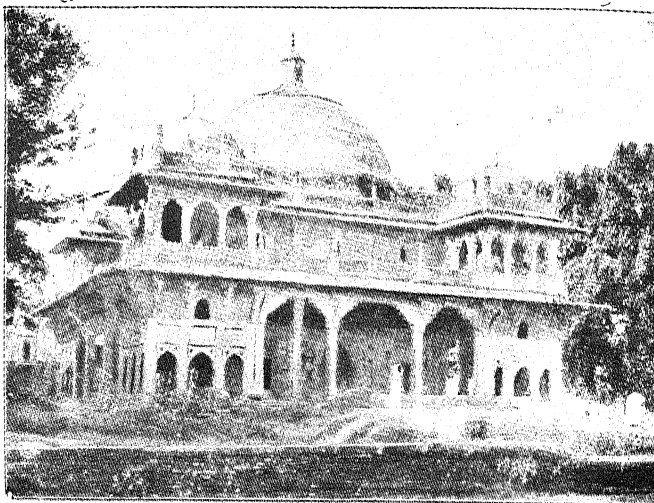
शाहदौलत का मकबरा, मनेर (पटना)
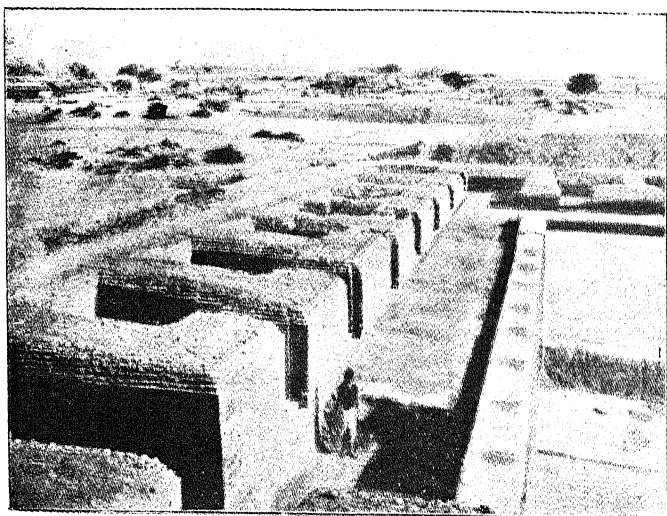
नालन्दा विश्वविद्यालय की खुदाई का एक दृश्य, नालन्दा (पटना)

ये बराबर यह, आया करते थे। सम्राट अशोक ने संयास ग्रहण करके जीवन के अपने अन्तिम दिन यहीं बिताये। समय समय पर यहाँ बहुत से स्तूप और विहार बने जिनके चिह्न अब भी मौजूद हैं। राजगृह जैनियों का भी तीर्थ-स्थान है और यहाँ उनके कितने हो मंदिर हैं। स्वास्थ्य के लिये यह बहुत अच्छा स्थान है।

राजगिर पहाड़ की चोटियों में वैभव गिरि, विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि, शैलगिरि आदि प्रसिद्ध हैं। शैलगिरि को ही कुछ लोग गृद्धकूट बताते हैं। यहाँ की गुफाओं में सोन भंडार, सत्तपानी गुफा, देवदत्त गुफा, राजपिंड गुफा आदि हैं। सत्तपानी गुफा में हो पहली बौद्ध महासभा हुई थी। यहाँ के यष्टिवन, वेणुवन, तपोवन और बुद्धवन आदि स्थान मशहूर हैं। हिन्दू राजगृह को तोर्थस्थान मानते हैं। यहाँ ठंढे और गरम जल के बहुत से झरने हैं। इन्हें लोग कुंड कहते हैं। कुंडों के आस-पास मंदिर बने हुए हैं। इन कुंडों में सरस्वती कुंड, वैतरणी कुंड, शालिग्राम कुंड, ब्रह्म कुंड, काश्यप कुंड, व्यास कुंड, मार्कण्डेय कुंड, गंगा-यमुना कुंड, सप्तऋषि कुंड, सीता कुंड, राम कुंड, गणेश कुंड, सूर्य कुंड, चन्द्र कुंड, अनन्त ऋषि कुंड, शृंगी ऋषि कुंड आदि हैं। शृंगी ऋषि कुंड मुसलमानों के अधिकार में चला गया है और वे इसे मकदुम कुंड कहते हैं। मलमास में यहाँ एक मास तक बहुत बड़ा मेला लगता है।

सिलाव—यह स्थान विहार से ५ कोश दक्षिण है। यहाँ का चूरा और खाजा प्रसिद्ध है। सिलाव थाने की जन-संख्या ९२,९१८ है जिसमें ८३,११७ हिन्दू ९,७७६ मुसलमान और २५ अन्य जाति के लोग हैं।

स्थावाँ—इस थाने की जनसंख्या ७१,९२७ है जिसमें ५९,५३९ हिन्दू, १२,३९४ मुसलमान और ४ आदिम जाति के लोग हैं।

[illegible] थाना, डाक-बंगला और एक बड़ा सा बाजार है। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है। इस स्थान पर एक पुरानी दरगाह है जो बहुत मशहूर है। इस थाने की जनसंख्या ६७,३१० है जिसमें ६१,८६१ हिन्दू, ५,४४८ मुसलमान और १ अन्य जाति के लोग हैं।

पटना जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की संख्या (सन् १९३१)

जाति	संख्या	जाति	संख्या
ग्वाला	२,७७,२६३	हज्जाम	३०,८८५
कुरमी	१,७३,१४६	बरही	२८,८७९
दुसाध	१,१७,२९६	कुम्हार	२६,२५२
भूमिहार ब्राह्मण	१,०६,७४३	मल्लाह	१६,३२७
कहार	९७,३५९	ताँती	१३,७३१
राजपूत	८१,०७७	धोबी	१३,३७५
कोयरी	७१,२३९	बनिया	१०,६२६
चमार	७०,२४५	कमार	७,६५०
ब्राह्मण	५८,५६६	माली	५,८८७
मुसहर	५०,६३१	डोम	४,८१२
तेली	४७,५०१	रजवार	४,१८०
पासी	३९,३४०	हलालखोर	२,३१४
जोलाहा	३६,३७२	नट	१,०३९
धानुक	३५,६८७	भुइयाँ	२१६
कायस्थ	३४,०६१	लालबेगी	१०२
काँदू	३१,७३४	ओरॉव	३९

गया जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

गया जिला पटना कमिश्नरी का दक्षिणी हिस्सा है। यह २४°१७′ और २५°१९′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°०′ और ८६°३′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है।

गया जिले के उत्तर में पटना जिला, पूरब में मुँगेर और हजारीबाग जिले, दक्षिण में हजारीबाग और पलामू जिले तथा पच्छिम में शाहाबाद जिला हैं। गया और शाहाबाद जिले के बीच में सोन नदी प्राकृतिक सीमा का काम करती है।

गया जिले का क्षेत्रफल ४,७१४ वर्गमील है। पास के शाहाबाद जिले से यह थोड़ा ही बड़ा है, लेकिन पटना जिले से तो यह करीब ढाई गुना बड़ा है।

प्राकृतिक बनावट

प्राकृतिक रूप से जिला दो भागों में बँटा हुआ है। दक्षिण भाग में पहाड़ और जंगल बहुत हैं। इधर की जमीन ऊँची और ऊसर है। यहाँ खेती नहीं हो सकती, सिंचाई का प्रबन्ध भी नहीं हो सकता है। जहाँ थोड़ी बहुत खेती की भी जाती है वहाँ उपज अच्छी नहीं होती। आबादी घनी नहीं है। जिले का दूसरा भाग समतल भूमि है। यह क्षेत्रफल में पहले भाग से बहुत बड़ा है। इस भाग के अन्दर सारा जहानाबाद सब-डिविजन तथा सदर,

औरंगाबाद और नवादा सब-डिविजनों का उत्तरी हिस्सा है। इस भाग की जमीन उपजाऊ है और यहाँ सिंचाई का भी प्रबन्ध अच्छा है। आबादी भी घनी है। इस प्राकृतिक बनावट का प्रभाव यहाँ के इतिहास और सभ्यता पर भी पड़ा है। जहाँ उत्तरीय भाग में सदा सभ्य लोग रहते आये हैं वहाँ दक्षिणी पहाड़ी भाग जंगली और आदिम जातियों का निवासस्थान रहा है।

पहाड़—जिले के दक्षिण के पहाड़ छोटा नागपुर अधित्यका के हिस्से हैं। कई जगह इसकी ऊँचाई समुद्र तल से १,८०० फीट है। इससे कुछ उत्तर बढ़ कर समतल भूमि में भी कई पर्वतमालाएँ हैं। और भी उत्तर जाने पर जहाँ तहाँ पहाड़ मिलते हैं। एक पर्वतमाला बोधगया के पास से उत्तर पूरब की ओर ४० मील तक गयी है। इस पर्वतमाला की हंडिया पहाड़ी १,४७२ फीट ऊँची है। जिले की सबसे ऊँची पहाड़ी दुर्वासा पहाड़ी है जिसकी ऊँचाई २,२०२ फीट है। महावर पहाड़ी १,८३२ फीट ऊँची है। बराबर पहाड़ी भी एक मुख्य पहाड़ी है। इनके अलावे हसरा, पहरा, चिरकी, ब्रह्मयोनि, कौआडोल, लोहावर, पवई, दुगुल, शृंगिरिख और पचार आदि भी मुख्य पहाड़ियाँ हैं।

जल-प्रपात—इन पहाड़ियों में बहुत से जलप्रपात हैं। इनमें सबसे सुन्दर मोहान और ककोलत के जलप्रपात हैं। हरिया-खाल का प्रपात भी सुन्दर है।

जंगल—इस जिले में सन् १९३५-३६ में ९,८७९ एकड़ जंगल सरकार के प्रबन्ध में थे। इसे रिजर्व्ड फारेस्ट कहते हैं। इसके अलावे यहाँ कुछ और भी जंगल हैं।

नदियाँ

कुछ को छोड़ गया जिले की नदियाँ पहाड़ी नदियाँ हैं, जो छोटा-नागपुर की अधित्यका से निकल कर लगभग समानान्तर में जिले के बीच दक्षिण से उत्तर की ओर बही हैं। पच्छिम में सोन नदी जिले की सीमा बनाती है। इसके बाद पुनपुन, अदरी, मदार, डावा, मोरहर, यमुना, फलगू, पैमार, धाधर, तिलैया, धनार्जी और सकरी नदियों का स्थान है। इन नदियों में केवल सोन और पुनपुन जिले के बाहर जाकर गंगा में मिली हैं। बाकी नदियों का अधिकांश पानी पैन आदि बनाकर सिंचाई के काम में लाया जाता है। इन नदियों में गरमी के दिनों में बहुत कम पानी रहता है या नहीं भी रहता है। लेकिन जब वर्षा होती है तो इन नदियों में एकाएक बहुत बाढ़ आ जाती है, पर इस बाढ़ के समाप्त होने में भी बहुत देर नहीं लगती।

सोन—जिले की सबसे मुख्य नदी सोन है, जो मध्यभारत से निकल कर पटना जिले के मनेर नामक स्थान से १० मील उत्तर गंगा में मिली है। यह कहीं भी गया जिलेके अन्दर नहीं घुस कर केवल उसकी पच्छिमी सीमा पर बही है। जिले के अन्दर इसके किनारे बारुण, दाऊदनगर और अरवल आदि मुख्य स्थान हैं। सूखे मौसम में बालू के मैदान के बीच इसकी चौड़ाई मुश्किल से १०० गज रहती है और इसके पूर्वी किनारे पर पच्छिमी हवा बालू का ढेर लगा देती है, लेकिन बरसात में इसकी चौड़ाई कई मील की हो जाती है और इसकी धारा बहुत ही तेज रहती है। कारण यह है कि मध्यभारत पहाड़ी के २1,३०० वर्गमील का पानी इसमें आता है। अचानक भयंकर बाढ़ होने के कारण आस-पास के गाँव दह बह जाते हैं, लेकिन

यह बाढ़ अधिक दिनों तक नहीं रहती। इस वजह से बड़ी-बड़ी नावें इस नदी में नहीं चल सकती हैं। सोन नदी का पुराना नाम था हिरण्यबाहु जिसका अर्थ है सोने सी बाहु वाली। सोन नाम भी यही अर्थ प्रगट करता है। नदी के दोनों किनारे सोने सा चमकता बालू रहने के कारण ऐसा नाम पड़ा। एक पुराना नाम शोणभद्र भी है। पहले दाऊदनगर के बाद यह नदी उत्तर-पूरब की ओर बहती थी और सोनभद्र गाँव पहुँच कर उस स्थान होकर बहती थी जिस होकर आज पुनपुन बहती है।

पुपुनन—सोन से पूरब पुनपुन नदी है जो जिले के दक्षिण भाग से निकल कर लगभग सोन के समानान्तर में गंगा की ओर उत्तर-पूरब बहती है। जिले के भीतर होकर बहने वाली यही एक नदी है जिसमें बारहो मास पूरा पानी रहता है और सूखे मौसिम में भी धारा चलतो रहती है। इसका बहुत सा पानी आस-पास के गाँवों में सिंचाई के काम में आता है। पुनपुन के दाहिने किनारे पर बहुत सी छोटी छोटी धाराएँ आकर मिली हैं जिनमें ढावा, बाताने और मदार मुख्य हैं। ये धाराएँ गर्मी के दिनों में सूख जाती हैं पर बरसात में भी इसका सब पानी पुनपुन में नहीं पहुँचता है, क्योंकि रास्ते में ही इसका पानी नहर के काम में आ जाता है। पुनपुन की दूसरी सहायक नदियाँ इस जिले में इससे नहीं मिलतीं। इनमें सब से मुख्य मोरहर है जो दक्षिण से निकल कर उत्तर की ओर बहती है। शेरघाटी के पास ग्रैंड ट्रंक रोड का इस नदी पर दो सुन्दर पुल है। टेकारी के बाद इसकी दो धाराएँ हो गयी हैं, एक उत्तर की ओर पटना जिला चली गयी है और दूसरी पूरब की ओर झुक कर दरधा नाम से जहानाबाद होकर बहती है। एक दूसरी नदी यमुना दक्षिण से निकल कर गया और टेकारी के बीच

बहती हुई जहानाबाद में दरधा से मिल गयी है। पुनपुन पवित्र नदी मानी जाती है। गया जाने वाले तीर्थयात्री यहाँ अपना शिर मुड़ाते और स्नान करते हैं।

फलगू—फलगू नदी बोधगया पहुँचने के २ मील पहले नीलांजन और मोहान (मोहिनी) नाम की दो बड़ी पहाड़ी धाराओं के मिलने से बनी है। गया इस नदी के किनारे है। इसे हिन्दू पवित्र दृष्टि से देखते हैं और इसके किनारे पितरों को पिंड देते हैं। बराबर पहाड़ी के पास इस नदी का नाम फिर मोहान हो गया है। यहाँ यह दो धाराओं में फूट कर पुनपुन नदी की एक शाखा में मिल गयी है।

फलगू से पूरब बहुत सी छोटी-छोटी धाराएँ समानान्तर बहती हैं इनमें मुख्य धाधर, तिलैया, धनार्जी, खुरी और सकरी हैं। ये पाँचो धाराएँ पटना जिले में गिरियक के पास एक साथ मिल गयी हैं और यहाँ से पंचाना नाम पड़ गया है।

जलवायु और स्वास्थ्य

गया जिले की आबहवा साधारणतः सूखी है। बिहार के और जिलों की अपेक्षा यहाँ गर्मी के दिनों में अधिक गर्मी और जाड़े के दिनों में अधिक जाड़ा पड़ता है। कातिक-अगहन से जाड़ा शुरू होकर माघ-फागुन तक रहता है। चैत से गर्मी शुरू होती है और वैशाख-जेठ में खूब गर्मी रहती है। आषाढ़ से थोड़ा बहुत पानी का बरसना आरम्भ हो जाता है और सावन भादों में खूब वर्षा होती है। जनवरी से मई तक साधारण तौर पर औसत गर्मी ६४° से ९३° तक रहती है। मई जून में १०५° या इससे भी अधिक गर्मी हो जाती है।

हवा मुख्यकर पूर्वी और पच्छिमी है। पच्छिमी हवा सूखी और पूर्वी हवा तर रहती है। आम-तौर से पच्छिमी हवा करीब माघ से और पूरबी हवा बरसात के आरम्भ से चलना शुरू करती है। जिले में साल भर में चालीस, पैंतालीस इंच वर्षा होती है।

हैजा, प्लेग और चेचक से जिले के अन्दर हर-साल हजारों आदमी मरते हैं। प्लेग और चेचक से बचने के लिये सरकार की ओर से टीका दिलाने का प्रबन्ध है। बुखार एक आम बीमारी है। आँख और कान के रोग, फीलपाँव, कुष्ठरोग, चर्मरोग, अंडकोश-वृद्धि और मलेरिया आदि के भी बहुत लोग शिकार होते हैं। रोगियों के इलाज के लिये शहरों में और देहातों में जहाँ-तहाँ अस्पताल खुले हैं। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड के अधीन ५२ अस्पताल थे। गया में यात्रियों के लिये एक अलग बड़ा अस्पताल है।

जानवर

जिले में पालतू जानवरों की अवस्था साधारण है। जिले के दक्षिणी भाग में जहाँ आबादी कम है और जंगल अधिक हैं जानवरों को चारे की तकलीफ नहीं होती, लेकिन उत्तरी हिस्से में, जहाँ की सब जमीन खेती के काम में ही आती है, चरागाह का कोई प्रबन्ध नहीं है। जिले के दक्षिण भाग में बैल बहुत छोटे-छोटे होते हैं, इसलिये अधिक बोझ की बैलगाड़ियों में अक्सर तीन बैल जोते जाते हैं। खेत जोतने के लिये लोग बैल से काम लेते हैं, लेकिन धान के ऐसे खेतों में जहाँ बहुत पाँक होते हैं हल में भैंसे जोते जाते हैं। दूध देनेवाले जानवरों में गाय, भैंस और बकरी मुख्य हैं। पहाड़ी भाग में गड़ेरिये भेंड़

अधिक संख्या में पालते हैं और उनके ऊन से कम्बल आदि बनाते हैं। डोम, दूसाध, भुइयाँ और मुसहर लोग सूअर पालते हैं। सवारी के लिये घोड़े काम में लाये जाते हैं। जिले के प्रधान शहर तथा सब-डिविजनल शहरों में जानवरों के इलाज का प्रबन्ध है। कुछ डाक्टर घूम घूमकर भी जानवरों का इलाज करते हैं।

जिले के दक्षिण भाग में जंगली जानवर बहुत पाये जाते हैं। इनमें बाघ, चीते, भालू, सूअर, भेड़िये, जंगली कुत्ते, हरिण और नील गाय आदि मुख्य हैं।

इतिहास

गया जिला दो प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है—उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग। इन दो भागों की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास में बिलकुल भिन्नता है। उत्तरी भाग प्रायः सभ्य लोगों का निवास-स्थान रहा है, लेकिन दक्षिण भाग में, जो पहाड़ों और जंगलों से भरा है, अधिकतर जंगली और आदिम-जाति के लोग रहते आये हैं। जिले का उत्तरीय भाग प्राचीन मगध का एक मुख्य अंग था। इस भाग का इतिहास मगध के इतिहास के साथ सम्मिलित है। दक्षिण भाग के सम्बन्ध में न प्राचीन आर्यों के समय का कोई हाल मिलता है और न बौद्धों के समय का। उत्तर भाग में हर जगह बौद्धकालीन वस्तुएँ मिलती हैं, लेकिन दक्षिण में कहीं कुछ नहीं। मुसलमानी काल में भी हम इस भाग को केवल झारखंड याने जंगली भाग के नाम से जानते हैं। यहाँ जंगली जातियों के पुराने भद्दे किले के कुछ भग्नावशेष जहाँ-तहाँ मिलते हैं।

प्राचीन काल--जिले के उत्तरी भाग के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत पता वैदिक काल से ही लगता है। महाभारत के वनपर्व में इस बात का उल्लेख है कि गया के समीप उद्यन्त पर्वत में सावित्री स्थान था जहाँ सावित्री प्रगट हुई थी। भारतीय प्राचीन ग्रन्थों के अनुशीलन से पता चलता है कि जिस समय आर्य लोग मिथिला और अंग देश में फैल रहे थे उसी समय आमूर्तरया के पुत्र गय ने काशी के पूरब जंगली प्रदेश में पहले-पहल एक राज्य कायम किया। यही भाग आगे चलकर मगध या कीकट देश कहलाया। कहते हैं कि गय बड़ा साहसी और पराक्रमी था। थोड़े ही दिनों में वह चक्रवर्ती राजा बन बैठा। लेकिन यह राज्य अधिक दिनों तक नहीं टिका। इस भूभाग का गया नाम इसी गय राजा के नाम पर पड़ा जान पड़ता है। वाल्मीकि रामायण में भी यशस्वी राजा गय के यज्ञ करने का उल्लेख हुआ है। लेकिन पुराणों में यहाँ बहुत बड़ा तपस्वी और यज्ञकर्त्ता गयासुर के होने का वर्णन है। देवताओं ने मिलकर किस तरह इस असुर को पर्वत के नीचे दबा रखा इस सम्बन्ध में रोचक कहानियाँ हैं। जो हो, यहाँ गय नामक एक प्रसिद्ध राजा का होना सब तरह से सिद्ध होता है।

ऐतिहासिक काल—इसके बाद मगध के अन्दर गिरिव्रज या राजगृह में रामायण काल में राजा वसु और महाभारत काल में जरासंध आदि का होना जाना जाता है। तत्पश्चात भी गया का शासन मगध के अन्य भागों के साथ शिशु नागवंश, नन्दवंश, मौर्य्यवंश, सुंगवंश, कण्ववंश, आन्ध्रवंश, गुप्तवंश, पालवंश आदि के द्वारा होता रहा। शिशु नागवंशी राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु के समय भगवान बुद्ध और महावीर हुए। भगवान बुद्ध का तो गया के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा। पिता

का घर छोड़ने पर बुद्धदेव राजगृह आये थे, राजगृह से ये गया पहुँचे। ललित विस्तार नामक ग्रन्थ में लिखा है कि गया वासियों के निमन्त्रण पर बुद्धदेव यहाँ आये थे। कुछ दिनों तक ये गया के ब्रह्मयोनि-पर्वत पर तपस्या करते रहे उसके बाद उस स्थान पर तपस्या करने गये जो आज बोध-गया नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ एक पीपल के वृक्ष के नीचे जब ये ध्यान में मग्न थे तो इन्हें एकाएक ज्ञान की प्राप्ति हुई। कुछ दिन यहाँ रहने के बाद ये बनारस गये और वहाँ अपने धर्म का प्रचार करने लगे। वहाँ से लौट कर ये गया आये और फिर यहाँ से बहुत से शिष्यों के साथ बिम्बिसार की राजसभा में राजगृह गये! गया में जिस पीपल वृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था वह बोधि या महा-बोधि वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है।

मगध के मौर्य्यवंशी सम्राट अशोक ने देश विदेश में बौद्ध धर्म का खूब प्रचार किया। उसने बुद्ध के पवित्र स्थानों में मठ, स्तूप और स्तम्भ बनवाये। बोध-गया में उसने एक लाख स्वर्ण-मुद्रा खर्च करके एक बहुत सुन्दर मठ बनवाया। अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा दोनों मिलकर गया से बोधि-वृक्ष की शाखा लंका ले गये और वहाँ इसे रोपा। वह वृक्ष या उससे उत्पन्न दूसरा वृक्ष लंका में अब भी कायम है जहाँ अखण्ड रूप से दीपक जलते रहते हैं। वहाँ साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है और बड़ी धूमधाम के साथ उत्सव मनाया जाता है। अशोक सब धर्मों की कदर करता था और सबके मूल तत्वों को मानता था यह बात इस जिले के बराबर पहाड़ी के शिला-लेख से भी प्रगट होती है। इस पहाड़ी की एक गुफा इसने आजीवकों को रहने के लिये दी थी जो बौद्ध नहीं थे। अशोक के पोता दशरथ ने भी इस पहाड़ी की तीन नागार्जुनी गुफाएँ ऐसे ही

था, जो सम्भवत: कौवाडोल की चोटी के पास रहा होगा। इन दो स्थानों में होते हुए य्वन् च्वांग गया पहुँचा और वहाँ से प्राग्बोधि होते हुए बोध-गया आया। प्राग्बोधि में उसने अशोक के बनाये स्तूप को देखा था। बोध-गया मठ के पास उसने बहुत से स्तूप और छोटे छोटे मठ देखे। उस समय हजार से अधिक बौद्ध भिक्षु वहाँ रहते थे और देश-देश के राजे तथा बड़े-बड़े लोग भगवान बुद्ध की निर्वाण-तिथि को बोधि-वृक्ष के दर्शन के लिये आते थे। वहाँ से वह चीनी यात्री बकरौर गया जहाँ गंध-हस्ति के प्रति श्रद्धा प्रगट करने के लिये स्तूप बनाया गया था। इस स्तूप का चिन्ह अब भी मिलता है। कहते हैं कि बुद्ध अपने एक पूर्व जन्म में यहाँ एक सुगंधित हाथी के रूप में विचरण करते थे। इस स्थान से य्वन् च्वाङ् कुक्कुट पादगिरि (हसरा पहाड़ी), यष्टिवन (जेठियन) और तपोवन होते हुए राज-गृह गया था।

पालवंश—मगध के पालवंशी राजाओं के समय बौद्ध धर्म को फिर उन्नति हुई। बोध-गया में बुद्ध की कितनी ही मूर्तियों पर पाल-राजाओं के नाम खोदे हुए हैं। इन राजाओं ने भिन्न-भिन्न स्थानों में धर्मोपदेशक भेजे। तिब्बत में बौद्ध-धर्म के सुप्रसिद्ध सुधारक और प्रचारक दीपंकर श्रीज्ञान (अतिशा) ने कुछ दिनों तक बोध-गया के विहार में शिक्षा पायी थी। पाल-राजाओं के समय हिन्दू धर्म की भी उन्नति हुई। गया में उस समय बहुत से हिन्दू मन्दिर बने और तीर्थयात्री खूब आने जाने लगे।

मुसलमान-काल--१२ वीं सदी के अन्त में जब बख्तियार खिलजी ने विहार पर चढ़ाई की तो उसने बौद्धों के मठों में आग लगा दी, मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला तथा भिक्षुओं को

कत्ल कर दिया। जो किसी तरह बच सके वे तिब्बत, चीन और दक्षिण भारत को भाग गये। बिहार के और जिलों की तरह गया भी मुसलमानों के हाथ आ गया। इस समय जिले के अन्दर कोई उल्लेख योग्य घटना नहीं हुई।

गया जिला छोटे-छोटे जमींदारों के हाथ में बँटा था। सभी अपनी-अपनी छोटी सेना रखते थे। जिले के मध्यभाग में सबसे प्रभावशाली टेकारी का राज था। एक बार शुजाउद्दौला के नायब सूबेदार अलीवर्दी खाँ ने टेकारी राज पर हमला किया था। नरहट और समई में कामगार खाँ और उसका भाई नामदार खाँ जमींदार थे। सिरिस-कुटुम्बा का जमींदार भी बड़ा जबरदस्त था। दक्षिण के पहाड़ी सरदारों में रामगढ़ का राजा बहुत शक्तिशाली था। वह कभी सूबेदार के कब्जे में आ ही नहीं रहा था। आखिर १७४० ई० में सूबेदार ने रामगढ़ पर चढ़ाई करने का विचार किया। टेकारी के राजा और सिरिस-कुटुम्बा तथा शेरघाटी के जमींदारों ने भी सूबेदार का साथ दिया। रामगढ़ का किला ले लिया गया और सेना आगे बढ़ती हुई पहाड़ों के बीच बहुत दूर चली आयी। लेकिन इसी समय बंगाल पर मराठों के चढ़ाई करने की खबर मिली इससे सूबेदार को रामगढ़ के राजा के साथ लड़ाई बन्द कर देनी पड़ी।

१७४३ ई० में मराठा सरदार बालाजी राव ५० हजार घुड़ सवारों को लेकर गया जिला होते हुए बंगाल की ओर रवाना हुआ। रास्ते में वह लोगों से लड़ाई का खर्च वसूलता गया। जो लोग कुछ देने से इन्कार करते थे वे कत्ल कर दिये जाते थे, उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाती थी और उनके खेत उजाड़ दिये जाते थे। यहाँ के सिर्फ दाऊदनगर के जमींदार अहमद खाँ ने मरहठों को आगे बढ़ने से रोका, इस पर मराठों ने दाऊदनगर

शहर में आग लगा दी और माल-असबाब लूट लिया। अहमद खाँ दाऊदनगर के पास धौसगढ़ किले में नगर के धनी व्यक्तियों के साथ बन्द हो गया। पर जब किले पर भी हमला हुआ तो वह वहाँ से भाग चला। अन्त में उसे ५० हजार रुपया जुरमाना दाखिल करने पर छुटकारा मिला। इसके बाद मराठे टेकारी, गया और मानपुर होते हुए बंगाल की ओर बढ़े। आखिर दो वर्ष बाद वे वहाँ से लौटे। इस समय रघूजी भोंसला सूबेदार अलीवर्दी खाँ के एक विद्रोही सरदार मुस्तफा खाँ के सैनिकों को बचाने के लिये ससराम की ओर बढ़ा। कहते हैं कि रास्ते में मराठों ने टेकारी और उसके आसपास के स्थानों को लूटा था।

इसके बाद जिले में कुछ दिनों तक शान्ति रही। पीछे बिहार के नायब सूबेदार रामनारायण ने सिरिस-कुटुम्बा के जमींदार बिसुन सिंह पर चढ़ाई की। बिसुन सिंह ने सिराजुद्दौला की मृत्यु के बाद कर देने से इन्कार कर दिया था और कुछ अपनी जमींदारी भी बढ़ा ली थी। उसने अपने किले में राम-नारायण का मुकाबला किया पर अन्त में अधीनता स्वीकार की। इसके बाद गया फिर युद्ध का केन्द्रस्थल बना। १७६० ई० में दिल्ली के शाहजादे ने, जो पीछे बादशाह शाहआलम के नाम से मशहूर हुआ, अफगानों और मराठों की सहायता से बिहार पर कब्जा करने के लिये चढ़ाई की। यहाँ का नरहट का जमींदार कामगार खाँ बहुत बड़ी सेना के साथ उससे मिल गया। टेकारी के राजा ने साथ देने से इन्कार किया इससे उसके राज में खूब लूटपाट मचायी गयी। राजा मुकाबला न कर सकने के कारण अपने किले में जा छिपा, लेकिन वह तुरत गिरफ्तार कर लिया गया। शाहआलम का सामना करने के लिये नवाब मीरजाफर का पुत्र मीरन और नायब सूबेदार

रामनारायण को लेकर मेजर कारनाक पहुँचा। शाहआलम इन सब का मुकाबला न कर सका और वह गया के पास मानपुर नामक स्थान पर लड़ाई से हट गया, उसकी सेना भी तितर-बितर हो गयी। अन्त में दोनों पक्ष में सन्धि हो गयी। शाह-आलम पटना गया और उसने मीरकासिम को बंगाल, विहार और उड़ीसा का नवाब स्वीकार किया।

अंग्रेजी शासन—१७६४ ई० में जब अंगरेजों ने बक्सर के पास बादशाह शाह आलम, अवध के नवाब शुजा उद्दौला और बंगाल-विहार के नवाब मीर कासिम को परास्त किया तो उनका बल बहुत बढ़ गया। उन लोगों ने दूसरे ही साल बंगाल-विहार की दीवानी ली और एक तरह से यहाँ के मालिक बन बैठे। पर भीतर ही भीतर बहुत से लोग इनके खिलाफ थे। सन् १८५७ में देशभर में इनके विरुद्ध बलवा मचा। गया जिले में भी उपद्रव खड़ा हुआ। यहाँ बहुत थोड़े अंगरेज थे। ये लोग गया छोड़ कर भागे और अपने साथ खजाना भी लेते गये। इधर विद्रोहियों ने जेल का फाटक खोल दिया तथा जज और कलक्टर की कोठियों और कचहरियों में आग लगा दी। शेर-घाटी और नवादा पर भी विद्रोहियों का दखल हो गया। तेहटा का अफीम का कारखाना भी इनके हाथ लगा। जहाना-बाद में भी सरकारी मकान जला दिये गये। लेकिन कुछ ही दिनों में अंगरेजों का फिर सब जगहों पर कब्जा हो गया और बलवाई बड़ी सख्ती के साथ दबाये गये। उसके बाद फिर वैसी कोई घटना जिले के अन्दर नहीं हुई।

पहले पहल सन् १७८७ ई० में विहार जिला कायम हुआ था जिसमें वर्त्तमान पटना जिला, गया जिले का उत्तरी भाग तथा कुछ और हिस्से थे। इस जिले का सदर आफिस गया था।

उस समय गया का दक्षिणी हिस्सा रामगढ़ जिले के साथ था। पीछे १८२५ ई० में पटना जिला कायम हुआ, लेकिन विहार सब-डिविजन गया के ही साथ रहा और जिला का नाम विहार जिला बना रहा। १८६५ ई० में जब विहार सब-डिविजन पटना के साथ मिला दिया गया तो जिला का नाम विहार से बदल कर मुख्य शहर गया के नाम पर गया रखा गया। फिर जिले का वर्त्तमान दक्षिणी हिस्सा भी इसमें शामिल किया गया। इस तरह गया जिले का वर्त्तमान रूप निर्मित हुआ।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ में गया जिले की जनसंख्या २१,२६,०७९ थी। सन् १९३१ में यह संख्या २३,८८,४६२ हो गयी इसमें ११,९३, ६४३ पुरुप और ११,९४,८१९ स्त्रियाँ हैं। इन पचास वर्षों में जिले के अन्दर २,६२,३८३ आदमी अर्थात सैकड़े १४ आदमी बढ़े। समूचे जिले का हिसाब करने से एक वर्गमील में यहाँ ५०७ आदमी रहते हैं। जिले के उत्तरी हिस्से की अपेक्षा दक्षिणी हिस्से की आबादी कम है, क्योंकि यह भाग पहाड़ियों और जंगलों से भरा है। जहानाबाद सब-डिविजन में एक वर्ग मील के अन्दर ७५९, नवादा सब-डिविजन में ५१३, सदर सब-डिविजन से ४७५ और औरंगाबाद सब-डिविजन में ४२८ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ४४,७०७ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,८९,९६९ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में गाँवों की संख्या ६,०५८ और शहरों की संख्या ७ है। गया, दाऊदनगर, जहानाबाद, नबादा, औरंगा-

बाद, हिसुआ और टेकारी ये शहर हैं। इन शहरों की कुल आबादी १,३५,९९३ है। इनमें गया शहर की आबादी ८८,००५ है।

गया जिले की बोली मगही या मागधी है। मगह या मगध देश के नाम पर यहाँ की बोली का नाम पड़ा। यह बोली पटना और गया जिले के अलावे हजारीबाग, पलामू, मुँगेर और भागलपुर के भी कुछ हिस्सों में बोली जाती है। कहते हैं कि शुद्ध मगही गया जिले में ही बोली जाती है। मगही बोली में साहित्य नहीं है, लेकिन इसमें ग्रामीण गीत बहुत से पाये जाते हैं। सर्वसाधारण में कैथी लिपि का प्रचार है। चिट्ठी-पत्री और दस्तावेज वगैरह लोग इसी लिपि में लिखते हैं। पढ़े-लिखे लोग आपस में हिन्दी-हिन्दुस्तानी भाषा बोलते और लिखते हैं। पढ़े लिखे हिन्दुओं में देवनागरी लिपि और पढ़े लिखे मुसलमानों में उरदू लिपि का प्रचार है। जिले की जन-संख्या में २३,८६,८५२ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ८४० की बंगला, १२९ की मारवाड़ी, १८० की अन्य भारतीय-आर्य भाषाएँ, ९४ की मुंडा, द्राविड़, पश्तो आदि और ३६७ की यूरोपियन भाषाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	...	२१,३३,५४१	सिक्ख	...	१८३
मुसलमान	...	२,५३,५६०	बौद्ध	...	१६
ईसाई	...	५७६	आदिमजाति	...	१२
जैन	...	५६४	पारसी	...	७

फी सैकड़े का हिसाब करने से जिले के अन्दर हिन्दू फी सैकड़े ८९ से कुछ अधिक और मुसलमान फी सैकड़े १० से कुछ अधिक हैं। हिन्दू जाति में यहाँ सबसे अधिक अहीर हैं जो

करीब पौने चार लाख की संख्या में हैं। इसके बाद गिनती में क्रम से भूमिहार ब्राह्मण, भुइयाँ, कोयरी, दुसाध, राजपूत, कहार और चमार लोग हैं जो एक लाख से अधिक हैं। जोलाहा, ब्राह्मण, मुसहर, तेली, पासी और रजवार भी पचास हजार से अधिक की संख्या में हैं। और जातियों की संख्या कम है।

दक्षिण विहार में मुसलमानों की सबसे अधिक संख्या गया जिले में ही है। जिले के उत्तर पश्चिम भाग में बहुत दिनों तक मुसलमानों का दबदबा था। जगह-जगह बहुत से मुसलमान जमींदार थे। यहाँ औरंगजेब के एक सेनापति दाऊद खाँ का अधिकार था जिसने दाऊद-नगर को बसाया। कहते हैं कि औरंगजेब के समय में इस भाग के बहुत से हिन्दू मुसलमान बनाये गये थे। बहुत से ऐसे गाँव हैं जहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक है। कहा जाता है कि इनमें कुछ गाँवों के लोग शुरू में भूमिहार-ब्राह्मण या कायस्थ थे। जिले के अधिकांश मुसलमान सुन्नी हैं। सीया लोगों की संखया बहुत कम है।

जिले में इस समय तीन ईसाई मिशनरी सोसाइटियाँ काम कर रही हैं। पहली सोसाइटी का काम १८८२ ई० में शुरू हुआ था। दूसरी सोसाइटी सन् १८९१ और तीसरी सोसाइटी सन् १९०३ में कायम हुई थी। ऊपर जो ईसाइयों की संख्या ५७६ दी गयी है, उसमें ६५ यूरोपियन आदि, ३०५ एंग्लो इंडियन और २०६ भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

गया जिले का रकबा ३०,३८,६५० एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १४,९०,३०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ५,२९,४७४ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी

उस साल परती पड़ी थी। ४,२७,०३० एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर बेकार पड़ी रहती है। ५,९१,८४६ एकड़ जमीन पहाड़ और नदी आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ६७ भाग जमीन जोत के अन्दर है लेकिन इसका एक चौथाई भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े १४ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता बोया नहीं जाता और सैकड़े १९ भाग तो खेती के काम के लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े २५ भाग में दो फसल होती है।

मोटे तौर पर जिले भर की जमीन दो भागों में बाँटी जा सकती है। उत्तरीय भाग की जमीन, जो जिले का दो तिहाई भाग है, समतल होने के कारण अच्छी उपजाऊ है और वहाँ सिचाई का भी प्रबन्ध है। दक्षिण भाग की जमीन जंगलों और पहाड़ों से भरी है और यहाँ खेती बहुत कम होती है। पहाड़ों से बालू आते रहने के कारण जमीन में बालू का अंश अधिक हो गया है। अधिक विस्तार से विचार करने पर उपज के ख्याल से जमीन चार भागों में बाँटी जा सकती है। पहले भाग में जहानाबाद सब-डिविजन और औरंगाबाद सब-डिविजन का पश्चिमी हिस्सा है, जो बहुत ही उपजाऊ है। इस भाग का उत्तरीय हिस्सा मोरहर और मोहाना नदी के पैनों से और पश्चिमी हिस्सा सोन की नहरों से सींचा जाता है। दूसरा भाग साधारण तौर पर उपजाऊ है। इस भाग में गया, टेकारी, अतरी और नबी नगर थाने हैं। यहाँ भी नदियों से सिंचाई का पूरा प्रबन्ध है। तीसरा भाग कम उपजाऊ है। इसके अन्दर सारा नवादा सब-डिविजन, औरंगाबाद थाना और दाऊदनगर

थाना का एक हिस्सा है। चौथा भाग बहुत ही कम उपजाऊ है। यह जंगलों से भरा है। इसके अन्दर शेरघाटी और बाराचट्टी थाने हैं।

जिले में फसल तीन तरह की होती है—अगहनी, भदई और रब्बी। सबसे अधिक हिस्से में रब्बी और उसके बाद अगहनी फसल होती है। भदई फसल बहुत कम जमीन में होती है। जिले में धान की खेती सबसे अधिक होती है। अगहनी धान ज्यादा होता है और भदई धान कम। भदई फसल में धान के अलावे मरुआ, मकई, कोदो, तिल आदि हैं। रब्बी फसल में यहाँ सबसे अधिक बूट और उसके बाद गेहूँ होता है। तब जौ, मटर, अरहर, कुलथी, मसुर, खेसारी, तीसी आदि का स्थान आता है।

करीब पचास वर्ष पहले जहानाबाद और नवादाबाद सब-डिविजन में तथा दाऊदनगर के पास रूई की खेती बहुत होती थी। जहानाबाद और दाऊदनगर में कपड़े के कारखाने थे जहाँ उनको खपत होती थी। पहले यहाँ नील की भी कुछ खेती होती थी पर अब वह बन्द हो गयी है। इधर कुछ वर्षों से जहाँ-तहाँ चीनी के कारखाने खुल जाने के कारण ऊख की खेती बहुत बढ़ गयी है। गया, नवादा और सिरीस में सरकारी कृषि फार्म हैं।

इस जिले में कुल जोती-बोयी जानेवाली जमीन के सैकड़े ४७½ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है। सिंचाई पैन, आहर, नहर और कूओं द्वारा होती है। नदियों से निकाली गयी पतली कृत्रिम नहर को पैन कहते हैं जो दस-बीस मील तक भी लम्बी होती है। वर्षा के कारण जब पहाड़ी नदियाँ उमड़ पड़ती हैं तो उनका पानी इन पैनों में आता है। छोटी-छोटी धाराओं को तीन ओर बाँधकर जो पानी जमा किया जाता है उसे आहर कहते हैं। जिले का उत्तर-पश्चिम हिस्सा सोन नदी की नहरों से सींचा

जाता है। नहर का प्रबन्ध सरकार के हाथ में है और रैयतों को पानी के लिये टैक्स देना पड़ता है। बस्ती के आसपास की जमीन, जिसमें शाक-तरकारी बोयी जाती है, कूंओं से सींची जाती है। सिचाई का आधा काम आहरों से, एक तिहाई काम पैनों से, आठवाँ हिस्सा काम कूंओं से और बाकी काम नहरों से होता है।

पेशा, उद्योग-धंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार गया जिले के अन्दर हजार आदमियों में ४४३ आदमी काम करनेवाले और ५५७ आदमी उनके आश्रित स्त्री-बच्चे हैं। काम करनेवाले ४४३ आदमियों में २८८ आदमी कृषि और पशुपालन में, ३९ उद्योग-धंधा में, १६ व्यापार में, ६ पंडा-पुरोहित, वकील-मुख्तार, डाक्टर-वैद्य, शिक्षक-लेखक, गायक और कलाकार आदि के पेशे में, ३ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सवारी आदि के कामों में तथा ९१ दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि काम करनेवालों में फी सैकड़े ६५ आदमी खेती के काम में लगे हैं। यहाँ के उद्योग-धंधों में लाह, गुड़, पीतल, कपड़ा, तम्बाकू तथा खान सम्बन्धी कार्य मुख्य हैं।

लाह—इमामगंज और डुमरिया थाने के अन्दर तथा दाऊद-नगर में लाह का व्यवसाय खूब होता है। भुइयाँ तथा अन्य-जातियों के लोग इसकी खेती करते हैं। वे पेड़ों का बन्दोबस्त लेकर उन पर कीड़े पालते हैं। कीड़े अधिकतर पलास पर और कभी-कभी पीपल पर भी पाले जाते हैं। लाह तैयार करने में कीड़ों

को ६ महीने लगते हैं, इसलिये साल में दो बार नवम्बर और मई में लाह तैयार होती है। पेड़ की डंटियों से लाह निकाल कर फिर कई क्रियाओं द्वारा उसे तैयार करते हैं। जिले के अन्दर लाह के कई कारखाने हैं।

गुड़—ऊख की खेती इस जिले में बहुत होने लगी है, इससे गुड़ भी बहुत बनने लगा है। यहाँ से कई लाख मन गुड़ बाहर जाता है।

पीतल—गया शहर में पीतल के बर्तन मारूफगंज, गयावाल-बीघा और बुनियादगंज में तथा गाँवों के अन्दर केनार, हसुआ, कौवाकोल, दाऊदनगर और नबीनगर में बनते हैं। गया में हिन्दू देवी-देवताओं की पीतल की मूर्तियाँ बनती हैं।

कपड़ा—सौ सवा सौ वर्ष पहले यहाँ कपड़े का कारबार खूब था। जुलाहों के अपने-अपने कारखाने थे ही, ईस्ट इंडिया कम्पनी की भी कई बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ थीं। विलायती कपड़ों के आने लगने से इस कारबार को बहुत धक्का पहुँचा है और अब बहुत थोड़े जुलाहे जहाँ-तहाँ इस काम में लगे हुए हैं। कुटुम्बा थाने के अन्दर अम्बा और चिल्की कम्बल बनाने के लिये प्रसिद्ध हैं। दरी और क़ालीन के लिये ओबरा, कोरैपुर और दाऊदनगर मशहूर हैं। तसर के कपड़े मानपुर, बुनियादगंज, चाककंद, कादीरगंज, अकबरपुर, दाऊदनगर तथा गया के गयावाल-बीघा महल्ले में तैयार किये जाते हैं।

पत्थर का काम—इस जिले में पत्थर की तश्तरी, कटोरी, मूर्ति वगैरह बहुत सी चीजें बनती हैं। गया से १९ मील दूर पत्थलकट्टी नामक स्थान में यह काम अधिक होता है। वहाँ से कुछ दूर पर धनमहुआ और सपनेरी नामक स्थानों में तथा गया के मंगलागौरी पहाड़ के पास भी यह काम होता है। इसके

कारीगरों का कहना है कि उनके पूर्वज जयपुर से विष्णुपद का मंदिर बनाने आये थे और पीछे यहीं बस गये थे। पहाड़ों से पत्थर काटकर सड़क और मकान बनाने के काम में भी लाये जाते हैं।

तम्बाकू—गया का पीनी तम्बाकू बहुत प्रसिद्ध है। जिले में गया, गुरुआ और पैबीघा ये तीन स्थान इसके लिये खास तौर से मशहूर हैं। यहाँ से मसालेदार कीमती तम्बाकू बाहर भेजे जाते हैं। तम्बाकू का पत्ता अधिकतर तिरहूत से आता है।

खान—जिले के दक्षिण-पूरब कोने में सिंगर, सपही, बसौनी, बेलम, चटकारी और दूबौर नामक स्थानों में अबरक की खानें हैं। पहले अबरक बहुत कम निकाला जाता था। १८९१ ई० में प्रान्त भर में ८७ हजार रुपये के अबरक निकाले गये थे पर १९०४–०५ ई० में सिर्फ गया जिले में करीब १½ लाख रुपये का अबरक निकाला गया। अबरक यहाँ से यूरोप और अमेरिका भेजा जाता है।

नवादा सब-डिविजन के पचम्बा और गया सब-डिविजन के लोधवे नामक स्थान में कच्चा लोहा पाया जाता है। बराबर पहाड़ी में भी कच्चा लोहा मिलता है। जहानाबाद सब-डिविजन में शोरा नमक बनता है।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ में जिले के अन्दर सिर्फ ९ ऐसी फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी-एक्ट लागू था। इनमें १ चीनी फैक्टरी, १ शराब फैक्टरी, १ प्रेस, १ रेलवे कारखाना, १ इंजि-नियरिंग का कारखाना और ४ चावल, दाल, आटा तथा तेल की मिलें थीं।

व्यापार—जिले से बाहर जानेवाली चीजों में अनाज, गुड, अफीम, महुआ, शोरा, अबरक, लाह, कम्बल, दरी, पत्थर,

पीतल के बर्तन, चमड़ा और पीनी तम्बाकू हैं। बाहर से आने-वाली चीजों में नमक, कोयला, कपड़ा, किरासन तेल, कागज तथा आधुनिक आवश्यकता की तरह-तरह की छोटी-मोटी चीजें हैं। जिले के अन्दर गया, टेकारी, गुरुआ, रानीगंज, इमामगंज, रजौली, अकबरपुर, जहानाबाद, अरबल, दाऊदनगर, देव, महाराजगंज, खिरियावाँ, रफीगंज और जम्हौर व्यापार के मुख्य केन्द्र हैं। रफीगंज, देवकुंड और सलेमपुर में मेले लगते हैं जहाँ मवेशियों की भी बिक्री होती है।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—गया कई लाइनों का जंकशन है। एक लाइन उत्तर की ओर पटना से आयी है जो पटना-गया लाइन कहलाती है। गया जिले के अन्दर यह लाइन ३४½ मील की दूरी में है और इस पर गया को छोड़ ६ रेलवे स्टेशन हैं—जहानाबाद, इरकी, तेहटा, मकदुमपुर, बेला और चाकंद। ई० आई० आर० की ग्रैण्ड-कॉर्ड लाइन कलकत्ते से आकर दक्षिण-पूरब की ओर इस जिले में प्रवेश करती है और गया पहुँच कर पश्चिम की ओर चलती हुई मोगलसराय में मुख्य लाइन से मिल जाती है। यह लाइन जिले में ८५ मील तक दौड़ती है। इस लाइन पर जिले के अन्दर गुरपा, पहाड़पुर, तनकुप्पा, बन्धुआ, मानपुर, गया, कस्था, परैया, गुरारू, इस्माइलपुर, रफीगंज, जखीम, फेसार, पालमर-गंज और सोन-ईस्ट-बैंक रेलवे स्टेशन हैं। पूरब में साउथ-बिहार-रेलवे गया से नवादा सब-डिविजन होकर लक्खी सराय तक जाती है। यह लाइन जिले में ५८ मील की दूरी में है और इस पर छोटे बड़े २३ रेलवे स्टेशन हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—काशीचक, गोसपुर, वारसली-गंज, लीलाबीघा,

बाघी बरडीह, पौरा, आँटी, नवादा, जलालबीघा, चटार, गारोबीघा, मौआ, तिलैया, वैजनाथपुर, मोझवे, जमुआवन, अरहवन, वजीरगंज, कोलहना, करजारा, पैमर, मानपुर और गया। जिले के दक्षिण-पश्चिम की ओर बरकाकाना-लूप-लाइन आयी है जो जिले के अन्दर २३$\frac{1}{4}$ मील दौड़ती है। इस लाइन पर यहाँ नवीनगर, चैनपुर, अनकोरहा और सोन-ईस्ट-बैंक रेलवे स्टेशन हैं।

सड़कें—जिले में कची पक्की सड़कें बहुत हैं जिनका प्रबन्ध डिस्ट्रिक्टबोर्ड और पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के हाथ में है। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के प्रबन्ध में सन् १९३५-३६ में २९१ मील पक्की सड़कें और ८२३ मील कच्ची सड़कें थीं। इनके अलावे छोटी-छोटी देहाती सड़कें ५८४ मीलों में फैली हुई थीं। पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के हाथ में ६७ मील पक्की सड़कें और १६८ मील कच्ची सड़कें हैं। इन सड़कों में सबसे मुख्य ग्रैंड-ट्रंक-रोड है जो जिले के दक्षिण भाग में ६५ मील तक गया है। हजारीबाग जिला होकर यह भलुआ के पास गया में प्रवेश करता है और बारूण के पास इस जिले को छोड़ता है। यह रास्ते में मोहान, मोरहर, बाताने और पुनपुन नदी को पार करता है। इसके किनारे बाराचट्टी, शेरघाटी, औरंगाबाद व्यापारके केन्द्र हैं। दूसरी मुख्य सड़कें वे हैं जो गया से भिन्न-भिन्न स्थानों को गयी हैं; जैसे डोभी के पास ग्रैंडट्रंक रोड से मिलनेवाली सड़क तथा दाऊदनगर और शेरघाटी जानेवाली सड़कें। रेलवे लाइन के खुल जाने से गया से औरंगाबाद, जहानाबाद और नवादा जानेवाली सड़कों का महत्व घट गया है। जहानाबाद से अरवल, रजौली से नवादा और नवादा से खरहाट होकर विहार-शरीफ जानेवाली सड़कें भी बहुत चालू रहती हैं।

जलमार्ग—इस जिले में सोन के सिवा कोई दूसरी नदी ऐसी नहीं है जिसमें नावें बराबर चल सकें। सोन में भी बड़ी-बड़ी नावें नहीं चल सकती हैं। बरसात के दिनों में नदी का वेग बहुत ही तेज रहने के कारण और सूखे दिनों में पानी कम रहने के कारण नावों के चलने में कठिनाई रहती है।

शिक्षा

अंगरेजी सरकार ने पहले पहल १८४५ ई० में गया जिले में एक स्कूल खोला था। दस वर्षों तक फिर कोई दूसरा स्कूल नहीं खुला। १८५५-५६ ई० में १५ वर्नाकुलर स्कूल खोले गये। १८७१ ई० तक भी जिले के अन्दर कुल २८ सरकारी स्कूल खुल सके। दूसरे साल जब सर जार्ज कैम्पवेल की शिक्षा-योजना काम में लायो गयी तो बहुत सी खानगी पाठशालाओं को थोड़ी बहुत सरकारी सहायता दी जाने लगी। इस तरह १८८४-८५ ई० में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल १,७२९ हुए। लेकिन दस वर्ष के बाद इनकी संख्या घटकर १,०१९ रह गयी, क्योंकि जिन स्कूलों में लड़कों की उपस्थिति १० से कम थी उनकी सहायता बन्द कर दो गयी थी। सहायता देने में कड़ाई रखने के कारण कुछ वर्षों तक स्कूलों की संख्या घटती गयी सही, लेकिन लड़कों की संख्या बराबर बढ़ती ही रही।

सन् १९०४-०५ में जिले के अन्दर प्राइमरी स्कूलों की संख्या ९६६ थी, जिनमें ३०,५३६ लड़के पढ़ते थे। सन् १९३५-३६ में आकर यहाँ १,७४१ प्राइमरी स्कूल हुए जिनमें पढ़नेवाले लड़के-लड़कियों की संख्या ५१,९१९ हुई।

जिले में सन १९०४-०५ में सिर्फ ९ मिड्ल इंगलिश और ७

मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल थे, जिनमें पढ़नेवाले लड़कों की संख्या ८९५ थी। सन् १९३७-३८ में आकर यहाँ मिड्ल इंगलिश स्कूल ४२ हो गये हैं। मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूलों की संख्या केवल २ है, क्योंकि मिड्ल वर्नाक्युलर की अपेक्षा मिड्ल इंगलिश स्कूल को लोग अधिक पसन्द करते हैं।

१९०४-०५ में जिले के अन्दर सिर्फ ४ हाई स्कूल थे, लेकिन इस समय १३ हाई स्कूल हैं। इनमें ६ हाई स्कूल गया शहर में और बाकी जहानाबाद, औरंगाबाद, नवादा, बेलागंज, टेकारी, शेरघाटी और दाऊदनगर में हैं। गया शहर के स्कूलों के नाम इस प्रकार हैं—जिला स्कूल, हरिदास सेमिनरी, मॉडेल स्कूल, हरणचन्द्र हाई इंगलिश स्कूल, हादी हाशमी हाई इंगलिश स्कूल और कन्या स्कूल।

जिले के अन्दर कोई कालेज नहीं है। कालेज में पढ़ने के लिये लड़के प्रायः पटना जाया करते हैं।

गया जिले में स्त्री शिक्षा का प्रबन्ध प्रान्त के बहुत से जिलों से अच्छा है। यहाँ गया में लड़कियों के लिये एक हाई इंगलिश स्कूल और नवादा तथा औरंगाबाद में एक-एक मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल हैं। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर स्कूलों में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ८,०५४ थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या १,१२,०७५ और स्त्रियों की संख्या ८,०२९ है। इसमें अंगरेजी पढ़े लिखे पुरुष ६,४०८ और स्त्रियाँ ३३९ हैं। फी सैकड़े का हिसाब लगाने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ५ होती है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ७१,१९४ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जन-संख्या के सैकड़े करीब ३ होते हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—गया पटना कमिश्नरी का एक जिला है जिसका सदर आफिस गया है। जिला का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। जिले के सदर दफ्तर में कलक्टर की सहायता के लिये डिपटी कलक्टर और असिस्टेन्ट कलक्टर होते हैं। शासन की सुविधा के लिये यह जिला चार सब-डिविजनों में बँटा है—गया, औरंगाबाद, जहानाबाद और नवादा। नवादा सब-डिविजन १८४५ ई० में, औरंगाबाद सब-डिविजन १८६५ ई० में और जहानाबाद सब-डिविजन १८७२ ई० में कायम हुए थे। शेरघाटी सब-डिविजन को तोड़कर जहानाबाद सब-डिविजन कायम किया गया था। सब-डिविजन का सबसे बड़ा अफसर सब-डिविजनल अफसर या एस० डी० ओ० कहलाता है। एक-एक सब-डिविजन कई थानों में बँटा रहता है। किस सब-सबडिविजन में कौन-कौन थाने हैं यह सब-डिविजनों के वर्णन में मिलेगा।

न्याय—दीवानी मुकदमों को देखने के लिये जिला जज, कई सब-जज और मुंसिफ होते हैं। इसी तरह फौजदारी मुकदमों को देखने के लिये जिला और सेशन जज, जिला-मजिस्ट्रेट तथा कई डिपटी और सब-डिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं। अधिकार के हिसाब से डिपटी मजिस्ट्रेटों के तीन भेद होते हैं—फर्स्ट क्लास, सेकेन्ड क्लास और थर्ड क्लास। सिंचाई विभाग के मुकदमों को सुनने के लिये एक खास मजिस्ट्रेट होता है। सभी सब-डिविजनों के मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट होते हैं। इनकी सहायता के लिये सब-डिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं। गया, औरंगाबाद, जहानाबाद, नवादा, दाऊदनगर और टेकारी में आनरेरी मजिस्ट्रेटों के दफ्तर हैं।

पुलिस—जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। पुलिस के काम के लिये जिला ३६ भागों में बँटा है जो थाना कहलाता है। हरेक थाने का सबसे बड़ा अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है। इसे दारोगा भी कहते हैं। वहाँ हेड कानिस्टबिल और कई कानिस्टबिल रहते हैं। एक या दो गाँवों पर एक चौकीदार और कई चौकीदारों पर एक दफेदार रहता है। जिले के अन्दर सन् १९३६ में, १ सुपरिन्टेन्डेन्ट, ७ इन्सपेक्टर, ६१ सब-इन्सपेक्टर, ५५ असिस्टेन्ट-सब-इन्सपेक्टर, १ सर्जेन्ट मेजर, १ सर्जेन्ट, ३४ हवलदार, ६८७ कानिस्टबिल और ४,२४५ चौकीदार थे।

जेल—गया में सेन्ट्रल जेल है जहाँ ५४२ कैदी रह सकते हैं। सब-डिविजनों के मुख्य स्थान में छोटे जेल हैं जहाँ दो हफ्ते या उससे कम की सजा पाये कैदी रह सकते हैं। जेलों में कैदियों से तेल पेरने, पत्थल तोड़ने, रस्सी बाँटने, टोकरी-चटाई आदि बुनने और दरी-नेवार वगैरह तैयार करने का काम लिया जाता है।

रजिस्ट्री-आफिस—जिले में जमीन की खरीद-बिक्री की रजिष्ट्री आदि के लिये सन् १९३६ में गया, औरंगाबाद, जहानाबाद, नवादा, शेरघाटी और टेकारी में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—इस जिले में जिला-बोर्ड की स्थापना १८८७ ई० में हुई थी। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल वगैरह बनवाना; प्रायमरी और मिडूल स्कूलों का प्रबन्ध करना; तालाब, कूआँ वगैरह खुदवाना तथा घाट, अस्पताल और फाटक का इन्तजाम करना बोर्ड का काम है। गया जिला-बोर्ड के ४० मेम्बर होते हैं, जिनमें ३० निर्वाचित, ७ नामजद किये और ३ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं। बोर्ड का आमद-खर्च करीब २०-२१ लाख रुपया है। प्रत्येक सब-डिविजन में एक-एक लोकल-बोर्ड

है जो अपने-अपने इलाके में डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड द्वारा निश्चित किये हुए छोटे-मोटे कार्य करते हैं। गया लोकल-बोर्ड में ११ चुने हुए और ३ नामजद किये, नवादा बोर्ड में ६ चुने हुए और २ नामजद किये, जहानाबाद बोर्ड में ६ चुने हुए और २ नामजद किये तथा औरंगाबाद में ७ चुने हुए और ३ नामजद किये मेम्बर हैं। जहानाबाद, नवादा, शेरघाटी, औरंगाबाद और रफोगंज में युनियन कमिटियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—गाँवों के अन्दर जो काम डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के होते हैं शहरों के अन्दर प्रायः वे ही काम म्युनिसिपैलिटियों के रहते हैं। गया में १८६५ ई० में म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। टेकारी और दाऊदनगर की म्युनिसिपैलिटियाँ १८८५ ई० में बनी थीं। गया म्युनिसिपैलिटी के २६ तथा टिकारी और दाऊद-नगर म्युनिसिपैलिटियों के १५–१५ मेम्बर होते है।

गया (सदर) सब-डिविजन

गया सब-डिविजन, २४°१७′ और २५°५′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°१७′ और ८५°२४′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १८७७ वर्ग मील और जन-संख्या ८,९१,३९३ है। इस सब-डिविजन में गया और टेकारी ये २ शहर तथा २५१४ गाँव हैं। इस इलाके में १५ थाने हैं—गया-शहर, गया-मुफस्सिल, बोध-गया, वजीरगंज, परैया, अतरी, खिजरसराय, टेकारी, बेलागंज, बाराचट्टी, फतहपुर, शेरघाटी, गुरुआ, इमामगंज डुमरिया। इस सब-डिविजन के अन्दर गया, दखनेर, महेर, पहरा, सनौत, अतरी, शेरघाटी और काबर ये आठ परगने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

गया—जिले का मुख्य शहर गया फल्गू नदी के किनारे

२४°४९' उत्तरीय अक्षांश और ८५°१' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार गया-शहर या गया-शहर थाना की जन-संख्या ८८,००५ है, जिसमें ६६,४६२ हिन्दू, २०,५९६ मुसलमान, ५०८ ईसाई, ३७५ जैन, ४४ सिक्ख, १२ आदिम जाति तथा ८ अन्य जाति के लोग हैं। गया मुफस्सल थाने की जन-संख्या ५७,०१७ है जिसमें ५०,३८० हिन्दू, ६,६१४ मुसलमान, १६ ईसाई और ७ अन्य जाति के लोग हैं।

शहर के उत्तर में मुरली और रामशिला पहाड़ी, दक्षिण में ब्रह्मयोनि पहाड़ी, पूरब में फल्गू नदी तथा पश्चिम में खुला मैदान और कतारी पहाड़ी हैं। शहर दो भागों में बँटा है—पुराना शहर और नया शहर। नया शहर साहबगंज नाम से प्रसिद्ध है। पुराना शहर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। भारत के भिन्न-भिन्न भागों से हिन्दू लोग यहाँ पितरों को पिंड देने के लिये आते हैं। साहबगंज में अंगरेजों का निवास-स्थान और सरकारी कचहरियाँ हैं। व्यापार का केन्द्र भी यही स्थान है, गया के मंदिरों में विष्णुपद का मंदिर सबसे प्रधान है। इसे अठारहवीं सदी में इन्दौर की महारानी अहल्याबाई ने बनवाया था। इस मंदिर में विष्णु के पद का चिन्ह है। दूसरा मुख्य मंदिर गदाधर नामधारी विष्णु भगवान का है। गयासुरी देवी का मंदिर भी प्रसिद्ध है, जहाँ महिष-मर्दिनी अष्टभुजी दुर्गा की मूर्ति है। इनके अलावे सूर्य्यदेव का मंदिर, प्रपितामहेश्वर का मंदिर और कृष्ण-द्वारका के मन्दिर भी मुख्य हैं। कुछ और भी छोटे-छोटे मंदिर हैं, जिनमें पाल-राजाओं (८००-१२०० ई०) के समय की मूर्तियाँ हैं। एक मंदिर में वृक्ष से फूल या फल तोड़ते हुए हाथी की एक मूर्ति है जो लगभग दो हजार वर्ष की समझी जाती है।
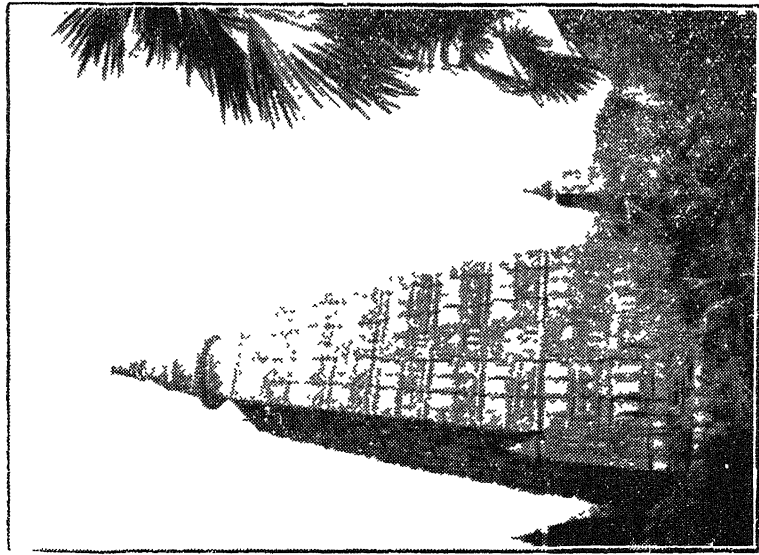
बोधगया का मंदिर, गया

लोमश ऋषि का गुफा, बराबर पहाड़ी (गया)
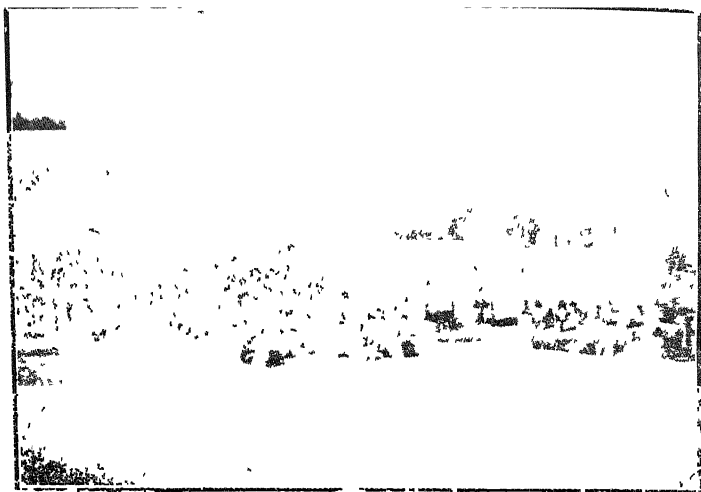
गया मे पिंडदान का एक दृश्य

गयाशिर—ब्रह्मयोनि पर्वत, गया

गया के आसपास को पहाड़ियों को भी हिन्दू लोग पवित्र दृष्टि से देखते हैं। उन पर कई मंदिर बने हुए हैं। इन पहाड़ियों में गया के दक्षिण का ब्रह्मयोनि पहाड़ सबसे ऊँचा है। इसकी ऊँचाई ४५० फोट है। पहाड़ के ऊपर एक गुफा है जिसे लोग ब्रह्मयोनि कहते हैं। सनातनी हिन्दुओं का कहना है कि जो इसके अन्दर प्रवेश करता है वह पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। पहाड़ी पर ब्रह्म की एक मूर्ति भी है जो १६३३ ई० की समझी जाती है। शहर से उत्तर एक रामशिला पहाड़ी है जहाँ एक मंदिर में शिवलिंग है, जिसे लोग पातालेश्वर महादेव कहते हैं। मंदिर के नीचे का भाग १०१४ ई० का बना है।

गया में यात्री-अस्पताल के सामने १६ फीट ऊँचा एक स्तंभ है, जो यहाँ १७८९ ई० में बकरौर नामक स्थान से लाया गया था। यह वहाँ अशोक स्तम्भ का ऊपरी हिस्सा था।

गया में दो नामी पुस्तकालय हैं—एक तो हैलीडे लाइब्ररी और दूसरा मन्नुलाल लाईब्रेरी। हैलीडे लाइब्रेरी सन् १८५७ में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के नाम पर उनके यहाँ आने की यादगारी में कायम हुई थी। मन्नुलाल लाईब्रेरी हिन्दी की अच्छी लाईब्रेरो है जिसकी स्थापना १९११ ई० में हुई थी।

अतरी—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ५९,२५९ है, जिसमें ५३,७६५ हिन्दू और ५,४९४ मुसलमान हैं।

इमामगंज—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ५४,४४९ है जिसमें ४६,९२१ हिन्दू, ७,५१३ मुसलमान, ४ ईसाई और ११ अन्य जाति के लोग हैं।

कुरकीहार—वजीरगंज स्टेशन से यह तीन मील की दूरी पर है। पुराने समय में यह एक प्रसिद्ध स्थान था। यहाँ पुराना खंडहर और तरह-तरह की मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं। इसके

पास पुनावाँ नामक गाँव में भी बौद्धकालीन भग्नावशेष पाये जाते हैं।

कोंच—यह स्थान टेकारी से ४ मील की दूरी पर है। यहाँ कोंचेश्वर महादेव का मंदिर है जो सातवीं सदी का बना समझा जाता है। मंदिर में विष्णु के दशावतारों की मूर्तियाँ हैं। गाँव में और भी कई पुराने मंदिर हैं।

कौवाडोल पहाड़ी—यह जिले के उत्तरी हिस्से में बेला रेलवे स्टेशन से ६ मील और बराबर पहाड़ी से एक मील की दूरी पर है। इसकी ऊँचाई ५०० फीट है। यहाँ शीलभद्र का प्रसिद्ध बौद्धमठ था। शीलभद्र बंगाल के एक राजघराने का व्यक्ति था। सातवीं सदी में य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसेन) इस स्थान को देखने आया था। मठ का भग्नावशेष अब भी मौजूद है और यहाँ बुद्ध की ८ फीट की एक मूर्ति है। इसके अलावे यहाँ कई हिन्दू मूर्तियाँ भी हैं।

खिजरसराय—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ४१,६२६ है जिसमें ३७,७६७ हिन्दू, ३,८५७ मुसलमान और २ अन्य जाति के लोग हैं।

गुरपा पहाड़ी—यह गुरपा रेलवे स्टेशन से एक मील की दूरी पर है। इसकी तीन चोटियाँ हैं। सबसे ऊँची चोटी १००० फीट ऊँची है। इसका पुराना नाम गुरुपाद गिरि था। कुछ लोग कहते हैं कि यही कुक्कुटपाद गिरि है जहाँ बुद्ध के शिष्य काश्यप ने समाधि ग्रहण किया था।

गुरुआ—यह एक थाना है जहाँ की जन-संख्या ३६,०१० है, जिसमें ३१,३८२ हिन्दू और ४,६२८ मुसलमान हैं।

जेठियन—यह एक गाँव है। यह वही स्थान है जो बौद्ध साहित्य में यष्टिवन नाम से प्रसिद्ध है। चीनी यात्री फाहियान

यहाँ आया था। उसने लिखा है कि यहाँ बाँस का जंगल था। भगवान बुद्ध यहाँ सात दिनों तक रह कर उपदेश देते रहे। अशोक ने यहाँ पर एक स्तूप बनवाया था। यहाँ से कुछ दूर दक्षिण-पूरब की ओर भी एक स्तूप था जहाँ पहले बुद्धदेव ने बरसात में तीन मास तक रहकर उपदेश दिया था। राजा बिम्बिसार यहाँ बुद्ध भगवान के दर्शन के लिये आया था। इसके आस-पास गर्म जल के कई झरने हैं। भलुआही पहाड़ी के पास व्यास नामक बौद्ध संन्यासी का स्थान बताया जाता है। चण्डू पहाड़ी पर राजपिंड नाम की एक बड़ी गुफा है। उसे लोग असुरों का राजभवन बताते हैं।

टेकारी—गया से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यह एक छोटा शहर है जहाँ म्युनिसिपैलिटी का भी प्रबन्ध है। यहाँ टेकारी के राजा का किला है, जिसे इस राजवंश के संस्थापक राजा सुन्दरसिंह ने १८ वीं सदी में बनवाया था। टेकारी-राज के कारण ही इस स्थान की प्रसिद्धि है। यह राजघराना प्रतिष्ठित है, इस घराने के लोग भूमिहार ब्राह्मण हैं। टेकारी में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,२१,२५४ है, जिसमें १,१०,९८० हिन्दू, १०,२५७ मुसलमान और १७ अन्य जाति के लोग हैं।

डुमरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २५,५०७ है, जिसमें २२,०८४ हिन्दू और ३,४२३ मुसलमान हैं।

नागार्जुनी पहाड़ी—दे० "बराबर पहाड़ी"।

परैया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४५,१२० है, जिसमें ४०,७६८ हिन्दू, ४,३४९ मुसलमान और ३ अन्य जाति के लोग हैं।

प्राग्बोधि पहाड़ी—बोधगया के सामने फलगू नदी के पूर्वी किनारे पर मोरा झील से लेकर गंजास गाँव तक एक पर्वत-माला है जिसे लोग मोरा या गंजास पहाड़ी के नाम से जानते हैं, पर इसके बीच का हिस्सा डोंगरा पहाड़ी कहलाता हैं। कहते हैं कि यह पर्वतमाला वह प्राग्बोधि पहाड़ी है जहाँ बुद्धत्व प्राप्त करने के ठीक पहले बुद्ध भगवान् गये थे। बौद्ध ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में एक कहानी है। लिखा है कि जब भगवान बुद्ध यहाँ ठहरे हुए थे तो एक दिन अचानक पहाड़ी हिल उठी और अकाश-वाणी हुई कि हे गौतम यह स्थान तुम्हारे ज्ञान प्राप्त करने के उपयुक्त नहीं है; यहाँ से थोड़ी दूरी पर जाओ, वहाँ तुम्हें ज्ञान प्राप्त होगा। यहाँ अशोक के बनवाये सात स्तूपों के चिह्न देखने में आते हैं। एक गुफा में अष्टभुजी दुर्गा की मूर्त्ति है, जिस पर ९ वीं या १०वीं शताब्दी का शिलालेख है। गुफा के पास कुछ पुराने मकानों के चिह्न हैं।

प्रेतशिला—गया से ५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यह एक पहाड़ी है जिसकी ऊँचाई ५४० फीट है। यहाँ यमराज का एक मंदिर है जहाँ हिन्दू लोग पिंड-दान करते हैं। मंदिर के सामने एक कुंड है जो रामकुंड कहलाता है। पहाड़ी के नीचे भी तीन कुंड हैं।

फतहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५४,८३८ है, जिसमें ५०,१८२ हिन्दू, ४,६५१ मुसल-मान और ५ ईसाई हैं।

बकरौर—बोधगया से आधे मील की दूरी पर नीलांजन और मोहान नदी के बीच यह एक गाँव है। गाँव के दक्षिण एक बड़े स्तूप का चिह्न है। यह अब भी २५ फीट की ऊँचाई और १५० फीट के घेरावे में रह गया है। इससे थोड़ी ही दूर पर

एक स्तम्भ का निचला हिस्सा है। इसीका ऊपरी हिस्सा १७८९ ई० में गया ले जाया गया था। कथा है कि बुद्ध भगवान किसी जन्म में हाथी का बच्चा हुए थे। वह बच्चा इसी स्थान पर जंगल में घूमा करता था और अपनी अंधी मा के लिये खाना बटोरता था। इसीको यादगारी में अशोक ने यहाँ स्तम्भ और स्तूप बनवाये। यहाँ पर एक तालाब है जो मातंगवापी कहलाता है। इसके किनारे मातंगेश्वर महादेव का मंदिर है। मातंग का अर्थ हाथी है। मालूम पड़ता है उपर्य्युक्त कथा के सम्बन्ध से ही मातंगवापी और मातंगेश्वर का निर्माण हुआ। यहाँ एक दूसरा हिन्दू मंदिर भी है जहाँ एक कुंड है। यहाँ हर साल मेला लगता है।

बराबर पहाड़ियाँ—सदर सब-डिविजन की उत्तरी सीमा पर पहाड़ियों का एक समूह है जो बराबर नाम से प्रसिद्ध है। इसकी सिद्धेश्वर चोटी पर सिद्धेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। पास के एक शिलालेख से यहाँ का शिवलिंग छठी-सातवीं सदी का बना मालूम पड़ता है। पहाड़ पर दो ऐसे कुंड हैं जिनका जल झरने के रूप में नीचे बहकर आता है, जहाँ यह पाताल-गंगा कहलाता है। यहाँ भादो के अनन्तचतुर्दशी के दिन मेला लगता है। बराबर पहाड़ियों में अशोक के बनवाये चार सुन्दर गुफाएँ हैं जो आज इन नामों से प्रसिद्ध हैं—कर्ण चौपर गुफा, सुदामा गुफा, लोमस ऋषि गुफा और विश्वझोपड़ी। विश्वझोपड़ी को लोग विश्वामित्र को गुफा बताते हैं। इन गुफाओं के पास अशोक के शिलालेख भी हैं।

सिद्धेश्वरनाथ चोटी से आधा मील पूरब नागार्जुनी पहाड़ियाँ हैं। कहते हैं कि यहाँ प्रसिद्ध बौद्ध संन्यासी नागार्जुन रहते थे। यहाँ तीन गुफाएँ हैं। सबसे बड़ा गुफा गोपीगुफा कहलाता

है। ये गुफा अशोक के पोते दशरथ के बनाये बताये जाते हैं। इन गुफाओं के पास भी शिलालेख हैं। इन पहाड़ियों में सब लगाकर सात गुफा होने के कारण लोग इन्हें सतघरवा भी कहते हैं। यहाँ पहले बौद्ध-विहार का होना भी बताया जाता है। कुछ पुराने भवनों के भग्नावशेष मिलते हैं। जहाँ-तहाँ मुसलमानों की कब्रें भी देखने में आती हैं।

बाराचट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ७६,६२० है, जिसमें ६९,३५० हिन्दू और ७,२७० मुसलमान हैं।

बिशुनपुर टँरवा—दे० "हसरा पहाड़ी"।

बेलागंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४५,०८६ है, जिसमें ३९,२१४ हिन्दू, ५,८५९ मुसलमान और १३ अन्य जाति के लोग हैं।

बोधगया—गया से थोड़ी ही दूर पर बौद्धों का यह सबसे पवित्र स्थान है। संसार के भिन्न-भिन्न देशों के बौद्ध यहाँ तीर्थ के लिये आते हैं। यहीं एक पीपल के पेड़ के नीचे बुद्धदेव ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। अशोक ने एक लाख स्वर्णमुद्रा खर्च कर यहाँ एक मठ बनवाया। अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ने यहाँ से बोधिवृक्ष को एक शाखा लंका में लगायी थी जो वहाँ अब भी कायम है। अशोक के बनवाये मठ के टूट जाने पर सीथियन राजाओं ने उसी स्थान पर दूसरा मठ बनवाया। वही मंदिर टूटते-फूटते और मरम्मत होते वर्तमान रूप में कायम है। ३३० ई० में लंका के राजा मेघवर्ण ने इस मठ के पास यात्रियों के रहने के लिये बहुत बड़ा भवन बनवाया था। ६०० ई० में बौद्धधर्म विरोधी बंगाल के राजा शशांक ने सबको तहस-नहस कर दिया और बोधिवृक्ष को भी जड़ से

उखाड़ फेंका। हर्षवर्द्धन ने फिर से बोधिवृक्ष लगाया और मठ भी बनवाये। चीनी यात्री फाहियान और य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ आया था। नवीं-दसवीं शताब्दी में पाल राजाओं के समय यहाँ की दशा फिर सुधरी। ग्यारहवी सदी में वर्मा के राजा ने यहाँ के मंदिर को मरम्मत कराया। बारहवीं सदी में मुसलमानों के आने पर यहाँ की दशा फिर खराब हुई। १८८४ ई० में अंगरेज सरकार ने २ लाख रुपया खर्च करके मंदिर की मरम्मत करायी। १८७६ ई० में बोधिवृक्ष आँधी से गिर गया था। जड़ से फिर दूसरा वृक्ष खड़ा हुआ जो इस समय कायम है। इस समय मंदिर हिन्दू महन्त के कब्जे में है। हिन्दू लोग बुद्ध को विष्णु के दशावतारों में गिनने लगे हैं। यहाँ की बुद्ध की मूर्त्ति को चंदन पहना दिया गया है और हिन्दू लोग भी इसे पूजते हैं। मंदिर के पास अशोक के स्तम्भ तथा बहुत से स्तूप के चिन्ह और मूर्त्तियाँ मौजूद हैं। यहाँ खोदाई करने पर और भी कई चीजें निकली हैं।

बोधगया में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४०,२५४ है, जिसमें ३६,८७८ हिन्दू, ३,३५७ मुसलमान और १९ दूसरी जाति के लोग हैं।

ब्रह्मयोनि—दे० "गया"।

माँद पहाड़ियाँ—सदर सब-डिविजन के दक्षिण-पश्चिम की ओर ग्रैंडट्रङ्क रोड पर पहाड़ियों का एक समूह है। खँडहरों से पता चलता है कि इसके पास पहले कोई बड़ा शहर था। चट्टानों में बौद्धों और शैवों के मठ के भग्नावशेष हैं। दो मील पूरब बुरहा नामक स्थान भी पुराना शहर मालूम पड़ता है। यहाँ गर्म जल के झरने और बौद्ध-विहार के चिन्ह हैं। इसी तरह गुनेरी नामक स्थान में भी बौद्ध-विहार का भग्नावशेष है। यहाँ बुद्ध

की एक बड़ी मूर्त्ति और कई छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ हैं। गुनेरी का पुराना नाम श्री गुणचरित था।

राम शिला—दे० "गया"।

वजीरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ पंच मंदिर नाम का शिवालय है, जहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है। वजीरगंज थाने की जन-संख्या ६३,०२६ है जिसमें ५८,६८९ हिन्दू, ४,३३३ मुसलमान और ४ दूसरी जाति के लोग हैं।

शेरघाटी—मोरहर नदी और ग्रैंडट्रङ्क रोड के किनारे यह पहले एक शहर था और रामगढ़ जिले में पड़ता था। १८७१ ई० तक यहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर रहा। यह सब-डिविजन तोड़ कर जहानाबाद सब-डिविजन कायम किया गया। यहाँ पहले बहुत से अंगरेजों का भी निवास स्थान था। सब-डिविजन टूट जाने पर शहर उजाड़ पड़ गया है। यहाँ एक पुराना किला है जो कोल राजाओं का समझा जाता है। शेरघाटी अब थाने का सदर आफिस रह गया है। इस थाने की जन-संख्या ८१,३२२ है जिसमें ७०,९१५ हिन्दू, १०,४०६ मुसलमान और १ ईसाई हैं।

हसरा पहाड़ी—यह पहाड़ी वजीरगंज रेलवे स्टेशन से ४ मील दक्षिण-पच्छिम की ओर है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पहाड़ी वह कुक्कुट पादगिरि है जहाँ बुद्ध के प्रधान शिष्य काश्यप की समाधि बतायी जाती है। बौद्धों की पहली महासभा काश्यप ने ही राजगिर में बुलायी थी। इस पहाड़ी के पास बौद्धमठों के बहुत से भग्नावशेष हैं। यहाँ एक स्तूप है जो अब भी २५ फीट ऊँचा है। यहाँ बहुत सी मूर्त्तियाँ भी हैं। एक मूर्त्ति पर दसवीं सदी का लेख है। हसरा कोल से दक्षिण हजार फीट ऊँची चोटी पर एक स्तूप का चिन्ह है जिसे चीनी यात्री ह्वनूच्वाङ् ने देखा था।

हसरा पहाड़ी से डेढ़ मील पच्छिम बिसुनपुर टँरवा नामक गाँव है जहाँ भैरव स्थान नामक मंदिर में दो सेवकों सहित बुद्ध की पाँच फीट की एक मूर्ति है। यह मूर्त्ति हसरा पहाड़ी में मिली थी। इस पर के लेख से मालूम पड़ता है कि यह नवीं-दसवीं सदी की बनायी हुई है।

औरंगाबाद सब-डिविजन

औरंगाबाद सब-डिविजन जिले का दक्षिण-पश्चिम भाग है। यह २४°२९' और २५°७' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°०' और ८४°४४' पूर्वीय देशान्तर के बीच में है। इसका क्षेत्रफल १,२७४ वर्ग मील और जन-संख्या ५,४५,८७१ है। इस सब-डिविजन में औरंगाबाद और दाऊदनगर दो शहर और १,७३४ गाँव हैं। इस इलाके में ९ थाने हैं—दाऊदनगर, गोह, नवीनगर, कुटुम्बा, औरंगाबाद, रफीगंज, ओबरा, मदनपुर और बारुण। इस सब-डिविजन के अन्दर चरकावाँ, मनोहर, सिरिस, अंछा, गोह, दावर और कुटुम्बा ये सात परगने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

औरंगाबाद—यह जम्हौर रेलवे-स्टेशन से ९ मील दूर ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे २४°४५' उत्तरीय अक्षांश और ८४°२३' पूर्वीय देशान्तर पर एक छोटा शहर है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,४२८ है। यहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर है। औरंगाबाद थाने की जन-संख्या ८९,४७४ है, जिसमें ७९,२३० हिन्दू, १०,२२७ मुसलमान और १७ ईसाई हैं।

ओबरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४७,७८९ है, जिसमें ४,२,९८४ हिन्दू, ४,८०५ मुसलमान हैं।

उमगा—इस गाँव का दूसरा नाम मूंगा भी है। यहाँ पहले

एक पहाड़ी किला था। देव के राजा के पूर्वज यहाँ १५० वर्षों तक राज्य करते रहे। इस समय इस स्थान की प्रसिद्धि का कारण है यहाँ की पहाड़ी पर का पत्थर का मंदिर, जो ६० फीट ऊँचा है। एक शिलालेख से यह मंदिर पन्द्रहवीं सदी का जान पड़ता है। मंदिर के दक्षिण एक तालाब है जिसके पास पुराने किले का चिन्ह अब भी मौजूद है। यहाँ और मंदिरों के भी चिन्ह हैं।

कुटुम्बा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४९,८६० है जिसमें ४५,१०४ हिन्दू, ४,७५५ मुसलमान और १ अन्य जाति के लोग हैं।

गोह—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५२,९५९ है, जिसमें ४९,३०६ हिन्दू और ३,६५३ मुसलमान हैं।

दाऊदनगर—यह एक छोटा शहर है जिसे औरंगजेब के वक्त का बिहार के सूबेदार दाऊद खाँ ने बसाया था। यह व्यापार का एक केन्द्र था। अब भी यहाँ कपड़ा, कम्बल, दरी वगैरह बनते हैं। यहाँ थाना, अस्पताल, आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरी तथा सिंचाई विभाग के असिस्टेन्ट इंजिनियर और सर्कल अफसर के दफ्तर हैं। यहाँ दाऊद खाँ की बनायी हुई एक बड़ी सराय है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। दाऊदनगर थाने की जन-संख्या ८४,४२६ है, जिसमें ७५,४०८ हिन्दू और ९,०१८ मुसलमान हैं।

देव—इस गाँव में पन्द्रहवीं सदी का बना पत्थर का एक सूर्य मंदिर है जिसका गुम्बज करीब १०० फीट ऊँचा है। यहाँ कार्तिक और चैत में मेला लगता है।

यहाँ एक बहुत पुराने राजपूत घराने के राजा रहते हैं जो अपना सम्बन्ध उदयपुर के राणा से बतलाते हैं। कहते हैं कि

पन्द्रहवीं सदी में राणा के भाई राय भानसिंह जगन्नाथ जाने के वक्त इस ओर आये थे। उमगा की निस्पुत्र विधवा रानी ने इन्हें पुत्र मानकर रख लिया और अपना राज्य इन्हें सौंपा। इनके वंशज पीछे देव चले आये और यहीं रहने लगे।

नवीनगर—पुनपुन नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ पीतल के बर्तन और कम्बल बनते हैं। पास में ही चन्द्रगढ़ नाम का गाँव है जहाँ सतरहवीं सदी का बना एक पुराना किला है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६५,४७५ है, जिसमें ६१,७२३ हिन्दू और ३,७५२ मुसलमान हैं।

पाचर पहाड़ी—औरंगाबाद सब-डिविजन की पूर्वी सीमा पर यह एक पहाड़ी है जहाँ की एक गुफा में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति तथा अन्य जैन मूर्त्तियाँ हैं। पास के गाँवों में पुराने खँडहर पाये जाते हैं।

बारुण—यहाँ सोन नदी पर ई० आई० रेलवे का पुल है जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा और दुनिया का दूसरा बड़ा पुल समझा जाता है। इसकी लम्बाई १०,०५२ फीट है और इसके बनाने में ३४ लाख रुपया खर्च हुआ था। दुनिया में इससे बड़ा पुल इंगलैण्ड की टे नदी का पुल है जो १०,५२७ फीट लम्बा है। ग्रैंड-ट्रंक-रोड बारुण के पास ही सोन को पार करता है। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम है सोन-ईस्ट-बैंक है। बारुण में थाने का सदर आफिस है। इस थाने को जन-संख्या ३६,८३९ है, जिसमें ३३,९३७ हिन्दू और २,८९५ मुसलमान और ७ अन्य जाति के लोग हैं।

मदनपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५०,३४३ है जिसमें ४५,६६५ हिन्दू और ४,६७८ मुसलमान हैं।

रफीगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६८,७०६ है, जिसमें ५५,४५० हिन्दू, १३,२२० मुसलमान, ९ ईसाई और २७ आदिम जाति के लोग हैं।

जहाँनाबाद सब-डिविजन

जहाँनाबाद सब-डिविजन जिले के उत्तरीय भाग में है। यह २४°५९′ और २५°१९′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°२७′ और ८५°१३′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ६०९ वर्ग मील और जन-संख्या ४,६१,९३८ है। इस सब-डिविजन में केवल एक जहानाबाद शहर और ८५५ गाँव हैं। इस इलाके में ५ थाने हैं—जहाँनाबाद, कुरथा, घोसी, मकदुमपुर और अरबल। इस सब-डिविजन के अन्दर अरवल, भलावर, एकिल और ओकरी ये ४ परगने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

जहाँनाबाद—यह एक छोटा शहर है जहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर है। यह मोरहर और यमुना नदी के किनारे २५°१३′ उत्तरीय अक्षांश और ८५°०′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ की जन-संख्या सन् १९३१ की गणना के अनुसार ८,७६४ है। शहर दो भागों में बँटा है। लोगों के रहने के घर, अस्पताल और पोस्ट-आफिस मोरहर नदी के उत्तर तथा सरकारी कचहरियाँ, डाक-बंगला और एस० डी० ओ० की कोठी नदी के दक्षिण हैं। इस भाग के पास एक छोटा रेलवे स्टेशन इरकी है और जहानाबाद स्टेशन कुछ दूर उत्तर है। पहले यहाँ शोरा नमक और कपड़े का बड़ा कारबार होता था। जहानाबाद थाने की जन-संख्या ९३,९७५ है, जिसमें ८२,०७० हिन्दू और ११,९०५ मुसलमान हैं।

अरवल—यह गाँव सोन के किनारे है। किसी समय यहाँ कागज बहुतायत से बनता था। इस समय यहाँ थाना, अस्पताल, डाक और तारघर, डाक-बंगला तथा सिंचाई विभाग का एक आफिस है। बहुत दिनों से यहाँ एक स्पेनिश परिवार रहता है। अरवल थाने की जन-संख्या १,४२,७३० है, जिसमें १,३१,९४५ हिन्दू, १०,७७५ मुसलमान और १० ईसाई हैं।

कुरथा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ७४,६४१ है। जिसमें ६६,७३८ हिन्दू और ७,९०३ मुसलमान हैं।

घेजन—मकदुमपुर रेलवे-स्टेशन से ५ मील की दूरी पर मोरहर नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ बुद्ध और अवलोकितेश्वर की बड़ी मूर्तियाँ हैं। अवलोकितेश्वर की मूर्त्ति पर एक लेख है जिससे मालूम होता है कि इसे नालन्दा से आये हुए स्थविर रत्नसिंह ने अपने दो शिष्यों को प्रदान किया था। एक आधुनिक मंदिर में तारा की मूर्त्ति है जिसे हिन्दू लोग पूजते हैं। यहाँ और भी कितनी पुरानी मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं।

घोसी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ८२,८१४ है, जिसमें ७८,७३९ हिन्दू और ४,०७५ मुसलमान हैं।

धरावत—बराबर पहाड़ी से ५ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है। कुछ लोग कहते हैं कि यहीं पहले गुणमति बौद्ध-विहार था। दक्षिण भारत के एक बौद्ध-संन्यासी गुणमति ने यहाँ के माधव नाम के एक ब्राह्मण पंडित को हराया था। उसी की यादगारी में यहाँ बौद्ध-विहार बना, जिसे सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेन-च्वाङ् ने भी देखा था। यहाँ के पुराने शहर, स्तूप और मठ आदि के भग्नावशेष खँडहर के रूप में मौजूद हैं।

जहाँ-तहाँ बहुत सी मूर्त्तियाँ भी पायी जाती हैं। यहाँ एक बड़ा पोखर है जिसे चन्द्रपोखर कहते हैं। कहा जाता है कि इसे राजा चन्द्रसेन ने खोदवाया था।

मकदुमपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६७,७७८ है, जिसमें ६१,४९३ हिन्दू और ६,२८५ मुसलमान हैं।

लाठ—जहानाबाद सब-डिविजन की दक्षिण-पूरब सीमा पर यह एक गाँव है। यहाँ ५३ फीट लम्बा और ३ फीट मोटा एक पत्थर का बहुत पुराना स्तम्भ पड़ा हुआ है। कहते हैं कि धरावत के चन्द्रपोखर के लिये यह लाठ लाया गया था। यहाँ यह क्यों पड़ा रहा इसके सम्बन्ध में तरह-तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

नवादा सब-डिविजन

नवादा सब-डिविजन जिले का पूर्वीय भाग है। यह २४०°३१' और २५°७' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°१७' और ८६°३' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ९५४ वर्ग मील और जन-संख्या ४,८९,२६० है। इस सब-डिविजन में नवादा और हसुआ दो शहर तथा ९५५ गाँव हैं। इस इलाके में ७ थाने हैं—नवादा, हसुवा, गोविन्दपुर, बारसलीगंज, रजौली, पकरीबरवाँ और कौवाकोल। इस सब-डिविजन के अन्दर जर्रा, नरहट, पचरुखी, रोह और समई ये पाँच परगने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

नवादा—यह एक छोटा शहर है जो २४°५३' उत्तरीय अक्षांश और ८५°३३' पूर्वीय देशान्तर पर खुरी नदी के दोनों किनारे पर बसा है। यहाँ नवादा सब-डिविजन का सदर दफ्तर है। नदी के बायें किनारे पर पुरानी आवादी है और दाहिने किनारे पर नयी

आबादी, जहाँ सरकारी कचहरियाँ, छोटा जेल, अस्पताल और स्कूल हैं। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,४८५ है। १८५७ के सिपाही विद्रोह के समय यहाँ बड़ा हलचल मचा था और आन्दोलनकारियों ने सरकारी दफ्तरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। नवादा से दो मील उत्तर एक तालाब के अन्दर जैनमंदिर है। नवादा थाने की जन-संख्या १,१६,०६४ है, जिसमें १,०३,२७९ हिन्दू, १२,७११ मुसलमान और ७४ आदिम जाति के लोग हैं।

अफसाँर—नवादा सब-डिविजन के बिलकुल उत्तर में यह एक गाँव है जहाँ विष्णु के वराह-अवतार की एक बड़ी मूर्त्ति है। यह मूर्त्ति एक ऊँचे टील्हे पर है जो विष्णु के मंदिर का भग्नावशेष है। यहाँ के एक शिलालेख से मालूम पड़ता है कि यह मंदिर मगध के गुप्तवंश के राजा आदित्यसेन ने ६०० ई० में बनवाया था। मूर्त्ति भी लगभग उसी काल की मालूम पड़ती है। टील्हे के आसपास बाद की बनी हुई और भी कई मूर्त्तियाँ हैं।

ककोलत—नवादा से १५ मील दक्षिण पूरब की ओर यहाँ एक जलप्रपात है।

कौआकोल—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २५,५०६ है। जिसमें २२,६५६ हिन्दू और २,८५० मुसलमान हैं।

गोविन्दपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५१,४२० हैं, जिसमें ४४,२२३ हिन्दू, ७,१८० मुसलमान और १७ आदिम जाति के लोग हैं।

दरियापुर पार्वती—जिले के उत्तरीय सीमा पर यह एक गाँव है। कहते हैं कि यहीं कपोतिका बौद्ध-विहार था जिसे सातवीं सदी में चीनी यात्री य्वन्-च्वाङ् ने देखा था। गाँव के पास

दुबौर की खान मुख्य हैं। ऋष्यशृंग के नाम पर सिंगर और दुर्वासा के नाम पर दुबौर नाम का पड़ना बताया जाता है। रजौल थाने की जन-संख्या ८४०८० है। इसमें ७५,४१९ हिन्दू ८,६४८ मुसलमान और ३ इसाई हैं।

वारसलीगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५५,०१४ है, जिसमें ५०,७८५ हिन्दू, ४,१३२ मुसलमान और ९७ आदिम जाति के लोग हैं।

सीतामढ़ी—हसुआ से ६ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक चट्टान है, जहाँ १६ फीट लम्बा और ११ फीट चौड़ा एक सुन्दर गुफा है, जिसमें बहुत सी मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। कहते हैं कि वनवास के समय यहीं सीता ने लव और कुश को जन्म दिया था और यहीं पर इन दोनों भाइयों ने रामचन्द्र की सेना से युद्ध किया था। इस स्थान से एक मील उत्तर-पूरब की ओर बारट नामक गाँव है जो वाल्मीकि ऋषि का स्थान समझा जाता है। यहाँ ऊँचे टील्हे पर एक पुराना किला है। पास ही में रसूलपुर गाँव में शेख मुहम्मद की दरगाह है, जो बहुत पुरानी समझी जाती है। यह दरगाह एक हिन्दू मंदिर के स्थान पर बनी मालूम पड़ती है।

हसुआ—गया-नवादा रोड पर तिलैया नदी के किनारे यह एक छोटा शहर है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,१३१ है। यहाँ मिट्टी के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं। यहाँ बहुत से धनी जमींदार रहते हैं। साउथ-बिहार-रेलवे का यहाँ तिलैया नाम का स्टेशन है। यह स्थान व्यापार का केन्द्र हो गया है। अठारहवीं सदी में यहाँ नामदार खाँ और कामगार खाँ नाम के दो भाई हुए जो नामी योद्धा थे। उनके पास बहुत बड़ी जागीर थी। हसुआ में थाने का सदर आफिस है। इस थाने

की जन-संख्या ८९,८०४ है, जिसमें ८०,६२७ हिन्दू और ९,१२७ मुसलमान और ५० आदिम जाति के लोग हैं।

गया जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	३,७२,८११	कुरमी	४२,४५६
भूमिहार ब्राह्मण	१,६४,७३१	कायस्थ	३८,११२
भुइयाँ	१,६०,३८२	कुम्हार	३२,३४३
कोयरी	१,५८,०७३	काँदू	२४,६०६
दुसाध	१,३०,५५८	कमार	२१,८२६
राजपूत	१,२०,३४	धोबी	१८,१३८
कहार	१,१७,४४४	बनिया	१५,२०३
चमार	१,०३,६०३	मल्लाह	१३,१६६
जोलाहा	८७,३८२	माली	७,१९३
ब्राह्मण	७४,२९७	डोम	४,८३५
मुसहर	६४,६११	भोगता	४,११४
तेली	६३,६६३	ताँती	३,२६४
पासी	५०,९७९	धानुक	३,२४५
रजवार	५०,४८७	तूरी	२,०४७
बरही	४९,२७२	हलालखोर	१,८२५
हज्जाम	४४,७८८	नट	८८३

ओराँव ... १९१

शाहाबाद जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

शाहाबाद जिला पटना कमिश्नरी का पच्छिमी भाग है। यह २४°३१′ और २५°४६′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°१९′ और ८४°५१′ पूर्वीय देशान्तर के बीच में है। इस जिले का सदर आफिस आरा है।

इस जिले के उत्तर में संयुक्त प्रान्त के गाजीपुर और बलिया जिले तथा बिहार प्रान्त का सारन जिला हैं। पूरब में पटना और गया जिले हैं। दक्षिण में पलामू जिला और पश्चिम में संयुक्त प्रान्त के मिरजापुर और गाजीपुर जिले हैं। उत्तर की ओर गंगा नदी इसकी सीमा बनाती है तो पूरब की ओर सोन नदी। इसे पश्चिम में कर्मनाशा नदी संयुक्त प्रान्त से और दक्षिण में सोन नदी पलामू जिले से अलग करती है।

इस जिले का क्षेत्रफल ४,३७२ वर्गमील है। यह क्षेत्रफल गया जिले के क्षेत्रफल से थोड़ा ही कम है, पर पटना जिले के क्षेत्रफल से दो गुना से भी अधिक है।

प्राकृतिक बनावट

शाहाबाद जिला तीन प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पहला भाग जिले के उत्तरीय हिस्से में है, जो एक नीची भूमि है। यह उत्तर में गंगा नदी से लेकर दक्षिण में रेलवे लाइन तक

फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल करीब ५५० वर्गमील है। यह भाग गंगा नदी के हटने से बना है। इस भाग का उत्तरीय हिस्सा, जो गंगा के किनारे है, बिलकुल नीची जमीन है। यहाँ हर साल गंगा की बाढ़ आती है, जिससे बराबर नयी मिट्टी पड़ते रहने के कारण उपज खूब होती है। यह विहार में गेहूँ की खेती का एक मुख्य स्थान हो गया है।

दूसरा भाग जिले के बीच का हिस्सा है। यह उत्तर में रेलवे लाइन से लेकर दक्षिण में पहाड़ी ऊँची भूमि तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल करीब ३ हजार वर्गमील है। यह भी एक समतल भूमि है। इसका अधिक हिस्सा उपजाऊ है। यहाँ खेती खूब होती है और यहाँ की आबादी भी बहुत घनो है। इस भाग की जमोन नहरों से सींची जाती है।

तीसरा भाग पहाड़ी भाग है। इसे कैमूर की अधित्यका कहते हैं। यह जिले का बिलकुल दक्षिणी हिस्सा है। इसका क्षेत्रफल करीब ८ सौ वर्गमील है। रोहतास गढ़ के पास यह भाग समुद्र से १४९० फीट ऊँचा हो गया है। इस भाग का अधिक हिस्सा चट्टानों और जंगलों से भरा हुआ है और खेती के काबिल नहीं है। जहाँ-तहाँ जमीन जोती-बोयी जाती है, पर पैदावार अच्छी नहीं होती। आबादी घनी नहीं है। कैमूर पहाड़ी से बहुत सी धाराएँ निकलती हैं जो जिले के अन्दर बहती हैं। यह पहाड़ी विन्ध्याचल पर्वतमाला के अन्दर समझी जाती है।

इस जिले में सन् १९३५-३६ में ३२,००० एकड़ जंगल सरकार द्वारा संरक्षित थे। इसे प्रोटेक्टेड फारेस्ट कहते हैं। इसके अलावे भी बहुत जंगल हैं।

नदियाँ

जिले की मुख्य नदियाँ गंगा और सोन हैं। गंगा उत्तरीय सीमा पर बहती है और सोन पूर्वीय सीमा पर। कैमूर पहाड़ी से बहुत सी छोटी-छोटी धाराएँ निकल कर उत्तर की ओर बहती हुई गंगा में मिली हैं।

गंगा—गंगा नदी इस जिले को उत्तर की ओर गाजीपुर, बलिया और सारन जिले से अलग करती है। यह चौसा के पास जिले को छूती है। कर्मनाशा नदी यहीं पर गंगा से मिली है। आगे बढ़ने पर सरयू नदी उत्तर की ओर से गंगा में मिलती है। जहाँ गंगा जिले से बाहर हुई है वहीं सोन नदी आकर इससे मिली है। जिले के अन्दर ठोरा, जूरी और गाँगी नदियाँ गंगा से मिली हैं। गरमी के दिनों में गंगा की चौड़ाई करीब आधा या पौन मील रहती है, पर बरसात में चौड़ाई इससे कई गुना बढ़ जाती है। गंगा आने जाने का एक मुख्य साधन है। चौसा इसके लिये एक प्रधान केन्द्र है। गंगा में बड़ी बड़ी नावें तो चलती ही हैं, कार कम्पनी का एक छोटा जहाज भी दीघा से बक्सर तक आता है।

सोन—सोन नदी मध्य भारत की पहाड़ी से निकलती है और यदुनाथपुर के पास शाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। यह कैमूर की तराई होकर बहती हुई समतल भूमि में आती है और समतल भूमि में १०० मील चलने के बाद मनेर से १० मील उत्तर गंगा में मिल जाती है। गंगा में मिलने से कुछ पहले इसकी चौड़ाई दो तीन मील हो गयी है। सोन नदी दक्षिण और पूरब की ओर जिले को १४५ मील तक घेरती है। इस नदी पर कोयलवर और डेहरी में ईस्ट-इंडियन-रेलवे के बड़े-बड़े पुल हैं।

डेहरी का पुल हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा और दुनियाँ का दूसरा बड़ा पुल समझा जाता है। सोन नदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सूखे मौसिम में इसकी धारा बहुत पतली रहती है पर बरसात में इसका बहुत भयंकर रूप हो जाता है। इससे इसमें नावें अधिक नहीं चलतीं। यह नदी मध्य भारत की पहाड़ी से निकली है। वहाँ के २१,३०० वर्ग मील के पहाड़ी भाग का पानी इसमें आकर मिलता है। इस कारण जब वर्षा होती है तो इसमें इतना पानी हो जाता है और इसकी धारा इतनी तेज हो जाती है कि नदी के आसपास के गाँव एकाएक दह-बह जाते हैं। पर यह पानी बहुत दिनों तक नहीं रह पाता। शाहाबाद जिले में सोन की कोई मुख्य सहायक नदी नहीं है। डेहरी के पास इस नदी से नहर निकाली गयी है जो पटना, गया तथा शाहाबाद जिले में खेतों को सींचती है।

सोन नदी का पुराना नाम शोणभद्र या हिरण्यबाहु है। हिरण्य का अर्थ है सोना और बाहु का अर्थ है बाँह। नदी के दोनों किनारे पर सोने सा चमकता बालू रहने के कारण इसका नाम पड़ा हिरण्यबाहु अर्थात् सोने सी बाँह वाली। सोन नाम भी इसी अर्थ को प्रगट करता है। पुराने समय में यह नदी पटना जिले के फतुहा नामक स्थान के पास गंगा में मिलती थी। पाटलिपुत्र नगर गंगा और सोन के संगम पर बसा था। धीरे-धीरे यह नदी पच्छिम की ओर हटती गयी।

कर्मनाशा—यह नदी कैमूर पहाड़ी के दक्षिण सुरदग नामक स्थान से निकलती है। वहाँ से यह उत्तर पच्छिम की ओर बहती हुई बनारस स्टेट में चली जाती है और फिर करकट गढ़ के पास अधित्यका में शाहाबाद जिले के अन्दर प्रवेश करती है। यहीं पर गढ़वत नदी इससे मिली है। छान पत्थर में इससे एक

बहुत बड़ा जलप्रपात बन गया है। यहाँ तीन सौ फीट की ऊँचाई से पानी नीचे गिरता है। शाहाबाद जिले का यह सबसे सुन्दर जलप्रपात है। लेकिन अब बनारस स्टेट में इस नदी से नहर निकाली गयी है जिससे पानी कम रह जाने के कारण इस जलप्रपात की सुन्दरता घट गयी है। यह नदी चौसा के पास गंगा में मिलती है। रास्ते में दुर्गावती नदी इससे आकर मिली है।

सनातनी हिन्दू कर्मनाशा नदी को बहुत अपवित्र समझते हैं। उनका विश्वास है कि इस नदी में स्नान करने से पहले के किये पुण्य भी नाश हो जाते हैं। कहते हैं कि यह नदी आकाश में उलटे लटके हुए राजा त्रिशंकु के मुँह की लार से बनी है। राजा त्रिशंकु सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे। इसके लिये उन्होंने वशिष्ठ जी से और बाद में उनके पुत्रों से प्रार्थना की। ऐसी अनुचित चेष्टा न करने के लिये कहने पर भी वे बाज नहीं आये, इससे वे चाण्डाल करार दिये गये। इस पर दया करके विश्वामित्र ने त्रिशंकु को अपनी तपस्या के बल से सदेह स्वर्ग भेजा, पर वहाँ से देवताओं ने इसे नीचे ढकेल दिया। बेचारा उलटे सिर जमीन पर गिरने लगा तो विश्वामित्र ने उसे रास्ते में ही रोक लिया। कहते हैं कि इसी त्रिशंकु के मुँह से गिरी हुई लार से कर्मनाशा नदी बनी है।

काओ—काओ या धोवा नदी तिलोथू से ६ मील दक्षिण पच्छिम की ओर अधित्यका से निकलती है और एक सँकरी घाटी से उत्तर की ओर बहती हुई एक सुन्दर जलप्रपात बनाती है। ताराचंडी घाटी के पास यह दो हिस्से में बँट जाती है। कुदरा नामकी एक शाखा पच्छिम की ओर जाकर कर्मनाशा नदी में मिल जाती है और दूसरी शाखा अपना पुराना नाम काओ कायम रखती हुई उत्तर की ओर बहती है और गायघाट के पास

गंगा में मिल जाती है। जाड़े या गर्मी के दिनों में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है, परन्तु बरसात में इसमें जोरों की बाढ़ आ जाती है।

कुदरा—कुदरा नदी काओ नदी की एक शाखा है। इसमें बहुत सी छोटी-छोटी धाराएँ आकर मिली हैं। यह खुरमाबाद में ग्रैंड-ट्रङ्क-रोड को पार करती है और अपने ५० मील की सफर पूरा कर टेन्डवा में दुर्गावती नदी से मिलती है। सूखे मौसिम में इसमें बहुत कम पानी रहता है। कहते हैं कि एक ब्राह्मण जमींदार कुदार से खुदवा कर इस नदी को अपने यहाँ ले गया था इस कारण इसका नाम कुदरा पड़ा।

दुर्गावती—यह नदी भकमा गाँव के पास कैमुर अधित्यका के दक्षिण भाग से निकलती है। गुप्तेश्वर गुफा और शेरगढ़ के पास से बहने के बाद करमचाट के पास यह मैदान में प्रवेश करती है। जहानाबाद के बाद यह ग्रैण्ड-ट्रङ्क-रोड के समानान्तर में २२ मील तक ऊत्तर-पच्छिम की ओर बही है। अन्त में सबथ गाँव के पास यह रोड को पार कर उत्तर-पूरब की तरफ मुड़ गयी है। रास्ते में कुदरा नदी इससे आकर मिली है। इसके बाद यह कर्मनाशा नदी में मिल जाती है। दुर्गावती कैमुर अधित्यका के २०० वर्गमील भाग के जल को अपने साथ बहा लाती है। इसमें साल भर तक पानी बना रहता है। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ सुआरा, कोरा, गोहुआँ और कुदरा हैं।

सुआरा—यह नदी डहर गाँव के पास अधित्यका से निकलती है। कंदन-खोह और जवार-खोह की छोटी-छोटी धाराएँ रास्ते में इससे मिली हैं। भभुआ से छः मील दक्षिण यह समतल भूमि में आती है और अपनी करीब २५ मील की सफर तय कर दुर्गावती नदी में मिल जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

शाहाबाद जिले की आबहवा साधारणतः सूखी है। कातिक-अगहन से जाड़ा शुरू होकर माघ-फागुन तक रहता है। उसके बाद गर्मी शुरू होती है। समुद्र से दूर होने के कारण विहार के पूर्वीय जिलों की अपेक्षा यहाँ सर्दी और गर्मी कुछ अधिक पड़ती है। जनवरी से मई तक साधारण तौर पर औसत गरमी ६२° से ९०° तक रहती है। मई में गरमी १०२° तक भी पहुँच जाती है।

हवा मुख्यतः पूर्वी और पश्चिमी है। पूस-माघ से पश्चिमी हवा शुरू होकर गरमी के दिनों तक रहती है। वर्षा के आरम्भ होते ही आम तौर पर पूर्वी हवा का चलना आरम्भ हो जाता है। वर्षा आषाढ़ से शुरू होकर आश्विन तक चली जाती है। सावन-भादो में वर्षा खूब होती है। जिले के अन्दर साल भर में चालीस-पैंतालीस इंच वर्षा होती है।

इस जिले में लोग बुखार से बहुत मरते हैं। यहाँ मलेरिया की बड़ी शिकायत है। नहरों की अधिकता के कारण यहाँ मच्छर बहुत होते हैं। हैजा, प्लेग और चेचक के भी लोग शिकार होते हैं। देहातों और शहरों में सरकार की ओर से लोगों को टीका लगाने का प्रबन्ध है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में बहरे-गूँगों की संख्या १,०८२, अंधों की संख्या ५,२२८, कोढ़ियों की संख्या ५४१ और पागलों की संख्या ४७१ है।

रोगियों के इलाज के लिये जहाँ-तहाँ अस्पताल हैं। आरा का अस्पताल सबसे बड़ा है, इसके बाद सब-डिविजनल शहरों जैसे बक्सर, ससराम और भभुआ के अस्पताल हैं। इनके

अलावे बहुत से गाँवों में भी अस्पताल हैं। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के २८ अस्पताल थे।

जानवर

सर्वे सेटलमेन्ट के समय इस जिले के पालतू जानवरों की जो गिनती ली गयी थी उससे मालूम हुआ था कि जिले के अन्दर करीब दो लाख गाय, साढ़े तीन लाख बैल, एक लाख भैंस और दो लाख गाय-भैंस के बच्चे थे। भेड़ बकरियों की संख्या भी एक लाख थी। घोड़े करीब साढ़े पाँच हजार और गदहे ढाई हजार थे। यहाँ जानवरों की दशा अच्छी नहीं है। सरकार और डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड ने विदेशों से साँढ़ मँगाकर उन्नत जाति की गौ पैदा करने की कोशिश की है। आरा, बक्सर, ससराम और भभुआ में जानवरों के इलाज का प्रबन्ध है।

जिले के दक्षिणी पहाड़ी भागों में बाघ, चीते, भालू, सूअर, लोमड़ी और जंगली कुत्ते मिलते हैं। हरिण भी कई किस्म के पाये जाते हैं। गीदड़, नीलगाय वगैरह हर जगह देखे जाते हैं।

इतिहास

प्राचीनकाल—इतिहासकार बताते हैं कि बहुत पुराने जमाने में शाहाबाद जिले में आदिम जाति के लोग रहते थे, जिनमें भार, चेरो और सबर मुख्य थे। कहते हैं कि किसी भार राजा ने रोहतास का किला बनवाया था। चेरो जाति के लोगों को सबर या सुइर जाति के लोगों ने जीता और सबरों को आर्य्य जाति के लोगों ने आकर दबाया। इन तीन अनार्य जातियों के राज्य की बहुत सी बातें अब भी लोगों से सुनने में

आती हैं। बहुत से किले और मंदिरों के भग्नावशेष उन्हीं आदिम जातियों के बताये जाते हैं। अब इस जिले में सबर के वंशज नहीं मालूम पड़ते, लेकिन भार और चेरो जहाँ तहाँ बहुत से हैं। भार मुख्य कर बक्सर सब-डिविजन में और चेरो पहाड़ की तराइयों और बिहिया परगना के जगदीशपुर जंगल में पाये जाते हैं। खरवार नाम की एक और आदिम जाति के लोगों का कहना है कि वे लोग शुरू में रोहतास के पास वाली पहाड़ी में रहते थे। ओराँव लोगों का कहना है कि रोहतास और पटना के बीच उनका राज्य था और रोहतास का किला बहुत दिनों तक उन्हों के कब्जे में था, यहीं से वे लोग दक्षिण के जंगलों में गये।

अशोक के समय में यह जिला मगध का एक हिस्सा था। ससराम के चन्दन पीरी पहाड़ी पर अशोक का शिलालेख अब भी देखने में आता है। पास के पटना और गया जिले के अन्दर बौद्धों के चिन्ह हर जगह देखे जाते हैं, लेकिन शाहाबाद जिले में इने गिने स्थानों को छोड़ कहीं कुछ देखने में नहीं आता। इससे मालूम पड़ता है कि बौद्धों का दबदबा यहाँ बहुत नहीं रहा। चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (हेनसन) ने यहाँ के महासार नामक स्थान को देखा था इसे उसने मो-हो-सो-लो लिखा है। इसे आजकल मसार कहते हैं और यह आरा से ६ मील पच्छिम है। य्वन्च्वाङ् ने दूसरा वह स्थान देखा था जहाँ आज आरा शहर बसा हुआ है। यहाँ अशोक ने एक स्तूप और एक स्तम्भ बनवाया था। इस स्तम्भ पर सिंह की मूर्ति थी। कहते हैं कि यहाँ बुद्धदेव ने एक राक्षसराज को अपना धर्मानुयायी बनाया था। इसी की यादगारी में पीछे अशोक ने यहाँ स्तूप और स्तम्भ बनवाये। इसके आसपास में बहुत से बौद्ध मठ बन गये थे।

अशोक के बाद जिले के इतिहास का कुछ ठीक पता नहीं चलता। मुन्देश्वरी मंदिर और देववरुणार्क की शिलालिपि से पता चलता है कि यह स्थान किसी समय गुप्त-साम्राज्य का एक हिस्सा था। गुप्त-राजाओं के बाद यहाँ आदिम जाति के छोटे-छोटे सरदारों का फिर राज्य कायम हो गया। इस समय चेरो जाति की प्रधानता थी। इसके बाद उज्जैन के राजपूतों के एक दल ने यहाँ चढ़ाई की। इनके सरदार का नाम राजा भोज था। बहुत लड़ाई-दंगे के बाद ये लोग यहाँ जम गये और चेरों लोगों को दक्षिण भाग जाना पड़ा। राजा भोज जहाँ बसा वह स्थान भोजपुर कहलाया। अब भी इस नाम से यह स्थान प्रसिद्ध है। चेरो लोग जहाँ गये वहाँ उन्होंने अपना दबदबा कायम रखा। महरता नामक एक चेरो सरदार को दबाने में शेरशाह को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी थी।

मुसलमान-काल—मुसलमानों में जब पहले-पहल बख्तियार खिलजी ने विहार पर चढ़ाई की थी उस समय शाहाबाद जिले में छोटे-छोटे राजपूत सरदार राज्य करते थे। ये लोग मुसलमानों का सामना नहीं कर सके। इसलिये विहार के और भागों के साथ यह जिला भी मुसलमानों के कब्जे में चला गया। शेरशाह के वक्त में इस जिले की प्रधानता बढ़ी। शेरशाह के पिता को ससराम का परगना जागीर में दिया गया था। सन् १५२९ में जब बाबर ने विहार पर चढ़ाई की तो शेरशाह ने उसका सामना किया, पर वह हार गया। आरा के पास एक स्थान में डेरा डालकर बाबर ने अपनी इस विजय का उत्सव मनाया था। बाबर के मरने पर शेरशाह का बल बढ़ा। चुनार और रोहतास के किले उसके दखल में आये। बाबर का बेटा बादशाह हुमायूँ, शेरशाह का सामना करने आया। शेरशाह को

भगाकर वह बंगाल तक गया पर लौटते समय बक्सर के पास चौसा नामक स्थान में वह शेरशाह से बेतरह हारा और एक भिश्ती के सहारे गंगा पार कर मुश्किल से अपनी जान बचा दिल्ली लौटा, पर उसके आठ हजार सैनिक मारे गये। अन्त में शेरशाह दिल्ली से भी उसे भगाकर खुद बादशाह बन बैठा। मरने पर वह अपने बनवाये हुए ससराम के सुन्दर मकबरे में दफनाया गया, जो अब तक भी कायम है।

जब अकबर दिल्ली का बादशाह हुआ तो उसके मन्त्री मान-सिह ने रोहतास गढ़ को अपना एक अड्डा बनाया। उस समय भी सारे जिले पर मुगलों का पूरा कब्जा नहीं हो सका था। स्थानीय सरदार लोग मुगलों की हुकूमत मानने को तैयार नहीं होते थे और बराबर विद्रोह किया करते थे। जगदीशपुर का राजा मुगल सेना का वर्षों तक सामना करता रहा, लेकिन अन्त में वह तवाह कर दिया गया। भोजपुर का राजा भी विद्रोह करते रहने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया और बहुत बड़ी रकम देने पर छूट सका। जहाँगीर के वक्त में उसने फिर विद्रोह किया। आखिर शाहजहाँ के समय में सारे भोजपुर में आग लगा दी गयी। उस समय का वहाँ का राजा प्रताप फाँसी पर चढ़ा दिया गया और उसकी रानी से एक मुगल दरबारी ने जबर्दस्ती विवाह कर लिया।

जब मीर कासिम बंगाल का नवाब हुआ तो वह अपने राज्य के इस भाग पर अपना दबदबा कामय रखने के लिये १७६२ ई० में एक बड़ी सेना लेकर ससराम पहुँचा। आप-पास के सभी जमींदार भाग गये। उन सब की जमींदारी लेकर हर जगह उसने एक-एक कलक्टर बहाल कर दिया और उनकी रक्षा के लिये एक सेना रख दी। ससराम में कुछ दिन रहकर मीर कसिम

रोहतास गढ़ गया और फिर वहाँ से मुँगेर लौटा। जब मीर कासिम का अंगरेजों के साथ झगड़ा हुआ और अंगरेजों ने उसके मुँगेर के किले पर दखल कर लिया तो उसने अपने खजाने और घर की औरतों को रोहतास के किले में भेज दिया। जब पटना भी उसके हाथ से चला गया तो वह शाहाबाद ही चला आया, लेकिन तिलौथ में जब उसने देखा कि उसके बहुत से साथी उसे छोड़ने लगे तो वह घर की स्त्रियों और खजाने को लेकर अवध के नवाब के पास चला गया। अंगरेजी सेना ने कर्मनाशा नदी के किनारे खजूरा तक उसका पीछा किया, बाद में वह लौट आयी।

दिल्ली के बादशाह से सहायता प्राप्त कर अवध के नवाब शुजाउद्दौला मीर कासिम के साथ ४०-५० हजार सैनिक ले सन् १७६४ में अंगरेजों से लड़ने के लिये बक्सर के पास पहुँचा। अंगरेजों के पास सिर्फ १९ हजार सेना थी। पर बड़ी घमासान लड़ाई हुई। अंगरेजों के दिन अच्छे थे, वे थोड़ी सेना लेकर भी विजयी हुए। शुजाउद्दौला नदी पार कर भाग गया। भागने पर दुश्मन उसका पीछा न कर सकें इसके लिये उसने नदी पर के नाव के पुलको तोड़वा दिया। फल यह हुआ कि भागते वक्त उसके हजारों, हाथी, घोड़े और सिपाही नदी में डूब कर मर गये। इस तरह बक्सर की लड़ाई का अन्त हुआ और अंगरेज लोग इस देश के मालिक बने।

अंग्रेजी शासन—सन् १७८१ में जिस समय बनारस का राजा चेतसिह अंगरेजों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ था, शाहाबाद जिले में कुछ हलचल मचा था। चेतसिंह का राज्य शाहाबाद जिले के उत्तर-पच्छिम भाग तक फैला हुआ था। जब गवर्नर जेनरल वारन हेस्टिंग्स चेतसिंह को दबाने के लिये आ रहा था

तो उस समय चेतसिंह ने बक्सर के पास ही गंगा में उससे मुलाकात की थी। उस वक्त उसके साथ बहुत बड़ी सेना भी थी।

सन् १८५७ में, जब हिन्दुस्तान के तमाम भागों में अंगरेजों के साथ युद्ध ठाना गया था और सैनिक लोग बिगड़ खड़े हुए थे, बिहार प्रान्त्र में शाहाबाद जिला ही इस काम में सबसे आगे था। जगदीशपुर का जमींदार ८० वर्ष का बूढ़ा कुँवर सिंह इस युद्ध का सेनापति बना। दानापुर के देशभक्त सैनिक भी उससे जा मिले। आरा का सरकारी खजाना लूट लिया गया और जेल तोड़ कर सब कैदी भगा दिये गये। वहाँ के अंगरेज अपनी जानें बचाने के लिये एक मकान में बन्द हो गये। यह मकान आज आरा-हाउस के नाम से प्रसिद्ध है। इस मकान में बन्द पड़े हुए अंगरेजों को बचाने के लिये दानापुर से सेना की एक टुकड़ी गयी, जिसकी बड़ी ही दुर्दशा हुई। बचे खुचे घायल सैनिक दानापुर लौट आये। दूसरी अंगरेजी सेना ने आकर आरा के अंगरेजों को बचाया। फिर वह सेना जगदीशपुर को गयी। कुछ देर तक लड़ाई लड़ने के बाद बूढ़ा सरदार कुँवर सिंह वहाँ से निकल पड़ा। पीछे उसके घरों में आग लगा दी गयी। वह वहाँ से चल कर ससराम पहुँचा। फिर बहुत दिनों तक बाँदा, कानपुर और लखनऊ आदि स्थानों में लड़ाई लड़ता हुआ जगदीशपुर वापस आया। यहाँ पहुँचने पर कुछ दिनों के बाद ही उसकी मृत्यु हो गयी। लेकिन देशभक्त सैनिक और दूसरे लोग उसके भाई अमर सिंह के नायकत्व में बहुत दिनों तक लड़ते रहे। पर अन्त में धीरे-धीरे वे दबा दिये गये।

सन् १९११ में सम्राट पंचम जार्ज आरा आये थे, वे यहाँ के कुछ लोगों से मिले और आरा-हाउस देखा। सन् १९२१ से कुछ वर्षों तक अंगरेजी राज्य के विरुद्ध खूब आन्दोलन चलता रहा।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ में शाहाबाद जिले की जन-संख्या १९,४७,११८ थी। सन् १९३१ में यह संख्या १९,९३,४८९ हो गयी है। इसमें ९,९९,०९९ पुरुप और ९,९४,३९० स्त्रियाँ हैं। इन पचास वर्षों में जिले के अन्दर ४६,३७१ आदमी अर्थात् फी सैकड़े २ आदमी बढ़े। समूचे जिले का हिसाब करने से एक वर्गमील में यहाँ ४५६ आदमी रहते हैं। जिले के उत्तरीय हिस्से में, जो समतल भूमि है और जहाँ खेती खूब होती है, आबादी बहुत घनी है। लेकिन दक्षिण के जंगली और पहाड़ी भाग में आबादी बहुत कम है। सदर सब-डिविजन में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ७६७ आदमी, बक्सर सब-डिविजन में ५६९ आदमी, ससराम सब-डिबिजन में ३९६ आदमी और भभुआ सब-डिविजन में २५० आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ४९,३१८ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,४८,३५३ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में गाँवों की संख्या ४,७३५ और शहरों की संख्या ६ है। आरा, ससराम, बक्सर, भभुआ, डुमराँव और जगदीशपुर ये शहर हैं। इन शहरों की कुल आबादी १८,७५,८५९ है।

इस जिले की बोली भोजपुरी है। किसी जमाने में भोजपुर ही जिले का केन्द्र था, इस समय भी यह एक परगना है। इसीसे जिले की बोली का नाम भोजपुरी पड़ा। यह बोली थोड़ी बहुत भिन्नता के साथ बिहार के सारन चम्पारण, और कुछ पलामू जिले में तथा युक्तप्रान्त के भी कई जिलों में बोली जाती है। इस बोली में साहित्य की रचना नहीं हुई है। लेकिन इसमें देहाती गानों की

छोटी-छोटी किताबें बहुत सी छपी हैं। देहातों में हिन्दू-मुसलमान दोनों के अन्दर कैथी लिपि का प्रचार है। नये पढ़े लिखे हिन्दू देवनागरी लिपि और मुसलमान उरदू लिपि लिखते हैं। पढ़े लिखे लोगों की भाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी है। भोजपुरी भाषा-भाषियों को अपनी भाषा या बोली का बहुत गौरव है। काफी पढ़े लिखे लोग भी आपस में भोजपुरी बोली बोलते हैं। जिले की जन-संख्या में १९,९१,८२६ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ६१८ की बंगला, १०० की मारवाड़ी, १२० की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ ५८८ की ओराँव, ७४ की पश्तो, मुंडा तथा विभिन्न द्राविड़ भाषाएँ और १६२ की अंगरेजी हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	...	१८,३८,८६२	जैन	...	५१२
मुसलमान	...	१,५१,३६८	सिक्ख	...	३६७
ईसाई	...	२,३३५	बौद्ध	...	११
			पारसी	...	४

सैकड़े का हिसाब जोड़ने से हिन्दू फी सैकड़े ९२ से कुछ अधिक और मुसलमान ७ से कुछ अधिक हैं। यह एक आश्चर्य्य की बात है कि शुरू में शाहाबाद जिला मुसलमानों का अड्डा होते हुए भी आज यहाँ वे लोग अपेक्षाकृत बहुत कम हैं। इतने कम मुसलमान बिहार के और किसी जिले में नहीं हैं। इस जिले के बहुत से मुसलमान, खास कर चैनपुर इलाके के मुसलमान, हिन्दुओं के रीति रिवाज ही रखते हैं। मुसलमान सबसे अधिक ससराम में हैं। वहाँ सैकड़े करीब ४० वे ही लोग हैं।

इस जिले में जो २३३५ ईसाई हैं, उनमें १९ यूरोपियन

आदि, १५९ एंग्लोइंडियन और २१५७ भारतीय ईसाई हैं। आरा, बक्सर, डेहरी और भभुआ में पाश्चात्य देशों के कुछ ईसाइयों ने अपना अड्डा जमा रखा है और वे अपना प्रचार किया करते हैं। आरा और भभुआ में इनके स्कूल भी हैं।

ससराम के अग्रहरी लोग सिक्ख हैं। इनके दो भेद हैं। एक सिंह अग्रहरी दूसरे मुनरिया अग्रहरी। सिंह अग्रहरी अपने को गुरु गोविन्द सिंह के अनुयायी बताते हैं और केश, कंघा, कड़ा, कच्छ और कृपाण धारण करते हैं। इनकी संख्या अधिक है। मुनरिया अग्रहरी अपने को गुरु नायक का अनुयायी कहते हैं। वे केश कटाते तथा कड़ा, कृपाण आदि नहीं धारण करते हैं।

हिन्दू जाति में अहीर की संख्या इस जिले में सबसे अधिक है। अहीर लोग लगभग पोने तीन लाख की संख्या में हैं। इसके बाद राजपूत का स्थान है जो दो लाख हैं। ब्राह्मणों की संख्या भी करीब दो लाख है। कोयरी और चमार करीब डेढ़ लाख की संख्या में हैं। इसके बाद क्रम से दुसाध, कहार, भूमिहार-ब्राह्मण, कांदू, कुरमी और जोलाहा के स्थान हैं। इन लोगों की संख्या भी पचास हजार से ऊपर है। और जाति के लोग इससे कम संख्या में हैं।

खेती और पैदावार

शाहाबाद जिले का रकबा २७,८०,३०९ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १५,३७,१०० एकड़ जमीन जोती बोयी गयी थी और २,३५,१७६ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। १,२८,११६ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी।

८,७९,९१७ एकड़ जमीन पहाड़ और नदी आदि के कारण खेती के काम में नही लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ६३ भाग जमीन जोत के अन्दर है, लेकिन इसका करीब आठवाँ भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ५ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता बोया नहीं जाता और सैकड़े ३२ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े २५ भाग में दो या तीन फसल होती हैं।

खेती मुख्यतः जिले के उत्तरीय भाग में होती है। दक्षिणी भाग पहाड़ों और जंगलों से भरा है। बहुत दूर-दूर पर जहाँ-तहाँ गाँव हैं। पहाड़ों की पतली घाटियों में जहाँ थोड़ी सी अच्छी मिट्टी मिल जाती है लोग थोड़ा गेहूँ, जौ या धान आदि उपजा लेते हैं। जिले का उत्तरीय भाग समतल भूमि है इसलिए वहाँ खेती बहुत होती है। इस भाग में सिंचाई का भी प्रबन्ध है।

यहाँ के खेत की भिन्न-भिन्न तरह की मिट्टियों के नाम केवाल, मटियार, करैल, गुरमट, दोरस, बलमट या बलसुन्दर, सिगता, धूस, कदै आदि हैं। इनमें करैल मिट्टी आरा-ससराम-रोड के पच्छिम और ग्रैंड-ट्रंक-रोड के उत्तर समूचे जिले में पायी जाती है। गाँव के पास की जमीन को डीही या गोंर कहते हैं। ऊँची और कड़ी जमीन टाँर कहलाती है।

फसल तीन तरह की होती है—अगहनी, भदई और रब्बी। सबसे अधिक रकबे में रब्बी फसल होती है, उसके बाद अगहनी। भदई फसल बहुत थोड़े से हिस्से में होती है। अगहनी फसल में धान मुख्य है। धान में अधिकतर अगहनी धान ही होता है, भदई धान बहुत थोड़ा। भदई की और फसल मकई, मरुआ,

ज्वार, बाजरा और कोदो हैं। तिल भी इसी समय होता है। रब्बी फसल में गेहूँ, जौ, बूट, मटर, रहर, चीना, कुरथी, मसुरी, खेसारी आदि हैं। तेलहन में अंडी और तीसी मुख्य हैं। पहले यहाँ अफीम की खेती बहुत होती थी, अब उसकी जगह ऊख ने ली है। इधर ऊख की कई मिल खुल जाने से ऊख की खेती बहुत बढ़ गयी है।

इस जिले में कुल जोत जमीन के सैकड़े ४७½ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है। अहर, पैन और कूएँ से खेत सींचने की चाल बहुत दिनों से आ रही है। अब नहर का भी इन्तजाम हो गया है। नहर सोन नदी से निकाली गयी है। जिले की ४,१४,२०५ एकड़ जमीन सरकारी नहरों से सींची जाती है। सिंचाई के इस प्रबन्ध से खेती की उन्नति हुई है और भयंकर अकाल का डर एक तरह से जाता रहा है।

विक्रमगंज में सरकारी कृषि फार्म है, जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है।

पेशा, उद्योग-धंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार शाहाबाद जिले के अन्दर हजार आदमियों में ४६० कमानेवाले और शेष उनके आश्रित हैं। कमाने वाले ४६० आदमियों में ३४७ आदमी कृषि और पशु-पालन में, ४८ उद्योग-धंधा में, २४ व्यापार में, ७ पंडा-पुरोहित, वकील-मुख्तार, डाक्टर-वैद्य, और शिक्षक आदि के पेशे में, ४ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सवारी आदि के काम में, २ शासनकार्य में तथा २८ दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। हिन्दू की भिन्न-भिन्न

जातियों के अधिकांश लोग अपने पुश्तैनी धंधे में लगे हुए हैं, जैसे लोहा का काम प्रायः लोहार, तेल का काम तेली और चमड़े का काम केवल चमार करते हैं।

गुड़ और चीनी—मिलों में तो गुड़ और चीनी तैयार किये ही जाते हैं, किसान लोग छोटे-छोटे पैमाने पर भी गुड़ तैयार करते हैं। सन् १९३६ में इस जिले में ३ चीनी फैक्टरियाँ चल रही थीं।

कागज—किसी समय में इस जिले के अंदर हरिहरगंज में कागज बहुत तैयार किये जाते थे। सन् १८७२ ई० में कागज के २१ छोटे-छोटे कारखाने थे। इन कारखानों से उस साल दस भिन्न-भिन्न किस्म के १,२९३ रीम कागज तैयार हुए थे। मिल के बने कागजों से मुकाबला न कर सकने के कारण ये कारखाने टूट गये। अब जो थोड़े-से कागज तैयार किये जाते हैं वे बनारस भेजे जाते हैं।

कपड़ा—कपड़ा तैयार करने का काम इस जिले में बहुत होता था। उन्नीसवीं सदी के शुरू में यहाँ करीब ८ हजार करघे चलते थे। अब तो बहुत थोड़े से मोटे कपड़े तैयार किये जाते हैं। भभुआ के गड़ेड़िये लोग कम्बल तैयार करते हैं। ससराम और भभुआ सब-डिविजन में कालीन भी बनते है। जिले के अन्दर इस समय कपड़े बुनने की एक मिल है।

बर्तन—लाह के रंग से रँगे बर्तन ससराम में बहुत तैयार किये जाते हैं। ये बर्तन सुन्दर होते हैं और लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं।

खनिज पदार्थ—सरकारी सिंचाई विभाग ने धौधर पहाड़ी से और ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी ने करौंदिया पहाड़ी से सड़क, पुल और मकान आदि के लिये बहुत से पत्थर काटे हैं। ससराम

के पास की पहाड़ी से जाँता और सील के लिये पत्थर काटे जाते हैं। करीब पचास-साठ वर्ष पहले रोहतासगढ़ के उत्तर और सोन के पच्छिम भाग में फिटकिरी तैयार की जाती थी। यहाँ से कसीस भी निकाला जाता है। पहाड़ी भागों तथा कर्मनाशा, सोन और दूसरी नदियों में चूने के पत्थर बहुत पाये जाते हैं। ये पत्थर कंकड़ जैसे होते हैं जो पक्की सड़कें बनाने के काम आते हैं। इन्हे जलाकर चूना भी तैयार किया जाता है। चूना बनाने का काम उस स्थान के आदमी छोटे पैमाने पर किया करते थे, पर अब वहाँ इस काम के लिये बड़े-बड़े कारखाने खुल गये हैं। १९२३ ई० में डेहरी-ऑन-सोन से ३५,५०० टन चूना और १,१९,००० टन कंकर बाहर भेजे गये थे।

फैक्टरियाँ—डेहरी में पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट की फैक्टरी है। यह छोटा-मोटा जहाज और मोटर लंच वगैरह बनाने का काम कर सकती है। बक्सर सेन्ट्रल जेल के कारखाने में कम्बल, कपड़े और टेन्ट वगैरह तैयार होते हैं। सन् १९३६ में जिले के अन्दर सब मिलाकर १० फैक्टरियाँ थीं जिनपर फैक्टरी एक्ट लागू था। इनमें ३ चावल, दाल, आटा और तेल की, ३ चीनी की तथा १-१ रेलवे, इंजिनियरिंग और बिजली की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—इस जिले से बाहर जानेवाली चीजों में चूना, चूना का पत्थर, गुड़, चीनी, दलहन और तीसी मुख्य हैं। गुड़ और चीनी युक्तप्रान्त और मध्यप्रान्त तथा तीसी कलकत्ता भेजी जाती है। यहाँ बाहर से आनेवाली चीजों में कोयला, नमक, कपड़ा, करासन तेल तथा आधुनिक आवश्यकता की छोटी बड़ी चीजें हैं। जिले के अन्दर व्यापार के केन्द्र आरा, बक्सर, ससराम, डुमराँव, चौसा, डेहरी और नासरीगंज हैं। इस जिले में बराहपुर में फरवरी और एप्रिल महीने में बहुत बड़ा मेला

लगता है। यह बारह रोज तक रहता है और इसमें करीब एक लाख आदमी आते है।

आने-जाने के मार्ग

सड़कें—जिले में कच्ची पक्की सड़कें बहुत हैं, जिनका प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के हाथ में है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रबन्ध में सन् १९३५-३६ में २११ मील पक्की सड़कें और ५७५ मील कच्ची सड़कें थीं। इनके अलावे छोटी-छोटी देहाती सड़कें १,३१५ मीलों में फैली हुई थीं। यहाँ की सड़कों मे ग्रैंड-ट्रंक-रोड और गंगा किनारे की सड़क बहुत पुरानी और प्रसिद्ध हैं।

ग्रैंड-ट्रंक-रोड ससराम से कर्मनाशा तक उसी लाइन पर गयी है जहाँ पहले पटना से दिल्ली जानेवाली पुरानी शाही सड़क थी। रेलवे लाइन खुलने के पहले बंगाल से उत्तर भारत को जाने का मुख्य मार्ग यही था। इसी से होकर सैनिक लोग जाते थे। यह रोड इस जिले में ५६$\frac{1}{4}$ मील तक गयी है, इसमें सब जगह पुल हैं। इस रोड से बहुत-सी शाखा सड़कें निकाली गयी हैं।

एक दूसरी ऐतिहासिक सड़क गंगा किनारे की सड़क है जो कोयलवर से आरा और बक्सर होकर चौसा तक ६४ मील गयी है।

जिले की दूसरी मुख्य सड़कें ये हैं—(१) आरा से ससराम जानेवाली ६४ मील लम्बी पक्की सड़क, (२) नासरीगंज से डुमराँव तक की पक्की सड़क जो विक्रमगंज में आरा-ससराम सड़क को पार करती है, (३) पीरू से बिहिया होकर शाहपुर

जानेवाली पक्की सड़क, (४) आरा से बहियारा जानेवाली पक्की सड़क, (५) कोयलवर से डेहरी होकर अकबरपुर जानेवाली कच्ची सड़क, (६) चौसा से ससराम तक की कच्ची सड़क और (७) चौसा से मोहनिया तक जानेवाली कच्ची सड़क ।

रेलवे—इस जिले में ईस्ट इण्डियन रेलवे की मुख्य लाइन और ग्रैंड-कार्ड-लाइन गयी हैं । इनके अलावे दो लाइट रेलवे हैं । ई० आई० आर० की मुख्य लाइन जिले के उत्तर में पूरब की ओर कोयलवर से शुरू होकर पच्छिम ६० मील तक गयी है। इस लाइन पर कोयलवर, कुलहरिया, आरा, करीसाठ, बिहिया, बनही, रघुनाथपुर, ट्विनिगगंज, डुमराँव, बरूणा, बक्सर और चौसा रेलवे स्टेशन हैं । कोयलवर में ४,१९९ फीट लम्बा पुल है। पुल के निचले हिस्से में पैदल चलने का रास्ता है। ग्रैंड-कार्ड-लाइन दक्षिण में डेहरी-ऑन-सोन से कर्मनाशा तक ५३ मील गयी है। बीच में करबंडिया, ससराम, कुमहौ, शिवसागर-रोड, कुदरा, पुसौली, मुठानी, भभुआ-रोड और दुर्गौती रेलवे स्टेशन हैं। डेहरी में सोन पर १०,०४४ फीट लम्बा पुल है । यह पुल दुनियाँ के सबसे बड़े पुलों में एक समझा जाता है । इसके बनाने में ३५ लाख रुपया खर्च हुआ था। एक लाइट रेलवे लाइन आरा से ससराम तक ६० मील और दूसरी डेहरी-ऑन-सोन से अकबरपुर तक २४ मील जाती है। आरा-ससराम लाइन पर आरा, उदवन्त नगर, कसाप, गरहनी, चरपोखरी, धनौती, पीरू, हसन-बाजार, विक्रमगंज, घुसिया-कलाँ, सुजिहोली, गढ़नोखा, खाराडीह और ससराम स्टेशन हैं। डेहरी-रोहतास रेलवे लाइन पर के स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं—डेहरी-ऑन-सोन, डेहरी-सिटी, तिलोथू-बाजार, तिलोथू, रामडिहरा-ऑन-सोन, तुम्बा, बंजारी और रोहतास ।

जलमार्ग—गंगा में दीघा से बक्सर तक जहाज चलता है। नावें तो सब जगह चलती हैं। कर्मनाशा, दुर्गावती और सुआरा नदियों में केवल बरसात में नावें चलती हैं। काओ और धोबा नदी में उनके गंगा में मिलने से कुछ दूर पहले तक नावें चलती हैं। सोन नदी में बड़ी-बड़ी नावें नहीं चल सकतीं, क्योंकि सूखे मौसिम में इसमें कम पानी रहता है और बरसात में इसकी धारा अत्यन्त तेज हो जाती है। सोन की नहर में १२३ मील तक नावें चलती हैं। डेहरी से आरा तक स्टीमर भी चलता है।

शिक्षा

सन् १८६० ई० में शाहाबाद जिले के अन्दर सिर्फ १५ सरकारी स्कूल थे। सन् १८७२–७३ में जब सर जार्ज कैम्पबेल की शिक्षा-योजना काम में लायी गयी तो बहुत-सी खानगी पाठशालाओं को थोड़ी बहुत सरकारी सहायता मिलने लगी। उस साल जिले के अन्दर सरकारो सहायता-प्राप्त स्कूल ३१५ हुए जिनमें ५,१३३ लड़के पढ़ते थे। सन् १९०१–०२ में स्कूलों की संख्या बढ़कर ९१४ और उनमें पढ़नेवाले लड़कों की संख्या २२,९६२ हुई।

सन् १९२१–२२ में इस जिले के अन्दर लड़के-लड़कियों के प्रायमरी स्कूलों की संख्या १,२८२ और उनके छात्रों की संख्या ३६,९९६ थी। सन् १९३५–३६ में आकर स्कूलों की संख्या घटकर १,२२८ रह गयी, लेकिन उनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या बढ़कर ४९,२६२ हुई। प्राइमरी संस्कृत पाठशालाएँ और मकतबों की गिनती भी इसी में है।

सन् १९२१-२२ में जिले के अन्दर १३ मिड्ल इंगलिश स्कूल और १४ मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल थे, जिनमें १,९९१ छात्र पढ़ रहे थे। सन् १९३७-३८ में आकर मिड्ल इंगलिश स्कूलों की संख्या ५६ हो गयी और मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल सिर्फ २ रह गये।

सन् १९२१-२२ में जिले के अन्दर ९ हाई स्कूल थे। लेकिन इस समय १७ हाई स्कूल हैं। इनमें ५ हाई स्कूल आरा में और बाकी डुमराँव, बक्सर, सूरजपुरा, चाँदी, ससराम, भभुआ, डेहरी, जगदीशपुर, डुमरी, कोआथ, नासरीगंज और तिलौथू में हैं। आरा के हाई स्कूलों के नाम जिला स्कूल, टाउन स्कूल, क्षत्रिय स्कूल, हरप्रसाद जैन स्कूल और मॉडल इन्सटिट्युट हैं।

जिले के अन्दर कोई कालेज नहीं है। कालेज में पढ़ने के लिये लड़के प्रायः पटना और बनारस जाते हैं।

स्त्री-शिक्षा दिनों-दिन बढ़ रही है। सन् १९१०-११ में स्कूलों में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या १,२६० और सन् १९२०-२१ में २,२९२ थी। सन् १९३५-३६ में आकर इनकी संख्या ५,३१९ हो गयी है।

यूरोपियनों के लिये इस जिले में बक्सर में एक स्कूल है, जिसका प्रबन्ध ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी के हाथ में है। जिले के अन्दर करीब दो दर्जन संस्कृत पाठशालाएँ और कुछ मदरसे हैं। ससराम का मदरसा मशहूर है, इसमें ऊँचे दरजे की पढ़ाई होती है। इस जिले में मुसलमानों में शिक्षा का प्रचार अधिक है।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ९९,०८९ और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या ६,८३२ है। अंगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ८,६६८ और स्त्रियाँ ४८७ हैं। फी सैकड़े

का हिसाब लगाने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ५ होती है।

सन् १९३५–३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ७१,७८५ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जन-संख्या के सैकड़े ३ ५ हैं।

इस जिले में आरा-नागरीप्रचारिणी सभा का पुस्तकालय और सेन्ट्रल जैन ओरियन्टल लाइब्रेरी प्रसिद्ध हैं। गाँवों में भी जहाँ-तहाँ छोटे-छोटे पुस्तकालय हैं। आरा से समय-समय पर हिन्दी में मासिक और साप्ताहिक पत्र निकलते रहे हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—शाहाबाद पटना कमिश्नरी के अन्दर एक जिला है। इसका सदर आफिस आरा है। यह जिला चार सब-डिविजनों में बँटा है—आरा, बक्सर, ससराम और भभुआ। सब-डिविजन का सबसे बड़ा अफसर सब-डिविजनल अफसर या एस० डी० ओ० कहलाता है। हर सब-डिविजन कई पुलिस स्टेशनों में बँटा हुआ है जिसमें पुलिस इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर रहते हैं। किस सब-डिविजन में कौन-कौन पुलिस स्टेशन हैं यह सब-डिविजनों के वर्णन में मिलेगा। जिले के अन्दर सब मिलाकर ३० पुलिस स्टेशन हैं। इनके अलावे दस आउटपोस्ट या फाँड़ी हैं जो किसी न किसी पुलिस स्टेशन के अधीन हैं। जिले का सबसे बड़ा अफसर मजिस्ट्रेट और कलक्टर कहलाता है।

पुलिस—जिले में शांति बनाये रखना और लोगों की हिफाजत करना पुलिस का काम है। पुलिस का सबसे बड़ा

अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट या कप्तान कहलाता है। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट की सहायता के लिये असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट और डिपटी सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं। इनके नीचे इन्सपेक्टर, सब-इन्सपेक्टर, असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, हवलदार और कानिस्टबिल होते हैं। सन् १९३६ में इस जिले में ५ इन्सपेक्टर, ६१ सब-इन्सपेक्टर, ५१ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, १ सर्जेन्ट मेजर, १ मेजर, २७ हवलदार और ५९३ कानिस्टबिल थे। चौकीदारों की संख्या ४,०७० थी।

न्याय—दीवानी मुकदमे सुनने के लिये जिले के सदर आफिस आरा में जिला जज तथा कुछ सबोर्डिनेट जज और मुन्सिफ हैं। सब-डिविजनल शहरों में केवल मुन्सिफ रहते हैं। फौजदारी मुकदमे सुनने का काम जिला जज, जिला मजिस्ट्रेट और सबोर्डिनेट मजिस्ट्रेटों पर रहता है। जिला जज ही सेशन-जज भी होता है। सबोर्डिनेट मजिस्ट्रेट जब कर विभाग का काम करते हैं तो डिपटी कलक्टर या सब-डिपटी कलक्टर कहलाते हैं। सुपरिन्टेंडिग इंजिनियर और इक्जक्युटिव इंजिनियर नहर विभाग के मामलों को सुनते हैं। आरा, बक्सर, ससराम, भभुआ, डुमराँव और जगदीशपुर में छोटे-छोटे मामलों को सुनने के लिये आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

जेल—प्रान्त का सबसे बड़ा जेल इसी जिले के अन्दर बक्सर में है। यह एक सेन्ट्रल जेल है, जिसमें १,१६० कैदी रह सकते हैं। इसमें स्त्री-कैदियों के रहने की जगह नहीं है। आरा में एक छोटा जेल है जो कुछ वर्षों से जिला जेल का ही काम कर रहा है। इस जेल में २२५ पुरुष-कैदियों, १८ स्त्री-कैदियों और १६ बालक-कैदियों के रहने की जगह है। इसमें ५०

विचाराधीन कैदी भी रह सकते हैं। सब-डिविजनों के सदर आफिस ससराम और भभुआ में छोटे जेल हैं।

रजिस्ट्री-आफिस—जिले के अन्दर सन् १९३६ में आरा, भभुआ, विक्रमगंज, बक्सर, जगदीशपुर और ससराम में रजिस्ट्री आफिस थे। यहाँ जमीन की खरीद बिक्री आदि की रजिस्ट्री होती है।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—गाँवों में सड़क, पुल वगैरह बनवाने, तालाब, कूआँ वगैरह खुदवाने, घाट, अस्पताल तथा फाटक आदि का इन्तजाम करने और लड़कों की शिक्षा के लिये प्राइमरी तथा मिडल स्कूलों का प्रबन्ध करने के लिये जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है। यह बोर्ड सन् १८८७ में कायम हुआ था। इसमें अब ४० मेम्बर होते हैं, जिनमें ३० प्रजा द्वारा चुने जाते हैं। ५ नाम-जद किये और ५ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं। जिला बोर्ड का आमद-खर्च करीब १३-१४ लाख रुपया है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन सब-डिविजनल शहरों में लोकल-बोर्ड हैं जो अपने अपने इलाकों में डिस्ट्रिक्टबोर्ड के बताये छोटे-छोटे काम करते हैं। आरा लोकलबोर्ड में १० निर्वाचित और ३ नामजद किये, ससराम लोकलबोर्ड में ९ निर्वाचित और ३ नामजद किये, बक्सर लोकलबोर्ड में ६ निर्वाचित और २ नामजद किये तथा भभुआ लोकलबोर्ड में ५ निर्वाचित और १ नामजद किये मेम्बर हैं। इनके अलावे सफाई और सड़क आदि का प्रबन्ध करने के लिये सन् १९३५-३६ में कोआथ, हरिहरगंज, डेहरी और नासरीगंज में यूनियन कमिटियाँ थीं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—जो काम डिस्ट्रिक्ट बोर्ड देहातों के अन्दर करता है वही काम म्युनिसिपैलिटियाँ शहरों के अन्दर करती हैं। शाहाबाद जिले के अन्दर आरा, बक्सर, भभुआ,

डुमराँव, जगदीशपुर और ससराम में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। आरा म्युनिसिपैलिटी १८६५ ई० में और दूसरी म्युनिसिपैलिटियाँ १८६९ ई० में कायम हुई थीं। आरा म्युनिसिपैलिटी के ३०, ससराम म्युनिसिपैलिटी के २५, भभुआ के ११ और शेष म्युनिसिपैलिटियों के १०-१० मेम्बर होते हैं।

आरा (सदर) सब-डिविजन

यह जिले का सदर सब-डिविजन है जो २५°१०′ और २५°४६′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°१७′ और ८४°५१′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ९०८ वर्गमील और यहाँ की जन-संख्या ६,९६,०३३ है। इस सब-डिविजन में आरा और जगदीशपुर ये दो शहर तथा ९५२ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में आरा-शहर, आरा-मुफस्सल, संदेश, बरहरा, शाहपुर, जगदीशपुर, पीरो और सहर ये ८ पुलिस स्टेशन हैं। सब-डिविजन के प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे हैं—

आरा—जिले का यह मुख्य शहर २५°३४′ उत्तरीय अक्षांश और ८४°४०′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यह जिले का सदर आफिस है। गंगा से यह १४ मील दक्षिण और सोन से ८ मील पश्चिम है। इस शहर की जन-संख्या ४८,९२२ है जिसमें ३५,७९३ हिन्दू, १२,४३२ मुसलमान, ४९२ जैन, १९५ ईसाई और १० अन्य जाति के लोग हैं। यह ई० आई० रेलवे के मुख्य लाइन पर है। यहाँ से एक छोटी लाइन ससराम तक गयी है, जो आरा-ससराम-लाइट रेलवे कहलाती है।

इस शहर का नाम आरा क्यों पड़ा इसके सम्बन्ध में कई मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अरण्य से आरा नाम हुआ।

यहाँ पुराने जमाने में जंगल था। अब भी शहर के पास अरण्य देवी का एक मंदिर है। कुछ लोग बताते हैं कि आराम नगर से आरा नाम पड़ा। आराम बौद्धमठ को कहते हैं। यहाँ बहुत से बौद्धमठ थे इसीलिये इस नगर का नाम आराम-नगर पड़ गया।

लोगों का यह भी कहना है कि आरा का बहुत पुराना नाम चक्रपुर या एकचक्रपुर था। महाभारत में लिखा है कि इसके आसपास में बकासुर नाम का एक राक्षस रहता था, जो प्रतिदिन चक्रपुर या बक्री नामक गाँव से एक आदमी को पकड़-पकड़ कर खाया करता था। लोग बारी-बारी से प्रतिदिन उसके पास एक आदमी भेजा करते थे। वनवास के समय एक बार पाण्डव चक्रपुर पहुँचे और एक ब्राह्मण के अतिथि हुए। संयोग से उस दिन उसी ब्राह्मण के घर से एक आदमी को उस राक्षस के पास जाना था। उस ब्राह्मण के उपकार का बदला चुकाने के लिये भीम खुद उस राक्षस के पास जाने को तैयार हुए और उसके घर किसी आदमी को जाने नहीं दिया। भीम को वह राक्षस खा नहीं सका, उल्टे भीम ने उसे बक्री गाँव में मार दिया और लाश चक्रपुर ले आये। आरा के पास बक्री गाँव अब भी मौजूद है।

बौद्धग्रन्थों में लिखा है कि भगवान् बुद्ध ने यहाँ एक मनुष्य भक्षक राक्षस को अपना अनुयायी बना लिया था इसी के स्मारक में सम्राट् अशोक ने यहाँ एक स्तूप और एक स्तम्भ खड़ा किया था, जिस पर सिंह की एक मूर्त्ति थी। चीनी यात्री य्वन्-च्वाङ् यहाँ आया था।

बादशाह बाबर महम्मद लोदी को हराकर आरा पहुँचा था। जिला जज की पुरानी कचहरी के पास एक स्थान है, लोग कहते हैं कि बाबर ने पश्चिम विहार पर विजय प्राप्त करने का

उत्सव इसी स्थान पर मनाया था। यह स्थान हाल तक शाहाबाद कहलाता था और मोगल बादशाहों के वक्त में शाहाबाद सरकार के फौजदार इसी स्थान पर रहते थे। शाहाबाद सरकार के नाम पर ही जिले का भी नाम पड़ा।

इस शहर के इतिहास में सन् १८५७ का बलवा एक मुख्य घटना है। १८५७ की २५ जुलाई को दानापुर के देशभक्त सैनिक अंगरेजों के विरुद्ध खड़े होकर शाहाबाद आये। इनमें बहुत से इसी जिले के रहनेवाले राजपूत थे। जगदीशपुर के प्रभावशाली और उत्साही जमीदारी कुँवर सिंह इन सबों का सरदार बना। अब तो बहुत से लोग इस दल में आकर मिल गये। इन लोगों ने जेल तोड़ कर कैदियों को निकाल दिया और सरकारी खजाना लूट लिया। यहाँ बहुत थोड़े से अंगरेज थे इससे ये लोग आन्दोलनकारियों का मुकाबला नहीं कर सके। इन लोगों ने अपने स्त्री-बच्चों को कहीं बाहर भेज दिया और खुद किले की तरह बने हुए एक अंटाघर में जा छिपे। इस अंटाघर को एक रेलवे इंजिनियर ने बनवाया था और ऐसे ही खतरे के मौके में सुरक्षित रहने के लिये उसे खूब मजबूत करदिया था। ८ दिन तक ये लोग इसी घर में बन्द रहे। बलवाइयों ने इसे तोड़ने की बहुत कोशिश की पर वे सफल नहीं हो सके। इसके बाद दूसरी जगहों से अंगरेज सैनिकों के कई दल पहुँचे। अन्त में उनकी विजय हुई, आन्दोलनकारी दबाये गये और कितने को फाँसी हुई। शहर में डिंडोरा पिटवाया गया कि जिनके जिम्मे हथियार हो वे ४८ घंटे के अन्दर कैम्प में आकर हथियार दे जायँ। फौरन ७ हजार हथियार लोगों ने जमा कर दिये। फिर कुछ ही दिनों में शांति हो गयी। वह अंटाघर जहाँ अगरेज लोग छिपे थे आज आरा-हाउस नाम से प्रसिद्ध है।

आरा में देखने लायक पुरानी चीजें विशेष कुछ नहीं हैं। यहाँ एक जुम्मा मस्जिद है जो औरंगजेब के वक्त की बनायी हुई बतायी जाती है। अठारहवीं सदी के अन्त में जॉन डीन यहाँ का कलक्टर था। उसने एक मुसलमानी औरत से शादी की थी। उसकी बनवायी हुई यहाँ एक मौलाबाग मस्जिद है। उसी अहाते में जॉन डीन की भी कब्र है। शहर में जैनियों के कई सुन्दर मंदिर हैं। जिले के सदर स्थान में जो आफिस और कचहरियाँ होती हैं वे यहाँ भी हैं। शहर के अन्दर दो थाने हैं आरा-शहर और आरा-मुफस्सल। पहले की जन-संख्या ऊपर दी जा चुकी है दूसरे की जन-संख्या १,३१,४८७ है जिसमें १,२२,७९६ हिन्दू और ८,६९१ मुसलमान हैं।

जगदीशपुर—यह सदर सब-डिविजन में एक छोटा सा शहर है जिसकी जन-संख्या ९६६१ है। यह शहर पहले चारो ओर जंगलों से घिरा था। कुँवरसिंह यहीं के रहनेवाले थे। जंगलों के कारण अंगरेज लोग आन्दोलनकारियों को दबाने में बहुत दिनों तक असमर्थ रहे। एक बार दो सौ अंगरेज सैनिक इन पर चढ़ाई करने के लिये जंगल में घुसे थे पर आन्दोलनकारियों ने उनका ऐसा सामना किया कि वे लोग घबड़ा कर भागे। उन लोगों की बड़ी दुर्दशा हुई। २०० में सिर्फ़ ५९ सैनिक जीते वापस आ सके। पीछे बहुत खर्च करके जंगल कटवाया गया तब जाकर आन्दोलनकारी दबाये जा सके। अब उस स्थान में खेती खूब हो रही है। जगदीशपुर में थाना का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ७७,९६० है जिसमें ७२,७४५ हिन्दू, ५,१५६ मुसलमान और ५९ ईसाई हैं।

देववरूणार्क—यह गाँव आरा से २७ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ दो बहुत पुराने मंदिर हैं। बड़े मंदिर के सामने गुप्त-

साम्राज्य के समय के चार स्तम्भ हैं जिनमें एक पर जीवित गुप्त (७४० ई०) की शिलालिपि है। मंदिर के पास ही गुप्तकाल का एक और स्तम्भ है जिसके ऊपर उत्तर, पूरब, दक्षिण, पश्चिम चारो दिशाओं के स्वामी कुबेर, इन्द्र, वरुण और यम की मूर्त्तियाँ हैं। नीचे आठो ग्रहों को टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ हैं।

पीरो—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,५४,८५४ है जिसमें १,४६,००८ हिन्दू, ८,८३६ मुसलमान और १० ईसाई हैं।

बरहरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६७,९२४ है जिसमें ६५,१९८ हिन्दू और २,७२६ मुसलमान हैं।

बिहिया—यह ईस्ट इंडियन रेलवे लाइन पर एक गाँव है जो व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ १८७४ ई० में बैल से चलायी जानेवाली चीनी की एक मिल बनी जो अब भी कायम है। पीछे सूबे के अन्दर इस मिल की नकल पर बहुत सी मिलें बनीं जिससे ऊख की खेती बढ़ी। बहुत पुराने जमाने में हरिहोवंश के राजपूत आदिम जाति चेरो लोगों को भगा कर बिहिया में बस गये थे। उनके किले के चिह्न अब भी देखने में आते हैं। सन् १५२८ के लगभग राजा भूपतदेव ने माहिनी नाम की एक ब्राह्मण स्त्री का सतीत्व नष्ट किया था। उस स्त्री ने अपने शरीर को अपवित्र समझ कर जला दिया और मरते समय हरिहोवंशियों को महाश्राप दिया जिसके डर से वे लोग भाग कर वहाँ से बलिया जिला चले गये। उस स्त्री की समाधि पीपल वृक्ष के नीचे रेलवे लाइन के पास है जिसे देखने को बहुत सी स्त्रियाँ आया करती हैं।

बीबीगंज—आरा से थोड़ी दूर पश्चिम यह एक गाँव है।

१७६४ ई० में जब शुजाउद्दौला और मीर कासिम की सेना से मुकाबला करने के लिये अंगरेजी सेना बाँकीपुर से बक्सर की ओर बढ़ी थी तो बीबीगंज में दोनों ओर की सेना में मुठभेड़ हो गयी थी। सन् १८५७ के बलवे में बक्सर से आते हुए अंगरेज सैनिकों को आन्दोलनकारियों ने इस स्थान पर रोका था।

मसाढ़—आरा से ६ मील पश्चिम यह एक गाँव है। इसका पुराना नाम महासार था। चीनी यात्री ह्वेन्-च्वाङ् यहाँ आया था। उसने अपने उच्चारण के अनुसार इसे मो-हो-सो-लो लिखा है। यहाँ जैनों का एक मंदिर है जो १८१९ ई० का बना हुआ है। इस मंदिर में आठ जैन-मूर्त्तियाँ हैं जिनमें सात पर सन् १३८६ ई० के शिलालेख हैं। इन लेखों से मालूम होता है कि उस समय यहाँ मारवाड़ से कुछ जैन आ बसे थे जिन्होंने मूर्त्तियों का निर्माण कराया था। इन लेखों से इस गाँव का पुराना नाम महासार भी सिद्ध होता है। यहाँ की बाकी एक मूर्त्ति पर, जो १८१९ ई० की है, लिखा है कि जब करुप देश में अंगरेजों का राज्य था उस समय आरामनगर के बाबू शंकरलाल ने यह मूर्त्ति प्रदान की थी। इस लेख से आरा का पुराना नाम आरामनगर और शाहाबाद जिले का पुराना नाम करुप देश साबित होता है। वाल्मीकि रामायण में करुप और मलद प्रान्त बहुत पवित्र स्थान माना गया है। कुछ लोग अनुमान करते हैं कि ये ही दोनों अब कारीसाथ और मसाढ़ गाँव के रूप में हैं और पास ही पास मौजूद हैं। यहाँ शिवलिंग बहुत पाये जाते हैं। कारीसाथ स्टेशन के पास एक पुराना जलाशय है जिसे लोग शिवभक्त बाणासुर की कन्या उषा की क्रीड़ावापी कहते हैं। यहाँ से कुछ दूर बलि नामक गाँव बाणासुर के पूर्वज बलि की राजधानी समझा जाता है।

महादेवपुर—सदर सब-डिविजन के बिलकुल दक्षिण में यह एक गाँव है। यहाँ ४२ फीट ऊँचे दो मंजिले मंदिर का भग्नावशेष है।

सन्देश—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५६,४१४ है, जिसमें ५३,४२५ हिन्दू, २,९८५ मुसलमान और ४ अन्य जाति के लोग हैं।

सहर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६३,३२३ है, जिसमें ५८,८८७ हिन्दू और ४,४३६ मुसलमान हैं।

शाहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ९२,०११ है, जिसमें ८७,०२२ हिन्दू, ४,७५० मुसलमान और २३९ ईसाई हैं।

बक्सर सब-डिविजन

यह सब-डिविजन जिले के उत्तर-पश्चिम भाग में है। यह २५°१६' और २५°४३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°४६' और ८४°२२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ६७३ वर्गमील और जन-संख्या ३,८३,०५० है। इसमें बक्सर और डुमराँव ये दो शहर तथा ७७२ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में बक्सर, राजपुर, डुमराँव, नावानगर और बरहमपुर ये ५ पुलिस स्टेशन हैं। सब-डिविजन के प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे हैं:—

बक्सर—गंगा के किनारे यह सब-डिविजन का सदर-आफिस है जो २५°३४' उत्तरीय अक्षांश और ८३°५८' पूर्वीय देशान्तर पर है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यहाँ की जन-संख्या १३,४४९ है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन और विहार का सबसे बड़ा सेन्ट्रल जेल है। बक्सर थाने की जन-संख्या

९१,४१० है जिसमें ८४,२९२ हिन्दू, ६,८७८ मुसलमान, १८५ ईसाई और ५५ अन्य जाति के लोग हैं।

कहते हैं कि वेद-मन्त्र की रचना करनेवाले बहुत से ऋषि यहाँ हुए। इस स्थान को वेदगर्भ कहते थे। यहाँ गौरीशंकर के मंदिर के पास एक तालाब है जिसका पहले नाम था अघसर अर्थात् पाप को दूर करनेवाला। कहते हैं कि वेदशिरा नाम के एक ऋषि ने दुर्वासा ऋषि को डराने के लिये व्याघ्र का रूप बनाया। इस पर क्रोधित होकर दुर्वासा ने उन्हें शाप दिया कि तू व्याघ्र ही बना रह। अन्त में इसी तालाब में नहाने से वेदशिरा अपना असली रूप पा सके। तब से इस तालाब का नाम पड़ा व्याघ्रसर। पीछे इस शहर का नाम धीरे-धीरे व्याघ्रसर से बघसर और अन्त में बक्सर हो गया। बक्सर में रामेश्वरनाथ महादेव का मंदिर प्रसिद्ध है। कुछ लोग कहते हैं कि बक्सर के पास ही विश्वामित्र का सिद्धाश्रम था। लेकिन वाल्मीकि रामायण से पता चलता है कि सिद्धाश्रम देवकुंड के पास सिधरामपुर नामक स्थान में रहा होगा जो पटना से करीब ५० मील दक्षिण है। ताड़का-वन, जहाँ राम-लक्ष्मण ने ताड़का का वध किया था, विहिया के पास जान पड़ता है।

सन् १७६४ में मीर कासिम और अवध के नवाव शुजा-उद्दौला की सेना को अंगरेजों ने बक्सर के पास ही हराया था। यह अंगरेजों की अन्तिम विजय थी जिसे प्राप्त कर वे बंगाल-विहार के मालिक बन बैठे। अभी कुछ दिन हुए अपनी इस विजय के स्मारक स्वरूप अंगरेजों ने यहाँ एक विजय-स्तम्भ बनवाया है।

गंगा के किनारे बक्सर का किला बहुत दिनों से युद्ध की दृष्टि से अपनी एक खास महत्ता रखता आ रहा था। इस विजय के बाद यह किला अंगरेजों के हाथ में चला आया। किले के

जन-संख्या ६२,०१८ है जिसमें ५८,६५६ हिन्दू, ३०३२ मुसलमान और ३३० ईसाई हैं।

भोजपुर—डुमराँव से दो मील उत्तर यह एक गाँव है। इसका नाम उज्जैन के राजा भोज के नाम पर पड़ा, जिसने कुछ राजपूत सरदारों को लेकर यहाँ के आदि निवासी चेरो जाति के लोगों को मार भगाया था। भोज राजाओं के पुराने महलों के चिन्ह अब भी देखने में आते हैं। इस गाँव के नाम पर परगने का भी नाम पड़ा। बल्कि जिले का सारा उत्तरीय भाग भोजपुर नाम से पुकारा जाता है। कहते हैं राजा भोजसिंह के मरने के बाद उसका राज तीन हिस्से में बँट गया—डुमराँव राज, बक्सर राज और जगदीशपुर राज। जगदीशपुर के बाबू कुँवरसिंह और अमरसिंह के नाम सिपाही-विद्रोह के सम्बन्ध में प्रसिद्ध हैं। बक्सर और जगदीशपुर के राज का अन्त हो गया। अब केवल डुमराँव राज रह गया है।

राजपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४९,७६९ है, जिसमें ४६,७२९ हिन्दू, २,८११ मुसलमान और २२९ ईसाई हैं।

ससराम सब-डिविजन

यह सब-डिविजन जिले के दक्षिण-पूरब भाग में है। यह २४°३१' और २५°२२' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°०' और ८४°२७' पूर्वीय देशान्तर के बीच में है। इसका क्षेत्रफल १,४९० वर्गमील और जन-संख्या ५,८९,५६५ है। इसमें सिर्फ एक सब-डिविजनल शहर ससराम और १,७०७ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में विक्रमगंज, दिनारा, खड़गहर, नोखा, ससराम,

रोहतास (अकबरपुर), चेनारी, डेहरी और नासरीगंज ये ९ पुलिस-स्टेशन हैं। सब-डिविजन के प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे हैं:-

ससराम—सब-डिविजन का यह मुख्य शहर ग्रैंड-ट्रंक-रोड पर २४°५७' उत्तरीय अक्षांश और ८४°१' पूर्वीय देशान्तर पर है। ई० आई० आर० के ग्रैंड-कॉर्ड-लाइन का यहाँ एक स्टेशन है। आरा से आयी हुई एक छोटी लाइन भी यहीं समाप्त होती है। ससराम शहर की जन-संख्या २५,१७५ है। ससराम का पूरा नाम सहसराम या सहस्राराम है। कहा जाता है कि यह नाम पुराण-प्रसिद्ध सहस्रार्जुन के नाम पर पड़ा, जिसकी हजारों बाहें परशुराम ने काटी थीं। सहस्रार्जुन भाग कर यहीं आया था और यहीं उसकी मृत्यु हुई थी। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि राजा सहसराम के नाम पर इस शहर का नाम पड़ा। राजा को मुसलमानों ने धोखेबाजी से मार कर नगर छीन लिया था। ससराम थाने में १,११,३८६ आदमी रहते हैं, जिनमें ९५,८०८ हिन्दू, १५,२८३ मुसलमान, २६ ईसाई और २६९ अन्य जाति के लोग हैं।

ससराम में सबसे पुरानी चीज अशोक का शिलालेख है, जो शहर से पूरब चंदनपीर पहाड़ी की चोटी के पास एक छोटी गुफा के अन्दर है। जहाँ शिलालेख है वह स्थान कोई प्राचीन बौद्ध-स्थान मालूम पड़ता है, जिसे पीछे मुसलमानों ने कब्जे में कर लिया। मुसलमान लोग गुफा को चंदनपीर का चिराग-दान कहते हैं। चन्दनपीर की दरगाह पहाड़ी की चोटी पर है। इसके पास तम्बाकू के एक व्यापारी का १८०४ ई० का बना एक मकान है। पहाड़ी के नीचे जहाँगीर के वक्त की सन् १६१३ ई० की एक टूटी-फूटी मस्जिद है। यहाँ से एक मील दक्षिण तारा-चंडी पहाड़ी पर चण्डी देवी की मूर्त्ति के पास नायक प्रतापधवल नामक एक स्थानीय राजा का शिलालेख है जो १२ वीं सदी का
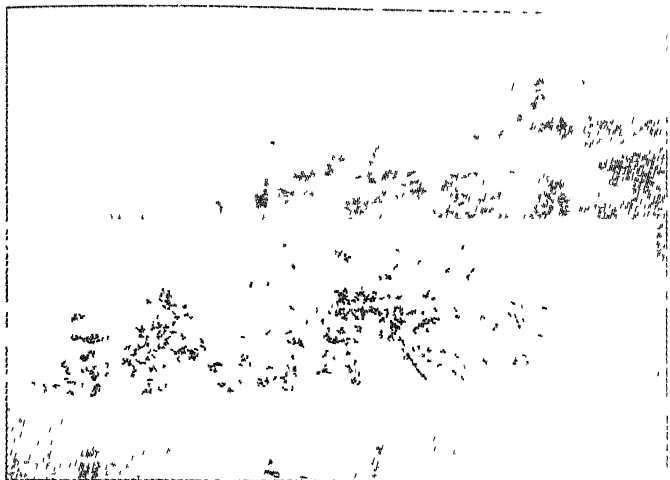
रोहतासगढ़ (शाहाबाद)
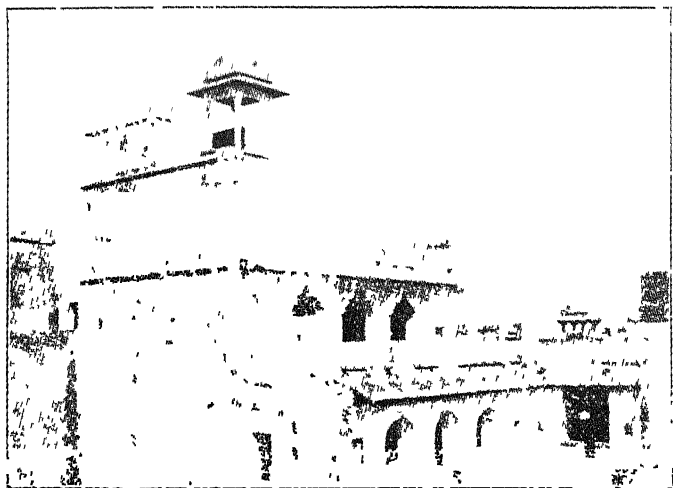
रोहतासगढ़ में राजा मानसिंह का भवन
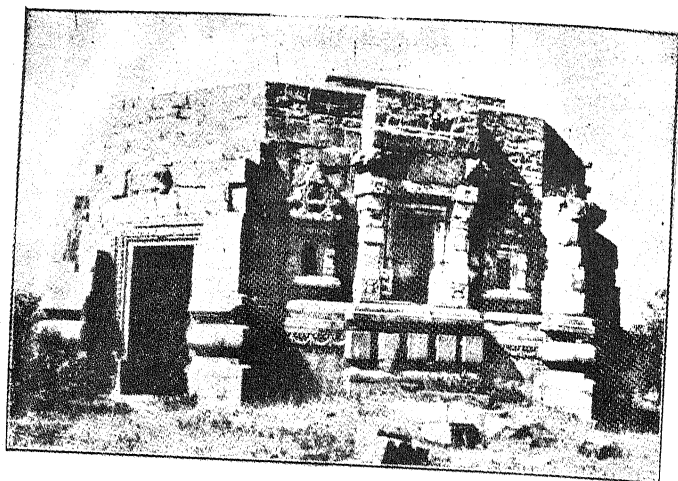
मुंदेश्वरी मंदिर, रामगढ़ (शाहाबाद)
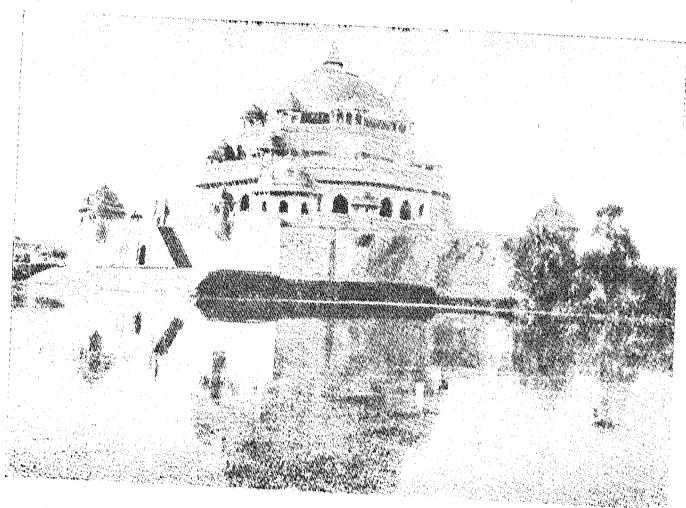
शेरशाह का मकबरा, ससराम (शाहाबाद)

है। इस राजा का शिलालेख तुनराही में भी पाया जाता है।

ससराम में देखने लायक सब से सुन्दर चीज एक बड़े तालाब के बीच बना हुआ शेरशाह का मकबरा है। यह हिन्दुस्तान के अन्दर पठान-काल की [illegible] का एक सब से सुन्दर नमूना है। इस मकबरे को शेरशाह ने अपने जीवन-काल में ही अपने लिये बना रक्खा था। शेरशाह का जन्मस्थान यहीं था। उसकी मृत्यु यहाँ नहीं हुई थी पर उसकी लाश यहीं दफनायी गयी थी। यह मकबरा ज्यों का त्यों कायम है। शहर के बीच में शेरशाह के पिता हसन खाँ सूर का मकबरा है जो १५३८ ई० का बना है। यह भी एक सुन्दर मकबरा है लेकिन अब कुछ टूटी-फूटी हालत में है। शेरशाह के मकबरे से आधा मील उत्तर-पच्छिम एक तालाब के ही अन्दर शेरशाह के बेटे बादशाह सलीम शाह का मकबरा है। यहाँ उसकी लाश १५५३ ई० में ग्वालियर से लायी गयी थी। इस राजवंश का पतन शीघ्र ही हो जाने से यह मकबरा कभी पूरा नहीं किया जा सका। इस मकबरे में जाने का पत्थर का पुल बहुत ही सुन्दर है। शेरशाह का मकबरा बनवाने वाला अफसर अलाबल खाँ का टूटा-फूटा मकबरा भी शहर के बाहर दक्षिण की ओर देखने में आता है।

शहर के अन्दर उल्लेख योग्य दूसरी इमारतें किला, ईदगाह और तुर्की हम्माम हैं। किला नामक इमारत को लोग हसन खाँ सूर का महल बताते हैं। ईदगाह शाहजहाँ के वक्त में मुजाहिद खाँ ने बनवाया था। तुर्की हम्माम शेरशाह के समय का समझा जाता है। ससराम में शेख कबीर दरवेश का कायम किया हुआ एक खनका है जहाँ एक मस्जिद और एक बड़ा मदरसा है। बादशाह फर्रुखसियर ने १७१७ ई० में और शाह आलम ने १७६२ ई० में यहाँ के लिये कुछ गाँव दिये थे।

अकबरपुर—रोहतासगढ़ के पास सोन के किनारे यह एक गाँव है जिसे राजा मानसिंह ने सम्राट् अकबर के नाम पर बसाया था। यहाँ डेहरी-रोहतास-लाइट-रेलवे समाप्त होती है। इसके पास १७ वीं सदी का एक मकबरा है। यहाँ अस्पताल, थाना और डाक-बंगला हैं। लेकिन थाने का नाम रोहतास ही है। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता-युद्ध में छोटा नागपुर के देशभक्त सैनिक चतरा में अंगरेजी सेना से लड़ने के बाद यहीं चले आये थे। लेकिन यहाँ भी जब अंगरेजों ने उन्हें तंग किया तो वे रोहतासगढ़ के जंगल में चले गये।

कोआथ—यहाँ एक अस्पताल और पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के इंजिनियर का सदर आफिस है।

करगहर—यहाँ थाना आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५६,४१२ है, जिसमें ५३,५०४ हिन्दू और २,९०८ मुसलमान हैं।

गुप्तेश्वर—शेरगढ़ से आठ मील की दूरी पर कैमुर की पहाड़ी में यह एक गुफा है जिसमें एक शिवलिंग है। गुफा के अन्दर कई खोह हैं। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है।

चेनारी—यहाँ थाना आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २४,८८५ है, जिसमें २३,०१९ हिन्दू और १,८६६ मुसलमान हैं।

डेहरी—सोन के किनारे यह स्थान व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ ईस्ट इंडियन रेलवे के ग्रैंड-कार्ड-लाइन का एक स्टेशन है। यहाँ ग्रैंड-ट्रंक-रोड सोन नदी को पार करती है। यह सोन नहर का केन्द्र स्थान है। यहाँ डालमिया एण्ड कम्पनी के कई बड़े-बड़े कारखाने और मिल हैं। इस कारण अब इसका नाम डालमिया नगर पड़ गया है। यहाँ सोन नदी पर १०,०५२ फीट लम्बा पुल है। यह हिन्दुस्तान में तो सबसे बड़ा पुल है ही लेकिन दुनियाँ के पुलों में भी इसका दूसरा स्थान है। पहला स्थान

यूरोप की टे नदी के पुल का है। डेहरी में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५३,८८१ है, जिसमें ४९,१७२ हिन्दू, ४,५७९ मुसलमान, १२७ ईसाई और ३ अन्य जाति के लोग हैं।

तिलौथू—ससराम और रोहतासगढ़ के बीच यह एक गाँव है जहाँ औरंगजेब के वक्त की एक मस्जिद है।

तुतराही—कुदरा नदी की एक शाखा तुतराही इसी स्थान पर पहाड़ी से अलग होती है। यह स्थान तिलौथू से ५ मील पश्चिम है। यहाँ शीतला देवी और जगधात्री देवी के मंदिर हैं और पास ही में ११५८ ई० की एक शिलालिपि है। इस शिलालेख से मालूम होता है कि नायक प्रतापधवल नाम का एक स्थानीय राजा, जिसका जिक्र रोहतासगढ़ और ससराम के ताराचंडी चट्टान के शिलालेखों में भी हुआ है, अपने परिवार, राजपंडित, कोपाध्यक्ष, द्वारपाल और दास-दासियों के साथ यहाँ तुतराही जल-प्रपात के पास तीर्थ करने आया था। इसीके पास एक चट्टान में खोदी हुई देवी की मूर्ति के चारो ओर कई शताब्दी बाद के कुछ शिलालेख हैं।

डालमिया नगर—दे० "डेहरी"।

दिनारा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५१,७४९ है, जिसमें ४९,८७१ हिन्दू और १,८७८ मुसलमान हैं।

देव मार्कण्डेय—नासरीगंज से ५ मील उत्तर यह एक गाँव है जहाँ एक टील्हे पर तीन मंदिर और तीन शिवलिंग हैं। कहते हैं प्रधान मंदिर विक्रम सं० १२० (६३ ई०) में राजा फुलचंद चेरो की स्त्री गोभाविनी का बनवाया हुआ है। इस मंदिर में विष्णु और सूर्य की मूर्त्तियाँ हैं; दूसरे मंदिर में सूर्य की और तीसरे में चौमुखी महादेव की मूर्त्ति हैं। जेनरल कनिंघम ने इन मंदिरों

को छठी-सातवीं सदी का बताया था पर पीछे के अन्वेपकों ने इन्हें इसके बहुत दिन बाद का बताया है।

नासरीगंज—यह व्यापार का एक केन्द्र है। पहले यहाँ कागज बनाने के छोटे-छोटे २१ कारखाने और चीनी साफ करने के ४२ कारखाने थे। कागज बनाने का थोड़ासा काम हाल तक होता रहा है। अब यहाँ तेल, आटा और चीनी का मिल खुला है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५०,७२३ है जिसमें ४४,५९१ हिन्दू, ६,१२६ मुसलमान और ६ अन्य जाति के लोग हैं।

नोखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४३,७७६ है, जिसमें ४१,२९२ हिन्दू, २,४२५ मुसलमान और ५९ ईसाई हैं।

विक्रमगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,५६,४४१ है, जिसमें १४४,०७१ हिन्दू, १२,२८१ मुसलमान और ८९ ईसाई हैं।

रोहतासगढ़—यह प्राचीन पहाड़ी किला जिले के अन्दर देखने लायक सबसे सुन्दर चीजों में एक है। यह किला उत्तर-दक्षिण करीब ५ मील लम्बा और पूरब-पच्छिम करीब ४ मील चौड़ा है। इसका घेरावा करीब २८ मील है। इस किले का नाम सुप्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम पर पड़ा है। यहाँ हरिश्चन्द्र और रोहिताश्व दोनों के मंदिर हैं। लोगों का कहना है कि यहाँ राजा रोहिताश्व की राजधानी थी। इस जिले के आदिवासी खरवार, ओराँव और चेरो सभी के वंशज बताते हैं कि हमारे पूर्वज किसी समय इस गढ़ के मालिक थे। गढ़ के कई स्थानों में १२ वीं और १३ वीं सदी के कुछ शिला-लेख हैं। फुलवारी नामक स्थान के ११६९ ई० के एक लेख से

मालूम पड़ता है कि जपिला के नायक प्रतापधवल ने रोहतासगढ़ तक एक सड़क बनवायी थी। पलामू जिले के अन्दर सोन के दूसरे किनारे पर वर्तमान जपला ही वह जपिला स्थान समझा जाता है। इस राजा के सम्बन्ध में ससराम की पास को ताराचंडी पहाड़ी पर तथा तुतराही में भी शिलालेख हैं। यहाँ के एक दूसरे शिलालेख से मालूम पड़ता है कि यह राजा खयारवल वंश का था। कुछ लोग कहते हैं कि शायद इसी शब्द का अपभ्रंश, खरवार शब्द है। लाल-दरवाजा के पास १२२३ ई० का शिलालेख है, जिसमें प्रतापधवल के एक वंशज का वर्णन है।

१५३८ ई० में यह किला हिन्दू राजा के हाथ से शेरशाह के हाथ में चला गया। कहते हैं कि जब चुनारगढ़ शेरशाह के हाथ से निकल गया तो उसने रोहतासगढ़ पर ही कब्जा कर लेना चाहा। लेकिन इस किले को जीतना आसान काम नहीं था इसलिये उसने चालबाजी सोची। उसने गढ़ के हिन्दू राजा को कहला भेजा कि हुमायूँ हम पर चढ़ आया है, हमारे स्त्री-बच्चे और खजाने को अपने यहाँ रहने दीजिये। राजा ने विपत्-काल में शरण आये हुए की रक्षा करना धर्म समझा। पर शेरशाह ने डोलियों पर बेगमों और खजाने को न भेज कर उन-पर सशस्त्र अफगान सिपाहियों को भेजा और पीछे खुद भी वहाँ पहुँचा। राजा जान लेकर भागा और किला तथा राजकोष शेरशाह के हाथ लगा। हुमायूँ से लड़ते समय शेरशाह ने अपने खजाने और बाल-बच्चे को इसी गढ़ में रखा था।

अकबर के वक्त में जब मानसिंह बंगाल विहार का वायसराय बनाया गया तो उसने रोहतासगढ़ को ही अपना सदर आफिस बनाया। उसने किले की पूरी मरम्मत करायी, यहाँ अपने रहने के लिये महल बनवाये, जलाशय दुरुस्त कराया

और परसियन तरीके पर एक सुन्दर बाग लगाया। जब वह मर गया तो किला बादशाह के वजीर के प्रबन्ध में चला गया जो यहाँ के लिये गवर्नर नियुक्त किया करता था। १६४४ ई० में शाहजहाँ ने अपने पिता से विद्रोह करते समय अपने परिवार के लोगों को यहीं रखा था। जब मीर कासिम उधुआनाला के पास अंगरेजों से हार गया तो उसने अपने स्त्री-बच्चे, अपने साथियों के स्त्री-बच्चे तथा खजाने को इसी किले में रक्षा के लिये भेजा था। जब बक्सर में मीर कासिम की अन्तिम हार हुई तो वह अपने स्त्री-बच्चों को रोहतास से भी लेकर भागा।

किले का मुख्य भाग अब राजघाट और कठौतिया में दीख पड़ता है। गढ़ के भीतर के महलों में तख्त-पादशाही और आइना-महल बहुत सुन्दर हैं। तख्त-पादशाही चौमंजिला इमारत है। गढ़ के अन्दर फैले हुए बहुत से पुराने टूटे फूटे मकान हैं। इनमें मुख्य शेरशाह के वक्त की इमारत जामा मस्जिद या आलमगीर मस्जिद तथा हवस खाँ का रौजा है। रौजा के सामने १५८० ई० की बनी एक मस्जिद है। पास में मुगलकाल की बहुत सी कब्रे हैं। राजमहल से थोड़ी दूर पर एक गुफा में एक मुसलमान पीर की कब्र है। रोहतास अधित्यका के नीचे एक बड़ी कब्र पर फारसी लिपि में लिखा है कि जब किला १६३८ ई० में बना था तो उस समय किलादार इखलास खाँ था।

डेहरी से रोहतास तक छोटी लाइन गयी है। रोहतास के पास अकबरपुर एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस है। लेकिन थाना का नाम रोहतास ही है। इस थाने की जन-संख्या ४०,३१२ है, जिसमें ३५,३८० हिन्दू, ४९१६ मुसलमान और १६ अन्य जाति के लोग हैं।

सूरजपुरा—विक्रमगंज से ४ मील उत्तर-पच्छिम यह एक

गाँव है जहाँ एक पुराने खानदान के कायस्थ जमींदार रहते हैं, जिन्हें राजा की उपाधि है। वर्तमान राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह और उनके भाई कुमार राजीवरंजनप्रसाद सिंह अपने सार्वजनिक कामों के लिये प्रसिद्ध हैं।

शेरगढ़—यह ससराम से २० मील दक्षिण-पच्छिम शेरशाह का सन् १५४०–४५ का बनवाया एक टूटा-फूटा किला है। रोहतासगढ़ की अपेक्षा शेरगढ़ की अधित्यका नीची है लेकिन इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। इस किले के चारो ओर पत्थर की दीवाल है, जिसका घेरावा ४ मील है। बीच-बीच में कई मजबूत फाटक बने हुए हैं। यहाँ के महल, दिवानखाना और तहखाना आदि देखने लायक चीजें हैं। एक फाटक के पास एक पुरानी मस्जिद है।

भभुआ सब-डिविजन

यह सब-डिविजन जिले के दक्षिण-पश्चिम भाग में है। यह २४°३२′ और २४°२५′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°१९′ और ८३°५४′ पूर्वीय देशान्तर के बीच में है। इसका क्षेत्रफल १३०१ वर्गमील और जन-संख्या ३,२४,८४१ है। इसमें सिर्फ एक सब-डिविजनल शहर भभुआ और १,३०४ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में मोहनिया, रामगढ़, दुर्गावती, कुदरा, भभुआ, चैनपुर, अधौरा और चाँद ये ८ पुलिस-स्टेशन हैं। सब-डिविजन के प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे हैं—

भभुआ—भभुआ सब-डिविजन का यह सदर आफिस है, जो २५°३′ उत्तरीय अक्षांश और ८३°३७′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ की जन-संख्या ६,००२ है। यहाँ ई० आई० आर० की

ग्रैंड-कॉर्ड-लाइन का स्टेशन है। भभुआ थाने की जन-संख्या ९८,८०० है, जिसमें ९२,०२७ हिन्दू, ६७२७ मुसलमान, २४ ईसाई और २२ अन्य जाति के लोग हैं।

अधौरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १४,०१५ है जिसमें १३,६०० हिन्दू और ४१५ मुसलमान हैं।

कुदरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २७,२९७ है, जिसमें २५,३१८ हिन्दू, १,९७५ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

गारोहाट—भभुआ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम गारोहाट में, कहा जाता है कि, एक चेरो सरदार का निवास-स्थान था। यहाँ पुराने मकानों के चिह्न बहुत दूर तक देखने में आते हैं।

चाँद—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २९,९७६ है, जिसमें २७,६१८ हिन्दू और २,३५८ मुसलमान हैं।

चैनपुर—भभुआ से ७ मील पश्चिम यह एक गाँव है। यहाँ शेरशाह के एक दरबारी का मकबरा है। शेरशाह या अकबर के वक्त का यहाँ एक किला भी है जिसके चारो ओर खाई है। यहाँ हरसू ब्रह्म का स्थान है जिसे बहुत दूर-दूर के लोग जानते हैं। कहते हैं हरसू ब्राह्मण यहाँ के राजा शालिवाहन के पुरोहित थे। किसी कारण रानी उनसे नाराज हो गयी। रानी के कहने से राजा ने उनका घर ढहवा दिया। इस पर उन्होंने १४२७ ई० में राजा के द्वार पर धरना देकर आत्म-हत्या कर ली। वे ब्रह्मभूत हो गये और राजा के वंश का नाश कर दिया। एक लड़की बची जिसका वंश अब भी चल रहा है। कहते हैं वह लड़की उन पर बहुत दया करती थी। चैनपुर में थाने का सदर आफिस है।

इस थाने की जन-संख्या ३९,७८७ है, जिसमें ३४,६०४ हिन्दू, ५,१६२ मुसलमान, ५ ईसाई और १६ अन्य जाति के लोग हैं।

दरौली—यहाँ कुछ पुराने मंदिरों और मकानों के चिन्ह हैं।

दुर्गावती—यहाँ डाक-घर, पुलिस-स्टेशन, डाक-बँगला और रेलवे-स्टेशन हैं। पहले इसी के पासवाले गाँव सवथ में थाना था जिसके अन्दर मोहनिया और भभुआ भी थे। यहाँ १७६४ ई० में नवाब मीर जाफर और ईस्ट-इंडिया-कम्पनी की सेना ठहरी थी। दुर्गावती थाने की जन-संख्या २७,६०० है, जिसमें २५,३५३ हिन्दू, २,२४० मुसलमान और ७ ईसाई हैं।

पटना—गारोहाट से कुछ मील दक्षिण इस स्थान में आदिम जाति सवर की पुरानी इमारतों के चिन्ह हैं।

भगवानपुर—भभुआ से ६ मील दक्षिण एक गाँव है जहाँ बहुत पुराने-घराने के राजपूत जमींदार रहते हैं। उनका कहना है कि वे लोग तक्षशिला से आये थे और प्रसिद्ध राजा पोरस उनके पूर्वज थे।

मुन्देश्वरी—भभुआ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम रामगढ़ गाँव के पास एक पहाड़ी पर जिले का सबसे पुराना हिन्दू-मंदिर है जो ६३५ ई० का बना बताया जाता है। यहाँ और भी कितने पुराने मंदिरों और मूर्त्तियों के भग्नावशेष हैं।

मोहनिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ३८,०३४ है जिसमें ३४,६२८ हिन्दू और ३,४०६ मुसलमान जाति के लोग हैं।

रामगढ़—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४९,३३२ है, जिसमें ४५,९४७ हिन्दू, ३,३८४ मुसलमान और १ ईसाई हैं।

वैद्यनाथ—रामगढ़ से ६ मील दक्षिण यह एक गाँव है।

कहते हैं कि यह आदिम सवर जाति के राज्य का केन्द्र स्थान था। यहाँ एक टील्हे पर पुराने मंदिरों, मूर्त्तियों और स्तम्भों के भग्नावशेष मिलते हैं। पालवंशी राजा मदनदेव पाल की एक शिलालिपि भी यहाँ मिली है।

सवथ—दे० "दुर्गावती"।

शाहाबाद जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	२,७३,००५	कुम्हार	२५,४६३
राजपूत	२,००,२५३	मुसहर	२०,६५०
ब्राह्मण	१,६६,५४४	धोबी	१७,३८४
कोयरी	१,४८,६५६	बरही	१६,६६५
चमार	१,३८,६२१	मल्लाह	१५,६४२
दुसाध	६३,३६६	पासी	१२,८७२
कहार	६७,५७४	बनिया	११,२५५
भूमिहार ब्राह्मण	६१,१७६	रजवार	६,८८४
कॉंदू	६०,५८६	ताँती	७,६६८
कुरमी	५६,०४०	माली	५,१८२
जोलाहा	५२,३१६	डोम	४,४६२
तेली	४८,५१४	हलालखोर	२,५२५
कायस्थ	३६,४४६	नट	२,०६१
कमार	३१,७८६	ओराँव	१,७१०
हज्जाम	२८,२४६	भुइयाँ	७१२

मुजफ्फरपुर जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

मुजफ्फरपुर जिला उत्तर विहार में २५°२९′ और २६°५३′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°५३′ और ८५°५०′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है।

जिले के उत्तर में नेपाल राज्य और पूरब में दरभंगा जिला है। दक्षिण में गंगा नदी इसको पटना जिला से अलग करती है। इसी तरह दक्षिण-पश्चिम में बड़ी गण्डक प्राकृतिक सीमा का काम करती हुई सारन जिले से इसको पृथक रखती है। इसके उत्तर-पश्चिम भाग में चम्पारन जिला पड़ता है। उत्तर में नेपाल राज्य और बृटिश राज्य के बीच सीमा का काम करने के लिये खाइयों और नदियों के अलावे ईंट और पत्थर के स्तम्भ हैं।

उत्तर से दक्षिण तक इस जिले की सबसे अधिक लम्बाई ९६ मील और पूरब से पश्चिम तक सबसे अधिक चौड़ाई ४८ मील है। जिले का रकबा ३,०३६ वर्गमील है।

प्राकृतिक बनावट

मुजफ्फरपुर जिला नदियों के बहाव से बनी हुई एक समतल भूमि है। इसके बीच-बीच में बहुत सी नदियाँ अधिकतर दक्षिण-पूरब की दिशा में बहकर इसे अनेक टुकड़ों में बाँटती हैं। इस भूभाग में कहीं पहाड़ नहीं है। जहाँ-तहाँ नीची जमीन

हैं जिनके होकर वर्षा या बाढ़ का पानी दक्षिण की ओर बहकर गंगा में मिलता है। बाकी सारी भूमि हरे-भरे खेतों और बाग-बगीचों से भरी हैं।

बागमती और छोटी गण्डक जिले को मुख्य तीन भागों में बाँटती हैं—एक तो छोटी गण्डक के दक्षिण का भाग, दूसरे, छोटी गण्डक और बागमती के बीच का दोआब और तीसरे, बागमती के उत्तर का भाग। पहले भाग के अन्दर, जिसको दक्षिण और पश्चिम से गंगा और बड़ी गण्डक घेरती है, सारा हाजीपुर सब-डिविजन और सदर सब-डिविजन का बहुत बड़ा हिस्सा है। यह जिले का सबसे अधिक उपजाऊ भाग है। यह भाग एक ऊँची भूमि है। सिर्फ जहाँ-तहाँ ही नीची भूमि पायी जाती है। हाँ, इसके दक्षिण-पूरब भाग में कुछ जलाशय हैं। इनमें सबसे बड़ा जलाशय ताल बरैला है। छोटी गण्डक और बागमती के बीच की दोआब भूमि जिले की सबसे नीची भूमि है और यहाँ बहुत बाढ़ आती है। बाढ़ से बचने के लिये बाँध का प्रबन्ध किया गया है। नदियों के धारा-परिवर्तन के कारण यहाँ सब तरफ बहुत से अर्ध गोलाकार जलाशय बन गये हैं। यह भाग बहुत ही छोटा है। सबसे बड़ा भाग तीसरा भाग है जिसमें जिले का लगभग आधा हिस्सा पड़ता है। इसके अन्दर सारा सीतामढ़ी सब-डिविजन और थोड़ा सा सदर सब-डिविजन है।

नदियाँ

गंगा, बड़ी गण्डक, छोटी गण्डक, बागमती, लखनदेई, अधवारा और बाया जिले की मुख्य नदियाँ हैं। छोटी-छोटी धाराएँ तो कितनी ही हैं। बेलसंड और पुपरी से उत्तर के भाग

में नदियों का बहाव प्रायः उत्तर से दक्षिण रहता है, लेकिन उससे दक्षिण के भाग में सभी नदियाँ प्रायः दक्षिण-पूरब की ओर ही बहती हैं।

गंगा—हाजीपुर के पास गंगा और गण्डक का संगम है। यहाँ से लेकर दक्षिण-पूरब की ओर २० मील तक गंगा जिले की दक्षिणी सीमा का काम करती है। साधारण तौर पर इसकी चौड़ाई एक मील रहती है पर बरसात के दिनों में चौड़ाई बहुत ही बढ़ जाती है। गंगा में बड़ी-बड़ी नावें और जहाज चला करते हैं।

बड़ी गण्डक—गण्डक का प्राचीन नाम नारायणी, शालिग्रामी और सदानीरा है। नेपाल में यह जिस स्थान से निकलती है उस स्थान को लोग सप्तगण्डकी कहते हैं, क्योंकि यहाँ गण्डक की सात धाराएँ बहती हैं। यह चम्पारन जिला से आती हुई करनौल नामक स्थान के पास मुजफ्फरपुर जिला में प्रवेश करती है। यहाँ से यह दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई अपनी १९२ मील की यात्रा समाप्त कर हाजीपुर के पास गंगा में मिल जाती है। बाढ़ से लोगों को बचाने के लिये गण्डक के दोनों किनारे पर बाँध हैं।

बागमती—यह नदी नेपाल में काटमंडू के पास निकल कर ढेंग स्टेशन से २ मील उत्तर मुजफ्फरपुर जिला में प्रवेश करती है। लालबकया से मिलने के बाद यह ३० मील तक जिले की पश्चिमी सीमा का काम करती हुई नरवा के पास दक्षिण-पूरब की ओर मुड़कर बहने लगती है। यहाँ से यह छोटी गण्डक के समानान्तर चलती हुई मुजफ्फरपुर से २० मील पूरब हाथा गाँव के पास जिले से बाहर हो जाती है और अन्त में दरभंगा जिले में रोसड़ा के पास छोटी गण्डक में मिल जाती है। पहाड़ी

नदी होने के कारण बरसात के दिनों में इसमें बहुत पानी हो जाता है और बाढ़ में लोगों को बड़ी क्षति पहुँचती है, पर सूखे दिनों में तो इसमें कहीं-कहीं सिर्फ घुटने भर ही पानी रह जाता है। इसकी एक पुरानी धारा मलै से निकलकर बेलनपुर के पास इससे मिल गयी है। इसे लोग पुरानी या बूढ़ी बागमती या पुरानधार बागमती कहते हैं।

बागमती की सहायक नदियाँ—बागमती की कई सहायक नदियाँ हैं। इनमें मुख्य लालबकया, भुरंगी, लखनदेई और अधवारा या छोटी बागमती हैं। पहली सहायक नदी लालबकया है जो दक्षिण की ओर बहती हुई अदौरी के पास बागमती में मिल गयी है। दूसरी नदी भुरंगी है जो असल में शाखा नदी है। यह मनिआरी के यास बागमती से निकल कर बेलनपुर में इससे फिर मिल जाती है। लखनदेई नेपाल से निकलती है और इथरवा के पास मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करती है। यह पहले एक छोटी धारा के रूप में बहती है, पर पीछे जब सौरन और बसियाद नाम की धाराएँ इससे आ मिलती हैं तो इसका रूप बड़ा हो जाता है। यह दक्षिण की ओर सीतामढ़ी तक जाती है और वहाँ से दक्षिण-पूरब की तरफ मुड़कर डुमरा, रूनी सैयदपुर, ओरई और तेहवारा होती हुई बागमती में मिल जाती है। यह बड़ी तेजी से बढ़ती और बड़ी तेजी से घट भी जाती है। इसके बाद की सहायक नदी अधवारा या छोटी बागमती है। इसे भी अपनी कई सहायक नदियाँ हैं। कमला कमतौल के पास इससे मिलती है। इसके ऊपर पाली के पास इसकी एक धारा पश्चिम की ओर जाकर रसूलपुर के पास एक चौर में समाप्त हो जाती है। पाली के पहले दाउस नदी पूरब से और झीम नदी पश्चिम से आकर इससे मिली है। दाउस नदी

भी बीगी और बिलौंतो नामक धाराओं के मिलने से बनी है। इन सब सहायक धाराओं को लेकर अधवारा या छोटी बागमती दरभंगा से ८ मील दक्षिण हायाघाट में बागमती से मिल गयी है।

छोटी गण्डक—छोटी गण्डक को लोग हरहा, सिकरान या बूढ़ी गण्डक भी कहते हैं। यह चम्पारण जिले की सुमेश्वर पहाड़ी से हरहा घाटी के पास से निकलती है और गोसेवाट गाँव के पास मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करती है। यह बागमती के समानान्तर में दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई मुजफ्फरपुर होते हुए पूसा के समीप दरभंगा जिले में घुसती है और अन्त में मुँगेर के समीप गंगा में मिल जाती है। मुजफ्फर-पुर जिले में इसकी लम्बाई ४० मील है। गर्मी के दिनों में जहाँ-तहाँ लोग इसे पैदल पार कर जाते हैं। इसमें बरसात के समय हजार मन तक की नाव मुजफ्फरपुर तक और पाँच सौ मन तक की नाव मरसंडी तक जा सकती है।

बया—बया बड़ी गण्डक से निकली हुई एक धारा है। यह साहेबगंज के पास बड़ी गण्डक से निकल कर करनौल के पास मुजफ्फरपुर जिला में प्रवेश करती है। यहाँ से यह दक्षिण-पूरब की ओर देवरिया, करनौल, सरैया, भटौलिया, करहरी और छितवारा आदि स्थानों से होती हुई वाजिदपुर के पास जिले को छोड़ती है और अन्त में दरभंगा जिला में दलसिंह-सराय के दक्षिण गंगा में मिल जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

मुजफ्फरपुर जिले की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यप्रद है। जाड़ा, गर्मी और बरसात यही तीन यहाँ के प्रधान मौसिम हैं।

पूस-माघ जाड़ा, वैशाख-जेठ गर्मी और सावन-भादो वर्षा के मुख्य महीने हैं। गर्मी के दिनों में यहाँ का औसत तापमान साधारणतः अधिक से अधिक ९७° और जाड़े के दिनों में साधारणतः कम से कम ४९° रहता है। हवा में नमी या आर्द्रता साल के अन्दर फी सैकड़े ६६ से लेकर ९१ तक जाती है। वर्षा साधारण तौर पर साल में ४५ से ५० इंच तक होती है। पूर्वी और पश्चिमी यही दो मुख्य वायु हैं। पूर्वी वायु में आर्द्रता और पश्चिमी वायु में शुष्कता रहती है।

जिले की मुख्य बीमारी मलेरिया है। अधिकांश लोग इसी बीमारी से मरते हैं। इसके बाद हैजे का स्थान आता है। इस जिले में प्लेग पहले-पहल १९०० ई० में हुआ था। तब से जब-तब यह फैल ही जाता है। हैजा, प्लेग और चेचक से बचने के लिये सरकार की ओर से टीका लगाने का प्रबन्ध है। घेघा की शिकायत यहाँ बहुत है। छोटी गण्डक के पास रहनेवालों, विशेषकर इसके उत्तर भाग में बसनेवालों को यह रोग अधिक होता है। छोटी गण्डक और बागमती के किनारे रहनेवालों को बहरा और गूँगा होने का अधिक डर रहता है। मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी और शिवहर थाने में, जिनसे होकर ये नदियाँ बहती हैं, इसकी शिकायत अधिक है। बहरे गूँगे विहार उड़ीसा के अन्दर सबसे अधिक चम्पारण में और उसके बाद मुजफ्फरपुर में ही हैं। सन् १९३१ में यहाँ २,६५४ बहरे-गूँगे थे। यहाँ के अंधों की संख्या ३,५८८, कोढ़ियों की संख्या ९७७ और पागलों की संख्या ४४२ थी। सन् १९३५–३६ में जिले के अन्दर २९ अस्पताल थे। मुजफ्फरपुर में एक कुष्ठाश्रम है जहाँ कुष्ट रोगियों के इलाज का प्रबन्ध है।

जानवर

मुजफ्फरपुर जिले में अब जंगल कुछ भी नहीं रह गये हैं। जब जंगल थे तब यहाँ जंगली जानवर बहुत पाये जाते थे। दवामी बन्दोबस्त के कुछ साल पहले एक बर्ष के अन्दर यहाँ ५१ बाघ मारे जाने के लिये सरकार की ओर से इनाम बाँटे गये थे। अब जिले के सिर्फ उत्तर भाग में नेपाल के जंगलों से आये हुए बाघ और चीते कभी कभी देखने में आते हैं। हाँ, लोमड़ी, सियार, नील गाय, जंगली सूअर आदि अब भी सब जगह पाये जाते हैं।

तिरहुत मवेशी के लिये बहुत दिनों से मशहूर रहा है। ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी तोप वगैरह खींचने के लिये यहाँ से ही बैल मँगाती थी। सीतामढ़ी में अब भी अच्छी जाति के गाय-बैल पाये जाते हैं और उत्तर विहार के बहुत जगहों से उनकी माँग आती है। लेकिन कहा जाता है कि अब दिनोंदिन हालत खराब होती जा रही है। यहाँ भैंस केवल दूध के लिये पाली जाती हैं। दक्षिण विहार की तरह यहाँ की मिट्टी कड़ी न होने से लोग भैंसे को खेत में नहीं जोतते। भैंस के बछड़े यहाँ से बिक कर कहीं दूसरी जगह चले जाते हैं। गड़ेरी लोग ऊन से कम्बल तैयार करने के लिये भेंड़ पालते हैं। सूअर डोम आदि नीची श्रेणी के लोग और बकरियाँ अधिकतर मुसलमान लोग पोसते हैं। सवारी के लिये घोड़े पाले जाते हैं। बाढ़ के उपद्रव और चरागाह की कमी के कारण जिले में दिनों-दिन पशुओं की संख्या घट रही है। पशुओं के रोगों का इलाज करने के लिये मुजफ्फरपुर तथा सब-डिविजनों के प्रधान शहरों में पशु-औषधालय खुले हैं।

इतिहास

मिथिला-राजवंश—मुजफ्फरपुर जिला प्राचीन मिथिला का एक भाग है। वैदिक साहित्य से पता चलता है कि पंजाब से क्रम से बढ़ते हुए विदेहवंशी आर्य लोग गंडक नदी पारकर मिथिला में आये और यहाँ के जंगलों को काट कर उन्होंने खेती के लिये जमीन तैयार की। धीरे-धीरे उन्होंने यहाँ एक शक्तिशाली राज्य की भी स्थापना कर ली। कुछ दिनों के बाद यहाँ जनक नाम के एक परम प्रतापी और तत्वज्ञानी राजा हुए। उनके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान और पण्डित रहा करते थे। याज्ञवल्क्य उन्हीं के पुरोहित थे, जिन्होंने यजुर्वेद का संकलन तथा उपनिषद की रचना की थी। मिथिला आर्यों की सभ्यता और संस्कृति का एक मुख्य केन्द्र बन गयी थी। मिथिला राज्य की राजधानी जनकपुर बतायी जाती है, जो मुजफ्फरपुर जिले से कुछ ही दूर उत्तर-पूरब है। कहते हैं कि मुजफ्फरपुर जिले में सीतामढ़ी नामक जो स्थान है वहीं जनक जी ने सीता जी को पाया था।

वैशाली-राजवंश—विदेह राज्य के बाद ऐतिहासिक काल में हम यहाँ वृज्जियों का गणतन्त्र शासन पाते हैं। इस समय शासन-केन्द्र मिथिला नगर या जनकपुर से हट कर वैशाली चला आया था। इस जिले में हाजीपुर से २० मील उत्तर-पच्छिम बसाढ़ नामक जो स्थान है उसीका पुराना नाम वैशाली था। वृज्जियों का शासन् संघ-शासन था जिसमें विभिन्न जातियों के ८ छोटे-छोटे राज्य थे। इनमें लिच्छवियों का राज्य सबसे प्रधान था। मगध के राजा बिम्बिसार ने एक लिच्छवि राजकुमारी से भी विवाह किया था, जिससे अजातशत्रु नामक एक पुत्र उत्पन्न

हुआ। सयाना होने पर अजातशत्रु ने लिच्छयों पर चढ़ाई कर उनकी राजधानी वैशाली पर अधिकार जमा लिया। वह अपनी विजयी सेना लेकर हिमालय की तराई तक गया और समूचे तिरहुत पर अपना आधिपत्य कायम किया। लिच्छवियों को दबाये रखने के लिये उसने गंगा के किनारे पाटलिग्राम (वर्तमान पटना) में एक किला बनवाया, जहाँ पीछे मगध की राजधानी कायम हुई।

वैशाली राज्य वैदिक युग में ही स्थापित हुआ समझा जाता है। रामायण में लिखा है कि इक्ष्वाकु के एक लड़के विशाल ने विशाल-नगर बसाया जो कुछ दिनों के बाद वैशाली नाम से प्रसिद्ध हुआ। विशाल के वंश में क्रम से हेमचन्द्र, सुचन्द्र, धूम्राश्व, सृञ्जय, सहदेव, कुशाश्व, सोमदत्त, काकुष्ट और सुमति नाम के राजे हुए। वृज्जियों का संघ-शासन तो उसके बहुत दिनों बाद कायम हुआ।

जैनधर्म—जैन धर्म के प्रवर्तक वर्द्धमान महावीर की जन्मभूमि वैशाली नगरी ही थी। उनके पिता सिद्धार्थ नाट या नाय नामक क्षत्रियों के सरदार थे। ये लोग वैशाली के एक उपनगर कोलाग नामक स्थान में रहते थे। इसलिये महावीर को लोग वैशालीय या वैशालिक भी कहते हैं। बौद्धग्रन्थों में इन्हे नाटपुत्र कहा गया है। वैशाली के मुख्य तीन भाग थे—वैशाली, कुंदगाम और बनियागाम, जिनमें मुख्यतः क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य रहते थे। ये नगर अब बिलकुल नष्ट हो गये हैं, लेकिन इनके स्थान अब भी स्पष्ट मालूम पड़ते हैं और यहाँ इन दिनों क्रम से बसाढ़, बसुकुंद और बनिया गाँव बसे हुए हैं। यहाँ कई छोटे-छोटे राज्यों का संघ-शासन कायम था और उसके प्रधान को राजा कहते थे। सिद्धाथ का विवाह यहाँ के तत्कालीन राजा

चेटक की पुत्री या बहन त्रिशला से हुआ था। त्रिशला को लोग विदेहदत्ता या प्रियकारिणी भी कहते थे। इन्हीं के गर्भ से वर्द्धमान महावीर का जन्म ईसा से ५९९ वर्ष पूर्व हुआ था। इसी चेटक की एक दूसरी पुत्री से मगध के राजा बिम्बिसार का विवाह हुआ था।

महावीर की जब ३० वर्ष की अवस्था थी तभी उन्होंने घर-द्वार छोड़ कर सन्यास ग्रहण किया था। केलाग में नाय क्षत्रियों ने एक सुन्दर वाटिका के अन्दर एक चैत्य या धार्मिक मठ बनवाया था, जिनमें जैनधर्म के मूलप्रवर्त्तक पार्श्वनाथ के सम्प्रदाय के संन्यासी रहा करते थे। पहले तो घर छोड़कर महावीर यहीं आये। लेकिन एक वर्ष के बाद जब उनका मन यहाँ नहीं लगा तो वे बाहर निकल पड़े और बिलकुल नग्न अवस्था में रह कर अपने धर्म का प्रचार करने लगे। उनके बहुत से शिष्य हुए और उनका धर्म जैनधर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ईसा के ४९० वर्ष पूर्व महावीर की मृत्यु हुई।

बौद्धधर्म—भगवान बुद्ध का भी वैशाली से घनिष्ठ सम्बन्ध था। एक बार वैशाली में जब रोगों का बड़ा उपद्रव मचा तो वहाँ के लोगों ने उन्हें अपने यहाँ बुलाया। यहाँ पहुँच कर उन्होंने रोगों का नाश किया और लोगों को अपने धर्म का उपदेश दिया। यहाँ उनके बहुत से शिष्य हो गये। कुछ वर्षों के बाद बुद्धदेव फिर वैशाली पहुँचे। उस समय वैशाली नगर के उत्तर एक महा वन था। उस वन में वे एक कुटागार अर्थात् दो मंजिले मकान में ठहराये गये। पहले पहल यहीं उन्होंने अपने चचेरे भाई और प्रधान शिष्य आनन्द के आग्रह पर कुछ हिचकिचाहट के साथ स्त्रियों को संन्यास ग्रहण कर संघ में भरती होने और मठ में रहने की व्यवस्था दी। इसके लिये

आनन्द की विधवा माता का विशेष अनुरोध था। तीसरी बार भगवान् बुद्ध अपने मरणकाल में कुसीनारा जाते समय वैशाली आये थे। कहते हैं कि पाटलिपुत्र से वैशाली तक आने में वे दो जगह ठहरे थे—एक तो कोटिग्राम में और दूसरे नदीयग्राम में। कोटिग्राम हाजीपुर या उसके आस-पास तथा नदीयग्राम लालगंज के निकट था। वैशाली नगर पहुँच कर वे वहाँ की एक धनी स्त्री अमरपाली की आम्रबाटिका में ठहरे थे और वहाँ लोगों को उपदेश कर उसके घर पर भी गये थे। यहीं उन्होंने आगे से नगर के किसी धनिक का निमन्त्रण न स्वीकार करने का निश्चय किया था। कुछ दिन यहाँ बिताकर वे कुसीनारा गये। कहते हैं कि उन्होंने अपनी मृत्यु का भविष्य-कथन यहीं कर दिया था।

लिच्छवियों को अजातशत्रु ने परास्त कर दिया था सही लेकिन इससे वृज्जियों का संघ-शासन बिलकुल टूट नहीं गया था। वैशाली बहुत दिनों तक गंगाके उत्तर भाग का राजनीतिक और धार्मिक केन्द्र बना ही रहा। लिच्छवियों ने यहाँ भगवान् बुद्ध और आनन्द की शरीर की अस्थियों पर स्तूप बनवाया था। यहाँ बहुत से मठ थे। कई शताब्दी बाद भी चीनी यात्री य्वन्-च्वाङ् (ह्वेनसन) ने लिखा था कि यहाँ नगर के भीतर और नगर के बाहर इतने मठ आदि थे कि उनकी गिनती नहीं हो सकती थी। बौद्धों की दूसरी महासभा वैशाली में ही हुई थी। उस समय यहाँ के बहुत से बौद्ध-संन्यासी बौद्ध-धर्म के कठिन अनुशासनों में कुछ ढिलाई लाना चाहते थे, लेकिन इसके विरोधियों की संख्या भी काफी थी। दोनों दलों में बड़ा मतभेद चला। इसी बात को तय करने के लिये बौद्धों की महासभा हुई जिसमें ७०० बौद्ध-संन्यासी शामिल हुए। वादविवाद के बाद

उन्होंने बौद्ध-धर्म के अनुशासनों में किसी तरह की ढिलाई नहीं होने देने का ही निश्चय किया।

इस महासभा के बाद फिर कई शताब्दियों तक की इस जिले के सम्बन्ध की कोई उल्लेख योग्य बात मालूम नहीं है। हाँ, इतना ठीक है कि यह लिच्छवि-राज्य का एक अंग बना रहा। पर लिच्छवि-राज्य भी मगध-राज्य के आधिपत्य में ही चल रहा था। वैशाली पाटलिपुत्र से नेपाल जानेवाली सड़क पर थी। भगवान् बुद्ध के स्थानों के दर्शन के लिये इस रास्ते से जाते हुए सम्राट् अशोक वैशाली में भी ठहरे थे। यहाँ उन्होंने एक स्तम्भ बनवाया था जो अब भी कायम है। साथ ही वे यहाँ से भगवान बुद्ध के कुछ अस्थि आदि भी उठा ले गये थे। कहते हैं कि १२० ई० के करीब कुशानवंशी राजा कनिष्क ने यहाँ आक्रमण किया था और यहाँ से भगवान् बुद्ध के भिक्षा-पात्र को गांधार उठा ले गया था।

चीनी यात्री—५ वीं सदी में चीनी यात्री फाहियान जब भारत भ्रमण कर रहा था तो यहाँ भी पहुँचा था। लेकिन उसने यहाँ के सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं लिखा। दूसरा चीनी यात्री य्वन च्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ ६३५ ई० में आया। वह लिखता है कि वैशाली-राज्य का घेरा १,००० मील था। यहाँ की जमीन उपजाऊ थी और यहाँ फूल-फल खूब उपजते थे। आम और केला तो बहुत ही होता था। यहाँ के लोग बहुत सीधे, सच्चे और इमानदार होते थे। वे विद्या की बड़ी कद्र करते थे और धर्म से उन्हें प्रेम था। वैशाली के उत्तर-पूरब वृज्जियों का राज्य था, जिसका घेरा ८०० मील था। यह पूरब से पश्चिम तक बिलकुल लम्बा ही लम्बा चला गया था। इसकी राजधानी चनसुन (शायद जनकपुर) खँडहर हालत में थी और इसके निवासी

बड़े फुर्तीले और जल्दबाज थे। इनमें अधिकांश बौद्ध धर्म को नहीं मानते थे।

ह्वन्-च्वाङ् लिखता है कि उस समय वैशाली में भी बौद्ध-धर्म ह्रास पर था। पर बौद्धधर्म माननेवाले और न माननेवाले दोनों साथ-साथ रहते थे। भग्नावशेष तो यहाँ सैकड़ों विहारों के थे पर चालू विहार सिर्फ तीन चार ही थे और उनमें भी बहुत थोड़े बौद्ध-संन्यासी रहते थे। यहाँ जैनियों की संख्या बहुत थी जैसा कि जैनधर्म की जन्मभूमि में उमीद की जा सकती थी। सनातन धर्म माननेवाले हिन्दुओं के मंदिरों की संख्या २० से अधिक थी। वैशाली नगर का घेरा १२ मील था जिसमें राज-प्रासाद की घेराई ही एक मील की थी, पर राजप्रासाद बहुत अंश में टूटा-फूटा था। मकानों की हालत खराब होती जा रही थी, जंगल कट गये थे तथा तालाब और पोखरे भी बुरी दशा में थे। जगह-जगह पर पुराने खँडहर नजर आ रहे थे।

मध्ययुग—ह्वन-च्वाङ् के समय मुजफ्फरपुर जिला हर्ष-वर्द्धन (६०६–६४८ ई०) के राज्य के अन्दर था क्योंकि उस समय उसका आधिपत्य बंगाल और आसाम तक फैला हुआ था। उसके मरने पर तिरहुत के छोटे-छोटे राजे स्वतन्त्र हो गये। नवीं शताब्दी के आरम्भ में गोपाल ने पालवंश की स्थापना की और सारे विहार पर अपना आधिपत्य जमाया। ११ वीं सदी में चेदि (वर्तमान मध्यप्रान्त) के राजाओं ने पालवंश से तिरहुत को छीन लिया। १०१९ ई० में यहाँ चेदि के गांगेयदेव का अधिकार था जिसने सारे उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य कायम करना चाहा था। इस सदी के अन्त में सेनवंशी राजाओं ने पाल राज्य के उत्तरी हिस्से पर भी चढ़ाई कर दी। तिरहुत सेन राज्य का उत्तर-पश्चिम का भाग बना।

लक्ष्मणसेन इस वंश का अन्तिम बड़ा राजा हुआ जिसका चलाया लक्ष्मण सम्वत् विहार के इस भाग में अब भी प्रचलित है। इसका प्रथम वर्ष १११९-२० ई० में आरम्भ हुआ था।

मुसलमानी-काल—१३ वीं सदी के आरम्भ में यहाँ मुसलमानों का आधिपत्य छा गया। गयासुद्दीन इवाज (१२११-२६) के आक्रमण करने पर तिरहुत के राजा ने कर देना स्वीकार किया। लेकिन इस भूभाग पर मुसलमानों की विजय होने पर भी उनकी जड़ नहीं जमी, क्योंकि हम देखते हैं कि वर्तमान चम्पारण जिले के उत्तर-पूरब कोने पर सिमराँव में इसी समय एक हिन्दू राजवंश कायम हुआ जो एक सदी से भी अधिक दिनों तक यहाँ शासन करता रहा। कहते हैं कि सिमराँव राजवंश की स्थापना करनेवाले नान्यदेव कर्णाटक से आकर यहाँ बसे थे। इन्होंने समूचे मिथिला और नेपाल को जीत कर अपना राज्य कायम किया था। इस वंश में गंगादेव, नरसिंह-देव, रामसिंह, शक्तिसिह और हरिसिंहदेव राजा हुए। नरसिंह-देव के समय में नेपाल मिथिला से अलग किया गया। सन् १३२३ में दिल्ली के बादशाह तुगलकशाह ने राजा हरसिंहदेव पर चढ़ाई कर तिरहुत को अपने कब्जे में कर लिया। हरसिंह देव भाग कर नेपाल चला गया। इसके बाद तुगलकशाह ने कामेश्वर ठाकुर को तिरहुत का राजा बनाया जिसने सुगाँव में अपनी राजधानी कायम कर ठाकुर राजवंश की स्थापना की। तिरहुत पर ठाकुरवंश का राज्य १६ वीं सदी के आरम्भ तक रहा। कामेश्वर ठाकुर के बाद भोगेश्वर ठाकुर और कीर्ति ठाकुर राजा हुए। इस वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा शिवसिंह हुए जो १४०२ ई० में राज्य करते थे। कवि-विद्यापति इन्हीं के दरबार में थे।

शिवसिंह के बाद भी उनके उत्तराधिकारी १५३२ ई० तक

तिरहुत के उत्तरी भाग में मुसलमान शासकों के अधीन राज्य करते रहे। उत्तर तिरहुत में तो हिन्दू राजाओं का शासन था, लेकिन दक्षिण तिरहुत प्रत्यक्षरूप से मुसलमानों के हाथ में चला गया। गंगा और गण्डक के संगम पर बसा हुआ हाजीपुर बहुत दिनों तक प्रान्त के नायब नवाब की राजधानी रहा और यहाँ कितने ही बलवे हुए। यही कारण है कि जिले के उत्तर भाग की अपेक्षा इस भाग में मुसलमानी काल के चिन्ह अधिक पाये जाते हैं। हाजीपुर शहर को बंगाल के शासक हाजी इलियास (१३४५–१३५८) ने बसाया और इसका नाम अपने नाम पर हाजीपुर रखा। उसने तिरहुत पर चढ़ाई कर खूब लूटपाट मचायी और अपना दबदबा कायम रखने के लिये यहाँ एक किला बनवाया। जब हाजी इलियास पच्छिम की ओर दिल्ली-राज्य की सीमा पर उत्पात मचाने लगा तो उसे दण्ड देने और उसकी बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिये दिल्ली के बादशाह फिरोज शाह ने सन् १३५३ में तिरहुत पर चढ़ाई की।

कुछ दिनों के बाद उत्तर-विहार जौनपुर के मुसलमान राजाओं के हाथ में चला गया और पूरे एक सौ वर्ष तक उन्हीं के अधीन रहा। इसके बाद दिल्ली के बादशाह शिकन्दर लोदी ने तिरहुत को अपने अधीन किया। सन् १४९९ में यह बंगाल के नवाब हुसैन के विरूद्ध आगे बढ़ा। अन्त में बाढ़ में एक संधि हुई। जिसके अनुसार विहार, तिरहुत और सरकार सारन सिकन्दर लोदी के अधीन इस शर्त पर रहने दिया गया कि वह बंगाल पर चढ़ाई नहीं करेगा। यहाँ से सिकन्दर लोदी तिरहुत गया। तिरहुत के राजा ने उससे लड़ने में असमर्थ होकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और कई लाख रुपये देने पर राजा बना रह सका। इस राजा का नाम रामभद्र या रूपनारायण

था। बंगाल के नवाब और दिल्ली के बादशाह के बीच संधि बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकी। १६ वीं सदी के आरम्भ में बंगाल के नवाब नसरत शाह ने तिरहुत पर चढ़ाई की और वहाँ के राजा लक्ष्मीनाथ या कंस नारायण को मार डाला। इस राजा के साथ ठाकुर राजवंश का भी अन्त हो गया। नसरत शाह ने अपने दामाद अल्लाउद्दीन को यहाँ का शासक बनाया। इसके बाद वह हाजीपुर आया और उसे भी जीत कर अपने दूसरे दामाद मकदुम आलम को वहाँ का शासक बनाया।

१५७४ ई० में दाऊद खाँ जब बंगाल की गद्दी पर बैठा तो वह स्वतन्त्र हो जाना चाहा। सम्राट अकबर ने खानखाना को उसे दबाने के लिये भेजा और पीछे खुद भी यहाँ आपहुँचा। दाऊद खाँ ने पटना और हाजीपुर के किले में सेना रखकर उसका मुकाबला किया। अकबर के चुने हुए ३,००० सैनिक हाजीपुर के किले पर चढ़ाई करने को आगे बढ़े। अकबर खुद नदी के किनारे से टेलिस्कोप लगा कर उनकी गतिविधि को देखता रहा। बड़ी घमासान लड़ाई के बाद शाही सेना की जीत हुई। हाजीपुर का किला तोप से उड़ा दिया गया और वहाँ का सरदार फतह खाँ मारा गया। कुछ दिनों के बाद पटने के किले पर भी अकबर का दखल हो गया। अकबर ने विहार के उत्तरी और दक्षिणी दोनों हिस्सों को मिलाकर एक कर दिया और पटने में एक सूबेदार नियुक्त किया। हाजीपुर से राजधानी हट जाने से तिरहुत की अपनी ऐतिहासिक महत्ता जाती रही और वह विहार का केवल एक हिस्सा रह गया।

अंगरेजीकाल—सन् १७६४ के बक्सर-युद्ध के बाद विहार के और भागों के साथ तिरहुत भी अंगरेजों के हाथ में आ गया। लेकिन अंगरेजों ने इस जिले में एक शताब्दी पहले से ही अपना

अड्डा जमाया था। विहार के अन्दर पहली अंगरेजी फैक्टरी सन् १६७६ के पहले लालगंज के पास सिंगिया नामक स्थान में खुली थी जहाँ शोरा तैयार किया जाता था। उस समय पटने में भी कोई फैक्टरी नहीं थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पुराने कागजों में सिंगिआ का नाम बार-बार आया है।

सिपाही विद्रोह—सन् १८५७ में इस जिले में भी कुछ हलचल मची थी। जब यहाँ का कलक्टर डर से मुजफ्फरपुर शहर छोड़ कर भाग गया तो सिपाहियों ने मुँगेर जाने-वाली सरकारी डाक को छीन लिया तथा जज और कलक्टर के घरों को लूटा। इसके बाद उन लोगों ने खजाना, जेल और सरकारी अफसरों पर भी हमला किया। लेकिन पुलिस के लोगों ने उनका मुकाबला कर उन्हें मार भगाया। इसके बाद कलक्टर मुजफ्फरपुर लौट आया। आन्दोलनकारियों को दबाये रखने के लिये जिले के नीलहे साहबों को आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया और उन्हें पुलिस रखने का भी अधिकार मिला।

जिले का निर्माण—सन् १८७५ के पहले मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले मिले हुए थे और जिले का नाम था तिरहुत, जिसका सदर दफ्तर मुजफ्फरपुर में था। उसी साल यह जिला दो भागों में बाँट दिया गया। पच्छिम भाग का नाम पड़ा मुजफ्फरपुर और पूरब भाग का दरभंगा। दोनों जिले में अलग-अलग कल-क्टर बहाल किये गये।

लोग, भाषा और धर्म

मुजफ्फरपुर जिले में सन् १८८१ में २५,८४,६६० व्यक्ति थे। सन् १९३१ में आकर यहाँ की जनसंख्या २९,४१,०२५ हो गयी जिसमें १४,४३,८४७ पुरुष और १४,९७,१७८ स्त्रियाँ हैं। इस

तरह आधी शताब्दी में यहाँ ३,५६,३६५ आदमी अर्थात फी सैकड़े करीब १४ आदमी बढ़े। जनसंख्या की सघनता में प्रान्त में पहला स्थान मुजफ्फरपुर जिले का है। यहाँ एक वर्गमील के अन्दर औसतन ९६९ आदमी रहते हैं। जिले के सब-डिविजनों में सीतामढ़ी सब-डिविजन की जन-संख्या और उसकी सघनता सबसे अधिक है। इस जिले में सन् १९२१ में बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ६५,३३२ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,६२,७१५ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हो सकी। मुजफ्फरपुर जिले में गाँवों की संख्या ४,०५९ और शहरों की संख्या ५ है। शहरों में मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरपुर-छावनी, हाजीपुर, सीतामढ़ी और लालगंज की गिनती है। मुजफ्फरपुर-छावनी गरचे मुजफ्फरपुर से सटी हुई ही है और यहाँ की जनसंख्या सिर्फ २३७ है फिर भी इसे एक अलग शहर माना गया है। इन शहरों की कुल जन-संख्या ८२,२४१ है।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले की जन-संख्या में २९,३७,०६२ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, १,७३२ की बंगला, १,६१६ की मारवाड़ी, १५७ की नेपाली, ७८ की पंजाबी, १२ की गुजराती, ६ की उड़िया, ५ की तामिल, ३३ की पश्तो, १ की अन्य भारतीय-भाषा, ४ की भारतीय भिन्न एशियाई भाषा, ३१७ की अँगरेजी भाषा और २ की अन्य यूरोपीय भाषा हैं।

यहाँ की हिन्दुस्तानी भाषा की बोली मैथिली और भोजपुरी मिश्रित है। इसे डा० ग्रियरसन ने पश्चिमी मैथिली या मैथिली-भोजपुरी कहा है। लेकिन इसे पूर्वी-भोजपुरी भी कहा जा सकता है। दर असल यह स्थान शुद्ध मैथिली और शुद्ध भोजपुरी बोलने वाले भागों के बीच में है। यहाँ मुसलमानों की बोली जोलाही

कहलाती है। यहाँ कई लिपियाँ प्रचलित हैं। थोड़े से मैथिल ब्राह्मण मैथिली लिपि लिखते हैं जो बंगला लिपि से मिलती जुलती है। लेकिन आम लोगों की लिपि कैथी है। आजकल के पढ़े लिखे हिन्दू देवनागरी लिपि और मुसलमान उरदू लिपि लिखते हैं।

मुजफ्फरपुर जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	...	२५,४६,००६	जैन	...	८
मुसलमान	...	३,९१,०९१	पारसी	...	६
ईसाई	...	८८७	आदिम जाति	...	६
सिक्ख	...	१८	बौद्ध	...	१
		अन्य जाति	...	१	

फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में हिन्दू फी सैकड़े ८६·६७ और मुसलमान १३·२९ हैं। मुसलमानों में जोलाहे सबसे ज्यादा हैं। हिन्दुओं में ग्वालों की संख्या सबसे अधिक है। वे साढ़े तीन लाख की संख्या में हैं। उसके बाद दुसाध हैं जिनकी गिनती दो लाख है। भूमिहार-ब्राह्मण, राजपूत और चमार डेढ़ लाख से अधिक हैं। कोयरी, ब्राह्मण, कुर्मी, मल्लाह और तेली एक से डेढ़ लाख के बीच में हैं। इसके बाद क्रम से जोलाहा, काँदू, ताँती, धानुक, मुसहर, हजाम, कमार, कुम्हार, कायस्थ, धोबी, कहार आदि की संख्या है।

जिले में ईसाइयों की संख्या ८८७ है जिनमें ५७४ भारतीय ईसाई, २५३ यूरोपियन आदि और ६० एंग्लो-इंडियन हैं। यहाँ कई ईसाई मिशन अपना काम कर रहे हैं।

खेती और पैदावार

मुजफ्फरपुर जिले का रकबा १९,३४,२०४ एकड़ है। सन्

१९३६-३७ में इसमें से ११,८७,२०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ४,४९,७०४ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। १,०८,८५३ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १,८८,५४७ एकड़ जमीन नदी आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ८४ भाग जमीन जोत के अन्दर है मगर इसका एक चौथाई से कुछ अधिक भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ६ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता और सैकड़े १० भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत-जमीन के सैकड़े ५७ भाग में दो या तीन फसल होती है। प्रान्त के अन्दर दो या तीन फसल वाली जमीन यहाँ से अधिक किसी जिले में नहीं है।

इस जिले की जमीन बागमती और छोटी गण्डक द्वारा तीन मुख्य भागों में बँटी हुई है। पहला भाग, जो छोटी गण्डक के दक्षिण है, जिले का सबसे अच्छा और सबसे अधिक उपजाऊ भाग है। दूसरा भाग, जो छोटी गण्डक और बागमती के बीच दोआब है, नीची जमीन है। इसमें मुख्यकर धान ही होता है, पर अगहनी और रब्बी की फसल भी कुछ हो जाती है। तीसरा भाग बागमती नदी से लेकर उत्तर नेपाल तक फैला हुआ है। यह धानी जमीन है और इसमें मुख्यकर अगहनी धान होता है। कुछ हिस्सों में रब्बी और भदई की फसल भी होती है।

पहले और तीसरे भाग की जमीन को हम और भी कई हिस्सों में बाँट सकते हैं। पहले भाग की जमीन तीन हिस्सों में बाँटी जाती है, जैसे गंगा और घाघरा नदी के बीच का हिस्सा,

घाघरा और बाया नदी के बीच का हिस्सा तथा बाया और छोटी गण्डक के बीच का हिस्सा। उसी तरह तीसरा भाग चार हिस्सों में बाँटा जाता है, जैसे लालबकया और बागमती के बीच का हिस्सा, बागमती और लखनदेई के बीच का हिस्सा, लखनदेई और अधवार के बीच का हिस्सा तथा अधवार और नेपाल राज्य के बीच का हिस्सा।

यों तो जिले के अन्दर मिट्टियों के बहुत से भेद हैं पर मुख्य भेद चार ही हैं—बलसुन्दरी, मटियारी, बांगर और ऊसर। धान मुख्यतः मटियारी और उसके बाद बांगर जमीन में होता है। रब्बी फसल के लिये बलसुन्दरी जमीन ठीक है। भदई फसल खासकर मकई, इसी जमीन में होती है। छोटी गण्डक के दक्षिण की जमीन अधिकतर बलसुन्दरी तथा छोटी गण्डक और बागमती के बीच की दोआब जमीन मटियारी है। जिले के उत्तरीय भाग के अन्दर लखनदेई से पूरब के हिस्से में बाँगर और पश्चिम के हिस्से में मटियारी जमीन है। ऊसर जमीन जहाँ-तहाँ जिले के सभी सब-डिविजनों में पायी जाती है।

फसल तीन तरह की होती है—अगहनी, भदई और रब्बी। अगहनी फसल में मुख्य धान है। भदई फसल में धान, मरूआ, मकई, कोदो, शामा, कौनी वगैरह हैं। रब्बी की फसल में गेहूँ, जौ, जई, बूट, मटर, खेसारी, रेंड़ी आदि की गिनती है। सन् १९३६ की रिपोर्ट के अनुसार इस जिले में कुल उपजाऊ जमीन के सैकड़े ४० भाग में रब्बी, ४० भाग में अगहनी, १६ भाग में भदई और ४ भाग में फल तरकारी होती है। जिले के दक्षिण भाग में भदई और रब्बी की फसल अच्छी होती है। उत्तर भाग में अधिकतर अगहनी और मामूली तौर पर रब्बी की फसल पैदा की जाती है।

अन्नों में सबसे अधिक जमीन में धान उपजाया जाता है। उसके बाद क्रम से जौ, मकई, गेहूँ, मरुआ, बूट, तीसी आदि का स्थान है। यहाँ तम्बाकू और मिरचाई की खेती भी खूब होती है। कुछ दिनों से ऊख की खेती बहुत बढ़ गयी है। पहले यहाँ नील की खेती बहुत ज्यादा होती थी लेकिन अब यह उठ सी गयी है, तब भी सन् १९३६–३७ में यहाँ ४०० एकड़ में नील की खेती हुई थी। यहाँ पहले अफीम की खेती भी होती थी, वह भी अब बिलकुल उठ गयी है।

फल की खेती के लिये मुजफ्फरपुर जिला प्रान्त में खास तौर से मशहूर है। इधर कलम के आम की खेती बहुत बढ़ रही है। लीची, केला, अमरूद, नीबू भी बहुतायत से लगाये जाते हैं। आम तो हर जगह पाया जाता है लेकिन और फल विशेषकर मुजफ्फरपुर और हाजीपुर के आसपास में होते हैं। केला हाजीपुर में बहुतायत से होता है।

खेती के लिये यहाँ लोग विशेषकर वर्षा पर निर्भर करते हैं। यहाँ की जमीन भी कुछ ऐसी है कि सिंचाई के खास प्रबन्ध बिना भी काम किसी तरह चल जाता है। यहाँ सिचाई कुल जोत जमीन के सैकड़े ८½ भाग में होती है। नहर का प्रबन्ध यहा नहीं है। छोटी-छोटी नदियों या जलाशयों से करीन आदि के द्वारा लोग सींचने का काम लेते हैं। सिंचाई का सबसे अधिक प्रबन्ध हाजीपुर थाने में है।

सरकार के कृषि महकमे के उत्तर विहार रेंज का सदर-आफिस मुजफ्फरपुर है। यहाँ एक बड़ा सरकारी कृषि फार्म है जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है। पास के मुशहरी नामक स्थान में ऊख के लिये अनुसंधान-शाला खुली है।

———

पेशा, उद्योग-धंधा और व्यापार

मुजफ्फरपुर जिले में सन् १९३१ की गणना के अनुसार हजार आदमियों में २९५ आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित स्त्री-बच्चे हैं। काम करनेवाले ३९५ व्यक्तियों में ३४१ कृषि और पशुपालन में, १७ उद्योग-धंधा में, ११ व्यापार में, ३ डाक्टर-वैद्य, वकील-मुख्तार, पंडा-पुरोहित, लेखक-शिक्षक आदि के पेशे में, २ शासन सम्बन्धी कार्य में, १ गमनागमन जैसे रेल, जहाज, सड़क, डाक आदि के काम मे तथा २० अन्य कामों में हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों में सैकड़े ८६ आदमी खेती का काम करते हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधा या व्यापार मुख्यतः भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में हैं, जैसे लोहा का काम लोहार, चमड़े का काम चमार और काठ का काम कमार ही करेंगे। ये उद्योग-धंधे या व्यापार केवल गाँवों की साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हैं। पहले यहाँ नील, चीनी और शोरा का कारबार बड़े पैमाने पर होता था। अब चीनी को छोड़ दोनों व्यवसाय बिलकुल बन्द हो गये हैं।

नील—यहाँ नील की खेती अंगरेजों के आने के पहले भी होती थी। लेकिन पहले-पहल यूरोपीय तरीके पर इसकी खेती विहार में तिरहुत के प्रथम कलक्टर फ्रांकोइज ग्रैंड ने शुरू की थी। सन् १७८५ में उसकी ३ नील की कोठियाँ थीं। धीरे-धीरे युरोपियनों की कोठियाँ बढ़ती ही गयीं। १८०३ ई० तक कोठियों की संख्या २५ तक पहुँची। १८९७ ई० में इस जिले के अन्दर ८७,२५८ एकड़ में अर्थात् उपजाऊ जमीन के सैकड़े करीब ५$\frac{3}{4}$ भाग में नील की खेती होती थी। १८९५ से १९०० ई० के बीच हर साल औसतन १४,५७३ मन नील तैयार होता था और

१८६ रु० मन की दर से बिकता था। इसके बाद ही यूरोप में नकली नील सस्ती दर पर तैयार होने लगा जिससे यहाँ के कारबार को क्षति पहुँचने लगी। अन्त में धीरे-धीरे इसका कारबार करीब उठ ही गया। सन् १९३६–३७ में जिले के अन्दर सिर्फ ४०० एकड़ में नील की खेती हुई थी और ३ नील की फैक्टरियाँ चल रही थीं।

चीनी—पहले यहाँ चीनी का कारबार खूब चला था और बहुत से यूरोपियन लोग इस व्यवसाय में लगे हुए थे लेकिन जब उन्होंने देखा कि नील के कारबार में अधिक फायदा है तो वे उसे छोड़ नील में ही लग गये। लेकिन जब नील का कारबार घटने लगा तो इस कारबार की फिर उन्नति होने लगी। १९०० ई० में इंडिया डेवेलपमेन्ट कम्पनी ने अतहर और अगरैल की नील की कोठियाँ चीनी के कारबार के लिये मोल लीं। जब से सरकार ने इस व्यवसाय की रक्षा का प्रबन्ध किया है तब से इसकी अच्छी उन्नति है। सन् १९३६ में इस जिले में चीनी की ३ फैक्टरियाँ थीं।

शोरा—हिन्दुस्तान में शोरा के कारबार के लिये विहार बहुत प्रसिद्ध था लेकिन यह कारबार भी करीब मर मिटा है। क्लाइव और वारन हेस्टिंग्स के समय (१७६५–८०) में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौकरों ने इस कारबार को अपनाया था। १८४७ में भी यूरोपियनों की निगरानी में ४ फैक्टरियाँ चलती थीं। जब विदेश में शोरा बहुतायत से और सस्ती दर में मिलने लगा तो यहाँ इस कारबार में बहुत नफा नहीं रह गया। यूरोपियन लोग इससे हट गये और केवल नुनिया किसी तरह यह काम छोटे पैमाने पर करते रहे। जहाँ सन् १८९५–९६ में १,१०,००० मन शोरा तैयार हुआ था वहाँ १९०४–५ में केवल

६९००० मन तैयार हुआ। इसी तरह नमक भी ५,६०० मन से घटकर ४,५०० मन बना। शोरा या नमक बनाने के लिये सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत होती है।

यहाँ के दूसरे उद्योग-धंधे में सूती कपड़ा, कम्बल और दरी का तैयार किया जाना है। पर यह काम बहुत छोटे पैमाने पर होता है। मुजफ्फरपुर और पारो थाने में कम्बल और सुरसंड थाने में दरी अच्छी बनती है। लावरपुर में चूड़ी और लालगंज में हुक्का का गट्टा बनता है।

फैक्टरियाँ—फैक्टरी एक्ट के अनुसार जिले के अन्दर सन् १९३६ में १८ फैक्टरियाँ थीं जिनमें ३ चीनी की, ३ नील की, ४ चावल-दाल आदि की, १ रेलवे की, १ गाड़ी वगैरह बनाने की, १ वाटर पम्प की और ५ इंजिनियरिंग की थीं।

व्यापार—यहाँ से शोरा, चमड़ा, तेलहन, घी, तम्बाकू, अफीम, फल, तरकारी वगैरह चीजें बाहर रवाना की जाती हैं। बाहर से नमक, केरासन तेल, कोयला, कपड़ा तथा तरह-तरह की विदेशी चीजें यहाँ आती हैं। नेपाल से यहाँ अनाज, लकड़ी, चपड़ा और मवेशी आते हैं तथा यहाँ से अधिकतर नमक, केरासन तेल, कोयला और विदेशी चीजें वहाँ जाती हैं। सीमा पर बैरगनिया, बेलागंज, मयूरगंज, सोनबरसा और सुरसंड ये व्यापार के केन्द्र है। मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सीतामढ़ी, महनार, साहबगंज, महुआ, कांटी भी व्यापार के केन्द्र स्थान हैं। सीतामढ़ी में रामनवमी के अवसर पर तथा कोनहराघाट और गोपालपुर गनीनाथ में कार्तिक-पूर्णिमा को मेला लगता है।

आने-जाने के मार्ग

सड़कें—सन् १८७५ ई० में मुजफ्फरपुर जिले के अन्दर

७१९ मीलों में सड़कें फैली हुई थीं। इसके दस वर्ष बाद ही सड़कों की लम्बाई १,४८३ मील तक पहुँची। सन् १९३५–३६ में आकर डिस्ट्रिक्टबोर्ड के प्रबन्ध में यहाँ २,२६४ मील सड़कें हुईं। इनमें पक्की सड़कें २०७ मील, कच्ची सड़कें १,१८९ मील और छोटी-छोटी देहाती सड़कें ८६८ मील लम्बी थी।

जिले की सबसे मुख्य सड़क वह सड़क है जो हाजीपुर से मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी होती हुई नेपाल की सीमा के पास सोनबरसा तक गयी है। मुजफ्फरपुर शहर से ११ सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। यहाँ से दरभंगा, मोतिहारी और सारन को भी सड़कें गयी हुई हैं। हाजीपुर और सीतामढ़ी से भी भिन्न-भिन्न स्थानों को बहुत सी सड़कें गयी हैं। छोटी-छोटी नदियों को पार करने के लिये तो पुल हैं पर बड़ी नदियों को नाव पर ही पार करना पड़ता है। अच्छी सड़कों के किनारे पेड़ भी लगे हैं।

रेलवे—जिले के अन्दर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की कई लाइनें गयी हैं। कटिहार से कानपुर जानेवाली मुख्य लाइन इस जिले के बिलकुल दक्षिण भाग होकर गयी है। जिले के अन्दर इस लाइन पर पूरब को ओर से महनार रोड, सहदेई-बुजुर्ग, देसरी, चक-सिकन्दर, बिद्दुपुर और हाजीपुर ये ६ स्टेशन है। हाजीपुर से एक लाइन उत्तर की ओर मुजफ्फरपुर को गयी है जिसपर बीच में दक्षिण की ओर से सराय, भगवानपुर, गरौल, कुढ़नी और तुरकी ये ५ स्टेशन हैं। समस्तीपुर से एक लाइन उत्तर पच्छिम की ओर मुजफ्फरपुर जिले के मध्य भाग होकर नरकटियागंज (चम्पारण जिला) गयी है। इस लाइन पर मुजफ्फरपुर जिले के अन्दर दक्षिण-पूरब की ओर से ढोली, सिलौट, मुजफ्फरपुर, काँटी, मोतीपुर और महवल ये ६ स्टेशन

हैं। एक और लाइन दरभंगा से उत्तर-पच्छिम की ओर मुजफ्फरपुर जिले के उत्तर भाग होकर नरकटियागंज गयी है। इस लाइन पर मुजफ्फरपुर जिले के अन्दर दक्षिण पूरब की ओर से जनकपुर-रोड, बाजपट्टी, सीतामढ़ी, रीगा और ढंग ये ५ स्टेशन हैं। इन चारो लाइनों की कुल लम्बाई २८६ मील है।

जलमार्ग—जिले के अन्दर गंगा, गण्डक, छोटी गण्डक और बागमती ये चार नदियाँ ऐसी हैं जिनमें बराबर नावें चला करती हैं। छोटी गण्डक और बागमती द्वारा नेपाल से साल के बड़े-बड़े कुंदे और बाँस आते हैं। गंगा में बड़ी-बड़ी नावें और जहाज चलते हैं।

शिक्षा

१८७५ ई० से, जबसे इस जिले का निर्माण हुआ है, यहाँ शिक्षा की धीरे-धीरे उन्नति हो रही है। उस साल यहाँ सब मिलाकर ३१४ स्कूल थे, जिनमें ७,०२७ छात्र पढ़ते थे। १९०५ ई० में आकर स्कूलों की संख्या १,४६३ और उनमें पढ़नेवाले लड़कों की संख्या ३८,२४८ हुई।

सन् १९०५ ई० में जिले के अन्दर १०३३ प्राइमरी स्कूल थे जिनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या ३१,८९० थी सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर १,६५६ प्राइमरी स्कूल थे जिनमें छात्रों की संख्या ५६,०८६ थी। इन प्राइमरी स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशालाएँ और उरदू प्राइमरी पाठशालाएँ भी शामिल हैं।

१८८० ई० में जिले के अन्दर ६ मिड्ल इंगलिश और १३ मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल थे, लेकिन सन् १९०५ में आकर मिड्ल इंगलिश स्कूल बढ़कर ७ और मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल घट कर ७

रह गये। इस समय सन् १९३७-३८ में मिड्ल वर्नाक्युलर स्कूल नहीं हैं। मिड्ल स्कूलों की संख्या बढ़ कर ७७ हो गयी है।

जिले के निर्माण होने के बीस वर्ष बाद तक यहाँ केवल एक ही हाई स्कूल था। सन् १९०५ में आकर ५ हाई स्कूल हुए। इस समय १८ हाई स्कूल जिले में चल रहे हैं। इनमें ६ स्कूल तो सिर्फ़ मुजफ्फरपुर शहर में और एक एक हाजीपुर, गंगेया, बाघी, हरदी, बभनगाँवाँ, मनियारी, सीतामढ़ी, सुरसंड, महनार, विदूदुपुर, शिवहर और लालगंज में हैं।

मुजफ्फरपुर में एक कालेज है जहाँ बी० ए० तक की पढ़ाई होती है। इस कालेज का नाम ग्रियर भूमिहार ब्राह्मण (जी० बी० बी०) कालेज है। यह पहले भूमिहार ब्राह्मण सभा के पचास हजार रुपये के दान से हाई स्कूल के रूप में खुला था। १८९९ में यह कलकत्ता युनिवरसिटी से आई० ए० तक के कालेज के रूप में मंजूर हुआ। एक वर्ष बाद ही इसे बी० ए० क्लास तक की मंजूरी मिल गयी। इस कालेज को कायम करने और चलाने में बाबू लंगटसिंह का बहुत बड़ा हाथ था। मुजफ्फरपुर में एक संस्कृत कालेज भी चल रहा है।

यहाँ एक औद्योगिक स्कूल भी बहुत दिनों से कायम है।

सन् १८८५ के पहले जिले में कोई कन्या-पाठशाला नहीं थी, लेकिन कुछ लड़कियाँ लड़कों के स्कूल में अवश्य पढ़ती थीं। १८७५ ई० से १८९५ ई० के बीच जिले में १२ कन्या-पाठशालाएँ खुलीं जिनमें २०५ लड़कियाँ पढ़ती थीं। इनके अलावे उस समय ४८५ लड़कियाँ लड़कों के स्कूल में भी थीं। सन् १९०५ में आकर लड़कियों की पाठशालाएँ ३३ हो गयीं जिनमें ६७२ लड़कियाँ पढ़ती थीं। उस समय १५३२ लड़कियाँ लड़कों की पाठशालाओं में भी थीं। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर

पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ६,९९७ हुई। जिले में लड़कियों के लिये एक भी मिड्ल स्कूल नहीं है। हाँ, मुजफ्फरपुर में एक हाई स्कूल चल रहा है।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े लिखे पुरुषों की संख्या १,०९,९५३ और स्त्रियों की संख्या ९,१८३ है। अंगरेजी पढ़े लिखे पुरुषों ८,४६७ और स्त्रियाँ ४५४ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ४ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर ७८,०२८ लड़के-लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े २·७ हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—मुजफ्फरपुर जिला पहले पटना कमिश्नरी के अन्दर था। पीछे तिरहुत कमिश्नरी कायम की गयी और उसका सदर आफिस मुजफ्फरपुर रखा गया। मुजफ्फरपुर कमिश्नरी के अधीन मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन और चम्पारन ये चार जिले हैं। मुजफ्फरपुर जिला तीन सब-डिविजनों में बँटा है—मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी और हाजीपुर। सब-डिविज़न के सबसे बड़े अफसर को सब-डिविजनल अफसर या एस० डी० ओ० कहते हैं। जिले का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। उसकी सहायता के लिये जिले के सदर दफ्तर मुजफ्फरपुर में कई डिपटी कलक्टर और सब-डिपटी कलक्टर या असिस्टेन्ट कलक्टर रहते हैं। सब-डिविजनों में सब-डिविजनल अफसर की सहायता के लिये भी कई सब-डिपटी कलक्टर रहा करते हैं।

न्याय—जिला और सब-डिविजनों के सदर दफ्तरों में दीवानी और फौजदारी मामलों को सुनने के लिये अलग-अलग कचहरियाँ हैं। दीवानी मामले को सुनवाई के लिये जिले के सदर आफिस मुजफ्फरपुर में जिला जज, सबजज और मुन्सिफ रहते हैं। उसी तरह फौजदारी मामले को सुनने के लिये सेशन जज, जिला मजिस्ट्रेट और कई डिपटी या सब-डिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं। जिला जज और सेशन जज एक ही व्यक्ति हुआ करता है। मजिस्ट्रेट तीन दरजे के हुआ करते हैं—अव्वल, दोयम और सेम। सब-डिविजनों के सदर-दफ्तरों में दीवानी मुकदमें मुन्सिफ लोग और फौजदारी मुकदमे एस० डी० ओ० और सब-डिपटी मजिस्ट्रेट देखते हैं। छोटे-छोटे मामलों को सुनने के लिये जगह-जगह बहुत से आनरेरी मजिस्ट्रेट हुआ करते हैं।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये यह जिला २३ थानों में बटा हुआ है। सदर सब-डिविजन में ८, सीतामढ़ी में ९ और हाजीपुर में ६ थाने हैं। जिले के अन्दर पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। उसकी सहायता के लिये असिस्टेन्ट और डिपटी पुलिस सुपरिन्टेन्डेट रहते हैं। थाने का सबसे बड़ा अफसर पुलिस इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है, इसे लोग दारोगा भी कहते हैं। थाने में दारोगा की सहायता के लिये हवलदार और कानिस्टबिल रहते हैं। रात में पहरा देने के लिये प्रायः प्रत्येक गाँव में एक दो चौकीदार रहते हैं। वे गाँव की चोरी-डकैती और जन्म-मरण आदि की रिपोर्ट भी थाने में पहुँचाया करते हैं। कई चौकीदारों के ऊपर एक दफेदार रहा करता है। इस जिले के अन्दर सन् १९३६ में ६ इन्सपेक्टर, ५३ सब-इन्सपेक्टर, ३७ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, 1 सरजेन्ट मेजर, २४ हवलदार, ४९३ कानिस्टबिल और ४,८८८ चौकीदार थे।

जेल—मुजफ्फरपुर में जिला जेल तथा हाजीपुर और सीतामढ़ी में छोटे जेल हैं। जिला जेल में ४३७ कैदियों के रहने की जगह है। बैरेक में २९० पुरुष कैदी, ४६ स्त्री कैदी, १६ नाबालिग कैदी, २६ विचाराधीन कैदी, ११ दीवानी मामले के कैदी और १३ यूरोपियन कैदी रह सकते हैं। अस्पताल में २७ कैदियों और सेल में ८ कैदियों के रहने की जगह बनी है। सीतामढ़ी जेल में २२ पुरुष-कैदी और ४ स्त्री-कैदी तथा हाजीपुर जेल में ४ पुरुष-कैदी, १ स्त्री-कैदी और ५ विचाराधीन कैदी रह सकते हैं।

रजिस्ट्री आफिस—जिले के अन्दर जमीन की खरीद-बिक्री की रजिस्ट्री के लिये सन् १९३६ में मुजफ्फरपुर, बेलसंड, हाजीपुर, कटरा, लालगंज, महुआ, महनार, परिहार, पारो, पुपरी, शिवहर, सीतामढ़ी, शकरा और भुटही में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाक बंगला वगैरह बनवाना, प्राइमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब, कुआँ वगैरह खुदवाना, घाट, अस्पताल, फाटक आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्टबोर्ड का काम है। यहाँ के डिस्ट्रिक्टबोर्ड के ४० मेम्बर हैं, जिनमें ३० चुने हुए, ८ नामजद किये और २ पद की हैसियत से हैं। बोर्ड का सालाना आमद खर्च करीब २०-२१ लाख रुपया है। बोर्ड के छोटे-मोटे काम इसके अधीनस्थ लोकलबोर्ड करते हैं। मुजफ्फरपुर लोकलबोर्ड में ११ चुने हुए और ३ नामजद किये, सीतामढ़ी लोकलबोर्ड में १२ चुने हुए और ४ नामजद किये तथा हाजीपुर लोकलबोर्ड में ७ चुने हुए और २ नामजद किये मेम्बर हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—देहातों के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड का जो

काम है वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों का है। इस जिले के अन्दर मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, हाजीपुर और लालगंज में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। मुजफ्फरपुर की म्युनिसिपैलिटी १८६४ ई० में, हाजीपुर और लालगंज की १८६९ ई० में तथा सीतामढ़ी की १८८२ ई० में कायम हुई थी। पहले के ३०, दूसरे के १५, तीसरे के १० और चौथे के १५ मेम्बर होते हैं। मुजफ्फरपुर म्युनिसिपैलिटी का आमद-खर्च करीब ५-६ लाख रुपया है।

मुजफ्फरपुर (सदर) सब-डिविजन

सदर सब-डिविजन जिले के मध्य-भाग में २५°५४′ और २६°२६′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°५३′ और ८५°४५′ पूर्वीय-देशान्तर के बीच है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १२२२ वर्गमील और जन-संख्या ११,२१,०३३ है। इसमें २ शहर और १,७१२ गाँव हैं। शहर में मुजफ्फरपुर और मुजफ्फर-छावनी की गिनती है। इस सब-डिविजन में मुजफ्फरपुर-शहर, मुजफ्फरपुर-मुफस्सिल, मीनापुर, शकरा, कटरा, पारू, साहेबगंज और बरूराज ये ८ थाने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं।

मुजफ्फरपुर—मुजफ्फरपुर जिला और कमिश्नरी का सदर आफिस मुजफ्फरपुर शहर छोटी गण्डक के दक्षिणी किनारे २६°७′ उत्तरीय अक्षांश और ८५°२४′ पूर्वीय देशान्तर पर है। इस शहर को १८ वीं सदी में चकलानाई परगना का एक अमला मुजफ्फर खाँ ने अपने नाम पर बसाया था। सन् १८१७ में इनमें सिर्फ ६६७ घर थे लेकिन अब तो यह बहुत विस्तृत रूप में बसा हुआ है और इसमें कई हजार घर होंगे। सन् १९३१

की गणना के अनुसार इस शहर की जन-संख्या ४२,८१२ है। इसमें २४,८४१ पुरुष और १७,९७१ स्त्रियाँ हैं। यहाँ की जन-संख्या में ३०,६४८ हिन्दू, ११,८०१ मुसलमान, ३४८ ईसाई और १५ दूसरे लोग हैं।

शहर के पास दो बड़े तालाब हैं एक सिकन्दरापुर तालाब और दूसरा अखाड़ाघाट तालाब। ये छोटी गण्डक के धारा परिवर्तन के कारण बने हैं। गण्डक इस समय शहर से आधे मील की दूरी पर है। शहर से बाहर खुले मैदान के बीच सेना की छावनी है। १९३१ ई० में यहाँ की जन-संख्या २३७ थी जिसमें ४० हिन्दू, ४६ मुसलमान और १५१ ईसाई थे। विहार प्रान्त के अन्दर सेना की छावनी दो ही है, एक बड़ी छावनी दानापुर में और दूसरी छोटी छावनी यहाँ मुजफ्फरपुर में। इस शहर के अन्दर जिले के सरकारी आफिसों और कचहरियों के अलावे एक बी० ए० दरजे का कालेज, एक संस्कृत कालेज और ६ हाई स्कूल हैं। छोटी गण्डक के किनारे और एक रेलवे-जंकसन पर रहने के कारण यह शहर व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ से ११ सड़कें भिन्न-भिन्न स्थानों जैसे हाजीपुर, लालगंज, रेवाघाट, सोहांसी घाट, मोतिहारी, सीतामढ़ी, पुपरी, कमतौल, दरभंगा, पूसा और दलसिंगसराय को गयी हैं।

मुजफ्फरपुर शहर और मुजफ्फरपुर छावनी की जो जन-संख्या है वही मुजफ्फरपुर शहर थाने की जन-संख्या है। मुजफ्फरपुर-मुफस्सिल थाना उससे भिन्न है। वहाँ की जन-संख्या ३,११,७१६ है। इसमें २,६९,६८० हिन्दू, ४२,९०९ मुसलमान और २७ ईसाई हैं।

कटरा—यह स्थान मुजफ्फरपुर से १८ मील उत्तर पच्छिम लखनदेई नदी के किनारे है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नाव-

शेष है। यह किला ६० बीघा जमीन के घेरावे में था। इसकी दीवालें ३० फीट ऊँची हैं। कटरा थाना किले के भग्नावशेष पर ही बनाया गया है। यहाँ के लोग कहते हैं कि इस किले को राजा चाँद ने बनवाया था। यह राजा कौन था कुछ पता नहीं है। कहानी है कि जब राजा दरभंगा जा रहा था तो उसने अपने परिवार के लोगों को कह दिया था कि अगर तुम्हें मालूम हो कि हमारा झंडा गिर गया है तो समझना कि हम मर गये। उसके एक दुश्मन ने झंडा गिरा दिया। जब यह खबर किले में पहुँची तो चिता बनाकर राजा के परिवार के लोग उसमें जल मरे। यह कहानो जरीडीह की कहानी से बहुत मिलती जुलतो है, जिसका वर्णन आगे मिलेगा। कटरा थाने की जन-संख्या २,३४,२८८ है जिसमें २,०१,५५८ हिन्दू, ३२,७१३ मुसलमान और १७ ईसाई हैं।

काँटी—मुजफ्फरपुर से नरकटियागंज जानेवाली लाइन पर मुजफ्फरपुर के बाद ही काँटी रेलवे स्टेशन है। स्टेशन के पास इसी नाम की एक बहुत बड़ी बस्ती है जो व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ पहले शोरा और नील की फैक्टरियाँ थीं।

जैतपुर—यह स्थान मुजफ्फरपुर से ८ कोस पच्छिम है। यहाँ एक मठ है जिसे बहुत बड़ी जायदाद है।

पदमौल—मुजफ्फरपुर से ११ मील दक्षिण इस स्थान पर मुगल बादशाहों के समय में एक कानूनगो रहता था। उसने यहाँ एक छोटा सा किला बनवाया था, जिसमें तोपें भी रहती थीं। किला का भग्नावशेष अब भी दिखाई पड़ता है।

पारू—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,६४,६८५ है, जिसमें १,४७,९१४ हिन्दू, १६,७६८ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

बखरा—इस गाँव में कुछ पुराने खानदान के जमींदार लोग रहते हैं। यहाँ पहले शोरा की और पास के सरैया गाँव में नील की फैक्टरी थी। एक दूसरे गाँव कोल्हुआ में स्तम्भ, एक स्तूप और एक पुराना तालाब हैं। स्तम्भ को लोग बखरा-स्तम्भ कहते हैं।

बरूराज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ९२,६९२ है। इसमें ८२,५९१ हिन्दू, १०,०९९ मुसलमान और २ ईसाई हैं।

मनियारी—मुजफ्फरपुर से ८ मील दक्षिण यह एक गाँव है। यहाँ एक बहुत बड़ा मठ है जिसमें शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

मीनापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ८५,३२८ है जिसमें ७७,५९३ हिन्दू, और ७,७३४ मुसलमान हैं।

साहेबगंज—यह स्थान बाया नदी के किनारे व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ का जूता मशहूर समझा जाता है। यहाँ से कुछ दूर पर करनौल गाँव है जहाँ पहले नील की फैक्टरी थी। साहेबगंज में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६०,९२० है, जिसमें ५५,४०० हिन्दू और ५,५२० मुसलमान हैं।

सूबेगढ़—मुजफ्फरपुर से १८ मील उत्तर-पच्छिम एक पुराने किले का भग्नावशेष है। इस किले का नाम सूबेगढ़ या सुबही गढ़ है। यह बागमती की एक पुरानी धारा जोगा नदी से घिरा है। किले की लम्बाई १३०० फीट और चौड़ाई ४०० फीट है। इसकी दीवालें ईंट की थीं जो अब गिर गयी हैं। किले के बीच में एक टील्हा है जो राजमहल का स्थान समझा जाता है। राजा का नाम सुहेलदेव था जिसे सुहेलदेवी या सुबही देवी नाम की

एक लड़की थी। कहते हैं कि उसने घोषणा की थी कि जो हमारे किले के असंख्य ताड़ के पेड़ को गिन दे उसीसे मैं विवाह करूंगी। अन्त में पास के गाँव सुकरी या सुआरीडीह के एक दुसाध ने ताड़ों को गिन दिया। सुहेलदेवी एक नीच जाति के आदमी से ब्याह करने के विचार से बहुत दुःखी हुई। आखिर उसकी प्रार्थना पर धरती फटी और वह उसमें समा गयी। यहाँ एक पत्थर मिला है जिस पर पहले मूर्त्तियाँ थीं। जेनरल कनिंघम ने यहाँ तुगलकशाह के नाम के दो सिक्के पाये थे। कनिंघम का ख्याल है कि यहाँ के किले को उसीने तोड़ा होगा। यहाँ से दक्षिण की ओर मुसलमानों की तीन कब्रें हैं।

शकरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,२८,३५५ है जिसमें १,११,०४८ हिन्दू, १७,३०० मुसलमान और ७ ईसाई हैं।

सीतामढ़ी सब-डिविजन

सीतामढ़ी सब-डिविजन जिले के उत्तर भाग में २६°१६' और २६°५३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°११' और ८५°५०' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,०१६ वर्गमील और जन-संख्या ११,२४,३०२ है। इसमें सिर्फ सीतामढ़ी एक शहर और ९९५ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में सीतामढ़ी, सोनबरसा, बेला-मुछपकौनी, शिवहर, बैरगनिया, मेजरगंज, बेलसंड, पुपरी और सुरसंड ये ९ थाने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

सीतामढ़ी—सीतामढ़ी सब-डिविजन का प्रधान शहर सीता-

मढ़ी २६°३५' उत्तरीय अक्षांश और ८५°२९' पूर्वीय देशान्तर पर लखनदेई नदी के किनारे है। यहाँ दरभंगा से नरकटियागंज जानेवाली लाइन पर रेलवे स्टेशन है। यहाँ से सड़कें नेपाल की सीमा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर को गयी हैं। यह व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ सखुआ, चपड़ा तथा नेपाल की दूसरी चीजें बिकती हैं। यहाँ का बैल बहुत अच्छा समझा जाता है और दूर-दूर के लोग यहाँ से इसे खरीद ले जाते हैं। सीतामढ़ी शहर की जन-संख्या १०,७०१ है इसमें ८,७५५ हिन्दू, १,८९५ मुसलमान, ४२ ईसाई और ९ जैन हैं।

सीताजी का उत्पत्ति स्थान यहीं समझा जाता है और सीता जी के नाम पर ही सीतामढ़ी का नाम होना बताया जाता है। कहते हैं कि एक बार जब अनावृष्टि के कारण जोरों का अकाल पड़ा तो यज्ञानुष्ठान करके राजर्षि जनक जी ने स्वयं हल जोतना शुरू किया था। इसी समय उन्हें एक घड़े के अन्दर जमीन में गड़ी हुई बालिका सीता मिली। कहा जाता है कि उन्होंने इस स्थान पर एक कुंड बनवाया जिसे लोग सीता-कुंड कहते हैं। लेकिन कुछ लोग यहाँ से ३ मील दक्षिण-पच्छिम बनौरा नामक गाँव को ही सीता का जन्मस्थान मानते हैं। सीतामढ़ी में जानकी कुंड के पास एक मंदिर है वहाँ रामनवमी में बहुत बड़ा मेला लगता है। कहते हैं कि इस मंदिर की राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्त्तियों को वीरबल दास नामक एक साधु ने जमीन से उखाड़ा था। पास ही में तीन समाधियाँ हैं जिन्हें लोग वीरबल दास और उनके दो उत्तराधिकारियों की समाधियाँ बताते हैं। मंदिर को अपनी बहुत बड़ी जायदाद है।

सीतामढ़ी थाने की जन-संख्या २,३२,७६२ है। इसमें

२,०६,५३७ हिन्दू, २६,१७१ मुसलमान, ४५ ईसाई और ९ अन्य जाति के लोग हैं।

चरौत—पुपरी से ८ मील उत्तर-पूरब इस गाँव में एक मठ है, जिसका सम्बन्ध नेपाल के मटिहानी मठ से है। इन मठों को अपनी बहुत बड़ी जायदाद है।

देवकली—यह गाँव शिवहर से ४ मील पूरब बेलसंड-सीतामढ़ी सड़क पर है। यहाँ एक बहुत ऊँचे टील्हे पर कुछ मंदिर हैं और पास में एक तालाब है। इस टील्हे को लोग द्रुपदगढ़ कहते हैं और बताते हैं कि महाभारत के प्रसिद्ध राजा द्रुपद का यहाँ किला था। मंदिरों में मुख्य मंदिर भुवनेश्वर महादेव का मंदिर है। यहाँ शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

नानपुर—यह गाँव पुपरी से ४ मील दक्षिण है। यहाँ एक पुराने खानदान के धनी जमींदार रहते हैं। कहते हैं कि दो ढाई सौ वर्ष पहले पंजाबवासी नानपाय नामक एक व्यक्ति ने किसी तरह बादशाह को खुश कर यहाँ एक अच्छी जमींदारी हासिल की और नानपुर गाँव बसाया। कुछ दिनों के बाद मुहम्मदअली खाँ और शेर अली खाँ नामक दो पठानों ने उससे जमींदारी छीन ली और अपने-अपने नाम से मुहम्मदपुर और शेरपुर गाँव कायम किये। बादशाह ने उनसे लगान वसूलने के लिये माधोसिंह को तहसीलदार बनाकर भेजा, लेकिन दोनों भाइयों ने उन्हें भी मार डाला। जब अंगरेजों का राज्य हुआ तो माधोसिंह के एक वंशज गुलाम सिंह ने अंगरेजों से मिलकर यह जमीन्दारी हासिल करली।

परसौनी—यह स्थान सीतामढ़ी से ९ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक मुसलमान जमींदार का निवासस्थान है जिनकी

जमींदारी परसौनी-राज के नाम से प्रसिद्ध है। इस राज को १७ वीं सदी में परदिल सिंह ने कायम किया था, जो पीछे मुसलमान हो गया।

पुपरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २,१८,४०१ है। इसमें १,६४,३७० हिन्दू, ५४,०२७ मुसलमान और ४ अन्य जाति के लोग हैं।

बेलसंड—यह स्थान सीतामढ़ी से १३ मील दक्षिण है। यहाँ पहले नील की कोठी थी। इस समय यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २,२५,४९४ है जिसमें १,९८,२६२ हिन्दू, २७,१९२ मुसलमान और ४० ईसाई हैं।

बेला-मुछपकौनी—यह स्थान मुरहा नदी के किनारे है। असल में इस स्थान का नाम बेला है लेकिन कहते हैं कि चूँकि कुछ दिनों तक मुरहा नदी का जल पीने से लोगों की मूँछ पक जाती है इसलिये लोग इस स्थान को बेला मुछपकौनी कहने लगे हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ९३,७१८ है, जिसमें ७१,९०४ हिन्दू और २१,८१४ मुसलमान हैं।

बैरगनिया—सीतामढ़ी सब-डिविजन के उत्तर-पच्छिम कोने पर यह स्थान व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ थाना और रेलवे स्टेशन हैं। इस थाने की जन-संख्या ४२,४९८ है जिसमें ३३,०१७ हिन्दू, ९,२९२ मुसलमान और १८९ ईसाई हैं।

मेजरगंज—यह स्थान जिले की उत्तरीय सीमा के पास है जहाँ थाने का सदर आफिस है। इस स्थान को लोग मले और हलखौरा भी कहते हैं। नेपाल-युद्ध के समय यहाँ अंगरेजी सेना की छावनी थी। यहाँ अंगरेजों का एक छोटा सा कब्रिस्तान भी है। मेजरगंज थाने की जन-संख्या ५४,४५६ है। यहाँ ४९,१०५

हिन्दू, ५,३३७ मुसलमान, १२ ईसाई और २ अन्य जाति के लोग रहते हैं।

शिवहर—यह स्थान सीतामढ़ी से १६ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक पुराने घराने के भूमिहार-ब्राह्मण जमींदार का निवास स्थान है। इन लोगों का सम्बन्ध बेतिया राजवंश से है। १७ वीं सदी में उग्रसेन सिह ने सरकार चम्पारण को अपने अधिकार में किया और बेतिया राजवंश की स्थापना की। इनके वंशज बहुत दिनों तक वहाँ राज करते रहे। अंगरेजी काल के आरम्भ में युगलकेश्वरसिंह बेतिया राज से हटा दिये जाने पर बुन्देलखंड चले गये। लेकिन इनके पीछे राज चलना मुश्किल हो गया। आखिर ये बुलाये गये और इनको परगना मझवा और सिमराँव दिया गया। परगना मेहसी और बबरा इनके चचेरे भाई श्रीकृष्णसिंह और अवधूतसिह को मिला जिससे शिवहर राज कायम किया गया। शिवहर में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,२०,६९४ है। यहाँ १,०३,३६७ हिन्दू, १७,२९६ मुसलमान और ३१ ईसाई रहते हैं।

सुरसंड—यह स्थान सीतामढ़ी से १५ मील पूरब है। कहते हैं कि सूरसेन नामक एक सरदार के नाम पर इसका सुरसंड नाम पड़ा। उसकी मृत्यु के बाद यह स्थान जंगल हो गया जिसे महेश झा और अमर झा नामक दो भाइयों ने फिर आबाद किया और वर्तमान सुरसंड राजवंश की स्थापना की। सुरसंड में थाने का सदर आफिस है। यहाँ ६४,७९९ आदमी रहते हैं जिनमें ५३,५४६ हिन्दू, और ११,२५३ मुसलमान हैं।

सोनबरसा—यह स्थान जिले की उत्तरी सीमा पर है जहाँ

थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ७१,४८० है जिसमें ६०,२१६ हिन्दू और ११,२६४ मुसलमान हैं।

हाजीपुर सब-डिविजन

हाजीपुर सब-डिविजन जिले के दक्षिण में २५°२९′ और २६°१′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°४′ और ८५°३९′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल ७९८ वर्गमील और जन-संख्या ६,९५,६९० है। इसमें हाजीपुर और लालगंज ये २ शहर और १,३५२ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में हाजीपुर, महनार, राघोपुर, लालगंज, महुआ और पातेपुर ये ६ थाने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान ये हैं—

हाजीपुर—हाजीपुर सब-डिविजन का प्रधान स्थान हाजीपुर गंगा और गण्डक के संगम के समीप २५°४१′ उत्तरीय अक्षांश और ८५°१२′ पूर्वीय देशान्तर पर बसा हुआ है। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन इसी होकर गयी है और यहाँ उसका एक स्टेशन है। यहाँ से एक लाइन मुजफ्फरपुर को गयी हुई है। हाजीपुर के पास मुख्य लाइन पर गण्डक नदी में एक बहुत बड़ा पुल है जिस पर दोनों ओर पैदल चलने का भी रास्ता है। यहाँ १८६९ ई० से म्युनिसिपैलिटी भी कायम है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार हाजीपुर शहर की जन-संख्या १९,२९९ है। हाजीपुर थाने में १,२१,३०५ आदमी रहते हैं। इनमें १,१२,५४६ हिन्दू, ८,७४९ मुसलान और १० ईसाई हैं।

गंगा और गण्डक के संगम पर तथा हरिहर क्षेत्र और पाटलिपुत्र के समीप रहने के कारण यह स्थान सदा ही एक प्रमुख स्थान रहा है। रामायण में लिखा है कि विश्वामित्र के

साथ जनकपुर जाते समय राम और लक्ष्मण गंगा पार करके यहाँ ठहरे थे। ठहरने का निश्चित स्थान कुछ लोग रामचुरा और कुछ लोग रामभद्र बताते हैं। शहर के पच्छिम रामचन्द्र जी का एक मंदिर है।

वर्तमान हाजीपुर शहर १३४५ और १३५८ ई० के बीच बंगाल के शासक शमसुद्दीन इलियास का बसाया हुआ है। उसने यहाँ एक किला बनवाया था, जिसकी दीवाल अब भी देखने में आती है। कहते हैं कि यह शहर २० मील पूरब महनार तक और ४ मील उत्तर गदई सराय तक फैला हुआ था। बहुत दिनों तक यहाँ उत्तर विहार की राजधानी थी और यहाँ का सूबेदार बंगाल के मुसलमान शासक के अधीन काम करता था। बादशाह अकबर और उसके विद्रोही बंगाल के सूबेदार के बीच यहाँ कई लड़ाइयाँ हुईं। अकबर ने यहाँ के सूबेदार दाऊद खाँ को परास्त कर यहाँ का किला तोप से उड़ा दिया। उसने उत्तर और दक्षिण विहार को मिलाकर पटने में राजधानी कायम की। तब से इस स्थान की महत्ता जाती रही।

हाजीपुर के टोलों और महल्लों के नाम से जान पड़ता है कि यह एक बहुत बड़ा तथा धनधान्य पूर्ण शहर था और यहाँ पर मुसलमानों का खूब दबदबा था। हाजी इलियास की कब्र पुल के पास अब भी कायम है जहाँ साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है। पुराने किले के चिन्ह उसके पास ही नजर आते हैं। यहीं पर जामा मस्जिद है। इसके फाटक पर के एक लेख से मालूम पड़ता है कि इसे १५८७ में मकसुस शाह ने बनवाया था। एक दूसरे फाटक पर अरबी में एक लेख है जो पढ़ा नहीं जाता। यह मस्जिद एक हिन्दू मन्दिर के स्थान पर और हिन्दू मन्दिर के सामान से बना है। किले के अहाते के भीतर

करीब सौ वर्ष पहले का बना एक सराय है जिसके बीच में एक पुराना दोमंजिला बौद्धकालीन मंदिर है जिसमें शिव की स्थापना है। मंदिर के ऊपर चारो ओर लकड़ी पर अश्लील चित्र खुदे हैं।

जरीडीह—भगवानपुर रेलवे स्टेशन से ३ मील दक्षिण बिथौली नामक गाँव में जरीडीह नाम का एक टील्हा है। कहते हैं कि मुसलमानी काल के बहुत पहले यहाँ चेरो राजाओं का किला था। इसके चारो ओर गाँवों में दुसाध लोग रहते थे। ब्राह्मण लोगों के यहाँ आने पर एक बार पश्चिम की ओर से एक दुश्मन इन पर चढ़ाई करने के लिये आया। चेरो सरदार लड़ने को आगे बढ़ा। किले में अपने परिवार के लोगों से कहता गया कि अगर वे लड़ाई में झंडा को गिरा हुआ देखें तो समझें कि मैं मारा गया और तब वे भी दुश्मनों के हाथ पड़ने की अपेक्षा किले में आग लगा कर जल मरना अच्छा समझें। जब लड़ाई खतम हो गयी तो झंडा रखनेवालों ने झंडे को गिरा दिया। यह देख किले के सब लोग किले में आग लगाकर जल मरे। जब राजा वापस लौटा तो किले को जलते हुए देखकर खुद भी उसमें कूद कर जल मरा। सन् १८८०-८१ में यहाँ खोदाई हुई थी जिसमें किले की दीवाल खोद निकाली गयी थी। उसका घेरा ३,००० फीट नापा गया था। यहाँ पीतल की कई मूर्त्तियाँ मिली थीं। इनमें दो मूर्त्तियों के लेख से मालूम होता था कि ये महीपालदेव के समय की बनी हैं।

पातेपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ७६,३५७ आदमी रहते हैं, जिनमें ६४,३१८ हिन्दू, १२,०३४ मुसलमान और ५ ईसाई हैं।

बसाढ़—हाजीपुर से २० मील उत्तर-पच्छिम २५°५९′

उत्तरीय अक्षांश और ८५°८′ पूर्वीय देशान्तर पर बसाढ़ एक गाँव है। लिच्छवियों के संघ-राज्य की राजधानी वैशाली यही स्थान समझा जाता है। भगवान बुद्ध यहाँ तीन बार आये थे। बौद्धों की द्वितीय महासभा यहीं हुई थी और यह स्थान बहुत दिनों तक बौद्ध धर्म का एक मुख्य अड्डा रहा। जैनियों के लिये भी वैशाली पवित्र भूमि रही है, क्योंकि जैन धर्म के प्रवर्तक बुद्धदेव के समकालीन भगवान महावीर की जन्म-भूमि यही थी।

लिच्छवियों के स्मारक स्वरूप एक विशाल टील्हे के सिवा यहाँ और कुछ नहीं रह गया है। इस टील्हे को स्थानीय लोग राजा विशाल का गढ़ कहते हैं। जेनरल कनिंघम ने १८७१ ई० में इस स्थान को देखकर लिखा था कि वैशाली के भग्नावशेषों में यहाँ एक उजाड़ किला और एक टूटा-फूटा स्तूप है। किला अब ईंट से भरा हुआ टील्हे के रूप में रह गया है जिसके चारो कोने पर चार बुर्जों की निशानी है। टील्हे के चारो तरफ खाई है। किले की दीवाल और चारो बुर्जों का स्थान टील्हे के और स्थानों से कुछ ऊँचा है। टील्हे की ऊँचाई सरजमीन से सात आठ फीट है। किले का मुख्य द्वार दक्षिण की ओर था जहाँ खाई पर बाँध अब भी दिखाई पड़ता है। किले का घेरा करीब एक मील है। यह उत्तर से दक्षिण लगभग १७०० फीट लम्बा और पूरब से पश्चिम ८०० फीट चौड़ा है। खाई की चौड़ाई १२५ फीट है। किले के अन्दर एक हाल का बना मंदिर है।

किले के दक्षिण-पच्छिम कोने से १००० फीट की दूरी पर एक टूटा-फूटा स्तूप है जिसकी ऊँचाई करीब २४ फीट है। इस स्तूप के सिरे को समतल बनाकर पीछे इसपर कई मुसलमानी कब्र बनायी गयीं। सबसे बड़ी कब्र मीर अब्दाल की है जो करीब ५०० वर्ष की पुरानी है। इसके पास एक विशाल

राजा विशाल का गढ़, बसाढ़ (मुजफ्फरपुर)
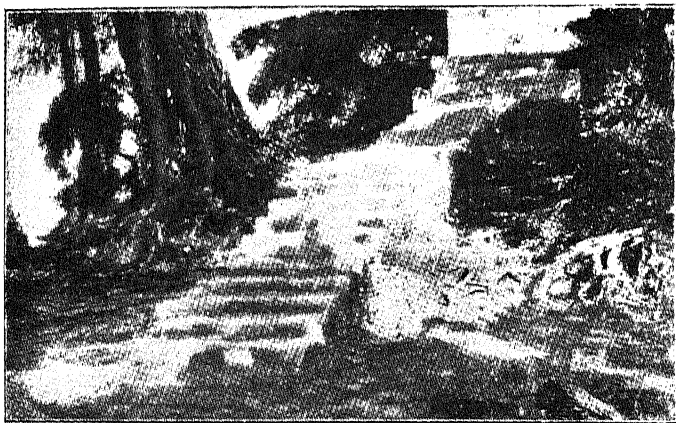
बसाढ़ के प्राचीन स्तूप पर शाह काज़िन की दरगाह
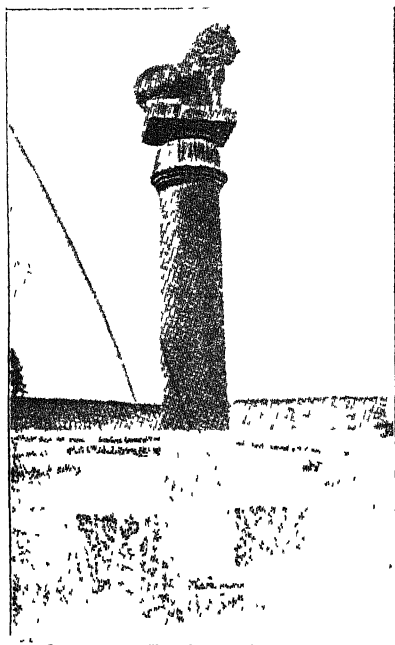
अशोक स्तम्भ, कोल्हुआ (बसाढ के पास)

वटवृक्ष है। यहाँ चैत के महीने में एक बहुत बड़ा मेला लगता है। जेनरल कनिंघम का कहना है कि चूंकि यह मेला किसी मुसलमानी महीने में न लग कर हिन्दू महीने में लगता है, इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवतः यह मेला बहुत दिन पहले से किसी बौद्ध के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिये उसके समाधि-स्थान पर लगाया जाता हो।

सन् १९०४ में किले की खोदाई में यहाँ पुराने मकानों के चिन्ह मिले हैं। कुछ मकान तो सिर्फ कई शताब्दी पहले के और कुछ बहुत पुराने मालूम पड़ते थे। पुराने मकान ईसा की तीसरी शताब्दी के या इसके भी पहले के हो सकते हैं। राख और जलती हुई लकड़ियाँ सब जगह पायी गयीं जिससे अनुमान किया जाता है कि शायद यह स्थान लूटा गया हो और यहाँ आग लगा दी गयी हो। एक कोठरी में यहाँ बर्तनों के टुकड़ों, हड्डियों, जले चावलों और राखों में मिली हुई ७०० से अधिक खुदी हुई मोहरें (सील) मिलीं थीं। इन मोहरों में कुछ तो सरकार की और कुछ महाजनों तथा सौदागरों की थीं। दो मोहरों पर तिरहुत का पुराना नाम तीरभुक्ति खुदा था। ये मोहरें ४ थीं या ५ वीं शताब्दी की मालूम होती थीं।

बसाढ़ में बहुत से तालाब हैं। एक तालाब का नाम वामन तालाब है। यहाँ लोग कहते हैं कि पुराण प्रसिद्ध राजा बलि यहीं हुए थे और यहीं वामन भगवान ने बलि के गर्व को नाश किया था।

बसाढ़ के ३ मील उत्तर-पच्छिम और बखरा गाँव से एक मील दक्षिण-पूरब कोलहुआ नामक स्थान में बहुत से प्राचीन-कालीन भग्नावशेष हैं। इनमें एक पत्थर का स्तम्भ, एक टूटा-फूटा स्तूप, एक पुराना तालाब और कुछ पुराने मकानों के चिन्ह हैं। इस स्थान

के विषय में चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् ने लिखा था कि वैशाली के उत्तर-पश्चिम भाग में अशोक का बनवाया एक स्तूप और ५०-६० फीट ऊँचा एक स्तम्भ है जिस पर सिंह की मूर्त्ति बनी हुई है। स्तम्भ के दक्षिण एक तालाब है जो भगवान् बुद्ध के यहाँ आने के अवसर पर उन्हीं के लिये खोदा गया था। तालाब से कुछ पश्चिम एक दूसरा स्तूप है जहाँ बन्दरों ने भगवान बुद्ध को मधु प्रदान किया था। तालाब के उत्तर-पश्चिम कोने पर बन्दर की एक मूर्त्ति बनी हुई है। य्वन् च्वाङ् की लिखी हुई ये सब चीजें अब भी देखने में आती हैं। तालाब को आजकल लोग रामकुंड कहते हैं। स्तम्भ पानी की सतह से केवल ४५ फीट ऊँचा है। सम्भव है पहले से यह कुछ और धस गया हो। जमीन से ऊपर इसकी ऊँचाई सिर्फ २२ फीट है। इस पर अशोक का लिखा कोई लेख नहीं है। बहुत से दर्शकों ने इस पर अपने नाम आदि लिख दिये हैं। १७९२ ई० में एक अंगरेज ने भी अपना नाम इस पर लिख दिया था। यह स्तम्भ उन ६ स्तम्भों में से एक है जिन्हें अशोक ने बुद्ध के पवित्र स्थानों को दर्शन करने जाते समय उनके मुख्य-मुख्य स्थानों पर बनवाये थे। स्तम्भ के पास अशोक-स्तूप समझे जानेवाले टील्हे के ऊपर एक हाल के बने मंदिर में पालवंश के समय की कुछ बौद्ध मूर्तियाँ हैं। स्तम्भ के पच्छिम भी दो टील्हे हैं। इस स्थान के चारो ओर कई मीलों तक बहुत से टील्हे और पुराने भग्नावशेष हैं जो वैशाली के वैभव को बता रहे हैं।

महनार—यह स्थान हाजीपुर से २० मील दक्षिण-पूरब बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन पर महनार रोड स्टेशन के पास है। यहाँ एक बड़ा बाजार और थाने का सदर आफिस है। कहते हैं कि पहले हाजीपुर शहर यहाँ तक फैला हुआ था।

महनार थाने में ९४,००९ आदमी रहते हैं जिनमें ८७,३९५ हिन्दू और ६,६१४ मुसलमान हैं।

महुआ—यहाँ थाने का सदर अफिस है। इस थाने की जन-संख्या २,१६,९७३ है, जिसमें १,९४,०५८ हिन्दू, २२,९१४ मुसलमान और १ दूसरी जाति के लोग हैं।

राघोपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४२,४५१ आदमी रहते हैं, जिनमें ४२,२६५ हिन्दू और १८६ मुसलमान हैं।

लालगंज—हाजीपुर से १२ मील उत्तर-पच्छिम गण्डक के किनारे यह एक शहर है। यहाँ एक बड़ा बाजार, अस्पताल, हाईस्कूल, थाना और म्युनिसिपल अफिस हैं। १९३१ की गणनानुसार इस शहर की जन-संख्या ९,१९२ है। लालगंज से दक्षिण सिंगिया एक गाँव है। विहार में पहले-पहल यहीं पर १६७६ ई० के कुछ वर्ष पूर्व अंगरेजों की शोरा की फैक्टरी खुली थी। लालगंज थाने की जन-संख्या १,४४,५९५ है जिसमें १,३१,६२८ हिन्दू, १२,९५७ मुसलमान और १० दूसरी जातियों के लोग हैं।

वैशाली—दे० "बसाढ़"।

सिंगिया—दे० "लालगंज"।

हजरत जनदहा—महनार से ९ मील उत्तर यह एक गाँव है। यहाँ तम्बाकू का व्यापार खूब होता है। यहाँ एक मुसलमान फकीर दीवान शाह अली की कब्र है। मुसलमान इस स्थान को पवित्र समझ कर हजरत जनदहा कहते हैं। इस फकीर के सम्बन्ध में तरह-तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। इसका चाचा मकदुम शाह अब्दुल फतेह भी बहुत नामी फकीर था। इसकी कब्र हाजीपुर में है।

मुजफ्फरपुर जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	३,५४,६०७	मुसहर	४६,३१०
दुसाध	२,००,२१९	हज्जाम	४५,४७४
भूमिहार-ब्राह्मण	१,६५,४४६	कमार	४२,८४२
राजपूत	१,६२,१६८	कुम्हार	४०,२२५
चमार	१,५५,४७४	कायस्थ	३९,७७५
कोयरी	१,४४,८७७	धोबी	३४,५९४
ब्राह्मण	१,३०,९२७	कहार	२५,८४४
कुरमी	१,३०,६८३	बरही	१४,५८८
मल्लाह	१,२८,४१६	माली	११,११०
तेली	१,००,२८०	पासी	१०,१५९
जोलाहा	९२,५४४	बनिया	९,८५२
काँदू	८९,७६५	केवट	७,५६६
ताँती	५६,८११	डोम	६,८१२
धानुक	५६,४२२	हलालखोर	३,९६४

दरभंगा जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

दरभंगा जिला तिरहुत कमिश्नरी के उत्तर-पूरब भाग में है। यह २५°२८′ और २६°४०′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°३१′ और ८६°४४′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है।

दरभंगा जिले के उत्तर में नेपाल, पूरब में भागलपुर जिला, पश्चिम में मुजफ्फरपुर जिला, दक्षिण-पूरब में मुंगेर जिला और दक्षिण-पच्छिम में गंगा नदी है। गंगा नदी इसे पटना जिले से अलग करती है।

दरभंगा जिले का क्षेत्रफल ३३४८ वर्ग मील है। उत्तर-पूरब से लेकर दक्षिण-पश्चिम तक इस जिले की लम्बाई ९६ मील है। यह जिला अपनी कमिश्नरी के चम्पारण जिले से छोटा पर सारन और मुजफ्फरपुर से बड़ा है।

प्राकृतिक बनावट

दरभंगा जिले की भूमि नदी के बहाव से बनी हुई है। यह जिला उत्तर से दक्षिण की ओर ढलता हुआ है, हाँ, बीच में वारिसनगर थाना के पास जमीन कुछ दबी हुई है। बहुत से स्थानों में नाले, नहर और दलदल हैं। नेपाल की पहाड़ी से

नदियों का पानी दक्षिण की ओर बहता हुआ गंगा में गिरता है। नदियाँ अपने साथ बहुत सी मिट्टी भी लाती हैं जिससे जमीन की सतह कुछ ऊँची होती जाती है।

नदियों के कारण यह जिला तीन प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पहला भाग जिले के दक्षिण-पश्चिम हिस्से में पड़ता है जिसके अन्दर दलसिंगसराय और समस्तीपुर के थाने हैं। बूढ़ी गण्डक इस भाग को जिले के अन्य भागों से अलग करती है। यह भूभाग ऊँचा है और इसमें दलदल जमीन बहुत कम है। जिले का सबसे उपजाऊ भाग यही है। जिले का दूसरा प्राकृतिक भाग बूढ़ी गण्डक और बाघमती नदी के बीच का भाग है। इसके अन्दर वारिसनगर थाना है। यह जिले का सबसे नीचा भाग है, इसमें छोटा सा दलदल है। नदी की बाढ़ इसमें बराबर आया करती है। जिले के तीसरे प्राकृतिक भाग के अन्दर सदर और मधुवनी सब-डिविजन हैं। इसमें भी बहुत सी नीची जमीन है जिसमें होकर कितनी ही नदियाँ बहा करती हैं। इस भाग के दक्षिण-पूरब हिस्से में, जहाँ बहेड़ा और रोसड़ा थाना है, बरसात में बहुत पानी जमा हो जाता है और वह एक झील सा मालूम पड़ता है। इस भाग के बहुत से स्थानों में पानी साल के अधिकांश समय तक बना रहता है। मधुवनी सब-डिविजन के पश्चिम भाग की कुछ जमीन ऊँची है। नेपाल की पहाड़ी से निकलने वाली बहुत सी नदियाँ मधुवनी सब-डिविजन होकर ही बहती हुई गंगा में आकर मिलती हैं।

नदियाँ

दरभंगा जिले की नदियों में गंगा, बूढ़ी गण्डक, बाया, बाघमती, कमला, तिलयुगा और करेह नदियाँ मुख्य हैं।

गंगा—गंगा नदी जिले के दक्षिण-पश्चिम कोने पर २० मील तक सीमा का काम करती हुई इस जिले को पटना जिले से अलग करती है। साधारण समय में नदी की चौड़ाई करीब एक मील रहती है लेकिन बरसात के समय चौड़ाई बहुत बढ़ जाती है। नदी में बड़ी-बड़ी नावें और स्टीमर चला करती हैं, पर इस जिले के अन्दर नदी के किनारे व्यापार का कोई बड़ा केन्द्र नहीं है।

बया—बया नदी बूढ़ी गण्डक से निकलती है और मुजफ्फरपुर जिले के दक्षिण भाग से बहती हुई इस जिले में प्रवेश करती है। जिले के अन्दर यह दलसिंगसराय थाना से होती हुई समस्तीपुर सब-डिविजन के दक्षिण-पूरब की ओर धनेशपुर गाँव के पास गंगा में मिलती है।

छोटी या बूढ़ी गण्डक—यह नदी नेपाल की पहाड़ी से निकल कर चम्पारण और मुजफ्फरपुर जिला होती हुई पूसा के पास दरभंगा जिले में प्रवेश करती है। यहाँ से यह समस्तीपुर सब-डिविजन होकर बहती हुई रोसड़ा के पास इस जिले को छोड़ देती है। फिर यह मुंगेर जिले में प्रवेश कर गागेरी के पास गंगा से मिल जाती है। इस नदी में नावें बराबर चला करती हैं, जिससे माल एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में बड़ी सुविधा रहती है। रेलगाड़ी के चल जाने से अब इसकी महत्ता घट गयी है तौभी इसके किनारे बहुत से बाजार हैं। जमबारी और

बलान ये दो नदियाँ पूसा के पास इससे निकलती हैं और मुँगेर जिले में आकर फिर इसमें मिल जाती हैं।

बाघमती—यह नदी नेपाल से निकलकर मुजफ्फरपुर जिला होती हुई दरभंगा जिले में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूरब की ओर बहकर मुंगेर जिले में चौथम के पास तिलयुगा में मिलती है। छोटी बाघमती नदी दरभंगा शहर होकर बहती हुई हयाघाट के पास असल बाघमतो से मिल जाती है।

करेह—यह नदी बाघमती से फूट निकलती है और तिलकेश्वर के पास तिलयुगा से मिल जाती है।

कमला—यह नदी मधुवनी, दरभंगा और समस्तीपुर तीनों सब-डिविजनों से होती हुई रोसड़ा थाना के दक्षिण-पूरब कोने में बागमती से मिल जाती है। धार्मिक दृष्टि से यहाँ नदियों में गंगा के बाद कमला का ही स्थान है। इसे लोग गंगा की छोटी बहन कहते हैं। पर्व-तिथियों में लोग बहुत बड़ी संख्या में इस नदी में स्नान करते हैं। बालकों का मुंडन प्रायः इसी नदी के किनारे होता है।

तिलयुगा—यह नदी नेपाल से निकलकर दरभंगा जिले की पूर्वी सीमा को घेरती हुई मुँगेर जिले में प्रवेश करती है। वहाँ इसमें जब बाघमती नदी मिलती है तो सम्मिलित धारा का नाम घघरी हो जाता है और वह कोशी होकर गंगा में मिल जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

इस जिले की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ चैत से गर्मी का मौसिम शुरू होकर जेठ-आषाढ़ तक रहता है।

दक्षिण विहार में जितनी गर्मी पड़ा करती है उतनी गर्मी यहाँ नहीं पड़ती। आषाढ़-सावन से वर्षा शुरू होकर भादो-आसिन तक रहती है। सावन-भादो में सबसे अधिक वर्षा होती है। कातिक से जाड़ा पड़ना आरम्भ होता है और पूस-माघ में खूब जाड़ा पड़ता है। पूर्वी और पच्छिमी ये दो मुख्य हवाएँ हैं। पच्छिमी हवा सूखी और पूर्वी हवा तर रहती है। साल में साधारणतः ४५ से लेकर ५० इंच तक वर्षा होती है।

गावों में सफाई पर लोगोंका यथेष्ट ध्यान नहीं है। इस जिले में पोखर बहुत से हैं। एक ही पोखर में लोग आबदस्त लेते, कपड़ा धोते, पशुओं को नहाते और पानी पिलाते तथा खुद भी उसमें स्नान करते और उसका पानी पीते हैं। जिले की आम वीमारी बुखार है। संक्रामक रोगों में हैजा, प्लेग और चेचक मुख्य हैं। हैजे से हर साल बहुत से लोग मरा करते हैं। इस जिले में पहले-पहल १८९८ ई० में प्लेग हुआ था। उसके बाद से यह जब तब बराबर फैला करता है। हैजा, प्लेग और चेचक के लिये सरकार की ओर से लोगों को टीका देने का प्रबन्ध है। संक्रामक रोगों के फैलने से कूओं की सफाई के लिये और रोगियों को दवा बाँटने के लिये डिस्ट्रिक्टबोर्ड की ओर से डाक्टरों का विशेष प्रबन्ध रहता है। संक्रामक रोगों के अलावे आमाशय, संग्रहणी, घेघ, गठिया आदि रोग तथा आँख, कान और चर्म सम्बन्धी रोग भी बहुत होते हैं। गण्डक के किनारे के गाँवों में लोगों को घेघ बहुत होता है। वारिस-नगर, समस्तीपुर और दलसिंगसराय थाने में गूँगे और बहरे लोगों की संख्या अधिक है। जिलेभर में सन् १९३५-३६ में डिस्ट्रिक्टबोर्ड के ४२ अस्पताल थे। लहेरियासराय में कुष्ठ रोगियों के लिये एक चिकित्सालय है। सन् १९३१ की गणना

के अनुसार इस जिले में अंधों की संख्या ३,६८७, बहरे-गूँगों की संख्या २,५०२, कोढ़ियों की संख्या ७९२ और पागलों की संख्या ५७२ है।

जानवर

तिरहुत प्रान्त पहले मवेशियों के लिये प्रसिद्ध था। यहाँ की सबसे अच्छी नसल बछौर थी जो बछौर परगने के नाम पर मशहूर थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी यहाँ से बैल खरीद कर तोप खींचने वाली गाड़ी में जोतते थे। जब्दी परगने की नसल भी अच्छी समझी जाती है। ये दोनों परगने खजौली और फुलपरास थाने के अन्दर पड़ते हैं। मधुवनी और समस्तोपुर सब-डिविजन में मवेशी अधिक तायदाद में पाये जाते हैं। लोग गाय बैल के अलावे भैंस भी अधिक संख्या मे पालते हैं। नर भैंसे यहाँ से बंगाल प्रान्त में तथा दक्षिण विहार में भेजे जाते हैं जहाँ वे हल जोतने के काम में लाये जाते हैं। जिस थाने या गाँव में मुसलमानों की आबादी अधिक है वहाँ बकरियाँ अधिक संख्या में पाली जाती हैं। गड़ेरी लोग ऊन के लिये भेड़ और डोम, हलालखोर वगैरह माँस के लिये सूअर पालते हैं। सवारी करने, बोझ ढोने और इक्के वगेरह में जोतने के लिये लोग घोड़ा पोसते हैं। समस्तोपुर सब-डिविजन के सरैसा परगने के घोड़े सबसे अच्छे समझे जाते हैं। ये कद में छोटे होने पर भी मजबूत होते हैं। चरागाह के अभाव से जिले में मवेशियों की संख्या घट रही है।

पहले जब यहाँ बड़े-बड़े जंगल थे बाघ, चीता आदि जंगली

जानवर बहुत पाये जाते थे। मगर उन जंगलों के कट जाने से अब ये शायद ही कभी देखने में आते हैं। हाँ, सूअर, लोमड़ी, साही, नील गाय, हरिन वगैरह छोटे-छोटे जंगली जानवर अब भी सब जगह पाये जाते हैं। जिले के अन्दर नदी, झील और तालाबों की अधिकता रहने से जलचर जीव बहुत मिलते हैं। यहाँ के लोग मछलियाँ बहुत खाते हैं, क्योंकि यह काफी तायदाद में मिलती हैं। करेह, तिलयुगा आदि नदियों में गोह, घड़ियाल, बोचा आदि बहुत पाये जाते हैं।

जिले के मवेशियों को पाँव और मुँह की बीमारी बहुत होती है। लहेरियासराय, मधुवनी और समस्तीपुर में जानवरों के अस्पताल हैं। कुछ डाक्टर देहातों में घूमकर भी पशुओं का इलाज करते हैं।

इतिहास

प्राचीनकाल—इस भू-भाग के इतिहास का पता वैदिक काल से ही लगता है। वैदिक कथाओं से मालूम होता है कि उस समय दरभंगा जिला उस प्रदेश का एक भाग था जहाँ पंजाब की ओर से विदेह वंश के लोग आकर बस गये थे। लिखा है कि पंजाब से पूरब की ओर चल कर ये लोग पहले सरस्वती नदी के किनारे रहे; कुछ समय के बाद इनमें से कुछ लोग माधव विदेघ के नेतृत्व में वहाँ से और भी पूरब की ओर बढ़े तो आते-आते गंडक के तट पर पहुँचे। शतपथ ब्राह्मण से पता चलता है कि उस समय अग्नि भी उनके साथ थी। लिखा है कि वह पृथ्वी को जलाती हुई पूरब की ओर बढ़ रही थी और

विदेह लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। इस कथन से जान पड़ता है कि आर्य लोग जंगलों में आग लगा कर उन्हें साफ करते गये और फिर उस भूमि को आबाद करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़े। इस तरह उन लोगों ने सदानीरा (गण्डक या शालिग्रामी) को पार कर उस भाग में पहुँचे जो पीछे मिथिला या तीरमुक्ति (तिरहुत) नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ उन लोगों ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की।

विष्णुपुराण में विदेह वंश का वर्णन आया है। उसमें लिखा है कि इक्ष्वाकु के पुत्र निमि हुए। एक बार वशिष्ठ मुनि ने उन्हें श्राप दिया कि तुम विदेह होओ। फलस्वरूप उनकी देह और आत्मा अलग-अलग होकर बहुत दिनों तक कायम रही। मुनियों ने उनकी मृत देह को मंथन कर एक पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम जनक पड़ा। विदेह के पुत्र होने से लोग इन्हें वैदेह भी कहने लगे। मंथन से जन्म होने के कारण ये मिथि भी कहलाये। इन्हीं के नाम से इस प्रदेश का नाम मिथिला पड़ा। इस वंश में जितने राजे हुए सब अपने वंश के नाम पर विदेह और जनक कहलाये। विदेह और जनक शब्द कुल की उपाधि हो गये। कहते हैं कि जनक या मिथि के पुत्र नन्दिवर्द्धन थे। इसके बाद क्रम से सुकेतु, देवरात, वृहद्रथ, महावीर्य, सत्यधृति, धृष्टकेतु, हर्यश्व, मरु, प्रतिबंधक, कृतरथ, कृति, विबुध, महाधृति, कृतिरात, महारोमा, सुवर्णरोमा, ह्रस्वरोमा और सीरध्वज हुए। सीरध्वज बड़े प्रसिद्ध राजा थे। लोग इन्हें विशेषतः जनक के नाम से ही जानते हैं। इन्हीं की लड़की जानकी या सीता हुई जिनका विवाह अवध नरेश रामचन्द्र जी से हुआ था। इनकी कथा रामायण में विस्तारपूर्वक वर्णित है। सीरध्वज के एक भाई कुशध्वज थे। वे सांकाश्य देश के राजा हुए।

सांकाश्य देश किस भू-भाग का नाम था इसका पता नहीं चलता ।

सीरध्वज के बाद इस वंश के ३३ राजे हुए बताये जाते हैं जिनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं—भानुमान, शतद्युम्न, शुचि, उर्ज्जवह, सत्यध्वज, कुनि, अंजन, ऋतुजित, अरिष्टनेमि, श्रुतायु, सूर्य्याश्व, संजय, क्षेमारि, अनेना, मीनरथ, सत्यरथ, सत्यरथी, उपगु, श्रुत, शाश्वत, सुधन्वा, सुभास, सुश्रुत, जय, विजय, ऋत, सुनय, वीतहव्य, संजय, क्षेमाश्व, धृति, बहुलाश्व और कृति । कृति के बाद जनक राजवंश का अन्त हो गया । इन राजाओं के सम्बन्ध में विशेष बातें मालूम नहीं हैं । इन सबों की राजधानी मिथिला नगरी थी जिसे जनकपुरी भी कहते हैं । जनकपुरी इस समय दरभंगा जिले की उत्तरीय सीमा के पास नैपाल राज्य के अन्दर है, जिसे हिन्दू लोग तीर्थस्थान मानते हैं । कहते हैं कि दरभंगा जिलान्तर्गत बेनीपट्टी थाने के फुलहार गाँव में राजा सीरध्वज जनक का पुष्पोद्यान था जहाँ के मंदिर में जानकीजो गिरिजा-पूजन के लिये आया करती थी ।

मिथिला या विदेह राज्य की सीमा समय समय पर घटती बढ़ती रही । लेकिन साधारण तौर पर उत्तर में हिमालय पहाड़, दक्षिण में गंगा नदी, पूरब में कोशी और पच्छिम में गंडकी इसकी प्राकृतिक सीमा का काम करती थी । इस सम्बन्ध में यह पद्य प्रसिद्ध है:—

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिसि, पूर्व कौशिकी धारा ।
पच्छिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा ॥
कमला, त्रियुगा, अमृता धेमुरा, बाघमती कृत सारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणा पभृति, से मिथिला विद्यागारा ॥

मिथिला किसी समय प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति तथा विद्या और बुद्धि का केन्द्र था। मिथिला के राजा-गण बड़े विद्वान्, तत्वदर्शी और आत्मज्ञानी थे। इनके दरबार में भी बड़े-बड़े पंडित आश्रय पाते थे। इन राजाओं में सीरध्वज जनक का पाण्डित्य और आत्मज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा था। इनके दरबार में सारे भारत के खास कर कोशल, कुरु, और पांचाल आदि देशों के बड़े-बड़े विद्वान्, पंडित, ऋषि, महर्षि आया जाया करते थे। महर्षि याज्ञवल्क्य वाजसनेयी इन्हीं के प्रधान पुरोहित थे, जिन्होंने यजुर्वेद के संकलन का काम किया। इनका आश्रय कमतौल रेलवे स्टेशन के पास जगबन गाँव में बताया जाता है। याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियाँ थीं—गार्गी और मैत्रेयी। ये दोनों भी परम विदुषी और तत्त्वदर्शिनी हुईं। भारतीय विदुषी ललनाओं में इनका स्थान सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। मिथिला प्रदेश में और भी कितने महाविद्वान् और ऋषि मुनि हो गये। मीमांसा शास्त्र के संकलन करनेवाले जैमिनि ऋषि का आश्रम यमुना और कमला नदी के संगम पर था। सांख्य-योग के रचयिता कपिल मुनि कमला और करेह नदी के पूर्वीय संगम पर रहते थे। न्यायशास्त्र के रचने वाले गौतम मुनि का स्थान दरभंगा थाना के अहियारी गाँव में बताया जाता है, पर कुछ लोग सारन जिले के गोदनी नामक स्थान में भी बताते हैं। अहल्या गौतम मुनि की ही पत्नी थी जिनका वर्णन रामायण में आया है। कहते हैं कि अहल्या के नाम पर ही बनते बिगड़ते इस गाँव का नाम अहियारी पड़ा। अहियारी के पास बिसौल नामक गाँव में विश्वामित्र का स्थान बताया जाता है। लेकिन विश्वामित्र का आश्रम लोग शाहाबाद जिले के बक्सर के पास और कोशी नदी के किनारे भी बतलाते हैं।

हर्षवर्द्धन के मरने पर तिरहुत प्रदेश छोटे-छोटे शासकों में बँट गया।

९ वीं सदी में मिथिला में एक प्रसिद्ध विद्वान् और तत्त्वदर्शी पं० मंडन मिश्र हुए। ये अपने गुरु कुमारिल भट्ट की तरह द्वैतवादी और वैदिक धर्म के प्रचारक थे। उन दिनों बौद्ध-विद्वानों और वैदिक विद्वानों में बड़ा शास्त्रार्थ चला करता था। पं० मंडन मिश्र वैदिक विद्वानों में अग्रगण्य थे इसलिये दूर-दूर स्थानों से लोग इन्हें शास्त्रार्थ करने को बुलाया करते थे। इनकी स्त्री भारती या सरस्वती भी अपने समय की अद्वितीय विदुषी थी। माहिष्मती नाम नगरी में स्वामी शंकराचार्य के साथ इन दोनों पति पत्नियों का शास्त्रार्थ बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि भारती देवी से शंकराचार्य को परास्त होना पड़ा था। माहिष्मती नगरी को लोग आज महेसी कहते हैं और यह भागलपुर जिले के मधेपुरा सब-डिविजन के अन्दर पड़ता है। यहीं मंडन मिश्र की जन्मभूमि थी। बौद्ध और जैनमत के विरोधी प्रसिद्ध पं० उदयनाचार्य यहीं १० वीं सदी में मधेपुरा के पास कड़ामा नामक ग्राम में हुए। प्रसिद्ध दार्शनिक वाचस्पति मिश्र का स्थान भी मिथिला ही था।

पाल और सेनवंश—य्वनच्वाङ् के बाद बहुत दिनों तक मिथिला के इतिहास में कोई उल्लेख योग्य बात नहीं मिलती। ९ वीं, १० वीं और ११ वीं सदी में जब पाल राजवंश का प्रबल प्रताप पूर्वी भारत में रहा तब यह भूभाग भी उस वंश के अधीन हो गया। ग्यारहवीं सदी में ही चेदि (वर्तमान मध्य प्रदेश) के राजाओं ने उत्तर भारत का प्रदेश पाल वंशियों से ले लिया। १०१९ ई० में मिथिला चेदिराज गांगेयदेव के अधीन हुआ। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद सेन राजवंश का बल बढ़ा। सेन

राज्य के अन्दर मिथिला उसका उत्तर-पच्छिम प्रान्त बताया जाता है।

मुसलमान-काल—तेरहवीं सदी के आरम्भ में बख्तियार खिलजी ने मगध की राजधानी विहार पर अधिकार जमा लिया और फिर बंगाल पर भी कब्जा किया। इसके बाद ही १२११ और १२२६ ई० के बीच वंगाल के शासक गयासुद्दीन इवाज के वक्त में मिथिला पर भी मुसलमानों का अधिपत्य हो गया। यहाँ का राजा मजबूर होकर कर देने लगा।

सिमराँव वंश—लेकिन यह आधिपत्य समूचे मिथिला प्रदेश पर नहीं हो सका। चम्पारण जिले के उत्तर-पूरब कोने पर सिमराँव में इसी समय एक हिन्दू राज्यवंश की स्थापना हुई जो एक शताब्दी तक तिरहुत प्रदेश पर शासन करता रहा। कहते हैं कि इस वंश के संस्थापक नान्यदेव कर्नाटक से आकर यहाँ बसे थे। इन्होंने अपने बाहुबल से समूचे तिरहुत और नेपाल को भी अपने वश में किया। इनके एक पुत्र नेपाल में और दूसरे जिनका नाम गंगादेव था, मिथिला में राज्य करने लगे। गंगादेव ने ही लगान की वसूली के लिये परगना कायम किया था और हरेक परगने में एक-एक चौधरी बहाल किया था। इसने न्याय के लिये जगह-जगह पंचायतें भी कायम कीं। कहते हैं कि बहेरा थाने के अन्दर लहेराराजा गाँव में तथा मधुबनी के उत्तर-पूरब अन्धराठाही में गंगादेव ने किले बनवाये थे। दरभंगा और अन्धराठाही में इनके खुदवाये पोखर मौजूद हैं। दरभंगा का पोखर गंगासागर नाम से प्रसिद्ध है। गंगादेव के लड़के नरसिंहदेव को अपने सम्बन्धी नेपाल के राजा के साथ झगड़ा हो गया था। तब से नेपाल का तिरहुत के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रहा। नरसिंह के लड़के राजा रामसिंह देव

बड़े धार्मिक व्यक्ति हुए। इनके समय में वेद के कई प्रसिद्ध भाष्य तैयार हुए और प्रजा में धर्म का प्रचार हुआ। इस समय शासन में भी कई तरह के सुधार किये गये। गाँवों की रक्षा के लिये पुलिस की नियुक्ति हुई। यह प्रथा वर्तमान चौकीदारी प्रथा से बहुत मिलती जुलती सी थी। रामसिंहदेव के बाद उनका लड़का शक्तिसिंह और फिर हरसिंहदेव राजा हुए। यही इस वंश के अन्तिम राजा थे। हरसिंहदेव के खुदवाये हराही पोखर और कई और तालाब हैं। इन्होंने ही मैथिल ब्राह्मणों को श्रोत्रिय, योग और जैवार इन तीन श्रेणियों में बाँटा तथा मैथिल ब्राह्मणों और कर्ण कायस्थों की वंशावली—कुलपंजी लिखने की प्रथा चलायी जो अब भी कायम है। कहते हैं कि कर्णाटक के राजा नान्यदेव ने ही अपने साथ अपने प्रधान मन्त्री श्रीधर ठाकुर तथा अन्य कर्ण कायस्थों को यहाँ लाया था। सन् १३२३ ई० में दिल्ली के बादशाह तुगलकशाह ने बंगाल के विद्रोही शासक बहादुरशाह को परास्त कर लौटते वक्त तिरहुत के राजा हरसिंहदेव पर भी चढ़ाई कर दी और तिरहुत को अपने अधिकार में कर लिया। हरसिंह देव ने भागकर नेपाल के अन्दर अपना एक छोटा सा राज्य कायम किया।

ठाकुर वंश—हरसिंह देव के भाग जाने पर तुगलक शाह ने कामेश्वर ठाकुर को तिरहुत का शासक बनाया। मुसलमान बादशाहों के अधीन ठाकुर वंश सोलहवीं सदी के आरम्भ तक यहाँ राज्य करता रहा। १३५३ ई० में कामेश्वर ठाकुर को फिरोजशाह ने गद्दी से उतार दिया और उसके बदले उसके छोटे लड़के भोगेश्वर ठाकुर को गद्दी पर बैठाया। इसके बाद क्रम से गुणेश्वरसिंह, वीरसिंह, कीर्तिसिंह, ज्ञानसिंह, देवीसिंह और शिवसिंह राजा हुए। इनमें सब से प्रसिद्ध राजा शिवसिंह

हुए। ये बड़े विद्याप्रेमी थे। इनका दरबार कवियों और विद्वानों से भरा था। १४०२ ई० में इन्होंने दिल्ली के बादशाह से स्वतन्त्र होने की घोषणा कर दी। लेकिन इनकी स्वतन्त्रता अधिक दिनों तक नहीं रही। तीन वर्ष के बाद इन पर चढ़ाई हुई। बादशाही सेना ने इन्हें परास्त किया और ये पकड़ कर दिल्ली भेज दिये गये। इनकी स्त्री लखिमा ठकुरानी राजकवि सुप्रसिद्ध विद्यापति ठाकुर की संरक्षकता में जनकपुर के पास बनौली नामक स्थान में रहने लगी। बारह वर्ष के बाद जब उन्हें अपने पति का पता न चला तो वह सती हो गयीं। लहेरियासराय के पास सिवैसिंहपुर गाँव राजा शिवसिंह का बसाया हुआ कहा जाता है। लोग रजोखरा ग्राम का घुड़दौड़ पोखर इन्हीं का बनवाया हुआ बताते हैं। राजा शिवसिंह को लोग अब भी नहीं भूले हैं। यहाँ के लोग कहा करते हैं कि "पोखरी रजोखरी ओर सब पोखरा, राजा शिवै सिंह और सब छोकड़ा।" राजा शिवसिंह ने १४०० ई० में विद्यापति को जो विसदी (वेनी पट्टी थाना के अन्दर आधुनिक विसफी गाँव) ग्राम दिया था, उस सम्बन्ध का दानपत्र अब भी मौजुद है। शिवसिंह के उत्तराधिकारी पद्मसिंह, हरिसिंह, नरसिंह, धोरसिंह, भैरवसिंह, रामभद्र और लक्ष्मीनाथ १५३२ ई० तक तिरहुत के उत्तर भाग में मुसलमान शासकों के अधीन राज्य करते रहे। इसके बाद यहाँ मुसलमान शासक हुए। लेकिन तिरहुत के दक्षिण भाग पर मुसलमानों का प्रत्यक्ष शासन तो बहुत दिन पहले से था। हाजीपुर के (जो इस समय मुजफ्फरपुर जिले में है) शासक हाजी इलियस को दबाने के लिये १३५३ ई० में दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह तुगलक ने तिरहुत पर चढ़ाई की और उसे हरा कर शासन के लिये यहाँ अपना कर्मचारी बहाल किया। १३९७ ई० से लेकर

एक सौ वर्ष तक उत्तर विहार पर जौनपुर के मुसलमान राजाओं का शासन रहा। इसके बाद दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी ने इसपर अपना अधिकार जमाया। कुछ दिनों के बाद तिरहुत का उत्तर भाग बंगाल के नवाब हुसैनशाह के अधीन हुआ। इसने उत्तर के पहाड़ी जातियों के हमले से बचने के लिये कामरूप से बेतिया तक बहुत से किले बनवाये। १४९९ ई० में हुसैनशाह और सिकन्दर लोदी के बीच जो संधि हुई उसके अनुसार विहार, तिरहुत और सरकार सारन सिकन्दर लोदी के अधीन इस शर्त पर रहने दिया गया कि वह बंगाल पर चढ़ाई नहीं करेगा। तिरहुत के राजा ने सिकन्दर लोदी से लड़ने में असमर्थ होकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और कई लाख रुपया देने पर राजा बना रह सका। इस राजा का नाम रामभद्र या रूपनारायण था। १५१८ ई० से १५३२ ई० के बीच बंगाल के नबाब नसरत शाह ने तिरहुत पर कब्जा कर लिया। तिरहुत का राजा लक्ष्मीनाथ या कंसनारायण मार डाला गया। उसके साथ ठाकुर राजवंश का भी अन्त हो गया। नसरतशाह ने अपने दामाद अलाउद्दीन और मखदुम आलिम को तिरहुत सुपुर्द किया। शेरशाह के वक्त में यह प्रान्त फिर दिल्ली के बादशाह के अधीन हो गया। यहाँ के अफगान विद्रोहियों को दबाने के लिये एक बार अकबर बादशाह को खुद यहाँ आना पड़ा था। इसके बाद तिरहुत के इतिहास में मुसलमानी-काल में छोटे-मोटे अफगान विद्रोह हुए।

अंगरेजी राज काल—अंगरेजी राज काल में दरभंगा जिले में कोई विशेष घटना नहीं हुई। हाँ, १७८७ ई० से लेकर १८१३ ई० तक नेपाल की सीमा के पास नेपालियों ने कुछ उपद्रव किया जो पीछे दबा दिया गया। सिपाही विद्रोह के

समय समस्तीपुर सब-डिविजन में जहाँ-तहाँ कुछ हलचल मची लेकिन और कहीं कुछ नहीं हुआ। अंगरेजी शासन में सन् १८७५ तक दरभंगा और मुजफ्फरपुर के जिले मिले हुए थे और इस सम्मिलित भूभाग का नाम था तिरहुत जिला, जिसका सदर आफिस मुजफ्फरपुर था। उसी साल इस भू-भाग के दो हिस्से करके दो जिले कायम किये गये। पूर्वी हिस्सा दरभंगा जिला हुआ।

मिथिला की महत्ता—इतिहास में मिथिला की महत्ता उसकी राजनीतिक घटनाओं को लेकर नहीं, बल्कि वहाँ की प्राचीन शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति को लेकर है। इस देश के अन्दर मिथिला सदा ही विद्या का एक प्रधान केन्द्र रहा। हम देख चुके हैं कि विदेह वंश के राजाओं के समय कैसे-कैसे तत्वज्ञानी और दार्शनिक विद्वान यहाँ हो गये हैं। न्याय, सांख्य, मीमांसा आदि विषयक कितने ही धर्म ग्रन्थों की रचना यहीं हुई। बाद में भी मिथिला की भूमि ने बड़े-बड़े पंडितों और ज्ञानियों को जन्म दिया। यहाँ के अन्तिम हिन्दू राजवंश सिमराँव और ठाकुर वंश के समय में भी मैथिल पंडितों ने स्मृति, काव्य, व्याकरण, अलंकार, ज्योतिष, संगीत, कामशास्त्र, तन्त्र आदि विषयों पर कितने ही मौलिक ग्रन्थ और भाष्य आदि लिखे। यहीं से ज्ञान का स्रोत बहकर बंगाल के नवद्वीप में पहुँचा जो उस प्रान्त की प्राचीन शिक्षा का केन्द्र माना जाता है। आज भी संस्कृत भाषा और साहित्य का पठन-पाठन मिथिला में विहार के और स्थानों की अपेक्षा कहीं अधिक है। आधुनिक युग में भी पं० चित्रधर झा जैसे मीमांसक, बच्चा झा जैसे दार्शनिक, चुम्बे झा जैसे नैयायिक और मुक्तिनाथ ठाकुर जैसे वैय्याकरण यहाँ हो गये हैं। इस समय भी गाँवों के अन्दर यहाँ बड़े-बड़े पंडित मिलते हैं।

संस्कृत साहित्य के अलावे भाषा साहित्य क्षेत्र में भी मिथिला ने बड़ी उन्नति की। सारा बंगाल, विहार तथा उत्तरीय भारत कविकोकिल विद्यापति ठाकुर के गीतों का कायल है। इनके अलावे उमापति, नन्दिपति, रमापति, भानुनाथ, हर्षनाथ, मानबोध झा, चन्दा झा आदि आदि कितने ही कवि और नाटककार इस भूमि में हो गये हैं। वर्तमान दरभंगा जिला इस मिथिलाभूमि का केन्द्र स्थल है।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में दरभंगा जिले के अन्दर २६,३०,४९६ आदमी थे। इधर पचास वर्षों में यहाँ ५,३५,५९८ आदमी अर्थात् फी सैकड़े २० आदमी बढ़े। इस तरह सन् १९३१ ई० की गणना के समय यहाँ की जन-संख्या ३१,६६,०९४ हो गयी। इतनी अधिक जन-संख्या विहार के किसी जिले में नहीं है। बल्कि सारे हिन्दुस्तान के अन्दर भी बहुत थोड़े जिलों में इतने अधिक लोग हैं। जन-संख्या के हिसाब से विहार प्रान्त में इसका पहला स्थान और मुजफ्फरपुर जिले का दूसरा स्थान है। उपर्युक्त जन-संख्या में १५,७०,९५९ पुरुष और १५,९५,१३५ स्त्रियाँ हैं। दरभंगा जिले में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ९४६ आदमी रहते हैं पर मुजफ्फरपुर जिले में ९६९। जन-संख्या की सघनता में प्रान्त के अन्दर दरभंगा जिला का दूसरा स्थान है और मुजफ्फरपुर जिले का पहला। सदर सब-डिविजन में एक वर्गमील के अन्दर १००२, मधुवनी सब-डिविजन में ९४५ और समस्तीपुर सब-डिविजन में ९०३ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में

जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ६८,७६७ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,२६,८१० है। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। दरभंगा जिले में गाँवों की संख्या ३,१३५ और शहरों की संख्या ५ है। शहरों के अन्दर दरभंगा, मधुनवी, जयनगर, समस्तीपुर और रोसड़ा की गिनती है। इन शहरों की कुल जन-संख्या १,०४,८२३ है। भिन्न-भिन्न शहरों की जन-संख्या उन शहरों के वर्णन में अलग दी गयी है।

इस जिले की बोली मैथिली है जिसे पूर्वी हिन्दी का एक भेद या उपभाषा कह सकते हैं। कुछ लोग मैथिली को तिर-हुतिया भी कहते हैं। जिले के मध्य और उत्तरीय भाग में जहाँ मैथिल ब्राह्मण अधिक संख्या में रहते हैं, विशुद्ध मैथिली बोली जाती है। जिले के दक्षिण भाग में अर्थात् समस्तीपुर सब-डिवि-जन के अन्दर मैथिली का बिगड़ा हुआ रूप व्यवहार में आता है। निम्न जाति या श्रेणी के लोग वैसी शुद्ध बोली नहीं बोल सकते जैसी शुद्ध बोली उच्च जाति के लोग बोलते हैं। आम मुसलमान लोग भी कुछ अरबी फारसी शब्दों की मिलावट के साथ मैथिली बोली ही बोलते हैं। इस बोली को शुद्ध मैथिली बोलनेवाले जुलाही बोली कहते हैं। मैथिली में प्राचीन साहित्य बहुत कुछ है। इसके विद्यापति, गोविन्द कवि, चन्दा झा आदि कितने ही प्रसिद्ध कवि और नाटककार हो गये हैं। इस समय जिले के कुछ मैथिल ब्राह्मण और कर्ण कायस्थों ने मथिली की उन्नति के लिये एक आन्दोलन खड़ा कर रखा है। उन लोगों ने इसके लिये सभाएँ कायम की हैं और इस भाषा में पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें निकाल रहे हैं। कई युनिवर्सिटियों में इस भाषा को ऊँची कक्षा में स्थान भी दिया गया है। मैथिली को अपनी

एक अलग लिपि है जो बँगला लिपि से मिलती जुलती है। पहले बहुत थोड़े से ब्राह्मण और कर्ण कायस्थ ही इस लिपि का जब तब व्यवहार करते थे। लेकिन नये आन्दोलन के फल स्वरूप इस लिपि के टाइप भी ढल गये हैं और अब इसमें छपाई भी होने लगी है। तब भी इसका प्रचार अभी विशेप नहीं है। सर्व-साधारण में कैथी लिपि का व्यवहार है और यही लिपि सरकारी कचहरियों और जमींदारी बही-खातों में भी चलती है। नये पढ़े लिखे लोग युद्ध शुद्ध हिन्दी भाषा बोलते और देवनागरी लिपि लिखते हैं। अधिक पढ़े लिखे मुसलमानी की भापा और लिपि उर्दू है।

१९३१ ई० की गणना के अनुसार जिले के अन्दर ३१,६३, ८३२ लोगों की मातृभापा हिन्दुस्तानी, ८१० की बंगला, ५३९ को मारवाड़ी, ४८८ की नेपाली, ७८ की अन्य भारतीय आर्य भापाएँ, ४३ की मुंडा और द्राविड़ आदि भाषाएँ तथा ३०४ की यूरोपीय भापाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	...	२७,२५,४२७	ईसाई	...	५३१
मुसलमान	...	४,४०,०३७	जैन	...	५५
		सिक्ख ...	४४		

जिले के अन्दर हिन्दू फी सैकड़े ८६ हैं। हिन्दू जाति में ग्वालों की संख्या सबसे अधिक है, वे ४ लाख से भी ज्यादा हैं। दूसरा स्थान ब्राह्मणों का है जो करीब ३$\frac{1}{4}$ लाख की संख्या में हैं और तीसरा स्थान दूसाधों का है जो २$\frac{1}{4}$ लाख की संख्या में हैं। इसके बाद कोयरी, धानुक, मल्लाह, और चमार का क्रम

से स्थान आता है जो एक-डेढ़ लाख की संख्या में हैं। फिर इसके पश्चात् क्रम से मुसहर, तेली, राजपूत, ताँती, केवट, जोलाहा, कुरमी, भूमिहार-ब्राह्मण, बरही और कायस्थ आदि हैं। प्राचीन शिक्षा, सभ्यता और धार्मिक प्रभाव के कारण जिले में मैथिल ब्राह्मणों का महत्व अन्य सभी जतियों से बढ़ा हुआ है। राजा हरसिंह देव के श्रेणी-विभाजन के अनुसार इनकी तीन श्रेणियाँ हैं—श्रोत्रिय, योग्य और जैवार। ये क्रम से उत्तम, मध्यम और निम्न श्रेणी के समझे जाते हैं। श्रोत्रिय और योग्य के सम्बन्ध से उत्पन्न संतान पंजियार श्रेणी में गिनी जाती हैं। कई पुश्तों तक उच्च कुल में विवाह करते रहने से निम्न श्रेणी के ब्राह्मण भी उच्च श्रेणी में गिने जाने लगते हैं, इसी तरह बराबर नीच कुल में विवाह करते रहने से उच्च श्रेणी के ब्राह्मण भी नीच समझे जाने लगते हैं। पहले उच्च कुल के ब्राह्मणों के अन्दर पुरुषों में बहु विवाह की प्रथा बहुत थी। ब्राह्मणों की वंशावली तैयार करना पंजियार लोगों का काम है। इस वंशावली को पाँजी कहते हैं। इसी को देख कर किसी वर कन्या का विवाह-सम्बन्ध स्थिर किया जाता है जिससे वंश की विशुद्धता कायम रह सके। विवाह-सम्बन्ध तय करने के लिये सौराठ आदि कई स्थानों पर लग्न के दिनों में सभा भी होती है जहाँ वर और कन्या पक्ष के लोग एकत्र होते हैं।

प्रान्त के अन्दर इस जिले में यह एक विशेपता देखी जाती है कि यहाँ के मैथिल ब्राह्मणों के साथ मैथिल या कर्ण कायस्थों का आचार व्यवहार, वेषभूषा, भाषा आदि सभी बातों की समानता पायी जाती है। ब्राह्मणों की भाँति यहाँ के कायस्थों में भी पाँजी रखने की प्रथा है। मैथिल महासभा में भी केवल मैथिल ब्राह्मण और मैथिल कायस्थ ही हैं। राजा नान्यदेव ने

कर्णाटक से अपने साथ कायस्थ मन्त्री श्रीधर ठाकुर को भी लाया था। कहते हैं कि श्रीधर ठाकुर ने ३६० कायस्थ परिवारों को कर्णाटक से मँगाकर मिथिला में बसाया। पीछे इन लोगों की संख्या बहुत बढ़ी।

इस जिले में मुसलमान फी सैकड़े करीब १४ हैं। दरभंगा और बहेरा थाने में मुसलमानों की संख्या सबसे ज्यादा है। जिले में मुसलमानों की काफी तायदाद रहने पर भी मुसलमानी सभ्यता का विशेष प्रभाव यहाँ के हिन्दुओं पर नहीं पड़ा, क्योंकि ये लोग अपनी पुरानी रीति-रस्म और सभ्यता के कट्टर पक्षपाती हैं।

जिले के अन्दर ईसाइयों का एक चर्च दरभंगा में और एक जनाना मिशन लहेरियासराय में है। समस्तीपुर में भी इन लोगों का एक रोमन कैथोलिक मिशन है। १९३१ ई० में जिले में ईसाइयों की संख्या ५२१ थी, जिसमें १४१ यूरोपियन, १०३ ऐंग्लो इंडियन और २८७ भारतीय ईसाई थे। बिहार प्रान्त में सबसे कम ईसाई सारन जिले में हैं। उसके बाद दरभंगा जिले का ही स्थान है।

खेती और पैदावार

दरभंगा जिले का रकबा २१,४३,०४६ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १७,४३,७०० एकड़ जमीन जोती बोयी गयी थी और १,६७,१०२ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ५८,७६५ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी।

१,७३,४७९ एकड़ जमीन नदी और मकान आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की करीब ८९ भाग जमीन जोत के अन्दर है, लेकिन इसका करीब ११ वाँ भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ३ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता बोया नहीं जाता और सैकड़े ८ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। प्रान्त के अन्दर प्रतिशत के हिसाब से सबसे अधिक जोत जमीन इसी जिले में है। लेकिन दो या तीन फसल वाली जमीन यहाँ बहुत कम है। यहाँ जोत जमीन के सैकड़े केवल ७ भाग में दो या तीन फसल होती है।

इस जिले में तीन तरह की मिट्टी पायी जाती है बलसुम, बजरी और मटियार। समस्तीपुर और दलसिंगसराय थाने के अन्दर छोटी गण्डक के दक्षिण हिस्से की मिट्टी बलसुम, बाघमती और गण्डक के बीच की मिट्टी बजरी और जिले के बाकी हिस्से की मिट्टी मटियार है। उपज के हिसाब से जमीन के दो भाग किये जाते हैं—धनहर और भीठ। जिस भाग में धान उपजता है उसको धनहर और जहाँ दूसरे अनाज पैदा होते हैं उसे भीठ कहते हैं। सर्वे के कागजों में ये ही दो नाम आये हैं। जहाँ कुछ नहीं उपजता उस जमीन को ऊसर कहते हैं।

जिले का दक्षिण-पश्चिम भाग, जिसके अन्दर दलसिंगसराय और समस्तीपुर थाना है, सबसे अधिक उपजाऊ भाग है। इसमें खरीफ और रब्बी की सभी कीमती फसल होती हैं। उपज के ख्याल से जिले के अन्दर दूसरा स्थान बाघमती और छोटी गण्डक के बीच का दोआब है। यहाँ की प्रधान फसल धान है, लेकिन रब्बी भी अच्छी होती है। इस भाग में बाढ़ बहुत आती

है। जिले में तीसरा स्थान मधुवनी सब-डिविजन का है। इसका दक्षिण-पूरब भाग बरसात के दिनों में झील सा मालूम पड़ता है। यहाँ की मुख्य फसल धान है। लेकिन पश्चिम के तीन थानों में तथा फुलपरास थाने के दक्षिण भाग में रब्बी की फसल भी होती है, क्योंकि यह भाग कुछ ऊँचा है।

जिले में खरीफ और रब्बी दोनों फसलें होती हैं। खरीफ के अन्दर अगहनी और भदई की गिनती है। अगहनी की मुख्य फसल धान है। भदई फसल में धान, मडुआ, मकई और कोदो मुख्य हैं। रब्बी फसल में गेहूँ, जौ, जई, चना, अरहर, मटर, खेसारी और तेलहन वगैरह हैं। सदर और मधुवनी सब-डिविजन में सबसे ज्यादा धान पैदा होता है, समस्तीपुर सब-डिविजन में भदई और रब्बी। धान और मडुआ ये ही दोनों फसलें जिले की तीन चौथाई भाग में होती हैं। इस जिले की मुख्य फसल धान ही है। समस्तीपुर सब-डिविजन में तम्बाकू और मिरचाई आदि कीमती चीजों की खेती अधिक होती है इसलिये यहाँ के किसान जिले के और जगहों के किसानों की अपेक्षा सुखी हैं। सरैसा परगना की तम्बाकू मशहूर है। पहले सरकार की निगरानी में इस जिले के बेनीपट्टी आदि थानों में अफीम की खेती होती थी लेकिन अब वह बिलकुल बन्द हो गयी है। पहले नील की खेती भी बहुत अधिक होती थी और तिरहुत जिले में नील की लगभग एक सौ कोठियाँ थीं पर अब इसकी खेती भी बन्द हो गयी है। इधर कुछ वर्षों के अन्दर चीनी के कई मिल खुलने से ईख की खेती बहुत बढ़ी है। दरभंगा जिला आम के लिये बहुत मशहूर है। यहाँ से आम बहुत बड़ी संख्या में बाहर भेजा जाता है।

इस जिले में खेती बिलकुल वर्षा पर निर्भर करती है।

सिंचाई के लिये सरकार की ओर से नहर आदि का कोई प्रबन्ध नहीं है। जिले के उत्तरीय भाग में किसान लोग अपने खेतों को तालाब से सींचते हैं। दक्षिण भाग में मिरचाई, तम्बाकू वगैरह खास-खास फसल के लिये कूआँ से सिंचाई की जाती है। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ५$\frac{3}{4}$ हिस्से में सिंचाई का प्रबन्ध है।

भारत का सबसे बड़ा कृषि कॉलेज इस जिले के अन्दर पूसा में था और यहाँ वैज्ञानिक ढंग से खेती की उन्नति के लिये प्रयोगशाला कायम की गयी थी पर कुछ वर्ष हुए यह सब उठकर दिल्ली चला गया है। अब यहाँ भारतीय सरकार की ओर से बिहार उड़ीसा के कृषि सम्बन्धी कुछ काम के लिये दो अफसर रहते हैं। दरभंगा में सरकारी कृषि फार्म है जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

इस जिले में सैकड़े करीब ८० आदमी खेती से अपनी जीविका चलाते हैं बाकी लोगों के भिन्न-भिन्न उद्योगधंधे हैं। हिन्दुओं की भिन्न-भिन्न जातियों के अधिकांश लोग अपने पुश्तैनी धंधे में लगे हुए हैं। जैसे सोनार सोना-चाँदी का काम करता है तो लोहार लोहे का, चमार चमड़े का, तेली तेल पेड़ने का और लहेड़ी लाह का। इसी तरह और जातियों का भी समझना चाहिये। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ हजार में ३६१ आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। काम करने वाले ३६१ व्यक्तियों में २८७ कृषि और पशुपालन

में, १४ उद्योगधंधे में, १० व्यापार में, ३ पुरोहित, डाक्टर, वकील, शिक्षक आदि के पेशे में, १ गमनागमन अर्थात् डाक, रेल, नाव, सड़क आदि के काम में तथा ४६ दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। व्यापार मुख्यतः बनिया लोगों के हाथ में है। जिले के खास व्यवसायों में शोरा, चीनी, नील और कोकटी कपड़ा के व्यवसाय हैं।

शोरा—तिरहुत जिला ईस्ट इंडिया कम्पनी के वक्त में शोरे के लिये मशहूर था। १८४७ ई० तक यहाँ यूरोपियनों के हाथ में चार कारखाने थे। पीछे इसकी दर घट जाने पर उन लोगों ने इस व्यवसाय को छोड़ दिया। इसके बाद शोरा और नमक बनाने का काम नोनिया लोगों के हाथ में रह गया, लेकिन इस पर सरकार का नियन्त्रण रहा। उस समय नमक और शोरा बनाने के कारखाने देहातों और शहरों में फैले हुए थे। यहाँ से शोरा कलकत्ता होकर अमेरिका, चीन तथा अन्य देशों में भेजा जाता था। १८९५-९६ ई० में ६४ हजार मन और १९०४-०५ ई० में ३८ हजार मन शोरा इस जिले में तैयार हुआ था। पीछे विदेशों की प्रतियोगिता में यह व्यवसाय नष्ट हो गया।

नील—नील का व्यवसाय इस जिले में पहले बहुत होता था और यह अंगरेज लोगों के हाथ में था। जिले में नील की बहुत सी कोठियाँ थीं। लेकिन गत महायुद्ध के बाद जब विदेशों में नकली नील तैयार होने लगा तो यहाँ का यह व्यवसाय बन्द हो गया। सन् १९३६–३७ में जिले के अन्दर सिर्फ ६०० एकड़ में नील की खेती होती थी और एक फैक्टरी चल रही थी।

चीनी—इस जिले में चीनी तैयार करने का काम बहुत दिनों से चल रहा है। पहले यह यूरोपियनों के हाथ में था पीछे जब उन लोगों ने इसे छोड़कर नील का कारबार करना शुरू

किया तो इस काम को यहाँ के लोग ही करने लगे। १९०४-०५ ई० में यहाँ ३० कारखाने थे जो देशी तरीके पर ४१ हजार मन चीनी तैयार करते थे। अब तो चीनी के बड़े-बड़े कल कारखाने खुल गये हैं जिनमें लाखों मन चीनी तैयार होती है।

कपड़ा—यों तो मामूली सूती कपड़ा यहाँ बनता ही है लेकिन यहाँ का एक कोकटी कपड़ा विशेपरूप से प्रसिद्ध है। इसकी एक खास तरह की रूई होती है जिसको कोकटी वांगा कहते हैं। यह केवल मधुवनी सब-डिविजन में उपजता है, विहार के और किसी भाग में नहीं। इसका अपना एक प्राकृतिक रंग होता है और देखने में यह तसर के समान मालूम पड़ता है। इसका कपड़ा महीन, चिकना, चमकीला और टिकाऊ होता है। विहार के बाहर भी इसकी काफी खपत है। विदेशी कपड़े को प्रतियोगिता में इसका व्यवसाय घट गया था पर खादी आन्दोलन के बाद फिर इसकी उन्नति होने लगी है। अब विहार चरखा संघ की देखभाल में यह मधुवनी पंडौल आदि स्थानों में तैयार किया जाता है। इसका सूत हाथ से ही काता जाता है। हाथ से कते सूत से हाथ के बिने मामूली कपड़े भी इस जिले में काफी तैयार होते हैं। विहार चरखा संघ का प्रधान कार्यालय मधुवनी में ही है। गड़ेरी लोग भेड़ की ऊन से कम्बल तैयार करते हैं।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ में दरभंगा जिले के अन्दर २४ फैक्टरियाँ थीं जिन पर फैक्टरी एक्ट लागू था। इन फैक्टरियों में १३ चावल-दाल आदि की, ५ चीनी की, २ तम्बाकू की, और १-१ जूट, नील, बिजली और रेलवे की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—इस जिले से चावल, तीसी, सरसो, मिरचाई, तम्बाकू, चीनी, चमड़ा, घी, मक्खन वगैरह बाहर भेजे जाते हैं। तीसी कलकत्ता भेजी जाती है और तम्बाकू संयुक्त प्रान्त तथा

विहार के दूसरे जिलों में जाता है। मिरचाई बंगाल, युक्तप्रान्त तथा भारत के दूसरे प्रदेशों में जाती है। बाकी चीजें भिन्न-भिन्न स्थानों में रवाना होती हैं। जिले के अन्दर बाहर से आनेवाली चीजों में चावल, और दूसरे अनाज, नमक, किरासन तेल, बोरा, कोयला, कपास, विदेशी कपड़ा, तथा आधुनिक सभ्यता की छोटी-छोटी चीजें हैं। कोयला गिरिडीह, झरिया और मानभूम से आता है। नमक, किरासन तेल, विदेशी कपड़ा तथा अन्य विदेशी चीजें कलकत्ता से आती हैं। नेपाल से यहाँ भिन्न-भिन्न अनाज, औषधियाँ और लकड़ियाँ आती हैं और यहाँ से नमक, विदेशी कपड़ा और किरासन तेल वगैरह वहाँ भेजे जाते हैं। जिले में दरभंगा, समस्तीपुर, मधुवनी, रोसड़ा, जयनगर, निर्मली आदि व्यापार के केन्द्र हैं। पूसा, कमतौल, दलसिगसराय, बहेड़ा, मधेपुर, बहेरी और झंझारपुर में बड़े बाजार हैं। कुशेश्वर स्थान, सौराठ, कपलेश्वर, जटमलपुर. शिलानाथ, पिपराघाट, सुल्तानपुर, महादेवनाथ तथा वीर-सिंहपुर में मेले लगते हैं जहाँ खरीदबिक्री होती है।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—इस जिले में बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे (बी० एन० डब्ल्यू० आर०) की गाड़ियाँ दौड़ती हैं। जिले के दक्षिण में कटिहार से कानपुर तक जो लाइन गयी है वह बछवारा स्टेशन के बाद ही दरभंगा जिले में पड़ती है। इस लाइन पर जिले के अन्दर बाजिदपुर, महीउद्दीन नगर और शाहपुर-पटोरी ये तीन स्टेशन हैं। उसके बाद मुजफ्फरपुर जिला शुरू

हो जाता है। बरौनी से बछवारा होकर एक लाइन समस्तीपुर को गयी है जो इस जिले के अन्दर है। इस लाइन पर बीच में दलसिंगसराय और उजियारपुर रेलवे स्टेशन हैं। समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर जानेवाली लाइन पर एक स्टेशन पूसा रोड दरभंगा जिले में है। समस्तीपुर से एक लाइन उत्तर की ओर मुक्तापुर, किसनपुर, हायाघाट और लहेरियासराय होकर २४ मील पर दभंगा पहुँचती है। दरभंगा से रेलवे लाइन की एक शाखा उत्तर-पच्छिम की ओर जाकर मुहम्मदपुर, कमतौल और जोगियारा स्टेशन के बाद मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करती है। दरभंगा से एक लाइन उत्तर-पूरब को ओर झपटियाही तक गयी है। इस लाइन पर दरभंगा जिले के अन्दर दरभंगा, तार-सराय, सकरी, मनिगाछी, लोहना-रोड, झंझारपुर, तमुरिया और घोघरडीहा रेलवे-स्टेशन हैं। घोघरडीहा से दो स्टेशन बाद ही झपटियाही है। इस लाइन पर सकरी से एक लाइन उत्तर की ओर फूट कर नेपाल सीमा के पास जयनगर तक गयी है। इसके बीच में पंडौल, मधुवनी, राजनगर और खजौली रेलवे-स्टेशन हैं। इस जिले में एक और लाइन समस्तीपुर से खगड़िया को गयी है जिसमें अंगारघाट, नरहन, रोसरा, नया नगर और हसनपुर-रोड स्टेशन दरभंगा जिले में है। इस तरह जिले में लगभग २०० मील में रेलगाड़ियाँ दौड़ती हैं।

सड़क—अंगरेजी राज्य के आरम्भ काल में दक्षिण विहार की अपेक्षा उत्तर विहार में सड़कें अधिक थीं और अच्छी हालत में थीं। कारण यह था कि नील और चीनी के व्यवसाय के लिये इस ओर यूरोपियनों की बहुत सी कोठियाँ थीं और उनकी सुविधा के लिये डिस्ट्रिक्टबोर्ड ने अच्छी अच्छी सड़कें बनवा दी थीं। सन् १९३५-३६ में दरभंगा जिले के अन्दर

डिस्ट्रिक्टबोर्ड के प्रबन्ध में कुल २,८९३ मील सड़कें थीं। इनमें १५५ मील पक्की और १,२४७ मील कच्ची सड़कें थीं तथा छोटी छोटीं देहाती सड़कें १,४९१ मीलों में फैली हुई थीं। दरभंगा से भिन्न-भिन्न जगहों में बहुत सी सड़कें गयी हैं। इनमें दरभंगा–मुजफ्फ़रपुर, दरभंगा–रोसड़ा, दरभंगा–बहेड़ा, दरभंगा-पूसा, दरभंगा–सकरी, दरभंगा–रहिका, दरभंगा–कमतौल, दरभंगा–जयनगर आदि सड़कें मुख्य हैं। इन सड़कों में जगह-जगह पर पुल बने हैं। ये सड़कें बाढ़ के समय बहुत स्थानों पर खराब हो जाती हैं। देहातों के अन्दर हाथी, घोड़ा, पालकी और बैलगाड़ियाँ ये ही मुख्य सवारियाँ हैं। छोटे बड़े शहरों में इक्का, टमटम वगैरह मिलते हैं। थोड़े से अमीर लोग मोटर गाड़ी भी रखते हैं।

जलमार्ग—जिले के अन्दर गंगा नदी में बराबर स्टीमर और नावें चलती हैं। गंडक, बाघवती, करेह और कमला आदि नदियों में किसी किसी स्थान पर गर्मी के दिनों में पानी कम रहता है इसलिये नावें उन दिनों उन स्थानों में नहीं चला करती हैं। शेष दिनों में नावें बराबर चलती हैं। नदियों को पार करने के लिये जगह-जगह घाट बने हुए हैं जिनका बन्दोवस्त डिस्ट्रिक्टबोर्ड के हाथ में रहता है।

शिक्षा

यह जिला प्राचीन काल में ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र था, पर हिन्दू राज्य के अन्त होने के बाद यहाँ विद्या की धीरे-धीरे अवनति होने लगी। इधर फिर अपनी शिक्षा और सभ्यता को

पुनर्जीवित करने का ध्यान लोगों को हुआ है। सन् १८८५ ई० में इस जिले में स्कूलों की संख्या २,५३२ और उनके छात्रों की संख्या ३८,९५८ थी। इधर स्कूलों की संख्या तो घटी है लेकिन उनके छात्रों की संख्या बढ़ गयी है। सन् १९३५-३६ में प्राइमरी स्कूलों की संख्या १,९३३ और इनमें पढ़ने वालों की संख्या ६५,०११ हुई। प्राइमरी स्कूलों में प्राइमरी संस्कृत पाठशालाएँ और मकतबों को संख्या भी थी।

सन् १९०५ ई० में जिले के अन्दर सिर्फ एक दर्जन मिड्ल स्कूल थे। लेकिन अब सन् १९३७-३८ में यहाँ ६६ मिड्ल इंगलिश और १९ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल हो गये हैं। इससे अधिक मिड्ल स्कूल सारन को छोड़ विहार के और किसी जिले में नहीं है।

इस समय जिले में हाई स्कूलों की संख्या १७ है। इनमें २ दरभंगा में, ३ लहेरियासराय में, २ मधुवनी में, २ समस्तीपुर में और एक-एक मधेपुर, पूसा, रोसड़ा, कमतौल, दलसिगसराय, राजनगर, जयनगर और पंडौल में हैं। दरभंगा और लहेरिया-सराय के स्कूलों के नाम हैं—जिला स्कूल, राज स्कूल, मारवाड़ी स्कूल, नार्थबुक और सरस्वती स्कूल।

पटने में जो टेम्पुल मेडिकल स्कूल था वह सन् १९२५ ई० में उठकर दरभंगा चला आया और इसका नाम दरभंगा मेडि-कल स्कूल पड़ा। पटने में केवल मेडिकल कालेज रह गया। इस स्कूल में मैट्रिक, आई० ए० और आइ० एस० सी० पास छात्र लिये जाते हैं। यहाँ वैद्यों और हकीमो को भी चीरफाड़ आदि की शिक्षा देने की व्यवस्था है।

सन् १९३८ में दरभंगे में मिथिला कालेज नाम का एक कालेज खुला हैं जिसमें बी० ए० तक की पढ़ाई का प्रबन्ध है।

इस जिले में संस्कृत पाठशालाएँ बहुत सी हैं, इनमें दरभंगा रामेश्वरलता विद्यालय, मधुवनी संस्कृत विद्यालय और लोहना संस्कृत विद्यालय मुख्य हैं। मुसलमानों की शिक्षा के लिये लहेरियासराय में इमदादिया मदरसा है। इसके अलावे जगह-जगह बहुत से मकतब हैं। प्राइमरी स्कूल के गुरुओं की शिक्षा के लिये 'गुरू ट्रेनिंग स्कूल हैं। जिले में स्त्री शिक्षा की धीरे-धीरे उन्नति हो रही है। सन् १९३५–३६ में यहाँ स्कूलों में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ९,६६५ थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े लिखे पुरुषों की संख्या १,१७,४२९ और स्त्रियों की संख्या ६,७११ है। अंगरेजी पढ़े लिखे पुरुष ७,६५१ और स्त्रियाँ ४५३ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े लिखे लोगों की संख्या सैकड़े करीब ४.है। सन् १९३५–३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ९०,३७३ लड़के लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जन-संख्या के सैकड़े करीब ३ हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—दरभंगा तिरहुत कमिश्नरी का एक जिला है जिसका सदर आफिस दरभंगा में है। जिले का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। उसकी सहायता के लिये सदर दफ्तर में डिपटी कलक्टर, सब डिपटी कलक्टर और असिस्टेन्ट कलक्टर होते हैं। यह जिला दरभंगा, मधुवनी और समस्तीपुर इन तीन सब-डिविजनों में बटा है। सब-डिविजन का सबसे बड़ा अफसर सब-डिविजनल अफसर या

एस० डी० ओ० कहलाता है। सब-डिविजन कई थानों में बँटे हैं। किस सब-डिविजन में कौन-कौन थाने हैं यह सब-डिविजन के वर्णन में लिखा है।

न्याय—सन् १९०६ तक इस जिले की दीवानी और फौजदारी अपील तथा दौरा मुकदमा मुजफ्फरपुर के जिला-जज के पास जाता था। इसके बाद दरभंगे में भी जिला-जज की बहाली हुई और उनके अधीन सदराला और मुन्सिफ भी नियुक्त हुए। अब दीवानी मुकदमे की सुनवाई इन्हीं के यहाँ होने लगी है। मधुवनी और समस्तीपुर के मुन्सिफ के ऊपर अपने-अपने सब-डिविजन का दीवानी मामला देखने का काम पहले ही से था। फौजदारी मुकद्मा ड्रिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, दौरा जज तथा डिपटी और सब-डिपटी मजिस्ट्रेट सुनते हैं। जिला जज ही दौरा जज का काम करता है। सब-डिविजनों में सब-डिविजन अफसर और उनके सहायक डिपटी मजिस्ट्रेट फौजदारी मुकद्मे सुनते हैं। हर सब-डिविजन में छोटे-छोटे फौजदारी मामले को सुनने के लिये कुछ आनरेरी अर्थात् अवैतनिक मजिस्ट्रेट रहते हैं।

पुलिस—जिले के अन्दर पुलिस का सबसे बड़ा अफसर सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। उसके अधीन डिपटी या असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट भी होते हैं। पुलिस के काम के लिये यह जिला २२ भागों में बँटा है। यह भाग थाना कहलाता है। थाने का बड़ा अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जो दारोगा भी कहलाता है। थाने में दारोगा के अधीन हवलदार और कानिस्टबिल होते हैं। देहातों पर निगरानी रखने और वहाँ की जन्म-मरण आदि की रिपोर्ट थाना में देने के लिये हर गाँवों में एक चौकीदार रहते हैं। कई चौकीदारों पर एक

दफादार रहता है। सन् १९३६ में एक जिले के अन्दर ५ इन्सपेक्टर, ४३ सब-इन्सपेक्टर, ४२ असिस्टेन्ट सब इन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, २४ हवलदार, ५०७ कानिस्टबिल और ४,४३७ चौकीदार थे।

जेल—दरभंगे में जिला जेल है जहाँ करीब ३५० कैदी रह सकते हैं। इन कैदियों में स्त्री, पुरुष, बालक और विचाराधीन कैदियों तथा यूरोपियन कैदियों के रखने की अलग-अलग जगह हैं। मधुवनी और समस्तीपुर में छोटे जेल हैं।

रजिस्ट्री आफिस—इस जिले में जमीन की खरीद बिक्री आदि की रजिस्ट्री के लिये १९३६ में लहेरियासराय, बहेड़ा, रोसड़ा, समस्तीपुर, दलसिंगसराय, मधुवनी, वेनीपट्टी, खजौली, किसुनपुर, कमतौल, झंझारपुर, जयनगर और फुलपरास में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—गाँवों में सड़क, पुल वगैरह बनवाने, सड़कों के किनारे पेड़ लगवाने, डाक-बंगला (विश्राम-गृह) बनवाने, प्राइमरी और मिडूल स्कूलों का इन्तजाम करने, तालाब, कूआँ वगैरह खुदवाने तथा घाट, अस्पताल और फाटक का प्रबन्ध करने के लिये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है। दरभंगा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड १८८७ ई० में कायम हुआ था। इस बोर्ड के ३२ सदस्य हैं जिनमें २४ निर्वाचित, ६ नामजद और २ सरकारी अफसर होते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का सालाना आमद खर्च करीब १८-१९ लाख रुपया है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अपने छोटे-मोटे काम सब-डिविजनों के लोकल बोर्ड को सुपुर्द कर देता है। सदर लोकलबोर्ड में ६ निर्वाचित और २ नामजद सदस्य, मधुवनी लोकलबोर्ड में १० निर्वाचित और ३ नामजद सदस्य तथा समस्तीपुर लोकल बोर्ड में ८ निर्वाचित और २ नाम-

जद सदस्य रहते हैं। गाँवों के अन्दर शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के इन्तजाम के लिये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन दलसिंगसराय और जयनगर में युनियन कमिटियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—जो काम देहातों के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड का है वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों का है। दरभंगा जिले में दरभंगा, मधुवनी, रोसरा और समस्तीपुर में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। पहली म्युनिसिपैलिटी १८६४ में, दूसरी और तीसरी १८६९ में और चौथी १८९७ में कायम हुई थी। दरभंगा म्युनिसिपैलिटी के ३० और शेष के १५-१५ मेम्बर हैं। दरभंगा म्युनिसिपैलिटी का आमद-खर्च २ लाख रुपया है।

दरभंगा (सदर) सब-डिविजन

जिले का यह सदर सब-डिविजन जिले के मध्यभाग में है। इसके उत्तर में मधुवनी सब-डिविजन और दक्षिण में समस्तीपुर सब-डिविजन है। दरभंगा सब-डिविजन १८४५ ई० में कायम किया गया था। इसका क्षेत्रफल ८७६ वर्गमील और जन-संख्या ८,७७,५७८ है। इस सब-डिविजन में एक दरभंगा शहर और ९२८ गाँव हैं। इसमें दरभंगा शहर, दरभंगा, मुफस्सल, जाले और बहेड़ा ये ४ थाने हैं। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

दरभंगा—जिले का प्रधान नगर दरभंगा बी० एन० डबल्यू० रेलवे लाईन पर छोटी बाघमती नदी के किनारे बसा हुआ है।

दरभंगा शब्द द्वारवंग या दरेबंगाल शब्द से बना हुआ बताया जाता है, जिसका अर्थ है बंगाल का दरवाजा। लेकिन बंगाल से दूर होने के कारण इस अर्थ में दरभंगा शब्द की उत्पत्ति होना ठीक नहीं मालूम होता। कुछ लोग कहते हैं कि इस शहर को दरभंगी खाँ नामक एक मुसलमान लुटेरा ने बसाया था इस कारण इसका नाम दरभंगा पड़ा। कमला और बाघमती नदी की बाढ़ से बरसात के दिनों में इस शहर के चारो ओर पानी हो जाता है। इसलिये १८८४ ई० में सरकारी दफ्तर और कचहरियाँ दरभंगा से हटाकर उससे कुछ दक्षिण लहेरियासराय नामक स्थान में लायी गयीं। उसके बाद दरभंगा से लहेरियासराय तक लगातार शहर बस गया। सन् १९०६ में जब वहाँ जजी कचहरी खुली तो लहेरियासराय की रौनक और बढ़ गयी। टाउनहाल, अस्पताल और मेडिकल स्कूल भी लहेरियासराय में ही हैं। दरभंगा शहर में महाराजाधिराज दरभंगा का आनन्द-बाग, मोती महल, दरभंगाराज-अस्पताल और कई बड़े-बड़े मंदिर हैं। इस समय शहर पाँच छः मील तक फैला हुआ है। इस शहर के अन्दर तीन बड़े-बड़े और करीब ४०० छोटे-छोटे तालाब हैं। बड़े पोखरों में हड़ाही पोखर, दीघी तालाब और गंगासागर की गिनती है। कुछ लोग अनुमान करते हैं कि मुसलमानी काल में सैनिकों के वासयोग्य ऊँची भूमि बनाने के लिये ये तालाब खुदवाये गये थे। हड़ाही पोखर के सम्बन्ध में एक विचित्र किम्वदन्ति है। कहते हैं कि राजा शिव सिंह के समय में दो सास-पतोहू सिर पर मछली की टोकरी लिये जा रही थीं कि एक चील सास की टोकरी में से एक बड़ी मछली लेकर भागा, पर वह उसको लेकर बहुत मुश्किल से उड़ सका। इस पर सास को तो मछली खोने का बहुत अफसोस

हुआ पर पतोहू हँसने लगी। सास ने हँसने का कारण पूछा, लेकिन पतोहू बताने को तैयार नहीं हुई। इस पर झगड़ा बढ़ा। अन्त में राजा के पास अपील की गयी। वहाँ भी पतोहू कारण बताने को तैयार नहीं हुई। कहा कि यदि मैं ठीक-ठीक कारण बता दूंगी तो मैं मर जाऊँगी। राजा ने नहीं माना। इस पर लाचार होकर उसने कहा कि मैं महाभारत के समय में एक चील थी। युद्ध से मैं एक मृत व्यक्ति की एक विशाल बाहु को, जिसमें एक भारी स्वर्ण कंकण भी बँधा था, आसानी से उठाकर यहाँ ले आयी थी, उसकी हड्डी अब भी गड़ी पड़ी है। उसने कहा कि हँसी मुझे इसलिये आयी कि मैं तो उतने भारी बोझ को उठा लायी पर यह चील एक मामूली मछली को भी आसानो से नहीं ले जा सका। इतना कह वह मर गयी। राजा ने बताये हुए स्थान को खोदवाया तो स्वर्ण कंकन सहित उसे बाँह का हाड़ मिला। कहते हैं कि जमीन खोदने से जो वहाॅ एक पोखर बना वही हड़ाही पोखर नाम से मशहूर हो गया। लेकिन हड़ाही पोखर के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है, जैसा पहले भी लिखा जा चुका है, कि इसे राजा हरिसिंह देव ने खोदवाया था। इसी तरह गंगासागर राजा गंगादेव का खोदवाया बताया जाता है। खैर, जो हो इतने बड़े-बड़े और इतने अधिक पोखरों का होना इस शहर की एक विशेषता है।

सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जन-संख्या ६०,६७६ है जिसमें ४२,२१७ हिन्दू, १८,३०८ मुसलमान और १५१ ईसाई हैं। १९३४ ई० के भूकम्प से इस शहर को बहुत क्षति पहुँची थी। इसके बाद शहर का मुख्य भाग नये सिरे से निर्मित हुआ है। दरभंगा के अन्दर दो थाने हैं दरभंगा शहर और दरभंगा मुफस्सल। दरभंगा शहर की जन-

संख्या ऊपर दी गयी है। दरभंगा मुफस्सल थाने की जन-संख्या ३,४४,३२४ है जिसमें २,६५,७६० हिन्दू, ७८,५५५ मुसलमान और ९ ईसाई हैं।

दरभंगा राज—समूचे बंगाल और विहार के अन्दर दरभंगा राज सबसे बड़ी जमींदारी है। इस राजवंश की उत्पत्ति १६ वीं सदी में महेश ठाकुर नामक एक व्यक्ति से बतायी जाती है। कहते हैं कि जब्बलपुर से आकर उन्होंने राजा शिवसिंह के वंशजों के यहाँ पुरोहित का काम करना आरम्भ किया था। उस समय शिवसिंह के वंशजों का तिरहुत पर नाम मात्र का ही अधिकार रह गया था। अकबर बादशाह को किसी तरह खुश कर महेश ठाकुर ने एक छोटी सी जमींदारी हासिल की, वही आज दरभंगा राज के रूप में है। १७०० ई० में इस वंश के राघवसिंह को पहले-पहल बंगाल के नवाब अलीवर्दी खाँ द्वारा राजा की उपाधि मिली। इन्हें एक लाख रुपया सालाना मालगुजारी पर तिरहुत सरकार का मुकर्ररी पट्टा भी दिया गया। जिस समय विहार प्रान्त पर अंगरेजों का अधिकार हुआ उस समय दरभंगा राज के मालिक नरेन्द्रसिंह थे। उनके दत्तक पुत्र प्रतापसिंह अपना निवासस्थान मधुबनी के पास भौरा नामक स्थान से हटाकर दरभंगा ले आये। उनके बाद उनके भाई माधवसिंह राजा हुए। इस वंश में इनके उत्तराधिकारी छत्रसिंह को पहले-पहल महाराजा की उपाधि मिली। इन्होंने अपने बड़े लड़के रुद्रसिंह को राजा बनाया और छोटे लड़के को भरण-पोषण के लिये कुछ गाँव दिये। पर छोटे लड़के ने आधे राज का दावा किया। अन्त में कोर्ट से यही फैसला हुआ कि राज का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र, या ज्येष्ठ वंशधर ही हुआ करेगा। भाई या दूसरे लोगों को जीविका के लिये थोड़ी सी जमीन-

जायदाद मिलेगी। तब से इसी नियम के अनुसार काम हो रहा है। यह राज कुछ समय तक कोर्ट आफ वार्डस के प्रबन्ध में चला गया। पीछे लक्ष्मीश्वर सिंह राजा हुए। इनके बाद इनके छोटे भाई सर रामेश्वर सिंह राज के मालिक बने। इनको राजा बहादुर की, फिर महाराज बहादुर की और अन्त में महाराजाधिराज की खानदानी उपाधि मिली। इनके बाद इनके बड़े लड़के महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह इस समय गद्दी पर हैं। छोटे लड़के महाराजकुमार विश्वेश्वरसिंह को निजी खर्च के लिये कुछ अलग सम्पत्ति मिली है। राज की सालाना आमदनी करीब ८० लाख रुपया है। राज १९ सर्कलों में बँटा है और प्रत्येक का प्रबन्ध भार एक एक मैनेजर पर रहता है। राज का सदर आफिस दरभंगे में है। राज की जमींदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुँगेर, गया, पूर्णिया और भागलपुर जिले में करीब २५ हजार वर्ग मीलों में है।

जाले—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८०,०४० है। इसमें ५६,८९३ हिन्दू और २३,१४७ मुसलमान हैं।

बहेरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३,९२,५३८ है, जिसमें ३,३०,४४६ हिन्दू, ६२,०८७ मुसलमान और ५ ईसाई हैं।

लहेरियासराय—दे० "दरभंगा"।

मधुवनी सब-डिविजन

मधुवनी सब-डिविजन दरभंगा जिले के उत्तरीय भाग में है। यह १८६६ ई० में कायम किया गया था। इसका क्षेत्रफल १,३४६ वर्गमील और जन-संख्या १२,७२,१४८ है। इस सब-डिविजन में मधुवनी और जयनगर ये दो शहर तथा १,०२७ गाँव है। इसमें मधुवनी, झंझारपुर, खजौली, जयनगर, लदनिया, बेनीपट्टी, हरलखी, मधवापुर, फुलपरास, मधैपुर और लौकाहो ये ११ थाने हैं। इस सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

मधुवनी—दरभंगा से १६ मील उत्तर-पूरब सकरी-जयनगर लाइन के बीच यह इस नाम के सब-डिविजन का सदर आफिस है। लोगों का अनुमान है कि यहाँ पहले वन रहा होगा जहाँ मधुमक्खियाँ बहुत रहती होंगी, शायद इसी कारण इस स्थान का नाम मधुवनी पड़ा। यहाँ वन भले पहले रहा हो, पर मधुमक्खियों के कारण मधुवन नाम पड़ने की कल्पना करना बिलकुल ठीक नहीं हो सकता। एक सुन्दर वन को भी मधुवन कहा जा सकता है। व्रज का मधुवन प्रसिद्ध है। जो हो, अब जिले में दरभंगा के बाद मधुवनी ही सबसे बड़ा शहर रहा है। इसकी जन-संख्या १८,७८९ है जिसमें १३,३०० हिन्दू और ५,४८३ मुसलमान हैं। यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी है। सब-डिविजन के आफिसों के अलावे यहाँ हाई स्कूल तथा अस्पताल वगैरह भी हैं। यहाँ दरभंगा राजवंश के कुछ लोग रहते हैं जिन्हें लोग मधुवनी के बाबू कहते हैं। ये लोग १८ वीं सदी के अन्त में हुए महाराज माधव-सिंह के वंशज हैं। मधुवनी के आसपास मखाना बहुत होता है। यहाँ का दृश्य भी सुन्दर है। मधुवनी थाने की जन-संख्या

४२,३९० है जिसमें ३७,९६३ हिन्दू, ४,३९१ मुसलमान, ६ ईसाई और ३० अन्य जाति के लोग हैं।

कपिलेश्वर स्थान—मधुवनी के पास यह हिन्दुओं का एक तीर्थस्थान है। यहाँ शिवजी का एक बहुत पुराना मंदिर है, जहाँ दूर दूर के हिन्दू लोग दर्शन करने और जल चढ़ाने आते हैं।

खजौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,४६,९७३ है जिसमें १,३०,५९५ हिन्दू, १६,३६८ मुसलमान और १० ईसाई हैं।

गिरिजा स्थान—मधुवनी या कमतौल स्टेशन से सात आठ कोस की दूरी पर फुलहर नामक ग्राम में गिरिजा देवी का मंदिर है। कहते हैं कि यहीं राजा जनक का गिरिजा-मंदिर था जहाँ सीताजी पूजा के लिये आती थीं।

जनकपुर—यह स्थान अब नेपाल राज्य की सीमा के अन्दर है। कहते हैं यहीं राजा जनक की राजधानी थी और यहीं रामचन्द्रजी का विवाह हुआ था। बुन्देल खंड प्रदेश के टिकमगढ़ की महारानी ने नौ लाख रुपये में यहाँ एक बहुत ही सुन्दर जनक-भवन बनवाया है। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह की यादगारी के लिये चैत (राम-नवमी) और अगहन मास में यहाँ मेला लगता है। यहाँ से कई मील उत्तर धनुखा नामक एक स्थान है जहाँ सीता का स्वयंवर होना बताया जाता है। यहाँ पत्थर के धनुष के टुकड़े पड़े हुए मिलते हैं।

जयनगर—दरभंगा जिले के अन्दर नेपाल राज्य की सीमा के पास यह एक छोटा शहर है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। सकरी से बी० एन० डब्ल्यू० की एक लाइन यहाँ तक

आयी है। यह व्यापार का केन्द्र है। इस नगर की जन-संख्या ६,५९८ है। जयनगर थाने के अन्दर १,०७,००० आदमी रहते हैं, जिनमें ९५,३०४ हिन्दू और ११,६९६ मुसलमान हैं।

झंझारपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ९५,२२७ है, जिसमें ८६,३५८ हिन्दू, ८,८६७ मुसलमान और २ ईसाई हैं।

दुर्गास्थान—मधुवनी तथा कमतौल स्टेशन से कुछ दूरी पर उचैठ नामक एक गाँव है। कहते हैं कि यहाँ प्राचीनकाल में एक विद्यापीठ और पुस्तकालय था। यहाँ दुर्गा का मंदिर है। दन्तकथा है कि इसी दुर्गा देवी की कृपा से कालिदास ने कवित्व शक्ति प्राप्त की थी।

फुलपरास—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,३७,१३४ है, जिसमें १,२६,७५५ हिन्दू, १०,३३३ मुसलमान और ४६ ईसाई हैं।

बेनीपट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,९२,७०७ है, जिसमें १,४९,५३६ हिन्दू और ४३,१७१ मुसलमान हैं।

मधवापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४२,३९० है, जिसमें ३७९६३ हिन्दू, ४,३९१ मुसलमान, ६ ईसाई और ३० अन्य जाति के लोग हैं।

मधैपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,१८,९८७ है, जिसमें १,०१,९२९ हिन्दू, १७,०५३ मुसलमान और ५ ईसाई हैं।

राजनगर—यह स्थान कमला नदी के किनारे है। महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह के वक्त में दरभंगा राज की राज-

राजा बलि का गढ़, बलिराजपुर (दरभंगा)
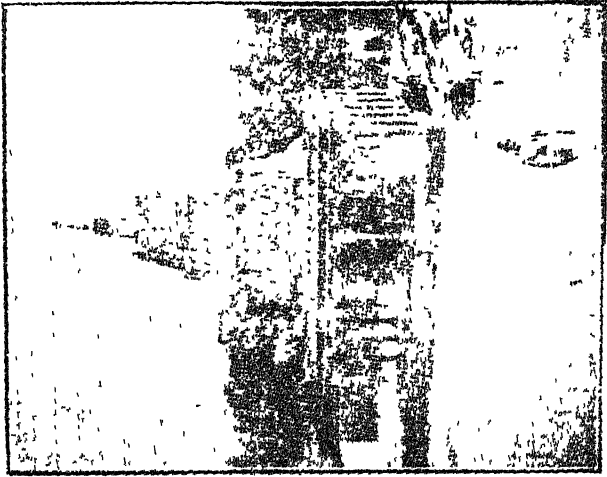
विद्यापति की समाधि पर शिवमदिर, वाजिदपुर (दरभगा)

—विद्यापति काव्यालोक से

विस्फीग्राम मे कविकोकिल विद्यापति का वासस्थान (दरभंगा)

धानी दरभंगा से हटकर यहीं चली आयी थी। यहाँ एक विशाल राजप्रासाद और कई मंदिर बने हैं। इस राजप्रासाद के बनाने में करोड़ों का खर्च बताया जाता है। कहते हैं कि इसके मुकाबले का प्रान्त में कोई दूसरा भवन नहीं है। राजप्रासाद के सामने एक सुन्दर फव्वारा, एक तालाब और उसके अन्दर काली देवी का मंदिर है। यह मंदिर संगमरमर का बना हुआ है। आसिन में नवरात्रि के समय यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। यहाँ महाराज दरभंगा स्वयं बड़ी धूमधाम से पूजा करते हैं। राजप्रासाद के अन्दर हाल का बना चाँदी का एक बहुत सुन्दर तख्त है। इसके बीच में सिंहासन बना है। तख्त १६ पावों पर है। हर पावा पर सिंह की मूर्त्ति और उसके ऊपर हाथी पर खड़ी स्त्री-मूर्त्ति है। ये सब मूर्त्तियाँ ठोस चाँदी की बनी हुई हैं। तख्त के अगल-बगल बहुत सुन्दर चित्रकारी है। सिंहासन का कमरा भी बहुत सुन्दरता से सजा है।

राजेश्वरी स्थान—यह स्थान मधुवनी स्टेशन से दो-ढाई कोस उत्तर डोकहर ग्राम में हैं। यहाँ गौरीशंकर की युगलमूर्त्ति है।

लदनियाँ—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४९,१२४ है, जिसमें ४६,३६९ हिन्दू और २,७५५ मुसलमान हैं।

लौकाही—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,००१,१०४ है, जिसमें ८७,०३० हिन्दू, १३,०७१ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

शिलानाथ—जयनगर स्टेशन से दक्षिण-पच्छिम कमला नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ एक स्थान ददरी क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध है। कार्तिक पूर्णिमा को यहाँ मेला लगा करता है। हिन्दू लोग दूर-दूर से इस क्षेत्र में पहुँचते हैं।

सौराठ—मधुवनी से चार या पाँच मील पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ विवाह सम्बन्ध ठीक करने के लिये हरसाल लग्न के अन्त में वर और कन्या पक्ष के लोग एकत्र होते हैं जिसे सभा कहते हैं।

हरलाखी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५७,०८६ है, जिसमें ४८,८०७ हिन्दू और ८,२७९ मुसलमान हैं।

समस्तीपुर सब-डिविजन

समस्तीपुर सब-डिविजन दरभंगा जिले के दक्षिण भाग में है। इसका सदर दफ्तर पहले ताजपुर में था और यह ताजपुर सब-डिविजन कहलाता था। यह १८६७ ई० में कायम हुआ था। इसका क्षेत्रफल १,१२६ वर्गमील और जन-संख्या १०,१६,३६८ है। इस सब-डिविजन में समस्तीपुर और रोसड़ा ये २ शहर और १,१८० गाँव हैं। इसमें समस्तीपुर, ताजपुर, दलसिंगसराय, मोहिउद्दीन-नगर, रोसड़ा, सिंगिया और वारिस-नगर ये ७ थाने हैं। इस सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

समस्तीपुर—यह नगर गंडक नदी के किनारे समस्तीपुर सब-डिविजन का सदर आफिस है। यहाँ की जन-संख्या ९,८९१ है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का एक मुख्य जंकसन स्टेशन है जहाँ से मुजफ्फरपुर, दरभंगा, बरौनी और खगड़िया की ओर लाइनें गयी हैं। कुछ वर्ष पहले यहाँ रेलवे कम्पनी का एक कार-

खाना था जो अब गोरखपुर चला गया है। यह नगर साफ सुथरा और सुन्दर है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यह जिले में व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ सरकारी कचहरियों के अलावे अस्पताल और हाई स्कूल हैं। यहाँ चीनी का एक बड़ा कारखाना है। यहाँ से दो मील उत्तर जूट का एक मिल है। समस्तीपुर थाने की जन-संख्या १,८६,८९४ है जिसमें १,६९,५१८ हिन्दू, १७२४ मुसलमान, २४२ ईसाई और १० अन्य जाति के लोग हैं।

कुशेश्वर स्थान—यह स्थान हसनपुर-रोड स्टेशन से ८ मील पूरब जीवछ नदी के किनारे है। यहाँ कुशेश्वर महादेव का मंदिर है। दूर-दूर से हिन्दू लोग यहाँ दर्शन के लिये आते हैं। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है।

ताजपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १,०९,७५३ है, जिसमें ९७,३९९ हिन्दू, १२,३२७ मुसलमान और २७ ईसाई हैं।

दलसिंगसराय—यह जिले में व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ तम्बाकू और मिरजाई का व्यापार विशेष रूप से होता है। ये चीजें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं। यहाँ दाल और तेल की मिलें हैं। एक अमेरिकन कम्पनी का यहाँ बीड़ी और सिगरेट का कारखाना है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन है। दलसिंगसराय थाने की जन-संख्या १,५८,४७८ है, जिसमें १,४८,५८० हिन्दू, ९,८६४ मुसलमान और ३४ ईसाई हैं।

नरहन—यह एक गाँव है जहाँ एक प्रतिष्ठित घराने के जमींदार रहते हैं। दरभंगा जिले में दरभंगा राज के बाद नरहन

राज का ही स्थान है। यह राज करीब साढ़े सत्तावन हजार एकड़ के रकबे में है। इस राज का कुछ भाग मुजफ्फरपुर, मुँगेर और पटना जिले में भी पड़ता है। इसके मालिक भूमिहार ब्राह्मण हैं। इन लोगों ने करीब चार सौ वर्ष पहले यह जमींदारी कायम की थी। इस जमींदारी का मुख्य भाग सरैसा परगने में पड़ता है इसलिये इसके मालिक सरैसा के राजा भी कहलाते हैं।

पूसा—दरभंगा जिले में यह एक सबसे प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ भारत सरकार के प्रबन्ध में कुछ वर्ष पहले कृषि महाविद्यालय और प्रयोगशाला की स्थापना हुई थी। सन् १९०३ में अमेरिका के दानवीर श्रीयुत हेनरी फेल्पस ने भारत के किसी सार्वजनिक कार्य, विशेष कर वैज्ञानिक खोज सम्बन्धी कार्य के लिये २० हजार पौण्ड दान दिये थे। इसी रकम से पूसा में यह संस्था कायम की गयो थी। भारतवर्ष में यह कृषि कालेज सबसे बड़ा समझा जाता था। कहते हैं कि इसके भवन बनाने में ९ लाख रुपये खर्च हुए थे। इस कालेज में सभी प्रान्तों के विद्यार्थी शामिल होते रहे। यहाँ का कृषि सम्बन्धो अनुसंधान कार्य कई विभागों में बँटा था; जैसे—कृषि विभाग, वनस्पति विभाग, रासायनिक विभाग, जीवाणु विभाग आदि। यहाँ खेती के सब काम बड़े-बड़े कल पुर्जों और इंजनों से होते थे। लेकिन अभी कुछ वर्ष हुए कृषि-कालेज उठ कर दिल्ली चला गया है। हाँ, विहार उड़ीसा के कृषि सम्बन्धी कुछ काम के लिये यहाँ दो अफसर रहते हैं।

बालेश्वरनाथ—बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे के कटिहार-कानपुर लाइन पर वाजिदपुर स्टेशन के पास बालेश्वरनाथ

दरभंगा जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	४,००,३१२	भूमिहार ब्राह्मण	४९,०६५
ब्राह्मण	३,२१,३८२	बरही	४४,४१३
दुसाध	२,२५,२७६	कायस्थ	४०,५६६
कोयरी	१,४७,७८७	हज्जाम	३७,२७९
धानुक	१,४७,२१०	कुम्हार	३२,१९८
मल्लाह	१,४२,२६४	काँदू	२८,४९३
चमार	१,२२,२१३	धोबी	२५,७९८
मुसहर	९६,१६१	कमार	१८,४१४
तेली	९१,४४७	पासी	१३,३३०
राजपूत	८९,३५२	बनिया	७,६६६
ताँती	८३,९४१	डोम	७,०९८
केवट	७७,५१२	माली	६,५४२
जोलाहा	६७,३३३	हलालखोर	४,२८४
कुरमी	६७,२९५	कहार	४,१४९

सारन जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

सारन जिला तिरहुत कमिश्नरी के पच्छिम भाग में २५°३६ और २६°३६' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°५४' और ८५°१२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका सदर आफिस छपरा है।

यह जिला लगभग त्रिभुजाकार में है। गंगा, सरयू और गण्डक, ये तीनों नदियाँ इसे घेरे हुई हैं। इसके सिर्फ एक ओर स्थल-भाग है। गण्डक नदी इस जिले को उत्तर-पूरब की ओर चम्पारण जिले से और दक्षिण-पूरब की ओर मुजफ्फरपुर जिले से अलग करती है। दक्षिण में गंगा नदी सीमा का काम करती हुई इस जिले को पटना और शाहाबाद जिले से अलग करती है। सरयू नदी बहुत दूर तक गण्डक के ही समानान्तर में बहकर छपरा के पास गंगा में मिलती है। यह दक्षिण-पच्छिम को ओर इस जिले को युक्तप्रान्त के बलिया जिले से अलग करती है। जिले के उत्तर-पूरब में सरयू और गण्डक नदी के बीच स्थल-भाग है। इस दिशा में संयुक्तप्रान्त का गोरखपुर जिला है। जहाँ नदियाँ सीमा का काम करती हैं वहाँ नदियों की धारा बदलते रहने के कारण जिले की सीमा प्रायः बदलती रहती है।

इस त्रिभुजाकार जिले की भुजाओं का जोड़ करीब २८० मील है। आधार की भुजा, जो उत्तर-पच्छिम की ओर है, ६०

मील लम्बी है। बगल की भुजाओं में एक ओर गण्डक नदी है जो ६५ मील तक गयी है और दूसरी ओर इतनी ही लम्बाई में सरयू और गंगा हैं। शीर्ष-विन्दु दक्षिण-पूरब कोने पर सोनपुर के पास गंगा और गण्डक के संगम से बनती है। इस जिले का क्षेत्रफल २६८३ वर्गमील है। छोटापन में यह विहार का दूसरा जिला है, पहला जिला पटना है जिसका क्षेत्रफल २०६८ वर्गमील है।

प्राकृतिक बनावट

तीन बड़ी नदियों से घिरी हुई इस जिले की भूमि नदियों के बहाव से ही बनी हुई है। इसके भीतर भी कई नदियाँ हैं जो दक्षिण-पूरब की ओर बहती हैं। बरसात में नदियों की बाढ़ से उनके आस-पास के बहुत-से भाग पानी में डूब जाते हैं। जिले के दक्षिण और दक्षिण-पूरब भाग में बहुत-से चौर हैं। जिले का उत्तर-पच्छिम भाग ऊँचा है। यहाँ का सबसे ऊँचा भाग कुचायकोट समुद्र-तल से २२२ फीट ऊँचा है। उधर से दक्षिण-पूरब की ओर धीरे-धीरे जमीन नीची होती चली गयी है। सोनपुर के पास जमीन की ऊँचाई समुद्र-तल से सिर्फ १६८ फीट है।

जिले के अन्दर कोई पहाड़ नहीं है। भूमि बिलकुल समतल है। फिर भी, जहाँ-तहाँ चौर हैं। प्राकृतिक रूप से जिले की जमीन तीन भागों में बाँटी जा सकती है। पहले भाग में बड़ी नदियों के आस-पास की नीची भूमि है, जो कुछ समय तक बाढ़ के पानी से डूब जाती है। दूसरे भाग में जिले की ऊँची भूमि और तीसरे भाग में दियारे की जमीन है। पहले भाग की जमीन

नयी पड़ी हुई मिट्टी और बालू से बनी है; लेकिन दूसरे भाग की जमीन में पुरानी पड़ी हुई मिट्टी है। इस भाग के अन्दर बहुत-से स्थानों में कंकड़ भी हैं। दियारे की जमीन बालू से भरी रहती है; पर जहाँ-तहाँ जमीन के ऊपर कुछ मिट्टी भी जम जाती है। नदियों की धाराओं के बदलते रहने के कारण इस भाग की जमीन घटती-बढ़ती रहती है। लेकिन, इसमें परिवर्तन भी बहुत होता रहता है। जिस जमीन में इस साल बालू ही बालू है उसी में दूसरे साल खूब मिट्टी पड़ सकती है और जिसमें मिट्टी है वह बालूमय हो सकती है। जिले के अन्दर बहुत-से चौर है। सबसे बड़ा हरदिया चौर है जो सोनपुर से २० मील लम्बा गंडक-बाँध के साथ चला गया है। इसकी चौड़ाई २ से ५ मील तक और गहराई ४ से १३ फीट तक है। दूसरा चौर मिरजापुर के पास है जो ५, ६ मील लम्बा और २, ३ मील चौड़ा है। इनके अलावे माँझी, एकमा, गियासपुर, रघुनाथपुर, पिपरा, धरमंगटा और बरौली के पास भी चौर हैं।

नदियाँ

सारन जिले में गंगा, सरयू, गंडक, झरही, खनवाँ, दाहा, गंडकी, धनै, गंगरी और खटसा नदियाँ हैं।

गंगा—गंगा नदी जिले के दक्षिण भाग में छपरा के पास सरयू नदी के संगम से लेकर सोनपुर के पास गण्डक के संगम तक सीमा का काम करती है। जाड़े के दिनों में इसकी चौड़ाई औसतन एक मील रहती है; लेकिन बरसात में प्रायः कहीं-कहीं ९ या १० मील तक हो जाती है। बरसात के बीतने पर नदी के बीच जहाँ-तहाँ बड़े-बड़े दियारे या टापू नजर आने लगते हैं।

कोई दियारा स्थायी नहीं होता है। शेरपुर, पानपुर और महेन्द्र में गंगा को पार करने के लिये घटही नावों का प्रबन्ध है। पलेजाघाट से बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टीमर दीघाघाट और महेन्द्रू घाट जाता है।

सरयू—सरयू नदी का नाम घाघरा और देहवा भी है। यह नदी गुठनी के पास गियासपुर से लेकर गंगा के संगम तक जिले की दक्षिण-पच्छिम सीमा का काम करती है। इस जिले में इसकी लम्बाई ६० मील है। इसके किनारे रिवीलगञ्ज, दरौली, माँझी और डोमैगढ़ आदि मुख्य स्थान हैं। जिले का मुख्य नगर छपरा इस नदी से कई मील पर ही है। बरसात के दिनों में नदी बढ़कर वहाँ तक पहुँच जाती है। नदी में नावें बराबर चला करती हैं। पटना से अयोध्या तक छोटा स्टीमर चलता है जो मुसाफिरों और मालों को ढोता है। इस नदी में मामूली नावें नेपाल की सीमा तक चली जाती हैं। इस जिले में झरही, खनवाँ और दाहा इसकी सहायक नदियाँ हैं।

बड़ी गंडक—यह नदी खरगौली से सोनपुर तक, जहाँ यह गंगा से मिलती है, जिले की उत्तर-पूरबी सीमा का काम करती है। जिले के अन्दर इसकी लम्बाई करीब ९५ मील है। यह नदी हिमालय की निचली पहाड़ी से त्रिवेणी घाट के पास निकलती है। इसमें पहाड़ की बर्फ से पानी आता है। चम्पारण जिले में इस नदी को नारायणी कहते हैं। इसकी कोई सहायक नदी नहीं है, बल्कि इसी से कई छोटी-छोटी धाराएँ फूट निकली हैं और सारन जिले होकर बहती हुई गंगा में जा मिली हैं। बरसात के दिनों में गंडक नदी से त्रिवेणी नहर में पानी जाता है जिससे चम्पारण जिले में खेत की सिंचाई का काम चलता है। नदी में नावें चला करती हैं;

परन्तु धारा के तेज होने के कारण प्रतिकूल दिशा में नावों का चलना कठिन होता है। सारन जिले में इस नदी के किनारे कोई मुख्य बाजार नहीं है। सलीमपुर, सत्तार, सारंगपुर, सोहंसी, सोहागपुर, रेवा, बरवा, सरैया और सोनपुर में घाट हैं। नदी के दोनों किनारे लम्बे बाँध हैं जिसके खर्च के लिये स्थानीय जमींदारों को कर लगाया गया है। सोनपुर में इस नदी पर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का २,१७६ फीट लम्बा पुल है।

झरही—यह नदी गोरखपुर जिले में मानपुर से निकलती है और केसा के पास सारन जिले में प्रवेश करती है। परगना कल्याणपुर कारी होकर बहने के बाद यह ९ मील तक सारन और युक्तप्रान्त के बीच सीमा का काम करती हुई दरौली के पास सरयू में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई ५२ मील है जिसमें ४० मील सारन जिले के अन्दर है। इस नदी के किनारे हुसेपुर और मैरवा मुख्य स्थान हैं।

खनवाँ—इस नदी में गोरखपुर के चौरों से पानी आता है। अपने उद्गम-स्थान से कुछ दूर के बाद ही यह गोरखपुर और सारन के बीच सीमा का काम करती हुई मोहनपुर के पास सारन जिले के भीतर घुस जाती है। १० मील तक बहने के बाद यह फिर गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है और फिर लौट-कर महया से डुमरिया तक जिले की सीमा बनाती है और अन्त में सरयू में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई ५६ मील है। नदी का घाट बहुत ऊँचा होने के कारण इससे सिंचाई का काम नहीं लिया जा सकता है। कोदो सिद्धि से १२ मील ऊपर तक यह नदी कभी नहीं सूखती और इसमें तीन सौ मन की नावें चल सकती हैं।

दाहा—दाहा नदी का दूसरा नाम सुण्डी है। यह कुचायकोट गाँव के पास से निकलती है और मीरगंज, सीवान और आन्दर होकर ताजपुर के पास सरयू नदी में मिल जाती है। इसका उद्गम-स्थान अब गंडक से ८ मील दूर है; लेकिन गंडक के बाँध के पहले इसमें गंडक से ही पानी आता था। इस नदी से सिंचाई का काम लेने के लिये सिसवन के पास गंडक के बाँध में पानी आने देने के लिये फाटक बना दिया गया है। इसमें और भी कई छोटी-छोटी धाराएँ आ मिली हैं। पर, गर्मी के दिनों में इसमें बहुत थोड़ा पानी रह जाता है। सरयू में जब बाढ़ आती है तो इसका पानी दाहा में भी १६ मील लम्बाई तक जाता है। संगम से लेकर सिसवन तक अर्थात् ३१ मील तक इसमें नावें चलती हैं। इसकी कुल लम्बाई ६० मील है। शुरू से लेकर सीवान तक इस नदी से सिंचाई का काम लिया जाता है।

गंडकी (मही)—गंडक-बाँध के पहले इसकी उत्पत्ति गंडक के ही एक सोते से थी। इसकी धारा दक्षिण-पूरब की ओर बहकर सोनपुर के पास गंगा से मिली है। शीतलपुर के बाद इसका नाम मही नदी हो गया है। शीतलपुर से ही इसकी एक धारा फूटकर चीरांद के पास गंगा से मिली है। इस नदी के किनारे गोपालगंज, चौकी हसन, महाराजगंज, बनियापुर, नगवा, गरखा और शीतलपुर मुख्य स्थान हैं। जब गंगा में बाढ़ आती है तो इसका पानी इस नदी में भी गरखा तक जाता है। इस स्थान में इस नदी पर रेवाघाट सड़क के लिये पुल है। गंडक-बाँध के पहले इसमें सब जगह नावें चलती थीं; पर अब बरसात के दिनों में ही एक हजार मन की नाव गरखा तक जा सकती है। इसकी लम्बाई ६० मील है। इसकी सहायक धाराओं में धनै मुख्य है।

धनै—इसका उत्पत्ति-स्थान गंडक-बाँध के ७७ वें मील पर गंडकी से १०' मील दक्षिण-पूरब है। पहले रूपनछाप सोता द्वारा इसका सम्बन्ध गंडक से था। कहते हैं कि पहले इसमें तीन-चार सौ मन की नावें हर जगह चल सकती थीं। यह दक्षिण-पच्छिम की ओर बहती हुई ५० मील की यात्रा तय कर गंडकी में मिल जाती है। गर्मी के दिनों में यह सूख-सी जाती है और लोग इसमें बाँध बाँधकर रब्बी की फसल उपजाते हैं। इसके किनारे बरौली, बरहोगा और बसन्तपुर मुख्य स्थान हैं।

गंगरी—इसका उत्पत्ति-स्थान गंडक-बाँध पर बन्धौली के पास है। पहले इसमें गंडक से ही पानी आता था। शुरू में यह पच्छिम की ओर बहती है; फिर दक्षिण-पच्छिम की ओर मुड़कर राजपट्टी और मशरक होती हुई ५० मील की दूरी तय कर शीतलपुर के पास गंडकी से मिल जाती है।

खटसा—खटसा का दूसरा नाम जुठार है। इसका उत्पत्ति-स्थान रामकोला फैक्टरी के पास है। यह २४ मील चलकर विश्वम्भरपुर के पास गंगरी से मिल जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

सारन जिले की जलवायु शुष्क और गर्म है। उत्तर विहार में यह सबसे अधिक स्वास्थ्यप्रद स्थान समझा जाता है। यहाँ चैत, वैशाख और जेठ में गरमी; आषाढ़, सावन और भादो में बरसात तथा अगहन, पूस और माघ में जाड़े का मौसिम रहता है। हवा मुख्यतः पूरबी और पच्छिमी है। वैशाख-जेठ में इस जिले का तापमान करीब १००° रहता है। वर्षा साल में करीब ४५ इंच होती है।

उत्तर बिहार के और जिलों की अपेक्षा यहाँ मलेरिया बुखार की शिकायत बहुत कम रहती है। प्लेग पहले-पहल यहाँ १८६६ ई० में एक गाँव में हुआ था। उसके बाद तो यह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। हैजे की बीमारी यहाँ पहले बहुत होती थी; लेकिन इधर कम हो गयी है। चेचक का प्रकोप भी यहाँ कम है। म्युनिसिपैलिटियों के अन्दर चेचक की टीका लेना कानूनन अनिवार्य कर दिया गया है। देहातों में भी टीका देने का प्रबन्ध है। जिले के उत्तर भाग में लोगों को घेघा हुआ करता है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में अन्धों की संख्या १६४७, बहरे-गूँगों की संख्या ११३७, कोढ़ियों की संख्या ४२१ और पागलों की संख्या ३१३ थी।

जिले के अन्दर सन् १९३५-३६ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २५ अस्पताल थे। सोनपुर में रेलवे कर्मचारियों के लिये रेलवे अस्पताल है। जिले में सबसे बड़ा अस्पताल छपरे का और उसके बाद हथुआ का है।

जानवर

सारन जिले के मवेशी साधारण तौर पर कमजोर होते हैं। अच्छे मवेशी दूसरे जिलों से यहाँ लाये जाते हैं। सभी जमीन के आबाद हो जाने से यहाँ चरागाह का बहुत अभाव है। जाड़े के दिनों में बहुत-से मवेशी चरने के लिये चम्पारण भेजे जाते हैं। पशुओं की नसल सुधारने के लिये हथुआ राज की ओर से श्रीपुर में एक संस्था खोली गयी है। यहाँ अच्छे साँढ़ तैयार किये जाते और वे गाँवों में छोड़ दिये जाते हैं। यहाँ घोड़े और टट्टू अधिकतर बलिया जिले तथा युक्तप्रान्त के अन्य जिलों से

आते हैं। पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस और बकरियाँ मुख्य हैं। डोम वगैरह मांस के लिये सूअर भी पालते हैं।

जिले के अन्दर कार्तिक महीने में सोनपुर, दरौली और रिवीलगंज में, फागुन महीने में सिल्हौरी और महनार में तथा चैत महीने में थावे में मेले लगते हैं जहाँ जानवरों की खरीद-बिक्री होती है। जानवरों के इलाज के लिये छपरा, सीवान और गोपालगंज में अस्पताल हैं। कुछ डाक्टर गाँवों में घूम-घूमकर भी इलाज करते हैं।

इस जिले में अब जंगल नहीं रह गये हैं; इसलिये बाघ, चीते वगैरह बड़े-बड़े जानवर यहाँ नहीं पाये जाते। हाँ, सूअर, लोमड़ी, नीलगाय आदि सब जगह मिलते हैं। जलचर जीवों में घड़ियाल, कछुआ, मछली आदि मुख्य हैं।

इतिहास

सारन शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत हैं। जेनरल कनिंघम का पहले मत था कि 'शरण' शब्द से सारन बना है जिसका अर्थ है आश्रय। वह शरण शब्द का सम्बन्ध एक बौद्ध कथा से बताता था। कथा है कि एक बार बुद्धदेव ने इस स्थान पर एक असुर को परास्त कर उसे बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी। उसके बुद्ध, धर्म और संघ की शरण में जाने की स्मृति कायम रखने के लिये अशोक ने यहाँ शरण-स्तूप बनवाया। वह शरण-स्तूप धार्मिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण समझा गया कि इसी के नाम पर इस इलाके या जिले का नाम पड़ गया। इस शरण-स्तूप के सम्बन्ध में पीछे कनिंघम का विचार बदल गया और उसने शाहाबाद जिले में इसका स्थान ठहराया।

कुछ लोग 'सारंगारण्य' शब्द से, जिसका अर्थ 'हिरण का वन' है, सारन शब्द की उत्पत्ति बताते हैं। लोगों का कहना है कि छपरा से कुछ मील पूरब सिंगाही नामक स्थान में सुप्रसिद्ध ऋष्यशृंग का आश्रम था। ❀ उस समय यह स्थान हरिणों से भरा घना जंगल होने के कारण सारंगारण्य कहलाता था। 'शक्रारण्य' (इन्द्र का वन) शब्द से भी सारन का होना सम्भव माना जाता है। शक्रारण्य उस विशाल देश के चारो ओर था जहाँ राजा सुमति ने मिथिला जाते समय विश्वामित्र और राम का स्वागत किया था।

प्राचीन काल—सारन जिले के प्राचीन इतिहास का कुछ पता वेदों से चलता है। लिखा है कि जब आर्य लोग पंजाब से पूरब की ओर बढ़े तो सरस्वती नदी के किनारे आ बसे। फिर, वहाँ से चलकर गण्डक के किनारे पहुँचे। बहुत-से लोगों ने नदी पार कर मिथिला में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। बाकी लोग उसी स्थान में बस गये जो आज सारन कहलाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस जिले में पहले आदिम जाति के लोग रहते थे। पीछे आर्यों ने उन्हें परास्त कर मार भगाया। आदिम जातियों में चेरो जाति के लोग यहाँ कई शताब्दी तक राज्य करते रहे। भिन्न-भिन्न जगहों में उनके किले के भग्नावशेष अब भी उनका पता बता रहे हैं। जब राजपूत लोग यहाँ बसे तो धीरे-धीरे ये प्रबल हो गये और सैकड़ों वर्षों तक लड़ते-झगड़ते इन्होंने अन्त में चेरो लोगों को ऐसा परास्त किया कि अब यहाँ उनका पता भी नहीं है। बलिया जिलान्तर्गत हल्दी नामक स्थान के हरिहोवंश राजपूतों के पारि-

❀ मुंगेर और शाहाबाद जिले में भी ऋष्यशृंग का आश्रम बताया जाता है।

वारिक इतिहास से पता चलता है कि उनके पूर्वज सारन जिले में सरयू के किनारे बसते थे और उन लोगों ने बहुत दिनों के युद्ध के बाद चेरो लोगों को परास्त किया था।

ऐतिहासिक काल में सारन कोशल देश का पूर्वीय भाग था। दक्षिण में गंगा नदी, उत्तर में नेपाल की पहाड़ी और पूरब में गडक नदी कोशल देश की सीमा थी। गण्डक कोशल को मिथिला से अलग करती थी। बौद्धकालीन इतिहास में कोशल का महत्वपूर्ण स्थान है; पर उसके इस पूर्वीय भाग के सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं जाना जाता। पहले कुछ लोग चिरांद को वैशाली और सीवान को कुशीनारा का स्थान मानते थे; पर अब इस मत को कोई कबूल नहीं करता।

सातवीं सदी में चीनी यात्री य्वन्च्वाङ् भ्रमण करता इस जिले में भी पहुँचा था। उस समय यह भूभाग सम्भवतः गाजीपुर के चेंचू राज्य के अन्दर था। य्वन्च्वाङ् लिखता है कि गंगा के उत्तर नारायणदेव का सुन्दर मंदिर था जिसके पूरब अशोक ने शरण-स्तूप बनवाया था। इस स्तूप के दक्षिण-पूरब द्रोण-स्तूप या कुम्भ-स्तूप था। कनिंघम ने नारायणदेव के मंदिर का स्थान सारन जिले में गंगा और सरयू के संगम पर समझा। एक दूसरे अन्वेषक कारलाइल ने नारायणपुर में इस मंदिर का स्थान बताया जो अब गंगा में कट गया है। कनिंघम ने पहले शरण-स्तूप और द्रोण-स्तूप को भी सारन जिले में समझा था। उस समय उसका अनुमान था कि द्रोण-स्तूप का स्थान दिघवारा में है। कारलाइल ने द्रोण-स्तूप का स्थान चिरांद में और शरण-स्तूप का स्थान सरयू नदी के एक टापू में या रिवीलगंज के पास गोदना में समझा था। परन्तु, पीछे

शरण-स्तूप का स्थान आरा में और द्रोण-स्तूप का स्थान पटना जिले के भगवानगंज में माना गया।

सारन जिले का सबसे पुराना स्मृति-चिह्न छपरा से ३४ मील उत्तर-पूरब दिघवा-दुबौली में मिला हुआ ताम्रपत्र है। यह ताम्रपत्र श्रावस्ती अर्थात् बनारस के राजा महेन्द्रपाल द्वारा ७६१-६२ ई० में पनियाक नामक एक गाँव के दान दिये जाने के सम्बन्ध में लिखा गया था। उस समय सारन श्रावस्ती राज्य का पूर्वीय भाग था। १६२४-२५ ई० में मशरक थाने के अन्दर डुमरै नामक स्थान में सोने के दो पुराने सिक्के मिले हैं। सिक्के के एक ओर "श्रीमद् गंगेवदेव" लिखा है और दूसरी ओर किसी देवी की बैठी हुई मूर्त्ति है। १६१८-१६ ई० में बेलवा नामक स्थान में खोदाई का काम हुआ था जिसमें पहले तो मध्ययुग का एक मंदिर मिला; पर पीछे और खोदाई करने पर छठी सदी के दो मंदिर और कुछ मूर्त्तियाँ मिलीं। खोदाई करनेवाले श्रीयुत पाण्डेय का मत था कि इन मंदिरों को चीनी आक्रमण-कारी वां-ह्यून-चे ने नष्ट किया था। पास के एक दूसरे टोल्हे के अन्दर, जिसे लोग भार जाति का टील्हा कहते हैं, मकानों के चिह्न मिले हैं, जो ईसा के सौ-दो सौ वर्ष पहले के समझे जाते हैं। यहाँ सात चिह्नित सिक्के, चाँदी के पानीवाले ताम्बे के तीन टुकड़े, कुशानवंश के ताम्बे के तीन पैसे और ११ सील मिले थे। इनमें दो सील के सिवा बाकी सब खो गये।

मुसलमान-काल—१३ वीं सदी के आरम्भ में बिहार में मुसलमानों का दबदबा हो गया। १२११ ई० से १२२६ ई० के बीच बंगाल के शासक गयासुद्दीन इवाज ने तिरहुत के राजा पर चढ़ाई की और उसे कर देने को बाध्य किया। दिल्ली के बाद-शाह बलबन के समय उसका लड़का नासिरुद्दीन बुगरा खाँ

बंगाल का सूबेदार था। लेकिन, नासिरुद्दीन बहुत ही कमजोर शासक था; इसलिये जब बलबन मर गया तो दिल्ली की गद्दी पर वह नहीं बैठाया जाकर उसका लड़का मुएजउद्दीन कैकोबाद बैठाया गया। १२८८ ई० में नासिरुद्दीन अपने लड़के के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और सरकार सारन के अन्दर सरयू नदी तक बढ़ आया। यहाँ उसके लड़के ने शाही सेना के साथ उसका मुकाबला किया। अन्त में संधि हुई जिसके अनुसार कैकोबाद ही दिल्ली का बादशाह रहा और नासिरुद्दीन बुगरा खाँ बंगाल का स्वतन्त्र शासक मान लिया गया। इस पर बेचारा नासिरुद्दीन रोता-कलपता अपनी राजधानी को लौट गया।

चौदहवीं सदी के मध्य में जिस समय बंगाल के स्वतन्त्र शासक इलियस शाह ने तिरहुत पर चढ़ाई की और अपनी विजय कायम रखने के लिये हाजीपुर में किला बनवाया, उस समय सारन उसके अधीन हुआ। उस वक्त सरयू नदी दिल्ली साम्राज्य और बंगाल राज्य की सीमा का काम करती थी। १३९७ ई० में बंगाल का यह पच्छिमी भाग जौनपुर के राजाओं के हाथ में चला गया और पूरी एक शताब्दी तक उन्हीं लोगों के हाथ में रहा। इसके बाद बंगाल के शासक हुसैनशाह ने फिर इस भाग को बंगाल में मिला लिया। सारन जिले के चिरांद नामक स्थान में पाये गये लेखों तथा अन्य स्थानों के लेखों से भी यह स्पष्ट है कि उसने सारे उत्तार विहार पर अपना कब्जा जमा लिया था। १४९९ ई० में यह प्रान्त दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के हाथ में चला गया। सिकन्दर लोदी जौनपुर को जीतकर विहार पहुँचा। यहाँ बाढ़ में हुसैनशाह के साथ संधि हुई। शर्त यह रही कि विहार, तिरहुत और सरकार सारन तथा जीते हुए और भाग बादशाह के हाथ में रहेंगे बशर्ते कि वह बंगाल पर चढ़ाई

न करे। अब तक सारन जिले में मुसलमान बादशाहों का आधिपत्य रहते हुए भी हिन्दू जमींदारों का ही दबदबा था। इसको नष्ट करने के लिये सिकन्दर लोदी ने अपने बहुत-से मुसलमान अफसरों को सारन जिले में जागीरें दीं। मियाँ हुसेन फरमुली सारन और चम्पारण का सबसे बड़ा जागीरदार था। इस भाग को लोग जलखेत कहते थे। सम्भवतः जल से भरे रहने के कारण ही इसका यह नाम पड़ा हो। मियाँ हुसेन कट्टर मुसलमान था। उसने अपनी जागीर के अलावे २० हजार गाँव हिन्दुओं से छीने थे।

सिकन्दर लोदी और हुसैनशाह के बीच सन्धि अधिक दिनों तक नहीं रह सकी। हुसैनशाह का लड़का नसरतशाह ने तिरहुत को जीतकर सारन ज़िले को भी अपने कब्जे में किया; बल्कि सरयू को पार कर बलिया जिले में भी अपना अधिकार जमाया। इसको बढ़ते हुए देख दिल्ली के बादशाह बाबर ने एक बड़ी सेना सजाकर १५२६ ई० में विहार पर धावा किया। वह आरा आकर ठहरा। उसने देखा कि गंगा और सरयू के संगम पर बहुत बड़ी सेना और नावें मौजूद हैं। पहले उसने सेना को लौट जाने को कहा। जब सेना नहीं लौटी तो उसने नदियों को पार कर चारों ओर से अफगानों पर चढ़ाई कर दी। अन्त में अफगानी सेना हार गयी और बाबर की जीत हुई। बाबर ने इस युद्ध का एक सुन्दर वर्णन किया है। उसने इस प्रदेश के योद्धाओं की बड़ी तारीफ की है और इस युद्ध में तोपों और बन्दूकों के व्यवहार की भी बात लिखी है। युद्ध के दूसरे दिन बाबर नरहन परगने के गुंडनेह नामक स्थान में जाकर ठहरा। सम्भवतः इसी स्थान को आज गुठनी कहते हैं। कुछ दिन यहाँ ठहरने पर वह चौपरेह नामक गाँव में गया, जो आज छपरा

शहर है। यहाँ की भयंकर आँधी का उसने जिक्र किया है। सारन शाह मुहम्मद मारुफ के हाथ सौंपकर बाबर अवध की ओर चला गया।

इसके करीब आधी शताब्दी बाद बंगाल के नवाब दाऊद खाँ को हराकर अकबर ने सारन को आखिरी तौर से मुगल साम्राज्य में मिला लिया और पटना को भी १५७४ ई० में अपने कब्जे में किया। सारन अब विहार का एक भाग हो गया और यहाँ के गवर्नर के नियन्त्रण में रहने लगा। आइन-ई-अकबरी के अनुसार उस समय विहार में ६ सरकारें थीं जिनमें एक सारन सरकार भी थी। १५८२ ई० में अकबर के अर्थ-सचिव टोडर-मल ने यहाँ का लगान निश्चित किया था।

इसके बाद मुसलमानी सल्तनत के अन्तिम काल में ही सारन जिले के इतिहास का कुछ पता चलता है, जब कि यहाँ यूरोपियन लोग आ बसे थे। १६६६ ई० में यूरोपीय यात्री टैवर-नियर ने जो अपना यात्रा-वृत्तान्त लिखा था, उससे पता चलता है कि चौपर (वर्तमान छपरा) नामक शहर में हॉलैण्ड-कम्पनी ने शोरा का एक गुदाम कायम किया था। यहाँ शोरा साफ कर हुगली भेजा जाता था जहाँ से माल विदेश को रवाना होता था। उन दिनों बारूद के लिये शोरा की बड़ी माँग थी। पीछे अँग-रेजों ने भी यहाँ शोरा का कारखाना खोला। १७११ ई० में कुछ लुटेरों ने छपरे को लूट लिया। जब विहार के नवाब ने लुटेरों के विरुद्ध सेना भेजी तो उन सबों ने शोरा के गुदाम में आग लगा दी। १७२६ ई० में नवाब फक्रुदुल्ला ने शेख अब्दुल्ला के विरुद्ध सारन में सेना भेजी। शेख अब्दुल्ला इस जिले का एक बहुत ही प्रमुख व्यक्ति था। समूचे सूबे के अन्दर इसकी बड़ी कद्र थी। सभी जमींदारों के साथ इसका मेल-जोल था। सभी

नवाब इसे अपना नायब या लगान का सबसे बड़ा अफसर बनाया करते थे। इसके इतने प्रभावशाली होने के कारण नवाब फक्रुदुल्ला इससे जलने लगा। उसने बड़ा उत्पात मचाया। अन्त में यह अजीमाबाद (पटना) से भागकर अपने सीवान के किले में चला आया। फक्रुदुल्ला ने उसका पीछा कर उसे किले में गिरफ्तार कर लिया। इस पर इसने अवध के नवाब सादत खाँ से अपील की। सादत खाँ ने इसे बुला भेजा। यह किले से भाग निकला और अवध चला गया। फक्रुदुल्ला उसका कुछ बिगाड़ नहीं सका।

अङ्गरेजी शासन—मुसलमानों के बाद धीरे-धीरे अँगरेजों का बल बढ़ने लगा। अँगरेजों ने पहले पहल इस जिले में १७५७ ई० में धावा किया। इस समय इयरकूट सिराजुद्दौला के हिमायती फ्रांसीसी सरदार लॉ का पीछा करता हुआ छपरा तक पहुँचा था। दूसरी बार अँगरेजी सेना १७६३ ई० में इस जिले में आयी। पटना-फैक्टरी के एजेन्ट एलिस के पटना सिटी को अपने कब्जे में कर लेने पर जब नवाब मीर कासिम की कुछ सेना वहाँ जा पहुँची तो अँगरेज लोग गंगा पार कर छपरा की ओर बढ़े। वे लोग भागते-भागते माँझी पहुँचे। यहाँ नवाब के सेनापति समरू और सारन के फौजदार रामनिधि ने थोड़ी देर में ही अँगरेजों को परास्त कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे लोग पटना लाकर मार डाले गये। १७६४ ई० में सारन जिला अँगरेजों के हाथ में आ गया। जब अवध का नवाब शूजाउद्दौला पटना से भागा तो अँगरेजी सेना सारन जिला होकर गाजीपुर के लिये रवाना हुई। रास्ते में बरसात गिरने पर सैनिक दल माँझी और छपरे में ठहर गया। माँझी में देशी सिपाहियों ने बलवा कर अपने अँगरेज अफसरों को गिरफ्तार

कर लिया। पर, दूसरे ही दिन वे लोग छोड़ दिये गये। अफसर लोगों ने छपरा पहुँचकर बलवे की खबर मेजर हेक्टर मुनरो को दी। इसपर एक दूसरी सेना ने माँझी पहुँचकर सब सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। वे लोग छपरा लाये गये। उनके २४ मुखियों को तोप से उड़ाने की सजा हुई। २० तो वहीं छपरे में और ४ मनेर में, जहाँ दूसरे सैनिक भी बलवा करने को थे, तोप से उड़ाये गये।

१७६६ ई० में लार्ड क्लाइव छपरा पहुँचा। यहाँ क्लाइव, अवध के नवाब शूजाउद्दौला, बादशाह शाहआलम के वजीर मुनीरुद्दौला और बनारस के राजा बलवन्त सिंह आपस में मिले और एक ने दूसरे को उपहार प्रदान किया। इन लोगों के बीच संधि हुई जिसके अनुसार यह तय पाया गया कि मराठों ने अगर इनमें से किसी पर चढ़ाई की तो सब कोई उसकी मदद करेंगे।

अँगरेजी सल्तनत के आरम्भ में हथुआ महाराज के पूर्वज हुसैपुर के महाराज फतेहसाही ने इस जिले में विद्रोह मचाया। इसलिये, इसके विरुद्ध अँगरेजी सेना भेजी गयी जिसने बहुत मुश्किल से इसे राज्य से भगाया और गोविन्द राम नामक एक व्यक्ति के हाथ राज्य का बन्दोबस्त कर दिया। फतेहसाही भागकर गोरखपुर और सारन के बीच बागयोगिनी नामक जंगल में चला गया। लेकिन, वह बार-बार अपने राज्य पर धावा करता रहा। १७७२ ई० में गोविन्द राम मारा गया। अन्त में तंग आकर सरकार ने फतेहसाही को शान्तिपूर्वक अपने गाँव में रहने की इजाजत दी। लेकिन, कुछ ही दिनों के बाद उसने फिर उपद्रव शुरू किया। १७७५ ई० में उसने लगान-विभाग के मुख्य [illegible] मीरजमाल और राज्य का बन्दोबस्त लेनेवाले अपने चचेरे भाई बसन्तसाही को मार

डाला। गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्स ने अवध के नवाब की सहायता से फतेहसाही को पकड़ने के लिये सेना भेजी; मगर वह पकड़ा नहीं जा सका। वह छिप-छिपकर उपद्रव मचाता ही रहा। लेकिन, जीवन के अन्तिम दिनों में वह इन कामों से अलग होकर संन्यासी हो गया। उसके वंशज इस समय गोरखपुर जिले में तमकुही के जमींदार हैं। १७६१ ई० में राज्य बसन्तसाही के पोते छत्रधारीसाही को दिया गया जिसने पीछे अपनी राजधानी हथुआ में बनायी।

इसके बाद सारन के इतिहास में १८५७ ई० का स्वातन्त्र्य युद्ध प्रसिद्ध है। इस समय सारन और चम्पारण एक ही जिला थे, गरचे १८३७ में मोतिहारी में एक मजिस्ट्रेट की नियुक्ति हो गयी थी। जब विद्रोह की आग भड़की तो सुगौली के मेजर होम्स ने जोरों से दमन जारी किया। आन्दोलनकारियों ने मेजर होम्स और दूसरे अफसरों को मार डाला। वहाँ से वे लोग आजमगढ़ की ओर रवाना हुए। रास्ते में उन सबों ने सीवान के डिपटी मजिस्ट्रेट और अफीम के सब-डिपटी एजेन्ट के घर पर धावा किया। ये दोनों बहुत मुश्किल से जान बचाकर भागे। यह खबर सुनकर छपरा के अँगरेज लोग भी दानापुर भाग गये; पर जब देखा कि छपरे में किसी तरह की अशान्ति नहीं है तो फिर लौट आये। गोरखपुर में एक सरदार महम्मद हुसैन ने अपने को अवध के नवाब के अधीन चकलेदार घोषित किया था; इससे सारन में भी हलचल मचा हुआ था। स्वातंत्र्य-युद्ध के ५०० सैनिकों ने जिले में घुसकर दरौली और गंगुआ की फैक्टरियों में लूटपाट मचायी। इसके बाद आन्दोलन को दबाने के लिये सीवान में खास तौर से गोरखा सैनिक रखे गये। लेकिन, कुछ ही दिनों में एक सैनिक-दल ने गुठनी थाने पर

चढ़ाई कर दी। फिर, गोरखपुर की सीमा के पास सोहनपुर में ७ हजार स्वातन्त्र्य-युद्ध के सैनिकों के साथ मुठभेड़ हुई। साहबगंज में भी लड़ाई मची। लेकिन, अन्त में धीरे-धीरे आन्दोलन दबा दिया गया। १८६६ ई० में चम्पारण एक अलग जिला कायम किया गया। तभी से सारन जिला वर्तमान रूप में कायम है। गत यूरोपीय महायुद्ध में इस जिले से करीब ५,५०० आदमी शरीक हुए थे जिनमें करीब ३,००० आदमी लड़नेवाले और २,५०० आदमी दूसरे काम करनेवाले थे॥

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में सारन जिले के अन्दर २२,६५,००१ आदमी थे। इधर पचास वर्षों में यहाँ १,६१,४६७ आदमी अर्थात् फी सैकड़े ८ आदमी बढ़े। इस तरह सन् १९३१ ई० की मनुष्य-गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या २४,८६,४६८ हो गयी है। जनसंख्या के हिसाब से विहार प्रान्त के अन्दर इसका तीसरा स्थान है। वर्तमान जनसंख्या में १२,२०,०४९ पुरुष और १२,६६,४१९ स्त्रियाँ हैं। सारन जिले में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ९२७ आदमी रहते हैं। जन-संख्या की सघनता में प्रान्त के अन्दर इस जिले का तीसरा स्थान है। सीवान सब-डिविजन में एक वर्गमील के अन्दर ९८४, सदर सब-डिविजन में ९२१ और गोपालगंज सब-डिविजन में ८७४ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ४४,७३६ और जिले से बाहर गये हुए लोगों की संख्या २,०९,८९० थी। सारन जिले में छपरा, सीवान और रिवीलगंज, ये ३

शहर और ४,३०५ गाँव हैं। इन शहरों की कुल जनसंख्या ७०,४७५ है।

भाषा—सारन जिले की बोली भोजपुरी है। देहातों में हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियों के अन्दर कैथी लिपि का प्रचार है; पर नये पढ़े-लिखे हिन्दू देवनागरी और मुसलमान उरदू लिपि लिखते हैं।

जिले की जनसंख्या में २४, ८४, ८३० लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ८५७ की बँगला, १६६ की मारवाड़ी, १६६ की नेपाली, १०५ की पंजाबी, ५३ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ, २० की पश्तो और द्राविड़ भाषाएँ तथा २३८ की अँगरेजी आदि यूरोपीय भाषाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है :—

हिन्दू	२१,७६,६८४	सिक्ख	१२
मुसलमान	३,०६,००५	जैन	६
ईसाई	४६०	आदिम जाति	१

सैकड़े का हिसाब जोड़ने से हिन्दू फी सैकड़े ८७ से कुछ अधिक और मुसलमान करीब १३ हैं। हिन्दू में ग्वाले सबसे अधिक हैं। इसके बाद राजपूत, ब्राह्मण, कोइरी, चमार, कुरमी, जोलाहा और भूमिहार ब्राह्मण आदि हैं।

मुसलमान जिले के अन्दर थोड़े-बहुत हर जगह हैं। लेकिन, वे सीवान थाने में सबसे अधिक और सोनपुर थाने में सबसे कम हैं। मुसलमानों में जोलाहों की संख्या सबसे अधिक है। उसके बाद शेख, पठान, सैयद आदि हैं।

जिले का सबसे पुराना ईसाई-मिशन १८४० ई० में छपरे में स्थापित जर्मन-मिशन है। छपरे में रोमन कैथोलिक मिशन

भी है। यहाँ के अमेरिकन मिशन का प्रबन्ध महिलाओं के हाथ में है। सीवान में एक प्रोटेस्टेन्ट मिशन है। ईसाइयों की उपर्युक्त संख्या में १३७ यूरोपियन आदि, ११० ऐंग्लोइंडियन और २१३ भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

सारन जिले का रकबा १७,१२,५८६ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १२, २८, ३०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और १,३४,६२६ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। २,००,५५८ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १,४९,१०२ एकड़ जमीन नदी और मकान आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ७९½ भाग जमीन जोत के अन्दर है; मगर इसका करीब दसवाँ भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ११¾ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता और सैकड़े ८¾ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े २६ भाग में दो या तीन फसल होती है।

यहाँ की जमीन नदी के बहाव से बनी हुई है। यहाँ नीची जगह में पायी जानेवाली कड़ी मिट्टी से लेकर ऊँची जगह में पायी जानेवाली हलकी बलुआही मिट्टी तक है। कड़ी जमीन को बाँगर और हलकी बलुआही जमीन को भाठ या भीठ कहते हैं। बाँगर जमीन में अगहनी धान और भाठ में भदई धान और रब्बी

फसल होती है। यों तो दोनों तरह की जमीन जिले के सभी भागों में पायी जाती है, तो भी भाठ जमीन झरही नदी से पच्छिम जिले के उत्तरीय भाग में अधिक पायी जाती है। गाँव से सटी हुई जमीन को गोंर कहते हैं। स्वाभाविक रूप से खाद अधिक पड़ते रहने से यह जमीन बहुत उपजाऊ होती है। भाठ जमीन के काछ, बलुआ, पटियार और बलसुन्दरी, ये चार भेद और बाँगर जमीन के बालू और मटियार ये दो भेद होते हैं। रेहवाली जमीन को ऊसर और रेहर कहते हैं। यह जमीन उपजाऊ नहीं होती। सर्वे सेटलमेन्ट ने जमीन के भाठ और धनहर, ये ही दो भेद माने हैं। सन् १६३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले में जोती-बोयी जमीन के सैकड़े ६७ भाग में रब्बी, ३० भाग में भदई, २६ भाग मे अगहनी और ७ भाग में कन्द, मूल, फल, तरकारी आदि की खेती होती है।

खैहन अन्न में सबसे अधिक जमीन में धान पैदा किया जाता है। धान में मुख्य अगहनी धान है। धान के बाद क्रम से मकई, जौ, कोदो, गेहूँ, अरहर, बूट, मरुआ, खेसारी, चीना, मटर, जई, मसुरी, साँवाँ, कौनी, मूँग, छोटा जनेरा वगैरह का स्थान आता है। तेलहन भी यहाँ खूब पैदा होता है। कुछ दिनों से ऊख की खेती बहुत बढ़ी हुई है। कपास भी यहाँ अच्छी उपजती है। कुछ तम्बाकू भी उपजाया जाता है। पान की लता अधिकतर चिराँद और सोनपुर के बीच लगायी जाती है।

जिले के करीब, २,५०,०१० एकड़ जमीन में, अर्थात् उपजाऊ जमीन के सैकड़े ६८ भाग में, सिंचाई का काम होता है। इसमें १,५८,००० एकड़ जमीन कूएँ से, २४,००० एकड़ जमीन खानगी नहरों से, ५४,००० एकड़ जमीन तालाब और अहरों से तथा १४,००० एकड़ जमीन अन्य जरियों से सींची

जाती है। जिले के उत्तर-पूरब भाग में जो नहर है वह सारन-नहर के नाम से प्रसिद्ध है। १८८१ ई० में गण्डक से नहरें निकालकर दाहा, गण्डकी, धनै और गंगरी, इन चार धाराओं में मिलायी गयी थीं।

गोपालगंज सब-डिविजन के अन्दर सेपाया में सरकारी कृषि-फार्म है जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है। यहाँ पशुओं की नस्ल सुधारने का भी प्रबन्ध है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ के हजार आदमियों में ४२४ आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। काम करनेवाले ४२४ आदमियों में ३७९ कृषि और पशुपालन में, १६ उद्योगधंधों में, ९ व्यापार में, २ शासन-सम्बन्धी कार्य में, २ पुरोहित, वकील, डाक्टर, वैद्य, शिक्षक आदि के पेशे में, १ गमनागमन अर्थात् डाक, रेल, जहाज, नाव, सड़क आदि में तथा १५ दूसरे कामों में लगे हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से काम करनेवालों में सैकड़े ८९ आदमी खेती के काम में हैं।

नील—१९वीं सदी के अन्त में इस जिले के अन्दर नील की करीब ३५ फैक्टरियाँ थीं और ४५,५०० एकड़ में नील की खेती होती थी। १९२८ ई० में सिर्फ ३ फैक्टरियाँ रह गयीं और उस साल एक हजार एकड़ जमीन में नील की खेती हुई। लेकिन, उसके बाद खेती बन्द हो गयी।

चीनी—नील के बाद ऊख की खेती को पुनर्जीवित करने का काम इंडिया डेवलपमेन्ट कम्पनी ने आरम्भ किया था।

उसने बरहोगा में फैक्टरी खोली। उसके बन्द होने पर कानपुर वर्क्स कम्पनी ने मरहौरा में फैक्टरी कायम की। फिर, सीवान में दो बड़ी और दो छोटी फैक्टरियाँ तथा महाराजगंज और पचरुखी में भी एक-एक फैक्टरी खुली। सन् १६३६ में आकर जिले के अन्दर चीनी की १० फैक्टरियाँ हुईं। किसान लोग पुराने तरीके पर भी गुड़ तैयार करते हैं।

शोरा—शोरा तैयार करना पहले इस जिले का एक सबमे मुख्य उद्योगधंधा था। १७वीं सदी से डचों और अँगरेजों ने इस कारबार को अपने हाथ में लिया। सन् १९१७-१८ में यहाँ ६३ हजार मन शोरा तैयार हुआ था। गत महायुद्ध के बाद इसकी माँग घट गयी जिससे सन् १६२३-२४ में सिर्फ २२ हजार मन शोरा तैयार हुआ। इसके बाद जर्मनी आदि देशों से सस्ता शोरा आने लगने के कारण इसकी उत्पत्ति बिलकुल घट गयी। १६२८-२६ में केवल ८ हजार मन शोरा तैयार हुआ। यह उद्योग-धंधा अब नुनिया जाति के लोगों के हाथ में है। इन लोगों को शोरा बनाने का लाइसेन्स सरकार से लेना पड़ता है।

कंकड़—उत्तर-पच्छिम कोने को छोड़ जिले के सारे भाग में कंकड़ पाया जाता है। यह सड़क बनाने के काम में आता है; लेकिन अब यह कम मिलने लगा है।

कपड़ा—पहले इस जिले में काफी कपड़ा बनता था। इस समय जहाँ-तहाँ जोलाहे लोग मोटा कपड़ा बिनते हैं। मीरगंज और सीवान में अधिक कपड़ा बनता है, कपड़े की रँगाई और छपाई का काम यहाँ अच्छा होता है।

बर्तन—काँसा, पीतल, फूल आदि के बर्तन सीवान में बहुत बनते हैं। यहाँ का फूल का बर्तन तो खास तौर से मशहूर है।

फूल से भी अधिक चमकीला और सुन्दर बर्तन बनाने के लिये फूल में कुछ चाँदी मिला देते हैं। ऐसी धातु को 'सौ सताईस' कहते हैं। यह बहुत महँगा पड़ता है और इस धातु के बर्तन आर्डर मिलने पर ही बनाये जाते हैं। ताँबा और जस्ता की मिलावट से बेध नामक धातु तैयार की जाती है जिससे गुड़गुड़ी तथा दूसरे सुन्दर बर्तन बनते हैं। इसकी पालिश बहुत सुन्दर होती है और इसकी बड़ी माँग रहती है।

मिट्टी के सुन्दर बर्तन भी सीवान में बनते हैं। ये बर्तन कोहरौती नामक मिट्टी से बनाये जाकर एक बड़े बर्तन में रख-कर आग में पकाये जाते हैं। इसके बाद सज्जी मिट्टी, मामूली मिट्टी और आम की छाल के द्वारा इनपर पालिश की जाती है। यह मिट्टी सीवान सबडिविजन के खोदायबाग और गोपाल-गंज सबडिविजन के गॉवदरी नामक स्थान में मिलती है।

फैक्टरियाँ—जिले के अन्दर सन् १९३६ में केवल १४ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी ऐक्ट लागू था। इन फैक्टरियों में १० चीनी की और एक-एक रेलवे, इंजीनियरिंग, शराब और बिस्कुट की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—जिले के अन्दर आनेवाली चीजों में खैहन अन्न, कपड़ा, नमक, किरासन तेल तथा तरह-तरह की छोटी-बड़ी विदेशी चीजें हैं। चीनी, गुड़, तेलहन और दलहन अन्न यहाँ से बाहर भेजे जाते हैं। छपरा, सीवान, रिवीलगंज, महाराजगंज, मैरवा, मीरगंज, सोनपुर, दिघवारा और एकमा व्यापार के मुख्य केन्द्र हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—इस जिले के अन्दर बी०, एन० डब्ल्यू० रेलवे की गाड़ियाँ दौड़ती हैं। इस रेलवे की मुख्य लाइन जिले में दक्षिण-पूरब कोने पर, सोनपुर से लेकर उत्तर-पच्छिम कोने पर, मैरवा तक गयी है जो ८५ मील लम्बी है। बीच में परमानन्दपुर, नयागाँव, शीतलपुर, दिघवारा, सन्ता, गोल्डनगंज, छपरा-कचहरी, छपरा, कोवा-समहोता, दाऊदपुर, एकमा, चैनवा, दरौंद, पचरुखी, सीवान और भाटापोखर रेलवे स्टेशन हैं। सोनपुर में गंडक नदी पर रेलवे का बहुत बड़ा पुल है। यह लाइन १८८४ ई० में बनी थी। सोनपुर से ब्रांच लाइन पलेजाघाट और बनबारचक गयी हैं। बरसात के समय बनबारचक से और सूखे दिनों में पलेजाघाट से रलवे स्टीमर गंगा पार करके पटना के दीघाघाट और महेन्द्रूघाट को जाता है। छपरा से जो एक लाइन दक्षिण-पच्छिम की ओर बलिया और बनारस को गयी है उसमें छपरा से माँझी तक ११ माइल सारन जिले के अन्दर है। बीच में रिवीलगंज पड़ता है। माँझी में सरयू नदी पर एक पुल है। छपरा से एक दूसरी लाइन मशरक होकर थावे तक गयी है जहाँ यह सीवान से गोरखपुर जानेवाली लाइन में मिल गयी है। छपरा और थावे के बीच इस लाइन पर छपरा-कचहरी, खैरा, पटरही, मरहौरा, मशरक, राजा पट्टी, दिघवा-दुबौली, सिधबलिया, रतनसराय, माँझागढ़ और हरखुआ रेलवे स्टेशन हैं। सीवान-गोरखपुर लाइन सीवान से उत्तर की ओर चलकर इस जिले के अन्दर अलमोरी-सरसर, हथुवा थावे, सासामुसा और जलालपुर होते हुए गोरखपुर को गयी है,

छपरा और सीवान के बीच दरौंधा से एक लाइन महाराजगंज को गयी है जिसकी लम्बाई केवल ४ मील है। जिले के अन्दर करीब २०० मील लम्बी रेलवे लाइनें हैं।

सड़क—सन् १७६४ में सारन जिले में सिर्फ तीन सड़कें थीं। धीरे-धीरे सड़कें बढ़ती गयीं और उनकी दशा भी अच्छी होती गयी। सन् १६३५-३६ में आकर जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के प्रबन्ध में ३०६७ मील लम्बी सड़कें हुई। इन सड़कों में २२७ मील पक्की सड़कें, ६१८ मील कच्ची सड़कें और १, ६५२ मील छोटी-छोटी देहाती सड़कें हैं।

सारन जिले की सड़कें दो समूहों में बाँटी जा सकती हैं—एक छपरा-समूह और दूसरा सीवान-समूह। पहले समूह में छपरा से भिन्न-भिन्न स्थानों में जानेवाली सात बड़ी-बड़ी सड़कें हैं। सीवान-समूह में आठ मुख्य सड़कें हैं। छपरा और सीवान-समूह के अलावे भी जिले के अन्दर कुछ अच्छी सड़कें हैं जो सीवान या छपरे को नहीं छूतीं। ऐसी सड़कों में मुख्य डोमैगढ़-मशरक सड़क और दरौली-बसन्तपुर सड़क हैं।

जल-मार्ग—गंगा, गंडक और सरयू के कारण इस जिले के लोगों को दूर-दूर स्थानों में जाने-आने और व्यापार करने में बड़ी सुविधा है। इन नदियों को पार करने के लिये जहाँ-तहाँ बहुत-से घाट हैं। दाहा और मही नदियों में कुछ दूर तक नावें चलती हैं। कार कम्पनी का एक छोटा जहाज गंगा में दीघा से सरयू नदी में गोरखपुर जिलान्तर्गत बरहज तक आता-जाता है।

शिक्षा

सन् १८७०-७१ में जिले भर में केवल ६ छोटे-छोटे स्कूल सरकारी प्रबन्ध या सहायता से चल रहे थे। जब शिक्षा की ओर सरकार का ध्यान गया और गाँव की पाठशालाओं को सहायता देने की स्कीम तैयार हुई तो १८७२-७३ ई० में इस जिले में सरकारी सहायताप्राप्त २२८ स्कूल हुए जिनमें ५,४२१ छात्र थे। सन् १९३५-३६ में आकर जिले में प्राइमरी स्कूलों की संख्या १,२४१ हुई जिनमें ५८,६७८ विद्यार्थियों के नाम दर्ज थे। इन स्कूलों में ६५ को छोड़ बाकी सबको सरकारी सहायता मिलती थी। सन् १९२४ की जनवरी से जिले के सभी प्राइमरी स्कूल निःशुल्क कर दिये गये हैं और सबके खर्च का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड करता है। विहार के और किसी जिले में निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है।

सन् १९११-१२ में इस जिले के अन्दर मिड्ल स्कूलों की संख्या १७ थी, जिनमें १,३६० विद्यार्थी पढ़ते थे। इन स्कूलों में केवल ५ ही स्कूल मिड्ल इंगलिश और बाकी मिड्ल वर्नाकुलर थे। सन् १९३७-३८ में आकर मिड्ल इङ्गलिश स्कूलों की संख्या ८८ और मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल की संख्या १ हो गयी है। इतने मिड्ल स्कूल प्रान्त के किसी जिले में नहीं हैं।

सन् १९११-१२ में यहाँ हाई स्कूलों की संख्या ६ थी जिनमें २,०८० विद्यार्थी थे। सन् १९३७-३८ में जिले में २३ हाई स्कूल हो गये। पटना जिले को छोड़ विहार के और किसी जिले में इतने हाई स्कूल नहीं हैं। छपरे में जिला स्कूल, सारन एकेडमी,

राजपूत स्कूल और विशेश्वर सेमिनरी, ये चार हाई स्कूल और सीवान में दो हाई स्कूल हैं। गोपालगंज, हथुआ, गोरियाकोठी, अमनौर, दिघवारा, भगवानपुर, जैतपुर, एकमा, परसागढ़, धनाव, रामपुर-अटोली, गंगपुर-सिसवाँ, सोनपुर, महाराजगंज, परसा, एकमा और माँझा में एक-एक हाई स्कूल हैं।

सन् १९३८ में छपरा में एक कालेज खुला है जिसका नाम राजेन्द्र-कालेज है। यहाँ बी० ए० दरजे तक की पढ़ाई का प्रबन्ध किया गया है।

सोनपुर में १९२३ ई० में बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे कम्पनी की ओर से यूरोपियनों के लिये एक स्कूल खुला है। १९२९ ई० में यहाँ सिर्फ ११ लड़के थे। सन् १९२८-२९ में जिले में ६ गुरु-ट्रेनिंग स्कूल, १४ संस्कृत टोल, ३ मदरसे और १ औद्योगिक स्कूल थे। संस्कृत टोलों में छपरे का भारतेश्वरी मारवाड़ी संस्कृत-कालेज मुख्य है।

स्त्री-शिक्षा का यहाँ यथेष्ट प्रबन्ध नहीं है। १९२८-२९ में जिले भर में २ अपर प्राइमरी और १०७ लोअर प्राइमरी स्कूल थे जिनमें कुल २,०९३ लड़कियाँ पढ़ती थीं। हाँ, कुछ लड़कियाँ लड़कों के स्कूल मेंभी शिक्षा प्राप्त करती हैं। सन् १९३७ में छपरे में लड़कियों के लिये एक मिडूल इंगलिश स्कूल खुला है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर कुल ४,७०० लड़कियाँ स्कूलों में पढ़ती थीं।

सन् १९२१ से छपरे की लोकमान्य-समिति जिले में शिक्षा-सम्बन्धी प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इसके स्थापित किये कई विद्यालय और पुस्तकालय हैं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ८६,१२० और स्त्रियों की संख्या ५,१९१ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ७,०९४ और स्त्रियाँ २२३ हैं। फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ३.६६ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ८१,२०८ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े ३.३ है।

शासन-प्रबन्ध

शासन—सारन तिरहुत कमिश्नरी का एक जिला है। यह तीन सब-डिविजनों में बँटा है—छपरा, गोपालगंज और सीवान। सब-डिविजनों का शासन-भार सबडिविजनल अफसर (एस० डी० ओ०) के ऊपर और जिले भर का शासन-भार कलक्टर और मजिस्ट्रेट के ऊपर है। ये दोनों पद एक ही व्यक्ति के रहते हैं। १९१५ ई० के पहले सदर (छपरा) सब-डिविजन में कोई सबडिविजनल अफसर नहीं था, कलक्टर ही वहाँ का सब काम करता था। जिला मजिस्ट्रेट की सहायता के लिये जिले के सदर आफिस छपरे में करीब ६ अव्वल दरजे के डिपटी मजिस्ट्रेट और दो-तीन नीचे दरजे के डिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं। जरूरत पड़ने पर कुछ खास अफसर, जैसे बँटवारा अफसर वगैरह भी बहाल होते हैं। सीवान और गोपालगंज के सबडिविजनल अफसर की सहायता के लिये एक डिपटी या सबडिपटी कलक्टर रहते हैं।

विहार प्रान्त में पहले पहल छपरा जिले में शराबखोरी-बन्द की गयी है।

न्याय—दीवानी कचहरी के अन्दर छपरे में एक जिला जज तथा कई सबोर्डिनेट जज और मुन्सिफ हैं। सीवान और गोपालगंज में एक-दो मुन्सिफ रहते हैं। जिले के सदर आफिस में फौजदारी मुकदमा दौरा जज (जो जिला-जज ही होता है), जिला मजिस्ट्रेट और उनके अधीनस्थ दूसरे मजिस्ट्रेट देखते हैं। सीवान और गोपालगंज में सब-डिविजनल अफसर की सहायता के लिये एक दूसरे दरजे के मजिस्ट्रेट रहते हैं। छपरा, गोपालगंज और सीवान में आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरियाँ भी हैं।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये जिला २८ थानों में बँटा हुआ है। सदर सबडिविजन में १२, सीवान में ६ और गोपाल-गंज में ७ थाने हैं। जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। सन् १६३६ ई० में इस जिले के अन्दर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के अधीन कई असिस्टेन्ट और डिपटी सुपरिन्टेन्डेन्ट, १ सरजेन्ट मेजर, २ सरजेन्ट, ६ इन्सपेक्टर, ५३ सब-इन्सपेक्टर, ४७ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, २ हवलदार और ५८५ कानिस्टबिल थे। यहाँ चौकीदारों की संख्या ३,७२९ है।

जेल—छपरे में जिला-जेल और गोपालगंज तथा सीवान में छोटे जेल हैं। छपरे के जेल में २७२ पुरुष और २० स्त्री कैदियों के रहने की जगह है। जेल में कैदियों से नेवार और दरी बिनने तथा रस्सी बँटने का काम लिया जाता है। गोपाल-गंज जेल में १५ पुरुष कैदी और ३ स्त्री कैदी तथा सीवान जेल में १६ पुरुष कैदी और ४ स्त्री कैदी रख सकने की जगह है।

रजिस्ट्री आफिस—जिले के अन्दर सन् १६३६ में छपरा, मरहौरा, एकमा, सोनपुर, सीवान, दरौली, बसन्तपुर, गोपाल-

गंज, मीरगंज, महाराजगंज, मशरक और बरहरिया इन १२ स्थानों में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाक-बँगला वगैरह बनवाने, प्राइमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करने, तालाब, कूआँ वगैरह खुदवाने तथा घाट, अस्पताल और फाटक का प्रबन्ध करने के लिये डिस्ट्रिक्टबोर्ड है। यहाँ डिस्ट्रिक्टबोर्ड की स्थापना १८८६ ई० में हुई थी। बोर्ड में इस समय ४० मेम्बर होते हैं जिनमें ३० निर्वाचित, ५ पद की हैसियत से और ५ सरकार द्वारा नामजद किये हुए हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब १०-११ लाख रुपया है। डिस्ट्रिक्टबोर्ड अपने छोटे-मोटे काम सबडिविजनों के लोकलबोर्ड को सुपुर्द करता है। सदर लोकलबोर्ड में ११ निर्वाचित और ३ नामजद सदस्य, सीवान लोकलबोर्ड में १० निर्वाचित और ३ नामजद सदस्य तथा गोपालगंज लोकलबोर्ड में ६ निर्वाचित और ३ नामजद सदस्य हैं। सदर के अन्दर दिघवारा, सोनपुर, चेतनपरसा, नैनी, माँझी, मशरक और एकमा में, सीवान के अन्दर महाराजगंज, खुजवा, गुठनी और मैरवा में तथा गोपालगंज के अन्दर गोपालगंज, मीरगंज और माँझी में युनियनबोर्ड हैं जो जिलाबोर्ड के अधीन अपने इलाके के छोटे-छोटे काम करते हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—गाँवों के अन्दर जो काम डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड का है वही शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों का है। सारन जिले में छपरा, सीवान और रिवीलगंज में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। छपरा म्युनिसिपैलिटी १८६४ ई० में कायम हुई थी। इसके २५ मेम्बर हैं जिनमें २० निर्वाचित हैं। सालाना आमद-खर्च करीब दो-ढाई लाख रुपया है। सीवान म्युनिसि-

पैलिटी सन् १८६६ में कायम हुई थी। इसके १२ मेम्बर होते हैं। रिवीलगंज म्युनिसिपैलिटी १८७६ ई० में कायम हुई थी। इसके १० मेम्बर हैं।

छपरा (सदर) सबडिविजन

जिले का यह सदर सबडिविजन जिले के दक्षिण-पूरब भाग में २५° ३६' और २६° १४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°२३' और ८५°१२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १०५७ वर्ग-मील और जनसंख्या ६,७३,११६ है। इसमें छपरा और रिवील-गंज, ये २ शहर और १,५०२ गाँव हैं। इसके अन्दर छपरा शहर, छपरा मुफस्सिल, रिवीलगंज, बनियापुर, गरखा, परसा, मिरजा-पुर, दिघवारा, सोनपुर, मशरक, माँझी और एकमा, ये १२ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

छपरा—जिले का यह प्रधान शहर २५°४७' उत्तरीय अक्षांश और ८४°४४' पूर्वीय देशान्तर पर बसा है। यह जिले का सदर आफिस है। शहर से कुछ दूरी पर सरयू नदी बहती है। पहले गंगा और सरयू का संगम इसी स्थान पर था। उस समय यहाँ बाढ़ बराबर आया करती थी, जिससे लोग फूस से छाये छप्पर का घर बनाते थे। कहते हैं कि इसी छप्पर शब्द से छपरा शब्द की उत्पत्ति हुई। यह शहर पूरब-पच्छिम करीब पाँच-छः मील लम्बा और उत्तर-दक्षिण करीब एक मील चौड़ा है। पुराना शहर पच्छिम की ओर है। पूरब का भाग हाल का और सरकारी कचहरियों के कारण बसा हुआ है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ४७,४४८ है, जिसमें ३५,८७३ हिन्दू, ११,५०५ मुसलमान, ६४ ईसाई और ६ जैन हैं।

इस शहर में रतनपुरा नाम का एक महल्ला है। कहते हैं, हिन्दू काल के राजा रतनसेन की यहाँ राजधानी थी। उनका बनाया रत्नेश्वर नाथ का एक मन्दिर था जहाँ अब धर्मनाथजी का मंदिर है। शहर के पच्छिमी छोर पर एक सुंदर और बड़ा सराय है जहाँ फुलवाड़ी और तालाब भी हैं। राजेन्द्र कालेज इसी सराय में खुला है। कहते हैं कि पहले यहाँ अँगरेज, डच, फ्रांसीसी और पोर्तुगीजों की फैक्टरियाँ थीं। बनियापुर सड़क के किनारे करिंगा के पास डचों और अँगरेजों के पुराने कब्रगाह हैं, जिनपर सबसे पुराने १७१२ ई० के स्मृति-लेख हैं। अँगरेजों का एक नया कब्रगाह अलग बना है। छपरे में घुड़सवार सैनिकों का मुख्य अड्डा है। यहाँ दो रेलवे स्टेशन हैं—एक छपरा और दूसरा छपरा-कचहरी। शहर के अन्दर दो थाने हैं—छपरा-शहर और छपरा-मुफस्सिल। छपरा-मुफस्सिल थाने की जनसंख्या १,३०,६६४ है, जिसमें १,१९,८६३ हिन्दू और १०,८०१ मुसलमान हैं।

अम्बिका स्थान—"दे० आमी"

आमी—छपरा से सात कोस पूरब यह एक गाँव है। इसे अम्बिका स्थान भी कहते हैं। यहाँ अम्बिका भवानी का मंदिर है। पुराण-प्रसिद्ध कथा है कि जब दक्ष-कन्या सती ने अपने पति शिवजी के अपमान के कारण अपने पिता के यज्ञ में प्राण त्याग किया था तो शिवजी उनके शव को लेकर क्रोधवश इधर-उधर घूमने लगे थे। जगत के नाश होने के भय से विष्णु ने अपने चक्र से शव को खंड-खंड कर दिया जो भिन्न-भिन्न स्थानों में जा गिरा। कहते हैं कि यहाँ भी एक खंड गिरा था जिसके कारण इस स्थान की प्रसिद्धि हुई। पास में ही यज्ञ-कुंड

-का स्थान भी बताया जाता है। चैत में यहाँ मेला लगता है। स्थानीय लोग बताते हैं कि यहाँ राजा सुरथ की राजधानी थी।

एकमा—यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। यहाँ रेलवे स्टेशन, थाना, रजिस्ट्री आफिस, डाकबँगला और हाई स्कूल हैं। एकमा थाने की जनसंख्या ६१, ५१ है जिसमें ५७,७७६ हिन्दू, ३,५७१ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

करिंगा—दे० छपरा

गरखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६२,४३४ है, जिसमें ५७,६३६ हिन्दू, ४,७६२ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

गोदना—दे० रिवीलगंज

चिराँद या चिराँद-छपरा—छपरा से तीन कोस पूरब सरयू के किनारे यह एक गाँव है। पहले गंगा इसके पास से ही बहती थी। प्राचीन काल में यह एक बड़ा शहर था। शहर के चिह्न इसके बड़े-बड़े टील्हों से अब भी प्रकट हैं। जिस ऊँचे टील्हे पर चार मंदिर बने हुए हैं वह एक पुराने किले का भग्नावशेष है। पास में जीवच कुंड और ब्रह्मकुंड नाम के दो पुराने छोटे तालाब हैं। कहते हैं, यहाँ च्यवन ऋषि का आश्रम था। आश्रम के स्थान पर आजकल कार्तिक पूर्णिमा में मेला लगता है। महाभारत-काल के प्रसिद्ध राजा मयूरध्वज की यहाँ राजधानी बतायी जाती है। मयूरध्वज की मृत्यु महाभारत-युद्ध में ही हुई थी। चिराँद के मुख्य टील्हे पर एक पुरानी मस्जिद है जो प्राचीन काल के हिन्दू मंदिरों के सामान से बनी हुई मालूम होती है। फाटक पर तीन लाइन में कुछ लिखा हुआ है।

उसमें १४६३ से १५१६ ई० के बीच बंगाल पर शासन करने-वाले हुसैन शाह का भी नाम है। अनुमान किया जाता है कि उसी ने यहाँ के हिन्दू मन्दिरों को तोड़वाकर मस्जिद बनवायी थी।

कहते हैं कि चिराँद या चेराँद को आदिम जाति चेरो लोगों ने बसाया था जिनका इस जिले के अन्दर किसी समय बोल-बाला था। यहाँ बहुत-सी बौद्ध कालीन मूर्तियों के पाये जाने के कारण इस बात में सन्देह नहीं रहता कि यहाँ प्राचीन बौद्ध नगर था।

डुमरसन—छपरा-सत्तारघाट सड़क पर यह एक गाँव है। यहाँ रामनवमी में मेला लगता है जिसमें गाय, बैल, भैंस, घोड़े आदि मवेशी की खरीद-बिक्री होती है।

डोमैगढ़—सरयू के किनारे यह एक गाँव है जो शाल लकड़ी और नाव के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। फकीर डोम पीर के नाम पर इस बस्ती का नाम डोमैगढ़ पड़ा है।

दरियागंज या डोरीगंज—छपरा से सात मील पूरब यह एक गाँव है। पहले गंगा और सरयू का संगम इसी स्थान पर था और लोग यहाँ पर्व-तिथियों में स्नान के लिये आते थे। कहते हैं कि पहले चिराँद नगर का यह एक महल्ला था।

दिघवारा—इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। यहाँ थाना, हाईस्कूल, पोस्ट-आफिस और डाकबँगला हैं। दिघवारा थाने की जनसंख्या ३५,०३७ है, जिसमें ३१,७२६ हिन्दू और ३,३११ मुसलमान हैं।

परसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,१६,२०६ है, जिसमें १,०७,४१५ हिन्दू, ११,७६२ मुसलमान और २ अन्य जाति के लोग हैं। परसा में एक हाईस्कूल है।

वृक्ष की पूजा करती हैं। माँझी में थाना और रेलवे स्टेशन हैं। माँझी थाने की जनसंख्या ६६,५१२ है, जिसमें ६२,२६२ हिन्दू और ७,२५० मुसलमान हैं।

मिरजापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,१४,४७८ है। इसमें १,०४,६५८ हिन्दू, ६,७७० मुसलमान, ४६ ईसाई और ४ अन्य जाति के लोग हैं।

मुहम्मदपुर—छपरा से २३ मील पच्छिम यह गाँव व्यापार का केन्द्र है। यहाँ ८ शिवालय हैं।

रिवीलगंज—छपरा-बनारस रेलवे लाइन पर सरयू के किनारे छपरा से छः मील पच्छिम २५°४७' उत्तरीय अक्षांश और ८४°३६' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटा शहर है जहाँ की जनसंख्या ८,८१२ है। यहाँ का वर्तमान बाजार १७८८ ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी के चुंगी कलक्टर मि० रिवील का बसाया हुआ है। इसका पुराना नाम गोदना है। मि० रिवील की कोठी और कब्र इस समय भी यहाँ देखने में आती है। यहाँ एक अँगरेज सेनाध्यक्ष की भी कब्र है जो १८४६ ई० में मरा था।

कहते हैं कि गोदना नाम गौतम शब्द से बना है। यहाँ प्राचीन काल में सरयू के किनारे न्याय-शास्त्र के रचयिता गौतम ऋषि के आश्रम का होना बताया जाता है। मिथिला जाते समय रामचन्द्रजी के गौतम की स्त्री अहल्या के उद्धार करने की कथा प्रसिद्ध है। गौतम की यादगारी के लिये १८८३ ई० में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर रिवर्स थॉम्पसन से यहाँ एक संस्कृत-पाठशाला की नींव दिलायी गयी थी। इस पाठशाला का नाम थॉम्पसन-गौतम पाठशाला है। गौतम ऋषि का आश्रम दरभंगा के अहियारी नामक स्थान में भी बताया जाता है। कुछ लोगों का

अनुमान है कि कुसीनारा जाते समय गौतम बुद्ध यहाँ आये हों और शायद उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम गोदना पड़ गया हो।

रिवीलगंज के पास किसी समय गंगा-सरयू का संगम था। तभी से यह एक व्यापारिक स्थान हो गया है। इस समय यहाँ रेलवे स्टेशन, म्युनिसिपैलिटी, थाना, पोस्ट आफिस और अस्पताल हैं। यहाँ चैत और कातिक में मेला लगता है। रिवीलगंज थाने की जनसंख्या ३३,१४४ है, जिसमें ३०,२३५ हिन्दू और २,६०६ मुसलमान हैं।

सारन खास—माँझी से ८ कोस उत्तर यह गाँव एक बहुत पुराना स्थान है। यहाँ बहुत दूर तक पुराने किले, मकान, मंदिर, मस्जिद, दरगाह आदि के भग्नावशेष फैले हुए हैं। मस्जिद, दरगाह आदि हिन्दू मन्दिरों के सामान से बने मालूम पड़ते हैं। यहाँ ४१ फीट लम्बे एक काले पत्थर पर एक ओर नवग्रह की मूर्तियाँ हैं और दूसरी ओर एक लेख है। यहाँ से कई मील पच्छिम भीखावन और कपिया नाम के गाँव हैं जो बौद्ध काल के प्रसिद्ध स्थान मालूम पड़ते हैं।

सिमरिया—छपरा से ७ मील पच्छिम इस गाँव के पास पहले गंगा और सरयू का संगम था और लोग बहुत बड़ी संख्या में यहाँ स्नान करने आते थे। इस समय भी कार्तिक पूर्णिमा में यहाँ मेला लगता है। कहते हैं कि यहाँ ऋषि दत्तात्रेय का आश्रम था।

सिलहौरी—मिरजापुर थाने से २ मील उत्तर इस गाँव में शिलानाथ महादेव का मन्दिर है जहाँ साल में दो बार मेला लगता है।

सोनपुर—गंगा और गंडक के संगम पर सोनपुर एक

प्रसिद्ध स्थान है। इसी के पास मही नदी भी गंडक में मिलती है। कार्तिक पूर्णिमा को यहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है जो करीब एक महीना तक ठहरता है। बिहार का यह सबसे पुराना मेला है और इसकी गिनती दुनिया के बड़े-बड़े मेलों के अन्दर है। हिन्दू लोग इस स्थान को हरिहरक्षेत्र कहते हैं। पुराणों में यहाँ की गज और ग्राह की लड़ाई प्रसिद्ध है। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि परम प्राचीन काल में त्रिकूट पर्वत के चारों ओर एक बहुत बड़ा जलाशय था। उस जलाशय में एक विशालकाय ग्राह (ग्रोच) रहता था। एक दिन एक गज (हाथी) अपने झुंड के साथ वहाँ पानी पीने आया। ग्राह ने उस गज को पकड़ लिया। दोनों में बड़ी लड़ाई हुई। जब गज हारने लगा तो उसने भगवान हरि (विष्णु) की प्रार्थना की। हरि ने हर (महादेव) आदि देवों के साथ वहाँ पहुँचकर अपने सुदर्शन चक्र से गज की रक्षा की। तब से यह स्थान हरिहरक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसे चक्रतीर्थ भी कहते हैं। कुछ लोग गज और ग्राह की यह लड़ाई चम्पारण जिले के त्रिवेणी नामक स्थान में हुई बताते हैं। त्रिवेणी के पास जंगल और पहाड़ होने से यह वृत्तान्त यहीं के लिये अधिक लागू होता है। इस समय हरिहरक्षेत्र में जो मंदिर है उसमें हरि और हर की सम्मिलित मूर्ति है। पुराणों में लिखा है कि ग्राह पूर्व जन्म का हु हु नामक गंधर्व था जो अपनी स्त्रियों के साथ इस जलाशय में स्नान करने आया था। एक दिन उसने जलक्रीड़ा में देवल ऋषि का पाँव पकड़ लिया था जिसके शाप से वह ग्राह हो गया। गज भी पूर्व जन्म में पाण्डेय देश का इन्द्रद्युम्न नामक राजा था और अगस्त ऋषि के शाप से गज हो गया था। भगवान हरि के स्पर्श से गज और ग्राह दोनों का उद्धार हुआ।

माझी के किले के भग्नावशेष का स्थान, (सारन)
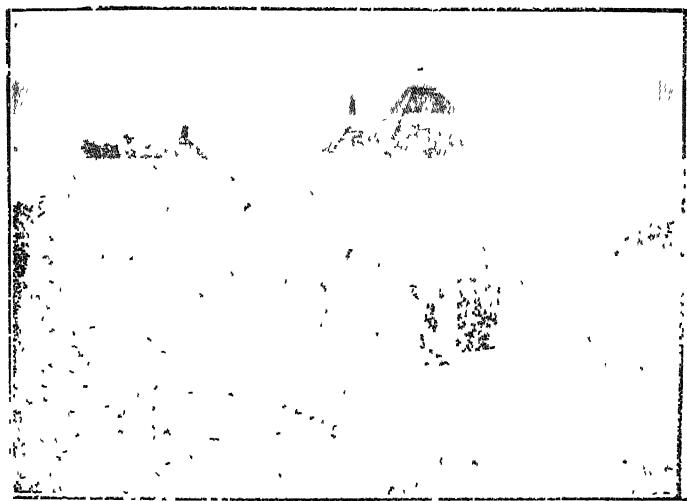
हरिहरनाथ का मंदिर, हरिहरक्षेत्र—सोनपुर (सारन)
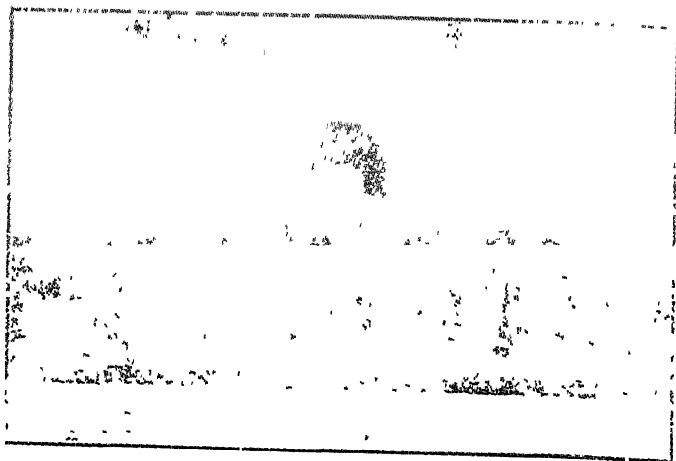
प्राचीन स्तूप, केसरिया (चम्पारण)
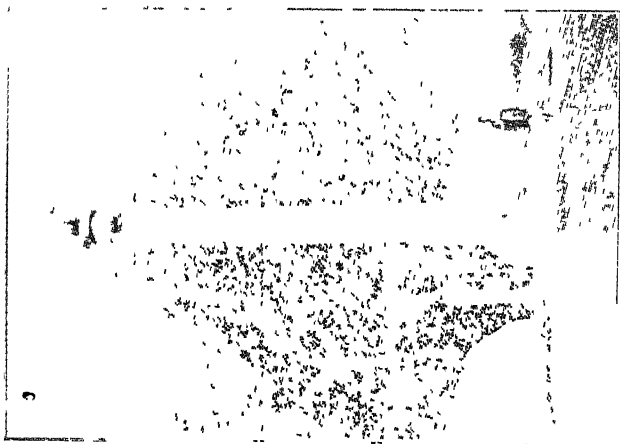
अशोक स्तम्भ, लौरियानन्दन गढ़ (चम्पारण)

सोनपुर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का मुख्य जंकशन है। यहाँ रेलवे का एक कारखाना भी है। सोनपुर स्टेशन का प्लैटफार्म दुनिया का सबसे बड़ा प्लैटफार्म समझा जाता है। यहाँ गंडक पर २,१७६ फीट लम्बा एक पुल है। इसमें रेलवे लाइन के दोनों ओर पैदल चलने का भी रास्ता है। इस पुल का उद्घाटन १८८७ ई० में वायसराय लार्ड डफरिन ने किया था।

सोनपुर में थाना, रजिस्ट्री आफिस और अस्पताल हैं। सोनपुर थाने की जनसंख्या ६२,२४२ है। इसमें ५६,३६६ हिन्दू, २,६६१ मुसलमान, १४७ ईसाई और ८ अन्य जाति के लोग हैं।

गोपालगंज सबडिविजन

यह सबडिविजन जिले के उत्तरीय भाग में २६°१२' और २६°३६' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°५४' और ८४°५५' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। यह सबडिविजन १८७५ ई० में कायम किया गया था। इसका क्षेत्रफल ७८८ वर्गमील और जनसंख्या ६,८८,४६६ है। इसके अन्दर कोई शहर नहीं है। गाँवों की संख्या १४१८ है। इसमें गोपालगंज, बरेली, बैकुंठपुर, मीरगंज, भोरे, कटेया और कुचैकोट, ये ७ थाने हैं।

गोपालगंज—यह स्थान २०°२८' उत्तरीय अक्षांश और ८४°२७' पूर्वीय देशान्तर पर गंडक नदी के किनारे है। इस नाम के सबडिविजन का यहाँ सदर दफ्तर है। यहाँ थाना, सब-रजिस्ट्री आफिस, हाई स्कूल और अस्पताल हैं। गोपालगंज थाने की जनसंख्या १,३०,१०५ है, जिसमें १,०५,६०६ हिन्दू, २४,४८६ मुसलमान और १० ईसाई हैं।

कटेया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७४,२१५ है, जिसमें ६६,६०६ हिन्दू और ७,३०६ मुसलमान हैं।

कल्याणपुर—"दे० हुसेपुर"

कुचैकोट—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८७,२०१ है, जिसमें ७६,३३६ हिन्दू, १०,८६२ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

जादोपुर—"दे० हथुआ"

थावे—यह बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जंकशन है। यहाँ हथुआ महाराज की कोठी और एक पेड़ के नीचे दुर्गास्थान है जहाँ चैत में मेला लगता है।

दिघवा-दुबौली—गोपालगंज से २५ मील दक्षिण-पूरब इस गाँव में और इसके आस-पास बहुत-से टील्हे हैं जो यहाँ किसी जमाने में चेरो लोगों का आधिपत्य होना प्रकट करते हैं। यहाँ ७६१—६२ ई० का एक ताम्रपत्र पाया गया है जो श्रावस्ती (बनारस) के राजा महेन्द्रपाल द्वारा पनियाक नामक एक गाँव दान दिये जाने के सम्बन्ध में लिखा गया था। सारन उस समय श्रावस्ती राज्य का पूर्वी भाग था।

बरौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७७,४८७ है, जिसमें ६६,७४३ हिन्दू, १०,७३८ मुसल-मान और ६ ईसाई हैं।

भोरे—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ९४,७२१ आदमी रहते हैं। इनमें ८६,५१२ हिन्दू, ८,२०४ मुसलमान और ५ ईसाई हैं।

मीरगंज—यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ एक बड़ा

बाजार, थाना, रजिस्ट्री आफिस, और युनियन बोर्ड हैं। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम हथुआ है। यह नाम पास के प्रसिद्ध स्थान हथुआ के नाम पर पड़ा है। मीरगंज थाने की जनसंख्या १,५०,२१२ है, जिसमें १,२३,६०२ हिन्दू, २६,५७७ मुसलमान और ३३ ईसाई हैं।

बैकुंठपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ७८,८६८ आदमी रहते हैं, जिनमें ६६,२६२ हिन्दू और ६,६०६ मुसलमान हैं।

हथुआ—हथुआ रेलवे स्टेशन से हथुआ गाँव करीब एक कोस है। यहाँ हथुआ राज की राजधानी, बाग, पुस्तकालय, हाईस्कूल और एक बड़ा अस्पताल है। राज का कुछ हिस्सा चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, शाहाबाद, पटना, दार्जिलिंग, कलकत्ता, गोरखपुर और बनारस जिले में भी है। राज का कुल क्षेत्रफल करीब ८०० वर्गमील है जिसमें से ६०० वर्गमील जमीन सारन जिले में ही है। राज की आमदनी १४ लाख रुपया सालाना से कुछ अधिक है। हथुआ के महाराज भूमिहार ब्राह्मण हैं यह राजवंश पहले हुसेपुर राजवंश के नाम से विख्यात था। मुसलमानों के भारत में आने के पहले से ही इस राजवंश का होना बताया जाता है। इस वंश के लोग १०० से भी अधिक पुश्तों से सारन में हैं। इस वंश में १०३ राजे हुए। ये लोग पहले सेन कहलाते थे। १६ वें राजा से सिंह की पदवी चली और ८३ वें से मल की। अब ८७ वें राजा से साही की पदवी चल रही है। ८६ वें राजा कल्याणमल को दिल्ली के बादशाह ने 'महाराजा' की उपाधि दी थी और ८७ वें राजा खेमकरनसाही को 'महाराजा बहादुर' की। इधर अँगरेजी सल्तनत के शुरू में इस वंश के फतहसाही बहुत

नामी आदमी हुए। इनके ठीक पहले जुबराजसाही और सरदार-साही ने भी अच्छा नाम हासिल किया था। जुबराजशाही ने बरहरिया के राजा काबुल मुहम्मद को परास्त कर सियाह परगना लिया था और सरदारसाही ने मझौली के राजा पर विजय प्राप्त की थी। फतहसाही ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधि-कारियों से सदा लड़ते रहे और उनका आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। पीछे इनके वंशज छत्रधारीसाही ने हथुआ में अपनी राजधानी बनायी। फतहसाही के वंशज ने गोरखपुर जिले के अन्दर तमकुही में अपना राज्य जमाया।

छत्रधारीसाही ने संथाल-विद्रोह और सिपाही-विद्रोह (स्वातन्त्र्य युद्ध) में अँगरेजी सरकार की सहायता की थी। छत्र-धारीसाही के बाद उनका पोता राजेन्द्रप्रतापसाही और इनके बाद इनका लड़का कृष्णप्रतापसाही राजा हुए। इन्होंने राज-प्रासाद और दरबार हॉल बनाया। इस दरबार-हॉल की गिनती हिन्दुस्तान के सबसे सुन्दर दरबार-हॉलों में है। इस समय इनके लड़के गुरु महादेव आश्रम प्रसादसाही महाराजा बहादुर हैं। हथुआ राज का बटवारा नहीं होता। खान्दान के बड़े लड़के को गद्दी मिलती है और दूसरे लड़कों को भरण-पोषण के लिये थोड़ी-सी जायदाद दी जाती है।

हुसेपुर—गोपालगंज सबडिविजन के उत्तर-पच्छिम भाग में झरही नदी के किनारे यह एक गाँव है। हथुआ महाराज की पहले यहीं राजधानी थी। किले के भग्नावशेष अब टीलहों के रूप में मौजूद हैं। इस वंश के ८६ वें राजा कल्याणमल के नाम पर कल्याणपुर गाँव और कल्याणपुर कुआरी परगना का नाम पड़ा। कल्याणपुर में कल्याणमल के किले का चिह्न अब भी देखने में आता है।

सीवान सबडिविजन

यह सबडिविजन २५°५६' और २६°२२' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°०' और ८४°४७' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। यह सबडिविजन १८४८ ई० में कायम किया गया था। इसका क्षेत्रफल ८३८ वर्गमील और जनसंख्या ८,२४,८५३ है। इसमें सीवान एक शहर और १,३८५ गाँव हैं। इसके अन्दर सीवान, मैरवा, बरहरिया, गुठनी, दरौली, रघुनाथपुर, सिसवन, महाराजगंज और बसन्तपुर ये ६ थाने हैं।

सीवान—यह शहर दाहा नदी के किनारे २६°१३' उत्तरीय अक्षांश और ८४°२१' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यहाँ से दो रेलवे लाइन फूटकर गोरखपुर में जा मिली है। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ ११६०२ ई० से एक ईसाई मिशन कायम है। यहाँ की जनसंख्या १४,२१५ है। सीवान को लोग अलीगंज सीवान भी कहते हैं। सीवान में मिट्टी, पीतल, काँसा, फूल आदि के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं। डा० होय ने सीवान को कुसीनारा समझा था जहाँ बुद्धदेव की मृत्यु हुई थी। वर्तमान पपौर को पावा समझकर उसने बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार ठीक मान लिया था कि इसी पपौर होकर बुद्धदेव कुसीनारा को गये थे। लेकिन, अब लोग इसको कुसीनारा नहीं मानते। सीवान में कई टील्हे हैं। एक टील्हे को कुछ लोग बौद्ध काल के राजा जगन्न के किले का भग्नावशेष समझते हैं। सीवान थाने की जनसंख्या १,८०,०६८ है, जिसमें १,४०,११८ हिन्दू, ३६,८७५ मुसलमान और १०५ ईसाई हैं।

अमरपुर—दरौली से २ मील पच्छिम इस गाँव में एक

पुरानी सुन्दर मस्जिद है। कहते हैं कि यह शाहजहाँ के वक्त में अमरसिंह की निगरानी में बनायी गयी थी।

अलीगंज सीवान—"दे० सीवान"

गुठनी—गंडकी नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ पहले गुड़ और चीनी बहुतायत से बनती थी और दूर-दूर स्थानों में भेजी जाती थी; लेकिन वर्तमान मिलों की प्रतिद्वन्द्विता में यहाँ का काम बहुत घट गया है। गुठनी में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३५,४६० है, जिसमें ३३,२४८ हिन्दू, २,२०८ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

दरौली—छपरा-गुठनी सड़क पर सरयू नदी के किनारे इस गाँव में थाना, सब-रजिस्ट्री आफिस और स्पताल हैं। इस थाने की जनसख्या १,००,२७७ है, जिसमें ९२,९६१ हिन्दू, ७,३११ मुसलमान और ५ ईसाई हैं।

परौर—डा० होय ने इस स्थान को बौद्ध साहित्य में वर्णित पावापुर माना है। लिखा है कि बुद्ध भगवान ने इसी ग्राम के कुंड नामक सोनार के यहाँ सूकर का मांस या सूकर नामक कंद खाया था जिससे उन्हें पेट में दर्द हुआ और वे कुसीनारा जाकर मरे।

बरहरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७१,७३० है, जिसमें ५१,६३२ हिन्दू, २०,०९४ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

बसनौली गांगर—"दे० महाराजगंज"

बसन्तपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,६७,७३२ है, जिसमें १,४५,४०२ हिन्दू, २२,३२० मुसलमान और १० ईसाई हैं।

महाराजगंज—जिले के अन्दर व्यापार का यह एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ का व्यापार बहुत दूर-दूर स्थानों से होता है। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन से एक शाखा लाइन इस स्थान को गयी है। यहाँ थाना, हाईस्कूल, डाक और तारघर, सब-रजिस्ट्री आफिस और अस्पताल हैं। महाराजगंज थाने की जनसंख्या १,०७,२५१ है, जिसमें ९५,५६३ हिन्दू, ११,६७६ मुसलमान और ६ ईसाई हैं।

मैरवा—सीवान से १२ मील पच्छिम जिले की सीमा के पास इस गाँव में एक ब्रह्मस्थान और चननिया अहीरिन की डीह है जिन्हें लोग पूजते हैं। यहाँ थाना और अस्पताल भी हैं। इस थाने में ६८,५२४ आदमी रहते हैं, जिनमें ६२,६२६ हिन्दू और ५,८९५ मुसलमान हैं।

रघुनाथपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ५१,९८७ आदमी रहते हैं। इनमें ४६,१०३ हिन्दू और ५,८८४ मुसलमान हैं।

लकड़ी दरगाह—सीवान से १५ मील उत्तर इस गाँव में पटना के पीर शाह अर्जन की दरगाह है। इस दरगाह में लकड़ी का काम सबसे मुख्य है। इस पीर ने बादशाह औरंगजेब की दी हुई जागीर से यहाँ खानका कायम किया जिसकी आमदनी से दरगाह का खर्च चलता है।

गंगापुर सिसवन—सीवान से २१ मील दक्षिण इस गाँव में एक बड़ा बाजार, थाना, डाकबँगला तथा डाक और तारघर हैं। इस थाने की जनसंख्या ४०,४७४ है, जिसमें ३६,०१३ हिन्दू और ४,४६१ मुसलमान हैं।

हसनपुरा—सीवान से १२ मील दक्षिण धनई नदी के किनारे यह एक गाँव है, जिसे अरब से यहाँ आये हुए एक

पीर मकदुम सईद हसन चिश्ती ने बसाया था। दिल्ली के बादशाह की दी हुई जागीर से इन्होंने यहाँ खानका कायम किया। इस गाँव में एक बड़ी मस्जिद और पीर की दरगाह है। दरगाह के सामने विष्णु की एक मूर्ति है जिसे मुसलमान शैतान समझते हैं। और कहते हैं कि पीर मकदुम ने इसे पत्थर बना दिया था। यह मूर्ति सातवीं सदी की मालूम पड़ती है।

सारन जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू जातियों की जनसंख्या
(सन् १९३१)

ग्वाला	३,३२,६०८	कुम्हार	३४,५०५
राजपूत	२,५१,३४८	मल्लाह	२२,६५७
ब्राह्मण	१,७६,८७५	धोबी	२०,८९९
कोयरी	१,६८,०६०	धानुक	१९,६८६
चमार	१,४०,७६३	बरही	१६,५७१
कुरमी	१,०८,५१२	कहार	११,२१२
जोलाहा	९९,३१०	मुसहर	७,७०२
भूमिहार ब्राह्मण	९५,४२२	ताँनी	७,५८८
दुसाध	८४,४६०	डोम	७,४५०
काँदू	८०,९४२	माली	६,०३०
तेली	७०,४१५	पासी	५,३३८
बढ़ई	५०,११०	बनिया	३,७३४
कायस्थ	३९,४८७	हलालखोर	२,८९८
हजाम	३५,७९४	नट	१,४४९

चम्पारण

स्थिति, सीमा और विस्तार

चम्पारण जिला बिहार प्रान्त के उत्तर-पश्चिम कोने पर २६°१६' और २७°३१' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°५०' और ८५°१८' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इस जिले का सदर आफिस मोतिहारी है।

इस जिले के उत्तर और उत्तर-पूरब में नेपाल, दक्षिण और दक्षिण-पूरब में मुजफ्फरपुर जिला, दक्षिण-पश्चिम में सारन जिला तथा उत्तर-पश्चिम में युक्तप्रांत का गोरखपुर जिला है। उत्तर की ओर कुछ दूर तक गण्डक और पंचनद चम्पारण की प्राकृतिक सीमा का काम करती हैं। जहाँ नदियाँ सीमा का काम नहीं करतीं वहाँ खाई और स्तम्भ से सीमा का काम लिया गया है। उत्तर की ओर बहुत दूर तक सोमेश्वर पर्वतमाला जिले की सीमा बनाती है। उत्तर-पूरब की ओर पसिया और दक्षिण-पूरब की ओर लाल-बकया और बागमती नदियाँ प्राकृतिक सीमा का काम करती हैं। पश्चिम की ओर गण्डक नदी की पुरानी और नयी धारा इस जिले को गोरखपुर और सारन जिले से अलग करती है।

यह जिला बहुत कुछ समानान्तर चतुर्भुज के रूप में है। उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्षिण-पूरब तक इसकी लम्बाई करीब १०० मील है। उत्तर-पूरब कोने पर इसकी चौड़ाई २० मील

और दक्षिण-पूरब कोने पर ४० मील है। इसका रकबा ३,५३१ वर्गमील है। तिरहुत कमिश्नरी का यह सबसे बड़ा जिला है।

प्राकृतिक बनावट

चम्पारण जिला चार प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है। पहला भाग जिले के बिलकुल उत्तर में हिमालय की बाहर निकली हुई कुछ श्रेणियाँ हैं जो सोमेश्वर और दून पर्वतमाला के नाम से प्रसिद्ध हैं और जहाँ जंगल ही जंगल हैं। दूसरा भाग इन पर्वतों की तराइयाँ है। शेष भाग समतल जमीन है जिसे छोटी गंडक दो भागों में बाँटती है। उत्तरी भाग कुछ नीचा है और दक्षिणी भाग कुछ ऊँचा।

पहाड़—उत्तर की ओर दून और सोमेश्वर की पहाड़ियाँ करीब ३६४ वर्गमील में फैली हुई हैं। सोमेश्वर की पहाड़ी उस लम्बी पर्वतमाला का एक भाग है जो भिन्न-भिन्न नामों से लगातार समूचे नेपाल की लम्बाई तक फैली हुई है। चम्पारण जिले में इस पर्वतमाला की लम्बाई करीब ४६ मील और औसत ऊँचाई १,५०० फीट है। सोमेश्वर किले के पास इसकी ऊँचाई समुद्रतल से २,८८४ फीट है जहाँ से धौलागिरि, गोसाँयथान और गौरीशंकर की चोटियाँ साफ नजर आती हैं। इस पर्वतमाला की पूर्वी सीमा पर भिखनाठोरी नामक घाटी है। पर्वतमाला की दूसरी घाटियाँ कापन और हरहा हैं।

दून या रामनगर दून नामक पर्वतमाला सोमेश्वर पर्वतमाला से सटे हुए उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूरब की ओर २० मील तक फैली हुई है। इसकी चौड़ाई ४ से ५ मील तक है। इन दोनों पर्वतमालाओं के बीच की अधित्यका दून घाटी कहलाती है।

जंगल—इस जिले में जंगल अब केवल उत्तर भाग में बगहा और शिकारपुर थाने के अन्दर रह गया है। यह जंगल करीब ४२७ वर्गमील में फैला हुआ है; लेकिन हाल में बहुत-से जंगल कट गये हैं। जंगल रामनगर और बेतिया राज्य के अन्दर पड़ते हैं। सन १९३५-३६ में ६५,१८४ एकड़ अर्थात् करीब १०२ वर्गमील जंगल सरकार द्वारा संरक्षित थे। इसे प्रोटेक्टेड फारेस्ट कहते हैं।

जलाशय—चम्पारण जिले की एक प्राकृतिक विशेषता यह है कि जिले के मध्यभाग में बहुत दूर तक लगातार ४३ जलाशय हैं। इनमें लालसरैया, मुगाँव, तुरकौलिया, मोतिहारी, पिपरा, सिरहा, नवादा और तेतरिया के जलाशय बहुत बड़े हैं। कुल जलाशय १३९ वर्गमील में फैले हुए हैं। जहाँ इस समय ये जलाशय हैं वहाँ पहले गण्डक नदी बहती थी।

नदियाँ

साधारणतः जिले के अन्दर नदियों का बहाव पहले उत्तर से दक्षिण और फिर उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूरब की ओर है। जिले की मुख्य नदियाँ गण्डक, छोटी गण्डक, लालबेगी, धनौती, बागमती, उरिया, धोरम, पंडई और मसान हैं।

बड़ी गण्डक—गण्डक या बड़ी गण्डक नदी नेपाल के मध्य भाग से निकली है। इस स्थान को सप्तगण्डकी कहते हैं; क्योंकि यहाँ सात धाराओं के मेल से गण्डक नदी बनी हुई है। यह देवघाट पहाड़ी को पार कर नेपाल के अन्दर तीस मील चलती हुई सोमेश्वर पहाड़ी के पास पहुँचती है। त्रिवेणी के पास यह इस पहाड़ी को छोड़कर समतल मैदान में आती है। यहाँ

पंचनद और सोनाह नदियाँ इससे मिली हैं, इसीसे इस स्थान का नाम त्रिवेणी पड़ा है। यहाँ से यह नदी दक्षिण-पूरब की ओर बहकर जिले की लगभग पूरी लम्बाई तक इसकी सीमा का काम करती है। प्रारम्भ में कुछ दूर तक यह चम्पारण जिले को नेपाल से और फिर गोरखपुर जिले से अलग करती है। सत्तार घाट के पास इसकी दो धाराएँ हो गयी हैं जो पिपरा घाट में मिल गयी हैं। कुछ दूर के बाद यह चम्पारण जिले को सारन से अलग करती हुई ताजपुर के पास चम्पारण को छोड़ देती है। इस जिले के अन्दर गोहुआ, मनोर और भवसा नदियाँ इससे मिलती हैं। रामनगर दून से छोटी-छोटी धाराएँ निकलकर सम्मिलित रूप से बगहा के पास राजबटिया में इससे मिल गयी हैं। इस नदी में छोटी-छोटी नावें नेपाल तक जाती हैं। इसका पुराना नाम सदानीरा, नारायणी और शालग्रामी है। इसमें शालग्राम पत्थर बहुत मिलते हैं।

छोटी गण्डक या सिकरान—इस जिले में गण्डक के बाद मुख्य नदी छोटी गण्डक है। यह सोमेश्वर पहाड़ी के पश्चिमी भाग से निकलकर चम्पारण के मध्य भाग में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करती है। उत्तर की ओर से बहुत-सी छोटी-छोटी पहाड़ी धाराएँ इस नदी में आकर मिली हैं। शुरू में यह नदी हरहा कहलाती है। उसके बाद इसका नाम बूढ़ी गण्डक या छोटी गण्डक पड़ गया है; पर साधारण तौर पर स्थानीय लोग इसे सिकरान कहते हैं।

लालबेगी और धनौती—सिकरान और बड़ी गण्डक के बीच मुख्य नदियाँ केवल लालबेगी और धनौती हैं। लालबेगी गोविन्दगंज के उत्तर गण्डक से मिल जाती है। धनौती पहले

लालबेगी की ही शाखा थी ; लेकिन अब इसके ऊपरी हिस्से के मिट्टी आदि से भर जाने के कारण यह वेगवती नहीं रह गयी है। यह पिपरा के पास भिकरान से मिलती है। इसके किनारे का भूभाग बहुत अस्वास्थ्यकर समझा जाता है।

बागमती—यह नदी नेपाल से निकलकर इस जिले के पूरब भाग में करीब ३५ मील तक सीमा का काम करती है। इसकी धारा बहुत तेज है और वर्षा होने पर इसमें खूब बाढ़ आ जाती है। छोटी छोटी नावें इसमें चल सकती हैं। अदौरी के पास लालबकया नदी इससे मिली है।

उरिया—यह नदी नेपाल से निकलकर १२ मील तक नेपाल और चम्पारण के बीच सीमा का काम करती है। इसके बाद यह जिले के अन्दर १४ मील दक्षिण बहकर मैनपुर के पास धोरम नदी से मिल जाती है। यह सम्मिलित धारा अहिरौलिया से तीन मील पश्चिम छोटी गण्डक से मिली है।

धोरम—धोरम नदी नेपाल की चुरियाघाटी पहाड़ी से निकलती है। यह पहले पश्चिम की ओर और फिर दक्षिण की ओर बहकर मंडई नदी से मिलती है। यह सम्मिलित धारा अन्त में मैनपुर के पास उरिया से मिल जाती है।

मंडई—यह नदी सोमेश्वर पहाड़ी के उत्तर से निकलकर गिधनाठोरी के पास जिले में प्रवेश करती है। कुछ दूर तक पश्चिम की ओर बहकर यह फिर दक्षिण-पूरब की ओर मुड़ जाती है और अन्त में शिकारपुर से २ मील पूरब धोरम नदी में मिल जाती है।

मसान—यह नदी सोमेश्वर पहाड़ी से सोमेश्वर किला के पास निकलती है। पहले यह दक्षिण की ओर बहकर पीछे बरबोरो के पास पूरब की ओर बहने लगती है। इसमें १५०

वर्गमील की अर्थात् लगभग समूचे दून की वर्षा का पानी आता है। वर्षा के दिनों में इसमें खूब बाढ़ आ जाती है ; मगर वर्षा के बाद ही यह प्रायः सूख जाती है।

अन्य नदियाँ—अन्य नदियों में भबसा, मनोर, रोहुआ, पंचनद और सोनाह नामक नदियाँ गण्डक की सहायक नदियाँ हैं जिनका जिक्र ऊपर हो चुका है। हरबोरा, बलोरा और रामरेखा नामक धाराएँ जिले के उत्तर भाग में बहती हैं। दक्षिण-पूरब की ओर एक बड़ी नदी तिलारी या तेलावे है। यह कभी सूखती नहीं है। गध, पूसा और तीयर भी छोटी-छोटी धाराएँ हैं। तीयर नदी से तीयर नामक नहर में पानी जाता है।

जलवायु और स्वास्थ्य

वर्षा की अधिकता, पहाड़ की निकटता तथा नदियों के धारा-परिवर्तन से बने हुए अनेकों जलाशय के कारण इस जिले की जलवायु पूर्णिया जिले को छोड़ बिहार के और जिलों से बहुत खराब समझी जाती है। रामनगर के पास की तथा बगहा और शिकारपुर थाने की तराई की जलवायु सबसे खराब है। बरसात के बाद यहाँ की हालत बहुत ही बुरी हो जाती है और यहाँ आम तौर से मलेरिया फैल जाता है। इस समय यहाँ उत्तरी हवा बहती है। पच्छिम बिहार में सबसे अधिक वर्षा इसी जिले में होती है। जिले के उत्तर पहाड़ी भाग में वर्षा और भी अधिक होती है। जिले के अन्दर साल में करीब ५५ इंच पानी बरसता है। यहाँ जाड़ा भी अधिक पड़ता है। दिन में कभी-कभी बहुत देर तक कुहासा लगा रहता है। गर्मी के दिनों में यहाँ गर्मी अत्यधिक नहीं पड़ती। साल में औसत गर्मी

करीब ७६'' होती है। बैसाख-जेठ में यहाँ की अधिक से अधिक औसत गर्मी करीब ६७° होती है। धीरे-धीरे जंगलों के कटते जाने से इस जिले की जलवायु अच्छी होती जाती है।

इस जिले के लोगों की तन्दुरुस्ती साधारणतः अच्छी नहीं रहती। बहुत-से लोग पुराने रोगों से ग्रस्त रहते हैं। मलेरिया बुखार यहाँ की आम बीमारी है। रक्सौल, शिकारपुर, रामनगर और बगहा थाने में मलेरिया अधिक हुआ करता है। मलेरिया के बाद अधिक लोग हैजा और प्लेग से मरते हैं। विहार प्रान्त में बहरे-गूँगों की सबसे अधिक संख्या चम्पारण जिले में ही है। १६३१ ई० में यहाँ ३३५९ बहरे-गूँगे थे। जिले के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम भाग में बहरे-गूँगे अधिक हैं। सिकरान या बूढ़ी गंडक के किनारे ऐसे रोगी अधिक पाये जाते हैं। धनौती नदी तथा और भी कई धाराएँ ऐसी हैं जिनका जल पीने से घेघा होने का डर रहता है। यहाँ पागलों, अंधों और कोढ़ियों की संख्या भारत-भारत के कई जिलों से कम है। सन् १६३१ में यहाँ अंधों की संख्या २,४३७, कोढ़ियों की संख्या ६४६ और पागलों की संख्या २८७ थी। सन् १६३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २५ अस्पताल थे। बेतिया में एक जनाना अस्पताल है।

जानवर

बगहा और शिकारपुर थाने में चारे की अधिकता के कारण यहाँ दक्षिण के थानों से तथा पास के सारन, मुजफ्फरपुर और गोरखपुर जिलों से मवेशी बहुतायत से आते हैं। रेलवे की कमी के कारण गाड़ी खींचनेवाले और बोझा ढोने-

वाले जानवरों की संख्या यहाँ अधिक है। गंगा के दक्षिण भाग की अपेक्षा यहाँ भैंस कम हैं। यहाँ की मिट्टी हलकी होने के कारण भैंस हल में नहीं जोते जाते। भेड़ जिले के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं। बकरियाँ हर जगह मिलती हैं। धोबी लोग गधा पालते हैं। मोतिहारी और बेतिया में पशु-औषधालय हैं। मधुवन और बेतिया में जानवरों की खरीद-बिक्री के लिये मेले लगते हैं।

जिले के उत्तरी भाग में, जहाँ जंगल अधिक हैं, जंगली जानवर पाये जाते हैं। जंगलों के कटते जाने के कारण अब जंगली जानवरों की संख्या घटती जा रही है। जंगली जानवरों में बाघ, चीते, भालू, हरिण, जंगली सूअर, भेड़िया, नील गाय आदि मुख्य हैं। जलचर जीवों में घड़ियाल और बोच खतरनाक हैं।

इतिहास

कहा जाता है कि प्राचीन काल में चम्पारण एक घना जंगल था जहाँ ऋषि-मुनि गम्भीर अध्ययन, चिन्तन और तपस्या में समय व्यतीत करते थे। जिले के नाम से भी प्रकट है कि यह स्थान चम्पा नामक वृक्ष का अरण्य अर्थात् बन था। विष्णु-पुराण तथा अन्य कई पुराणों में लिखा है कि शालग्रामी या नारायणी (गंडक) नदी के किनारे चम्पकारण्य फैला हुआ था। जिले के भिन्न-भिन्न भागों का सम्बन्ध भिन्न-भिन्न प्राचीन ऋषियों से बताया जाता है। कहते हैं कि दूहा-सूहा का नाम पुराण-प्रसिद्ध राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ दुरानी और सुरानी के नाम पर पड़ा है। कहा जाता है, उत्तानपाद के पुत्र सुप्रसिद्ध ध्रुव यहीं किसी स्थान पर तपस्या करते

थे। परन्तु, इस सम्बन्ध में कुछ पुराणों के भिन्न मत हैं। इसी प्रकार चांकी, देवराज, मांदो, सुगाँव और जम्मौली आदि तप्पों के नाम भी भिन्न-भिन्न ऋषियों के नाम पर पड़े बताये जाते हैं। वर्तमान संग्रामपुर गाँव के पास ऋषि बाल्मीकि का स्थान बताया जाता है। कहते हैं, यहाँ रामचन्द्रजी के साथ लवकुश का संग्राम हुआ था; इसी कारण इस स्थान का नाम संग्रामपुर पड़ा। लेकिन, बाल्मीकि का स्थान इस प्रान्त में दरभंगा आदि और भी कई जिलों में तथा दूसरे प्रान्तों में भी बताया जाता है। इसी तरह महाभारत के प्रसिद्ध राजा विराट की राजधानी, रामनगर से ६-७ मील पश्चिम बैराठी नामक गाँव के पास बतायी जाती है। परन्तु, यह भी एक अनुमान ही है; क्योंकि बिहार प्रांत के अन्दर उत्तर भागलपुर और पूर्णिया जिले में भी विराट का स्थान बताया जाता है तथा कुछ लोग जयपुर और मथुरा के पास भी विराट-नगर बताते हैं।

इन किम्वदन्तियों के अलावे वैदिक साहित्य से भी पता चलता है कि परम प्राचीन काल से ही यह आर्यों का निवास-स्थान रहा है। पंजाब से चले हुए विदेहवंशी आर्य लोग मिथिला में प्रवेश करने के पहले गंडक के किनारे बसे। इन लोगों ने मिथिला में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। कुछ समय के बाद यहाँ जनक नामक एक परम प्रतापी और तत्व-ज्ञानी राजा हुए। कहते हैं, उनकी राजधानी जानकीगढ़ में थी जो लौरिया नन्दनगढ़ से ११ मील उत्तर है।

विदेह राजा के बाद ऐतिहासिक युग में इस भूभाग पर वृज्जियों का गणतन्त्र राज्य कायम हुआ जिसकी राजधानी वैशाली (मुजफ्फरपुर जिला) हुई। कुछ लोगों का कहना है कि मोतिहारी, केसरिया, सिमरौंव और लौरिया नन्दनगढ़ में वृज्जियों-

की विभिन्न जातियों की राजधानियाँ थीं। नन्दनगढ़ में मिट्टी के बहुत-से टील्हे देखने में आते हैं जिनका सम्बन्ध वृज्जियों से बताया जाता है। अनुमान किया जाता है कि ये टील्हे वृज्जिवंश के शासकों की समाधि पर बने हैं। इनमें से एक टील्हे पर चाँदी का एक सिक्का पाया गया है जो ईसा से १,००० वर्ष पहले का है। यह निश्चित-सा माना जाता है कि ये टील्हे कम-से-कम बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और प्रचार के पहले के हैं। इस जिले के कुछ स्थानों का सम्बन्ध बुद्ध के जीवन से बताया जाता है। यहाँ गंडक के पूरब विहार नामक एक गाँव है। कहते हैं कि जब भगवान बुद्ध अपने सारथि चण्डक के साथ पिता का घर छोड़कर चल पड़े थे तो इसी स्थान पर उन्होंने अपने राजकीय वस्त्राभूषणों को उतारकर सिर मुड़ा सन्यास धारण किया था और अपने सारथि को घर वापस किया था। इस स्थान के नाम से प्रकट है कि यहाँ पहले बौद्ध विहार था। वृज्जियों की प्रार्थना पर बौद्धत्व प्राप्त करने के बाद बुद्धदेव फिर यहाँ आये थे। यहाँ उन्होंने बहुत-से शिष्य बनाये। मरणकाल में अन्तिम बार वैशाली से कुशीनगर जाते समय बुद्ध भगवान चम्पारण जिला होकर ही गये थे। लौरिया नंदनगढ़ या उसी के कहीं आसपास में उनकी चिता के भस्म पर स्तूप बनाया गया था।

छठी सदी में इस भूभाग पर मगध का आधिपत्य छा जाने पर भी वृज्जियों का संघ-शासन बहुत दिनों तक चलता रहा। ईसा के करीब चार सौ बरस पूर्व यह भाग मौर्य्य साम्राज्य के अन्दर आया। चम्पारण जिले के अन्दर इस वंश के स्मृति-चिह्न अशोक-स्तम्भों के रूप में अब भी मौजूद हैं। अपने शासन के २१वें वर्ष में जब अशोक भगवान बुद्ध के पवित्र

स्थानों का दर्शन करने निकले थे तभी उन्होंने इन स्तम्भों को बनवाया था। भगवान बुद्ध अपने अंतकाल में जिस रास्ते होकर कुसीनगर गये थे उसी रास्ते से अशोक ने यात्रा की थी और उसी रास्ते पर चम्पारण जिले में उन्होंने लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा में स्तम्भ तथा केसरिया में स्तूप बनवाये थे, जो आज तक कायम हैं। उस समय नेपाल भी मौर्य साम्राज्य के अंदर था। पाटलिपुत्र से नेपाल तक जानेवाली शाही सड़क वैशाली के बाद चम्पारण जिले में केसरिया, लौरिया, अरेराज, बेतिया, लौरिया नंदनगढ़, जानकीगढ़ और रामपुरवा होकर गयी थी और भिखनाठोरी घाटी होकर नेपाल की तराई में प्रवेश कर गयी थी। इस जिले के अन्दर अन्य बौद्ध-चिह्नों में केसरिया से दो मील दक्षिण-पश्चिम एक पुराना स्तूप है। केसरिया से पिपरा जानेवाली सड़क पर सागरडीह नामक एक टील्हा है जो एक बौद्धकालीन स्तूप का भग्नावशेष समझा जाता है।

चीनी यात्री उपर्युक्त शाही सड़क बौद्ध-यात्रियों की भी सड़क थी। चीनी यात्री फाहियान ने कुछ दूर तक इसी सड़क से यात्रा की थी। करीब ४०० ई० में उसने उस स्थान को देखा जहाँ बुद्ध ने राजसी वस्त्राभूषण उतार संन्यासी का वेष धारण किया था। इसके पश्चात् वह अशोक-स्तूप देखने गया और वहाँ से कुसीनारा जाकर वैशाली लौटा। इसके बाद इस भूभाग का जिक्र छठी सदी के आरम्भ में आये हुए दूसरे चीनी यात्री सुंगयून के यात्राविवरण में मिलता है। तीसरे चीनी यात्री ख्वन्-च्वाङ (हुएनसांग) ने तो यहाँ का विस्तृत विवरण लिखा है। वह सातवीं सदी के मध्य में लुम्बिनी वन से कुसीनारा जाते समय चम्पारण गया था। पहले-पहल उसने इस जिले में बुद्ध के

संन्यास ग्रहण करने का स्थान देखा जहाँ पीछे अशोक ने स्तूप बनवाया था। उसने लिखा है कि यह स्थान राम के राज्य के अन्दर था, जो बहुत वर्षों से उजाड़ पड़ गया था और जिसके शहर बीरान हो गये थे। यहाँ से वह दक्षिण-पूरब की ओर उजाड़ स्थान होकर बुद्ध की चिता के भस्म पर बने हुए स्तूप के पास गया जहाँ एक बौद्ध विहार और अशोक-निर्मित एक दूसरा स्तूप था। यह अशोक-स्तूप भग्नावस्था में भी करीब १०० फीट ऊँचा था। यहाँ से वह उत्तर-पूरब की ओर घने जंगल होकर कुसीनारा की ओर गया।

जिस समय ह्वन्त्वाङ् भारत में भ्रमण कर रहा था उस समय तिरहुत में हर्षवर्द्धन या शिलादित्य का आधिपत्य था। ६४८ ई० में उसके मरने पर उसका एक मंत्री अर्जुन गद्दी पर बैठा। उस समय चीन के सम्राट ने यहाँ एक धार्मिक मिशन भेजा था। अर्जुन ने उसपर हमला कर उसके सदस्यों को मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। लेकिन, संयोग से राजदूत वांग-ह्यून्-चे भागकर नेपाल चला गया। यह खबर सुनकर तिब्बत के राजा (जिसका विवाह चीन की राजकुमारी से हुआ था) तथा नेपाल के राजा ने यहाँ एक बहुत बड़ी सेना भेजी जिसने तिरहुत के मुख्य शहरों को तहस-नहस कर हजारों लोगों को मार डाला। १२ हजार कैदियों और ३० हजार मवेशियों के साथ अर्जुन सपरिवार पकड़कर ले जाया गया। ६५७ ई० में शाही हुक्म से वांग-ह्यून्-चे भगवान बुद्ध के पवित्र स्थानों में चढ़ावा चढ़ाने के लिये फिर यहाँ पहुँचा। सम्भवतः वह भिखनाठोरी घाटी होकर उस पुरानी शाही सड़क से ही, जो चम्पारण होकर गयी है, तीर्थस्थानों को गया था।

हर्षवर्द्धन के मरने के बाद देश छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट

गया था। चम्पारण जिले में भी स्थानीय सरदार लोग स्वतन्त्र बन बैठे थे। ९ वीं सदी के आरम्भ में पालवंश का संस्थापक गोपाल बंगाल-बिहार का शासक हुआ। १० वीं सदी में जेजाभुक्ति के चंदेल राजा यशोवर्मन ने मिथिला पर चढ़ाई कर उसे जीता। ११ वीं सदी के आरम्भ में तिरहुत चेदि (वर्तमान मध्यप्रान्त) के कलचुरी राजाओं के अधिकार में चला गया। १०१६ ई० में चेदि के एक महत्वाकांक्षी राजा गांगेयदेव ने, जिसने समस्त उत्तर भारत को जीतने की इच्छा की थी, तिरहुत पर कब्जा जमाया था। ११ वीं सदी के अन्त में सेन राजाओं का प्रादुर्भाव हुआ। तिरहुत सेन राज्य का उत्तर-पश्चिम भाग बना।

मुसलमानी राज्य—१३ वीं सदी के आरम्भ में बिहार में मुसलमानों का आधिपत्य छा गया। लेकिन, गंगा के उत्तर भाग में उनका आधिपत्य जमने में कुछ देर लगी। बंगाल के नवाब गियासुद्दीन इवाज (१२११-१२२६) के आक्रमण करने पर तिरहुत के राजा ने मजबूर होकर मुसलमानों को कर देना स्वीकार किया। इस भूभाग पर मुसलमानों की विजय हुई सही, लेकिन उनकी जड़ नहीं जमी; क्योंकि हम देखते हैं कि वर्तमान चम्पारण जिले के उत्तर-पूरब कोने पर इसी वक्त एक हिन्दू राजवंश कायम हुआ जो एक सदी से भी अधिक दिनों तक इस भूभाग पर शासन करता रहा। सन् १३२३ में जाकर तुगलक शाह ने आक्रमण कर इस राजवंश की भी स्वतन्त्रता छीनी।

सिमराँव-राजवंश—कहते हैं कि सिमराँव-राजवंश की स्थापना करनेवाले नान्यदेव कर्नाटक से आकर यहाँ बसे थे। इन्होंने समूचे मिथिला और नेपाल को जीतकर अपना राज्य कायम किया था। पीछे इनके एक लड़के नेपाल के, और दूसरे

जिनका नाम गंगादेव था, मिथिला के शासक हुए। गंगादेव ने ही पहले-पहल लगान के काम के लिये परगना कायम किया था। गंगादेव के बाद उसका लड़का नरसिंहदेव राजा हुआ, जिसके समय में नेपाल मिथिला से अलग हो गया। नरसिंह-देव का लड़का रामसिंह एक धार्मिक व्यक्ति था। इसके समय में वेद के कई प्रसिद्ध भाष्य तैयार हुए, प्रजा में धर्म का प्रचार हुआ और शासन में भी कई तरह के सुधार हुए। गाँवों में चौकीदारों और पटवारियों की नियुक्ति हुई। रामसिंह देव का लड़का शक्तिसिंह देव और उसका लड़का हरसिंह देव हुआ। यह इस वंश का अन्तिम और प्रसिद्ध राजा था। १३२३ में दिल्ली के बादशाह तुगलक शाह ने तिरहुत को अपने कब्जे में कर लिया। हरसिंह देव भागकर नेपाल चला गया जहाँ उसने एक छोटा-सा राज्य कायम किया। सिमरौंव में इस राजवंश की राजधानी के चिह्न अब भी देखने में आते हैं।

ठाकुर-वंश—हरसिंह देव के भाग जाने पर तुगलक शाह ने कामेश्वर ठाकुर को तिरहुत का राजा बनाया जिसने सुगौंव में अपनी राजधानी कायम की। तिरहुत पर ठाकुर-वंश का राज्य १६ वीं सदी के आरम्भ तक रहा। कामेश्वर ठाकुर के बाद भोगेश्वर ठाकुर, गुणेश्वरसिंह, वीरसिंह, कीर्तिसिंह, ज्ञान-सिंह, देवीसिंह और शिवसिंह राजा हुए। इनमें शिवसिंह बहुत प्रसिद्ध हुए। इन्हीं के दरबार में कवि विद्यापति थे।

शिवसिंह के बाद भी उनके उत्तराधिकारी १५३२ ई० तक तिरहुत के उत्तर भाग में मुसलमान शासकों के अधीन राज्य करते रहे। १३६७ ई० से लेकर एक सौ वर्ष तक उत्तर विहार पर जौनपुर के मुसलमान राजाओं का शासन रहा। इसके बाद यह दिल्ली के बादशाह सिकन्दर के अधीन और फिर बंगाल

के नवाब हुसैन शाह के अधीन हुआ। इसने उत्तर की पहाड़ी जातियों के हमले से बचने के लिये कामरूप से लेकर बेतिया तक बहुत-से किले बनवाये। १४६६ ई० में तिरहुत फिर दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के अधीन किया गया। यहाँ के राजा ने सिकन्दर लोदी से लड़ने में असमर्थ होकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और कई लाख रुपये देने पर राजा बना रह सका। इस राजा का नाम रामभद्र या रूपनारायण था जो इस राजवंश का दसवाँ राजा था। १६ वीं सदी के आरम्भ में बंगाल के नवाब नसरत शाह ने तिरहुत के राजा लक्ष्मीनाथ या कंसनारायण को मारकर अपने दामाद को तिरहुत का शासक बनाया। तब से यहाँ का शासन बिलकुल मुसलमानों के ही हाथ में रहा।

मुसलमानी राज्य के अन्तिम दिन—रिजकुल्ला मुश्ताकी ने अपनी किताब वाकयात-ई-मुश्ताकी में सिकन्दर लोदी (१४८६—१५१७) के वक्त का चम्पारण जिले का हाल लिखा है। वह लिखता है कि मियाँ हुसैन फारमूली सारन और चम्पारण का जागीरदार था। यह भूभाग जल की अधिकता के कारण जलखेत कहलाता था। मियाँ हुसैन ने मुगला नामक एक सरदार की सहायता से चम्पारण के राजा को जीता। इसके बाद बिहार के सूबेदार अलीवर्दी खाँ के वक्त में चम्पारण जिले का हाल जाना जाता है। उसने बेतिया तथा उसके आसपास के छोटे-छोटे राजाओं को परास्त कर सालाना कर तथा उपहार आदि देने का वादा कराया। कुछ समय के बाद जब अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब हुआ तो वह १७४८ ई० में फिर चम्पारण आया। इस समय दरभंगा के अफगानों ने शमशेर खाँ के अधीन विद्रोह करके अलीवर्दी खाँ के दामाद जैनुद्दीन या हिया-

बत जंग को, जो विहार का सूबेदार था, मार डाला था। अली-वर्दी खाँ अफगानों को दबाकर पटना लौटा। यहाँ उसे बेतिया के राजा के यहाँ से संवाद मिला कि उसके यहाँ शमशेर खाँ और दूसरे अफगान सरदार-सरदार खाँ के परिवार के लोग हैं। अगर अलीवर्दी खाँ उन्हें न माँगे तो वह उसे ३ लाख रुपया दे सकता है। पर, अलीवर्दी खाँ ने इस शर्त को कबूल नहीं किया और उन शरणागतों को पकड़ने के लिये बेतिया को रवाना हुआ। अन्त में राजा ने सरदारों की स्त्रियों और पुत्रियों को अलीवर्दी खाँ के सुपुर्द किया।

१७६० ई० में चम्पारण में सैनिकों का फिर दौर-दौरा रहा। उस समय बादशाह शाहआलम ने विहार पर चढ़ाई की थी। पूर्णिया का फौजदार कादिम हुसैन खाँ बादशाह से मिलने चला; पर बंगाल के नवाब मीर जाफर के लड़के मीरन तथा कैप्टेन नॉक्स और मेजर केलाड ने रास्ते में ही उसपर हमला किया। वह भाग-कर बेतिया की ओर आया। इसी बीच बिजली गिरने से मीरन की मृत्यु हो गयी, जिससे मेजर केलाड आगे न बढ़कर पटना लौट गया। रास्ते में उसने बेतिया के राजा से अधीनता स्वीकार करायी। लेकिन, राजा कुछ ही दिनों में फिर स्वतन्त्र बन बैठा; इसलिये १७६२ ई० में मीरकासिम ने उसके विरुद्ध बहादुर अली खाँ को भेजकर उसे पूरी तरह वश में किया और बेतिया किले पर दखल जमाया। मीरकासिम गुरगीन खाँ के साथ एक बड़ी सेना लेकर बेतिया आ पहुँचा और वहाँ से नेपाल पर उसने चढ़ाई की। पर, नेपालियों ने सबों को मार भगाया।

अँगरेजी राज्यकाल—बक्सर-युद्ध के बाद सन् १७६४ में बंगाल विहार के और भागों की तरह चम्पारण भी अँगरेजों के शासन में आ गया। यहाँ पर अँगरेजी शासन की धाक

जमाने के लिये सन् १७६६ में राबर्ट बारकर सेना की एक टुकड़ी लेकर बेतिया पहुँचा और आसपास के सभी जमींदारों को वश में किया। अँगरेजों के आक्रमण से जब बेतिया का राजा युगल-केश्वर सिंह बुन्देलखंड भाग गया तो राज्य में बड़ी गड़बड़ी फैली। अन्त में १७७१ ई० में वह फिर बुला लिया गया।

नेपाल में अपना व्यापार जमाने तथा सीमा पर के कुछ हिस्सों पर कब्जा रखने के उद्देश्य से अँगरेजों ने नेपाल के साथ लड़ाई ठानी। इस लड़ाई में अँगरेजी सेना के कई अड्डे चम्पारण जिले में थे और लड़ाई इस जिले की उत्तरी सीमा पर भी हुई थी। अन्त में १८१६ ई० में सुगौली में नेपाल राज्य और अँगरेजी राज्य के बीच संधि हुई। इस संधि के बाद कुछ दिनों तक तो शान्ति रही; पर सन् १८४० में फिर झगड़ा उठा। रामनगर के राजा ने नेपाल की राजकुमारी से विवाह कर सीमा के पास कुछ भूभाग दहेज में पाया था। मगर, राजकुमारी के मर जाने पर नेपाल के राजा ने उस भाग को लौटा लेने की घोषणा की। अँगरेजों ने इसका विरोध किया और इस भाग पर दखल जमाये रखने के लिये सेना भेजी। अन्त में गोरखा लोग उस स्थान से हट गये।

सिपाही-विद्रोह या स्वातंत्र्य युद्ध–१८५७ ई० में, जब समूचे देश में अंगरेजी शासन के विरुद्ध एक संगठित युद्ध छिड़ा था तो सुगौली में मेजर होम्स की अध्यक्षता में एक छोटी-सी फौज थी। होम्सने फौजी कानून जारी कर दिया और घोषणा की कि जो कोई विद्रोह करेगा वह कत्ल कर डाला जायगा। लोगों में बड़ा भय छा गया। यद्यपि पीछे दमन की ये कार्रवाइयाँ बन्द कर दी गयीं; पर लोगों का भय और असन्तोष नहीं मिटा। उसी साल २६ जुलाई को जब होम्स अपनी स्त्री के साथ मोटर पर

कहीं जा रहा था कि चार घुड़सवारों ने उन्हें घेरकर तलवार से कत्ल कर दिया। अब फौज के और सैनिक भी बिगड़ खड़े हुए। उन्होंने डिप्टी पोस्टमास्टर को मार डाला और एक अँगरेज डाक्टर को स्त्री-बच्चे सहित कत्ल कर उनके बँगले में आग लगा दी। जिला मेजिस्ट्रेट मि० रेकस अन्य अफसरों के साथ मोतिहारी छोड़कर कई मील दूर एक फैक्टरी में जा छिपा। लेकिन, वह फौरन लौट आया। ३० जुलाई को सरकार ने फिर फौजी कानून जारी किया और कुछ नीलहे साहबों को आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाकर उन्हें अपने आसपास शान्ति-रक्षा के लिये पुलिस बहाल करने का अधिकार दिया। गोरखपुर से आन्दोलनकारियों के एक दल ने इधर आने की चेष्टा की तो बगहाघाट में अड्डा जमाये हुए गोरखा सेना ने उन्हें तितर-बितर कर दिया। दिसम्बर के अन्त में जंगबहादुर अपनी नेपाली सेना के साथ बेतिया पहुँचा। पिपरा से ५ मील पर साहेबगंज में आन्दोलनकारियों के एक दल के साथ उनकी मुठभेड़ हुई; पर आंदोलनकारी पूरी तरह परास्त हुए। उसी दिन गोरखपुर की सीमा पर सोहानपुर में कर्नल रॉक्रॉफ्ट ने विद्रोहियों के एक दूसरे दल को दबाया। अन्त में सब जगह शांति छा गयी।

जिले का निर्माण—पहले चम्पारण सारन जिले का ही एक भाग था जिसका सदर दफ्तर छपरा में था। १८३७ ई० में मोतिहारी में भी एक मजिस्ट्रेट की नियुक्ति हुई। १८५२ ई० में बेतिया सबडिविजन कायम किया गया। अन्त में १८६६ ई० में चम्पारण एक स्वतंत्र जिला बना दिया गया।

लोग, भाषा और धर्म

चम्पारण जिले में सन् १८८१ में १७,२१,६०८ व्यक्ति थे। सन् १९३१ में यहाँ की जनसंख्या २१,४५,६८७ हो गयी। इस तरह आधी शताब्दी में यहाँ ४,२४,०७९ आदमी अर्थात् फी सैकड़े करीब २५ आदमी बढ़े। जनसंख्या की इतनी वृद्धि छोटा नागपुर अधित्यका को छोड़ बिहार के किसी जिले में नहीं हुई। १९३१ ई० की गणना के अनुसार इस जिले में १०,८०,९५६ पुरुष और १०,६४,७३१ स्त्रियाँ हैं। यहाँ एक वर्गमील के अन्दर औसतन ६०८ आदमी रहते हैं। मोतिहारी सबडिविजन में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ८१६, और बेतिया सबडिविजन में ४५१ आदमी हैं। १९२१ ई० में चम्पारण जिले में आये हुए लोगों की संख्या ७०,४१२ और जिले से बाहर गये हुए लोगों की संख्या ४६,४६२ था। चम्पारण जिले में मोतिहारी और बेतिया में २ शहर और २७४८ गाँव हैं। शहरों की जनसंख्या ४५,४८६ है।

भाषा—इस जिले की मुख्य भाषा हिंदुस्तानी है जिसकी बोली है भोजपुरी। इसके दो भेद हैं मधेसी और थारू। ऊँची श्रेणी के मुसलमान प्रायः अवधी बोलते हैं। एक और तरह की बोली है जो डोमरा कहलाती है और जिसे डोम आदि नीच श्रेणी के लोग बोलते हैं। ये सभी हिंदुस्तानी भाषा की बोलियाँ हैं।

मधेसी—मधेसी शब्द मध्यदेशीय शब्द का अपभ्रंश है। कुछ लोगों का कहना है कि चूँकि यह देश मैथिली भाषाभाषी और शुद्ध भोजपुरी भाषाभाषी लोगों के बीच है इसलिये इसका नाम मध्यदेशीय पड़ा। लेकिन, बात यह भी है कि यह

भूभाग प्राचीन सुविस्तृत मध्यदेश का एक छोटा टुकड़ा है। इस जिले की बोली का मूल रूप तो भोजपुरी है, मगर इसपर मैथिली का काफी प्रभाव पड़ा है, खासकर जिले के पूर्वी भाग की बोली पर मैथिली का बहुत ही अधिक प्रभाव है। जिले की पूर्वीय सीमा पर की बोली अपभ्रंश मैथिली है। जिले के पच्छिम भाग में भोजपुरी अधिक शुद्ध रूप में बोली जाती है। गोरखपुर की बोली से अधिक समता रखने के कारण इस भाग की बोली को कुछ लोग गोरखपुरी भी कहते हैं।

थारू बोली नेपाल की सीमा के पास तराई में बसनेवाले आदिम जाति के थारू लोग बोलते हैं। थारू लोगों की अपनी कोई भाषा नहीं है। ये लोग जहाँ जिन आर्य भाषा-भाषियों के सम्पर्क में रहते हैं उन्हीं की भाषा अपभ्रंश रूप से बोलते हैं। चम्पारण जिले के थारू लोगों की बोली भोजपुरी का ही एक रूप है; लेकिन इसमें बहुत-से शब्द इनके खास अपने हैं।

अवधी—अवध प्रान्त की बोली अवधी कहलाती है जो पूर्वी हिन्दी का एक रूप है। चम्पारण जिले के मध्यम श्रेणी के मुसलमान और टिकुलहार लोग अवधी बोली बोलते हैं। टिकुलहारों की बोली को टिकुलहारी और शेख आदि मुसलमानों की बोली को शेखोई भी कहते हैं।

डोमरा—इसे डोम आदि नीची श्रेणी के लोग बोलते हैं। यह भोजपुरी का ही अपभ्रंश रूप है। अक्सर डोम लोग जमादार को मजादार और रूपये को बजैया कहते हैं।

ओराँव—इस जिले में आदिम जातियों में ओराँव जाति के लोग बहुत हैं। ये लोग प्रायः आपस में अपनी ओराँव बोली और दूसरों के साथ भोजपुरी बोली बोलते हैं। १९३१ की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट में चम्पारण जिले में ओराँव

लोगों की संख्या ६,६४७ लिखी है ; पर मातृभाषा के रूप में ओराँव बोली बोलनेवाले ५,५११ बताये गये हैं।

१६३१ की गणना के अनुसार जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य भाषाओं के अन्दर २१,३५,६३६ लोगों की मातृ-भाषा हिंदुस्तानी, १,६६० की नेपाली, ६२८ की मारवाड़ी, ७८३ की बंगला, ५३ की पंजाबी, १५ की उड़िया, ५ की गुजराती और ६ की अन्य भारतीय आर्य भाषायें ; मुंडा भाषा-श्रेणी के अन्दर २४० की मुंडारी, और २ की संथाली ; द्रविड़ भाषा-श्रेणी के अन्दर ५,५११ की ओराँव, १ की तामिल और ३ की तेलगू ; २६ की पश्तो, २ की अन्य भारतीय भाषाएँ ; १ की दूसरी एशियाई भाषा ; ४६१ की अँगरेजी तथा २४ की अन्य यूरोपीय भाषाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	१७,८७,२७४	आदिम जाति	४८५
मुसलमान	३,५४,२३५	सिक्ख	३२
ईसाई	३,६५५	जैन	५
		पारसी	१

सैकड़े के हिसाब से हिन्दू फी सैकड़े ८३ से कुछ अधिक हैं। हिन्दू जाति में ग्वाले की संख्या सबसे अधिक है। मुसलमान फी सैकड़े करीब १७ हैं। मुसलमानों में जोलाहा और शेखों की संख्या अधिक है। यहाँ मुसलमानों में एक जाति है ठकु-रिया। इन लोगों का रीति-रस्म हिन्दुओं से बहुत मिलता है। इनका कहना है कि मुसलमान होने के पहले ये लोग राजपूत थे।

चम्पारण जिले के लगभग सभी ईसाई रोमन कैथोलिक हैं और ये बेतिया सबडिविजन में रहते हैं। इस जिले में ईसाई

मिशन सन् १७४५ में इटलीवासी फादर जोसेफ मेरी द्वारा बेतिया में कायम हुआ था। जब १७६६ ई० में बेतिया पर अङ्गरेजों का कब्जा हो गया तो ईसाई मिशन को किले के अन्दर ६० बीघा और किले के बाहर २०० बीघा जमीन दी गयी। १७६९ ई० में बेतिया से तीन कोस उत्तर चुहरी नामक गाँव में नेपाल से भागे हुए ईसाई आ बसे। १८९२ ई० में नेपाल और चम्पारण के ईसाई-मिशनरियों का सदर आफिस बेतिया ही हुआ। पीछे चम्पारण जिले के चखनी, चैनपटिया, रामनगर और रामपुर में भी ईसाइयों के अड्डे कायम हुए। १९०० ई० में मोतीहारी में एक प्रोटेस्टेन्ट मिशन खुला था जिसकी एक शाखा चैनपटिया में है। जिले के ३,६५९ ईसाइयों में १७० यूरोपियन आदि, ३४ एंग्लो-इंडियन और शेष भारतीय ईसाई हैं।

१९३१ की गणना की रिपोर्ट में चम्पारण में आदिम जाति का धर्म माननेवाले सिर्फ ४८५ लिखे गये हैं, लेकिन यहाँ तथाकथित आदिम जाति के लोग हजारों की संख्या में हैं। इनमें मुख्य थारू ३७,३३८, ओराँव ६,६४७ और भुइयाँ ६५४ है। थारू लोग द्राविड़ जाति के समझे जाते हैं।

खेती और पैदावार

चम्पारण जिले का रकबा २२,६३,६६४ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १३,९५,७०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और १,००,६४८ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,६१,११७ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १,८९,४६०

एकड़ में जंगल था। २,१६,६६६ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ६६ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका करीब १६ वाँ भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े १६ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता; सैकड़े ८ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े १० भाग खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ४० भाग में दो या तीन फसल होती है। दो-तीन फसल वाली जमीन अधिक रखने में प्रान्त के अन्दर मुजफ्फरपुर जिले के बाद इसी जिले का स्थान है।

चम्पारण जिले का अधिकांश भाग खेती के योग्य समतल भूमि है। केवल उत्तर और कुछ पच्छिम की ओर पहाड़ी भूमि है जहाँ जंगल काफी पाये जाते हैं। इस जिले में नदियाँ, छोटी-छोटी धाराएँ और जलाशय बहुत हैं। यहाँ वर्षा भी आस-पास के जिले से अधिक होती है। जिले के बीच का और पूरब का विस्तृत भाग बरसात में बाढ़ से डूब जाता है। इन सब बातों का प्रभाव स्वाभाविक रूप से खेती पर बहुत पड़ता है।

जिले के पच्छिम भाग में गंडक नदी बहती है जिसके आस-पास की भूमि बहुत ही उपजाऊ है। सिकरान नदी जिले को दो भागों में बाँटती है। साधारण तौर पर उत्तर भाग में धान की खेती अधिक होती है और दक्खिण भाग में रब्बी की खेती। दक्खिण भाग की पहले यह भी एक विशेषता थी कि नील की खेती मुख्यकर यहीं होती थी। उत्तर भाग में छोटी-छोटी धाराओं से कृत्रिम रूप से सिंचाई का प्रबन्ध है, गरचे लोगों को वर्षा पर भी बहुत निर्भर करना पड़ता है। दक्खिण भाग में

कृत्रिम सिंचाई का प्रबन्ध नहीं है पर इसके बिना भी यहाँ लोगों का काम इसलिये चल जाता है कि यहाँ की जमीन उपजाऊ है और यहाँ कई तरह की फसल हो सकती है। दक्षिण भाग की अपेक्षा उत्तर भाग में वर्षा अधिक होती है। वर्षा कम होने पर उत्तर भाग में ही अधिक नुकसानी पहुँचती है; क्योंकि वहाँ धान की खेती होती है।

जिले में कई तरह की मिट्टी पायी जाती है। सिकरान नदी के उत्तर की कड़ी मिट्टी को बांगर कहते हैं। इसमें सिंचाई की जरूरत होती है और यह खासकर धान के लिये ही उपयोगी है। उत्तर भाग में ललाई लिये एक प्रकार की मिट्टी होती है जो बभनी कहलाती है। इसमें रब्बी फसल होती है, धान नहीं। हलकी, ढीली और बलुआही मिट्टी को बलधूस कहते हैं जो कम उपजाऊ होती है। सिकरान के दक्षिण ऊँची जमान को भीठ या उपरवार कहते हैं। चौर की मिट्टी, जहाँ धान होता है, धनहर कहलाती है। भीठ या उपरवार जमीन के भी पाँच भेद कहे जाते हैं—धोबिनी, गोनरा, भाठ, बलधूस और डूब। धोबिनी मिट्टी वही है जो उत्तर भाग की बभनी मिट्टी है। गाँव के पास की जमीन को गोनरा कहते हैं। समय-समय पर बाढ़ में डूब जानेवाली जमीन भाठ कहलाती है। बालू मिली जमीन को बलधूस और नदी किनारे की बहुत समय तक डूबी रहनेवाली नीची बलुआही जमीन को डूब कहा जाता है।

सन् १९३६-२७ की रिपोर्ट के अनुसार भदई जिले की उपजाऊ जमीन के सैकड़े ३९ भाग में, अगहनी ४४ भाग में और रब्बी फसल ५७ भाग में होती है। उपजाऊ जमीन के सैकड़े ३ भाग में कन्द-मूल और फल-तरकारी होती है।

जिले की मुख्य पैदावार धान है। धान की फसल अधिकतर

गयी है। एक दूसरा मधुवन नहर है जिसे मधुवन के जमींदार ने बनवाया था। ढाका-नहर लालबकया नदी से और त्रिवेणी-नहर गंडक नदी से निकाली गयी हैं। जहाँ-तहाँ पहाड़ी धाराओं से पैन निकाल कर भी सिंचाई की जाती है।

जिले के बिरौह नामक स्थान में प्रदर्शन के लिये सरकारी कृषि-फार्म है जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

ग्रामीण उद्योग-धंधे भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में बटे हैं, जैसे लोहे का काम लोहार, तो चमड़े का काम चमार करते हैं। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ के हजार आदमियों में ४५१ काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। काम करनेवाले ४५१ आदमियों में ४११ खेती और पशुपालन में, १० उद्योग-धंधे में, ७ व्यापार में, १ गमनागमन अर्थात डाक, रेल, जहाज, नाव, सड़क, आदि में, १ पुरोहित, डाक्टर, वकील आदि के पेशे में और १५ दूसरे कामों में हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि काम करनेवालों में सैकड़े ९१ आदमी यहाँ खेती में लगे हैं।

नील—यहाँ नील का कारबार किसी समय बहुत जोरों पर था। १९ वीं सदी के अन्त में जिले में नील की २१ फैक्टरियाँ और उनकी ४८ शाखाएँ थीं। जिले के अन्दर साल में १७-१८ हजार मन नील तैयार होता था और १८६) रुपया मन की दर पर बिकता था। पीछे यूरोप में सस्ती दर पर नील तैयार होने लगने पर यहाँ का कारबार धीरे-धीरे बिलकुल बन्द हो गया।

चीनी—कहते हैं कि करीब सवा सौ वर्ष पहले आजमगढ़ और गोरखपुर से आये हुए लोगों ने इस जिले में चीनी का कारखाना खोला था। १९ वीं सदी के मध्य में इस जिले में चीनी का कारबार एक मुख्य कारबार था। पीछे नील के कारखाने बढ़ने पर इसकी अवनति हुई। नये उन्नत तरीके पर पहले सिरहा में और पीछे परसा और तब पकरी में कारखाने खुले थे। सन् १९३६ में जिले के अन्दर चीनी के ८ मिल थे।

शोरा—पहले इस जिले में शोरा का कारबार भी एक मुख्य कारबार था। लेकिन अब वह भी नहीं रह गया है। शोरा और नमक नुनिया जाति के लोग तैयार करते थे। यह एक तरह की मिट्टी से तैयार किया जाता था। शोरा यहाँ से कलकत्ता भेजा जाता था जहाँ से उसका कुछ हिस्सा विदेश भी जाता था। सन १८९५-९६ में यहाँ ७०,५०० मन शोरा तैयार हुआ था। धीरे-धीरे इसका उत्पादन घटने लगा। सन् १९०४-०५ में आकर यह सिर्फ २५,०० मन तैयार हुआ। इसी प्रकार नमक उसी काल में ४००० मन से घट कर केवल २६ सौ मन तैयार हुआ। अब तो यह बिलकुल उठ ही-सा गया है।

सोना—नदियों की धाराओं से सोना धोकर निकालने का काम भी इस जिले का एक खास उद्योग-धंधा था। लोग गंडक, पंचनद, हरहा, भबसा तथा दूसरी धाराओं में यह काम करते थे। वे घुटने भर पानी में खड़े होकर मिट्टी की ढेर लगा देते थे और नदी की धारा बालू को बहा देती थी। जो कुछ मिट्टी बच जाती थी उससे बहुत छोटा-सा लगभग एक मटर के बराबर सोना निकलता था। कहते हैं कि पहले रामनगर का राजा इस तरह हर साल हजार रुपये का सोना जमा किया करता था।

अब सोना निकालने का काम प्रायः नहीं होता है। इस काम को अधिकतर थारू लोग किया करते थे।

कपड़ा—करघों द्वारा मिल के सूत से बिनने का काम देहातों में बहुत छोटे पैमाने पर हुआ करता है। जोलाहे लोग इस काम को करते हैं। गड़ेरी लोग कुछ कम्बल तैयार किया करते हैं।

चावल मिल—जिले के अन्दर सन १९३६ में चावल तैयार करने की ६ मीलें थीं। इनमें आटा, दाल और तेल तैयार करने का भी कुछ काम होता रहा है।

व्यापार—इस जिले से चावल, धान, दलहन, तेलहन, गुड़, चीनी वगैरह चीजें बाहर जाती हैं और कोयला, करासन तेल, कपड़ा तथा आधुनिक सभ्यता की तरह-तरह की चीजें बाहर से यहाँ आती हैं। नेपाल के साथ भी इस जिले का व्यापार होता है। अधिकतर रक्सौल होकर सब चीजें नेपाल को जाती हैं। मोतिहारी, बेतिया, चैनपटिया, झपकहिया, रामगढ़वा केसरिया, मधुबन, गोविन्दगंज, बरहरवा, मानपुर, बगहा व्यापर के केन्द्र हैं। समय-समय पर भिन्न-भिन्न जगहों में मेले भी लगते हैं जहाँ चीजों की खरीद-बिक्री होती है।

आने-जाने के मार्ग

सड़क—सन् १८७६ में जिले में २६ सड़कें थीं जिनकी कुल लम्बाई ४३८ मील थी। तब से सन् १९०६-०७ तक में सड़कें करीब तिगुनी बढ़ गयी। सन् १९३५-३६ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन जिले में २७३७ मील लम्बी सड़कें हुईं। इनमें ६७ मील पक्की सड़कें, १,२७४ मील कच्ची सड़कें और १३९६ मील छोटी-छोटी देहाती सड़कें थीं।

रेलवे—सन् १८८२ के पहले इस जिले में रेलवे लाइन नहीं

थी। उसी साल तिरहुत स्टेट रेलवे (जो अब बी. एन. डब्ल्यू. रेलवे द्वारा काम में लायी जाती है।) मुजफ्फरपुर से बढ़ाकर इस जिले में लायी गयी। यह लाइन बेतिया में आकर समाप्त हुई। पीछे इसे बेतिया से बढ़ाकर जिले की उत्तरी सीमा भिखनाठोरी तक पहुँचाया गया। इसके बीच नरकटियागंज अब जंकशन हो गया है क्योंकि दरभंगा जिले के अब पच्छिम बगहा तक जाने वाली सड़क इसी होकर गयी है। मुजफ्फरपुर से बेतिया जानेवाली लाइन पर सुगौली स्टेशन से एक लाइन उत्तर की ओर जाकर जिले की सीमा के पास रक्सौल स्टेशन पर दरभंगा से बगहा जानेवाली सड़क को छूती है। मुजफ्फरपुर से चलनेवाली लाइन मेहसी से कुछ दूर पहले चम्पारण जिले में प्रवेश करती है। इस जिले में इस लाइन की नरकटियागंज तक की दूरी करीब ७७ मील है और इसमें ये सब स्टेशन हैं— मेहशी, चकिया, पिपरा, जिउधारा, मोतीहारी, सेमरा, सुगौली, मझौलिया, बेतिया, चैनपटिया, साठी और नरकटियागंज। नरकटियागंज से भिखनाठोरी २३ मील है और इन दोनों के बीच में दो स्टेशन हैं—अमोलवा और गौनहा। सुगौली से रक्सौल १६ मील है और इन दोनों के बीच रामगढ़वा एक स्टेशन है। दरभंगा से चलनेवाली लाईन कुंडवा-चैनपुर से कुछ दूर पहले चम्पारण जिले में प्रवेश करती है और बहुत दूर तक जिले की उत्तरी सीमा होकर जाती हुई नरकटियागंज पहुँचती है। इस जिले के अन्दर इसकी दूरी करीब ५५ मील है और इसमें कुंडवा, चैनपुर, घोड़ासहन, चौरादानो, आदापुर, रक्सौल, भेलवा, सिकटा, गोखुला और नरकटिया ये स्टेशन हैं। नरकटियागंज से बगहा २६ मील है और इन दोनों के बीच में हरिनगर, भैरोगंज और खरपोखरा ये तीन स्टेशन हैं। इस

तरह इस जिले में रेलवे लाइन करीब २०० मील तक है।

जलमार्ग—यों तो जिले में बहुत-सी नदियाँ हैं, पर बड़ी गंडक, सिकरान और बागमती में ही नावें अच्छी तरह चल सकती हैं। इन नदियों को पार करने के लिये जगह-जगह नावें रहती है।

शिक्षा

सन् १८७०-७१ में चम्पारण जिले के अन्दर सिर्फ दो ही ऐसे स्कूल थे जिनका प्रबन्ध सरकार करती थी। गाँवों के अन्दर बहुत-सी छोटी-छोटी पाठशालाएँ थीं अवश्य, पर उनका सरकार से कोई सम्बन्ध नहीं था। जब सर जार्ज कैम्पबेल की देशी भाषा की शिक्षा बढ़ाने की स्कीम काम में लायी गयी तो सन १८७२-७३ में जिले में ७२ स्कूल ऐसे हुए जिनका प्रबन्ध या सहायता सरकार करने लगी। सन् १९०७ में आकर स्कूलों की संख्या ७९८ और उनमें पढ़नेवालों की संख्या १७,७७० रही।

इधर धीरे-धीरे स्कूलों की संख्या बढ़ती ही रही है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर १०५४ प्रायमरी स्कूल थे जिनमें १०२१ सरकारी और बाकी खानगी स्कूल थे। इन स्कूल में पढ़नेवाले छात्रों की संख्या ३४,६८३ थी।

मिडिल स्कूलों की संख्या भी बढ़ी है। सन् १९०७ में जहाँ ९ मिड्ल इंगलिश स्कूल थे वहाँ सन् १९३७-३८ में ४६ मिड्ल इंगलिश स्कूल हो गये हैं। मिड्ल-वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या सन् १९०७ में २ थी पर अब १ रह गयी है।

सन् १९०७ में केवल मोतिहारी और बेतिया में एक-एक हाई स्कूल थे पर अब जिले में ९ हाई स्कूल हो गये हैं। मोतिहारी में ३ हाई स्कूल हैं—जिला स्कूल, हिकॉक एकडेमी, और मंगल

सेमिनरी। बेतिया में २ हाई स्कूल तथा मेहसी, रक्सौल, बगहा और नरकटियागंज में एक-एक हाई स्कूल हैं।

बिहार के बहुत-से जिलों की अपेक्षा स्त्री-शिक्षा का यहाँ अच्छा प्रबन्ध है। सन् १६०७ में यहाँ एक अपर प्राइमरी और २२ लोअर प्राइमरी स्कूल थे जिनमें ५५५ लड़कियाँ पढ़ती थीं। इनके अलावे ३ और भी स्कूल थे जिनमें ७७ लड़कियाँ थीं। उस साल लड़के के स्कूलों में ५५४ लड़कियाँ शिक्षा पा रही थीं। सन् १६३५-३६ में आकर जिले के अन्दर पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ५,४२० हुई है। ईसाइयों के प्रबन्ध से इस समय लड़कियों के लिये ४ मिडल इंगलिश स्कूल चल रहे हैं, ३ बेतिया में और १ चुहरी में।

सन् १६३१ की गणना के अनुसार चम्पारण जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ५७,८६८ और स्त्रियों की संख्या ४,४६१ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ५,०३९ और स्त्रियाँ ३६९ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े करीब ३ है। सन १६३५-३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ४८,१०५ लड़के लड़कियाँ थीं जो कुल जन-संख्या में सैकड़े २·२ हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—चम्पारण मुजफ्फरपुर कमिश्नरी के अधीन एक जिला है। शासन की सुविधा के लिये यह दो सबडिविजनों में बाँट दिया गया है—मोतिहारी और बेतिया। सबडिविजन के सबसे बड़े अफसर सबडिविजनल अफसर या एस. डी. ओ. कहलाते हैं। जिले का सदर दफ्तर मोतिहारी है। जिले का सब से बड़ा

अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। पहले केवल बेतिया में सबडिविजनल अफसर था, मोतिहारी में नहीं। वहाँ जिले का कलक्टर ही सबडिविजनल अफसर का काम करता था। पर अब एक अलग सबडिविजनल अफसर बहाल किया जाता है। मोतिहारी में कलक्टर की सहायता के लिये कई डिप्टी कलक्टर रहते हैं। उसी तरह सबडिविजनल अफसर की सहायता के लिये सबडिप्टी कलक्टर होते हैं, जिनमें सरकारी इमारत, बाँध, नहर आदि के लिये एक अलग अफसर रहता है।

न्याय—पहले यहाँ जिला और सेशन जज का काम मुजफ्फरपुर के सेशन जजही करते थे। पीछे यहाँ अलग जिला और सेशन जज बहाल हुए। जिला और सेशन जज एक ही व्यक्ति हुआ करता है। दीवानी मुकदमों को सुनने के लिये जिला जज और कई मुन्सिफ होते हैं। उसी तरह फौजदारी मुकदमों के लिये सेशन जज, जिला मजिस्ट्रेट और डिप्टी तथा सबडिप्टी मजिस्ट्रेटट रहते हैं। मजिस्ट्रेट पहले, दूसरे और तीसरे, इन तीन दरजों के हुआ करते हैं। दीवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवाई सबडिविजनल कोर्ट में भी होती है। छोटे-छोटे मामलों को सुनने के लिये आनरेरी मजिस्ट्रेट होते हैं।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये यह जिला २० थानों में बँटा हुआ है। १० थाने मोतिहारी सबडिविजन में और १० थाने बेतिया सबडिविजन में हैं। जिले के अन्दर पुलिस का सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। उनकी सहायता के लिये असिस्टेन्ट और डिप्टी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं। थाने का सबसे बड़ा अफसर पुलिस इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है। इसे लोग दारोगा भी कहते हैं। थाने में दारोगा की सहायता के लिये हवलदार और कानिस्टबिल

रहते हैं। रात में पहरा देने के लिये प्रायः प्रत्येक गाँव में एक चौकीदार होता है। वह गाँव की चोरी-डकैती और जन्म-मरण आदि की रिपोर्ट भी थाने में पहुँचाया करता है। कई चौकीदार के ऊपर दफेदार रहा करता है। इस जिले में सन १९३६ में ४ इन्सपैक्टर, ३९ सब-इन्सपेक्टर, ३५ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, १६ हवलदार, ३७४ कानिस्टबिल और २,२५५ चौकीदार थे।

जेल—मोतिहारी में जिला जेल और बेतिया में एक छोटा जेल है। बेतिया जेल में २३ पुरुष और ३ स्त्री कैदियों के रहने की जगह है। मोतिहारी जेल में ३१८ पुरुष कैदी और ३१ स्त्री कैदी रखने का प्रबन्ध है।

रजिस्ट्री आफिस—जिले के अन्दर जमीन की खरीद-बिक्री की रजिस्ट्री के लिये सन् १९३६ में मोतिहारी, बेतिया, ढाका, केसरिया, शिकारपुर, चौरादान और बगहा में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—इस जिले में १८८६ ई० में डिस्ट्रिक्टबोर्ड कायम हुआ था। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबँगला वगैरह बनवाना; प्राइमरी और मिडल स्कूलों का इन्तजाम करना; तालाब, कुआँ वगैरह खुदवाना; घाट, अस्पताल और फाटक आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्टबोर्ड के काम हैं। चम्पारण जिलाबोर्ड के ३६ सदस्य होते हैं जिनमें २७ निर्वाचित, ६ नामजद किये और ३ पद की हैसियत से सदस्य होते हैं। इसका सालाना आमद-खर्च करीब ९—१० लाख रुपया है। जिले में मोतिहारी और बेतिया दो लोकलबोर्ड हैं जो डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के अधीन उसके छोटे-मोटे काम करते हैं। मोतिहारी लोकलबोर्ड में १५ चुने हुए और ५ नामजद किये तथा बेतिया लोकलबोर्ड में १२ चुने हुए और ४ नामजद किये मेम्बर हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—देहातों के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड के जो काम होते हैं, शहरों के अन्दर वही काम म्युनिसिपैलिटियों के रहते हैं। चम्पारण जिले में मोतिहारी, लूआटह और बेतिया में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। मोतिहारी और बेतिया की म्युनिसिपैलिटियाँ १८६६ ई० में कायम हुई थीं। इनके २०, २० मेम्बर हैं। लूआटह मोतिहारी का ही एक हिस्सा है। यहाँ की म्युनिसिपैलिटी 'नोटिफाइड एरिया कमिटी' कहलाती है। इसके ४ मेम्बर होते हैं। यह सन् १९३७ में कायम हुई है।

मोतिहारी (सदर) सबडिविजन

जिले का यह सदर सबडिविजन २६°१६' और २७°१' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°३०' और ८५° १८' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १५१८ वर्गमील और जनसंख्या १२,३८,७८९ है। इसमें सिर्फ एक मोतिहारी शहर और १,२६२ गाँव हैं। इस सबडिविजन में मोतिहारी, सुगौली, आदापुर, रक्सौल, ढाका (रामचन्द्रा), घोड़ासहन, केसरिया, पिपरा, मधुवन और गोविन्दगंज ये १० थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

मोतिहारी—चम्पारण जिले का प्रधान नगर मोतिहारी २६°४०' उत्तरीय अक्षांश और ८४° ५५' पूर्वीय देशान्तर पर एक बड़े जलाशय के किनारे बसा हुआ है, जहाँ जिले का सदर आफिस है। इस जलाशय का पहले गंडक नदी से सम्बन्ध था। इसके पास ही एक और जलाशय है। गर्मी के दिनों में भी इन जलाशयों में काफी पानी रहता है। ये जलाशय शहर के लिये मोती के हार के समान हैं। कहते हैं कि इसी कारण इस

शहर का नाम मोतिहारी पड़ा। पश्चिम ओर का जलाशय शहर को दो भागों में बाँटता है। पश्चिम की ओर यूरोपियन कार्टर और शहर हैं तथा पूरब की ओर सरकारी कचहरियाँ, अन्य सरकारी आफिस और रेलवे स्टेशन हैं। इसके बाद रेलवे लाइन पार करने पर पुराना घुड़दौड़ का मैदान और पोलो-ग्राउंड हैं। जेल भी इसके पास ही बना है। शहर के दोनों भागों को मिलाने के लिये जलाशय पर एक बड़ा पुल बना हुआ है।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या १७,५४५ है, जिसमें १२,७०९ हिन्दू, ४,७२९ मुसलमान, १०४ ईसाई और ३ जैन हैं। मोतिहारी चम्पारण जिले का प्रधान शहर है; मगर क्षेत्रफल और जनसंख्या के हिसाब से बेतिया इससे बहुत बढ़ा हुआ है।

मोतिहारी में जो थाना है उसकी अधिकार-सीमा केवल शहर तक ही नहीं, बल्कि दूर देहातों तक भी है। मोतिहारी थाने की जनसंख्या १,५८,४५७ है। इसमें १,३०,४८९ हिन्दू, २७,८३१ मुसलमान, १३४ ईसाई और ३ अन्य धर्म के लोग हैं।

अरेराज—दे० लौरिया अरेराज।

आदापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ९९,९९७ है, जिसमें ७७,१४७ हिन्दू और २२,८५० मुसलमान हैं।

ऊँचाडीह—दे० सिंघासिनी।

कस्तुरिया—मोतिहारी से १६ मील पूरब सरैया के पास १६० फीट लम्बा और १०० फीट चौड़ा एक टीलहा है जिसे लोग कस्तुरिया कहते हैं। कहा जाता है कि यह एक चेरो राजा के महल का भग्नावशेष है। इसके पश्चिम एक पाकर के पेड़ के नीचे अष्टभुजी दुर्गा की टूटी-फूटी मूर्ति है। लोग इसे दुर्गाबती

रानी कहते हैं और इसे एक चेरो रानी की मूर्ति बताते हैं।

केसरिया—जिले के बिलकुल दक्षिण में यह एक गाँव है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। इसके २ मील दक्षिण एक ऊँचा टील्हा है जिसपर एक बौद्धकालीन स्तूप जान पड़ता है। इसकी कुल ऊँचाई ६२ फीट और नीचे का घेरा १४०० फीट है। जेनरल कनिंघम ने इसे २०० ई० से ७०० ई० के बीच का बताया है। कहते हैं कि ऊपर का स्तूप एक बहुत पुराने और बड़े स्तूप के भग्नावशेष पर बनाया गया है। चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) ने अपने वृत्तान्त में लिखा है कि वैशाली से करीब ३० मील उत्तर-पच्छिम एक बहुत पुराना शहर था जो बहुत दिनों से उजाड़ पड़ा है। यहाँ बुद्ध भगवान ने कहा था कि अपने एक पूर्व जन्म में मैंने एक चक्रवर्ती राजा होकर इस शहर में शासन किया था। यहाँ जो स्तूप है उसे बौद्धों ने इसी बात की यादगारी के लिये बनवाया था। पर, लोग स्तूपवाले इस टील्हे को चक्रवर्ती राजा बेन का देवरा कहते हैं और पास के एक दूसरे टील्हे को रनिवास का भग्नावशेष बताते हैं। कहते हैं कि गंगेया ताल वही तालाब है जहाँ राजा बेन की रानी पद्मावती स्नान करती थी। तीन हजार फीट लम्बा एक दूसरा तालाब राजा बेन का तालाब कहलाता है। रनिवास नामक टील्हे को ऐतिहासिक लोग एक बौद्ध मठ का भग्नावशेष बताते हैं। १८६२ ई० में यहाँ खोदाई हुई थी तो इसके अन्दर एक मंदिर मिला था जिसमें बुद्ध की एक मूर्ति थी।

केसरिया थाने की जन-संख्या १,४२,३७३ है, जिसमें १,२६,००८ हिन्दू, १६,३६२ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

गोविन्दगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने

की जन-संख्या १,८६,८७१ है। इसमें १,६४,५४९ हिन्दू, २२,३२० मुसलमान और २ ईसाई हैं।

घोड़ासहन—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७७,३४३ है, जिसमें ६७,३२५ हिन्दू और १०,०१८ मुसलमान हैं।

चकिया—दे० बारा।

ढाका—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में २,४५,८८१ आदमी रहते हैं। इनमें १,९७,५३४ हिन्दू, ४८,३४३ मुसलमान, १ ईसाई तथा ३ अन्य धर्म के लोग हैं।

नोनाचर—मोतिहारी से ५ मील उत्तर-पूरब सिकरान नदी के किनारे यह एक पुराना किला है। यहाँ एक पुराना तालाब है। कहते हैं, यहाँ नोनाचर नामक एक दुसाध राज करता था।

पिपरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५८,४९७ है। इसमें ५३,२३० हिन्दू, ५,२५५ मुसलमान और १२ ईसाई हैं।

बारा—जिले के अन्दर पहले पहल यहीं नील की फैक्टरी १८१३ ई० में कायम हुई थी। पीछे चीनी का कारबार शुरू हुआ। पहले यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम बारा ही था, अब चकिया हो गया है।

वेदीवन—पिपरा रेलवे स्टेशन से आधा मील उत्तर-पूरब यह एक गाँव है। यहाँ से एक मील उत्तर सीताकुंड है। वेदीवन में एक पुराने किले का भग्नावशेष है। किले के उत्तर भाग में २० फीट ऊँचा एक टीलहा है जिसपर एक मंदिर है। इस मंदिर में २ फीट का एक पत्थर है जो भगवान का चरण समझा जाता है। इसपर सात लाइन में अरबी लिपि में कुछ लिखा है, जो अब पढ़ा नहीं जाता। जेनरल कनिंघम ने इसका एक शब्द महमूद शाह पढ़कर

अनुमान किया था कि शायद इसका सम्बन्ध जौनपुर के राजा महमूद शरकी (१४५० ई०) से हो। उसने मंदिर को भी मुसलमानी मंदिर होने का अनुमान किया था।

मधुबन—चकिया रेलवे स्टेशन से यह स्थान ५ मील उत्तर-पूरब है। यहाँ एक प्रतिष्ठित और पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। इस वंश के संस्थापक अवधूत सिंह थे जो बेतिया राज के संस्थापक राजा उग्रसेन सिंह के परपोते थे। मीर कासिम के वक्त में तप्पा दूहोसूहो तथा मधुवन और शामपुर गाँव इनके हाथ में बन्दोबस्त किये गये थे। ये लोग पहले मोतिहारी से ८ मील पूरब मधुवनी गाँव में रहते थे, पीछे यहाँ आये। दशहरे के वक्त में वहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। मधुबनी में थाना भी है। इस थाने में १,११,२१२ आदमी रहते हैं जिनमें ९९,२४४ हिन्दू, ११,९६४ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

मेहसी—यह गाँव इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास है। जब पहले पहल ईस्ट इंडिया कम्पनी का इस जिले पर दखल हुआ तो यहाँ का सदर आफिस मेहसी में ही बनाया गया और यहाँ एक मुन्सिफ का कोर्ट भी खुला। कोर्ट का मकान और एक यूरोपियन की कोठी अब भी देखने में आती है। मुसलमानी वक्त में यहाँ एक काजी रहते थे। कहते हैं, मेहसी नाम महेश कोयरी नामक एक साधु के नाम पर पड़ा है। हलीम शाह नामक एक फकीर इसके गुण पर चकित था। इस गाँव में पास ही पास एक मंदिर और एक दरगाह है जिनका सम्बन्ध इन्हीं दोनों से बताया जाता है। यहाँ एक हाई स्कूल भी है। यहाँ का तम्बाकू और दरी प्रसिद्ध है। कुछ वर्षों से यहाँ बटन की एक छोटी फैक्टरी खुली है।

रक्सौल—यह स्थान जिले की उत्तरी सीमा पर है जहाँ
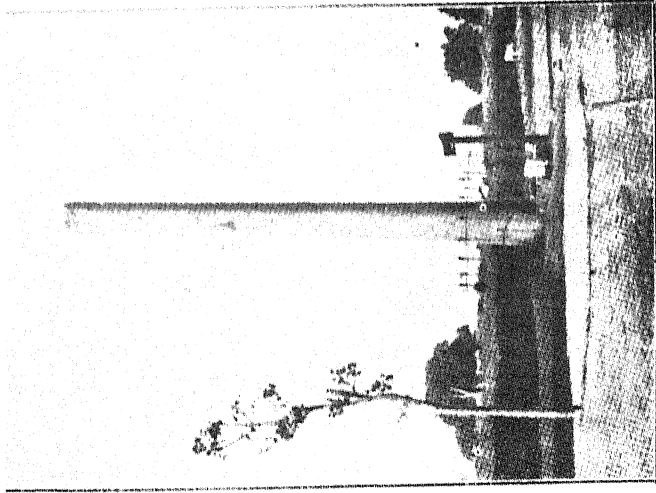
अशोक स्तम्भ, लौरिया अरेराज (चम्पारण)
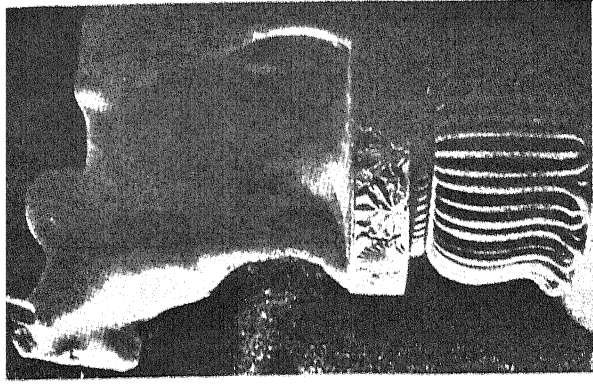
रामपुरवा (चम्पारण) के अशोक स्तम्भ का शिरोभाग
(इस समय इंडियन म्यूज़ियम, कलकत्ता में)
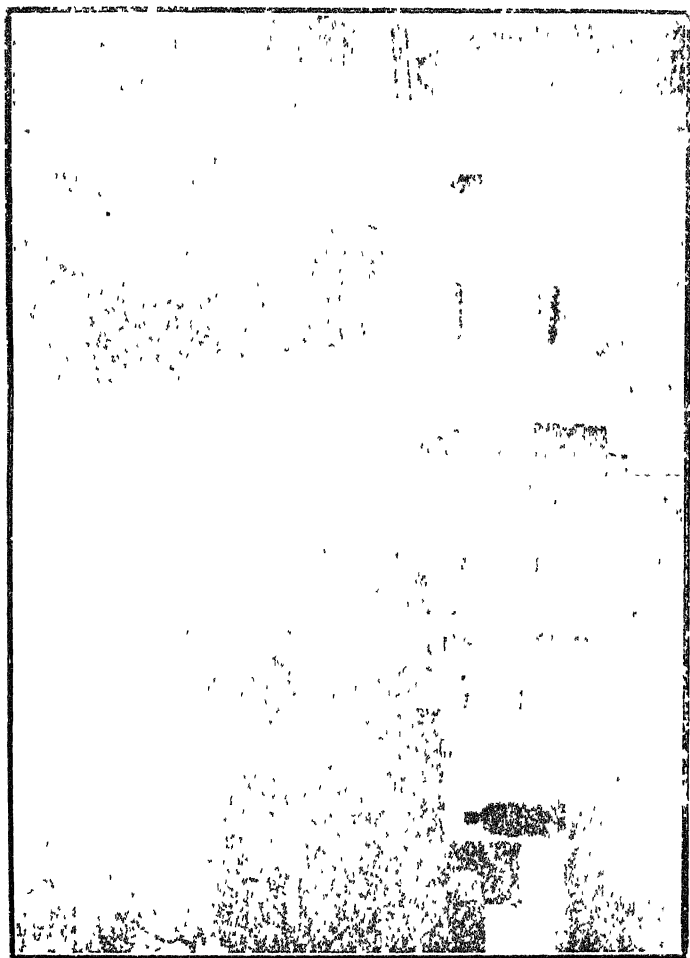
एक पुरानी मस्जिद, चिरँद छपरा (सारन)

रेलवे लाइन का जंकशन स्टेशन है। यहाँ से नैपाल जाने का एक मुख्य मार्ग मिलता है। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ एक हाई स्कूल, थाना और अस्पताल हैं। रक्सौल थाने की जनसंख्या १,०२,७२५ है, जिसमें ८१,५४६ हिन्दू, २१,१४५ मुसलमान और ३४ ईसाई हैं।

लौरिया अरेराज—यह गाँव गोविन्दगंज थाने से ४ मील उत्तर है। यहाँ अशोक का एक स्तम्भ है जो ईसा से २४९ वर्ष पहले बनाया गया था। यह स्तम्भ ३६½ फीट ऊँचा है। इसके आधार पर का व्यास ४१.८ इंच का और चोटी पर का व्यास ३७.६ इंच का है। अनुमान किया जाता है कि इसके शिखर पर किसी जानवर की मूर्ति रही होगी। इसपर जो लेख है वह अब भी बहुत स्पष्ट है। उत्तर की ओर १८ लाइनें और दक्षिण की ओर २३ लाइनें हैं। यहाँ के लोग इस स्तम्भ को लौर कहते हैं; इसलिये इस गाँव का नाम लौरिया पड़ गया है। स्तम्भ से एक मील दक्षिणपश्चिम महादेव का एक मंदिर है जहाँ साल में एक बार मेला लगा करता है।

सगरडीह—पिपरा स्टेशन से ४ मील की दूरी पर केसरिया जानेवाली सड़क के पास सगर या सागर नामक एक गाँव है। यहाँ दो टील्हे हैं जिन्हें लोग सगरडीह कहते हैं। इनमें से एक बौद्धकालीन स्तूप जान पड़ता है। यह ३७ फीट ऊँचा है और इसके आधार पर का व्यास करीब २०० फीट है। जेनरल कनिंघम ने यहाँ खोदाई का काम किया था। वह बताता है कि वर्तमान स्तूप, जो ९ वीं या १० वीं सदी का है, किसी पुराने स्तूप के भग्नावशेष पर बनाया गया है। गया पोखर के पास एक दूसरा टील्हा है जिसको लोग भिस कहते हैं। इसका सम्बन्ध सूर्यवंश के प्रसिद्ध राजा सगर से बताया जाता है; इसलिये लोग इस

टील्हे को सगरगढ़ कहते हैं। इसके दक्षिण-पूरब की ओर एक दूसरा तालाब है जो बौद्ध पोखर कहलाता है। इसके पास एक ग्राम-देवता का मंदिर है। टील्हे के पास गुलाम हुसेन शाह की करीब डेढ़ सौ वर्ष की पुरानी दरगाह है।

सिंघाबिनी—यह गाँव सुगौली से ७ मील उत्तर है। गाँव से आधा मील पच्छिम एक ऊँचा टील्हा है जिसे गाँव के लोग ऊँचाडीह कहते हैं। यह एक पुराने किले का भग्नावशेष समझा जाता है। इसके चारों कोनों पर ऊँचा स्थान है जो शायद किले के बुर्ज की जगह हो। यहाँ एक पुरानी सड़क है। अनुमान किया जाता है कि यहाँ कभी किसी राजा का सिंहासन रहा होगा। जिससे इस स्थान का नाम सिंघासिनी पड़ा।

सिमराँव—जिले की उत्तरीय सीमा पर घोड़ासहन रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पर यह एक गाँव है। गाँव के जिस भाग में मिथिला के सुप्रसिद्ध सिमराँव राजवंश के महल आदि का भग्नावशेष है, वह नेपाल राज्य की सीमा के अन्दर पड़ गया है। सिमराँव नगर समानान्तर चतुर्भुज के रूप में था और दोहरी दीवाल से घिरा हुआ था। बाहर की दीवाल का घेरा १४ मील और भीतर की दीवाल का घेरा १० मील था जिनके चिह्न अब भी मौजूद हैं। पूरब और पच्छिम की ओर खाई के चिह्न भी नजर आते हैं। बीच में किला, महल और मंदिर आदि के भग्नावशेष हैं। नगर के उत्तर कोतवाली, चौतारा स्थान पर का टील्हा किला और उसके बीच का रनिवास नामक टील्हा महल समझा जाता है। नगर के भीतर मजबूत बनी हुई सड़कों के चिह्न भी मालूम पड़ते हैं। पास में ही इसरा नामक एक तालाब है। यहाँ दो मठ भी हैं; लेकिन ये हाल के बने मालूम पड़ते हैं।

सीताकुंड—पिपरा रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पर यह एक गाँव है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है। यह किला करीब-करीब वर्गाकार में था और इसकी हर तरफ की लम्बाई ४५० फीट थी। इसके चारों कोनों और हरेक फाटक पर गुम्बज थे। किले की दीवाल २१½ फीट मोटी थी। बाहर १० फीट की और भीतर ३ फीट की ईंट की दीवाल बनाकर तथा बीच में ८½ फीट मिट्टी डालकर दीवाल की मोटाई २१½ फीट बनायी गयी थी। पूरब, पच्छिम और दक्षिण की ओर एक फाटक और उत्तर की ओर दो फाटक थे। जहाँ-तहाँ खाई के चिह्न भी नजर आते हैं। किले के बीच एक कुंड है जो सीताकुंड कहलाता है। कहते हैं, यहाँ सीताजी ने स्नान किया था। यहाँ रामनवमी में मेला लगता है।

सुगौली—यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जंक्शन है। सन् १८१५ में नेपाल के साथ अँगरेजों की संधि इसी स्थान पर हुई थी। अन्तिम नेपाल-युद्ध के समय जेनरल ऑकटरलोनी ने अपना सदर आफिस यहीं बनाया था। उसके बाद से यहाँ अँगरेज सेना की छावनी रहने लगी। १८५७ में सिपाही-विद्रोह में यहाँ के प्रायः सभी यूरोपियन मार डाले गये थे।

यहाँ करीब १५० वर्ष का पुराना एक मंदिर है। सुगौली में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५५,४३३ है। इसमें ४४,८५७ हिन्दू, १०,५६६ मुसलमान और ७ ईसाई हैं।

बेतिया सबडिविजन

बेतिया सबडिविजन, जो चम्पारण जिले का उत्तरीय भाग है, २६°३६' और २७°३१' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३°५०' और ८४°४६' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल २०१३ वर्गमील और जनसंख्या ६,०६,८९८ है।

इसमें सिर्फ एक बेतिया शहर और १,२८६ गाँव हैं। इस सब-डिविजन में बेतिया, जोगापट्टी, मझौलिया, सिकटा, बगहा, धनहा, शिकारपुर, रामनगर, मैनाटाँड़ और लौरिया, ये १० थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

बेतिया—यह शहर २६° ४८' उत्तरीय अक्षांश और ८४°३०' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर, दो हाई स्कूल, अस्पताल, म्युनिसिपैलिटी और रेलवे स्टेशन हैं। यह व्यापार का भी केन्द्र है। यह शहर क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों ही में मोतिहारी से बड़ा है। सन् १९३१ के गणनानुसार यहाँ २७,९४१ आदमी रहते हैं जिनमें १६,७२३ हिन्दू, ९,४९५ मुसलमान, १,७१३ ईसाई, ९ सिक्ख और १ अन्य धर्म के लोग हैं। राँची और जमशेदपुर को छोड़ शहर के अन्दर इतने अधिक ईसाई बिहार के किसी भी शहर में नहीं हैं। सन १७४५ से ही यहाँ ईसाई मिशन कायम है। पिछली दो शताब्दी से बेतियाराज-वंश की यहाँ राजधानी रही है। यहाँ मुसलमानों के कितने ही हमले हुए हैं। १८वीं सदी के अन्त में भी बेतिया एक प्रधान स्थान था।

बेतिया थाने की जनसंख्या २,२५,४९७ है। इसमें १,८२,६४५ हिन्दू, ४०,०२० मुसलमान, २,८१९ ईसाई और १३ अन्य जाति के लोग हैं।

बेतिया-राज—यह राज १,८२४ वर्गमील में मुख्यतः बेतिया सबडिविजन के अन्दर फैला हुआ है। यह राजवंश करीब ३०० वर्षों से कायम है और इस वंश के लोग भूमिहार ब्राह्मण हैं। स राजवंश के संस्थापक उज्जैन सिंह बताये जाते हैं। इनके लड़के गजसिंह को बादशाह शाहजहाँ से राजा की उपाधि मिली थी। मुगल साम्राज्य के पतन के समय १८वीं सदी में इस राजवंश का नाम प्रसिद्ध हुआ। यहाँ के राजे स्वतन्त्र बन बैठे

थे। १७२९ ई० में अलीवर्दीखाँ ने यहाँ चढ़ाई की और राजा से अधीनता स्वीकार करायी। इसके बाद १७४८ ई० में राजा दरभंगा के विद्रोही अफगानों से मिल गया और अलीवर्दीखाँ के चढ़ाई करने पर अफगान-सरदार के स्त्री-बच्चों को अपने यहाँ शरण दी। १७५९ ई० में केलोड ने बेतिया पर चढ़ाई कर राजा को दबाया। सन् १७६२ में मीरकासिम ने आक्रमण कर इसके किले को ले लिया। १७६६ ई० में फिर सर राबर्ट बारकर ने राज पर हमला कर यहाँ अँगरेजी आधिपत्य जमाया। इस समय युगलकेश्वर सिंह यहाँ के राजा थे। लगान बाकी पड़ जाने पर अँगरेजों के साथ इनका झगड़ा हो गया और ये राज से हटा दिये गये; लेकिन जब राज का काम चलना बन्द हो गया, तो ये फिर बुलाये गये और इनको परगना मझवा और सिमराँव दिया गया। बाकी हिस्सा इनके चचे के भाई श्रीकृष्ण सिंह और अवधूत सिंह को मिला जिससे मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत शिवहर-राज कायम हुआ। युगलकेश्वर सिंह के बाद वीरकेश्वर सिंह और उनके बाद आनन्दकेश्वर सिंह राजा हुए। आनन्दकेश्वर सिंह को लार्ड विलियम ेंटिक ने महाराजा बहादुर की उपाधि दी। इनके बाद नवलकेश्वर सिंह हुए। इनके मरने पर राजेन्द्रकेश्वर सिंह राजा हुए। १८५७ के विद्रोह में अँगरेजी सरकार को मदद करने के कारण इनको और इनके लड़के हरेन्द्रकेश्वर सिंह को महाराजा बहादुर की उपाधि मिली इनके निःसन्तान मर जाने पर राज कोर्ट-आफ-वार्ड्स के प्रबन्ध में चला गया और इसकी अधिकारिणी एक विधवा रानी रहीं। राज की तहसील करीब १८ लाख की है।

चखनी—दे० बगहा।

चानकीगढ़—रामनगर रेलवे स्टेशन से ६ मील पूरब

चानकी नामक एक गाँव है। यहाँ एक टील्हा है जिसे लोग चानकीगढ़ या जानकीगढ़ कहते हैं। यह टील्हा २५० फीट लम्बा और ९० फीट ऊँचा है। लोग कहते हैं कि यह राजा जनक का किला था। आज से करीब ५० वर्ष पहले बेतिया के राजा ने यहाँ खुदाई की थी तो कुछ ताम्बे के सिक्के आदि मिले थे।

चुहरी—यह गाँव बेतिया से ६ मील उत्तर है। तिब्बत और नेपाल से भगाये हुए ईसाई मिशन के लोग सन् १७६९ में यहाँ आकर ठहरे थे और बेतिया के राजा ने उन्हें आश्रय दिया था। यहाँ उनके अनाथालय और लड़के-लड़कियों के लिये स्कूल चल रहे हैं।

जानकीगढ़—दे० **चानकीगढ़**।

जोगापट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५८,९०३ है जिसमें ५१,४७५ हिन्दू और ७,४२८ मुसलमान हैं।

त्रिवेणी घाट—जिले के बिल्कुल उत्तर-पच्छिम कोने पर, जहाँ गंडक नदी जिले को छूती है, इस नदी पर यह एक घाट है। नदी की दूसरी ओर नेपाल राज्य में त्रिवेणी नामक गाँव है। गंडक, पंचनद और सोनाह, ये तीन नदियाँ यहाँ मिली हैं, इस कारण इस स्थान का नाम त्रिवेणी पड़ा। हिन्दू इसे पवित्र स्थान समझते हैं। कहते हैं कि गज और ग्राह की लड़ाई यहीं हुई थी। कुछ लोग हरिहरक्षेत्र (सोनपुर) में इस लड़ाई का होना बताते हैं; लेकिन त्रिवेणी में ही इस स्थान का होना अधिक सम्भव मालूम पड़ता है। यहाँ माघ की संक्रान्ति में मेला लगता है। यहाँ सीताजी का एक मंदिर है। कहते हैं कि सीताजी ने यहीं से अपने पुत्र लव-कुश को राम से लड़ते हुए देखा था।

पास के भैंसालोटन गाँव में त्रिवेणी नहर का सदर दफ़्तर है।

दरवाबारी—दे० बावनगढ़ी।

देवर—बेतिया सबडिविजन के उत्तर-पूरब कोने पर यह एक गाँव है। यहाँ एक मंदिर है जहाँ कार्तिक पूर्णिमा और राम-नवमी में मेला लगता है।

धनहा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,०५,७६८ है, जिसमें ९३,२०० हिन्दू, १२,५६४ मुसलमान और ४ ईसाई हैं।

पतजिरवा—बेतिया से ८ मील पच्छिम यह एक गाँव है। यहाँ एक मंदिर है जो दुर्विजय सिंह नामक एक सरदार द्वारा बनवाया बताया जाता है। कहते हैं, उसके लड़ाई में मरने पर उसकी स्त्री सती हो गयी थी। उसी की यादगारी में पतजिरवा तप्पा के लोग न खाट पर सोते थे और न पक्का घर बनवाते थे।

बगहा—यह स्थान जिले की उत्तर-पच्छिम सीमा के पास गण्डक के किनारे है। यहाँ हाई स्कूल, अस्पताल, थाना और रेलवे स्टेशन हैं। यहाँ से दो मील पर चखनी गाँव में ईसाइयों का अड्डा है। बगहा थाने की जनसंख्या १,२८,९९० है। इसमें १,१४,२६० हिन्दू, १४,३१६ मुसलमान, ४०६ ईसाई और ८ अन्य धर्म के लोग हैं।

बावनगढ़ी—जिले के उत्तर-पच्छिम कोने की ओर त्रिवेणी से ५ मील की दूरी पर दरवाबारी नामक एक गाँव है। दरवाबारी का अर्थ महल का द्वार है। इस गाँव के उत्तर ५२ गढ़ और ५३ बाजार के भग्नावशेष हैं। इसी को बावनगढ़ी और तिरपन बाजार कहते हैं। विन्सेन्ट स्मिथ ने इसे रामग्राम अनुमान किया था जिसे चीनी यात्री फाहियान और ह्वेन् च्वाङ् (ह्वेनसन) ने देखा था। कुछ लोग इसका सम्बन्ध पाण्डव के वनवास से बताते हैं। कुछ इसे सिमराँव राजवंश के समकालीन एक सरदार बाओर

का निवास-स्थान समझते हैं। यह भी बताया जाता है कि दक्षिण बिहार के भीम सिंह आदि कुछ सरदारों ने यहाँ अपना राज्य कायम किया था। नट लोगों के एक गीत से मालूम पड़ता है कि बावनगढ़ी के राजा दो भाई थे—जासोर और टोरर। जासोर को अल्ला और रूदल तथा टोरर को झगरू और जामन ये दो लड़के थे। एक झगड़े में जासोर ने टोरर को मार दिया। इसपर झगरू ने जासोर को मारकर अपने पिता का बदला लिया। जासोर की स्त्री अपने दोनों बच्चों को लेकर भाग गयी। सयाने होने पर अल्ला ने महुआगढ़ में निवास-स्थान बनाया और झगरू से लड़कर उसे मार डाला।

मझौलिया—थाने का सदर आफिस है। यहाँ ६०७२१ हिन्दू, १५,४७२ मुसलमान, ५ ईसाई हैं।

मैनाटाँड़—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३७,७२५ आदमी रहते हैं। इसमें २८,५१४ हिन्दू, ८,६०१ मुसलमान, ४८५ आदिम जाति, १२२ ईसाई और ३ अन्य जाति के लोग हैं।

रामनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। ये अपने को चित्तौर के रतन सिंह के वंशज बताते हैं। रतन सिंह ने नेपाल आकर यहाँ छोटी-सी जमींदारी हासिल की थी। इनकी ६ ठो पीढ़ी के राजा मुकुन्द सिंह ने अपनी जमींदारी अपने चार भाइयों में बाँट दी। पृथ्वीपाल सिंह बटवाल के, लंगी सिंह मकवानपुर के, राजसिंह राजपुर के और बुरंगी सिंह तेलाहु के राजा हुए। बुरंगी सिंह से ही रामनगर-राजवंश कायम हुआ। इस वंश के लोग भागकर रामनगर चले आये, तब से बराबर यहीं हैं। बादशाह आलमगीर ने सन् १६७६ में यहाँ के सरदार को राजा की उपाधि दी थी। अँगरेजी सरकार ने सन् १८६० में इस उपाधि को स्वीकार किया।

रामनगर थाने की जनसंख्या ४२,१२५ है, जिसमें ३३,७६२ हिन्दू, ८,३५३ मुसलमान और १० ईसाई हैं।

रामपुरवा—जिले के बिलकुल उत्तर भाग में गौनहा स्टेशन से कुछ दूर पर यह एक गाँव है। यहाँ अशोक का एक स्तम्भ है। इस स्तम्भ की चोटी पर का व्यास २६¾ इंच है। ठीक यही व्यास लौरिया नन्दनगढ़ के स्तम्भ की चोटी का भी है। स्तम्भ के आस-पास बौद्धकालीन टील्हे हैं।

लौरिया नन्दनगढ़—बेतिया से १४ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस भी है। यहाँ अशोक का एक सुरक्षित स्तम्भ, एक बड़े स्तूप का भग्नावशेष और कुछ पुरानी समाधि के टील्हे हैं। स्तम्भ-दण्ड ३२ फीट और ९½ इंच लम्बा है। इसके आधार पर का व्यास ३५.५ इंच और चोटी पर का व्यास २६.२ इंच है। इसका कलश ६ फीट और १० इंच लम्बा है। कलगी पर दाना चुगते हुए राजहंस की पंक्ति चित्रित है। ऊपर सिंह की मूर्ति खड़ी है। सिंह का मुँह कुछ टूटा हुआ है और स्तम्भ-दण्ड पर ऊपर में तोप के गोले की निशानी है। इसपर १६६०–६१ ई० का लिखा औरंगजेब का नाम भी है। फारसी अक्षरों में साफ लिखा है—महिउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब पादशाह आलम-गीर गाजी सन् १०७१। बखरा और अरेराज के स्तम्भ से यह स्तम्भ बहुत पतला और हलका है। इसपर अशोक के लेख अक्षरशः वैसे ही हैं जैसे अरेराज के स्तम्भ पर हैं। नागरी अक्षर में भी सम्वत् १५६६ में इसपर कुछ लिखा गया था। एक जगह लिखा है—नृप नारायण सुत नृप अमर सिंह। इसकी तारीख नहीं दी हुई है। अँगरेजी में भी १७९२ ई० का लिखा एक अँगरेज का नाम है।

स्तम्भ से पौन मील दूर नन्दनगढ़ नामक टील्हे पर एक छोटे-से मंदिर का चिह्न है। विन्सेन्ट स्मिथ ने इस टील्हे को बुद्ध को चिता के भस्म पर बना हुआ स्तूप बताया है। लेकिन, डा० ब्लाच ने इसे पुराने किले का भग्नावशेष कहा है।

गाँव के उत्तर में तीन पंक्ति में १५ टील्हे हैं जो बहुत पुराने मालूम पड़ते हैं। एक टील्हे में एक चाँदी का सिक्का मिला था जो ईसा से भी हज़ार वर्ष पहले का था। जेनरल कनिंघम ने इन टील्हों को ईसा के ६०० से १००० वर्ष पहले तक के राजाओं की समाधि समझी थी, जिसे उसने बुद्ध के उल्लेख से भी साबित करने की चेष्टा की है। डा० ब्लाच आदि की खोदाई से भी यही बात प्रमाणित होती है। लौरिया नन्दनगढ़ से पच्छिम कई मील तक सैकड़ों छोटे-छोटे टील्हे हैं जो समाधिस्थान जान पड़ते हैं।

लौरिया थाने की जनसंख्या ५७,३२१ है। इसमें ४४,५३४ हिन्दू, १२,७५५ मुसलमान और ३२ ईसाई हैं।

शिकारपुर थाने में ९२,३४० हिन्दू, २३,६८१ मुसलमान और ५९ ईसाई तथा सिकटा थाने में ४३,८९४ हिन्दू, १४,०८८ मुसलमान और ९ अन्य जाति के लोग हैं। ये दोनों अपने अपने थाने के सदर हैं।

जिले की कुछ प्रमुख जातियों की जनसंख्या (सन् १९३१)

ग्वाला २,०९,८७५; चमार १,५५,४४४; कोयरी १,१६,५७६; कुरमी १,००,९८१; जोलाहा ९७,५९८; दुसाध ९४,२४२; ब्राह्मण ९१,९४१; राजपूत ८२,६२५; काँदू ७६,१९९; मल्लाह ७५,३२७; तेली ६९,५४८; भूमिहार ब्राह्मण ५३,१६१; मुसहर ४६,६३०; थारू ३७,३३८; ताँती ३२,५७६; कमार ३२,४४६; कायस्थ २७,६९७; हजाम २६,१०५; धोबी २३,२०१; कुम्हार २१,९१४; धानुक १२,६६२; कहार १०,५२३; बरही ९,२३१; डोम ७,१८६; ओराँव ६,९४७; माली ५,५१६; बनिया ५,०६८; हलालखोर ३,२०९; पासी ३,१४७ और केवट २,७२५।

भागलपुर जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

यह जिला २४° ३३' और २६° ३४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८६° १९' और ८७° ३१' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इस जिले का आधा भाग गंगा के उत्तर और आधा गंगा के दक्षिण है। प्रान्त के अन्दर भागलपुर और मुँगेर ये ही दोनों जिले गंगा के दोनों ओर पड़ते हैं।

इस जिले के उत्तर में नेपाल राज, पूरब में गंगा से उत्तर पूर्णिया जिला तथा गंगा से दक्षिण संथाल परगना, दक्षिण में फिर संथाल परगना तथा पच्छिम में दरभंगा और मुँगेर जिले हैं।

इस जिले का क्षेत्रफल ४२२६ वर्गमील है। इसकी लम्बाई उत्तर-दक्षिण १४० मील और चौड़ाई पूरब से पच्छिम १४ से ४५ मील तक है। यह जिला अपनी कमिश्नरी के मुँगेर जिले से बड़ा पर पूर्णिया और संथाल परगने से छोटा है।

प्राकृतिक बनावट

गंगा नदी इस जिले को करीब-करीब दो बराबर भागों में बाँटती है। पिछले सर्वे-सेटलमेंट के अनुसार उत्तर भाग का क्षेत्र-फल २,३७४ वर्गमील और दक्षिण भाग का १,७८४ वर्गमील है। उत्तर भाग तिरहुत की समतल भूमि है जो पूरब कोशी तक चली गयी है। इसका बहुत-सा हिस्सा हर साल हिमालय पहाड़ के दक्षिणी भागों से निकलनेवाली नदियों तथा गंगा की बाढ़ से

डूब जाता है। बाढ़ के कारण बहुत-सी छोटी-छोटी धारें बन गयी हैं, जो इन नदियों को एक दूसरी से मिलाती हैं। इन धारों से सिंचाई का काम मजे में किया जा सकता है। जिले के इस हिस्से में ऊँची जमीन बहुत थोड़ी है। जहाँ-तहाँ छोटे-बड़े चौर बहुत हैं। पूरब को ओर जहाँ कोशी की बाढ़ आती है जमीन बालूभरी है। कोशो की धाराओं के बदलते रहने से यहाँ की जमीन की हालत बदलती रहती है।

जिले के दक्षिणी हिस्से की दक्षिणी सीमा पर कुछ पहाड़ियाँ हैं। बाकी सारा दक्षिणी भाग समतल भूमि है। हाँ, जहाँ-तहाँ छिटफुट छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। संथाल परगने के पहाड़ों से निकलनेवाली छोटी-छोटी धाराएँ जिले के इस भाग में आती हैं। इन धाराओं में चानन या चन्दन नदी मुख्य है। इस भाग में उत्तर की ओर कुछ दूर तक गंगा के किनारे की जमीन कुछ ऊँची और जहाँ-तहाँ पथरीली है। जिले का प्रधान नगर भागलपुर इसी जगह बसा हुआ है। भागलपुर के २० मील दक्षिण जमीन कुछ-कुछ ऊँची हो चली है और पहाड़ी भाग शुरू हो गया है।

नदियाँ

जिले की नदियों में गंगा और उसकी सहायक नदियाँ हैं। उत्तर की ओर हिमालय के दक्षिण भाग से निकलनेवाली कई नदियाँ गंगा में मिलती हैं। ये थोड़ा पूरब की ओर झुकाव रखती हुई उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। इनमें अधिकांश घघरी में मिली हैं और घघरी कोशी में जाकर मिलती है। इन नदियों में तिलयुगा, बाती, धिमरा, तलवा, परवान, घूसन, चलौनी, लोरन, कटना, दाऊद और घघरी मुख्य हैं। दक्षिण की नदियाँ केवल बरसात में जल से भरी रहती हैं, और दिनों में वे बालूमय रहती हैं। इनमें एक चाँदन ही उल्लेख-योग्य है।

गंगा—गंगा नदी इस जिले में ६० मील तक गयी है। यह पहले-पहल सुलतानगंज के पास तुलसीपुर में जिले को छूती है और पीरपैंती के पास इसे छोड़ देती है। सुलतानगंज से यह पूरे तौर पर जिले में प्रवेश करती है। यहाँ नदी के बीच एक छोटा-सा पहाड़ उगा हुआ है और उसपर पेड़-पौधे और मन्दिर हैं जिससे दृश्य बहुत सुन्दर हो गया है। यहाँ से यह नदी कुछ उत्तर की ओर बहती हुई भागलपुर जाती है और वहाँ से दक्षिण की ओर मुड़कर कहलगाँव पहुँचती है जहाँ कुछ पहाड़ियाँ हैं। यहाँ से यह फिर कुछ उत्तर की ओर जाती हुई पत्थरघाट पहुँचती है। इसी के पास कोशी तथा उत्तर की अन्य नदियों का सम्मिलित जल इसमें मिलता है। गंगा में सदा बड़े-बड़े नाव-जहाज चलते रहते हैं। इसकी औसत चौड़ाई तीन मील है; पर गर्मी में सिर्फ आधे मील की चौड़ाई रह जाती है। गंगा के उत्तर किनारे के ५ से १० मील तक का भाग और दक्षिण किनारे के जहाँ-तहाँ एक से दो मील तक का भाग बाढ़ के समय पानी में डूब जाता है। सुलतानगंज और कहलगाँव के पास गंगा के उत्तर-वाहिनी होने के कारण धार्मिक दृष्टि से इन स्थानों का महत्व बढ़ा हुआ है। दूर-दूर से लोग यहाँ गंगा-स्नान करने आते हैं।

तिलयुगा—यह नेपाल की तराई से निकलती है और नारेदिगर परगने के उत्तर में इस जिले में प्रवेश करती है। इसके बाद यह दरभंगा और भागलपुर जिले के बीच सीमा का काम करती हुई परगना मलहनी गोपाल के दक्षिण-पच्छिम कोने तक जाती है। फिर, यह भागलपुर जिले के अन्दर घुसकर बाहर हो जाती है और मुँगेर जिले में फरकिया परगने के अंदर आती है। इसके बाद यह बेलहर के पास भागलपुर जिले में

प्रवेश कर कोशी से मिल जाती है। नारेदिगर परगने में इससे कई धाराएँ निकली हैं जिनसे सिंचाई का काम होता है। रसियारी के पास बालन नदी और तिलकेश्वर के पास धिमरा नदी इससे मिलती हैं। यह कटना नदी द्वारा तलवा, परवान, धूसन और तोरन नदियों का सम्मिलित जल पाती है।

बती—यह नदी नारेदिगर परगना के उत्तर से निकलती है और गोपालपुर के पास तिलयुगा से मिलती है।

धिमरा—यह नेपाल के पहाड़ से निकलती है। शुरू में भागलपुर जिले के धाफर और नारेदिगर परगने को अलग करती है। फिर, मलहनी गोपाल और उत्तरखंड परगनों से होकर बहती हुई यह तिलकेश्वर के पास तिलयुगा से मिलती है। इसमें जल बहुत कम रहता है। गर्मी के दिनों में बीच में यह जहाँ-तहाँ सूख जाती है।

तलवा—पहले जिले के अन्दर तलवा नदी का स्थान बहुत मुख्य था और इसकी पुरानी धारा एक दूसरी जगह थी। बरसात के बाद इसका ऊपरी हिस्सा सूख जाता है और इसमें खेती होती है। परवान और लोरन नदियों के मिलने पर इन सबों का एक नया नाम कटना हो जाता है।

परवान और धूसन—ये दो नदियाँ नारेदिगर परगने के दक्षिण-पूरब कोने से निकलती हैं और एक-सवा मील की दूरी पर बहती हुई सिंहेश्वर स्थान में मिल जाती हैं। यहाँ धूसन अपना नाम खो देती है और धारा का नाम परवान रह जाता है। आगे चलकर कई नदियों के मिलने से सम्मिलित धारा का नाम कटना हो जाता है। परवान में नावें चलती हैं।

चलौनी—यह हरावत परगने से निकलती है। आगे चलकर इससे कई धाराएँ फूट निकली हैं। अन्त में यह पंडुआ गाँव

के पास लोरन नदी से मिल गयी है। यह सिंचाई के काम में बहुत आती है।

लोरन—यह निशंकपुर कुरहा परगने की पूर्वी सीमा पर से निकलती है। इसके १२ मील चलने के बाद चलौनी नदी इससे आ मिली है। आगे चलकर परवान आदि नदियों के मिलने से सम्मिलित धारा का नाम कटना हो गया है।

कटना—यह नदी तलवा, परवान और लोरन नदियों के मिलने से बनी है। १२ मील चलने के बाद यह तिलयुगा में मिल जाती है। इसमें छोटी-छोटी नावें सब दिन चल सकती हैं।

दाउस—यह नदी नेपाल के मोरंग नामक स्थान से निकली हुई समझी जाती है। लेकिन, अब तो यह हरून और कुसी नामक नदियों की सम्मिलित धारा से निकली हुई एक शाखा मालूम पड़ती है। यह घघरी में जाकर मिली है।

घघरी—तिलयुगा नदी का आखिरी हिस्सा ही घघरी कहलाता है। कटना नदी द्वारा उत्तर भाग की बहुत-सी धाराओं का पानी इसमें आ मिलने से इसका नया रूप हो जाता है; इसलिये इसे एक अलग नाम देने की जरूरत पड़ जाती है। यह फरकिया और छै परगना होती हुई कोसी में आ गिरती है।

चानन—जिले के दक्षिण की पहाड़ी नदियों में चानन या चन्दन सबसे बड़ी है। यह देवघर के पास से निकलती है। रास्ते में बहुत-सी धाराएँ इसमें आ मिली हैं। अन्त में यह कई धाराएँ होकर गंगा में मिलती है।

कोशी—उत्तर भाग में बहुत दूर तक यह नदी भागलपुर और पूर्णिया जिले की सीमा का काम करती है। यह एक बड़ी नदी है और इसमें नावें चलती हैं। नेपाल के पूरब भाग में सात धाराओं के मिलने से यह नदी बनी हुई है। इस स्थान को सप्त-

कौशिकी कहते हैं। इसकी सात धाराएँ हैं—(१) सान, (२) भोटिया, (३) तम्बा, (४) दूध, (५) लिक्षु, (६) अरुण, और (७) ताम्बर। यह नदी वाराह-क्षेत्र में पहाड़ को छोड़ती है और यहीं इसका नाम कोशी पड़ता है। नेपाल से बाहर दक्षिण की ओर यह करीब ८४ मील चलकर गंगा में मिल गयी है। अकबर बादशाह के वक्त में यह राजमहल के पास गंगा में मिलती थी । कटिहार के पास इस नदी पर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का पुल है । यह नदी अपनी धारा बराबर बदलती रहती है। रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत आदि ग्रंथों में कोशी का जिक्र आया है। कहते हैं कि कोशी के किनारे विश्वामित्र मुनि का आश्रम था। लेकिन, मुनि का आश्रम बक्सर के पास भी बताया जाता है।

जलवायु और स्वास्थ्य

मामूली तौर पर इस जिले की जलवायु अच्छी है। जनवरी से मई तक औसत गर्मी ६२° से ८६° तक रहती है। वर्षा साधारण तौर पर साल में करीब चालीस-पचास इंच तक होती है। हवा खासकर पूर्वी और पच्छिमी है। पच्छिमी हवा सूखी और पूर्वी हवा तर रहती है। कातिक-अगहन से जाड़ा शुरू होकर माघ-फागुन तक रहता है। चैत से गर्मी पड़ने लगती है और जेठ तक रहती है। सावन-भादो में वर्षा होती है।

जिले का दक्षिणी भाग उत्तरी भाग की अपेक्षा अधिक स्वास्थ्यप्रद है। उत्तर का बहुत बड़ा हिस्सा कोशी आदि के पानी से भरा रहता है और जमीन बहुत सर्द रहती है; इससे उधर मलेरिया बहुत हुआ करता है। किशुनगंज थाने की आबोहवा

तो और भी खराब है ; वह तो मलेरिया का अड्डा ही है। दक्षिण की जमीन सूखी रहती है और मलेरिया कम होता है।

लोगों की साधारण बीमारी बुखार है। लेकिन, हैजा, प्लेग और चेचक से भी बहुत लोग मरते हैं। चेचक से बचने के लिये सरकार की ओर से टीका देने का प्रबन्ध है; फिर भी लोगों को चेचक की बीमारी बहुत होती है। बड़े शहरों में म्युनिसिपैलिटी की ओर से सफाई का प्रबन्ध रहता है; पर गाँवों में कोई प्रबन्ध नहीं है। रोगियों के इलाज के लिये सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रबन्ध में २७ अस्पताल थे। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में अन्धों की संख्या १,४६८, बहरे-गूँगों की संख्या ७६०, कोढ़ियों की संख्या ७२६ और पागलों की संख्या १६३ है।

जानवर

जिले में मवेशियों की दशा साधारण है। यहाँ के मवेशी अक्सर छोटे और कमजोर पाये जाते हैं। साधारणतः चारा का प्रबन्ध अच्छा नहीं है। हाँ, जिले के उत्तर भाग में चारा कुछ अधिक पाया जाता है। पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, घोड़े, बकरियाँ आदि मुख्य हैं। डोम, दुसाध और मुसहर सूअर पालते हैं। जहाँ-तहाँ भेड़ भी पाली जाती हैं।

जंगली जानवर जिले के उत्तरी और दक्षिणी, दोनों भागों में पाये जाते हैं। पहले जंगली हाथी यहाँ बहुत पाये जाते थे ; पर अब ये नहीं मिलते। जंगली जानवरों में बाघ, चीता, सूअर, भालू, भेड़िया, हरिण, बनबिलाव, खिटास, गीदड़, लोमड़ी, साही, हनुमान, बन्दर आदि हैं। हनुमान जिले के केवल दक्षिण भाग में पाये जाते हैं और बहुतायत से पाये जाते हैं। जलचर

जीवों में घड़ियाल, मगर (बोच), सोंस, मछलियाँ आदि हैं।

भागलपुर और सुपौल में जानवरों का अस्पताल है। बाँका और मधेपुरा में भी जनावरों के इलाज का प्रबन्ध है।

इतिहास

प्राचीन काल—जहाँ इस समय भागलपुर जिले का प्रधान शहर भागलपुर बसा हुआ है वहाँ बहुत प्राचीन काल में सुप्रसिद्ध अंग राज्य की राजधानी थी। अथर्व वेद के पंचम कांड में अंग राज्य का वर्णन आया है। इसके बाद हम वायु-पुराण, विष्णु-पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में इस देश का वर्णन पाते हैं। वायु-पुराण से मालूम होता है कि इस देश को उत्तर में गंगा नदी मिथिला देश से और उत्तर-पच्छिम में क्यूल नदी कीकट अर्थात मगध देश से अलग करती थी। दक्षिण में खड़ग-पुर की पहाड़ी तक और पूरब में राजमहल तक इसका विस्तार था।

बौधायन धर्मसूत्र और स्मृति-ग्रन्थों में अंग, वंग, कलिंग और मगध देश में जाने का निषेध लिखा है और जाने पर प्रायश्चित्त का विधान है। इस सम्बन्ध में यह श्लोक प्रसिद्ध है—"अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्र मगधेषु च, तीर्थयात्रा विना गच्छन् पुनः संस्कारमर्हति"। मालूम नहीं इस निषेध का ठीक कारण क्या था। कुछ लोग कहते हैं कि इन प्रदेशों में यज्ञ-सामग्री नहीं मिलने से आर्यों के वहाँ जाने की मनाही थी। यह भी अनुमान किया जाता है कि यहाँ अनार्यों का बोलबाला रहने से उनके द्वेषवश या घृणावश आर्यों ने अपने लिये यह नियम बनाया हो। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य लोग अनार्यों और अनार्यों के देशों को बहुत घृणा की दृष्टि से देखते थे। लेकिन, मालूम पड़ता है, यह बात अधिक दिनों तक नहीं रही।

आर्य लोग रामायण-काल के बहुत पूर्व ही इन प्रदेशों में बस गये थे, जिसका रामायण में काफी जिक्र है।

अंग देश की राजधानी का नाम चम्पा या चम्पा मालती था। इसका स्थान अब ठीक-ठीक पहचान में नहीं आता। कुछ लोग कहते हैं कि प्राचीन चम्पा के स्थान पर ही आज भागलपुर का चम्पानगर महल्ला बसा हुआ है। बहुतों का यह भी विश्वास है कि भागलपुर में जहाँ कर्णगढ़ नामक टोल्हा है वहीं प्राचीन चम्पा नगरी थी। कहा जाता है कि महाभारत-काल के सुप्रसिद्ध राजा कर्ण का गढ़ यहीं था, जिससे इस स्थान का नाम कर्णगढ़ पड़ा। कनिंघम ने भागलपुर से २४ मील पूरब पीरपैंती रेलवे स्टेशन से दक्षिण बारापीरोजपुर के पास चम्पा नामक एक ग्राम को प्राचीन चम्पा बताया है। लेकिन, वास्तव में भागलपुर के पास ही प्राचीन चम्पा का होना ठीक मालूम होता है।

अंग राज्य की स्थापना किस प्रकार हुई, इसके सम्बन्ध में विष्णु-पुराण में लिखा है कि ययाति के वंश में दीर्घतमा ऋषि के पाँच पुत्र अंग, वंग, कलिंग, सूक्ष्म और पौंड्र ने अपने-अपने नाम पर पाँच राज्य कायम किये। महाभारत और हरिवंश बताते हैं कि दीर्घतमा ने बलि नामक राक्षस-राज की स्त्री से इन पुत्रों को पैदा किया था। मनुसंहिता में लिखा है कि अंग और पौंड्र अपने पद से गिरते-गिरते शूद्र हो गये थे। जो हो, यह निर्विवाद है कि अंग राज्य अंग द्वारा स्थापित हुआ था। विष्णु-पुराण आगे लिखता है कि अंग के वंश में क्रम से पार, दिविरथ, धर्मरथ, चित्ररथ और दशरथ हुए। दशरथ रोमपाद नाम से प्रसिद्ध थे। कहते हैं कि इन्होंने अपने मित्र कोशल नरेश दशरथ की कन्या शान्ता को पोष्यपुत्री बनाया था। शान्ता का

विवाह ऋष्यशृंग मुनि से हुआ था। विवाह के बाद मुनि राजा रोमपाद के दरबार में ही बहुत समय तक रहे। अंग राज्यान्तर्गत वर्तमान कजरा स्टेशन से ६ मील दूर खड्गपुर पहाड़ी के शृङ्गि ऋषि चोटी पर, जिसे महाभारत-काल में लोग ऋषि-गिरि कहते थे, ऋष्यशृंग का आश्रम था, यहाँ अब भी माघी पूर्णिमा में मेला लगा करता है। इन्होंने ही कोशल-नरेश दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। रामायण और महाभारत में इनकी कथा विस्तार से लिखी है। राजा रोमपाद को तरंग नामक पुत्र हुआ। तरंग के पुत्र पृथुलाक्ष और पृथुलाक्ष के पुत्र चम्प हुए। इन्होंने ही अपने नाम पर चम्पा नगरी बसायी। चम्प के वंश में क्रम से हार्थङ्ग, भद्ररथ, बृहद्रथ, बृहत्कर्मा, बृहद्भानु, बृहन्मना, जयद्रथ, विजय, धृति, धृतव्रत, सत्यकर्मा और अधिरथ राजा हुए।

अधिरथ ने ही कुमारी कुन्ती द्वारा सूर्य से उत्पन्न पुत्र कर्ण को काठ के बक्से में गंगा में बहते हुए पाया था। अधिरथ ने उन्हें अपना पोष्यपुत्र बनाया। कर्ण धनुर्विद्या में अत्यन्त निपुण हुए। अर्जुन को छोड़ इनसे बढ़कर उस समय दूसरा कोई धनुर्धारी नहीं था। ये दानी भी अद्वितीय हुए। महाभारत के सभापर्व में लिखा है कि राजसूय यज्ञ के अवसर पर दिग्विजय के लिये जब भीम हस्तिनापुर से पूरब की ओर आये थे तो उन्होंने अंग देश के राजा कर्ण को जीता था और अधीनता स्वीकार करने पर फिर राज्य वापस कर दिया था। इसके बाद भीम ने अंग के पड़ोसी राज्य मोदगिरि (वर्तमान मुँगेर) पर चढ़ाई कर वहाँ के राजा को युद्ध में मारा। मगध और अंग के साथ झगड़ा भी चला करता था। लेकिन, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन कर्ण का बहुत बड़ा सहायक और मित्र था। प्राग्ज्योतिषपुर

के राजा भगदत्त ने जब अपनी कन्या भानुमती का स्वयंवर किया था तो सभी निमन्त्रित राजाओं के सामने कर्ण ने मगध-नरेश जरासंध को परास्त कर भानुमती को जीता था और इसे दुर्योधन को दे अपने उपकार का बदला चुकाया था। कर्ण कुन्ती-पुत्र होने के कारण पाण्डवों के भाई थे। महाभारत की लड़ाई में श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की ओर से लड़ने के लिये इन्हें बहुत समझाया; लेकिन इन्होंने एक न मानी और पाण्डवों की जीत समझते हुए भी कौरवों की ओर से लड़कर अपने प्राण न्यौछावर किये। कर्ण का पुत्र वृषसेन भी लड़ाई में मारा गया।

महाभारत-काल के राजा कर्ण इतने प्रसिद्ध हुए कि पीछे बहुत-से राजाओं ने अपना नाम यही रखा। जो राजा वीर, पराक्रमी और दानी होता था, लोग उसे कर्ण कहते थे। बुकानन हैमिल्टन ने लिखा है कि मगध में कर्ण नाम के सात राजे हुए। जैन-सम्प्रदाय के अन्दर भी इस नाम का एक राजा हुआ जिसकी राजधानी भागलपुर ही में बतायी जाती है। कुछ लोग एक कर्ण को विक्रमादित्य का समकालीन बताते हैं जिनका गढ़ मुँगेर में था और जिनके विषय में नित्य सवा मन सोना दान करने की बात प्रसिद्ध है। सुलतानगंज में भी एक कर्णगढ़ है, मालूम नहीं यह किस कर्ण का बनवाया हुआ है।

अंग देश की जो सीमा थी वही आज भागलपुर जिले की सीमा नहीं है। लेकिन, अंग का बहुत बड़ा और मुख्य भाग इसी जिले के अन्दर है। इस जिले का उत्तरी भाग मिथिला में और दक्षिणी भाग अंग देश में पड़ता है; इसलिये भागलपुर जिले का इतिहास अंग और मिथिला के विशेष भागों के इतिहास से ही जाना जा सकता है। भारत का क्रमबद्ध इतिहास मगध के शिशुनाग-राजवंश के इतिहास से शुरू होता है। जब

मगध का बल बढ़ा तो कितने ही और प्रदेशों के साथ-साथ मिथिला और अंग भी मगध राज्य में मिल गये। तब से इन दो देशों के इतिहास की विशेष महत्ता नहीं रही। पाँचवीं सदी के आरम्भ में चीनी यात्री फ़ाहियान भारत के और भागों में घूमता हुआ यहाँ भी आया था। उसने चम्पा का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। ६३६ ई० में दूसरा चीनी यात्री य्वनूत्वाङ्ग (ह्वेनसन) यहाँ आया। वह इस जिले के अन्दर भागलपुर, कहलगाँव, बरारी आदि स्थानों में घूमा। उस समय चम्पा में माल नामधारी खेतौरियों का राज्य था।

मगध के नन्दवंश, मौर्य्यवंश, गुप्तवंश आदि के समय इस जिले की कोई विशेष उल्लेखयोग्य घटना का पता नहीं है। पालवंश के समय यहाँ विक्रमशिला में बौद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। भारत के चार प्रसिद्ध बौद्ध विश्वविद्यालयों में यह एक था। शेष तीन नालन्द, तक्षशिला और उदन्तपुरी के विश्वविद्यालय थे। पालवंशी राजाओं में गोपाल, धर्मपाल, देवपाल, नारायणपाल, महिपाल, गोविन्दपाल आदि कई प्रसिद्ध राजा हुए जो ७३० ई० से ११६९ ई० तक उत्तर भारत में राज करते रहे। कहते हैं कि गोपाल ने उदन्तपुरी (वर्तमान विहार शरीफ) में और धर्मपाल ने विक्रमशिला में विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इतिहासकारों ने चम्पा से थोड़ी ही दूर गंगा के दाहिने किनारे पहाड़ी स्थल पर विक्रमशिला का स्थान बताया है। इससे पता चलता है कि सुलतानगंज, कहलगाँव या पत्थरघट्टा में विक्रमशिला विश्वविद्यालय रहा होगा। कहते हैं, इस विश्वविद्यालय में २०० से अधिक अध्यापक और हजारों छात्र थे। इसके अन्दर १०७ बड़े भवन और ६ महाविद्यालय थे। यह विश्वविद्यालय चार सौ वर्षों तक कायम रहा और इसमें लंका,

इस समय भागलपुर शहर सरकार मुँगेर के अन्दर एक छोटा-सा स्थान था। १५८० ई० में जब बादशाह अकबर के विरुद्ध बंगाल के पठानों ने विद्रोह किया था तो ३० हजार घुड़सवारों के साथ विद्रोही लोग भागलपुर में ही ठहरे थे। अकबर के सेनापति टोडरमल ने मुँगेर में अपना अड्डा जमाकर इन विद्रोहियों को दबाया। टोडरमल ने स्थानीय जमींदारों को अपने प्रभाव में लाकर आसपास में मिलनेवाली सब रसद अपने यहाँ मँगवा ली। जब विद्रोही रसद के अभाव में भूखों मरने लगे तो वे तितर-बितर हो गये और बंगाल आसानी से अकबर के हाथ में आ गया।

कुछ दिनों के बाद कुतलू खाँ के अधीन पूर्वी देशों में फिर विद्रोह मचा। इसको दबाने के लिये अकबर ने मानसिंह को सेनापति और सूबेदार बनाकर यहाँ भेजा। मानसिंह ने राजमहल में, जो वर्तमान भागलपुर जिले की पूर्वी सीमा से कुछ ही दूर पर है, अपनी राजधानी बनायी। इनके महलों के भग्नावशेष अब भी वहाँ मौजूद हैं। पीरपैंती के पास मानगढ़ और बदलूगंज मानसिंह और उनके लड़के बादल के नाम पर ही बसे हुए हैं। १५९२ ई० में मानसिंह भागलपुर में ही सेना सजाकर यहाँ से उड़ीसा विजय के लिये गये थे। शाहजहाँ का लड़का शाहशुजा पूर्वी प्रान्त का सूबेदार था। मालूम पड़ता है, भागलपुर के साथ उसका विशेष सम्बन्ध रहा। यहाँ का शुजागंज, शुजानगर, तथा शुजापुर आदि उसी के नाम पर हैं। शुजा की लड़की और उसके अध्यापक की कब्रें भागलपुर में ही हैं।

अँगरेजी शासन—अँगरेजी काल में १७७७ और १७७८ ई० में दक्षिण की पहाड़ी जातियों ने इस जिले में बड़ा उपद्रव मचाया। यहाँ के कलक्टर क्लीवलैंड ने उन्हीं लोगों की एक पहाड़ी सेना तैयार कर उपद्रव शान्त किया। १८५७ ई० में

सिपाही-विद्रोह के समय यहाँ के कमिश्नर मि० यूल के प्रबन्ध से किसी तरह का उत्पात नहीं मचा। १८१२ ई० से करीब १८३२ ई० तक मुँगेर जिला भागलपुर के एक सबडिविजन की तरह रहा। १८३२ ई० में जब लगान की वसूली के लिये मुँगेर में एक सरकारी दफ्तर खुला तो वह एक स्वतन्त्र जिला हो गया। १८५५-५६ ई० में संथाल परगना भी एक अलग जिला कायम किया गया। १८७४ ई० में सखरबदी, दुररा, सिघौल, खड्गपुर और परतापपारा परगने तथा सबोनी और लखनपुर परगने के एवं लदवह और सेवाँवाँ तप्पे के कुछ हिस्से भागलपुर से मुँगेर में मिला दिये गये। १८३८ ई० में नारेदिगर, मलहनी गोपाल और निशंकपुर कुरहा परगने तिरहुत से, १८६४ ई० में कावखंड और उत्तरखंड परगने मुँगेर से तथा धाफर और नाथपुर परगने पूर्णिया से भागलपुर जिले में मिलाये गये। इस तरह पहले भागलपुर जिले का क्षेत्रफल जो ८००वर्गमील था वह घट-बढ़कर ४२२६ वर्गमील हो गया है। १८४५ ई० में मधेपुरा, १८६३ ई० में बाँका और १८७० ई० में सुपौल सबडिविजन कायम किये गये। इस तरह वर्तमान भागलपुर जिले का निर्माण हुआ।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में भागलपुर जिले की जनसंख्या १६,६७, ६३५ थी। सन् १९३१ ई० में यह २२,३४,६३२ हो गयी। इसमें ११,३०, ५८४ पुरुष और ११,०४,०४८ स्त्रियाँ थीं। इन ५० वर्षों में जिले के अन्दर २,६६,९९७ अर्थात् प्रति सैकड़े १४ आदमी बढ़े। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ एक वर्गमील में औसतन ५२९ आदमी रहते हैं। सदर सबडिविजन में एक वर्ग-

मील के अन्दर ६८७, सुपौल सबडिविज़न में ५४५, मधेपुरा सब-डिविज़न में ५२० और बाँका सबडिविज़न में ५०० आदमी रहते हैं। सन् १६२१ में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ८४,१८१ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,७१,६५१ थी। सन् १६३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में गाँवों की संख्या ३,०८० है। शहरों में केवल भागलपुर और कहलगाँव की गिनती है। भागलपुर शहर की जनसंख्या ८३,८४७ और कहलगाँव की जनसंख्या ५,२३३ है।

जिले का उत्तरी भाग प्राचीन मिथिला का एक हिस्सा है; इससे यहाँ की बोली मैथिली से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है। उत्तर भाग की बोली से दक्षिण भाग की बोली में कुछ अन्तर पड़ता है। इस जिले की बोली को कुछ लोग छीका-छीकी कहते हैं। पढ़े-लिखे हिन्दू-मुसलमान प्रायः आपस में हिन्दी-उर्दू बोलते हैं। आम लोग भी हिन्दी-उर्दू, चाहे ठीक-ठीक न बोल सकें, पर समझ जरूर लेते हैं। सर्वसाधारण की लिपि कैथी है; लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा बढ़ती जा रही है, नागरी और उर्दू लिपि का व्यवहार बढ़ता जा रहा है। बंगाली आपस में बँगला बोलते और लिखते हैं। भिन्न-भिन्न आदिम जातियों की अपनी-अपनी बोलियाँ हैं। संथालों की बोली संथाली, उराँवों की उराँव और मुण्डों की मुण्डारी है। जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य-भाषाओं के अन्दर २२,०६,२३५ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ४,५३८ की बँगला १,७३२ की मारवाड़ी, ३७४ की नेपाली, १७६ की उड़िया, ४१ की अन्य भारतीय आर्य-भाषाएँ; मुण्डा भाषा-श्रेणी के अन्दर २०,३८८ की संथाली, १८१ की करमाली और १२३ की मुण्डारी; द्राविड़ भाषा-श्रेणी के अन्दर ३४५ की ओराँव, १८७ की माल्टो और १३ की तेलगू, ४० की पश्तो

आदि अन्य भारतीय भाषाएँ; २५ की भारतीय-भिन्न एशियाई भाषाएँ और २३१ की यूरोपीय भाषाएँ हैं।

इस जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	१९,८०,२९२	ईसाई	१,५६०
मुसलमान	२,४९,४३६	जैन	२८०
आदिम जाति	३,०४४	सिक्ख	५०

जिले के अन्दर हिन्दू फी सैकड़े ८८.५ हैं। हिन्दू में ग्वालों की संख्या सबसे अधिक है। ये करीब पौने चार लाख हैं। ब्राह्मण और चमार एक लाख से अधिक हैं। मुसहर, धानुक और कोयरी भी लगभग एक लाख की संख्या में हैं। ताँती, दुसाध, तेली, राजपूत और केवट पचास हजार से अधिक हैं। इसके बाद क्रम से हजाम, कुर्मी, जोलाहा, संथाल, कुम्हार, कमार, भुइयाँ, कहार, बनिया, धोबी, कायस्थ, कान्दू, भूमिहार और डाम आदि हैं।

जिले में मुसलमान फी सैकड़े ११ हैं। इनकी संख्या बराबर बढ़ती रही है। १८८१ ई० में ये फी सैकड़े ६.५ थे। १९०१ ई० में ये फी सैकड़े १० से भी अधिक हो गये। यह वृद्धि केवल भागलपुर जिले में ही नहीं, बल्कि सारे विहार में है।

ईसाइयों की संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ रही है। १८८१ ई० में जिले में केवल ५७८ ईसाई थे, अब इससे ढाई-तीन गुने हो गये हैं। यह वृद्धि मतपरिवर्तन के कारण हुई है। ऊपर जो ईसाइयों की संख्या १५६०, दी गयी है, उसमें ८६ यूरोपियन आदि, १४३ एंग्लो इंडियन और १,३३१ भारतीय ईसाई हैं। जिले में बहुत-सी ईसाई-संस्थाएँ काम कर रही हैं। सबसे पुरानी ईसाई-संस्था सुपौल की है जो १८६१ ई० में कायम हुई थी। डुमरिया

और गढ़िया में इसकी शाखाएँ हैं। चम्पानगर में भी एक संस्था है। भागलपुर की जनाना मिशनरी सोसाइटी एक कुष्ठाश्रम, एक अनाथालय और एक हाई स्कूल चला रही है। जिले के दक्षिण जयपुर में एक ईसाई-संस्था है।

जिले की आदिम जातियों में संथाल, भुइयाँ, ओराँव और मुण्डा मुख्य हैं। इनमें कुछ हिन्दू, कुछ ईसाई और कुछ अपने पुराने धर्म को माननेवाले हैं। आदिम जाति के बहुत-से लोग अब अपने को हिन्दू कहने लग गये हैं।

खेती और पैदावार

भागलपुर जिले का रकबा २६,६१,८१४ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १५,४९,००० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ५,८६,६३७ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,२७,५४५ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १,९८,६३३ एकड़ जमीन नदी और मकान आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की फी सैकड़े करीब ८० भाग जमीन जोत के अन्दर है; मगर इसका करीब चौथाई भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े १२ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता और सैकड़े ८ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत-जमीन के सैकड़े १२ भाग में दो या तीन फसल होती है।

जिले के उत्तरी और दक्षिणी भागों में खेती की दशा भिन्न-भिन्न है। उत्तरी भाग बिलकुल समतल भूमि है; पर दक्षिणी

भाग में जहाँ-तहाँ पहाड़ भी हैं । उत्तरी भाग में साधारण तौर पर सिंचाई की जरूरत नहीं रहती और वहाँ उसके लिये कोई विशेष प्रबन्ध भी नहीं है ; लेकिन दक्षिण में सिंचाई के बिना काम नहीं चल सकता और यहाँ सिंचाई के लिये खास-खास इन्तजाम हैं ।

फसल तीन तरह की होती है । रब्बी, भदई और अगहनी । सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार उपजाऊ जमीन के सैकड़े ५२ भाग में अगहनी, सैकड़े ३२ भाग में भदई और सैकड़े ३२ भाग में ही रब्बी होती है । यहाँ के खेत की भिन्न-भिन्न मिट्टियाँ खरार, केवाल, गोरी मट्टी, हरिन, चिकइ, पसूती, दोरस, बलमट, धूस आदि कहलाती हैं । दियारे की जमीन, जहाँ केवल बालू ही बालू होती है, बालूबुर्द कहलाती है ।

रब्बी की फसल में खैहन अन्न में सबसे अधिक गेहूँ होता है, उसके बाद जौ का स्थान है । दलहन अनाज में बूट, अरहर, खेसारी और मसुरी अधिक उपजती है । इसके अलावे मटर और कुरथी भी यहाँ होती है । रब्बी की फसलों में तेलहन अन्न कीमती होता है । इसमें अंडी, सरसों और तीसी मुख्य हैं । भदई की फसल में धान और मकई मुख्य हैं । कोदो, मरुआ, शामा आदि की भी कुछ उपज होती है । अगहनी फसल में धान होता है ।

यहाँ पहले नील की खेती बहुत होती थी ; पर अब वह बन्द हो गयी है । इधर कई वर्षों से धान की खेती बढ़ी हुई है। घर के आस-पास लोग तम्बाकू और मिरचाई बोते हैं ।

सन् १७९३ के बाद से इस जिले में खेती बढ़ रही है। धीरे-धीरे बहुत-से जंगल कटकर आबाद हो चुके । लेकिन, अब भी बहुत-सी आबाद करने लायक जमीन आबाद होने को बाकी है।

नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की शिक्षा देने के लिये सबौर में कृषि-विद्यालय सन् १६०८ में खुला । इससे खेती की उन्नति में थोड़ी-सी सहायता पहुँची है। बाँका में भी एक छोटा सरकारी कृषि फार्म है ।

सन् १६३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की कुल जोत-जमीन के सैकड़े १५ १/३ भाग में सिंचाई होती है। सिंचाई का प्रबन्ध खानगी नहरों, तालाबों और कुओं से किया जाता है।

पेशा, उद्योग-धन्धा और व्यापार

१६३१ की गणना के अनुसार भागलपुर जिले के अन्दर हजार आदमियों में ४२० आदमी कमानेवाले हैं, बाकी लोग उनके आश्रित स्त्री-बच्चे हैं । कमानेवाले ४२० आदमियों में ३३४ आदमी कृषि और पशु-पालन में, २१ उद्योग-धन्धे में, १५ व्यापार में, ३ पंडा-पुरोहित, डॉक्टर-वैद्य, वकील-मुख्तार, लेखक-शिक्षक आदि के पेशे मे, १ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सवारी वगैरह के काम में, १ शासन-सम्बन्धी कार्य में तथा ४५ दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम पड़ता है कि यहाँ काम करनेवालों में फी सैकड़े करीब ८० आदमी खेती के काम में लगे हुए हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धन्धा या व्यवसाय भिन्न-भिन्न जातियों के लिये बँधा हुआ-सा है। जैसे लकड़ी का काम केवल कमार करते हैं, मिट्टी के बर्तन केवल कुम्हार बनाते हैं, तेल पेरना केवल तेलियों का काम है, सोना-चाँदी का काम केवल सोनार का रहता है । इसी तरह सभी जातियों के सम्बन्ध में समझना चाहिये ।

तसर—भागलपुर जिले का सबसे प्रसिद्ध उद्योग-धंधा तसर, का कपड़ा तैयार करना है। यह व्यवसाय बहुत दिनों से चला आ रहा है। डॉक्टर बुकानन ने लिखा है कि १८१० ई० में इस जिले में करीब ३,२७५ करघे चल रहे थे। लेकिन, अब इनकी संख्या बहुत घट गयी है। इस व्यवसाय का केन्द्र चम्पानगर है जो भागलपुर शहर का एक महल्ला है। तसर का कोआ बाँकुरा, गया और संथाल परगने से भी आता है। इसी कोए से रेशम का धागा तैयार किया जाता है। अब विदेशी रेशम का धागा भी व्यवहार में बहुत आने लगा है। विहार में तसर के लिये भागलपुर मशहूर है। रेशम और सूत की मिलावट से वाफ्ता तैयार किया जाता है। यहाँ का तैयार कपड़ा विहार से बाहर भी जाता है।

काँच—सौ वर्ष पहले यहाँ काँच का काम बहुत होता था। अधिकतर काँच की चूड़ियाँ तैयार की जाती थीं। सन् १८६० तक यह काम चलता रहा। पीछे बिलकुल बन्द हो गया।

अफीम—१९०० ई० में इस जिले में करीब ६०० एकड़ जमीन में अफीम की खेती होती थी, १९०८ ई० में सिर्फ ४०० एकड़ में खेती होने लगी। अब तो इसकी खेती प्रायः बन्द हो गयी है।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ में जिले के अंदर २४ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी ऐक्ट लागू था। इनमें १४ चावल, दाल, आटा और तेल की, ५ चीनी की और १-१ वाटर-पम्प, प्रेस, ऊन, इन्जीनियरिंग और शराब की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—भागलपुर शहर व्यापार का केन्द्र है। उत्तरी भागलपुर का नेपाल के साथ भी व्यापार होता है। इस जिले

से बाहर जानेवाली चीजों में चावल, गेहूँ, दलहन, तेलहन, जूट और तम्बाकू मुख्य हैं तथा बाहर से आनेवाली चीजों में नमक, कोयला, करासन तेल, कपड़ा, लोह तथा तरन-तरह की छोटी-बड़ी विदेशी चीजें मुख्य हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—इस जिले में गंगा के उत्तर बी० एन० डब्ल्यू० आर० और गंगा के दक्षिण ई० आई० आर० की लाइनें गयी हैं। हाँ, दक्षिण में सिर्फ ६ मील तक बी० एन० डब्ल्यू० आर० की लाइन बरारीघाट से भागलपुर तक गयी है। बीच में बरारी और भागलपुर कचहरी, ये दो स्टेशन पड़ते हैं। बी० एन० डब्ल्यू० आर० की मुख्य लाइन जिले के अन्दर नारायणपुर स्टेशन से कटरिया तक गयी है जो करीब २२ मील लम्बी है। बीच में थाना बिहपुर, खरीक और नौगछिया, ये तीन रेलवे स्टेशन हैं। कटरिया के पास कोशी नदी पर एक बड़ा पुल है। बिहपुर से एक लाइन लत्तीपुर होकर महादेवपुर घाट को गयी है जो ६ मील लम्बी है। महादेवपुर घाट से स्टीमर द्वारा लोग बरारी घाट जाते हैं जहाँ से एक लाइन भागलपुर को गयी है। मनसी से जो लाइन उत्तर की ओर भपटियाही तक गयी है उसमें सोनबरसा कचहरी से भपटियाही तक की लाइन भागलपुर जिले के अन्दर है। बीच में सहर्षा, पचगछिया, परसरमा, सुपौल और थरभीठा, ये रेलवे स्टेशन हैं। सहर्षा स्टेशन से एक लाइन बैजनाथपुर होकर मधेपुरा गयी है जहाँ सब-डिविजनल आफिस है। मनसी-भपटियाही लाइन पर सुपौल में सब-डिविजनल आफिस है। भपटियाही स्टेशन से जो लाइन

दक्षिण-पच्छिम की ओर दरभंगा होती हुई समस्तीपुर को गयी है, उसमें रहरिया और निरमली ये दो स्टेशन इस जिले के अन्दर हैं। पहले भपटियाही से एक लाइन पूरब की ओर रघुनाथपुर और प्रतापगंज होते हुए उत्तर की ओर बलुआ तक गयी थी; लेकिन अब वह लाइन बन्द हो गयी है।

गंगा के किनारे-किनारे ई० आई० आर० की जो लूप लाइन गयी है वह इस जिले के अन्दर ६० मील तक है। इसमें सुलतानगंज, मासी, अकबरनगर, मुरारपुर, नाथनगर, भागलपुर, सबौर, घोघा, कहलगाँव और पीरपैंती रेलवे स्टेशन हैं। भागलपुर से एक लाइन दक्षिण की ओर मंदारहिल को गयी है। इस लाइन पर कोयली खुटहा, गनौग्राम, हाटपुरैनी, टिकनी, साँझा, धौनी, पुनसिया, वाराहाट, पंजवारा रोड, मधुसूदन नगर और मंदारहिल रेलवे स्टेशन हैं। ई० आई० आर० की कार्ड लाइन वैद्यनाथ जंकसन के पास जिले के दक्षिण-पच्छिम कोने को छूती है।

सड़कें—सन् १९३५-३६ की रिपोर्ट के अनुसार भागलपुर जिले की सड़कों की कुल लम्बाई २,००५ मील है। इनमें १०८ मील पक्की सड़कें, १८८५ मील कच्ची सड़कें और १२ मील में छोटी-छोटी देहाती सड़कें हैं। गंगा के दक्षिण सबसे मुख्य सड़क बीरभूम रोड है जो भागलपुर से सीधे दक्षिण बौंसी होकर सूरी तक गयी है। इस जिले के अन्दर इसकी लम्बाई ४२ मील है। दूसरी मुख्य सड़कें हैं—भागलपुर जेल से नाथनगर होकर चम्पानाला जानेवाली सड़क, जिसकी लम्बाई ६ मील है; सुलतानगंज से मुँगेर जिला जानेवाली सड़क, जिसकी लम्बाई ३ मील और ढाका से चन्दन नदी तक जानेवाली सड़क, जो ३½ मील लंबी है। भागलपुर से बाँका, बाँका से सिमतला, बाँका से जयपुर,

बाँका से संग्रामपुर, चोह से बौंसी, भागलपुर से मुँगेर और भागलपुर से साहबगंज जानेवाली सड़कें भी मुख्य हैं।

गंगा के उत्तर लक्खीपुर से भुरकी और फलौत होकर मधेपुरा जानेवाली सड़क मुख्य है, जिसकी लम्बाई ४३ मील है। सिंहेश्वर थान से एक सड़क सुपौल गयी है जो २१ मील लम्बी है। सुपौल से एक सड़क उत्तर-पूरब की ओर प्रतापगंज होकर नेपाल की सीमा के पास वीरपुर तक गयी है। इसकी लम्बाई ४५ मील है। एक सड़क सुपौल से भपटियाही होकर कनौली तक गयी है जो नेपाल की सीमा पर है। पूरब में पूर्णिया जिले की ओर भी कई सड़कें गयी हैं जिनमें एक सिंहेश्वर थान होकर केओट गाँव की ओर जानेवाली सड़क है और दूसरी सिंहेश्वर थान से मुरलीगंज होकर जानेवाली सड़क है। लेकिन, ये सड़कें नदियों की बाढ़ में जहाँ-तहाँ डूब जाया करती हैं और उस समय किसी काम के लायक नहीं रह जातीं।

जलमार्ग—गंगा में बड़ी-बड़ी नावें और स्टीमर भी चलते हैं। कुछ समय पहले कटरिया पुल के पास से घघरी में स्टीमर चलाने का बन्दोबस्त हुआ था; लेकिन इसमें असफलता रही। जिले के उत्तरी भाग में कोशी, घघरी, तिलयुगा तथा अन्य कई नदियों में भी छोटी-छोटी नावें चल जाती हैं। दक्षिणी भाग की बरसाती नदियों में नावें नहीं चलतीं जिससे एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने में इनसे कोई सहायता नहीं मिलती है।

शिक्षा

सन् १९०८-०९ में भागलपुर जिले में प्राइमरी स्कूलों की संख्या ९८४ थी जिनमें २५,०४२ लड़के-लड़कियाँ पढ़ती थीं। लेकिन, धीरे-धीरे स्कूलों और छात्रों की संख्या बढ़ती ही गयी। १९३५-३६ ई० में आकर प्राइमरी स्कूलों की संख्या १३८१ हो गयी जिनमें १२८७ स्कूलों को सरकारी सहायता मिलती थी। इन प्राइमरी स्कूलों में छात्रों की संख्या ५२,४६३ थी।

१९०८-०९ ई० में यहाँ मिडल स्कूलों की संख्या ११ थी और उनमें ९०७ लड़के पढ़ते थे; पर अब सन् १९३७-३८ में मिडल स्कूलों की संख्या ६० हो गयी है जिनमें ५५ मिडल इंगलिश स्कूल और ५ मिडल वर्नाकुलर स्कूल हैं।

हाई स्कूलों की संख्या सन् १९०८-०९ में ७ थी और उनमें १५५४ लड़के पढ़ते थे। लेकिन, अब हाई स्कूलों की संख्या १८ हो गयी है। ७ हाई स्कूल भागलपुर में हैं, बाकी एक-एक बरारी, नाथनगर, बाँका, कहलगाँव, सुपौल, पचगछिया, मधेपुरा, सुलतानगंज, सहर्षा, नौगछिया और निर्मली में हैं। भागलपुर शहर के स्कूलों के नाम हैं—जिला स्कूल, कालिजियट स्कूल, श्यामसुन्दर इन्सटीट्यूट, मारवाड़ी पाठशाला, सी० एम० एस० स्कूल, जनाना मिशन स्कूल और मोक्षदा कन्या-विद्यालय।

जिले के अन्दर भागलपुर शहर में एक कालेज भी है जो टी० एन० (तेजनारायण) जुबली कालेज कहलाता है। बाबू दीपनारायण सिंह के पिता बाबू तेजनारायण सिंह ने १८८७ ई० में इस कालेज की स्थापना की थी। पहले यहाँ आई० ए० तक की पढ़ाई होती थी, १८९० से बी० ए० की भी पढ़ाई होने-

लगी है। कुछ दिनों तक यहाँ कानून की भी शिक्षा दी जाती थी; पर पीछे उसका क्लास बन्द कर दिया गया।

इन स्कूलों के अलावे जिले के अन्दर कई ट्रेनिंग स्कूल, संस्कृत-पाठशालाएँ और मकतब हैं। स्त्री-शिक्षा की धीरे-धीरे उन्नति हो रही है। जिले के प्रधान शहर भागलपुर में लड़कियों के दो हाई स्कूल चल रहे हैं। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ६,८८७ थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ७६,३७६ और स्त्रियों की संख्या ५,६८७ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ६,७६६ और स्त्रियाँ ७१८ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ३·७५ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर कालेज और स्कूलों में ७०,८८० लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े ३ होते हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—भागलपुर कमिश्नरी का सदर दफ्तर भागलपुर शहर है। इस कमिश्नरी के चार जिलों में भागलपुर भी एक जिला है। जिले का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। कलक्टर की सहायता के लिये जिले के सदर दफ्तर में डिप्टी कलक्टर, सबडिप्टी कलक्टर और असिस्टेंट कलक्टर होते हैं। यह जिला चार सबडिविजनों में बँटा है—भागलपुर, बाँका, मधेपुरा और सुपौल। सबडिविजन का सबसे बड़ा अफसर सबडिविजनल अफसर या एस० डी० ओ० कहलाता है। सबडिविजन कई थानों में

बँटे हैं। किस सबडिविजन में कौन-कौन थाने हैं, यह सब-डिविजन के वर्णन में आगे लिखा है।

न्याय—जिले में न्याय-विभाग का सबसे बड़ा अफसर डिस्ट्रिक्ट और शेसन्स जज कहलाता है। दीवानी मुकदमों में इनकी सहायता के लिये कुछ सबोर्डिनेट जज और मुन्सिफ रहते हैं। फौजदारी मुकदमे शेसन्स जज के अलावे जिला मजिस्ट्रेट तथा कई डिप्टी और सबडिप्टी मजिस्ट्रेट सुनते हैं। सब-डिविजनों में भी फौजदारी मामलों को सुनने के लिये सबडिवि-जनल अफसर के अलावे कुछ डिप्टी मजिस्ट्रेट रहते हैं। दीवानी मुकदमे मुन्सिफ के हाथों में रहते हैं। मजिस्ट्रेट तीन तरह के होते हैं—फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट, सेकंड क्लास मजिस्ट्रेट और थर्ड क्लास मजिस्ट्रेट। छोटे-छोटे मुकदमों को सुनने के लिये बड़ी-बड़ी जगहों में आनरेरी मजिस्ट्रेटों की कचहरियाँ रहती हैं।

पुलिस—जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर सुपरिन्टे-न्डेन्ट कहलाता है। उसके नीचे असिस्टेन्ट और डिप्टी सुपरि-न्टेन्डेन्ट रहते हैं। पुलिस के काम के लिये जिला २५ भागों में बँटा है। यह भाग थाना कहलाता है। थाने का बड़ा अफसर इन्सपेक्टर या सबइन्सपेक्टर होता है जिसे दारोगा भी कहते हैं। दारोगा की मदद के लिये हवलदार और कई कानिस्टबिल होते हैं। एक या दो गाँवों पर एक चौकीदार और कई चौकी-दारों पर एक दफेदार रहता है। इस जिले में सन् १९३६ में ६ इन्सपेक्टर, ५४ सबइन्सपेक्टर, ४४ असिस्टेन्ट सबइन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, १ सरजेन्ट, २२ हवलदार, ४८३ कानिस्टबिल और ३,५३९ चौकीदार थे।

जेल—भागलपुर में सेन्ट्रल जेल है जहाँ १६६० कैदी रह

सकते हैं। यहाँ दरी और कम्बल तैयार करने का काम बड़े पैमाने पर होता है। रस्सी बाँटने, चटाई बुनने, तेल पेरने तथा आटा पीसने का भी काम होता है। बाँका, सुपौल और मधेपुरा में छोटे जेल हैं जहाँ १४ दिन तक की सजा पाये हुए कैदी रह सकते हैं। बाँका जेल में १२, सुपौल जेल में १८ और मधेपुरा जेल में १५ कैदी रह सकते हैं।

रजिस्ट्री आफिस—इस जिले के अन्दर जमीन की खरीद-बिक्री आदि की रजिस्ट्री के लिये सन् १९३६ में भागलपुर, बाँका, मधेपुरा, सुपौल, कहलगाँव, बिहपुर, गणपतगंज और बनगाँव में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—देहातों में सड़क, पुल वगैरह बनवाने, प्राइमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करने, तालाब-कुआँ वगैरह खुदवाने तथा घाट, अस्पताल और फाटक (अड़गला) का प्रबन्ध करने के लिये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है। भागलपुर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में ३६ मेम्बर होते हैं जिनमें २७ निर्वाचित, ७ नामजद किये हुए और २ पद की हैसियत से रहते हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब ११-१२ लाख रुपया है। सबडिविजनों में इसी सम्बन्ध के छोटे-मोटे काम करने के लिये लोकल बोर्ड होते हैं जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन काम करते हैं। भागलपुर लोकल बोर्ड के ८ चुने हुए और २ नामजद, बाँका लोकल बोर्ड के ६ चुने हुए और २ नामजद, मधेपुरा लोकल बोर्ड के ७ चुने हुए और २ नामजद तथा सुपौल लोकल बोर्ड के ६ चुने हुए और २ नामजद मेम्बर होते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन मधेपुरा, अमरपुर और निर्मली में युनियन कमिटियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—जो काम देहातों के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड करता है वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियाँ

करती हैं। जिले के अन्दर भागलपुर और कहलगाँव में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। पहली म्युनिसिपैलिटी १८६४ ई० में और दूसरी १८६९ ई० में कायम हुई थीं। दोनों के क्रम से २५ और १० मेंबर होते हैं। सन १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार भागलपुर म्युनिसिपैलिटी का सालाना आमद-खर्च करीब ४॥ लाख रुपया और कहलगाँव म्युनिसिपैलिटी का करीब १५ हजार रुपया है।

भागलपुर (सदर) सबडिविजन

भागलपुर सबडिविजन का अधिकांश भाग गंगा के दक्षिण और थोड़ा-सा भाग गंगा के उत्तर है। इसका क्षेत्रफल ९३४ वर्ग-मील और जनसंख्या ६,४१,४०६ है। इस सबडिविजन में भागलपुर और कहलगाँव ये २ शहर और ८८७ गाँव हैं। इस इलाके में भागलपुर शहर, भागलपुर मुफस्सिल, नाथ नगर, सुलतानगंज, शाहकुंड, कहलगाँव, गोपालपुर, पीरपैंती और बिहपुर, ये ९ थाने हैं। इस सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

भागलपुर—जिले का प्रधान शहर भागलपुर गंगा के दाहिने किनारे २५° १५' उत्तरीय अक्षांश और ८७°० पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ इस नाम की कमिश्नरी और जिले का सदर आफिस है। यह एक मुख्य व्यापारिक स्थान है जहाँ ई० आई० आर० और बी० एन० डब्ल्यू० आर० के स्टेशन हैं। ई० आई० आर० की लाइन द्वारा कलकत्ते से इसकी दूरी २६५ मील और गंगा नदी द्वारा ३२६ मील है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ८३,८४७ है जिसमें ५८,३४८ हिन्दू, २४,५५५ मुसलमान, ७६९ ईसाई, १०६ आदिम जाति के लोग और ६९ जैन हैं। यह स्थान प्राचीन अङ्ग राज्य की

राजधानी था और इसका नाम था चम्पा। भागलपुर नाम कब और क्यों पड़ा, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह नाम मुसलमानी वक्त में पड़ा होगा। सम्भवत: भाग्यपुर से भागलपुर या 'भागे हुए लोगों का पुर' अर्थ में भागलपुर हुआ हो। कुछ लोग भगलू नामक एक व्यक्ति के नाम पर इसक नामकरण बताते हैं। महाभारत काल के राजा भगदत्त के नाम पर भी इस नाम का पड़ना बताया जाता है, मगर भगदत्त प्रागज्योतिषपुर (वर्तमान आसाम) का राजा था और भागलपुर के साथ इसका कोई खास सम्बन्ध नहीं था। इस कारण यह मत ठीक नहीं जान पड़ता। महाभारत के प्रसिद्ध राजा कर्ण यहीं हुए थे। शहर का कर्णगढ़ नाम का टील्हा राजा कर्ण के गढ़ और राजमहल का भग्नावशेष समझा जाता है। इसका वर्णन अलग भी मिलेगा। १५७३ और १५७५ ई० में बंगाल पर चढ़ाई करते समय अकबर की सेना इसी शहर से होकर गयी थी। बंगाल के साथ अकबर का जो दूसरा युद्ध हुआ उसमें उसके सेनापति मानसिंह ने अपना अड्डा भागलपुर में ही बनाया। यहीं से १५९२ ई० में बंगाल के विद्रोहियों को दबाने के लिये छोटानागपुर होकर सेना बर्दवान भेजी गयी थी, पीछे उड़ीसा का युद्ध हुआ था। इसके बाद से ही भागलपुर में एक शाही फौजदार रहने लगा था।

१७७७ और १७७८ ई० में दक्षिण की पहाड़ी जातियों को दबानेवाले भागलपुर के कलक्टर क्लीवलैंड के दो स्मारक इस शहर में हैं। उनमें एक तो ईंट का है जिसे स्थानीय जमींदारों ने बनवाया था और दूसरा पत्थर का है जिसे ईस्ट इण्डिया कंपनी के डाइरेक्टरों ने इङ्गलैण्ड से भेजा था। भागलपुर शहर और इसके पास चम्पानगर में मुसलमानों की कई पुरानी मस्जिदें

हैं। मोलनाचक की मस्जिद बादशाह फर्रुखसियर के वक्त की है। जैनियों के भी यहाँ दो सुन्दर मन्दिर हैं, जिनमें एक गत शताब्दी के प्रसिद्ध जगतसेठ का बनवाया हुआ है। भागलपुर के तसर का कारबार खास तौर से मशहूर है। सरकारी कचहरियों के अलावे शहर की उल्लेख योग्य चीजों में यहाँ का सेन्ट्रल जेल, दो अस्पताल, एक कमर्सियल स्कूल, चार लड़कों के हाई स्कूल, दो लड़कियों के हाई स्कूल, एक गर्ल्स ट्रेनिंग स्कूल और एक कालेज है। भागलपुर शहर के अन्दर तीन थाने हैं, भागलपुर शहर, भागलपुर मुफस्सिल और नाथनगर। भागलपुर शहर की जनसंख्या ऊपर दी जा चुकी है। भागलपुर मुफस्सिल थाने की जनसंख्या ६२,६६२ है जिसमें ७४,६६० हिन्दू, १७,६६३ मुसलमान और ६ ईसाई हैं। नाथनगर थाने में ३३,६३७ आदमी रहते हैं जिनमें ३०,१६० हिन्दू और ३,७७७ मुसलमान हैं।

अमरपुर—भागलपुर परगने में यह एक गाँव है जो जिले के दक्षिण भाग में चावल और मकई के व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ एक दिग्घी अर्थात् तालाब है जो १३०० फीट लंबा और ७०० फीट चौड़ा है। इसके किनारे एक मस्जिद है जो शाहशूजा की बनवायी बतायी जाती है। कहते हैं कि यह मस्जिद ताड़ के पेड़ के बराबर ऊँची थी और उसमें बहुत-सा धन छिपा हुआ था जिसके लिये वहाँ के एक जमींदार ने उसे तोड़वा दिया। वह सात दिन तक सोना-चाँदी ढोता रहा; लेकिन उस धन के मालिक ने, जो प्रेत होकर उस धन के पास रहता था, बड़ा उपद्रव मचाया। वह जमींदार पागल हो गया, उसका धन देखते ही देखते गायब हो गया और वह निर्धन होकर मरा।

कर्णगढ़—भागलपुर शहर में यह एक पहाड़ी टील्हा है। कहते हैं कि यहाँ महाभारत के प्रसिद्ध राजा कर्ण का गढ़ था।

टील्हे के पच्छिम कई जगह किले की खाई और बुर्ज के कुछ चिह्न अब भी देखने में आते हैं। करीब सौं-सवा सौ वर्ष पहले डा० बुकानन हैमिल्टन ने लिखा था कि यह किला ठीक वैसा ही मालूम पड़ता है जैसा कि पूर्णिया का कर्ण के समकालीन कीचक का महल। किला वर्गाकार जान पड़ता है और इसकी दीवाल सादी है अर्थात् उसपर कोई काम किया हुआ नहीं है। किले के चारों ओर खाई है। किले के हाते में कोई खोह नहीं दिखायी पड़ता। समूचा अहाता भग्नावशेष से भरा है। वर्तमान युग में सन् १७८० ई० में जिले के कलक्टर क्लीवलैंड ने दक्षिण की जंगली जातियों को दबाने के लिये कुछ पहाड़ी लोगों की सेना की यहाँ छावनी कायम की थी। देशी सैनिकों का संगठन हो जाने पर पहाड़ी सेना हटा दी गयी। अब यहाँ शिव के कुछ मन्दिर रह गये हैं जिनमें से एक कई सौ वर्ष का पुराना है। क्लीवलैंड के दोनों स्मारक और विद्यासागर-संस्कृत-पाठशाला इसी अहाते में है।

कहलगाँव—गंगा के दाहिने किनारे २५°१६' उत्तरीय अक्षांश और ८७°१४' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक शहर है। यहाँ ई० आइ० आर० का एक स्टेशन, थाना, अस्पताल और हाई स्कूल है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार कहलगाँव शहर की जन-संख्या ५,२३३ और कहलगाँव थाने की जनसंख्या १,०७,९४६ है। थाने में ९३,४९७ हिन्दू, १४,१९८ मुसलमान, २९८ आदिम जाति और १३ ईसाई हैं। कहलगाँव व्यापार का एक केन्द्र है। १८६९ ई० में यहाँ एक म्युनिसिपैलिटी स्थापित हुई थी जो अब भी कायम है। कहलगाँव शब्द की उत्पत्ति कुलगंग (गंगातट) शब्द से हुई है। बंगाल का अंतिम स्वतंत्र राजा महमूदशाह १५३९ ई० में यहीं मरा। यहाँ गंगा के बीच पहाड़ी टील्हे पर

पत्थर का एक मंदिर है। जहाँ पहले कितनी ही सुन्दर मूर्त्तियाँ थीं। चीनी यात्री ह्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ आया था। यहाँ उसने एक बहुत बड़ा मंदिर भी देखा था जिसे पीछे सम्भवतः मुसलमान आक्रमणकारियों ने तोड़ डाला। यहाँ गंगा कुछ दूर तक उत्तर की ओर बहती है; इसलिये हिन्दू लोग इस स्थान को पवित्र समझते हैं।

गोपालपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५१,४०३ है, जिसमें ४८,६७३ हिन्दू और २,७३० मुसलमान हैं।

जहँगीरा—सुलतानगंज के पास गंगा के किनारे जहँगीरा एक गाँव है। कहते हैं कि जह्नु ऋषि के नाम पर बनते-बिगड़ते इस गाँव का नाम जहँगीरा हो गया। कहा जाता है कि नदी के अन्दर जो एक छोटा पहाड़ है उसी पर जह्नु ऋषि का आश्रम था। इसके सम्बन्ध में विशेष विवरण सुलतानगंज के वर्णन में मिलेगा।

पत्थरघाटा पहाड़ी—कहलगाँव से ८ मील उत्तर-पूरब यह पहाड़ी गंगा के किनारे है। पहाड़ी के उत्तरी भाग में ८४ सिद्धों की मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं जो लगभग ७ वीं या ८ वीं सदी की होंगी। पहाड़ी में ५ गुफाएँ भी हैं जिनमें मुख्य बटेश्वर गुफा है। यहाँ पीतल और चाँदी की मूर्त्तियाँ मिली हैं। राजा बल्लालसेन के समय यह शासन का एक केन्द्र-स्थान था। कहते हैं, यहाँ के बटेश्वर शिवलिंग की स्थापना इसके सम्बन्धी और राजप्रतिनिधि बटमित्र ने अपने नाम पर की थी। यहाँ पर ८०० वर्षों का पुराना मंदिर अब भी किसी रूप में कायम है। हिन्दू इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं।

पीरपैंती—यहाँ ई० आइ० आर० का स्टेशन और थाना है।

यह व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ से बहुत-सा माल बाहर भेजा जाता है। यहाँ के पास की पहाड़ी से पत्थर काटा जाता है। पीरपैंती थाने की जनसंख्या ५२,१०३ है, जिसमें ४४,६८४ हिन्दू, ६,६२० मुसलमान, ४७६ आदिम जातिवाले और २३ ईसाई हैं।

बटेश्वर स्थान—दे० पत्थरघाटा पहाड़ी।

बरारी—यह गंगा के दाहिने किनारे पर है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन है। यहाँ की गुफायें बहुत प्रसिद्ध हैं। इनसे कुछ सिक्के निकले हैं जो ईसा से कई सौ वर्ष पहले उत्तरी भारत में प्रचलित थे। चीनी यात्री ह्वेनसन यहाँ आया था। उसने बुद्ध के जन्म के पहले की यहाँ की एक कहानी लिखी है। वह कहता है कि चम्पा के पास एक घोरई या चरवाहा रहता था। उसका एक बैल भटककर यहाँ चला आया और जब लौटा तब अत्यन्त सुन्दर हो गया, उसकी आवाज भी बदल गयी। यह हालत देखकर वह चरवाहा एक दिन बैल का पीछा करता हुआ गुफा के अंदर चार हजार फीट तक चला गया। वहाँ एक सुन्दर वन देखा जहाँ ऐसे सुन्दर फल-फूल लगे हुए थे जो मनुष्यों के कभी देखने में नहीं आते। वह चरवाहा फल लेकर बाहर आ रहा था कि फाटक पर एक दैत्य ने फल छीन लिया। दूसरे दिन वह उसी तरह वन में जाकर फल को छिपाकर ला रहा था कि दैत्य वहाँ पहुँच गया। इसपर चरवाहा मजबूर होकर फल को खा गया, नतीजा यह हुआ कि उसका पेट इतना फूल गया कि वह फाटक से निकलने लायक नहीं रहा। जब वहाँ के राजा को यह बात मालूम हुई तो उसने आकर उसकी हालत देखी; लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। कुछ दिन के बाद वह चरवाहा पत्थर हो गया। ह्वेनसन ने उसके बचे अंश को देखा था।

बिहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,१४,४७६ है, जिसमें १,०३,२०४ हिन्दू, ११,१६६ मुसलमान, ६ ईसाई और ६४ अन्य जाति के लोग हैं।

शाहकुंड—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४६,३०२ है, जिसमें ४२,३३० हिन्दू और ६,९७२ मुसलमान हैं।

सुलतानगंज—गंगा के किनारे यह एक छोटा-मोटा शहर है। यहाँ ई० आइ० आर० का स्टेशन, थाना, अस्पताल, हाई-स्कूल और शराब की एक फैक्टरी है। सुलतानगंज थाने की जन-संख्या ५५,७३० है, जिसमें ४६,८६४ हिन्दू, ५,८६३ मुसलमान और ३ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ गंगा नदी के बीच एक छोटा पहाड़ है जिसपर कई मंदिर और पेड़ हैं। एक मंदिर में शिवलिंग है जिसे लोग गैबीनाथ महादेव कहते हैं। यहाँ का दृश्य बहुत सुन्दर है। कहते हैं कि जह्नु ऋषि का आश्रम यहीं था। यों तो लोग यहाँ बराबर आया करते हैं, पर माघी पूर्णिमा में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। पहाड़ पर कुछ हिन्दू और कुछ बौद्ध मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। इससे मालूम पड़ता है कि यह किसी समय बौद्धों के भी अधिकार में था। गंगा के किनारे एक दूसरा छोटा पहाड़ है, उसपर भी बहुत-सी हिन्दू और बौद्ध मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। यहाँ गुप्त साम्राज्य-काल का शिलालेख भी है। यह लेख लगभग तीसरी शताब्दी का समझा जाता है। इस चट्टान पर अब एक मस्जिद है। रेलवे स्टेशन के पास बौद्ध विहार के भग्नावशेष बहुत दूर तक फैले हुए हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ मिली थीं, जिनमें एक मनुष्याकार ताम्बे की बौद्ध मूर्त्ति भी थी। द्वितीय चन्द्रगुप्त के समय के दो सिक्के भी यहाँ मिले थे। पास ही में एक पुराना सुन्दर स्तूप टूटे-फूटे रूप में

मौजूद है। रेलवे स्टेशन से पश्चिम कर्णगढ़ नामक एक पुराना टील्हा है। मालूम नहीं, इसका सम्बन्ध किस कर्ण से था। इस समय इसपर बनेली के कुमार कृष्णानन्द सिंह की इमारत बनी है। कुमार साहब के प्रबंध से यहाँ से 'गंगा' नाम की एक हिंदी मासिक पत्रिका और 'हलधर' नाम की एक साप्ताहिक पत्रिका निकलती थी। सुलतानगंज के पास गंगा उत्तर की ओर बहती है; इसलिये हिन्दू लोग इस स्थान को बहुत पवित्र समझते हैं। पालवंश के समय के प्रसिद्ध विक्रमशिला बौद्ध विश्व-विद्यालय का स्थान कहलगाँव, पत्थरघाटा या सुलतानगंज समझा जाता है।

बाँका सबडिविजन

यह सबडिविजन जिले के दक्षिण भाग में है। इसका क्षेत्र-फल १,१८२ वर्गमील और जनसंख्या ४,७२,४५८ है। इस सब-डिविजन में कोई बड़ा शहर नहीं है। यहाँ के गाँवों की संख्या १,०६८ है। इस इलाके में बाँका, धुरैया, कटोरिया, बेलहर, अमरपुर और रजौन, ये ६ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

बाँका—चन्दन नदी के किनारे २४°५३' उत्तरीय अक्षांश और ८६°५६' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटा शहर जैसा है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर, कचहरियाँ, जेल, अस्पताल, थाना और हाईस्कूल हैं। बाँका थाने की जनसंख्या १,३६,६२३ है, जिसमें १,२३,६६९ हिन्दू, १२,२५६ मुसलमान, ५८५ आदिम जाति के लोग, ६४ ईसाई और ४९ दूसरी जाति के लोग हैं।

अमरपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,१५,२५७ है, जिसमें १,०६,११८ हिन्दू, ९,१२९ मुसलमान, ८ ईसाई और २ आदिम जाति के लोग हैं।

कटोरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८१,९६६ है, जिसमें ७६,६३३ हिन्दू, ३,६१० मुसलमान, १,४१५ आदिम जाति के लोग तथा ३८ ईसाई हैं।

डुमराँव—यहाँ देवी राजा के किले का भग्नावशेष है। इसका घेरा एक मील या इससे भी कुछ ज्यादा था। किले की दीवाल बिलकुल मिट्टी की थी और उसके चारों ओर खाई थी। किले के भीतर जाने के सात दरवाजे थे जिनमें कुछ अब भी देखने में आते हैं। इसी किले के भीतर यहाँ का अन्तिम राजा खेतौरी मुसलमानों से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ था।

धुरैया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४३,६०३ है, जिसमें ३३,४८५ हिन्दू, १०,१११ मुसलमान और ७ आदिम जाति के लोग हैं।

बेलहर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५१,०२३ है, जिसमें ४९,३१९ हिन्दू, १,६९५ मुसलमान और ९ ईसाई हैं।

बौंसी—मंदार पहाड़ी के पास यह एक गाँव है। इस पहाड़ी के चारों ओर एक-दो मील तक पुराने मकानों के खँडहर, तालाब, बड़े-बड़े कुएं और पत्थर की मूर्त्तियाँ हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ पहले एक बहुत बड़ा नगर रहा होगा। आस-पास के लोग कहते हैं कि इस नगर में ५२ बाजार, ५३ सड़कें और ८८ तालाब थे। कहा जाता है कि इस नगर के एक विशाल मंदिर में दीपावली के दिन एक लाख दीपक जलते थे और हर घर से केवल एक दीपक आता था। दीपक रखने के लिये दीवाल में छोटे-छोटे छेद थे। उस मन्दिर की टूटी-फूटी दीवाल में अब भी छेद नजर आते हैं। इस मंदिर से सौ गज की दूरी पर एक पुराना टूटा-फूटा बड़ा महल है जो काँचपुरी के राजा चोल का

बनवाया बताया जाता है। इसको हुए करीब २२०० वर्ष हुए। महल की दीवाल पत्थर की है। महल के बीच एक हाल, सामने बरण्डा और बगल में ६ कमरे हैं। कहते हैं कि राजा चोल यहाँ एक कुंड में स्नान कर कुष्ट रोग से मुक्त हुआ था; इसलिये यहाँ उसने एक महल बनवाया, नगर बसाया और उसे भली भाँति सजाया। एक विजयसूचक पत्थर के मेहराव पर खुदे संस्कृत के एक लेख से पता चलता है कि १५६७ ई० के करीब यह नगर वर्तमान था। कुछ लोग कहते हैं कि कालापहाड़ नामक प्रसिद्ध मुसलमान आक्रमणकारी ने इस नगर का ध्वंस किया। मंदार पहाड़ पर के मधुसूदन मंदिर के नष्ट होने पर वहाँ की मूर्त्ति बौंसी लायी गयी थी जो अब भी यहाँ मौजूद है। पौष संक्रान्ति के दिन मूर्त्ति पहाड़ के पास ऊपर कहे मेहराव पर लटकायी जाती है। उस समय यहाँ एक बड़ा मेला लगता है जो १५ दिनों तक रहता है और जिसमें करीब ५० हजार आदमी आते हैं। सबडिविजन का सदर दफ्तर पहले बौंसी ही में था।

मन्दार गिरि—यह पहाड़ी भागलपुर शहर से ३० मील दक्षिण है। यहाँ भागलपुर से ई० आइ० आर० की एक लाइन आयी है। इस पहाड़ी की ऊँचाई करीब ७०० फीट और घेरा तीन-चार मील है। इसके ऊपर कुछ जंगल-झाड़ भी हैं। हिन्दू इसे पवित्र स्थान समझते हैं। स्कन्द-पुराण, वाराह-पुराण, मार्कण्डेय-पुराण, ब्रह्मवैवर्त-पुराण, गणेश-पुराण आदि में इसका माहात्म्य लिखा है। पहाड़ी की चोटी पर टूटे-फूटे दो सबसे पुराने मंदिर और कई गुफाएँ हैं। यहाँ तक पहुँचने की सीढ़ियाँ बनी हैं। सीढ़ी पर के एक लेख से जान पड़ता है कि सीढ़ी को उग्रभैरव नामक एक बौद्ध राजा ने बनवाया था। ये मन्दिर मुसलमानी काल के पूर्व चोल

मंदार पर्वत (भागलपुर)
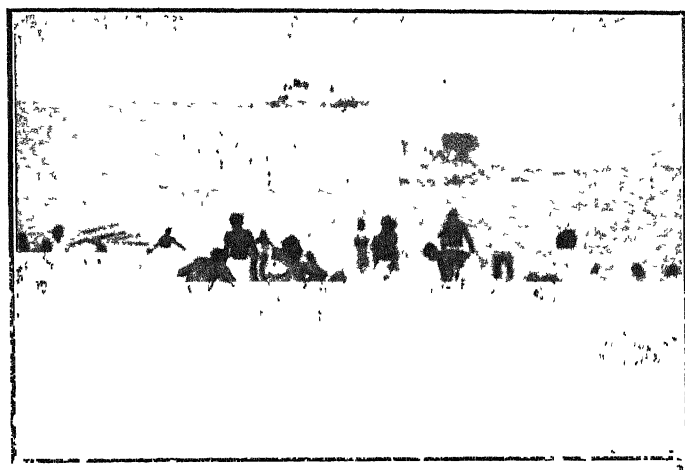
गंगा के बीच पहाड़ी पर गैबीनाथ का मंदिर , सुल्तानगंज (भागलपुर)
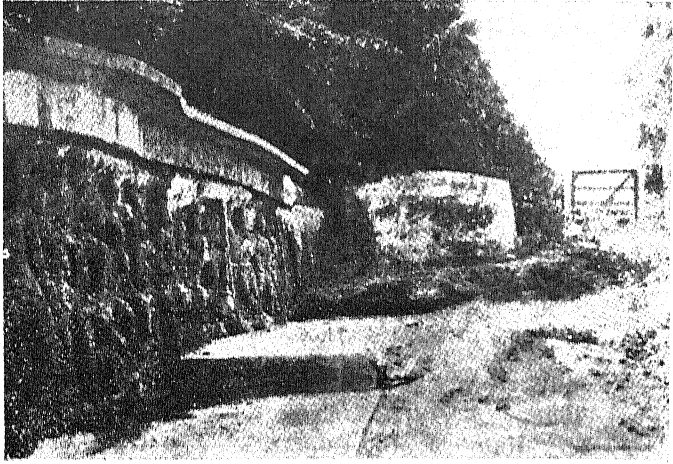
प्रस्तर-मूर्त्तियाँ, पत्थरघाट (भागलपुर)
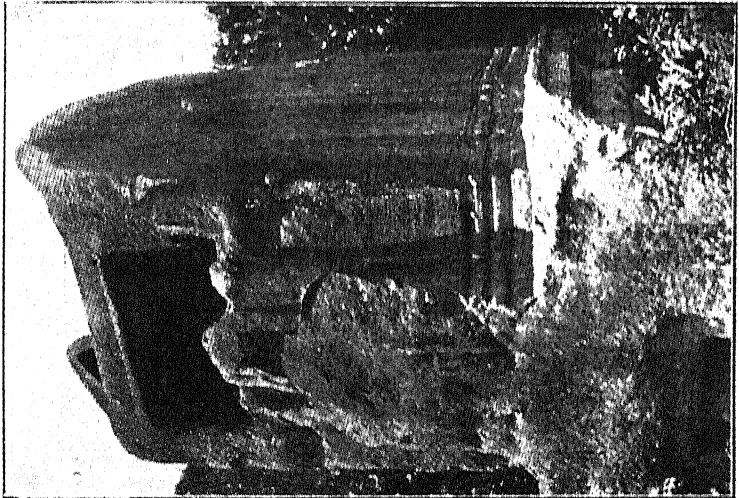
चट्टान से बना मंदिर, कहलगाँव (भागलपुर)

राजा छत्रसेन के बनवाये बताये जाते हैं। चट्टान पर कुछ मूर्त्तियाँ भद्दे रूप में खुदी हैं और दो शिलालेख भी हैं। पहाड़ी के ऊपर और नीचे बहुत-से तालाब हैं। सबसे बड़े तालाब को सीताकुंड कहते हैं। यह कुण्ड ५०० फीट ऊँचे टील्हे पर बने सबसे पुराने मंदिर के खँडहर के सामने है। पहाड़ी पर शिवकुण्ड, शंखकुण्ड और आकाश कुण्ड भी हैं। जहाँ-तहाँ बहुत-सी टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं।

पुराणों में लिखा है कि एक बार विष्णु क्षीरसागर में सोये थे कि उनके कान के मल से मधुकैटभ नाम का एक राक्षस उत्पन्न हुआ। जब वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा अन्य देव-ताओं को सताने लगा तो विष्णु को उसके साथ युद्ध करना पड़ा। दस हजार वर्ष तक युद्ध करते रहने के बाद विष्णु उसके सिर को धड़ से अलग कर सके। लेकिन, बिना सिर का धड़ भी उत्पात करता ही रहा। इसपर विष्णु ने उसपर मन्दार गिरि को रख दिया और उसे अपने पाँव से दबाये रहे। इस तरह मधुसूदन के रूप में विष्णु सदा इस गिरि पर मौजूद समझे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि मन्दार गिरि वही पर्वत है जिसको लेकर लक्ष्मी और अमृत को निकालने के लिये देवताओं ने समुद्र-मंथन किया था। इस मंथन में शेषनाग ने रस्सी का काम किया था। पर्वत के घेरावे में खोदकर एक विशाल सर्प का चिह्न बना दिया गया है। कहते हैं कि चोल राजा ने ही इसे बनवाया था। लेकिन, बहुत-से धार्मिक हिन्दू इस पर्वत को वह मन्दार गिरि नहीं समझते हैं। वे कहते हैं कि सुमेर पर्वत से समुद्र मथा गया था।

पुरातत्व-प्रेमियों के लिये भी यह स्थान देखने योग्य है; क्योंकि पहाड़ के चारों ओर एक-दो मील तक बहुत-से पुराने

मकानों, तथा हिन्दू और बौद्ध मूर्त्तियों के भग्नावशेष मिलते हैं। इससे मालूम होता है कि यहाँ पहले एक बहुत बड़ा नगर रहा होगा। इस स्थान पर बौंसी एक मुख्य गाँव है। यहाँ की विशेष बातें इस गाँव के वर्णन में दी गया हैं।

रजौन—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४३,७५६ है, जिसमें ४०,९३९ हिन्दू और २,८१७ मुसलमान हैं।

मधेपुरा सबडिविजन

यह सबडिविजन गंगा के उत्तर और सुपौल सबडिविजन के दक्षिण है। इसका क्षेत्रफल १,१७६ वर्गमील और जनसंख्या १,१३,०३५ है। इसमें कोई बड़ा शहर नहीं है। हाँ, गाँवों की संख्या ९४१ है। इस सबडिविजन में मधेपुरा, मीरगंज, बनगाँव, किसुनगंज और सोनबरसा, ये पाँच थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

मधेपुरा—परवान नदी के दाहिने किनारे २५°५६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°४८' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटे शहर-सा है। सहर्षा से बी० एन० डब्ल्यू० आर० की एक ब्रांच लाइन यहाँ तक आयी है। यहाँ इस नाम के सबडिविजन ला सदर दफ्तर, सरकारी कचहरियाँ, जेल और एक हाईस्कूल है। मधेपुराथाने की जनसंख्या १,८२,४९४ है, जिसमें १,७०,०४५ हिंदू १२,४१३ मुसलमान, ४ ईसाई और २ अन्य जाति के लोग हैं।

आलमनगर—किसुनगंज से ७ मील दक्षिण-पश्छिम छाल परगने में यह एक गाँव है। यहाँ चन्देल सरदारों का निवास-स्थान था जिनके अधिकार में ५२ महाल थे और उनसे काफी

आमदनी होती थी। जिले में इन राजाओं की बड़ी कद्र थी। अब इनके वंशजों के हाथ में सिर्फ दो गाँव रह गये हैं। उस समय की राजकचहरी, किले की दीवाल और कितने ही सुन्दर तालाब अब भी देखने में आते हैं।

कड़ामा—मधेपुरा से पूरब-दक्षिण इस गाँव में दसवीं सदी में सुप्रसिद्ध विद्वान उदयनाचार्य्य हुए थे। आप बौद्ध और जैन धर्म के प्रबल विरोधी थे। आपके वंशज अभी भी इस गाँव में हैं।

कपगढ़—दे० श्रीनगर।

किसुनगंज—इस नाम के थाने का सदर दफ्तर पहले इसी गाँव में था। कोशी नदी के उत्पात से अब दफ्तर छः मील दक्षिण पुरैनी गाँव में लाया गया है। यह लत्तीपुर से मधेपुरा जानेवाली सड़क पर है। यहाँ एक छोटा बाजार, अस्पताल, डाकबँगला और पोस्टआफिस है। पहले यहाँ मुन्सिफ की कचहरी भी थी जो अब मधेपुरा चली गयी है। इस थाने की जनसंख्या १,३६,६६४ है, जिसमें १,२४,२१५ हिन्दू, १२,५७७ मुसलमान और १७२ आदिम जाति के लोग हैं।

गाजीपिटा—मधेपुरा से १६ मील दक्षिण किसुनगंज थाने में यह एक गाँव है। यहाँ एक चण्डी-स्थान है जो बराँटपुर मंदिर कहलाता है। मंदिर से एक मील उत्तर अलीखाँ नाम का एक मुसलमान राजा रहता था जिसके किले का भग्नावशेष अलीगढ़ कहलाता है।

चैनपुर—यह एक पुरानी बस्ती है और यहाँ बहुत-से ब्राह्मण पंडित रहा करते हैं।

तलबोरी—यहाँ पर एक पुराने किले का चिह्न मिलता है।

धबोली—धबोली, मदनपुर और पत्थरघाट के किले को भार जाति के सरदार तीन भाइयों ने एक दूसरे से अपनी रक्षा

के लिये बनवाया था। लेकिन, अब पत्थरघाट के किले के चिह्न ही देखने में आते हैं।

पचगछिया—मनसी-भपटियाही रेलवे लाइन पर इस नाम के स्टेशन से २ मील पच्छिम यह एक गाँव है। यहाँ हाईस्कूल, अस्पताल, डाकघर और धर्मशाला है। यहाँ पुराने खानदान के एक परमार राजपूत जमींदार रहते हैं जिनके स्टेट का नाम पचगछिया स्टेट है। इसकी तहसील एक लाख पन्द्रह हजार रुपये की है। रायबहादुर प्रियव्रत नारायण सिंह इस वंश के नामी आदमी हुए। इस समय इनके बड़े लड़के श्रीयुत अमरेन्द्र नारायण सिंह (हीराजी) ने भी अच्छी ख्याति पायी है। आपने एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आप जिला बोर्ड के चेयरमैन और कौंसिल के मेंबर रह चुके हैं। ये लोग अपना सम्बन्ध उज्जैन के राजा विक्रमादित्य से बताते हैं। विक्रमादित्य के एक वंशज पृथ्वीराज सिंह मालवा से आकर तिरहुत के गंधवर गढ़ में बसे। वहीं से इनकी संतान फिर भिन्न-भिन्न जगहों में गयी। अब भी ये लोग गंधवरिया कहलाते हैं।

पत्थरघाट—दे० धबोली।

बनगाँव—मैथिल ब्राह्मणों की यह एक पुरानी बस्ती है। यहाँ बहुत-से ब्राह्मण पंडित रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने की जनसंख्या १,६४,५६५ है जिसमें १,४४,४०५ हिन्दू, २०,०८१ मुसलमान और १०६ ईसाई हैं।

बराँटपुर—किसुनगंज थाने में यह एक गाँव है जो बनगाँव से शहमोरा जानेवाली सड़क के किनारे बसा है। यहाँ एक पुराने किले का चिह्न है जो महाभारत के प्रसिद्ध राजा विराट का समझा जाता है। महाभारत में लिखा है कि अज्ञातवास के समय पाण्डवों ने वेष बदलकर राजा विराट के यहाँ नौकरी कर

ली थी। विराट के बहनोई कीचक ने द्रौपदी को ले लेना चाहा, जिसपर भीम ने उसे मार डाला। दुर्योधन के दल ने विराट की एक लाख गौओं को जब हरण किया तो अर्जुन ने उससे लड़कर गौएँ लौटा लीं। कहते हैं कि प्राचीन पुस्तकों में वर्णित उत्तर गो-गृह बराँटपुर के आसपास ही था। कुछ लोग पूर्णिया जिले के अन्दर ठाकुरगंज को विराट का स्थान बताते हैं। चम्पारण के बैराठी और दरभंगा जिले के विराटपुर में भी विराट नगर का होना अनुमान किया जाता है। बहुत लोग जयपुर और मथुरा में भी इस नगर का स्थान समझते हैं। बराँटपुर और उसके पास रोहता नामक स्थान में पालवंश के समय करीब ११०० ई० में बौद्धों के बनवाये मंदिर के भग्नावशेष हैं। बराँटपुर के पुराने मंदिर के भग्नावशेष पर नया मंदिर बना है।

बीजयगढ़—दे० श्रीनगर।

मदनपुर—दे० धबोली।

मधुकरचक—यहाँ एक मुसलमान राजा के किले का चिह्न है। इसके सम्बन्ध में विशेष बातें मालूम नहीं।

मधेली—मधेपुरा थाने के अन्दर मधेपुरा से १० मील उत्तर-पूरब यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। पास में बहनेवाली दरोसवरी नदी और बी० एन० डब्ल्यू० आर० के राघोपुर स्टेशन से माल बाहर जाता और भीतर आता है। मधेली से दक्षिण-पूरब बसन्तपुर नामक गाँव में एक किले का भग्नावशेष है जो राजा सोत और बसन्त का समझा जाता है।

महेसी—बनगाँव थाने में यह एक गाँव है जिसका प्राचीन नाम माहिष्मती नगरी था। इसके पूरब धेमरा नदी बहती है। यह वशिष्ठ मुनि की तपस्या का स्थान समझा जाता है। यहाँ उग्रतारा देवी का मन्दिर है। यह स्थान उपपीठ कहलाता है।

कथा है कि सती के मृत शरीर को लेकर जब शिवजी घूम रहे थे तो विष्णु के चक्र से ५२ स्थानों पर सती के मुख्य-मुख्य अंग कट-कटकर गिरे जो पीठ-स्थान कहलाये और २४ स्थानों पर छोटे-छोटे अंग गिरे जो उपपीठ कहलाये। इन्हीं उपपीठों में महेसी भी एक उपपीठ है। कहते हैं, सुप्रसिद्ध पं० मंडन मिश्र और उनकी स्त्री सरस्वती देवी यहीं हुई थीं। प्राचीन काल में शिक्षा का यह केन्द्र-स्थान था। इसी के पास गोरहो घाट के पूरब दुर्वासा ऋषि का आश्रम बताया जाता है।

मुरलीगंज—यह गाँव दाउस नदी के किनारे बसा है। पहले यह व्यापार का मुख्य केन्द्र था।

मोरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ९१,७९८ है, जिसमें ८३,६०८ हिन्दू, ८,१५८ मुसलमान और ३२ अन्य जाति के लोग हैं।

राजघाट—यहाँ हाल के किसी राजा के किले का भग्नावशेष है।

रोहता—दे० बराँटपुर।

लोहुर—दे० शाहपुर चौमुख।

शाहपुर चौमुख—यह एक बड़ा गाँव है। इसके सटे हुए लोहंड या लोहुर नामक स्थान में लक्ष्मीनारायण का मंदिर है जो बहुत प्रसिद्ध है।

श्रीनगर—इस गाँव में दो टूटे-फूटे किलों का अवशेष और एक देवालय है। कहते हैं कि तीन-चार सौ वर्ष पूर्व राजा श्रीदेव यहाँ रहते थे। इनके दो भाई थे, बीजलदेव और कूपदेव। बीजलदेव का किला बीजलगढ़ या बीजलपुर में तथा कूपदेव का किला कूपगढ़ में था। ये दोनों बनगाँव थाने में हैं। श्रीनगर किले के पास हरिसार और गुप नाम के दो तालाब हैं। देवालय में शिवलिंग है जिसपर एक लेख है जो पढ़ा नहीं जाता।

सरसेन्दी—इस गाँव से एक मील दक्षिण-पूरब एक मस्जिद है जो ५०० वर्ष से भी पहले की बतायी जाती है। मस्जिद से आधा मील उत्तर एक टील्हा है जिसका रकबा १२० वर्गफीट है। यह राजा बैरीसाल का गढ़ बताया जाता है। पास ही में एक और टील्हा है जो राजा का जेल समझा जाता है। इस गाँव के नजदीक ही शेरुल मुल्क और सादुल मुल्क नाम के दो भाई फकीर थे। कहते हैं कि इनसे परास्त होकर राजा ने अपनी बहन दाय ठकुरानी का विवाह सादुल मुल्क से कर दिया। पीछे ये दोनों भाई मारे गये। दाय ठकुरानी, दोनों भाई तथा उनके परिवार के और कई लोगों की कब्र वहाँ मौजूद है।

सिंघेश्वर थान—मधेपुरा से ४ मील उत्तर इस गाँव में शिवजी का मंदिर है। शिवरात्रि के समय यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें दूर-दूर के लोग भी आते हैं। इसमें हाथी, घोड़े, गाय, बैल वगैरह जानवर काफी तायदाद में खरीदे-बेचे जाते हैं। यह भूभाग और मंदिर किसी समय भार लोगों के हाथ मे था। अब यहाँ के पण्डे ही इसके मालिक हैं। वाराह-पुराण में लिखा है कि सृष्टि के आदि काल में एक बार शिवजी ने वाराह (सूअर) का रूप धारण किया। देवता लोग उन्हें पकड़ने के लिये दौड़े। इन्द्र ने उनके शृंग का अग्र भाग, ब्रह्मा ने मध्य भाग और विष्णु ने मूल भाग पकड़ा। शृंग के तीनों भाग तीनों के हाथ में रह गये और शिवजी लुप्त हो गये। आकाश-वाणी हुई कि अब आपलोग शृंग से ही संतोष करें, मुझे आपलोग नहीं पा सकते। विष्णु ने अपने हाथ के शृंग के मूल भाग को वहीं स्थापित किया और उसका नाम शृंगेश्वर पड़ा। शृंगेश्वर से ही अब सिंघेश्वर शब्द बना है।

सोनबरसा—तलवा नदी के पास बी० एन० डब्ल्यू० आर०

की मनसी-भपटियाही लाइन पर यह एक गाँव है। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम है सोनबरसा कचहरी। यहाँ एक पुराने राजपूत घराने के जमींदार रहते हैं जो अपना सम्बन्ध उज्जैन के प्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य से बतलाते हैं। इनकी तहसील करीब दो-तीन लाख रुपये की है। पहले इनके पूर्वज मालवा से मिथिला आकर बसे। महाराज नीलदेव ने मिथिला में राज्य कायम किया। १६५४ ई० में औरंगजेब ने इस वंश के प्रमुख व्यक्ति केसरी सिंह को राजा की उपाधि दी। राजा अमर सिंह ने सिंहौल में किला बनवाया जिसका चिह्न अब भी देखने में आता है। यहाँ के राजा फतह सिंह ने मीरकासिम के विरुद्ध उदयनाला की लड़ाई में अँगरेजों की सहायता की थी। पिछले नामी राजा महाराज बहादुर सर हरवल्लभ नारायण सिंह सन् १६०७ में मरे। सोनबरसा में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३५,८५८ है, जिसमें ३३,६६८ हिन्दू, २,१८२ मुसलमान और ८ आदिम जाति के लोग हैं।

सुपौल सबडिविजन

सुपौल सबडिविजन जिले के उत्तरीय भाग में है। इसका क्षेत्रफल ६३४ वर्गमील और जनसंख्या ५,०८,६६६ है। इसमें कोई बड़ा शहर नहीं है; हाँ, गाँवों की संख्या ४८४ है। इस सबडिविजन में सुपौल, डगमारा, डपरखा, प्रतापगंज और भीमनगर, ये ५ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

सुपौल—यह मनसी-भपटियाही लाइन के किनारे २६°६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°३६' पूर्वीय देशान्तर पर एक छोटे शहर-सा है। यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर

है। यहाँ सरकारी कचहरियाँ, जेल, अस्पताल, रेलवे-स्टेशन और हाईस्कूल हैं। सुपौल थाने की जनसंख्या २,५८,१७७ है, जिसमें २,२४,३५३ हिन्दू, ३३,७०६ मुसलमान, ७२ ईसाई तथा ४३ अन्य जाति के लोग हैं।

खन्दौली—नेपाल की सीमा से थोड़ी ही दूर पर नारेदिगर परगने के अन्दर यह एक गाँव है। यह व्यापार का केन्द्र है। नेपाल के साथ इसका व्यापार खूब चलता है।

डगमरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६४,७०४ है, जिसमें ५८,४३५ हिन्दू, ६,२२३ मुसलमान, १७ ईसाई तथा २६ अन्य जाति के लोग हैं।

डपरखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६१,६०८ है, जिसमें ५६,८३१ हिन्दू, ४,६६१ मुसलमान और ३८६ ईसाई हैं।

प्रतापगंज—यह हरावत परगने में है। यहाँ एक अच्छा बाजार और थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ९२,९६९ है, जिसमें ८२,८०७ हिन्दू, १०,१२४ मुसलमान और ३८ दूसरी जाति के लोग हैं।

बलुआ—धाफर परगने में यह एक गाँव है जो सबडिविजन के अन्दर व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ बहुत-से बंगाली व्यापारी हैं।

बीरपुर—यह धाफर परगने के अन्दर नेपाल की सीमा पर है। पहले यह व्यापार का एक बहुत बड़ा अड्डा था; लेकिन अब यहाँ का व्यापार कोशी नदी के उत्पात से बहुत घट गया है।

भीमनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३१,२३१ है, जिसमें २५,४१२ हिन्दू, ५,७८३ मुसलमान, २५ ईसाई और ११ अन्य जाति के लोग हैं।

[illegible] जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की क्रमानुसार जन-संख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	३,५४,६७७	कमार	२९,२११
ब्राह्मण	१,०९७२२	भुइयाँ	२८,४३६
चमार	१,०७,५३४	कहार	२४,६२१
मुसहर	९९,५९२	बनिया	२३,९१२
धानुक	९७,३१५	धोबी	२२,५८८
कोयरी	९०,२३८	कायस्थ	२१,८९३
ताँती	८८,७४५	काँदू	२०,६६६
दुसाध	७६,०५४	भूमिहार ब्राह्मण	१६,८५७
तेली	७३,७०५	डोम	१२,३८४
राजपूत	६९,०५२	मल्लाह	११,४८३
केवट	५२,६९३	बरही	७,५८८
हजाम	३८,५९७	पासी	६,४०५
कुरमी	३५,६४५	हारी	३,४१९
जोलाहा	३२,४७०	माली	३,०६७
संथाल	३०,७९९	ओराँव	१,०३१
कुम्हार	२९,८८०	मुंडा	४१

जहाँ उत्तरीय भाग समतल है वहाँ दक्षिणी भाग छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और जंगलों से भरा है। उत्तरीय भाग का बहुत-सा हिस्सा महीनों तक नदियों की बाढ़ से डूबा रहता है, पर दक्षिणी भाग की ऐसी हालत नहीं है।

पहाड़—मुँगेर जिले की पहाड़ियाँ विन्ध्य पर्वतमाला के अन्दर हैं जो दक्षिण की ओर से जिले में प्रवेश करती हैं। इन पहाड़ियों का सबसे विस्तृत और ऊँचा भाग खड़गपुर की पहाड़ी है जो जमालपुर से जमुई तक फैली हुई है। इसमें शृङ्गिरिख नाम की एक चोटी है जो ऋष्यशृंग के सम्बन्ध से प्रसिद्ध है। खड़गपुर पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी मारुक है जो समुद्र से १६२८ फीट ऊँची है। जिले के दक्षिण-पश्चिम की ओर एक पहाड़ी है जो गिद्धेश्वर पहाड़ी कहलाती है। इसकी सबसे ऊँची चोटी एकगोरा है जो समुद्र-तल से १,८१३ फीट ऊँची है। दक्षिण की ओर एक अर्द्धवृत्ताकार पहाड़ी है जो बिसनपुर से सिमलतला तक गयी है। इसकी सबसे ऊँची चोटी समुद्र-तल से १,८०६ फीट ऊँची है। शेखपुरा के निकट भी पहाड़ियाँ हैं। बयूल से सिमलतला तक रेलवे लाइन के दोनों ओर जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। मुँगेर के पास एक पीर पहाड़ी है। कहते हैं कि यह पहले ज्वालामुखी पहाड़ी थी।

झरने—खड़गपुर पहाड़ी में बहुत-से झरने हैं। ये झरने तीन भागों में बाँटे गये हैं। भीम बाँध, मलनी पहाड़ और कर्मनधारी के झरने सबसे सुन्दर समझे जाते हैं। इनकी गर्मी १५१° तक जाती है। दूसरे भाग के झरनों में रामेश्वर-कुंड, ऋषिकुंड और भुरका हैं। तीसरे भाग में सीताकुण्ड और उसके आसपास के झरने हैं। गिद्धेश्वर पहाड़ी में पंचभूर नामक झरना है।

झील और चौर—जिले की सबसे प्रसिद्ध और सुन्दर

झील खड़गपुर झील है। गंगा के उत्तर भाग में बड़े-बड़े जलाशय या चौर हैं जिनमें बेगूसराय सबडिविजन का काबरताल प्रसिद्ध है। इसमें सात वर्गमील तक पानी भरा रहता है।

जंगल—जिले के दक्षिण भाग में पहाड़ियों के आस-पास जंगल पाये जाते हैं। खड़गपुर पहाड़ी के पास भी जंगल हैं। पर जंगल अब कटते जा रहे हैं।

नदियाँ

इस जिले की नदियों में गंगा नदी तथा उसकी सहायक और उपसहायक नदियाँ हैं। गंगा के उत्तर की मुख्य नदियाँ बूढ़ी गण्डक, बालान, बाघमती और तिलयुगा या कमला हैं तथा दक्षिण की क्यूल, अञ्जन, अजय और मणि।

गङ्गा नदी—इस जिले में गंगा ७० मील तक गयी है। यह बछवारा के पास जिले में प्रवेश करती है और सुलतानगंज के पास इस जिले को छोड़कर भागलपुर जिले में पहुँचती है। बरसात में इसकी चौड़ाई मीलों तक फैल जाती है। मुँगेर के पास इसकी धारा बदलते रहने के कारण यहाँ बड़े-बड़े दियारे कायम हो गये हैं। इनमें कुतलूपुर और बिन्दा दियारा मुख्य हैं। वर्षा-काल में गंगा के बाये किनारे के बहुत-से गाँव पानी में डूबे रहते हैं। गोगरी थाने की तो और भी बुरी हालत रहती है। गंगा में बराबर बड़े-बड़े जहाज और नावें चलती रहती हैं।

छोटी या बूढ़ी गण्डक—बूढ़ी या छोटी गण्डक दरभंगा जिले से आकर अकहा ग्राम के पास इस जिले में प्रवेश करती है। यह बेगूसराय सबडिविजन में टेढ़ी-मेढ़ी चाल से चलती हुई खगड़िया और मनसी होकर गोगरी थाने में बायीं ओर

से गंगा में मिलती है। इस नदी में बारहो मास छोटी-बड़ी नावें चलती हैं।

बालान—यह बूढ़ी गण्डक की प्रधान सहायक नदी है जो दरभंगा जिले से आकर चिरिया बरियारपुर थाने में गण्डक से मिलती है। इसकी एक छोटी सहायक नदी है बैनती। यह बालान-गण्डक संगम से कुछ ही दूर पहले बालान से मिलती है। बालान में छोटी-छोटी नावें बराबर चलती हैं।

बाघमती—यह बेगूसराय सबडिविजन के उत्तर-पूरब कोने पर इस जिले में प्रवेश करती है और वहाँ से बहती हुई चौथम थाने के पास तिलयुगा से मिलती है। इसकी एक सहायक धारा है चन्दन, जिसमें विशेषकर काबरताल झील से पानी आता है।

तिलयुगा—तिलयुगा नदी यहाँ दरभंगा जिला होकर आती है। चौथम के पास बाघमती से मिलने के बाद इसका नाम घघरी हो जाता है। रामनगर के पास यह कटनी से मिलती है जो तलवा, परवान और लोरन नामक तीन धाराओं के मेल से बनी है। घघरी कुछ दूर चलने के बाद भागलपुर जिले में प्रवेश करती है।

क्यूल—जिले के दक्षिण में बहनेवाली नदियों में क्यूल नदी मुख्य है। यह नदी हजारीबाग जिले से निकलकर सतपुरा पहाड़ी के पास इस जिले में प्रवेश करती है। बरनर, अलई, अंजन और हलहोहर, ये चार धाराएँ क्यूल से आकर मिली हैं। क्यूल नदी सूर्यगढ़ा के पास गंगा में गिरती है। गर्मी के दिनों में यह नदी सूख जाती है। क्यूल जंकशन और लक्खीसराय रेलवे स्टेशन के बीच इसपर एक बड़ा और मजबूत पुल है।

अंजन—यह नदी इसी जिले की अंजन नामक पहाड़ी से

निकलती है और बरियारपुर के पास क्यूल में मिलती है। इस नदी से बेलिया नाली नाम को नहर निकाली गयी है। इसकी कई छोटी-छोटी सहायक धाराएँ भी हैं। कहते हैं, इस अंजन पर्वत पर ही अञ्जनीपुत्र हनुमान का जन्म हुआ था।

अजय—कई छोटी-छोटी धाराओं के मिलने से यह नदी बनी है। इस जिले को छोड़ने के पहले यह एक साधारणतः बड़ी नदी हो जाती है और बर्दवान जिले में जाकर गंगा में मिलती है।

मणि—मणि नदी भीम बाँध के पास खड़गपुर पहाड़ी से निकलकर 'घोरघाट के पास गंगा में मिलती है। इस नदी के पानी को रोककर सिंचाई के काम में लाया जाता है।

जलवायु और स्वास्थ्य

मुँगेर जिले की जलवायु न बहुत सूखी और न बहुत गीली है। मामूली तौर से वर्षा साल में ४५ से ५० इंच तक होती है। मुँगेर शहर के आस-पास बिजली अधिक गिरती है। कहते हैं कि आस-पास की पहाड़ियों में कच्चा लोहा अधिक रहने के कारण ही ऐसा होता है।

मुँगेर की आबोहवा को स्वास्थ्य के लिये अच्छी समझकर ईस्ट इंडिया कम्पनी के समय बहुत-से अँगरेज अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिये मुँगेर में रहा करते थे। जिले के दो प्राकृतिक भागों में बँटे रहने के कारण दोनों भागों की जलवायु में कुछ फर्क पड़ता है। दक्षिण की जमीन कुछ ऊँची और सूखी है। तथा वहाँ बहुत-सी पहाड़ियाँ और जंगल हैं। उत्तर भाग,

की जमीन नीची और गीली है। यहाँ का बहुत-सा हिस्सा बरसात में पानी से भरा रहता है।

गाँवों में स्वास्थ्य और सफाई पर लोगों का विशेष ध्यान नहीं है। इससे तरह-तरह के रोग फैलते रहते हैं। मलेरिया तो आम तौर से फैला रहता ही है, हैजा, प्लेग और चेचक। भी समय-समय पर फैलकर हर साल हजारों की जान लेते हैं। प्लेग पहले-पहल इस जिले में १६०० ई० में फैला था। इन दिनों बेगूसराय सबडिविजन में यह रोग अधिक हुआ करता है। रोगियों के इलाज के लिये शहरों और जहाँ-तहाँ गाँवों में अङ्गरेजी अस्पताल और देशी दवाखाने खुले हैं। सन् १६३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २६ अस्पताल थे।

सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस जिले में अन्धों की संख्या २,३२७, बहरे-गूँगों की संख्या ६६५, कोढ़ियों की संख्या ४८६ और पागलों की संख्या २६२ है।

जानवर

जिले में मवेशियों की हालत अच्छी नहीं है। आम तौर पर यहाँ मवेशी बहुत छोटे और कमजोर होते हैं। दक्षिण में पहाड़ियों के आस-पास बरसात में चारा काफी मिलता है; लेकिन गर्मी के दिनों में इसका बहुत अभाव रहता है। और जगहों की अपेक्षा फरकिया परगने में चारा कुछ अधिक मिलता है और दूर-दूर स्थानों से लोग अपने मवेशियों को यहाँ भेजते हैं। लेकिन, अब यहाँ भी अभाव बढ़ता जा रहा है। जिले के पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, घोड़े और बकरियाँ हैं। चकाई थाने में कुछ भेड़ भी पाले जाते हैं। डोम, दुसाध और मुसहर लोग सूअर पालते हैं।

जिले के दक्षिण भाग में जहाँ पहाड़ और जंगल हैं, जंगली जानवर काफी पाये जाते हैं ; इनमें बाघ, चीते, भालू, सूअर, भेड़िये, हरिण, नीलगाय, हनुमान, बन्दर आदि मुख्य हैं। बेगूसराय सबडिविजन के काबरताल में बन्दर बहुत पाये जाते हैं। हिन्दू इन्हें धार्मिक दृष्टि से देखते हैं । सन् १७९२ से लेकर सन् १८५२ तक यहाँ के बन्दरों को खिलाने के लिये सरकारी सहायता मिलती थी। जलचर जानवरों में घड़ियाल और मगर (बोचा) मुख्य हैं । उत्तर की गण्डक, बाघमती, तिलयुगा तथा घाघरा नदियों में बोचे बहुत होते हैं। मछलियाँ सब जगह पायी जाती हैं।

मुँगेर, जमुई और बेगूसराय में जानवरों के अस्पताल हैं। बहुत-से डाक्टर और वैद्य गाँवों में फेरी लगाकर भी पशुओं का इलाज करते हैं ।

इतिहास

प्राचीन काल—मुँगेर जिला प्राचीन आर्यों के मध्य देश का पूर्वी भाग था। लेकिन, उन परम प्राचीन आर्यों का कोई ऐतिहासिक चिह्न इस समय देखने में नहीं आता। जिले का प्रधान नगर मुँगेर गंगा के किनारे तथा नदी और पहाड़ी के बीच के स्थल-मार्ग के पास होने के कारण इतिहास-प्रसिद्ध रहा है। मुँगेर का एक प्राचीन नाम मोदगिरि था। यह नाम महाभारत में भी आया है। यहाँ पूर्वीय भारत के एक राज्य की राजधानी थी। महाभारत के सभापर्व में, जहाँ भीम के पूर्वीय भारत के जीतने का वर्णन है, लिखा है कि अंग देश के राजा कर्ण पर विजय प्राप्त करने के बाद भीम ने मोदगिरि के राजा पर चढ़ाई

कर उसे मार डाला। बहुत दिनों के बाद मोदगिरि स्वतन्त्र राज्य नहीं रह गया। तथाकथित ऐतिहासिक युग में यह अङ्ग-राज्य में मिल गया था जिसकी राजधानी चम्पा थी। जिले का पच्छिम भाग मगध राज्य के अन्दर था। बुद्ध के समय में मगध के राजा बिम्बिसार ने अंग राज्य को मगध में मिला लिया था। मुँगेर को लोग मुद्‌गल ऋषि के नाम पर मुद्‌गलपुरी भी कहते थे।

बौद्ध काल—जिले का बौद्ध कालीन इतिहास हमें चीनी यात्री य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) के यात्रा-वृत्तान्त से मिलता है। वह सातवीं सदी के मध्य में इस जिले के कुछ भागों में घूमने आया था। उसने यहाँ के बुद्ध के पवित्र स्थानों को देखा था। उसके वर्णन से मालूम होता है कि शेखपुरा के पास बुद्धदेव एक रात के लिये ठहरे थे और लक्खीसराय के पास रजोना ग्राम में तीन महीना ठहरकर वे धर्मोपदेश करते रहे थे। इस चीनी यात्री ने खड़गपुर की पहाड़ी और मुँगेर की पीर पहाड़ी का भी वर्णन किया है। पीर पहाड़ी को वह हिरण्य पर्वत बताता है। उसका कहना है कि यहाँ दस बौद्ध मठ थे जिनमें ४,००० भिक्षु रहते थे। वह लिखता है कि इस पर्वत से पहले भाप निकलती थी। पास के कई गर्म झरनों का भी वर्णन उसके यात्रा-वृत्तान्त में आया है। हिरण्य पर्वत का पीर पहाड़ी नाम मुसल-मानी समय में किसी पीर के नाम पर पड़ा हुआ जान पड़ता है। मुँगेर शहर के पच्छिम महादेव पहाड़ी पर या कजरा के निकट उरेन स्थान में भी बुद्ध भगवान के वर्षा-काल में तीन मास रहने का वर्णन आया है। यह भी पता चलता है कि उस समय भी मुँगेर एक राज्य की राजधानी था।

पाल-वंश—९वीं सदी में मुँगेर पाल राजाओं के हाथ में था। इसका पता सन् १७८० के करीब मुँगेर में मिले हुए एक

ताम्रपत्र से चलता है । यह ताम्रपत्र किसी ब्राह्मण को श्रीनगर (वर्तमान पटना) में कुछ जमीन देने के सम्बन्ध में मुँगेर ही में लिखा गया था। उस समय भी मुँगेर को मोदगिरि कहते थे। इस ताम्रपत्र की भाषा संस्कृत है । इसमें गोपाल, धर्मपाल और देवपाल का वर्णन आया है। लिखा है कि इन तीन राजाओं ने उस समय सारे भारत को जीतकर अपने अधीन कर लिया था। इसमें मुँगेर में एक बहुत बड़ी सभा होने का भी जिक्र है। कहते हैं कि देश-देशान्तर के राजा-महाराजा बड़ी-बड़ी सेनाएँ लेकर पाल-वंशी राजा की अभ्यर्थना के लिये इस सभा में उपस्थित हुए थे। लोगों के आने-जाने के लिये गंगा में नावों का पुल बनाया गया था । मुँगेर में एक और ताम्रपत्र मिला है जो पाल-वंश के पाँचवें राजा नारायणपाल द्वारा दानपत्र के रूप में लिखाया गया था। इसमें भी गोपाल और धर्मपाल का जिक्र आया है। मुँगेर में एक बहुत बड़ी सभा लगने और गंगा में नावों का पुल होने का भी वर्णन इसमें है। नारायणपाल का राज्य-काल १०वीं शताब्दी के मध्य में समझा जाता है।

पाल-वंशी राजे बौद्ध धर्मावलम्बी थे। मुँगेर जिले में उनके समय की बौद्ध कालीन वस्तुएँ बहुत-से स्थानों में पायी जाती हैं। इस वंश के अन्तिम राजा इन्द्रद्युम्न मुसलमानों के आक्रमण के समय तक राज कर रहे थे। जमुई सबडिविजन के इनपै नामक स्थान में इनके किले का भग्नावशेष अब भी मौजूद है।

मुसलमान-काल—१२वीं सदी में विहार के और जिलों की तरह मुँगेर जिला भी मुसलमानों के हाथ में चला गया। मुसलमानी वक्त में भी विहार प्रान्त में पटने के बाद मुँगेर का ही स्थान था। इस जिले के अन्दर उस समय का सबसे पुराना स्मृति-चिह्न लक्खीसराय का एक शिला-लेख है जिसमें १२९७

ई० की मुसलमानी तारीख दी गयी है। इस शिला-लेख में बंगाल के सरदार रुकनुद्दीन कैकस (१२६१ ई० से १३०२ ई० तक) और फिरोज एतगीन नामक सूबेदार के बारे में कुछ लिखा है।

१५वीं सदी के अन्त में बंगाल के सुलतान हुसैनशाह का लड़का राजकुमार दानियाल पूर्वी विहार का सूबेदार हुआ। उसने मुँगेर के पुराने किले की मरम्मत करायी और १४९७ ई० में यहाँ शाहनफह की दरगाह बनवायी जो किले के दक्षिणी फाटक के पास अब भी मौजूद है। हुसैनशाह के मरने पर जब उसका लड़का नसरतशाह गद्दी पर बैठा तो उसने मुँगेर के किले को अपने कब्जे में कर लिया और अपने सेनापति कुतुबखाँ को वहाँ का सरदार बनाया। जब बाबर ने विहार पर चढ़ाई की तो कुतुबखाँ ने ही बंगाल के सुलतान की ओर से उससे संधि की। जब शेरशाह का बल बढ़ा तो कुतुबखाँ को शेरशाह से लड़ना पड़ा; पर वह हार गया और मुँगेर पर शेरशाह का कब्जा हो गया। जब हुमायूँ बंगाल से भागकर आ रहा था तो उस समय मुँगेर में शेरशाह के साथ लड़ाई हुई थी।

१५४५ ई० में मुँगेर मियाँ सुलेमान के अधीन हुआ जो शेरशाह के लड़के इस्लामशाह की ओर से दक्षिण विहार का सूबेदार बनाकर भेजा गया था। १५५७ ई० में मियाँ सुलेमान ने इस्लामशाह के उत्तराधिकारी आदिलशाह पर, उसके अकबर की सेना से हारकर लौटते समय, सूर्यगढ़ा के पास चढ़ाई कर उसे मार डाला। १५६३ ई० में सुलेमान बंगाल-विहार का शासक बन गया; पर उसे अकबर की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। १५७३ ई० में उसका लड़का दाऊदशाह उसका उत्तराधिकारी बना। उसने मुगल बादशाह को कर देना बन्द कर दिया; इसलिये अकबर ने विहार पर चढ़ाई कर इसपर कब्जा

कर लिया। १५८० ई० में बंगाल में फौजी बगावत शुरू होने पर कुछ दिनों के लिये मुँगेर अकबर बादशाह के फौजी अफसरों का प्रधान अड्डा बना रहा। टोडरमल ने यहाँ आकर बड़ी बुद्धिमानी से बलवाइयों को दबाया।

जिस समय अकबर विहार और बंगाल को अपने अधीन कर रहा था उस समय विहार में तीन शक्तिशाली जमींदार थे। इनमें दो तो मुँगेर के ही थे—एक तो गिद्धौर के राजा पूरनमल और दूसरे खड़गपुर के राजा संग्राम सिंह। दोनों ने अकबर से मिलकर अफगानों को परास्त करने में सहायता दी थी। पहले तो संग्राम सिंह बलवाइयों के साथ था; पर जब अकबर के सेनापति शाहबाज खाँ ने उसपर चढ़ाई की तो वह खड़गपुर से ६ मील उत्तर महदा का किला शाहबाज को समर्पण कर उससे मिल गया। उसने अकबर की अधीनता स्वीकार की और अपने लड़के को जामिन के तौर पर शाही दरबार में रहने को भेजा। अकबर के बाद जब जहाँगीर गद्दी पर बैठा तो संग्राम सिंह ने स्वतन्त्र हो जाना चाहा। उसने लड़ाई ठानी; पर वह मारा गया। यह सन १६०६ की घटना है। १६१५ ई० में संग्राम सिंह का लड़का, जो दिल्ली में कैद था, मुसलमान होना स्वीकार करने पर, अपने पिता की गद्दी पर बैठने को भेजा गया। मुसलमान हो जाने पर भी वह राजा ही कहलाता रहा। इतिहास में वह राजा रोजफजून के नाम से मशहूर है। शाहजहाँ के समय में वह शाही दरबार के काम में लग गया और कई लड़ाइयों में बड़ी बहादुरी के साथ लड़ता रहा। पीछे वह दो हजार पैदल और एक हजार घुड़सवारों का सरदार बनाया गया। उसके मरने के बाद उसका लड़का राजा बिहरूज उसका उत्तराधिकारी बना। उसने कन्धार जीतने में बादशाह की मदद की। औरंगजेब को भी इसने

शाहशुजा आदि के विरुद्ध लड़ने में सहायता की थी। खड़गपुर राज्य अङ्गरेजों के वक्त तक कायम रहा।

बंगाल का सूबेदार शाहशुजा अपने पिता शाहजहाँ के बीमार पड़ने पर दिल्ली की गद्दी लेने के लिये मुँगेर में ही सेना की तैयारी कर आगे बढ़ा ; लेकिन कई बार उसे हार खाकर लौट आना पड़ा। पर, औरंगजेब के गद्दी पर बैठ जाने पर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने मुँगेर में सैनिकों का फिर संगठन किया। मुँगेर के किले को मजबूत कराया और उसके चारों ओर खाई खुदवायी तथा किले से पहाड़ियों तक घेरा डलवाया। लेकिन, आक्रमणकारी शहर के अन्दर घुस ही आये। आखिर शाहशुजा भागकर बंगाल चला गया।

आइने-अकबरी में मुँगेर जिले के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इसके अनुसार मुँगेर सरकार ३१ महालों या परगनों में बँटा था। मुँगेर कुछ दिनों तक अकबर के सेनापति राजा मान-सिंह का भी निवास-स्थान रहा। जहाँगीर के शासन-काल में कासिम खाँ मुँगेर सरकार का प्रबन्धक था। शाहजहाँ के राज्य-काल के प्रथम वर्ष में सैयद मुहम्मद मुख्तार खाँ मुँगेर का तयुलदार बहाल किया गया था। औरंगजेब के राज्यकाल में मुल्ला महम्मद सैयद नामक कवि, जिसने औरंगजेब की बेटी जेबुन्निसा को पढ़ाया था, यहीं मरा। उसकी कब्र अब भी यहाँ मौजूद है।

१७वीं शताब्दी तक मुँगेर का किला बिलकुल दुरुस्त था। डच डाक्टर निकोलस ग्राफ ने इसकी बड़ी तारीफ की थी। १७४५ ई० में अलीवर्दी खाँ के विद्रोही सेनापति मुस्तफा खाँ ने उत्तर की ओर बढ़ते समय मुँगेर पर धावा किया था। उस समय मुँगेर का किला भग्नावस्था में था। पूना का पेशवा

बालाजी राव सेना लेकर बंगाल जाते समय मुँगेर भी आया था।

अँगरेजी काल—१७५७ ई० में पलासी युद्ध के बाद शिराजुद्दौला के दल के जीन लॉ नामक एक फ्रांसीसी सरदार का पीछा करता हुआ अँगरेजी सेनापति आयरकूट मुँगेर आया था। यहाँ आकर उसने यहाँ के दीवान से कुछ नावें माँगी थीं और मुँगेर के किले में प्रवेश करना चाहा था। नावें तो उसे दी गयीं; पर किले में प्रवेश करने की इजाजत उसे नहीं मिली। तीन वर्ष बाद दिल्ली के बादशाह शाहआलम की सेना मेजर केलाड और मीरन द्वारा पीछा किये जाने पर इस जिले के दक्षिण होकर ही गयी थी। उसी वर्ष जॉन स्टैबुल्स ने मुँगेर जिले पर चढ़ाई की थी। बात यह थी कि खड़गपुर का राजा नये नवाब मीरकासिम अली खाँ का आधिपत्य नहीं मानता था। उस समय मुँगेर में अँगरेजों के पास केवल ५५० सैनिक थे। राजा ने २००० सैनिकों के साथ अँगरेजी सेना का सामना किया; लेकिन उसको हार पर हार होती गयी और वह बिल्कुल तबाह हो गया। अन्त में उसने अधीनता स्वीकार कर ली।

मीरकासिम का शासन—१७६१ ई० में जब मीरकासिम मुर्शिदाबाद से अपनी राजधानी हटाकर मुँगेर लाया तो एक बार फिर मुँगेर की प्रमुखता बहुत बढ़ गयी। मुँगेर में उसने रहने के लिये महल बनवाये, किले की मरम्मत करायी और बन्दूक के कारखाने खोले। लेकिन, थोड़े ही दिनों के बाद अँगरेजों के साथ उसका झगड़ा हो गया। बात यह हुई कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी तो बिना कर दिये व्यापार कर ही रही थी; अब उसके यूरोपियन कर्मचारी भी बिना कर दिये व्यापार करने लगे। इधर देशी व्यापारियों पर भारी कर लगा हुआ था। फलस्वरूप, सारा व्यापार अँगरेजों के हाथ में चला गया था और मीरकासिम

की आमदनी बिलकुल घट गयी थी। अँगरेज व्यापारी यहाँ की प्रजा पर ज्यादती भी बहुत करते थे। इसी बात को लेकर अनबन शुरू हुई। वारन हेस्टिंग्स ने यहाँ आकर इस अनबन को रोकना चाहा; पर फल कुछ नहीं हुआ। लड़ाई छिड़ गयी। पटना फैक्टरी के मि० एलिस ने पटना शहर पर कब्जा कर लिया; लेकिन नवाब की सेना ने शीघ्र ही पटने पर फिर अधिकार जमा लिया। पटने से बहुत-से अँगरेज पकड़कर मुँगेर लाये गये और कैद में रखे गये। लेकिन, बंगाल से एक बहुत बड़ी सेना मुँगेर की ओर बढ़ी। रास्ते में इसने कई जगहों पर नवाब की सेना को परास्त किया। यह खबर सुनकर मीरकासिम ने अपनी बेगमों और बच्चों को रोहतास के किले में भेज दिया और गुरगीन खाँ को साथ लेकर युद्ध के लिये निकल पड़ा। मुँगेर छोड़ने के पहले उसने अपने बहुत-से कैदियों को मार डाला जिनमें बिहार का भूतपूर्व नायब गवर्नर राजा रामनारायण भी था। मीरकासिम मुँगेर किले को अरबली खाँ की संरक्षता में छोड़ गया था। जब सन् १७६३ की १लो अक्टूबर को अँगरेजी सेना मुँगेर पहुँची तो अरबली खाँ ने शक्ति भर अँगरेजों का सामना किया। दो दिनों की लड़ाई के बाद मुँगेर अँगरेजों के कब्जे में आ गया। अँगरेजों ने किले की मरम्मत कराने में तुरत हाथ लगा दिया। इस बीच मीरकासिम भागकर पटना चला गया था। जब उसे मुँगेर के हाथ से निकल जाने की खबर लगी तो उसने क्रोध में आकर अपने साथ के सभी अँगरेज कैदियों को कत्ल करवाकर एक कुएँ में डलवा दिया जहाँ आज स्मारक बना हुआ है। अँगरेजी सेना के पटना पहुँचने पर मीरकासिम भागकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला से जा मिला, पीछे बादशाह शाहआलम, शुजाउद्दौला और

मीरकासिम, तीनों ने मिलकर अँगरेजों पर चढ़ाई की; पर बक्सर की लड़ाई में सब हार गये। इस विजय से अँगरेज बिहार-बंगाल के मालिक ही बन बैठे।

मुँगेर पर अँगरेजों का कब्जा हो जाने पर यहाँ एक अँगरेजी सेनी रखी गयी। कुछ समय के बाद अँगरेजी सैनिकों ने डबल भत्ते के लिये बलवा कर दिया जिसे क्लाइव ने आकर दबाया। इसके बाद मुँगेर के इतिहास में कोई उल्लेख-योग्य घटना नहीं हुई। कुछ दिनों तक मुँगेर बृटिश सैनिकों के लिये स्वास्थ्य-प्रद स्थान—सैनिटोरियम की तरह काम में आता रहा। वारन हेस्टिंग्स की स्त्री भी यहाँ स्वास्थ्य-सुधार के लिये आयी थी।

मुँगेर जिले का निर्माण—वर्तमान मुँगेर जिले का निर्माण १८१२ ई० में प्रारम्भ होना माना जाता है। उस साल यहाँ एक ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट की बहाली हुई थी जो भागलपुर के मजिस्ट्रेट के अधीन काम करता था। १८३२ ई० में यहाँ के ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट को डिप्टी कलक्टर का पद दिया गया। इसके बाद इस जिले की सीमा कायम होने लगी। बहुत उलट-फेर के बाद यह जिला वर्तमान रूप में कायम हुआ है। जमुई सबडिविजन १८६४ ई० में बना था। पहले इसका हेड आफिस सिकन्दरा था; पर १८६९ ई० में यह जमुई लाया गया। बेगूसराय सब-डिविजन १८७० ई० में बना। पहले लोग इसे बलिया सब-डिविजन कहते थे; लेकिन इसका हेड आफिस बराबर बेगूसराय में ही रहा। बहुत उलट-फेर के बाद यह जिला वर्तमान रूप में कायम हुआ है।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में मुँगेर जिले की जनसंख्या १६,७१,८५२ थी। सन् १६३१ में यह २२,८७,१५४ हो गयी। इसमें ११,४५,७६७ पुरुष और ११,४१,३५७ स्त्रियाँ हैं। इधर ५० वर्षों में इस जिले के अन्दर ३,१५,३०२ आदमी अर्थात् प्रति सैकड़े १६ आदमी बढ़े। १९३१ ई० की गणना के अनुसार औसत के हिसाब से एक वर्गमील में यहाँ ५८२ आदमी रहते हैं। बेगूसराय सबडिविजन में एक वर्गमील के अन्दर ८६४, सदर सबडिविजन में ६३३ और जमुई सबडिविजन में ३४३ आदमी रहते हैं। सन् १६२१ ई० में जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ७१,४१६ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या २,२३,५४४ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में गाँवों की संख्या २,६१० और शहरों की संख्या ६ है। मुँगेर, जमालपुर, शेखपुरा, खगड़िया, लक्खीसराय और बेगूसराय, ये ही ६ शहर हैं। इन शहरों की कुल आबादी १,२६,००८ है। केवल मुँगेर शहर की आबादी ५०,८६३ है। १९३४ ई० के भीषण भूकम्प के कारण इस शहर की जनसंख्या बहुत घटी है।

इस जिले की बोलियाँ मैथिली और मगही से मिलती-जुलती हैं। मोटे तौर पर गंगा नदी बोलियों की सीमा का काम करती है। गंगा के उत्तर भाग की बोली मैथिली से और दक्षिण भाग की बोली मगही से मिलती है। गंगा के उत्तर भी पूर्वी और पच्छिमी भाग की बोलियों में कुछ फर्क पड़ता है। इसी तरह गंगा के दक्षिण भी पूर्वी और पच्छिमी भाग की बोलियों में अन्तर है। पूर्वी भाग की बोली पर मैथिली का और पच्छिमी

भाग की बोली पर मगही का प्रभाव है। पढ़े-लिखे लोग आपस में शुद्ध हिन्दी बोली बोलते और लिखते हैं। आम लोगों की लिपि कैथी है; पर पढ़े-लिखे हिन्दू-मुसलमान क्रम से नागरी और उरदू लिपि लिखते हैं। जिले की जनसंख्या में २२,६५,४९४ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ३,३२० की बँगला, १,०४१ की मारवाड़ी, १६० की नेपाली, ११४ की पंजाबी, ४० की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ, १५,१५० की संताली, २७६ की कोरा, १४० की मुंडारी, ६३ की पश्तो और द्राविड़ आदि तथा १,३५६ की यूरोपीय भाषायें हैं।

जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	२०,४६,१९२	जैन	२४
मुसलमान	२,२८,४९७	सिक्ख	८
आदि वासी	७,५०८	बौद्ध	४
ईसाई	१,९१७	पारसी	४

जिले के अन्दर हिन्दू फी सैकड़े ८९ हैं। हिन्दू में ग्वाले सबसे अधिक हैं जो पौने तीन लाख की संख्या में हैं। जिले की कुछ प्रमुख जातियों की जनसंख्या अलग दी हुई है।

जिले में मुसलमानों की संख्या फी सैकड़े ९ है। अहल-इ-हदी आन्दोलन के चलानेवाले मौलवी नजीर हुसैन इसी जिले के रहनेवाले थे। वे पीछे दिल्ली जाकर बसे।

जिले में ईसाइयों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ १८८१ ई० में १,०६१ ईसाई थे, १९०१ ई० में १,४३३ हुए। १९३१ में आकर ये लोग १,९१७ हो गये, जिनमें ५०२ यूरोपियन आदि, ८२३ ऐंग्लो इंडियन और ५९२ भारतीय ईसाई थे। जिले में दो ईसाई मिशन काम कर रहे हैं, एक तो बैपटिस्ट मिशन और दूसरा युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्काटलैंड मिशन।

बेगूसराय, लकखीसराय, खगड़िया और कजरा में इनके प्रचार-केंद्र हैं। मिशन की एक महिला-शाखा भी है। मुँगेर शहर में बैपटिस्ट मिशन के दो चर्च हैं। जमालपुर में भी एक युनियन चर्च है। बामदह में युनाइटेड फ्री चर्च की एक शाखा है। वहाँ उनका एक अस्पताल है जिसकी एक शाखा चकाई में है।

कहते हैं कि इस जिले में पहले अनार्यों की संख्या बहुत थी। जिले का उत्तरीय भाग बहुत दिनों तक भार लोगों के हाथ में था। बेगूसराय सबडिविजन और तप्पा सरौंजा में जो किले के भग्नावशेष हैं वे उन्हीं के समझे जाते हैं। खड़गपुर परगने में खेतौरी लोग थे जिनका शासन ५२ सरदारों द्वारा होता था। इन्हीं को तीन राजपूत भाइयों ने जीतकर खड़गपुर राज्य की स्थापना की थी। गिद्धौर महाराज के पूर्वजों ने दक्षिण के खेतौरियों को जीतकर अपना राज्य कायम किया था। अब भी जिले का दक्षिण भाग सन्ताल, भुइयाँ, कोल और कोरा आदि आदिम निवासियों से भरा है।

खेती और पैदावार

मुँगेर जिले का रकबा २५,०१,४५० एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १६,३४,३०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और १३,३४५ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,६६,८४३ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। ४,८६,९६२ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की फी सैकड़े करीब ६६ भाग जमीन जोत के अन्दर है, इसका सिर्फ १३२ वाँ भाग परती रहता है। इतने

कम परती जमीन प्रान्त के और किसी जिले में नहीं रहती। सैकड़े १४½ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता और सैकड़े १६½ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अंदर जोत जमीन के सैकड़े २४ भाग में दो या तीन फसल होती है।

जिले के उत्तरी और दक्षिणी भागों की खेती की दशा भिन्न है। उत्तर की भूमि समतल और उपजाऊ है। यहाँ भदई और रब्बी की खेती अधिक होती है, सिर्फ थोड़ी-सी नीची जमीन में धान की खेती होती है; लेकिन जिले के दक्षिण भाग में धान की खेती ही अधिक होती है, भदई और रब्बी की खेती बहुत कम। गंगा के दियारे की जमीन बहुत उपजाऊ है, उसमें भदई और रब्बी की फसल होती है।

जिले के उत्तरी भाग में बेगूसराय सबडिविजन का तीन चौथाई भाग ऊँचा है और यहाँ नुकसानदेह बाढ़ का डर नहीं है। बेगूसराय थाने का उत्तरी भाग और फरकिया परगना हर साल बाढ़ से पीड़ित रहता है। जिले के उतर-पच्छिम कोने पर सात वर्गमील के दायरे में काबरताल है। इसके आसपास धान की खेती अच्छी होती है। बाढ़ को रोकने के लिये जहाँ-तहाँ बाँध बँधे हुए हैं; फिर भी बाढ़ से बड़ी नुकसानी होती है।

गंगा के दक्षिण किनारे पर रब्बी फसल होती है। गंगा नदी और ई० आई० आर० की लूप लाइन के बीच जमालपुर से लक्खीसराय तक धान की खेती खूब होती है। शेखपुरा थाने में, जो ईस्ट इंडियन रेलवे और साउथ विहार, रेलवे के बीच है, दो तरह की जमीन है। पूर्वी भाग में रब्बी फसल होती है और पच्छिमी भाग में सकरी नदी की सिंचाई से धान होता है। बरियारपुर से शेखपुरा तक की जमीन तीन भागों में बँटी

हुई है। पूर्वीय भाग में मणि नदी और खड़गपुर झील के कारण सिचाई का प्रबन्ध पूरा होने से धान की खेती खूब होती है। बीच में खड़गपुर की पहाड़ी है। पश्चिम भाग में धान और रब्बी दोनों की खेती होती है। यहाँ की जमीन सूखी है और वर्षा कम होने से धान की खेती मारी जाती है। इस भाग के दक्षिणी हिस्से में विशेषकर धान की खेती होती है; पर यहाँ की जमीन उतनी अच्छी नहीं है जितनी गंगा के पास की जमीन। खड़गपुर पहाड़ी से लेकर जिले की दक्षिण सीमा तक के भाग में अधिकतर धान की ही खेती होती है। हाँ, थोड़ी-सी रब्बी और ईख की फसल भी हो जाती है।

सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की जोत जमीन के सैकड़े ६९ भाग में रब्बी, सैकड़े २९ भाग में अगहनी और सैकड़े २६ भाग में भदई की फसल होती है। सैकड़े ६ भाग में कन्द-मूल और फल-तरकारी होती है। जिले में सबसे अधिक खेती धान की होती है। उसके बाद क्रम से मकई, चना, गेहूँ और जौ का स्थान आता है। इनके अलावा तीसी, सरसों, अरहर, खेसारी, मसूर, मटर, जई, कोदो, मड़ुआ, शामा, चीना, कुरथी वगैरह की भी खेती होती है। धान को छोड़कर बाकी चीजें उत्तर मुँगर में अधिकता से बोयी जाती हैं। बेगूसराय सबडिविजन में तम्बाकू और मिरचाई की खेती बहुत होती है। इधर कई वर्षों से ऊख की खेती सब जगह बहुत तेजी से बढ़ रही है। पहले नील की खेती खूब होती थी, लेकिन अब इसकी खेती बन्द हो गयी है।

उत्तर मुँगेर में कृत्रिम सिंचाई का प्रबन्ध नहीं के बराबर है। जहाँ-तहाँ तम्बाकू और मिरचाई के खेत कुएँ से सींचे जाते हैं। छोटी-छोटी धाराओं और चौर के पानी से धान का

खेत पटाया जाता है। उपजाऊ जमीन के सिर्फ २३ प्रति सैकड़े भाग में सिंचाई का काम होता है।

दक्षिण मुँगेर में सिंचाई का काफी प्रबन्ध है। यहाँ उपजाऊ जमीन के ४२ प्रति सैकड़े भाग में सिंचाई होती है। सिंचाई के तीन साधन हैं—पैन आहर और कुआँ। नदी के सोतों से जो छोटी-छोटी नालियाँ निकालकर खेतों में लायी जाती हैं, उन्हें पैन कहते हैं। सोतों से जो पानी बहाकर बाँधों से रोक रक्खा जाता है, उसे आहर कहते हैं। आहर से लोग करीन या चाँड़ द्वारा पानी उठाते हैं। कूएँ से लाठा और कूँड़ी द्वारा पानी खींचा जाता है। खड़गपुर इलाके में खड़गपुर झील से सिंचाई का काम होता है। समूचे जिले की कुल जोत जमीन के सैकड़े २१½ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है।

मुँगेर और जमुई में सरकारी कृषि-फार्म हैं जो छोटे स्केल में हैं। यहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार मुँगेर जिले के अन्दर हजार आदमियों में ४६० आदमी कमानेवाले और बाकी उनके आश्रित स्त्री-बच्चे हैं। कमानेवाले ४६० आदमियों में २९१ आदमी कृषि और पशु-पालन में, २९ उद्योग-धंधों में, २० व्यापार में, ५ पंडा-पुरोहित, डाक्टर-वैद्य, वकील-मुख्तार, लेखक-शिक्षक और कलाकार आदि के पेशे में, ४ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सफाई वगैरह के कामों में, १ शासन-सम्बन्धी कार्य में तथा ११० दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम पड़ता है कि यहाँ कमानेवालों में सैकड़े ६३ आदमी खेती का काम करते हैं।

हिन्दुओं की भिन्न-भिन्न जातियों के अधिकांश लोग अधिकतर अपने पुस्तैनी धंधे में लगे हुए हैं।

मुँगेर जिला कला-कौशल के लिये बहुत मशहूर रहा है। पुराने समय की मुँगेर की बनी चीजों में बंगाल के नवाब नाजिम के लिये बनी हुई मसनद अर्थात् काले पत्थर का सिंहासन एक तारीफ की चीज है। यह मसनद १०५२ ई० में बनी थी। बहुत-से पुराने यूरोपियन पर्यटकों ने मुँगेर जिले की बनी हुई पत्थर, लोहे, लकड़ी आदि की चीजों को देखकर आश्चर्य प्रकट किया है और उनकी बड़ी प्रशंसा की है। अब भी इस जिले में बहुत तरह के कारबार चल रहे हैं जिनकी बहुत प्रसिद्धि है।

रेलवे कारखाना—जमालपुर का रेलवे कारखाना हिन्दुस्तान में मशहूर है। यह लोहे का बहुत बड़ा कारखाना है। यहाँ लोहे की बड़ी-बड़ी चीजें तथा इंजिन वगैरह भी बनते हैं। यहाँ हजारों मजदूर रोज काम करते रहते हैं।

बन्दूक के कारखाने—नवाब मीर कासिम ने दिल्ली से कारीगरों को बुलाकर मुँगेर में बन्दूक और पिस्तौल वगैरह के कारखाने खोले थे। यहाँ की बनी चीजों की तारीफ यूरोपियन लोग भी करते थे। बहुत दिनों तक यह कारबार खूब चलता रहा। लेकिन, जब यूरोप से बन्दूक और पिस्तौलें आने लगीं तो यहाँ के कारबार को बहुत धक्का लगा। अब यहाँ ये चीजें बहुत थोड़ी संख्या में तैयार होती हैं।

लोहे के और कारबार—पहले खड्गपुर पहाड़ी में लोहा गलाने का काम बहुत होता था; लेकिन विदेश से लोहा आने लगने और जमालपुर का कारखाना खुल जाने से यहाँ का काम बन्द-सा हो गया है। थोड़े-से कोल, माँझी अब भी इस काम को कर रहे हैं। संताल लोग इसी लोहे से तीर बनाना पसन्द करते हैं।

स्लेट—मारुक, सुखाल, टिकाई, गढ़िया, अमरसनो और सीताकोबर, इन छः स्थानों में खड़गपुर पहाड़ी से स्लेट के पत्थर निकाले जाते हैं। यह काम इस समय अम्बलर कम्पनी के हाथ में है। यहाँ छत की स्लेट और स्कूल की स्लेट भी तैयार होती हैं।

अबरक—नवडीह स्टेशन के पास बरहिया, महगैन, श्रीकृष्ण, गण्डा, सहजापुबरी और भुकाले नामक स्थानों में अबरक की खानें हैं। शिकन्दरा थाने के अन्दर बिचवे नामक स्थान में भी एक खान है। गिद्धौर राज्य के अधीन बेहरा गाँव में कुछ अबरक की खानें हैं जो अभी काम में नहीं लायी जा रही हैं।

चक्की का पत्थर और चूना—धरहरा के पास चक्की का पत्थर तैयार होता है। मुँगेर में चूना भी तैयार किया जाता है। साधारण चूना एक प्रकार के कंकड़ को जलाकर और बढ़िया चूना सीप का पकाकर तैयार करते हैं।

पी० टी० फैक्टरी—मुँगेर में पी० टी० फैक्टरी अर्थात् पेनिनसुलर टुबैको फैक्टरी नाम का एक सिगरेट का बहुत बड़ा कारखाना है। यह अँगरेजों के हाथ में है।

सोना-चाँदी—सोना-चाँदी के कारबार के लिये खड़गपुर प्रसिद्ध है। कहते हैं, खड़गपुर के राजा ने यहाँ बाहर से कारीगरों को बुलाया था। हर तरह के गहने, इत्रदान, गुलाब-पास और मछलियाँ वगैरह यहाँ बनते थे। पर, यह व्यवसाय अब बिल्कुल घट गया है।

लकड़ी—लकड़ी के सुंदर कामों के लिये गोगरी प्रसिद्ध रहा है। अब भी यहाँ की बनी खड़ाऊँ को लोग बहुत पसंद करते हैं।

दूसरे व्यवसाय—ऊपर बताये उद्योग-धंधों के अलावे यहाँ और भी कई छोटे-मोटे काम होते हैं; जैसे कपड़ा बुनना, कम्बल तैयार करना, नैचा बनाना, शोरा नमक तैयार करना

आदि। मुँगेर के पास के गर्म झरनों के जल से सोडावाटर तैयार किया जाता है। पहले यहाँ नील बहुत तैयार होता था; पर अब इसका काम बन्द हो गया है।

फैक्टरियाँ—सन् १६३६ में जिले के अन्दर १६ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी ऐक्ट लागू था। इनमें ४ रेलवे की, ३ चावल-दाल और तेल आदि की, २ बिजली की, २ चूने आदि की और १-१ शराब, नील, चीनी, प्रेस और सिगरेट की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—गंगा किनारे के मुख्य व्यापार-केन्द्र मुँगेर, सिमरिया और गोगरी हैं। गंडक के किनारे खगड़िया मुख्य है। रेलवे लाइन पर मुँगेर, जमालपुर, बरहिया, लक्खीसराय, बेगूसराय, शेखपुरा, बरियारपुर, सिमरिया और खगड़िया मुख्य हैं। मुँगेर से अधिकतर अन्न, घी, तम्बाकू का पत्ता, चूना, चमड़ा, स्लेट, अबरक, शोरा नमक और लोहे की चीजें बाहर भेजी जाती हैं। गोगरी से खसखस बाहर जाता है। खड़गपुर और महेशरी पहाड़ी से सावे घास कागज बनाने के लिये कलकत्ता भेजी जाती है। जिले के दक्षिण भाग से शराब तैयार करने के लिये महुआ बाहर जाता है। जंगलों से सखुआ का पत्ता और बतिया तथा महेशरी पहाड़ी से बाँस की लाठी बाहर जाती है। बाहर से कपड़ा, किरासन तेल, कोयला तथा तरह-तरह की छोटी-बड़ी देशी-विदेशी चीजें आती हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—मुँगेर जिले में दो रेलवे लाइनें हैं—ईस्ट इण्डियन रेलवे और बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे। ईस्ट इण्डियन रेलवे लाइन १८६२ ई० में खुली थी। जिले के अन्दर इस रेलवे की दो

मुख्य लाइनें हैं—लूप लाइन और कार्ड लाइन। लूप लाइन घोरघाट के पास जिले में प्रवेश करती है और बरहिया से कुछ आगे जाने पर जिले को छोड़ती है। बीच में कल्याणपुर, बरियारपुर, रतनपुर, जमालपुर, धरहरा, अभयपुर, कजरा, क्यूल, लक्खीसराय और मनकट्ठा स्टेशन हैं। बरियारपुर और जमालपुर के बीच यह लाइन कुछ दूर तक खड़गपुर पहाड़ी की सुरंग होकर गयी है। यह सुरंग ९०० फीट लम्बी, २६ फीट चौड़ी और २६ फीट ऊँची है। क्यूल नदी पर इसका एक बड़ा पुल है। मेन लाइन या कार्ड लाइन सिमलतला के पास जिले में प्रवेश कर क्यूल में लूप लाइन से मिल जाती है। ई० आई० आर० (ईस्ट इण्डियन रेलवे) की एक ब्रांच लाइन जमालपुर से सोफियासराय और पूरबसराय होकर मुंगेर तक गयी है।

साउथ बिहार ब्रांच लाइन क्यूल से चलकर इस जिले में सिर्फ २३ मील तक गयी है। इस लाइन पर लक्खीसराय, गरसंडा, एकसरी, शेखपुरा और सहनौरा रेलवे स्टेशन हैं।

गंगा के उत्तर बी० एन० डब्ल्यू० (बंगाल नार्थ वेस्टर्न) रेलवे है। कटिहार से कानपुर जानेवाली मेन लाइन इस जिले के अन्दर पसराहा से बछवारा तक गयी है जिसकी दूरी ७५ मील है। बीच में महेशखुँट, मनसी, खगड़िया, साहेबपुरकमाल, लखमिनिया, लाखो, बेगूसराय, तिलरथ, बरौनी - जंकसन, बरौनी-फ्लैग और तेघरा रेलवे स्टेशन हैं। इस बीच में कई ब्रांच लाइनें हैं। मनसी से भपटियाही जानेवाली लाइन पर मनसी, बदलाघाट, धमहराघाट, कोपरिया और सिमरी-बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन मुँगेर जिले के अन्दर हैं। इसी तरह खगड़िया से समस्तीपुर जानेवाली लाइन पर खगड़िया, ओलापुर, इमली और सलौना स्टेशन इसी जिले में हैं। शाहपुरकमाल से

मुँगेर-घाट और बरौनी से सिमरिया-घाट जानेवाली लाइन बिलकुल मुँगेर जिले में ही पड़ती है। बछवारा से समस्तीपुर जानेवाली लाइन कुछ दूर के बाद इस जिले को छोड़ देती है।

सड़कें—जिले के अन्दर बहुत-सी कच्ची-पक्की सड़कें हैं। प्रसिद्ध ऐतिहासिक सड़क ग्रैंड ट्रंक रोड इस जिले के अन्दर घोरघाट से लेकर बरहिया तक गयी है जिसकी दूरी ५४ मील है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की बनवायी हुई एक पक्की सड़क मुँगेर से बरियारपुर और खड़गपुर होती हुई जमुई तक गयी है। एक दूसरी सड़क सुलतानगंज से संग्रामपुर तक गयी है। मुँगेर से एक सड़क कजरा तक जाती है। लक्खीसराय से एक सड़क सिकन्दरा को, दूसरी शेखपुरा को और तीसरी जमुई को गयी है। जमुई से एक सड़क सिकन्दरा और शेखपुरा होकर बरबीघा की ओर, दूसरी चकाई की ओर, तीसरी नवडीह की ओर, चौथी हरखार की ओर, और पाँचवीं झाझा की ओर गयी है। सिमलतला से एक सड़क चकाई को गयी है। झाझा से बटिया तक भी एक सड़क जाती है।

गंगा के उत्तर मुख्य तीन सड़कें हैं—तिरहुत की सड़क, रोसरा-गोगरी सड़क और नैपाल की सड़क। तिरहुत की सड़क जिले के अन्दर मुँगेर-घाट से बलिया, बेगूसराय, तेघरा और बछवारा होकर रसीदपुर तक गयी है। रोसरा-गोगरी सड़क खगड़िया होकर जाती है। नैपाल की सड़क मनसी से चलकर घमहरा और बख्तियारपुर होकर इस जिले के अन्दर बलहो तक गयी है। तेघरा थाने में तथा बेगूसराय थाने के पूरब और पच्छिम भाग में बहुत-सी छोटी-छोटी सड़कें हैं। गोगरी थाने में कोई अच्छी और बड़ी सड़क नहीं है। एक पक्की सड़क महेशखुँट से गोगरी तक, दूसरी कच्ची जमालपुर से भतखंड तक

और तीसरी जमालपुर से सुलतानगंज की ओर गयी है। गंगा के उत्तर अन्य छोटी-छोटी सड़कों में खगड़िया से मुँगेर जानेवाली, कोपरिया से सोनबरसा जानेवाली, बेगूसराय से मझौल जानेवाली, बेगूसराय से शाम्हो जानेवाली और मझौल से गढ़पूरा जानेवाली सड़कें है।

सन् १९३५-३६ की रिपोर्ट के अनुसार जिले के अन्दर कुल १७२१ मील लम्बी सड़कें हैं, जिनमें २०६ मील पक्की सड़कें, १,३६६ मील कच्ची सड़कें तथा १४९ मील छोटी-छोटी देहाती सड़कें हैं।

जलमार्ग—मुँगेर जिले के अन्दर गंगा, गण्डक, बालान, तिलयुगा और बागमती नदियों में नावें चलती हैं। गंगा में छोटे-बड़े स्टीमर भी चलते हैं। ग्वालन्दो से पटना आने-जानेवाले कार कम्पनी के जहाजों के स्टेशन इस जिले में गोगरी, खगड़िया (सिर्फ बरसात में) मुँगेर, सूर्यगढ़ा और सिमरिया में हैं। इस कम्पनी ने तिलयुगा में भी जहाज चलाने की चेष्टा की थी; पर सफल नहीं हुई। मुंगेर-घाट और सिमरिया-घाट के आरपार रेलवे स्टीमर चलते हैं। बरसात में मुँगेर से गोगरी तक एक छोटा स्टीमर चलता है।

शिक्षा

सन् १८७४-७५ में मुँगेर जिले के अन्दर सरकारी या सरकारी सहायता-प्राप्त स्कूलों की संख्या २२९ थी। सन् १८८१-८२ में स्कूलों की संख्या २७५५ हो गयी; पर यह संख्या कायम नहीं रह सकी। बढ़ते-घटते सन् १९००-०१ में सिर्फ १,३०१ स्कूल रह गये।

सन् १६३५-३६ में जिले के अन्दर प्राइमरी स्कूलों की संख्या १,३६३ और उनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या ५१, ५३८ थी। प्राइमरी स्कूलों में छोटे-छोटे मकतबों और संस्कृत-पाठशालाओं की भी गिनती है। जिले में मिडल स्कूलों की संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ रही है। सन् १९३७-३८ में यहाँ ६६ मिडल इङ्गलिश और ९ मिडल वर्नाकुलर स्कूल थे।

जिले के अन्दर इस समय हाई स्कूलों की संख्या १६ है। ४ हाई स्कूल मुँगेर शहर में, २ जमालपुर में और २ शेखपुरा में हैं। बेगूसराय, जमुई, गोगरी, खगड़िया, खड़गपुर, बरहिया, लखीसराय और बरबीघा में एक-एक हाई स्कूल हैं। मुँगेर के स्कूलों के नाम हैं—जिला स्कूल, टाउन स्कूल, ट्रेनिंग एकेडमी और कालिजिएट स्कूल।

जिले के अन्दर एक कालेज है जहाँ आई० ए० तक की पढ़ाई होती है। इसकी स्थापना १८९८ ई० में हुई थी। इस कालेज का नाम डाइमन्ड जुबली कालेज है।

जिले की अन्य शिक्षा-संस्थाओं में जमालपुर का टेकनिकल स्कूल प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना १८६७ ई० में हुई थो। इसमें दो-ढाई सौ लड़के पढ़ते हैं जिनमें करीब आधे यूरोपियन और आधे हिन्दुस्तानी होते हैं। यूरोपियन लड़कों को जितनी सहायता दी जाती है उसको आधी हिन्दुस्तानियों को दी जाती है। यह स्कूल ईस्ट इण्डियन रेलवे के प्रबन्ध में चल रहा है। इसका उद्देश्य रेलवे के लिये सुयोग्य नौकर तैयार करना है। यहाँ का कोर्स ५ वर्ष का है।

जमालपुर और झाझा में यूरोपियनों और एंग्लो इण्डियनों के लिये खास स्कूल हैं। दलित जातियों की शिक्षा के लिये सब जगह विशेष प्रबन्ध किया गया है। हिन्दुओं की अपेक्षा

मुसलमानों में शिक्षा प्रचार अधिक है । जिले के अन्दर कई राष्ट्रीय विद्यालय भी हैं ।

स्त्री-शिक्षा तेजी से बढ़ रही है । लड़के के स्कूलों में लड़कियाँ भी अधिक संख्या में पढ़ने जाने लगी हैं । सन् १६२४-२५ में स्कूलों में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ७,६६२ थी; पर सन् १९३५-३६ में यह संख्या ९,६६२ हो गयी । जिले के अन्दर मुँगेर में लड़कियों के दो मिडल स्कूल हैं ।

सन् १६३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ७१,६६६ और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या ७,२८० है । अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ८,१२८ और स्त्रियाँ ७५८ हैं । फी सैकड़े का हिसाब लगाने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ३.४५ होती है । सन् १६३५-३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ७४,३७५ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के ३.१ होते हैं ।

शासन-प्रबन्ध

शासन—मुँगेर भागलपुर कमिश्नरी का एक जिला है । जिले का सबसे बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। जिले के सदर दफ्तर मुँगेर में कलक्टर की सहायता के लिये डिप्टी कलक्टर, सब-डिप्टी कलक्टर और असिस्टेन्ट कलक्टर होते हैं। शासन की सुविधा के लिये यह जिला तीन सबडिविजनों में बँटा है—मुँगेर, बेगूसराय और जमुई । सबडिविजन का सबसे बड़ा अफसर सबडिविजनल अफसर या एस. डी. ओ. कहलाता है । एक-एक सबडिविजन कई थानों में बँटा है ।

न्याय—मुँगेर पहले भागलपुर के डिस्ट्रिक्ट और शेसन्स

जज की अधिकार-सीमा के अन्दर था। १९१४ से यहाँ एक अलग डिस्ट्रिक्ट और शेसन्स जज की बहाली हुई। इसकी सहायता के लिये कुछ सबोर्डिनेट जज और मुन्सिफ रहते हैं जो दीवानी मुकदमों को देखते हैं। बेगूसराय और जमुई में भी कुछ मुन्सिफ हैं। फौजदारी मुकदमों को सुनने के लिये शेसन्स जज, जिला मजिस्ट्रेट तथा कई डिप्टी और सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट रहते हैं। अधिकार के हिसाब से मजिस्ट्रेट तीन दरजे के होते हैं। सबडिविजनों में भी फौजदारी मुकदमों को सुनने के लिये सबडिविजनल अफसरों के अलावे कुछ सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट होते हैं।

पुलिस—जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। उसकी सहायता के लिये असिस्टेन्ट और डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। पुलिस के काम के लिये जिला २१ भागों में बंटा है जो थाने कहलाते हैं। हरएक थाने का सबसे बड़ा अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जिसे दारोगा भी कहते हैं। इनकी सहायता के लिये हवलदार और कितने ही कानिस्टबिल होते हैं। हर गाँव में एक-दो चौकीदार और कई चौकीदारों पर एक दफेदार रहता है। इस जिले के अन्दर सन् १९३६ में ६ इन्सपेक्टर, ५० सब-इन्सपेक्टर, ४० असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, २ सरजेन्ट, २४ हवलदार, ५४२ कानिस्टबिल और ३,७२५ चौकीदार थे।

जेल—मुँगेर में जिला जेल नहीं है। यहाँ के हर सबडिविजन में सिर्फ एक छोटा जेल है। जमुई जेल में ३७ पुरुष और ७ स्त्री-कैदियों के तथा बेगूसराय जेल में २४ पुरुष और ४ स्त्री-कैदियों के रहने की जगह है। मुँगेर में नाबालिग कैदियों के लिये एक खास जेल है। बिहार में ऐसा जेल बस यही एक है।

इस जेल में २० वर्ष से नीचे के कैदी रखे जाते हैं और उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाने के साथ ही कई तरह के उद्योग-धंधे-जैसे बिनाई, दर्जीगीरी, लकड़ी और लोहे का काम आदि सिखाये जाते हैं। मुँगेर के दोनों जेलों में कुल ३०६ कैदियों के रहने की जगह है।

रजिस्ट्री आफिस—इस जिले में जमीन की खरीद-बिक्री आदि की रजिस्ट्री के लिये सन् १९३६ में मुँगेर, लक्खीसराय, गोगरी, खड़गपुर, खगड़िया, शेखपुरा, बेगूसराय, तेघरा और जमुई में सबरजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—गाँवों के अन्दर सड़क, पुल वगैरह बनवाने, प्रायमरी और मिडल स्कूलों का प्रबन्ध करने, तालाब, कुआँ वगैरह खुदवाने तथा घाट, अस्पताल और फाटक (अड़गला) का इन्तजाम करने के लिये डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कायम है। मुँगेर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में इस समय ३७ मेम्बर होते हैं, जिनमें २८ प्रजा द्वारा चुने जाते, ५ नामजद होते और ४ पद की हैसियत से लिये जाते हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब १२-१३ लाख रुपया है। बोर्ड अपने छोटे-मोटे काम सब-डिविजनों के लोकल बोर्डों से कराता है। मुँगेर लोकल बोर्ड में १३ निर्वाचित और ४ नामजद किये, बेगूसराय लोकल बोर्ड में ९ निर्वाचित और ३ नामजद किये तथा जमुई लोकल बोर्ड में ६ निर्वाचित और २ नामजद किये मेम्बर रहते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन जिले में बेगूसराय, झाझा, गोगरी, खगड़िया, खड़गपुर, जमुई और लक्खीसराय में यूनियन कमिटियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—गाँवों में जो काम डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के हैं, वे ही शहरों में म्युनिसिपैलिटियों के हैं। मुँगेर जिले में दो म्युनिसिपैलिटियाँ हैं एक मुँगेर और दूसरी जमालपुर में।

मुँगेर की म्युनिसिपैलिटी सन् १८६४ में और जमालपुर की म्युनिसिपैलिटी सन् १८८३ में कायम हुई थी। दोनों के क्रम से २५ और २० मेम्बर होते हैं।

मुँगेर (सदर) सबडिविजन

मुँगेर सबडिविजन २४°५७' और २५°४९' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°३६' और ८६°५१' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १,६०५ वर्गमील और जनसंख्या १२,०५,११३ है। इस सबडिविजन में मुँगेर, जमालपुर, खगड़िया, लक्खीसराय और शेखपुरा, ये ५ शहर तथा १,४१४ गाँव हैं। इस इलाके में मुँगेर शहर, मुँगेर मुफस्सिल, गोगरी, चौथम, खगड़िया, बख्तियारपुर, जमालपुर, सूर्यगढ़ा, लक्खीसराय, खड़गपुर, तारापुर, शेखपुरा और बरबीघा, ये १३ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

मुँगेर—जिले का प्रधान शहर मुँगेर २५°२३' उत्तरीय अक्षांश और ८६°२८' पूर्वीय देशान्तर पर गंगा के किनारे बसा है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। सन् १६३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ५२,८६३ है, जिसमें ४०,६२६ हिन्दू, ११,८१२ मुसलमान, १२४ ईसाई और १ जैन हैं। इस शहर के अन्दर दो थाने हैं, मुँगेर शहर और मुँगेर मुफस्सिल। पहले की जनसंख्या ऊपर लिख चुके हैं, दूसरे की जनसंख्या १,२६,५३३ है, जिसमें १,१५,७०४ हिन्दू, ८,७६६ मुसलमान, २,०२८ आदिम जातिवाले तथा २ ईसाई हैं। मुँगेर का पहला नाम मोदगिरि या मुद्गलपुरी भी है। महाभारत के सभा-पर्व में लिखा है कि अंग देश के राजा कर्ण को जीतने के बाद भीम ने मोदगिरि के राजा के साथ लड़ाई कर उसे मार डाला

मौर्य्य सम्राट चन्द्रगुप्त से भी मुँगेर का सम्बन्ध बतलाया जाता है। कहते हैं कि इसी कारण इसका गुप्तगढ़ भी नाम पड़ा था। कष्टहरणी घाट के पत्थर पर भी यह नाम खुदा हुआ है। यहाँ का किला भी किसी हिन्दू-काल का मालूम पड़ता है जो समय-समय पर मरम्मत होता चला आया है। मुँगेर की पीर पहाड़ी पहले मुद्गल गिरि कहलाती थी; क्योंकि यहाँ मुद्गल नाम के एक ऋषि रहते थे। चीनी यात्री य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) भी इस नाम से परिचित था। पालवंशी राजाओं के संस्कृत-लेखों में भी यह नाम आया है। कहते हैं, मुँगेर मुद्गलपुरी का ही अपभ्रंश है। मुँगेर में दसवीं सदी में पालवंशी राजाओं का शाही कैम्प था।

मुँगेर शहर में किला एक रमणीक स्थान है। यह चार हजार फीट लम्बा और साढ़े तीन हजार फीट चौड़ा है। इसके एक ओर गंगा नदी और तीन ओर खाइयाँ हैं जिनमें अब भी बरसात में गंगा का पानी भरा रहता है। किले के अन्दर सरकारी आफिस और कचहरियाँ तथा यूरोपियन और कुछ हिन्दुस्तानियों की कोठियाँ हैं। किले के पच्छिम जहाँ-तहाँ पहाड़ी टील्हे हैं जो कुछ दूर गंगा में भी चले गये हैं। किले के अन्दर एक टील्हा है जो कर्णचौरा कहलाता है। कहा जाता है कि राजा कर्ण चण्डी-स्थान से प्रति दिन सवा मन सोना लाकर इसी स्थान में दान करते थे। पास में एक और बनावटी टील्हा है जिसपर अभी हाल तक दमदम कोठी थी। इसी टील्हे पर आजकल कलक्टर की कोठी है। दमदम कोठी के तोड़ने पर उसके नीचे जमीन के अन्दर दो रास्ते मालूम पड़े थे। जेल के अन्दर के कई पुराने मकान मीरकासिम के बनवाये हुए महल और शस्त्रागार बताये जाते हैं। यहीं पर एक पुरानी

मस्जिद के नीचे चार सुरंगें भिन्न-भिन्न स्थानों को गयी हैं—एक नदी के किनारे, दूसरी कम्पनी बाग की ओर, तीसरी पास के एक मकान की ओर और चौथी पीर पहाड़ी की ओर। ये सुरंगें अब बन्द कर दी गयी हैं। किले के उत्तर-पच्छिम कोने पर गंगा का एक पुराना घाट है जो कष्टहरणी घाट कहलाता है। कहते हैं कि लंका से लौटते समय रामचन्द्र सीता-सहित यहाँ उतरे थे और उस कुंड में स्नान किया था जो आज सीताकुंड कहलाता है। कष्टहरणी घाट पर दसवीं सदी का एक शिलालेख है। घाट के पास मीरकासिम की बनायी एक सुरंग है जो गंगा के भीतर गयी हुई मालूम पड़ती है। किले के अन्दर एक और घाट है जो बबुआ घाट कहलाता है। किले के दक्खिणी फाटक के पास १४९७ ई० की बनी शाह नफह की दरगाह है जिसकी दीवाल पर उस समय का शिलालेख है। इस दरगाह के हाते में ही मीरकासिम के लड़के-लड़कियों की भी कब्रें हैं। किले की पच्छिमी सीमा पर नदी के किनारे औरंगजेब की बेटी जेबुन्निसा का शिक्षक मुल्ला महम्मद सैयद नामक एक प्रसिद्ध कवि की कब्र है।

कहते हैं, मुंगेर शहर बहुत बड़ा था और इसके चारों ओर मिट्टी की दीवारें थीं। इसका चिह्न अब भी किले से तीन मील दक्खिन दिखाई पड़ता है। वर्तमान शहर से कुछ दूर पर पुराने मकानों के खँडहर मालूम पड़ते हैं। कासिम बाजार में बन्दूक के कई छोटे-छोटे कारखाने हैं। किले से थोड़ी दूर पर गंगा में एक चट्टान है जो मान पत्थर कहलाता है। इसमें चार पैर के चिह्न हैं जो श्रीराम और सीता के पद-चिह्न समझे जाते हैं।

शहर से तीन मील उत्तर-पूरब पीर पहाड़ी है। यही मुद्गल मुनि का स्थान मुद्गल गिरि बतायी जाती है। यहीं चीनी यात्री
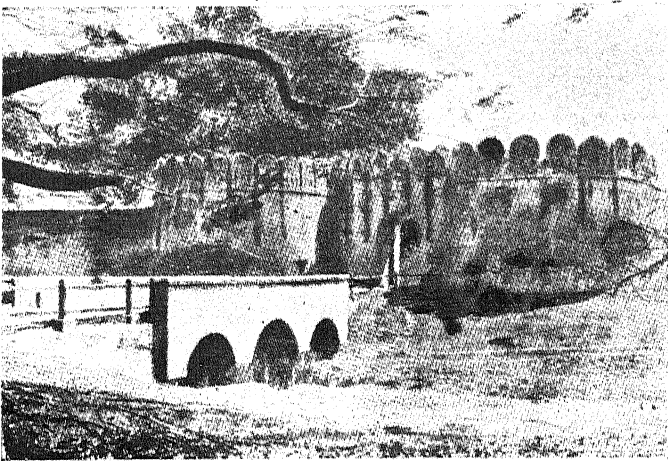
मुंगेर का प्राचीन किला

मुंगेर के कष्टहरणी घाट पर १०वीं सदी का शिलालेख
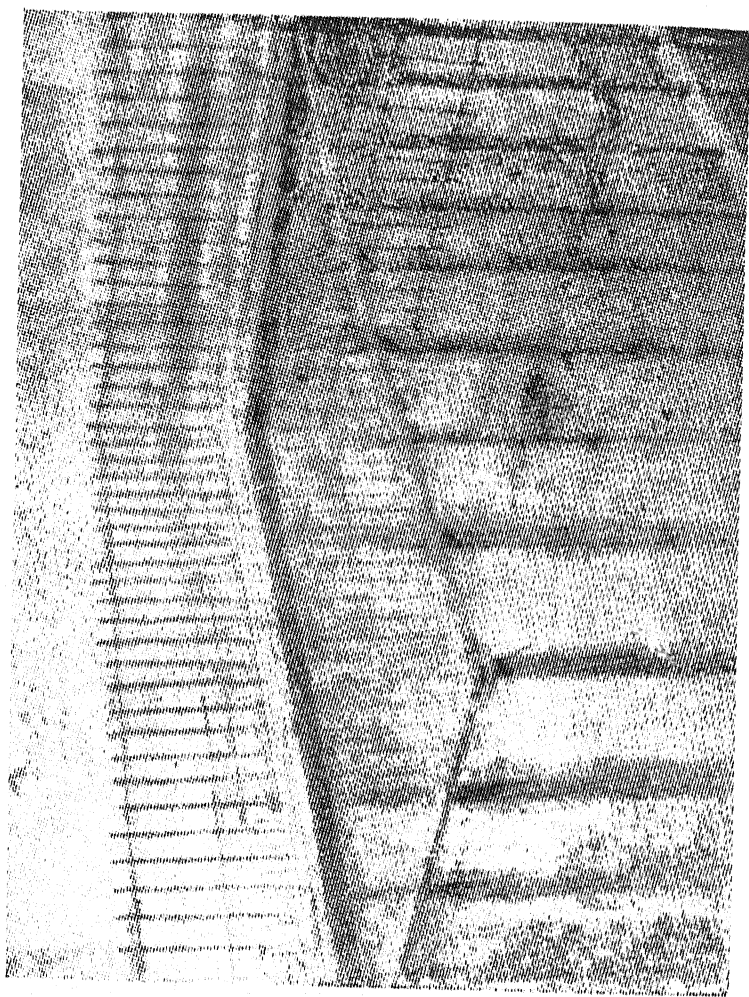
सीता कुंड, मुंगेर

स्वनच्वाङ् द्वारा वर्णित हिरण्यपर्वत है। मीरकासिम के सेनापति गुरगीन खाँ ने अपने रहने के लिये यहाँ एक मकान बनवाया था जो अब भी कायम है। पहले मुँगेर के कलक्टर यहीं रहते थे। किसी पीर की दरगाह के कारण इसका नाम अब पीर पहाड़ी हो गया है।

शहर से उत्तर-पूरब की ओर गंगा के किनारे एक पुराना मंदिर है जो चण्डी-स्थान कहलाता है। कहते हैं कि यहाँ राजा कर्ण चण्डी देवी को प्रसन्न करने के लिये अपने को जलते हुए घी के कड़ाह में डाल देता था। चण्डी देवी प्रसन्न हो राजा को जिलाकर उसे सवा मन सोना देती थी। इसी सोने को लेकर राजा कर्ण कर्णचौरे में ब्राह्मणों को दान करते थे। मंदिर के पीछे एक गोलाकार गुम्बज को लोग उलटा हुआ कड़ाह बतलाते हैं।

मुँगेर से तीन मील दक्षिण एक धारा है जिसे डकरा नाला कहते हैं। कहा जाता है कि १७६३ ई० में अँगरेजों की चढ़ाई से भागते समय उनको पीछा करने से रोकने के लिये मीरकासिम ने डकरा नाला के पुल को तुड़वा दिया था। पुल का बचा हिस्सा अब भी मौजूद है।

दिलावरपुर में एक पुराना मुसलमानी घराना है जो शाह घराना के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि अकबर के दरबार के प्रसिद्ध विद्वान फारस निवासी हजरत मौलाना शाह मुस्तफा शफी इस घराने को कायम करनेवाले थे। अकबर के साथ बंगाल आने पर मुँगेर में एक नामी पीर का नाम सुनकर वे उसी के पास रह गये।

१६३४ के भयंकर भूकम्प ने मुँगेर को बिलकुल तहस-नहस कर डाला है। यहाँ के हजारों आदमी मरे और लगभग सारे

मकान पस्त हो गये। अब शहर नये सिरे से नये ढंग पर बन गया है जो देखने में पहले से बहुत सुन्दर मालूम पड़ता है।

उरेन—यह गाँव कजरा स्टेशन से तीन मील दक्षिण रेलवे लाइन के पास है। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी पर बहुत-सी बौद्ध-कालीन वस्तुएँ पायी जाती हैं। कहते हैं कि बुद्धदेव वर्षाकाल में यहाँ तीन महीना ठहरे थे और यक्ष वकुल को हराया था। चीनी यात्री य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ आया था और उसने यहाँ पर बने हुए स्तूपों और शिलालेखों को देखा था। उनके भग्नावशेष अब भी वहाँ मौजूद हैं। कुछ मूर्त्तियाँ इस समय भी वहाँ पायी जाती हैं। उरेन से आठ मील पूरब जलालाबाद में बान बकुर-नाथ का मन्दिर है जहाँ उनकी काले पत्थर की एक बड़ी मूर्त्ति है। उरेन गाँव के पास एक खँडहर को लोग पालवंशी अंतिम राजा इन्द्रद्युम्न का पुराना किला बतलाते हैं।

ऋषिकुंड—सीताकुंड से छः मील दक्षिण यह गर्म जल का झरना है। हिन्दू लोग इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं।

क्यूल—यहाँ ई० आई० आर० की कार्ड लाइन और लूप लाइन तथा बिहार साउथ ब्रांच लाइन का जंकसन है। यहीं क्यूल नदी पर एक बड़ा पुल है।

नदी के किनारे वृन्दावन नाम का एक गाँव है। यहाँ ३० फीट ऊँचा टील्हा है जो पुराने स्तूप का भग्नावशेष है। खुदाई करने पर यहाँ ६ वीं या १० वीं सदी का बना एक छोटा-सा मकान निकला था जिसके अन्दर बुद्ध की एक मूर्त्ति तथा स्तूप के आकार की एक और चीज थी जिसमें एक मरे आदमी की यादगारी के लिये सोने के बक्स में एक हड्डी का टुकड़ा और और चाँदी के बक्स में हरी काँच की माला थी। एक दूसरे मकान में बुद्ध आदि की मूर्त्तियाँ और एक वर्तन में २७०० लाह

अब भी टूटे-फूटे रूप में खड़गपुर में मौजूद हैं। मस्जिद पर उस समय की कुछ लिखावट भी कायम है।

इस समय खड़गपुर अपने सुन्दर झील के लिये प्रसिद्ध है। झील से कुछ दूर पर एक जल-प्रपात है जो पंचकुमारी नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ की पहाड़ी भी पंचकुमारी पहाड़ी कही जाती है। कहते हैं कि जब खड़गपुर का राजा पकड़कर दिल्ली भेज दिया गया तो उसकी पाँच लड़कियों ने मुसलमानों के डर से यहीं आत्महत्या कर ली। इस समय खड़गपुर एक बाजार है। यहाँ थाना, अस्पताल, डाकबँगला, हाई स्कूल और राष्ट्रीय विद्यालय हैं। खड़गपुर थाने की जनसंख्या ८५,१३२ है, जिसमें ८०,०१३ हिन्दू, ३,३७२ मुसलमान, १,७४३ आदिम जाति वाले तथा ४ ईसाई हैं।

खड़गपुर पहाड़ी—यह विन्ध्याचल श्रेणी की पहाड़ी है। यह ३० मील लम्बी और औसतन २४ मील चौड़ी है। इसकी सबसे ऊँची चोटी मारुक है जो १,६२८ फीट ऊँची हैं। यहाँ कई झरने हैं।

गोगरी—यह गंगा के किनारे है जहाँ थाना, अस्पताल, डाकबँगला, रजिस्ट्री आफिस, डाक और तारघर, हाईस्कूल और राष्ट्रीय विद्यालय है। यह फरकिया परगना के अन्दर है। पन्द्रहवीं सदी में दिल्ली के बादशाह ने यहाँ शासन करने के लिये विश्वनाथ राय नाम के एक राजपूत को भेजा था। इस वंश में नाराण दत्त, हरदत्त सिंह, बुनियाद सिंह वगैरह प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। इनके वंशज इस समय भी जमालपुर में रहते हैं।

इस थाने के महेशखुँट, श्यामनगर और रामचन्द्रपुर में कई प्राचीन मूर्त्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक पर ब्राह्मी लिपि में कुछ

लिखा भी है। गोगरी थाने की जनसंख्या १,१८,२६३ है, जिसमें १,०५,१६० हिन्दू और १३,१०३ मुसलमान हैं।

चंडी स्थान—दे० मुँगेर।

चौथम—यह तिलयुगा और बागमती नदी के संगम पर है। हाल में यहाँ थाना और अस्पताल कायम हुआ है। यहाँ सोलहवीं सदी से एक राजपूत घराने के जमींदार रहते हैं जिन्हें अकबर से जागीर मिली थी। चौथम थाने की जनसंख्या ७८,१७७ है, जिसमें ७२,८८३ हिन्दू और ५,२६२ मुसलमान और और २ ईसाई हैं।

जमालपुर—मुँगेर के पास ही यह एक शहर है जहाँ की जन-संख्या ३०,३४६ है। यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन और एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसमें हजारों आदमी रोज काम करते हैं। यहाँ एक औद्यागिक स्कूल और दो हाईस्कूल हैं। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। जमालपुर थाने की जन-संख्या ३०,३४६ है, जिसमें २४,२५६ हिन्दू, ४,८८८ मुसलमान, १,१९४ ईसाई और ८ अन्य जाति के लोग हैं।

जयनगर—लक्खीसराय स्टेशन के पास यह एक गाँव है। कहते हैं यहाँ पालवंशी राजा इन्द्रद्युम्न का किला था।

डकराना—दे० मुँगेर।

तारापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ७६,२७३ है, जिसमें ६८,५४६ हिन्दू, ७,७२५ मुसलमान और २ अन्य जाति के लोग हैं।

दिलावरपुर—दे० मुँगेर।

देवघरा—खड्गपुर से १० मील दक्षिण यह एक छोटी पहाड़ी है जहाँ शिवजी का एक मंदिर है। यहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है।

पीरपहाड़ी—दे० मुँगेर।

फरकिया परगना—दे० गोगरी।

बख्तियारपुर—बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मनसी भपटियाही लाइन पर इस नाम के स्टेशन के पास यह एक गाँव है जहाँ थाना और डाकबँगला भी है। यहाँ एक पुराना मुसलमान घराना है जो चौधरी घराने के नाम से मशहूर है। इस समय भी इस घराने के पास एक बड़ी जमींदारी है। बख्तियारपुर थाने की जन-संख्या १,२०,०२३ है, जिसमें १,०४,७८८ हिन्दू, १५,२२२ मुसलमान और १३ ईसाई हैं।

बरबीघा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ५३,५८५ है, जिसमें ४७,३७६ हिन्दू और ६,२०९ मुसलमान हैं।

बृन्दावन—दे० क्यूल।

भदुरिया भूर—ऋषिकुंड से दो मील दक्षिण-पूरब यह एक गरम जल का झरना है।

भीमबाँध—खड़गपुर से १२ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ गरम जल के कुछ झरने हैं। ये झरने महादेव और दमदम नाम की पहाड़ियों से निकलते हैं। इसका पानी मणि नदी में जाता है।

मलनी पहाड़—यह भीमबाँध से सात मील उत्तर-पूरब है जहाँ बहुत-से झरने हैं। ये झरने जन्मकुंड के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मारुक—दे० खड़गपुर पहाड़ी।

मौला नगर—यह सूर्यगढ़ा से आधे मील पर है। अठारहवीं सदी में शाह नजीम उद्दीन अली नाम का एक पीर यहाँ आया था। वह मौला शाह नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसे अलीवर्दी खाँ से धार्मिक कामों में खर्च करने के लिये जागीर मिली

थी। उसके वंशज के हाथ में अब भी करीब चालीस हजार की जागीर है।

रजौना—लक्खीसराय से दो मील उत्तर-पच्छिम यह गाँव क्यूल और हलहर नदियों के संगम पर है। यहाँ अशोक ने बौद्ध-विहार और स्तूप बनवाये थे जो खँडहर के रूप में अब भी मालूम पड़ते हैं। यहाँ पुराने मंदिरों के चिह्न हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ भी मिली हैं। चीनी यात्री य्वनच्वाङ (ह्वेनसन) ने इस स्थान को देखा था।

रामेश्वर कुंड—यह खड़गपुर के पंचकुमारी जलप्रपात से थोड़ी ही दूर पर है। इसे हिन्दू लोग तीर्थ स्थान मानते थे।

लक्खीसराय—क्यूल नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ मकदुमशाह की दरगाह है। यहाँ के एक पत्थर पर बंगाल के सुलतान रुकनुद्दीन का लिखवाया १२९७ ई० का एक लेख है। यहाँ एक छोटा-सा बाजार, थाना, हाई स्कूल और एक चित्त-रंजन-आश्रम नाम की राष्ट्रीय संस्था है। इस थाने की जनसंख्या १,३३,८२४ हैं, जिसमें १,२५,९३८ हिन्दू, ७,८२४ मुसलमान, २४ ईसाई, ३० आदिम जाति तथा ८ अन्य जाति के लोग हैं।

शेखपुरा—जिले के दक्षिण-पच्छिम यह एक छोटा शहर है जहाँ साउथ बिहार रेलवे का स्टेशन, थाना, अस्पताल और डाकबँगला है। यहाँ बुद्धदेव एक रात के लिये ठहरे थे; इसलिये यहाँ एक स्तूप बनवाया गया था जिसे चीनी यात्री य्वन्च्वाङ् ने भी देखा था। यहाँ पुराने समय का एक भठोखर ताल है। पास के पचना पहाड़ी पर एक ग्वालिन के उपकार के बदले शेरशाह का बनवाया रास्ता है जो ग्वालिन-खंड कहलाता है। शेखपुरा थाने की जनसंख्या १,०६,४०१ है, जिसमें ९०,९५१ हिन्दू और १५,४५० मुसलमान हैं।

शृंगिरिख—खड़गपुर पहाड़ी की यह एक चोटी है जो ऋष्यशृंग का स्थान समझा जाता है। यहाँ गरम जल का झरना और शिवालय है जहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है। पास के काले पत्थर पर तीन स्त्रियों की बौद्धकालीन मूर्त्तियाँ खुदी हैं, जिन्हें हिन्दू लोग पूजते हैं।

सीताकुंड—मुँगेर से चार मील की दूरी पर यह एक गरमजल का प्रसिद्ध झरना है। कहते हैं, लंका से लौटने पर श्री रामचन्द्र और सीताजी यहाँ आयी थीं। यहाँ चार ठंढे जल के कुंड हैं जो राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न-कुंड कहलाते हैं। यात्री लोग यहाँ बराबर आते हैं। माघी पूर्णिमा में मेला लगता है। सीताकुंड के पास ही एक दूसरा गरम झरना है। फिर पास के भैंसा पहाड़ी पर भी एक झरना है।

सूर्यगढ़ा—गंगा के दक्षिणी किनारे पर यह एक गाँव है। कहते हैं, यहाँ राजा सूर्यमल का गढ़ था। अब भी गढ़ के घेरे का एक छोटा हिस्सा रह गया है। कहते हैं, कुछ वर्ष पहले गंगा के कटाव से जमीन के नीचे एक मकान निकला था। नाव घाट पर बहुत तरह की मूर्त्तियाँ मिलती हैं। यहाँ ४ मील पच्छिम फतहपुर गाँव में १५५७ ई० में एक बड़ी लड़ाई हुई थी। सूर्यगढ़ा थाने की जनसंख्या ७५,८९८ है, जिसमें ६९,६६५ हिन्दू, ५,९३१ मुसलमान, २९८ आदिम जाति के तथा ४ अन्य जाति के लोग हैं।

हसनपुर—लक्खीसराय के पास यह एक गाँव है जहाँ एक पहाड़ी है। जयनगर भी इसके पास ही है। यहाँ पुराने खँडहर पाये जाते हैं।

हुसैनाबाद—शेखपुरा से तीन मील दक्षिण यह एक गाँव है जहाँ मुसलमानों का एक घराना है जो अपना सम्बन्ध पैगम्बर महम्मद साहब की खानदान से बतलाता है। इस खानदान के

नवाब शाब खाँ और नवाब फिदा खाँ दिल्ली के बादशाह के वजीर थे। औरंगजेब ने इस वंश के लोगों को जगीर दी थी। शाह-आलम ने इस वंश के अली इब्राहिम खाँ को दसहजारी का पद दिया था। यह मीरकासिम के भी दरबार में था। जब बक्सर की लड़ाई में हारकर मीरकासिम भाग गया तो यह अँगरेजों के साथ हो गया। वारन हेस्टिंग्स ने इसे बनारस का काजी बनाया। इसका भतीजा महम्मद यहिया पटने से हुसैनाबाद आकर बसा था।

बेगूसराय सबडिविजन

बेगूसराय सबडिविजन २५°१५' और २५°४७' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°४७' और ८६°२७' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ७४६ वर्गमील और जनसंख्या ६,४४,२४५ है। इस सबडिविजन में केवल एक शहर बेगूसराय और ६८४ गाँव हैं। इस इलाके में बेगूसराय, बलिया, बरियारपुर और तेघरा, ये ४ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान ये हैं:—

बेगूसराय—यह २५°२६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°६' पूर्वीय देशान्तर पर सबडिविजन का प्रधान शहर है, जहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन, सबडिविजनल आफिस, हाई स्कूल, अस्पताल, डाकबँगला, लोकलबोर्ड आफिस, रजिस्ट्री आफिस और छोटा बाजार है। बेगूसराय शहर की जनसंख्या ७,७३६ है। बेगूसराय थाने में १,९१,३११ आदमी हैं, जिनमें १,७२,६८३ हिन्दू, १८,६१४ मुसलमान और १४ ईसाई हैं।

काबरताल—बेगूसराय सबडिविजन के उत्तर भाग में काबरताल नाम की एक झील है जो आठ मील लम्बी और २ मील चौड़ी है। इसका कुछ भाग गर्मी में सूख जाया करता

है। इसके बीच एक टापू है, जहाँ पहले बन्दर बहुत रहते थे। यहाँ जयमंगला देवी का मंदिर है। दुर्गापूजा के अवसर पर वहाँ मेला लगता है। यहाँ पुराने किले के कुछ चिन्ह मालूम पड़ते हैं और लोग इस स्थान को जयमंगला गढ़ कहते हैं।

जयमंगला गढ़—दे० काबरताल।

तेघरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या २,३२,६३९ है, जिसमें २,०७,३८७ हिन्दू, २५,११६ मुसलमान, १०६ आदम जाति के लोग और ३० ईसाई हैं।

बरियारपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,१५,६०५ है, जिसमें १,०५,६६१ हिन्दू, ६,६११ मुसलमान और ३ ईसाई हैं।

बलिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जमसंख्या १,०४,३६० है, जिसमें ८७,४२३ हिन्दू और १६,९६७ मुसलमान हैं।

बहादुरपुर—बेगूसराय सबडिविजन में यह एक गाँव है, जहाँ राजपूतों का एक पुराना घराना है। इस घरानेवालों के हाथ में इस समय डेढ़ लाख की जमींदारी है।

सिमरिया घाट—गंगा के दक्षिणी किनारे पर यह एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ दूर-दूर से लोग गंगा में स्नान करने आते हैं। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे और ई० आई० रेलवे को मिलाने के लिये यहाँ गंगा के आर-पार जहाज चलता है।

जमुई सबडिविजन

जमुई सबडिविजन २४°२२' और २५°७' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°४९' और ८६°३७' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १,२७६ वर्गमील और जनसंख्या ४,३७,७६६ है। इस

सबडिविजन में कोई शहर नहीं है, हाँ गाँव ५१२ हैं। इस इलाके में जमुई, सिकन्दरा, चकाई और झाझा ये ४ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

जमुई—इस नाम के सबडिविजन का यह प्रधान स्थान है, जो ई० आई० रेलवे के जमुई स्टेशन से चार मील दक्खिन-पच्छिम है। यहाँ सबडिविजनल आफिस, स्कूल, अस्पताल, डाकबँगला, लोकल बोर्ड आफिस, रजिस्ट्री आफिस और छोटा-सा बाजार है। जमुई थाने की जनसंख्या १,६२,४६१ है, जिसमें १,४७,४८८ हिन्दू, १४,२७३ मुसलमान और ६९५ आदिम जाति के लोग तथा ५ ईसाई हैं।

इन्पै—जमुई से चार मील दक्खिण इस गाँव में एक बहुत बड़े किले का भग्नावशेष है जो पालवंश के अंतिम राजा इन्द्रद्युम्न का बनाया हुआ बताया जाता है। यह १६५० फीट के वर्गाकार में है जिसकी खाई १५ फीट चौड़ी है। यहाँ एक पुराना स्तूप है जिसका व्यास १२५ फीट है।

खैरा—यह जमुई से पाँच मील दक्खिण-पूरब है। यहाँ गिद्धौर के पुराना राजा पूरनमल के बड़े लड़के हरि सिंह ने अपना अलग राज्य कायम किया था। इन लोगों का पुराना स्थान खैरा पहाड़ी के पास था जहाँ जंगलों के बीच पत्थर के किले और महलों के चिह्न पाये जाते हैं। १९१६ में यह राज्य रायबहादुर बैजनाथ गोयनका के हाथ बिक गया।

गिद्धौर—यह एक गाँव है जहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन भी है। यहाँ एक बहुत पुराने घराने के राजपूत जमींदार रहते हैं। इनके पूर्वज पहले बुंदेलखंड के महोबा राज्य के स्वामी थे। इनको दिल्ली के अंतिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज ने हराया था। मुसलमानों से खदेड़े जाने पर ये लोग मिर्जापुर आये। यहीं से वीर

विक्रमशाह ने आकर मुँगेर जिले में अपना राज्य कायम किया। शुरू में इन लोगों ने खैरा पहाड़ी के पास अपना किला बनवाया जहाँ अब भी उसके चिह्न मौजूद हैं। इस वंश के चौदहवें राजा दुलन सिंह की राजा की उपाधि शाहजहाँ ने फरमान द्वारा स्वीकार की थी। यह फरमान तथा दाराशिकोह और राजकुमार शुजा के लिखे पत्र गिद्धौर राजा के पास अब भी मौजूद हैं। इस समय इस राज्य की आमदनी करीब ढाई लाख सालाना है। यहाँ एक साधारण बाजार, अस्पताल और स्कूल है।

चकाई—यहाँ थाना, डाकबँगला और अस्पताल है। यहाँ अँगरेजों का बनाया एक किला है जो सरकारी किला या फतहगढ़ कहलाता है। चकाई थाने की जन-संख्या ५७,६१८ है, जिसमें ५३,२३६ हिन्दू, २,५३२ मुसलमान, १,५९० आदिम जाति के लोग तथा २५७ ईसाई हैं।

झाझा—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन, थाना और डाकबँगला है। रेलवे के अँगरेज कर्मचारियों की यहाँ बहुत-सी कोठियाँ हैं। इसका पुराना नाम नवडीह है। झाझा थाने की जन-संख्या १,००,०९६ है, जिसमें ८८,३४२ हिन्दू, १०,५१६ मुसलमान, १,०११ आदिम जाति वाले तथा २२६ ईसाई और १ अन्य जाति के लोग हैं।

नोनगढ़—लक्खीसराय से ११ मील दक्षिण-पूरब क्यूल नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ इसी नाम का एक ४० फीट ऊँचा टील्हा है। खुदाई होने पर ईसा के जन्मकाल के लगभग की मूर्त्ति, मंदिर और स्तूप आदि का पता लगा है।

नौलाखगढ़—खैरा पहाड़ी की तराई में एक वर्गाकार किला है जिसकी दीवारें पत्थर की बनी हैं। यह किला गिद्धौर के किसी पुराने राजा, अकबर या शेरशाह का बनवाया हुआ समझा

जाता है। इसके बनाने में नौ लाख रुपया खर्च होने से इसका ऐसा नाम पड़ना बताया जाता है।

बामदह—चकाई से चार मील उत्तर इस गाँव में १८८४ ई० से ईसाई मिशन का अड्डा है। मिशनवालों ने यहाँ एक अस्पताल कायम किया है। मिशन से सम्बन्ध रखनेवाले आस-पास में कई दर्जन स्कूल हैं।

लछुआर—सिकन्दरा से चार मील दक्षिण इस गाँव में एक बहुत बड़ा जैन मंदिर, धर्मशाला तथा कई हिन्दू मंदिर हैं। इससे तीन मील पर मठ बुद्ध-रूप और मठ पारसनाथ नाम के दो और जैन मंदिर हैं। एक की महावीर मूर्त्ति १५०५ ई० की और दूसरी की उससे भी पुरानी है।

सिकन्दरा—यहाँ थाना और डाकबँगला है। पहले सब-डिविजनल आफिस यहीं था। यहाँ शाह मुजफ्फर नामक पीर की दरगाह है। वह पहले तुर्किस्तान में बलख का बादशाह था। सिकन्दरा थाने की जनसंख्या १,१७,६२१ है, जिसमें १,०३,६५० हिन्दू, १३,६६४ मुसलमान तथा ७ आदिम जाति के लोग हैं।

सिमरिया—जमुई से ७ मील पच्छिम इस गाँव में छः मंदिर हैं जो तीन ओर एक बड़े तालाब के पानी से घिरे हैं। प्रधान मंदिर में गिद्धौर के पुराने राजा पूरनमल का स्थापित शिवलिंग है। शेष मंदिर में बौद्ध और ब्राह्मण कालीन मूर्त्तियाँ हैं। सभी हिन्दू-मूर्त्तियाँ समझी जाकर पूजी जाती हैं।

सिमलतला—यह स्वास्थ्यप्रद स्थान होने से बड़ा प्रसिद्ध है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन और एक अस्पताल है। बंगालियों की यहाँ बहुत-सी कोठियाँ हैं।

मुँगेर जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की क्रमानुसार जनसंख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	२,७९,४०७	बनिया	३६,९४४
मुसहर	१,४७,९४२	बरही	३५,३८९
भूमिहार ब्राह्मण	१,३८,७४२	जोलाहा	३४,८१५
दुसाध	१,३०,४८५	कुम्हार	३३,२५३
धानुक	१,१४,१३३	संथाल	२६,७४२
ब्राह्मण	१,१३.२८५	कायस्थ	२४,०३०
कोयरी	१,०२,०३०	धोबी	२३,२७७
ताँती	९४,५०६	कमार	१७,८३७
राजपूत	७१,९१५	पासी	१७,२६५
काँदू	६६,४७९	डोम	११,३५९
चमार	६५,३४८	मल्लाह	१०,९६६
तेली	६०,००७	माली	५,७१९
कुरमी	५८,८९१	भुइयाँ	५,५१६
कहार	४८,५११	कोरा	२,३१२
हजाम	४४,७९८	केवट	२,२५०

पूर्णिया जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

पूर्णिया जिला भागलपुर कमिश्नरी के उत्तर-पूरब का हिस्सा है। यह २५°१५' और २६°३५' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°०' और ८८°३२' पूर्वीय देशान्तर के बीच विहार के उत्तर-पूरब कोने पर है।

इस जिले के उत्तर में दार्जिलिंग जिला और नेपाल का मोरंग जिला है। पूरब में बंगाल के जलपाइगुरी, दिनाजपुर और मालदह जिले हैं। दक्षिण में गंगा नदी है जो इस जिले को भागलपुर और संथाल परगने से अलग करती है। पच्छिम में भागलपुर जिले का उत्तरीय भाग है।

इस जिले का क्षेत्रफल ४,९७२ वर्गमील है। भागलपुर कमिश्नरी के चार जिलों में केवल संथाल परगना ही इससे बड़ा है, बाकी सभी छोटे हैं।

प्राकृतिक बनावट

इस जिले में उत्तर की ओर नेपाल की तराई के पास की भूमि कुछ ऊँची-नीची है, बाकी सारा भाग समतल है। हाँ, दक्षिण में मनिहारी नामक स्थान के पास एक छोटा पहाड़ है। जिले के अन्दर बहुत-सी नदियाँ और छोटी-छोटी धाराएँ बहती हैं। पच्छिमी भाग कोशी की कितनी ही पुरानी धाराओं से बँटा हुआ

है और पूर्वीय भाग में बड़े-बड़े चौरों और सूखी धाराओं के जाल-से बिछे हैं।

जिले के पूर्वीय और पच्छिमी भागों की दशा में बहुत अन्तर है॥ जिले के उत्तर-पच्छिम कोने से दक्षिण-पूरब कोने तक यदि कोई रेखा खींची जाय तो वह इन दोनों भागों को अलग करेगी। पूर्वीय भाग महानन्दा या महानदी के जल से सींची जाती है तो पच्छिमी भाग कोशी के जल से। पूरब भाग की जमीन उपजाऊ है और यहाँ धान तथा जूट की खेती होती है। यहाँ बड़े-बड़े चौर हैं जो कभी नहीं सूखते। छोटी-छोटी नदियाँ भी यहाँ बहुत-सी हैं। कुछ तो सूख गयी हैं और कुछ अधसूखी हैं जिनमें केवल बरसात में ही पानी रहता है। इस भाग में जंगल नहीं है।

पच्छिमी भाग कोशी नदी की बदलती रहनेवाली धाराओं के कारण बालू से भरा है। बालू-भरी जमीन खेती के लायक नहीं रह जाती। इस नदी के आसपास कोई उन्नतशील बड़ा गाँव या बाजार नहीं बस सकता। बहुत दूर तक गैर-आबाद जमीन फैली हुई है जहाँ केवल घास ही उपजती है। यहाँ लोग मवेशी चराने के लिये लाते हैं। कहीं-कहीं घने जंगल भी हैं जहाँ बनैले पशु रहते हैं। धरमपुर परगने में खेती अच्छी होती है। पच्छिमी भाग में गाँव और बड़े-बड़े पेड़ बहुत कम हैं।

नदियाँ

जिले की नदियाँ तीन भागों में बाँटी जा सकती हैं। पहले भाग में कोशी नदी की गिनती है जो जिले के पच्छिम में सीमा का काम करती हुई अनेक धाराओं में बहती है। दूसरे भाग में पनार या परवान नदी की गिनती है जो जिले के उत्तर-पच्छिम कोने से निकलकर दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई जिले को दो

भागों में बाँटती है। तीसरे भाग में महानन्दा या महानदी और उसकी सहायक नदियाँ हैं।

कोशी—इस जिले में सबसे मुख्य नदी कोशी है। यह नेपाल के पूरब भाग में सात धाराओं के मिलने से बनी है। इस भाग को सप्तकौशिकी कहते हैं। सातों धाराओं के नाम ये हैं—(१) सान कोशी, (२) भोटिया कोशी, (३) तम्बा कोशी, (४) दूध कोशी, (५) लिच्छु, (६) अरुण, और (७) ताम्बर। वाराह-क्षेत्र में यह नदी पहाड़ को छोड़ती है और यहीं इसका नाम कोशी पड़ता है। यह भागलपुर जिले के बिलकुल उत्तर भाग में ब्रिटिश राज्य को छूती है और कुछ मीलों तक भागलपुर और पूर्णिया जिले के बीच सीमा का काम करती हुई अँचराघाट से कुछ दूर उत्तर पूर्णिया जिले में प्रवेश करती है। पूर्णिया जिले में आने पर यह एक बहुत बड़ी नदी हो जाती है और इसकी चौड़ाई करीब एक मील तक रहती है। बरसात के दिनों में तो चौड़ाई कई मीलों तक की हो जाती है और यह समुद्र-सी मालूम पड़ने लगती है।

यह दक्षिण की ओर बहती हुई कई धाराओं में बँटकर गंगा में मिल गयी है। नेपाल से बाहर इसकी लम्बाई लगभग ८५ मील है। कटरिया के पास इस नदी पर रेलवे पुल है। यहाँ से कुछ दूर ऊपर जाकर अँचराघाट और खनवाँघाट के बीच घटही नाव का प्रबन्ध है। ये दोनों घाट बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे को ई० बी० रेलवे से मिलाते हैं। इस नदी की धारा इतनी तेज रहती है कि इसमें नावें अधिक नहीं चल सकतीं। बराबर धारा बदलते रहना इस नदी की विशेषता है। इसकी बहुत-सी पुरानी धाराएँ अब भी जहाँ-तहाँ देखने में आती हैं।

काला कोशी—यह नदी कोशी की ही पुरानी धारा है। इसे लोग करा कोशी भी कहते हैं। यह नदी कई धराओं में फूट

निकली है और वे एक दूसरे से इस तरह मिल-जुल गयी हैं कि यह कहना मुश्किल है कि यह नदी कहाँ से शुरू हुई है और इसका रास्ता क्या है। यह नदी रानीगंज के पास कमला नाम से निकलकर दक्षिण की ओर बहती हुई पूर्णिया से ४ मील पच्छिम होकर गयी है। यह अन्त में ई० आई० रेलवे के साहबगंज स्टेशन के सामने गंगा से मिल जाती है।

सौरा—काला कोशी की मुख्य सहायक नदी सौरा है। यह जलालगढ़ के उत्तर-पच्छिम भाग से निकल कर पीरगंज के पास काला कोशी से मिलती है। इसके पूरब किनारे पर पूर्णिया शहर बसा है।

महानन्दा—महानन्दा या महानदी दार्जिलिंग जिले की महलदिरम पहाड़ी से निकलकर दक्षिण की ओर बहती हुई आठ मील तक पूर्णिया और जलपाईगुरी के बीच सीमा का काम करती है। यह तिलैया के पास पूर्णिया जिले में घुसकर दुलालगंज तक दक्षिण-पच्छिम की ओर बहती है। यहाँ यह कंकई नदी से मिल कर दक्षिण-पूरब की ओर बहती हुई बरसोय से कुछ मील दक्षिण मालदह जिले में प्रवेश करती है। यह नदी भी कोशी की तरह अपनी धारा बदलती रहती है। इसके किनारे कलियागंज, खरखरी, दुलालगंज और बरसोय मुख्य बाजार हैं। बरसोय में इस पर रेलवे पुल है।

महानन्दा की सहायक नदियाँ—महानन्दा के बायें किनारे पर डाँक, पिटानू और नागर नदियाँ मिलती हैं। डाँक जलपाई-गुरी से निकलकर महानन्दा के समानान्तर बहती हुई खरखरी में उससे मिल जाती है। पिटानू सूर्यपुर परगने से निकल कर दक्षिण की ओर बहती हुई रानीगंज के पास रामजान से मिलती है और फिर यह सम्मिलित धारा सुधनी के पास महानन्दा से

मिल जाती है। नागर भी सूर्यपुर परगने से निकलकर पूर्णिया और दिनाजपुर जिले के बीच सीमा का काम करती है। महानन्दा के दाहिने किनारे पर बालसन, चेंगा, बूढ़ी गंगी, मेची और कंकई नदियाँ आकर मिलती हैं।

कंकई—यह एक बड़ी नदी है जो नेपाल से निकलती है और दलखोल स्टेशन के पास महानन्दा से मिलती है। इसकी अपनी सहायक नदी है रतुआ। रतुआ की भी लुनेश्वरी और कामल दो सहायक नदियाँ हैं। कंकई की धारा भी बराबर बदलती रहती है।

पनार—कोशी और कंकई के बीच बहुत-सी धाराएँ हैं जो पनार कहलाती हैं। मुख्य धारा वह है जो फारबीसगंज थाने से निकलती है। पूर्णिया जिले से बाहर जाने पर यह महानन्दा से मिल गयी है। शुरू में इसका नाम परवान या परमौ है। अररिया के पास इसका नाम पनार, दार्जिलिंग रोड पार करने पर राजा, रेलवे पार करने पर कंकर और फिर गंगाजुरी हो जाता है। ह्यातपुर के पास इसकी एक पुरानी धारा गंगा में मिलती है जो बूढ़ी नदी कहलाती है।

नगर और लिबरी—जिले के पच्छिम भाग में ये दो नदियाँ भी उल्लेख-योग्य हैं। नगर कोशी की एक शाखा है। लिबरी को लोग बर नदी भी कहते हैं। यह पूर्णिया के पच्छिम से निकलकर काढ़ागोला के पास गंगा से मिलती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

पूर्णिया जिले की जलवायु विहार के सभी जिलों से खराब समझी जाती है। इसका कारण यह है कि यहाँ की जमीन बहुत नीची और सर्द है, तथा यहाँ बहुत-सी छोटी छोटी नदियाँ और बड़े-बड़े जलाशय हैं जिनके कारण यहाँ मच्छर बहुत होते हैं। जिले के पूर्वी भाग की अपेक्षा पच्छिमी भाग की जलवायु बहुत कुछ अच्छी है। पच्छिमी भाग पूर्वी भाग से कुछ ऊँचा भी है। पूर्वीय भाग में बहुत-सी छोटी-छोटी धाराएँ और जलाशय हैं। लोग पीने के लिये पानी इन्हीं से लेते हैं। कुओं की संख्या बहुत कम है। लेकिन, पच्छिम भाग में कुएँ काफी पाये जाते हैं।

विहार के और जिलों की अपेक्षा यहाँ वर्षा अधिक होती है और साधारण समय के कुछ पहले ही आरम्भ हो जाती है। साल भर में मामूली तौर से करीब सत्तर-पचहत्तर इंच पानी बरसता है। विहार के और स्थानों की अपेक्षा यह स्थान बंगाल की खाड़ी और हिमालय पहाड़ के निकट है, इसी कारण यहाँ इतनी वर्षा होती है। बंगाल की खाड़ी से चलनेवाली मानसून पहाड़ से टकराकर खूब पानी बरसा देती है। जिले के दक्षिण भाग की अपेक्षा उत्तर भाग में वर्षा अधिक होती है। बरसात के बाद ही जाड़ा पड़ना शुरू हो जाता है और चैत तक रहता है। इस तरह यहाँ जाड़ा भी विहार की और जगहों की अपेक्षा अधिक पड़ता है और अधिक समय तक रहता है। लेकिन, गर्मी यहाँ कम पड़ती है। जेठ-बैशाख में जब अधिक गर्मी पड़ने लगती है तो तापमान करीब ९५° तक जाता है।

मलेरिया बुखार यहाँ की खास बीमारी है। बरसात के समय लोग इस रोग से बहुत मरते हैं। बाहर से यहाँ आनेवाले लोग

तो जल्द ही इस रोग के शिकार हो जाते हैं। हैजे का भी प्रकोप यहाँ बहुत रहता है। लेकिन प्लेग की शिकायत वैसी नहीं रहती। चेचक जब तब हुआ करता है। इससे बचने के लिये टीका देने का प्रबन्ध किया गया है। सन १९३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ३२ अस्पताल थे। इस जिले के अन्दर १९३१ की गणना के अनुसार बहरे-गूँगों की संख्या १,६४३, अंधों की संख्या १,३९८, कोढ़ियों की संख्या ४३७ और पागलों की संख्या ३८५ है।

जानवर

पूर्णिया जिले में यद्यपि चरागाह का काफी प्रबन्ध है तो भी यहाँ के जानवरों की हालत अच्छी नहीं है। यहाँ के मवेशी बहुत छोटे और कमजोर होते हैं। इसका कारण आबहवा के अलावे लोगों की लापरवाही भी है। यहाँ के लोग गौओं को भी हल में जोतते हैं। जहाँ मुसलमानों की आबादी अधिक है वहाँ यह रिवाज बहुत है। इन कारणों से उनके बच्चे दिनोंदिन खराब होते चले जाते हैं। गाड़ियों के काम के लिये लोग बैल पच्छिम के जिलों से मँगाते हैं। खगड़ा, इस्लामपुर और मदनपुर में मवेशियों की बड़ी हाट लगती है। इचामती, फुलबरिया, चन्दरडीही, धरमगंज और गंधर्वडांग में भी छोटी-छोटी हाटें लगती हैं। कोशी और गंगा के किनारे के मैदान में भैंस बहुत बड़ी संख्या में पलती हैं। दक्षिण में अरना जाति की भैंस और उत्तर में भँगरी जाति की भैंस विशेष पायी जाती हैं। अरना के सींघ बड़े-बड़े और भंगरी के छोटे-छोटे होते हैं। कटिहार और सैफगंज के आस-पास गड़ेरी लोग भेंड़ पालते हैं। यहाँ

मुसलमानों की अधिकता के कारण मांस के लिये बकरियाँ बहुत बड़ी तादाद में पाली जाती हैं। चढ़ने और बोझ ढोने के लिये लोग घोड़ा रखते हैं।

चरागाह जितना यहाँ पाया जाता है उतना विहार के किसी जिले में नहीं पाया जाता। इस जिले में हर जगह हरे-भरे रमने नजर आते हैं। पूर्णिया से मटियारी तक करीब ४० मील लम्बा और ६ मील चौड़ा मैदान सिर्फ चरागाह के काम में आता है। जाड़े और गर्मी के मौसिम में यहाँ सब किसी के मवेशी मुफ्त में चर सकते हैं। बरसात के दिनों में घास मोल बिकती है। दूसरे-दूसरे जिलों के मवेशी भी यहाँ आते हैं।

इस जिले में पहले जंगली जानवर बहुत पाये जाते थे और लोग यहाँ शिकार खेलने के लिये आते थे। पर, जंगलों के कट जाने पर अब यह हालत नहीं रही है। फिर भी जहाँ-तहाँ बाघ, भालू, चीते, सूअर, भेड़िये, हरिण, नीलगाय आदि मिलते ही हैं। जलचर जीवों में घड़ियाल, सोंस, मगर (बोच) वगैरह मुख्य हैं। हर तरह की मछलियाँ भी पायी जाती हैं।

जानवरों के इलाज के किये पूर्णिया में अस्पताल है। कुछ डाक्टर देहातों में घूम-घूमकर भी पशुओं की चिकित्सा करते हैं।

इतिहास

प्राचीन काल—कहते हैं कि इस जिले के प्राचीन निवासी अंग और पुंड्र लोग बताये जाते हैं। अंग जिले के पूरबी भाग में और पुंड्र पच्छिमी भाग में रहते थे। अथर्व-संहिता में अंगों का वर्णन आया है। लिखा है कि ये लोग भारत के सबसे पूर्वी

भाग में रहते थे। ऐतरेय ब्राह्मण नामक ग्रन्थ में, जो आज से कई हजार वर्ष पहले का है, लिखा है कि पुंड्र लोग बड़ी नीच जाति के थे। लेकिन, यह भी कहा जाता है कि ये लोग ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। इससे पता चलता है कि नीच जाति के होने पर भी इनमें आर्यों का रक्त मौजूद था। महाभारत और हरिवंश नामक ग्रन्थ बतलाते हैं कि अंग और पुंड्र अंधे ऋषि दीर्घतमा के वंशज थे। दीर्घतमा वलि नामक राक्षस-राज की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुए समझे जाते हैं। मनु-संहिता में लिखा है कि अंग और पुंड्र अपने पद से गिरते-गिरते शूद्र हो गये।

महाभारत के सभा-पर्व में भीम के पूर्वी भारत के जीतने का वर्णन आया है। लिखा है कि भीम ने कौशिकी-कच्छ के राजा महंजा को जीता था। कौशिकी-कच्छ मोदगिरि (मुँगेर) और पुंड्रों के देश के बीच में था। यह स्थान वर्तमान पूर्णिया जिले का दक्षिण भाग समझा जाता है। अंग देश के राजा कर्ण को परास्त करने और मोदगिरि के राजा को युद्ध में मारने के बाद भीम ने शक्तिशाली पुंड्र राजा वासुदेव को जीता। यह राजा वंगों, पुंड्रों और किरातों का राजा कहलाता था। पुंड्र देश के पूरब में करतोया नदी, पच्छिम में वर्तमान महानन्दा नदी, दक्षिण में वर्तमान पद्मा नदी और उत्तर में पहाड़ थे। महानन्दा नदी पच्छिम में इसे अंग देश से अलग करती थी। पुंड्र देश के उत्तर पहाड़ी प्रदेश में किरात लोग रहते थे। किरातों के युद्ध की दन्तकथाएँ अब भी यहाँ प्रचलित हैं। अज्ञातवास के समय पांडवों को शरण देनेवाला राजा विराट की राजधानी पूर्णिया जिले के ही ठाकुरगंज नामक स्थान में बतायी जाती है। यहाँ लोग उसके किले का एक निश्चित स्थान भी बतलाते हैं। विराट ने मोरंग की एक किरात कन्या से विवाह किया था। तथाकथित इतिहास-काल

के आरम्भ में इस जिले का, महानन्दा के पच्छिम का भाग अंग राज्य में शामिल हो गया था। जिले का पूर्वी भाग पौंड्र वर्द्धन राज्य में था। पुंड्रों के देश को ही लोग अब पौंड्रवर्द्धन कहते हैं। छठी सदी तक अंग एक स्वतन्त्र राज्य था। बुद्ध के समय में बिम्बिसार ने इसे मगध-राज्य में मिला लिया। इसके बाद फिर यह कभी स्वतन्त्र नहीं हो सका। पौंड्रवर्द्धन भी मगध में शामिल किया गया। अशोकावदान में लिखा है कि अशोक ने यहाँ के बहुत-से नंगे धर्म-विरोधियों को मरवा डाला था। इसके बाद यह जिला गुप्त साम्राज्य के अन्दर मिला लिया गया। उस समय वह साम्राज्य पूरब में कामरूप (आसाम) और समतत (पूर्व बंगाल) तक फैला हुआ था। हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य का जब पतन हुआ तो मगध के राजा बालादित्य ने अपने आसपास के हिस्सों को अपने दखल में किया। इसी में पूर्णिया भी उसके हाथ में गया।

चीनी यात्री ग्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) ने अपने यात्रा-वृत्तान्त में पौंड्रवर्द्धन और यहाँ के निवासियों के सम्बन्ध में कुछ बातें लिखी हैं। वह यहाँ ६४० ई० के लगभग घूमने आया था। वह लिखता है कि यहाँ के लोग समृद्धिशाली थे। यहाँ बहुत-से सराय, तालाब और फूलों के कुंज थे। यहाँ की जमीन नीची और ओदी थी। यहाँ अच्छी उपज होती थी और यहाँ की आबहवा भी इसके अनुकूल थी। इस देश में पच्छिम से आते समय यात्रियों को गंगा नदी पार करनी पड़ती थी और यहाँ से पूरब जाते समय एक दूसरी बड़ी नदी। इससे मालूम होता है कि यह देश पच्छिम में गंगा और महानन्दा नदी से तथा पूरब में करतोया नदी से घिरा था। महानन्दा से पच्छिम गंडक तक वृजियों का निवास-स्थान था। पौंड्रवर्द्धन में बौद्ध धर्मावलम्बी बहुत थोड़े थे, बाकी

सभी बौद्धधर्म के विरोधी ही थे। य्वन्च्वाङ् ने यहाँ के लोगों को स्वभाव का फुर्तीला और जल्दबाज बताया है।

सातवीं सदी के आरम्भ में यह भूभाग गौड़ (बंगाल) देश के राजा शशांक के हाथ में था। हर्षवर्द्धन ने शशांक को दबाया; लेकिन हर्ष के बाद उसका राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इसके बाद पूर्णिया मगध के राजा आदित्यसेन (६६० ई०) के अधीन हुआ। नवीं से बारहवीं सदी तक यह क्रम से पालवंशी और सेनवंशी राजाओं के हाथ में रहा।

मुसलमानी काल—१२वीं सदी के अन्त में जब बख्तियार खिलजी ने बिहार-बंगाल को जीतकर मुसलमानी राज्य कायम किया तो पूर्णिया भी उसके अन्दर आ गया। लेकिन, जिले का उत्तरी भाग बहुत दिनों तक नेपाल की पहाड़ी जातियों के ही अधीन रहा। मुगलों के समय में पूर्णिया फौजदार के अधीन एक सैनिक सीमा-प्रान्त था। यह फौजदार नाममात्र के लिये सूबेदार के मातहत रहता था। अपने और अपने सैनिकों के खर्च के लिये इसे पूर्णिया का अधिकांश भाग जागीर के रूप में मिला था। आईने-अकबरी से मालूम होता है कि वर्तमान जिला महानन्दा नदी से पूरब सरकार ताजपुर के अधीन और महानन्दा नदी से पच्छिम सरकार पूर्णिया के अधीन था। इसके अलावे इस भाग के अधीन सरकार औदुम्बर के दो महाल और सरकार लखनौती का एक महाल भी था। ये सब सरकार सूबा बंगाल के अधीन थे। बिहार प्रान्त के अधीनस्थ सरकार मुँगेर के पाँच महाल भी इस भाग में पड़ते थे। इस समय भी जिले का उत्तरीय भाग मोरंग राज्य के अधीन था। इस समय कोशी बंगाल और बिहार की सीमा मानी जाती थी और १८वीं सदी तक मानी जाती रही जब कि सरकार मुँगेर के पाँच महाल पूर्णिया में मिलाये गये।

पूर्णिया के फौजदार नवाब कहलाते थे । १७वीं सदी के अन्त में ओस्तवाल खाँ यहाँ का नवाब हुआ। इसके बाद क्रम से अब्दुल्ला खाँ, अस्फनदियार खाँ, बभनियार खाँ और सैफ खाँ नवाब बनाये गये । सैफ खाँ को औरंगजेब ने बंगाल के नवाब मुर्शिदकुली खाँ की प्रार्थना पर सीमा-प्रान्त की रक्षा के लिये भेजा था। क्योंकि, पास ही पच्छिम की ओर वीरनगर का राजा वीर-शाह मुगलों का आधिपत्य नहीं मानता था। उत्तर की ओर पहाड़ी जातियाँ भी उपद्रव मचाया करती थीं। इस उपद्रव को रोकने के लिये मुगलों ने जलालगढ़ में किला बनवाया और वहाँ एक सेना रखी। यह किला टूटे-फूटे रूप में अब भी मौजूद है । पूर्णिया के नवाब सैफ खाँ ने वीरशाह के लड़के दुर्जन सिंह को परास्त कर उसका राज्य ले लिया तथा और भी कई छोटे-छोटे जमींदारों को अपने वश में किया। इसने पहाड़ी जातियों को भी भगाकर उत्तर की ओर ३० मील तक अपना राज्य बढ़ाया। इस तरह इसने अपनी धाक खूब जमायी और अपनी सलाना आमदनी १० लाख से बढ़ाकर १८ लाख कर ली। यह अपने सैनिकों को वेतन आधा नकद के रूप में और आधा लूट-पाट के माल के रूप में देता था। इसकी एक यह भी खासियत थी कि यह अपने मित्रों और प्रेम-पात्रों को अपने जनानखाने की दासियाँ भेंट किया करता था।

१७५० ई० में सैफ खाँ के मरने पर इसका लड़का फक्रुद्दीन हुसैन खाँ फौजदार हुआ। यह बड़ा नालायक और अत्याचारी निकला, इसलिये नवाब अलीवर्दी खाँ ने अपने भतीजे और दामाद सैयद अहमद खाँ को, जो सौलतजंग भी कहलाता था, यहाँ का फौजदार बनाया। यह तीन हजार घुड़सवार और चार हजार पैदल सैनिकों को लेकर पूर्णिया पहुँचा। इसके डर से फक्रु-द्दीन भागकर मुर्शिदाबाद के दरबार में हाजिर हो गया। लेकिन,

मरहट्टा की चढ़ाइयों में नवाब को कमजोर पड़ता समझकर वह विद्रोह कर बैठा और महानन्दा नदी पर ठहरी हुई अपनी सेना को लेकर पूर्णिया पर हमला कर दिया। जब सैयद अहमद खाँ सामना करने को पहुँचा तो वह फिर डर से भागकर मालदह चला गया। यहाँ नवाब ने एक छोटी-सी सेना भेजकर फक्रुद्दीन को मुर्शिदाबाद पकड़वा मँगाया। आधी सदी में पूर्णिया में जमा की हुई उसके पास की अतुल सम्पत्ति भी नवाब के हाथ लगी।

१७४१ ई० में सैयद अहमद खाँ उड़ीसा का शासक बनाया गया था। यहाँ इसने बड़ा अत्याचार किया, लोगों की धन सम्पत्ति लूटी और अच्छी-अच्छी औरतों को पकड़कर अपने जनानखाने में रखा। इससे प्रजा बिगड़ खड़ी हुई और इसे पकड़कर कैद कर लिया। पीछे अलीवर्दी खाँ ने इसे कैद से छुड़ाया। इसके बाद १७४९ ई० में यह विहार का नायब गवर्नर बनाया गया; पर पीछे इसकी जगह पर नवाब अलीवर्दी खाँ का नाती सिराजुद्दौला काम करने लगा और यह पूर्णिया का गवर्नर बना दिया गया। इस पद पर इसने बड़ी योग्यता से काम किया। इसके समय में खगड़ा के जमींदार महमद जलिल ने जब उपद्रव मचाया तो वह परिवार-सहित गिरफ्तार कर लिया गया और उसकी जमींदारी जप्त कर ली गयी। जमींदारी पीछे उसके लड़के को लौटा दी गयी। नवाब अलीवर्दी खाँ के मरनासन्न होने पर सैयद अहमद खाँ ने इस बात की बड़ी कोशिश की कि बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला नहीं बनाया जाकर वही बनाया जाय। इसके लिये उसने कुछ सेना इकट्ठी की और बादशाह आलमगीर द्वितीय के वजीर आजम से भी इसकी चर्चा चलायी। लेकिन, अलीवर्दी खाँ के पहले ही वह सन् १७५६ ई० में मर गया।

सैयद अहमद खाँ के बाद इसका लड़का सौकतजंग पूर्णिया

का गवर्नर हुआ। अलीवर्दी खाँ ने उसे संतुष्ट करने के लिये सारा पूर्णिया बेलगान जागीर के रूप में दे दिया। अलीवर्दी खाँ के मरने पर जब सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब हुआ तो उसने तुरत अपने प्रतिद्वन्द्वी सौकतजंग पर चढ़ाई कर दी। वह राजमहल आ पहुँचा। लेकिन, सौकतजंग ने लड़ाई न कर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। कुछ ही समय के बाद मीरजाफर के अधीन सिराजुद्दौला के विरोधियों ने सौकतजंग को लिखा कि वह सिराजुद्दौला को गद्दी पर से उतारकर खुद नवाब बने। इसी समय सौकतजंग के पिता सैयद अहमद खाँ का पुराना षड्यन्त्र भी सफल हुआ और बादशाह आलमगीर द्वितीय के वजीरआजम ने सौकतजंग को फरमान भेजा कि वह बंगाल-विहार का नवाब बनाया गया। इन बातों से सौकतजंग बहुत अभिमान में आ गया और अपने नवाब होने की चर्चा वारे-आम करने लगा। जब सिराजुद्दौला को यह खबर लगी तो उसने सौकतजंग की गतिविधि का समाचार देने के लिये रामविहारी नामक एक हिन्दू सरदार को वीरनगर और गोन्दवारा का परगना जागीर के रूप में देकर वहाँ भेजना चाहा और सौकतजंग को जागीर देने के लिये पत्र लिखा। सौकतजंग इस पत्र को पाकर बिगड़ उठा और सिराजुद्दौला को लिख भेजा कि चूँकि वह खुद बंगाल का नवाब बनाया गया है, इसलिये सिराजुद्दौला गद्दी छोड़ दे और अपनी जान बचाकर भाग जाय। इसपर सिराजुद्दौला फौरन सेना लेकर पूर्णिया की ओर बढ़ा। उसने विहार के गवर्नर राजा रामनारायण को भी लिखा कि वह सेना लेकर पूर्णिया आवे। सिराजुद्दौला ने अपनी सेना दो भागों में बाँटकर एक भाग को दीवान राजा मोहन लाल के अधीन गंगा के बायें किनारे से भेजा और दूसरे भाग को वह खुद लेकर नदी के दायें किनारे से चला।

दोनों ओर की सेना में मनिहारी और नवावगंज के बीच बलदिया बारी नामक स्थान में भिड़न्त हो गयी। जिस समय लड़ाई छिड़ी हुई थी सौकतजंग नशाखोरी और नाचरंग में मस्त था। कहते हैं कि जब हार हो चली तो कुछ अफसर उसे बदहोशी में ही हाथी पर बैठाकर लड़ाई के मैदान में लाये। वहीं गोली लगने पर उसकी मृत्यु हो गयी। लड़ाई जीतकर सिराजुद्दौला ने मोहन लाल को पूर्णिया का गवर्नर बनाया। शेर-उल मुताखरीन में सौकतजंग के विषय में विशेष विवरण मिलता है। इस प्रस्तक का लेखक गुलाम हुसैन खाँ इसके दरबार में वर्षों तक था।

सन् १७५७ में पलासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला के मारे जाने के बाद हाजिरअली खाँ ने मोहन लाल को गिरफ्तार कर पूर्णिया पर कब्जा कर लिया। इस काम में उसे एक हिन्दू सरदार अचीत सिंह से मदद मिली। अचीत सिंह ताजपुर, श्रीपुर, गोन्दवारा और काढ़ागोला का जागीरदार था। लेकिन, अन्त में दोनों को दबाकर खादिम हुसैन खाँ पूर्णिया का फौजदार बना। बंगाल के नवाब मीरजाफर खाँ ने भी इसका फौजदार होना कबूल किया। लेकिन, मीरजाफर खाँ के लड़के मीरन से इसकी नहीं पटी। मीरन इसको हराना चाहता था और यह लगान रोके हुए था। १७५९ ई० में मीरन क्लाइव की अधीनता में एक अँगरेजी सेना लेकर शाह आलम का मुकाबला करने चला। उस समय शाह आलम विहार पर चढ़ाई करने आया था। मीरन ने खादिम हुसैन खाँ को भी अपनी सेना लेकर आने के लिये कहा। वह सेना लेकर आगे बढ़ा. पर मीरन के विरुद्ध बादशाह से मिल जाना चाहा। इसपर गवर्नर बनाये रखने का आश्वासन दिलाये जाने पर वह पूर्णिया लौट आया। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद उसने विद्रोह कर दिया और शाहआलम से

मिलने की तैयारी करने लगा। उसने ६ हजार घुड़सवार, १० हज़ार पैदल सैनिक और ३० बन्दूक जुटायीं। पहले उसने नदी से जाने का इरादा किया और उसके लिये बहुत-सी नावें जामा कीं; पर मेजर केलॉड ने सारे समान के साथ नावों को जला दिया। इसके बाद खादिम हुसेन गंगा के उत्तर होकर हाजीपुर पहुँचा। यहाँ कैप्टेन नॉक्स ने इसपर हमला किया। यह भागता हुआ चम्पारण गया जहाँ पीछे मीरन और मेजर केलॉड ने भी पीछा किया। रास्ते में एक जगह लड़ाई भी हुई। पर, संयोग से एक रात बिजली गिरने से मीरन की मृत्यु हो गयी। इसके बाद मेजर केलॉड वापस आ गया। खादिम हुसैन भी नेपाल की तराई होकर जून १७६० में पूर्णिया लौट आया।

मीरकासिम के समय में पूर्णिया का गवर्नर शेर अलीखाँ था। १७६३ ई० में जब मीरकासिम और अँगरेजों के बीच लड़ाई हुई तो शेरअली सारी सेना लेकर नवाब की सहायता करने को उधुआनाला पहुँचा और अपने भाई को पूर्णिया में नायब गवर्नर बनाकर रखा। नवाब की हार होना निश्चित समझकर उसका एक दरबारी रोहिनुद्दीन हुसैन खाँ, जो सैफ खाँ का लड़का था, मुँगेर से चुपचाप पूर्णिया चला आया और वहाँ के नायब गवर्नर को हटाकर वहाँ का अधिकारी बन बैठा। इसके बाद पूर्णिया में कई और गवर्नर हुए। अन्तिम गवर्नर मुहम्मदअली खाँ था जो १७७० ई० में हटाया गया और उसके स्थान में मिस्टर डुकैरेल पूर्णिया का पहला कलक्टर हुआ।

अँगरेजी राज्यकाल के प्रारम्भ में १७७० ई० में पूर्णिया जिले में जोरों का अकाल पड़ा जिससे यहाँ के एक तिहाई आदमी मर गये। इसके बाद जब-तब पूर्णिया में नेपालियों का उपद्रव होता रहा। १८१४ ई० में अँगरेजों और नेपालियों के बीच पहली

लड़ाई हुई। इस लड़ाई में मेजर लैटर पूर्णिया की सीमा की रक्षा के लिये दो हज़ार सैनिकों के साथ भेजा गया। १८१७ ई० में लड़ाई समाप्त होकर दोनों के बीच संधि हो गयी। १८५७ ई० के प्रसिद्ध विद्रोह में पूर्णिया जिले के सिपाहियों ने भी कुछ उत्पात मचाया और वे भागकर दूसरे विद्रोहियों से जा मिले; लेकिन अँगरेजों ने शीघ्र ही सबको दबाया।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ में पूर्णिया जिले की जनसंख्या १८,४८,१०७ थी। सन् १९३१ में यह संख्या २१,८६,५४३ हो गयी, इसमें ११,२९,६८१ पुरुष और १०,५६,८६२ स्त्रियाँ हैं। इस तरह इधर पचास वर्षों में इस जिले में ३,३८,४३६ आदमी अर्थात् प्रति सैकड़े १८ आदमी बढ़े। औसत के हिसाब से इस जिले के अन्दर एक वर्गमील में ४४० आदमी रहते हैं। बिहार के अधिकांश जिलों की अपेक्षा यहाँ की आबादी बहुत ही कम है। अररिया सबडिविजन में एक वर्गमील में ४७७, सदर सबडिविजन में ४३६ और किसुनगञ्ज सबडिविजन में ४१६ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में इस जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या २,०४,०९४ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या २७,८२४ थी। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में गाँवों की संख्या ४,१६० और शहरों की संख्या ४ है। ये चार शहर हैं—पूर्णिया, कटिहार, किशुनगञ्ज और फारबिसगञ्ज। इन शहरों की कुल आबादी ४६,२२३ है। केवल पूर्णिया शहर की आबादी १५,४७४ है।

इस जिले की बोली मैथिली का अपभ्रंश है। इसे यहाँ के लोग गाँवबारी अर्थात् गाँव की भाषा कहते हैं। डा० ग्रियर्सन

इसे पूर्वी मैथिली बताते हैं। पूरब की ओर बढ़ने पर इस बोली पर बँगला का प्रभाव पड़ता गया है। महानन्दा नदी के पूरब बंगालियों की एक बोली सिरिपुरिया का प्रभाव बहुत देखने में आता है। मुख्यत: यहाँ के मुसलमान सिरिपुरिया बोली बोलते हैं; पर हिन्दुओं की बोली तो मैथिली ही है। सिरिपुरिया को किशुनगञ्जिया भी कहते हैं। सारे किशुनगञ्ज सबडिविजन तथा अमूर कसबा और गोपालपुर थाने के मुसलमान यह बोली बोलते हैं। बंगालियों की बोली बँगला है। बंगाली यहाँ काफी संख्या में हैं। सर्वसाधारण की लिपि कैथी है; लेकिन पढ़े-लिखे लोग आपस में हिन्दी या उरदू बोलते तथा नागरी या उरदू लिपि लिखते हैं। जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य-भाषाओं के अन्दर १९,८०,१२३ लोगों की मातृभापा हिन्दुस्तानी, १,४७,२९९ की बँगला, १,१२८ की मारवाड़ी, ९११ की नेपाली, ५०४ की पंजाबी, १२३ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; मुण्डा भाषा श्रेणी के अन्दर ४०,१५८ की संथाली, १,२३० की मुंडारी, १८१ की करमाली, ७६ की कोरवा और जुआंग; द्राविड़ भाषा-श्रेणी के अन्दर १३,९८३ की ओराँव, १६४ की माल्टो, ५ की अन्य द्राविड़ भाषाएँ, ३८८ की पश्तो आदि और २७० की यूरोपीय भाषायें हैं।

धर्म के हिसाब से इस जिले में लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	१२,८५,३१४	ईसाई	१,८२३
मुसलमान	८,८६,३६८	सिक्ख	६९९
आदिम जाति	१२,१६७	जैन	१७२

जिले में हिन्दू फी सैकड़े लगभग ५९ हैं। हिंदुओं में सबसे अधिक ग्वाला और उसके बाद मुसहर हैं जो १ लाख से अधिक

की संख्या में हैं। इसके बाद क्रम से ताँती, राजपूत और दुसाध हैं जो ५० हजार से अधिक की संख्या में हैं। फिर, क्रम से संथाल, धानुक, केवट, तेली, ब्राह्मण, हारी, चमार, कोयरी, बरही, बनिया, हजाम, ओराँव, कमार, जोलाहा, कुम्हार, कुरमी, कायस्थ, कहार, धोबी, काँदू, माली, डोम, भूमिहार ब्राह्मण, तूरी, नट, चौपाल, मल्लाह, कंजर, भूइयाँ और कुररियार का स्थान आता है।

जिले के अन्दर मुसलमानों की संख्या फी सैकड़े करीब ४१ है। जिले के पच्छिम भाग की अपेक्षा पूरब भाग में मुसलमान अधिक हैं। महानन्दा नदी के पूरब हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान ही अधिक हैं। इनमें अधिकांश पहाड़ी जाति कोय के वंशज हैं। इनमें परदा प्रथा नहीं है। यहाँ के मुसलमानों की चार मुख्य उपजातियाँ हैं—बंगाली, कुलैया, हवल्यार और खुन्ता। इन सबों के रहन-सहन, चाल-ढाल और रीति-रिवाज से स्पष्ट है कि ये लोग हिन्दू से मुसलमान हुए हैं। इनमें बहुत अपना हिन्दू नाम रखते, हिन्दू देवी-देवताओं को पूजते और निकट-सम्बन्धी के साथ विवाह-शादी नहीं करते हैं।

सबसे पहले १८१६ ई० में यहाँ ईसाई मिशन का काम शुरू हुआ था। सन् १९०१ में यहाँ ३०४ गोरे ईसाई और १३४ भारतीय ईसाई थे। इधर ३० वर्षों के अन्दर इनकी संख्या चौगुने से भी अधिक हो गयी है। बहुत-से हिन्दू-मुसलमान ईसाई बनाये गये, इसी कारण इनकी संख्या इतनी बढ़ी। ऊपर जो ईसाइयों की संख्या १,८२३ दी गयी है उसमें ९९ यूरोपियन आदि, १६३ ऐंग्लो इण्डियन और १,५६१ भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

पूर्णिया जिले का रकबा ३१,४३,६३५ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १२,७५,७०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ८,६४,३६९ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ७,३०,०५२ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। २,७३,५१४ एकड़ जमीन नदी और मकान आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ६८ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका एक तिहाई से कुछ अधिक भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े २३ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता और सैकड़े ९ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ६½ भाग में दो या तीन फसल होती है।

खेती के विचार से जिले के तीन भाग किये जा सकते हैं—पहला पनार नदी के पच्छिम का भाग, दूसरा जिले के दक्षिण पूरब कोने पर एक त्रिकोणाकार क्षेत्र, जिसके तीनों कोन डींगरह, मनिहारी और बारसोय में पड़ते हैं, और तीसरा पनार नदी के पूरब का बाकी भाग। जिले के पच्छिम भाग की अपेक्षा पूरब भाग में खेती अधिक होती है और आबादी भी अधिक है। त्रिकोणाकार क्षेत्र की हालत दोनों से कुछ-कुछ मिलती-जुलती है। पूर्वी भाग नदियों और जलाशयों से भरा है। यहाँ की जमीन नदियों से बहकर आयी हुई मिट्टी से भरी है। यहाँ की मुख्य उपज धान और जूट है। पच्छिमी भाग की जमीन कोशी की की धारा बदलते रहने के कारण बालू से भरी है। यहाँ की मुख्य

उपज भदई और रब्बी हैं। अगहनी धान और उत्तर की ओर जूट भी थोड़ी मात्रा में होता है। इस भाग में बहुत-सी बेकार जमीन और हरभरी घासों के मैदान भी हैं जो चरागाह के काम में आते हैं।

सिचाई का काम यहाँ बहुत कम होता है और इसकी जरूरत भी कम रहती है। साधारण तौर पर वर्षा काफ़ी होती है और कुछ पहले से ही शुरू हो जाती है। अधिकांश भाग में ज़मीन नमी अच्छी तरह कायम रखती है। जिले का लगभग सैकड़े ५ हिस्सा पानी से भरा रहता है। बाढ़ के समय तो जिले का बहुत बड़ा हिस्सा पानी से भर जाता है। इस तरह खेती के लिये यहाँ पानी की कमी नहीं रहती। उपजाऊ जमीन के करीब १½ सैकड़े भाग में सिंचाई का काम होता है। सिंचाई तम्बाकू तथा बाग की फसल के लिये होती है। कूँवों और तालाबों से सिंचाई का काम लिया जाता है। अधिकांश भाग में दस-बारह फीट जमीन खोदने पर ही पानी निकल आता है।

सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की उपजाऊ जमीन के सैकड़े ४५ भाग में अगहनी, सैकड़े ४१ भाग में भदई और सैकड़े २४ भाग में रब्बी फसल होती है। अगहनी फसल में अधिकतर धान होता है और रब्बी फसल में तेलहन; तेलहन में भी सरसों अधिक हुआ करती है। भदई में, पटुआ (जूट) मकई, मरुआ, कोदो आदि की फसल होती है। जिले के पच्छिम और दक्षिण-पच्छिम भाग में धमदाहा और कोरहा थाने के अन्दर गेहूँ की खेती होती है। जिले के अन्दर कुछ जौ और जई भी उपजती है। दलहन में कुरथी, कलाई, राहर, मेथ, खेसारी, मूँग, मसुरी और बोरा होता है। तेलहन में तोरी, रैंची और तिल मुख्य है। दक्षिण की बलुआही ज़मीन

में अंडी होती है। जूट मुख्य कर जिले के उत्तर-पूरब कोने में किशुनगंज सबडिविजन में होता है। यहाँ तम्बाकू की खेती अच्छी होती है, इधर ऊख की खेती बहुत बढ़ी है। पहले नील की खेती खूब होती थी; लेकिन, अब यह बिलकुल उठ गयी। तरह-तरह के फल और तरकारियाँ भी यहाँ होती हैं।

पूर्णिया में सरकारी कृषि-फार्म है जहाँ नये वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाती है।

पेशा, उद्योग-धंधा और व्यापार

१९३१ की गणना के अनुसार पूर्णिया जिले के अन्दर हजार आदमियों में ३५७ आदमी कमानेवाले और बाकी उनके आश्रित स्त्री-बच्चे हैं। कमाने वाले ३५७ आदमियों में ३०६ आदमी कृषि और पशु-पालन में, २० आदमी उद्योग-धंधा में, १६ व्यापार में, ३ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सवारी आदि कामों में, २ शासन-कार्य में, २ डाक्टर-वैद्य, वकील मुख्तार, लेखक-शिक्षक, पंडा-पुरोहित आदि के पेशे में तथा ८ दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। सैकड़ों के हिसाब से यहाँ काम करनेवालों में सैकड़े ८६ आदमी खेती के काम में लगे हुए हैं। हिन्दुओं की भिन्न-भिन्न जातियों के अधिकांश लोग अपने पुस्तैनी धंधे में लगे हैं, जैसे लोहार लोहा का काम करते हैं तो चमार चमड़े का।

पूर्णिया में इस समय कोई उल्लेख-योग्य उद्योग-धंधा नहीं होता। पहले जो गिनाने योग्य थोड़े बहुत उद्योग-धंधे थे वे सब मर गये। यहाँ की बिदरी की चीजें बहुत प्रसिद्ध थीं। जस्ता और ताँबा को मिलाकर कसेरी लोग बढ़िया से बढ़िया फूलपत्तीदार गुड़गुड़ी, सुराही, सरपोश (चिलम ढकने का बर्तन) वगैरह

बनाते थे। उनमें कभी-कभी सोने-चाँदी का भी काम होता था। ये ही बिदरी की चीजें कहलाती थीं। यह काम अभी हाल तक थोड़ा बहुत चलता था। मुसलमान फौजदारों के वक्त में पूर्णिया में टेन्ट बनाने का काम खूब होता था। किशुनगंज में कुछ मुसलमान लोग कागज बनाते थे और वे लोग कगजिया कहलाते थे। नील का कारबार अभी हाल तक था, वह भी समाप्त हो गया। इस जिले में दरी बिनने का काम होता था। लेकिन, वह भी बन्द है। अब जहाँ-तहाँ थोड़े से मोटे कपड़े देशी करघों पर तैयार होते हैं। कटिहार के आस-पास गड़ेरी लोग कम्बल बनाते हैं। किशुनगंज सब-डिविजन में राजवंशी जाति की स्त्रियाँ बोरा तैयार करती हैं। लेकिन, मशीन से बोरे बनने लगने से यह व्यवसाय भी घट रहा है। अररिया सब-डिविजन में सुन्दर टोकरियाँ और किशुनगंज सब-डिविजन में चटाइयाँ तैयार होती हैं। चटाई बनाने का काम गोपालपुर और उसके आस-पास में विशेष होता है। किशुनगंज के पास चकला में बैलगाड़ी के अच्छे पहिये और किशुनगंज में पहिये के लोहे के हाल बनते हैं। किशुनगंज और अररिया सबडिविजन में काँसे के बर्तन बनते हैं। लेकिन, यह व्यवसाय भी अवनति पर है। पूर्णिया, अररिया और किशुनगंज में कुछ लोग आतशबाजी की चीजें बनाते हैं। काँच की माला, लाह की लहठी और गुड़ भी यहाँ तैयार किये जाते हैं।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ में जिले के अन्दर १७ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी एक्ट लागू था। इनमें ८ चावल, दाल, आटा और तेल की, ४ चाय की, २ जूट की, २ चीनी की और १ रेलवे की फैक्टरी थी।

व्यापार—पूर्णिया जिले का व्यापार नेपाल के साथ तथा आस-पास के जिलों के साथ चलता है। यहाँ से नमक, चीनी,

क़िरासन तेल, सूखी मछली और कपड़ा नेपाल जाता है और वहाँ से चावल, जूट, बोरा और सरसो यहाँ आती है। पूर्णिया से आस-पास के जिलों में चावल और दूसरे खैहन अन्न तथा जूट, तेलहन, चमड़ा, सूखी मछली और तम्बाकू जाता है। बाहर से चावल तथा दूसरे खैहन अन्न, चीनी, नमक, किरासन तेल, बोरा, कोयला, कपड़ा और तरह-तरह की विदेशी चीजें आती हैं। जिले में व्यापार के केंद्र बारसोय, फारबिसगंज, कसबा, कटिहार, खरखरी, किशुनगंज, पूर्णिया और रानीगंज हैं। रानीगंज और खरखरी को छोड़कर ये सभी स्थान रेलवे के पास ही हैं। कसबा में रैली ब्रदर्स और बहुत-से मारवाड़ी फर्म के एजेन्ट हैं जो जूट चमड़ा और अनाज का कारबार करते हैं। किशुनगंज जूट के व्यापार का केंद्र है।

पूर्णिया, भवानीपुर, फारबिसगंज, इस्लामपुर, किशुनगंज आदि कुछ जगहों को छोड़कर कहीं बड़ा और स्थायी बाजार नहीं है। भीतरी खरीद-फरोख्त का काम हाटों से चलता है जो कई दिनों पर निश्चित स्थानों में लगते हैं। समय-समय पर लगने-वाले मेलों से भी यह काम चलता है। काढ़ागोला, खगड़ा और नेकमर्द के मेले प्रसिद्ध हैं। काढ़ागोला का मेला माघी पूर्णिमा में लगता है और १५ दिनों तक चलता है। खगड़ा मेला दिसम्बर में लगता है। नेकमर्द का मेला दिनाजपुर जिले में पड़ता है। पर पूर्णिया जिले की सीमा के पास होने से इस जिले के बहुत लोग इस मेले में शामिल होते हैं।

नेपाल से पुराना व्यापार—नेपाल के साथ पूर्णिया का व्यापार पुराने जमाने से ही बहुत महत्व का रहा है। सन् १७९० में पूर्णिया के कलक्टर ने लिखा था कि पूर्णिया से नमक, सुपारी, मसाला, छोटी इलायची, मिरचाई, हींग, चीनी, तम्बाकू, सूती

और ऊनी कपड़ा, बन्दूक, चकमक पत्थर, सूखी मछली, मिट्टी के बर्तन और सूअर नेपाल भेजे जाते हैं। नेपाल से आनेवाली चीजों में उसने इन चीजों के नाम गिनाये थे—भूटानी कम्बल, रूई, बड़ी इलायची, नारंगी, मोम, लाह, जड़ी-बूटी, खैर, लोहबान, लकड़ी, लकड़ी के सामान, धान तथा दूसरे अनाज। सन् १७९१ ई० में कलक्टर ने हिसाब लगाया था कि नेपाल से करीब ३ लाख का माल आता है और करीब ३२ हजार का माल जाता है। १८७५ ई० में इस व्यापार की सरकारी रजिस्ट्री कराने का तरीका चलाया गया। आज कल बहुत-से रजिस्ट्री आफिस कायम हैं जहाँ सीमा को पार करनेवाले माल का हिसाब लिखा जाता है। अररिया सब-डिविजन के अन्दर कवारी, कुसुम्बा, मीरगंज, पंथमारी और पथरदेवा तथा किसुनगंज सब-डिविजन के अंदर भाटगाँव, धरसा, गंधर्व दांग, करावारी, पहोरा, तेरागच में ऐसे आफिस हैं। सीमा पर कई स्थानों में बाजार हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे, सड़क और नदियों के कारण जिले में आने-जाने की काफी सुविधा है। पूर्णिया जिले के अन्दर करीब २७५ मील तक रेलवे लाइन गयी है। २ वर्गमील के रकबे में औसतन १ मील सड़क है। छोटी-बड़ी नदियों से तो जिला भरा हुआ है और उन नदियों में नावें चलती हैं। इस कारण लोगों को एक जगह से दूसरी जगह जाने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती।

रेलवे—इस जिले में तीन रेलवे कम्पनियों की लाइनें दौड़ती हैं—एक बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की, दूसरी ई० बी० (ईस्ट बंगाल) रेलवे की और तीसरी दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे की।

बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की लाइन सिर्फ २४ मील तक इस जिले में गयी है। इस लाइन पर पच्छिम से पूरब की ओर कटिहार, सेमापुर, काढ़ागोला, और कुरसेला ये चार स्टेशन हैं। ई० बी० रेलवे की एक लाइन पूरब की ओर कचना के पास जिले में प्रवेश कर बारसोय जंकशन, सलमरी, झौआ, सनौली और दंडखोरा होकर कटिहार तक जिले के अन्दर ३१ मील की दूरी तय करती है। एक दूसरी लाइन दक्खिण-पूरब की ओर से लाभा और कुरेठा होकर कटिहार में मिलती है। कटिहार से एक लाइन सीधे दक्खिण की ओर २३ मील चलकर मनसाही और मनिहारी होते हुए गंगा के किनारे मनिहारी घाट पहुँचती है। गंगा की दूसरी ओर ई० आई० रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन साहबगंज है। गंगा में चलनेवाली एक स्टीमर दोनों रेलवे लाइनों को मिलाती है। फिर कटिहार और बारसोय से दो लाइनें उत्तर की ओर गयी हैं। कटिहार के उत्तर की ओर दौड़नेवाली लाइन रौतारा, रानी पटरा, पूर्णिया, कसबा, गढ़ बनैली, जलालगढ़, कुसियार गाँव, अररिया कोर्ट, अररिया, सिमरहा, फारबिसगंज और बथनाहा होकर नेपाल की सीमा के पास जोगबनी को गयी है। पूर्णिया से एक लाइन सीधे पच्छिम की ओर मुरलीगंज तक गयी है। बीच में पूर्णिया कोर्ट, कृत्यानंद नगर, मरसी, बनमाखी जंकशन और जानकीनगर ये ५ स्टेशन हैं। इस लाइन से भी एक शाखा लाइन बनमांखी से फूटकर औराही और बरहरा कोठी होकर बिहारीगंज को गयी है। बारसोय से एक लाइन उत्तर की ओर सुधानी, दलकोलहा और काँकी होकर किशुनगंज को जाती है। किशुनगंज के आगे दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे लाइन गयी है जिसकी दूरी पूर्णिया जिले के अन्दर ३९ मील है। जिले के अन्दर इस लाइन पर किशुनगंज सिटी, पंजीपारा, इका-

रचला, गौसाल, धनटोला, गुंजरिया, इस्लामपुर थाना, अलु-आबारी रोड, पोठिया, तैयबपुर, ठाकुरगंज और पिपरीथाना ये १२ स्टेशन हैं।

सड़क—इस जिले में नदियों की बाढ़ के कारण हर साल सड़कों की बड़ी दुर्दशा हो जाती है। रानीगंज और धमदाहा थाने में तो सड़कों की हालत और भी खराब रहती है। जिले की सड़कों में (१) गंगा-दार्जिलिंग रोड, (२) जानकीनगर घाट से पूर्णिया, कदवा, और बारसोय होकर आबादपुर तक जाने-वाली सड़क और (३) पथरदेवा से फारबिसगंज, अररिया, पूर्णिया और कटिहार होकर मनिहारी तक जानेवाली सड़क मुख्य है। गंगा-दार्जिलिंग रोड प्रान्त की एक ऐतिहासिक सड़क है। उत्तर की ओर रेलवे लाइन बनने के पहले तक कलकत्ता या दूसरी जगहों से आनेवाले लोग काढ़ागोला तक रेलवे, नदी या सड़क द्वारा आकर इसी सड़क से दार्जिलिंग जाते थे। मनिहारी से सीलीगुड़ी तक इसकी कुल लम्बाई १२० मील है। यह शुरू से आखिर तक पक्की बनायी हुई है और जगह-जगह इसमें पुल हैं। सिर्फ डिंगराघाट पर, जहाँ यह महानंदा नदी को पार करती है, पुल नहीं है। सड़क पर दोनों ओर सब जगह पेड़ लगे हुए हैं और थोड़ी-थोड़ी दूरी पर डाकबंगलो हैं। रेलवे लाइन बन जाने पर इस सड़क की मुख्यता जाती रही है। पहले यह सड़क सीधे विहार सरकार के प्रबंध में थी, अब डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के प्रबंध में आ गयी है।

सन् १९३५-३६ की रिपोर्ट के अनुसार जिले के अन्दर कुल २,७०६ मील लम्बी सड़कें हैं। इनमें १९५ मील पक्की सड़कें, २,२४२ मील कच्ची सड़कें और २६९ मील छोटी-छोटी देहाती सड़कें हैं।

जलमार्ग—पूर्णिया जिले में छोटी-बड़ी बहुत-सी नदियाँ हैं जिनका वर्णन पहले हो चुका है। इनमें अधिकांश नदियों में छोटी-बड़ी नावें चलती हैं जो आदमियों और मालों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाती हैं। गङ्गा में तो बड़ी-बड़ी नावें और स्टीमर भी चलती हैं।

शिक्षा

सन् १८७०-७१ में पूर्णिया जिले के अन्दर सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या केवल १२ थी, जिनमें २८८ लड़के पढ़ते थे। हाँ, छोटे-छोटे खानगी स्कूल बहुत-से थे। दस वर्ष के बाद और स्कूल भी मंजूर कर लिये गये और उन्हें थोड़ी-सी सरकारी सहायता दी जाने लगी। इस तरह सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या ६९८ हुई जिनमें ९,१५० लड़के पढ़ते थे। यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गयी। सन् १९०८ में आकर इस जिले में ९१९ स्कूल हुए जिनमें १९,८८४ छात्र पढ़ने लगे।

सन् १९०८ में इस जिले के अन्दर ६५१ प्राइमरी स्कूल थे, जिनमें १५,५११ छात्र पढ़ते थे। सन् १९३५-३६ में आकर जिले में प्राइमरी स्कूलों की संख्या १,१७६ हो गयी, जिनमें ४६,७२० लड़के-लड़कियाँ शिक्षा पा रही थीं। इन प्राइमरी स्कूलों के अन्दर छोटे-छोटे संस्कृत पाठशाले और मकतबों की भी गिनती है।

सन् १९०८ में इस जिले में ७ मिडिल इंगलिश और ६ मिडिल वर्नाक्यूलर स्कूल थे, लेकिन सन् १९३७-३८ में यहाँ मिडिल इंगलिश स्कूलों की संख्या ३२ और मिडिल वर्नाक्यूलर स्कूलों की संख्या ११ हुई।

सन् १९०८ में यहाँ हाई स्कूल केवल ३ थे, लेकिन सन् १९३७-३८ में हाई स्कूलों की संख्या ८ हो गयी है। ये स्कूल पूर्णिया, अररिया, किशुनगंज, कटिहार, बनेली, फारबिसगंज, अयोध्यागंज और बारसोय में हैं। जिले के अन्दर कोई कालेज नहीं है। कालेज की शिक्षा चाहनेवाले विद्यार्थी अधिकतर भागलपुर कालेज में जाते हैं।

जिले में स्त्री-शिक्षा धीरे-धीरे बढ़ रही है। पूर्णिया और अररिया में कन्याओं के लिये एक-एक मिडिल इंगलिश स्कूल है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या १०,४५५ थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ९१,०१६ और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या ४,१२४ है। इनमें अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ८,००७ और स्त्रियाँ ३३५ हैं। फी सैकड़े का हिसाब लगाने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े ४ होती है। सन् १९३५-३६ में ज़िले के अन्दर स्कूलों में ६३,६६८ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे, जो कुल जन-संख्या के सैकड़े ३ होते हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—पूर्णिया भागलपुर कमिश्नरी का एक जिला है। जिला का सब से बड़ा अफसर कलक्टर और मजिस्ट्रेट कहलाता है। इसकी सहायता के लिये जिले के सदर दफ्तर पूर्णिया में डिप्टी कलक्टर और सब-डिप्टी कलक्टर होते हैं। यह जिला तीन सब-डिविजनों में बँटा है—पूर्णिया, अररिया और किशुनगंज। सब-डिविजन का सब से बड़ा अफसर सब-डिविजनल अफसर या

संक्षेप में एस० डी० ओ० कहलाता है। शासन के काम में एस० डी० ओ० की सहायता के लिये सब-डिप्टी कलक्टर भी रहते हैं। सब-डिविजन कई थानों में बँटा रहता है। किस सब-डिविजन मे कौन-कौन थाने हैं यह सब-डिविजनों के वर्णन में मिलेगा।

न्याय—मुकदमे का काम दो हिस्सों में बँटा रहता है—दीवानी और फौजदारी। दीवानी मुकदमों को सुनने के लिये जिला जज, कई सब-जज और मुन्सिफ होते है। इसी प्रकार फौजदारी मुकदमों को सुनने के लिये जिला और शेसन जज, जिला मजिस्ट्रेट तथा कई डिप्टी और सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट रहते हैं। अधिकार के हिसाब से डिप्टी मजिस्ट्रेटों के तीन भेद होते हैं—फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास और थर्ड क्लास। सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास के मजिस्ट्रेट होते हैं। उनकी सहायता के लिये सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट होते हैं। जिले में कुछ आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहते हैं।

पुलिस—जिले के अन्दर पुलिस का सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। उसके नीचे असिस्टेन्ट और डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट होते हैं। पुलिस के काम के लिये जिला २९ भागों में बँटा है, जो थाना कहलाता है। थाने का बड़ा अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है, जिसे दारोगा भी कहते हैं। थाने में हवलदार और कई कानिस्टबिल रहते हैं। हर गाँव में एक-दो चौकीदार और फिर कई चौकीदारों पर एक दफेदार रहता है। इस जिले में सन् १९३६ में ७ इन्सपेक्टर, ७१ सब-इन्सपेक्टर, ५५ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, १ सरजेन्ट, २९ हवलदार, ६४६ कानिस्टबिल और ४,४४८ चौकीदार थे।

जेल—पूर्णिया में एक जिला जेल है जहाँ २८२ (२७६ पुरुष

और ६ स्त्री) कैदियों के रहने की जगह है। अररिया और किशुनगंज सब-डिविजन के सदर दफ्तर में एक-एक छोटा जेल है। अररिया जेल में १५ पुरुष और २ स्त्री कैदियों तथा किशुनगंज में ३० पुरुष और ३ स्त्री कैदियों के रहने का स्थान है। इन छोटे जेलों में दो हफ्ते या उससे कम की सजा पाये कैदी रह सकते हैं। जेलों में दरी, नेवार वगैरह बिनने का काम लिया जाता है।

रजिस्ट्री आफिस—पूर्णिया जिले में सन् १९३६ में पूर्णिया, अररिया, किशुनगंज, बहादुरगंज, इस्लामपुर, कटिहार, फारबिसगंज और धमदाहा में रजिस्ट्री आफिस थे। यहाँ जमीन की खरीद-बिक्री आदि की रजिस्ट्री की जाती है।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—देहातों के अन्दर सड़क, पुल वगैरह बनवाना, प्राइमरी और मिडिल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब और कुआँ वगैरह खुदवाना तथा घाट, अस्पताल और फाटक (अरगला) वगैरह का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम है। यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में ३६ मेम्बर होते हैं जिनमें २७ निर्वाचित, ५ नामजद किये और ४ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब १५-१६ लाख रुपया है। हर सब-डिविजन में एक-एक लोकल बोर्ड है जो अपने इलाके में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा निश्चित किये हुए छोटे-मोटे कार्य करता है। पूर्णिया लोकल बोर्ड के १४ चुने हुए और ४ नामजद किये, किशुनगंज लोकल बोर्ड के ७ चुने हुए और २ नामजद किये तथा अररिया लोकल बोर्ड में ६ चुने हुए और २ नामजद किये मेम्बर रहते हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—म्युनिसिपैलिटियाँ शहरों के अन्दर प्रायः वे ही काम करती हैं जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड गाँवों के अन्दर करता है। जिले के अन्दर पूर्णिया, किशुनगंज और कटिहार में

म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। पूर्णिया की म्युनिस्पैलिटी १८६४ ई० में, किशुनगंज की १८८७ ई० में, कटिहार की १९०५ ई० में और फारबिसगंज की १९१२ ई० में कायम हुई थीं। इनके मेम्बरों की संख्या क्रम से २०, १५, १५ और १० है।

पूर्णिया (सदर) सबडिविजन

पूर्णिया सब-डिविजन २५° १५' और २६° ७' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७° ०' और ८७°५६' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल २,५४९ वर्गमील और जनसंख्या ११,११,७९९ है। इस सब-डिविजन में पूर्णिया और कटिहार ये दो शहर तथा २३२७ गाँव हैं। इस इलाके में १६ थाने हैं—पूर्णिया, कसबा, खजांची-हाट, अमौर, बैसी, धमदाहा, रुपौली, धरहरा, कोरहा, बरारी, करनदिग्घी, कद्वा, बारसोय, आजमनगर, कटिहार और मनिहारी। करनदिग्घी का रेवेन्यू थाना गोपालपुर कहलाता है। सब-डिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

पूर्णिया—जिले का मुख्य शहर पूर्णिया सौरा नदी के किनारे २६°४६' उत्तरीय अक्षांश और ८७°२८' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। मुसलमानी काल में इस इलाके के फौजदार ने यहाँ अपना सदर दफ्तर बनाया था। उस समय सौरा नदी एक बड़ी नदी थी और वह कोशी की एक मुख्य धारा थी। इसी कारण यह एक केन्द्र स्थान बनाया गया। पुराने घरों और मस्जिदों के भग्नावशेष के सिवा मुसलमानी सल्तनत का अब कोई चिन्ह नहीं रह गया है। हाँ, महल्लों के मुसलमानी नाम अब भी उनकी याद दिलाते हैं, जैसे—मीयाँ बाजार, खलीफा चौक, अब्दुल्ला नगर, बेगम ड्योढ़ी, लाल बाग, खुश्की-

बाग वगैरह। सन् १७७१ ई० में अँगरेजों ने इस शहर को जिले का सदर दफ्तर बनाया। इस समय पूर्णिया शहर का म्युनिसिपल रकबा १२॥ वर्गमील है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १५,४७४ है जिसमें ११,३१३ हिन्दू, ४,०२० मुसलमान, ९९ ईसाई, ३८ जैन, ४ सिक्ख हैं। यह शहर लम्बा और छिटफुट बसा हुआ है। इसके पाँच हिस्से हैं—मुख्य शहर, सरकारी दफ्तर, खजांची हाट, भट्टा और मधुबनी। पुराना शहर सौरा नदी के बायें किनारे पर बसा है। सौरा नदी पर का पुल इसे सरकारी कचहरियों के साथ मिलाता है। यहाँ से दो मील दक्षिण खजांचीहाट है जहाँ मुसलमान लोग अधिक हैं। इसीसे सटा हुआ भट्टा महल्ला है जहाँ बंगाली वकील, मुहर्रिर और सम्पन्न बिहारी रहते हैं। इसके पच्छिम मधुबनी है जहाँ बाजार और म्युनिसिपल मार्केट है। पूर्णिया से हिमालय का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है। पूर्णिया के अन्दर तीन थाने हैं जिनके नाम और जिनकी जनसंख्या इस प्रकार हैं:—पूर्णिया:—९४,२६८, कसबा—४५,७९६ और खजांचीहाट—१७,०४६। पूर्णिया थाने में ६७,१२९ हिन्दू, २६,६०७ मुसलमान, २८५ आदिम जाति, १०५ ईसाई और ४२ अन्य जाति के लोग हैं। कसबा थाने मे २८,०४४ हिन्दू, १७,४५८ मुसलमान और २९४ आदिम जाति के लोग हैं। खजांचीहाट थाने में १३,१९३ हिन्दू. ३,६९६ मुसलमान और १५७ आदिम जाति के लोग हैं।

अमौर— यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८८,८९६ है जिसमें ६१,७८० मुसलमान, २७,१४४ हिन्दू और २ अन्य जाति के लोग हैं।

आजमनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने

की जनसंख्या ३६,०३२ है जिसमें २०,२२९ हिन्दू, १५,३७४ मुसलमान और ४२९ आदिम जाति के लोग हैं।

कटिहार—यह एक बहुत बड़ा रेलवे जंकशन है। बी० एन० डब्ल्यू० आर० और ई० बी० आर० की लाइनें यहाँ मिलती हैं। यहाँ से पाँच भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर रेलवे लाइनें गयी हैं। बिहार और संयुक्तप्रान्त के कुली आसाम और बंगाल की ओर काम करने के लिये इसी होकर जाते आते हैं। इसलिये यहाँ अक्सर इनकी भीड़ लगी रहती है;। कटिहार अब पूर्णिया के मुकाबले का शहर हो गया है बल्कि जनसंख्या तो पूर्णिया से भी बढ़ी हुई है। सन १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १५,८६४ है। यहाँ भेड़ बहुतायत से पाले जाते और उनके ऊन से मामूली कम्बल तैयार किये जाते हैं। यहाँ से चावल और तेलहन बाहर भेजा जाता है। यहा मुन्सिफ की कचहरी, थाना, दो अस्पताल और एक हाई स्कूल है। इस थाने की जनसंख्या ८६,६१० है जिसमें ६५,६३२ हिन्दू, १७,२५८ मुसलमान, ३,४७५ आदिम जाति और २४५ ईसाई हैं।

इस स्थान का पुराना नाम सैफगंज था। इसे पूर्णिया के सैफ खाँ ने करीब दो सौ वर्ष पहले बसाया था। जब यहाँ रेलवे स्टेशन बना तब साहबगंज से मिलता-जुलता होने के कारण यहाँ के स्टेशन का नाम सैफगंज न रखकर पास के एक दूसरे गाँव कटिहार के नाम पर रखा गया। यहाँ का परगना भी कटिहार नाम से ही प्रसिद्ध है।

कदवा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। थाने की जनसंख्या ७७,८२० है, जिसमें ४५,७४३ हिन्दू, ३१,४०६ मुसलमान, ६४१ आदिम जाति और ३० अन्य जाति के लोग हैं।

करनदिग्घी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की

जनसंख्या ७३,२५७ है, जिसमें ४७,१५९ हिन्दू, २५,३२३ मुसलमान, ६१९ आदिम जाति, १५५ ईसाई और १ अन्य जाति के लोग हैं।

कसबा—यह स्थान पूर्णिया से ८ मील उत्तर ईस्ट बंगाल रलवे पर है जहाँ थाने का सदर आफिस है। यह चावल और जूट के व्यापार का केन्द्र है। रैली ब्रदर्स ने यहाँ अपनी एजेन्सी कायम की है और एक जूट मिल भी बनाया है। यहाँ बहुत से मारवाड़ियों के भी गोदाम हैं। यहाँ जूट अनाज और चमड़े का कारबार होता है। इस थाने की जनसंख्या पूर्णिया के वर्णन में दी जा चुकी है।

काढ़ागोला—यह गाँव जिले के बिलकुल दक्षिण काढ़ागोला रोड नामक रेलवे स्टेशन से ६ मील की दूरी पर गंगा के किनारे बसा है। यह पहले व्यापार का मुख्य केन्द्र था। गंगा-दार्जिलिंग रोड यहीं समाप्त होता है। यहाँ से पहले रेलवे स्टीमर साहबगंज को जाया करता था। कार कम्पनी का जहाज अब भी यहाँ लगता है। यहाँ थाना, डाकघर और डाकबंगला हैं। यहाँ माघी पूर्णिमा में एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

कोरहा—यह थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८०,८१२ है, जिसमें ६९,०९७ हिन्दू, ११,४८१ मुसलमान, ९७ आदिम जाति, ८ ईसाई और १३० अन्य जाति के लोग हैं।

खजांची हाट—दे० पूर्णिया।

छोटा पहाड़—जिले के दक्षिण में मनिहारी के पास यह एक पहाड़ी है, जिसकी ऊँचाई २५० फीट है। इसका कंकड़ सड़क के काम में लाया जाता है। यहाँ सम्भवतः पहले एक मंदिर था। इस समय एक कब्र है।

जलालगढ़—पूर्णिया से १२ मील उत्तर जलालगढ़ रेलवे

स्टेशन के पास इस नाम का एक टूटा-फूटा किला है। यह एक चतुर्भुजाकार किला है। इसकी दीवारें ऊँची थीं। यह मोरंग राज्य की सीमा के पास बनाया गया था जिससे उत्तर की पहाड़ी जातियों की चढ़ाइयाँ रोकी जा सकें। खगड़ा राजपरिवार के इतिहास से पता चलता है कि इसे खगड़ा का पहला राजा सैयद मुहम्मद जलालुद्दीन ने बनवाया था जिसे बादशाह जहाँगीर ने राजा की पदवी दी थी। दूसरे लोगों का कहना है कि इसे पूर्णिया के नवाब सैफ खाँ ने १७२२ ई० में बनवाया था। लेकिन मालूम पड़ता है कि यह १७२२ ई० के पहले भी वर्तमान था। 'रियाजुस सलातीन' में लिखा है कि बीरनगर के राजा के पास १५००० घुड़सवार और पैदल सैनिक थे। उस तरफ से चकवार आदि जाति के लोग बहुत उपद्रव मचाया करते थे, इसलिये मोरंग राज्य की सीमापर जलालगढ़ का किला बनवाया गया और वहाँ एक गढ़ रक्षक बहाल हुआ। उसमें आगे लिखा है कि—जब सैफ खाँ पूर्णिया का फौजदार बनाया गया तब उसे जलालगढ़ की सरदारी और उसके साथ जागीर भी मिली। उसके बाद गढ़ खगड़ा के सातवें राजा सैयद मुहम्मद जलील के हाथ में आया। उसके कर देने से इन्कार करने पर पूर्णिया के नवाब सौलातजंग (सैयद अहमद खाँ) ने उस पर चढ़ाई कर गढ़ को छीन लिया और उसे कैद कर लिया। मुसलमानी सल्तनत के बाद किला टूट-फूट गया। १९ वीं सदी के आरम्भ में पूर्णिया के कलक्टर ने पूर्णिया की आबहवा खराब जानकर जिले का हेड आफिस जलालगढ़ ही ले जाने का विचार किया था, पर वह विचार कार्य में नहीं लाया जा सका। कहते हैं कि सिपाही विद्रोह के समय में एक मुसलमान ने यहाँ अपनी सल्तनत जमाना चाहा, लेकिन पीछे वह लोगों से रुपया पैसा लेकर चुपचाप भाग गया।
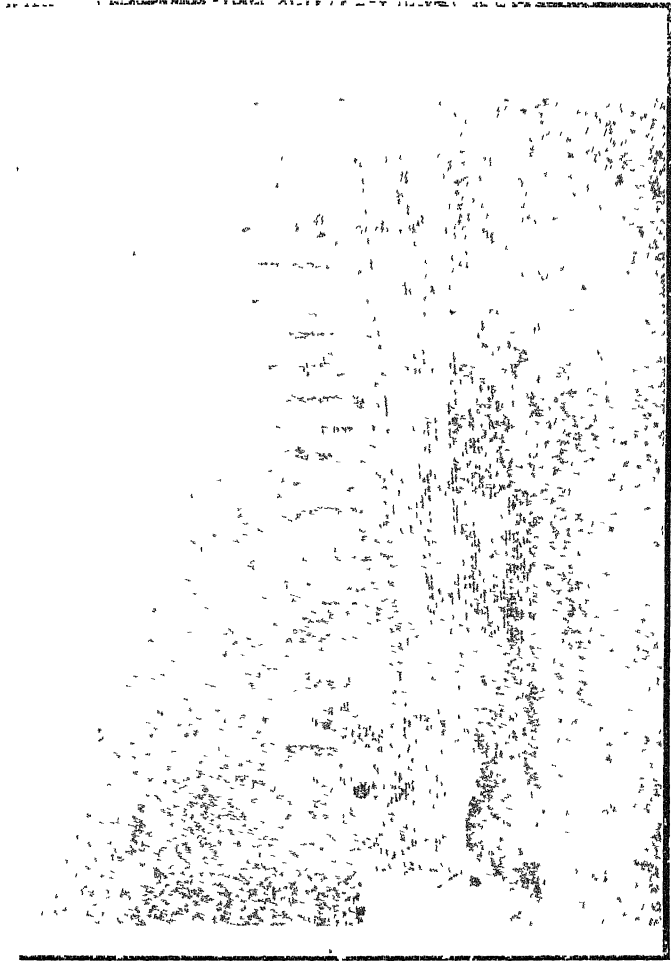
जलाल गढ़ का किला (पूर्णिया)

मारिणक स्तम्भ, धरहरा (पूर्णिया)

कन्हैयाजी का स्थान, बन्दरझूला (पूर्णिया)

धमदाहा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन संख्या १,१०, ३७९ है, जिसमें ९९,३२३ हिन्दू, ९,०१८ मुसलमान, २,०३२ आदिम जाति तथा ६ अन्य जाति के लोग हैं।

धरहरा—यह गाँव जिले के बिलकुल पच्छिम भाग में रानीगंज से १२ मील दक्षिण है जहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ सतलीगढ़ नामक किले का भग्नावशेष है। किले के उत्तर-पच्छिम कोने पर एक स्तम्भ है जिसे लोग माणिक थम्भ कहते हैं। यह स्तम्भ १९ फीट ११ इञ्च लम्बा है, जिसमें ७½ फीट जमीन के ऊपर है और बाकी जमीन के नीचे। स्तम्भ के ऊपर १२ इञ्च का एक छेद है। कहते हैं कि इसके ऊपर एक सिंह की मूर्त्ति थी। यह स्तम्भ गाजीपुर के शिलालेखवाले स्तम्भ से मिलता जुलता है जो अब बनारस कालेज के मैदान में है। यह यह माणिक स्तम्भ ६५° के कोण पर झुका हुआ है। कहते हैं कि पूर्णिया के कलक्टर ने जमीन खोदकर देखना चाहा था कि यह कितना नीचे गड़ा है। यह दिखाने के लिये कि उसने जड़ का पता लगा लिया है इस स्तम्भ को उसने कुछ झुका दिया। पीछे कर्नल वैडेल ने इसपर शिलालेख ढूढ़ने के लिये जमीन में इसके गड़े हिस्से को खोद कर देखा पर कोई शिलालेख नहीं मिला। उसने स्तम्भ के नीचे इन्डो-सीथियन लिपि का एक सोने का सिक्का पाया था। यहाँ के लोगों का कहना है कि पुराण प्रसिद्ध हिरण्यकश्यप यहीं हुआ था। इसी स्तम्भ में उसने भगवान के भक्त अपने पुत्र प्रह्लाद को बाँध रखा था और इसी को फाड़कर नरसिंह भगवान प्रकट हुए थे और हिरण्यकश्यप का नाश किया था। लोग सतलीगढ़ किले को हिरण्यकश्यपु का ही किला बतलाते हैं। इसके पास में जो एक नदी बहती है उसको लोग हिरण्य नदी कहते हैं। धरहरा थाने की जनसंख्या ७२,९०५ है,

जिसमें ६५,८७२ हिन्दू, ६,२७६ मुसलमान, ७४७ आदिम जाति और १० अन्य जाति के लोग हैं।

नवाबगंज—जिले के दक्षिण में साहबगंज के सामने गंगा से १२ मील उत्तर यह एक गाँव है। कहते हैं कि एक बार मुसलमानी वक्त में पूर्णिया से खजाना राजमहल भेजा जा रहा था, तो इसी स्थान पर, जहाँ पहले जंगल था, लुटेरों ने उसे लूट लिया। इसी पर नवाब ने यहाँ एक बस्ती बसायी जो नवाबगंज नाम से प्रसिद्ध हुई। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है जिसका क्षेत्रफल ८० एकड़ है। बाघमारा गाँव भी इसी मौजे में है। यहाँ से बलदियाबारी डेढ़ मील है जिसका जिक्र अलग दिया गया है।

बनैली—हवेली परगने में यह एक गाँव है जहाँ प्रसिद्ध बनैली राजघराने के लोग रहते थे। राजा लीलानन्द सिंह यहाँ से हटकर कई मील की दूरी पर रामनगर में जा बसे। फिर, चम्पानगर में ड्योढ़ी बनी। इन लोगों की जमींदारी पूर्णिया, मुंगेर, भागलपुर, संथाल परगना और मालदह जिलों में है। इस घराने के संस्थापक हजारी चौधरी ने १७८०इ० में इस जिले में परगना तिरखरदा खरीदा था। उनके लड़के राजा दुलार सिंह बहादुर ने १८०० ई० के करीब भागलपुर, मुंगेर और मालदह में जमींदारी हासिल की। इनके दो लड़के हुए—विद्यानन्द सिंह और कुमार रुद्रानन्द सिंह। सम्पत्ति के लिये इन दोनों भाईयों में लड़ाई चली। आखिर जमीन्दारी आधी आधी बांट ली गयी। कुमार रुद्रानन्द ने श्रीनगर राजवंश की स्थापना की। बनैली के राजा विद्यानन्द ने मुंगेर जिले में खड़गपुर का महाल खरीदा। १८५० ई: में उनके मरने पर लीलानन्द सिंह राजा हुए। इन्होंने १८६० ई: में चाँदपुर हुसैन और तालुक खजुरिया खरीदा। वे १८८३ ई० में मर गये। उनके तीन लड़के थे पद्मानन्द सिंह, कालानन्द सिंह

और कीर्त्यानन्द सिंह। जिस समय पद्मानन्द सिंह राजा हुए उस समय शेष दोनों भाई नाबालिग थे। पद्मानन्द सिंह के बाद क्रम से ये लोग भी राजगद्दी पर बैठे। राजा कीर्त्यानन्द सिंह की मृत्यु अभी हाल ही में हुई है। इस समय उनके लड़के गद्दी के अधिकारी हैं। इस राज की सालाना आमदनी कई लाख रुपये की है।

बरसोय—यह गाँव महानन्दा नदी पर है। यहाँ थाना और ई० बी० रेलवे का जंकशन है जहाँ से किशुनगंज की ओर रेलवे लाइन गयी है। इस थाने की जनसंख्या ४८,७४३ है, जिसमें १८,६३६ हिन्दू, ३०,००० मुसलमान, ८० अदिम जाति और २७ अन्य जाति के लोग हैं।

बरारी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७२,५९६ है। इसमें ५६,६०० हिन्दू, १४,९५७ मुसलमान, ५४१ आदिम जाति और ४९८ दूसरी जाति के लोग हैं।

बलदियारी—जिले के दक्षिण नवाबगंज से १½ मील पर यह एक गाँव है जहाँ सौकतजंग और सिराजुद्दौला से लड़ाई हुई थी।

बैसी—यहाँ थाने का सदर अफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४८,४७३ है। इसमें ३१,३२४ मुसलमान, १७,००० हिन्दू, १४१ आदिम जाति और ८ अन्य जाति के लोग हैं।

मनिहारो—गंगा के किनारे इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। कटिहार से यहाँ ई० बी० आर० की एक लाइन आयी है। यहाँ से एक रेलवे स्टीमर गंगा के दूसरे किनारे सकरीगली घाट को जाती है। यहाँ साहबगंज से ई० आई० आर० की एक लाइन आयी है। कार्तिक पूर्णिमा और शिवरात्रि आदि के समय यहाँ गंगा के किनारे मेला लगा करता है। मनिहारी थाने

की जनसंख्या ७४,८६६ है, जिसमें ५४,६६९ हिन्दू, १९,९४७ मुसलमान, २४७ आदिम जाति तथा ३ अन्य जाति के लोग हैं।

रुपौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८३,२९९ है। इसमें ७६,०८१ हिन्दू, ६,९३५ मुसलमान, २७७ आदिम जाति और ६ अन्य जाति के लोग हैं।

सतलोगढ़—दे० **धरहरा**।

सैफगंज—दे० **कटिहार**।

अररिया सबडिविजन

अररिया सबडिविजन जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में २५°५६' और २६°३५' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°३' और ८७°४२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १,०७७ वर्गमील और जनसंख्या ५,१४,१६७ है। इस सबडिविजन में सिर्फ १ शहर फारबिसगंज और ६६८ गाँव हैं। इस इलाके में ५ थाने हैं—अररिया, पलासी, सिकटी, फारबिसगंज और रानीगंज। इस सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

अररिया—पूर्णिया से ३० मील उत्तर पनार नदी के बायें किनारे पर यह एक गाँव है। पहले इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर यहीं था। लेकिन, बहुत वर्ष हुए कि सदर दफ्तर वहाँ से हटकर पनार नदी के दाहिने किनारे पर अररिया से ४ मील पच्छिम बसन्तपुर को चला गया है; लेकिन इसका नाम अब तक अररिया ही बना है। अररिया गाँव को लोग करैया भी कहते हैं। अररिया थाने की जनसंख्या १,४१,१८३ है, जिसमें ८४,५२५ मुसलमान, ५६,६५६ हिन्दू और २ इसाई हैं।

फारबिसगंज—यह स्थान यहाँ के एक अँगरेज जमींदार के

नाम पर बसा है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। यह अररिया से १८ मील उत्तर-पच्छिम है। यहाँ से सात मील पर ही नेपाल राज्य की सीमा है। यहाँ ई० बी० आर० की लाइन गयी है। यहाँ थाना, अस्पताल, म्युनिसिपैलिटी, हाई स्कूल और डाकबँगला हैं। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। नेपाल के साथ अररिया सबडिविजन के अधिकांश भाग का व्यापार यहाँ से ही होता है। यहाँ मारवाड़ियों के बड़े-बड़े कारबार हैं। जूट यहाँ का मुख्य व्यवसाय है। यहाँ दो जूट मिलें भी हैं। फारबिसगंज की जनसंख्या ५,९३९ है और फारबिसगंज थाने की १,७७,७९१। इस थाने में १,३७,७०६ हिन्दू, ४०,००९ मुसलमान, ३४ ईसाई, २२ आदिम जाति और २० अन्य जाति के लोग हैं।

पलासी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५३,३३८ है, जिसमें ३२,८९३ हिन्दू और २०,४४५ मुसलमान हैं।

बसन्तपुर—अररिया रेलवे स्टेशन से ३½ मील दक्षिण-पूरब पनार नदी के दाहिने किनारे यह एक गाँव है। अररिया सबडिविजन का सदर दफ्तर यहीं है। सरकारी आफिसों के अलावे यहाँ अस्पताल, डाकबँगला और हाईस्कूल भी हैं।

रानीगंज—बसन्तपुर से १६ मील पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,०७,७०० है, जिसमें ८७,१४२ हिन्दू, २०,३२६ मुसलमान, २२७ आदिम जाति के लोग और ५ ईसाई हैं।

सिकटी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३४,१५५ है। इसमें २४,४६८ हिन्दू और ९,६८७ मुसलमान हैं।

किशुनगंज सबडिविजन

किशुनगंज सबडिविजन जिले के उत्तर-पूरब भाग में २५'५४' और २६'३५' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७'३७' और ८८'३२' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल १,३४६ वर्ग-मील और जनसंख्या ५,६०,५७७ है। इस सबडिविजन में सिर्फ एक शहर किशुनगंज और १,१६५ गाँव हैं। इस इलाके में ८ थाने हैं—किसुनगंज, गोआल पोखर, बहादुरगंज, दिघालबंक, तेरहागाछ, इस्लामपुर, चपरा, और ठाकुरगंज। इस सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

किशुनगंज—महानन्दा नदी से पूरब कुछ दूर पर गङ्गा-दार्जिलिंग रोड पर यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। बरसोय जंकशन से ई० बी० रेलवे की एक लाइन किशुनगंज होकर जलपाइगुरी जिले को गयी है। किशुनगंज शहर की जनसंख्या ८,९४६ है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी है। पहले सबडिविजन का सदर दफ्तर शहर से ४ मील उत्तर-पच्छिम झरियादांगी नामक स्थान में था। पीछे रेलवे स्टेशन के पास देवमरिया नामक महल्ले में चला आया। किशुनगंज में खगड़ा स्टेट की कचहरी भी है। किशुनगंज थाने की जनसंख्या ९२,१२१ है। इसमें ५९,५२९ मुसलमान, ३१,९६३ हिन्दू, ४६७ ईसाई, ६७ आदिम जाति तथा ९५ अन्य जातिवालों की संख्या है।

असुरगढ़—किशुनगंज से १२ मील दक्षिण महानंदा नदी के पूर्वी किनारे के पास यह एक टूटा-फूटा किला है। किले का घेरा १,२०० गज है। यह १०-१२ फीट ऊँचे टील्हे पर बना हुआ मालूम पड़ता है। यह मिट्टी की दीवालों से घिरा है और भीतर बहुत-से पुराने मकानों के भग्नावशेष हैं। जमीन के नीचे मकानों

की निचली कोठरियाँ मिली हैं। किला कैसे बना इसके सम्बन्ध में लोग एक कहानी कहते हैं। कहते हैं कि बेणु, बरिजान, असुर, नन्हा और कन्हा नाम के पाँच भाई थे। इन सबों ने अपने-अपने नाम पर एक-एक किला बनवाया। लेकिन अब केवल बेणुगढ़, बरिजानगढ़ और असुरगढ़ का ही पता चलता है। कहा जाता है कि ये पाँचों भाई विक्रमादित्य के समय मे हुए थे। यहाँ के लोग बताते हैं कि यह स्थान कई सौ वर्ष पहले जंगलों से भरा था, कोई हिन्दू इसमें रहने का साहस नहीं करता था क्योंकि उसे डर था कि असुरदेव कहीं नाराज न हो जांय। अन्त में एक मुसलमान फकीर आया और उसने एक गाय को मारकर इस स्थान को कब्जे में किया। उसके वंशज जंगल को साफ कर वहाँ खेती करने लगे। हिन्दू लोग यहाँ असुरदेव को पूजने के लिये आया करते हैं। मुसलमान लोग भ गढ़ में प्रवेश करनेवाले फकीर को पूजते हैं। खगड़ा घराने के इतिहास से पता चलता है कि अपने पूर्वज मुहम्मद जलील के हाथ से सौलातजंग द्वारा जलालगढ़ के छिन जाने पर खगड़ा के नवाँ राजा फखरुद्दीन हुसैन ने यहाँ एक किला बनवाया। सम्भवतः यह किला पुराने हिन्दू-किला के स्थान पर बना था।

इस्लामपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,०७,०३४ है। यहाँ ८०,९१५ मुसलमान, २५,७५० हिंदू, ३५४ ईसाई, और १५ आदिम जाति के लोग हैं।

कलियागंज—किशुनगंज सबडिविजन के उत्तर-पूरब कोने पर महानन्दा नदी के किनारे यह एक गाँव है। पहले यह जूट के व्यापार का केंद्र था और यहाँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक एजेंट बोरा खरीदने के लिये रहा करता था। एक जूट मिल अब भी यहाँ कायम है।

खगड़ा—किशुनगंज म्युनिसिपैलिटी के अन्दर यह एक गाँव है जहाँ एक पुराने मुसलमान जमींदार घराने के लोग रहते हैं। इन लोगों का मौजुदा घर १८ वीं सदी में सैयद फकरुद्दीन हुसैन द्वारा बनवाया गया था। इसने दो स्थान भी कायम किये थे एक तो मुहम्मद पैगम्बर साहब का और दूसरा उनके राजदण्ड का। पहला स्थान खगड़ा से उत्तर और दूसरा उससे दक्षिण है। दूसरे स्थान के पास इस राज-परिवार का कब्रस्तान बना है। यहाँ से दो मील पूरब उसने एक बाजार कायम किया जिसका नाम कुतुबगंज पड़ा। हुसैनबाग नाम से उसने एक कर्बला भी बनवाया। खगड़ा की अधिक प्रसिद्धि यहाँ के मेले के कारण है, जो खगड़ा स्टेट के प्रबन्ध में होता है। यह मेला १८८३ ई० में नवाब अता हुसैन खाँ ने लगाना शुरू किया था। इस मेले में हाथी, घोड़े, ऊँट वगैरह भी बिकते हैं और पचास हजार से लेकर एक लाख तक आदमी जमा होते हैं।

खगड़ा स्टेट के इतिहास से मालूम होता है कि इस स्टेट का संस्थापक सैयद खाँ दस्तूर था जिसने शेरशाह के विरुद्ध लड़ाई में बादशाह हुमायूँ की सहायता की थी। इसी सहायता के पुरस्कार स्वरूप हुमायूँ ने इसे १५४५ ई० में सूर्यपुर की जमींदारी देने की सनद प्रदान की थी और कानूनगो की उपाधि भी दी थी। यह भूभाग पहले एक हिन्दू राजा शुकदेव के हाथ में था। यहाँ भोटिया लोग भरे थे। सैयद खाँ दस्तूर बड़ी कठिनाई के बाद सूर्य्यपुर का एक हिस्सा दखल कर सका था। इसने पीछे फारस के सैयद राय खाँ और उसके भाइयों को बुलाकर इस परगने में बसाया। इन लोगों पर भोटिया लोगों ने बार बार हमला किया, लेकिन अन्त में इन लोगों ने भोटिया लोगों को भगा दिया और उनको हल्दीवारी (अब जलपाईगुड़ी जिले में)

तक पीछा किया। वहाँ राय खाँ ने एक किला भी बनवाया। राय खाँ ने सैयद खाँ दस्तूर की इकलौटी बेटी से विवाह कर उसकी सारी सम्पत्ति प्राप्त की, इसका लड़का सैयद मोहम्मद जलालुद्दीन खाँ ने भी अपना अधिकांश जीवन भोटिया तथा दूसरी पहाड़ी जातियों से लड़ने में बिताया। कहते हैं उन्ही से रक्षा पाने के लिये इसने जलालगढ़ का किला बनवाया। बादशाह जहाँगीर ने इसे राजा की पदवी दी थी। इसके बाद इसका लड़का सैयद रजा राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। इसे भी भोटियों से लड़ना पड़ा। १६३३ ई० में इसे कहलगाँव परगने का तप्पा बरबन मिला। इसने वहाँ के लुटेरों को दबाया जिससे इसे राजा की उपाधि मिली। इसके बाद कई राजे हुऐ जिनके समय में कोई उल्लेख योग्य घटना नहीं हुई। पीछे इस स्टेट के मालिक सैयद मुहम्मद जलील ने पूरनिया के नवाब सौतालजंग को कर देने से इन्कार किया तो सौतालजंग ने लड़कर उसका स्टेट और किला जलालगढ़ ले लिया। स्टेट पीछे उसके लड़के को लौटा दिया गया। अंगरेजी राज्य के आरम्भ में बड़ा लड़का सैयद फक्रुद्दीन इस राज्य का मालिक था। इसने खगड़ा में एक महल और असुरगढ़ में एक छोटा सा किला बनवाया। इसको दो लड़के थे—अकबर हुसैन और दीदार हुसैन। अकबर हुसैन का परिवार किशुनगंज चला आया और दीदार हुसैन का खगड़ा में ही रहा। सैयद दीदार हुसैन के लड़के सैयद इनायत हुसैन ने अंगरेजों को १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह में और १८६४ के भूटान युद्ध में बड़ी मदद की थी। उसका उत्तराधिकारी सैयद अता हुसैन हुआ जिसने मुर्शिदाबाद के नवाब की लड़की से शादी की। १८८७ ई० में इसे नवाब की पदवी मिली। १८९२ में वह दो नाबालिग लड़कों को छोड़ कर मर गया। इसी के वंशज इस समय स्टेट के मालिक हैं।

गोआल पोखर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३७,१३९ है। इसमें ३२,८६० मुसलमान और ४,२७९ हिन्दू हैं।

चपरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५६,४१९ है। इस में ४०,१२८ मुसलमान, १५,३७४ हिन्दू, ८९० आदिम जाति के लोग और २७ इसाई हैं।

ठाकुरगंज—जिले के बिलकुल उत्तर बूढ़ी गंगा के किनारे यह एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस है। कहते हैं कि महाभारत के प्रसिद्ध राजा विराट की यहीं राजधानी थी। बनवास के समय पांडवों ने यहीं आश्रय पाया था। कोशी नदी के पूरब रंगपुर और दिनाजपुर तक विराट का राज्य बताया जाता है। यहाँ कुछ लिखा हुआ पत्थर जमीन के नीचे मिला था, जिसे लोग विराट के महल का भाग्नावशेष बताते थे। कुछ लोग भागलपुर जिले के बराँटपुर को भी विराट का स्थान बताते हैं। चम्पारण में भी पाण्डवों के अज्ञातवास का स्थान बताया जाता है। कुछ इतिहासकार मथुरा या जयपुर के पास विराट राजा की राजधानी बताते हैं। ठाकुरगंज थाने की जनसंख्या ६९,६६४ है। यहाँ ३८, ४०४ मुसलमान, ३०,०८९ हिन्दू, ७५७ आदिम जाति ४१० ईसाई और ४ अन्य जाति के लोग हैं।

तेरहागाछ—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३४,९९२ है। इसमें १७,९१९ हिन्दू और १७,०७३ मुसलमान हैं।

दिघालबंक—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३६,२९६ है। इसमें १९,९४७ मुसलमान, १६,३२२ हिंदू और २७ आदिम जाति के लोग हैं।

धरमपुर स्टेट—यह स्टेट बाबू पृथ्वीचन्द लाल चौधरी का है। इनके दादा नकछेद लाल चौधरी ने इसे हासिल किया था। बाबू नकछेद लाल के लड़के बाबू धरमचन्द लाल चौधरी ने इसे बढ़ाया। यह स्टेट इन्हीं के नाम पर मशहूर हुआ।

बरिजानगढ़—बहादुरगंज से ५ मील दक्षिण यह एक टूटा-फूटा पुराना किला है। इसके भीतर एक पुराना पोखर है, जो डाक पोखर कहलाता है। यह किला असुर के भाई बरिजान का बनवाया हुआ बताया जाता है। असुरगढ़ के वर्णन में असुर का जिक्र हो चुका है।

बहादुरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,२६,९१२ है। इसमें ९३,६८० मुसलमान और ३३,२३२ हिन्दू हैं।

बेणुगढ़—बहादुरगंज से ८ मील पच्छिम यह एक टूटा-फूटा पुराना किला है। किले की दीवाल करीब एक एकड़ जमीन को घेरती है। यह असुर के भाई राजा बेणु का बनवाया बताया जाता है। असुर का जिक्र असुरगढ़ के वर्णन में आया है।

मामूभगिना गेल—सूर्यपुर परगने के दक्षिण यह एक पुराना बाँध है। जो दिनाजपुर जिले के नेकमर्द स्थान से आया है। कहते हैं कि अंगोरबासा ग्राम की रहनेवाली एक युवती से विवाह करने के लिये दो प्रतिद्वन्द्वी मामू-भगिना ने इसे बनवाया था। महानंदा नदी के बायें किनारे पर तिलैया और सोनापुर के बीच जहाँ-तहाँ टूटा-फूटा बाँध मिलता है। उसे भी लोग मामू भगिना गेल नाम से ही पुकारते हैं और उसके संबंध में भी ऐसी ही कुछ कहानी है।

पूर्णिया जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की क्रमानुसार जनसंख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	१,३४,९३४	जोलाहा	१६,७८६
मुसहर	१,१३,५५४	कुम्हार	१३,३५५
ताँती	६२,५८२	कुरमी	१२,७७४
राजपूत	५५,१०६	कहार	९,२७७
दुसाध	५१,६५३	धोबी	९,२४०
संथाल	४६,९९५	कायस्थ	९,०४६
धानुक	४२,२५५	काँदु	६,१९३
केवट	३६,८५४	माली	५,५९०
तेली	३५,३२३	मुंडा	४,८१८
ब्राह्मण	३४,९४०	डोम	४,४४६
हारी	३०,६५०	भूमिहार ब्राह्मण	३,६९३
चमार	२६,१७३	नट	२,९७४
कोयरी	२४,६९४	तूरी	२,९५७
बरही	२२,४५०	चौपल	२,७३७
बनिया	२०,६७५	मल्लाह	२,४०२
हजाम	१९,०८४	कंजर	२,२१५
ओराँव	१८,११५	भुइयाँ	८३५
कमार	१७,३२६	कुररियार	६३१

संथाल परगना

स्थिति, सीमा और विस्तार

संथाल परगना जिला भागलपुर कमिश्नरी के दक्षिण-पूरब का भाग है जो २३° ४०' और २५° १८ उत्तरीय अक्षांश तथा ८६° २८' और ८७° ५७' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका सदर आफिस दुमका है।

इस जिले के उत्तर में भागलपुर और पूर्णिया के जिले, पूरब में मालदह, मुर्शिदाबाद और वीरभूम के जिले, दक्षिण में बर्दवान और मानभूम के जिले तथा पच्छिम में हजारीबाग, मुँगेर और भागलपुर के जिले हैं। उत्तर और पूरब में कुछ दूर तक गंगा नदी सीमा का काम करती हुई संथाल परगने को पूर्णिया और मालदह से अलग करती है। इसी तरह दक्षिण में कुछ दूर तक बराकर और अजय नदी सीमा का काम कर इस जिले को मानभूम और बर्दवान से अलग करती हैं।

उत्तर-पूरब कोने में गंगा नदी से लेकर दक्षिण-पच्छिम कोने में बराकर नदी तक इसकी सबसे अधिक लम्बाई १२० मील है। इसका क्षेत्रफल ५,४५८ वर्गमील है। यह भागलपुर कमिश्नरी का सबसे बड़ा जिला है।

प्राकृतिक बनावट

यह जिला मोटे तौर पर तीन प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है—पहाड़ी भाग, ऊँची-नीची भूमि और नीची भूमि। पहाड़ी भाग उत्तर में साहेबगंज के पास गंगा नदी से लेकर जिले की दक्षिणी सीमा तक करीब १०० मील की लम्बाई में फैला हुआ है। समूचा दामिन-इ-कोह और दुमका सबडिविजन का पूर्वी तथा दक्षिणी भाग इसके अन्दर है। पहाड़ के बहुत-से हिस्सों में अब भी जंगल भरे हुए हैं। पहाड़ की घाटियों में जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी बस्तियाँ हैं। ऊँची-नीची भूमि के अन्दर जिले का सारा पच्छिमी और दक्षिण-पच्छिमी भाग है। इसमें जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, पथरीली भूमि और जंगल हैं। जिले का तीसरा भाग राजमहल पहाड़ी और गंगा के बीच की नीची भूमि है। यह पतला और लम्बा भाग १२० मील तक चला गया है। इसका रकबा करीब ५०० वर्गमील है।

पर्वतमालाएँ— जिले की पर्वतमालाओं में राजमहल की पर्वतमाला मुख्य है जो उत्तर में गंगा नदी से लेकर जिले की दक्षिण-पूरब सीमा के पास रामपुर हाट तक गयी है। इस पर्वतमाला के बीच-बीच में घाटियाँ और अधित्यकाएँ हैं। पर्वतमाला की ऊँचाई साधारण तौर पर समुद्र-तल से ५०० से ८०० फीट तक है। कुछ चोटियाँ १५०० से २,००० फीट तक भी ऊची हैं। सबसे ऊँची चोटी मोरी और सेंदगरसा है और सबसे बड़ी घाटी बुरहैत। इस पर्वतमाला से कई छोटी-छोटी नदियाँ निकली हैं। मालूम पड़ता है, किसी समय राजमहल की पहाड़ी ज्वालामुखी पहाड़ी थी।

दुमका सबडिविजन के दक्षिण-पूरब में ब्राह्मणी नदी के दक्षिण एक छोटी पर्वतमाला है जो रामगढ़ पहाड़ी कहाती है। यह राजमहल-पर्वतमाला का ही बढ़ा हुआ भाग है। रामगढ़ पहाड़ी से पच्छिम समानान्तर में दो और पर्वतमालाएँ हैं। इस सबडिविजन की अन्य पहाड़ियों में सपचला पहाड़ी, लगबा पहाड़ी और मिकरा पहाड़ी मुख्य हैं। देवघर सबडिविजन में पर्वतमाला नहीं है, पर जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। इन पहाड़ियों में फुलभड़ी, देगरिया, पथरडा, त्रिकूट (तियूर), जलवे, बेलमी, पबांय और मकरो प्रधान हैं। जामतारा सबडिविजन में घाटो और मलचा मुख्य पहाड़ी हैं। मलचा पहाड़ी पर सरकार की ओर से त्रिकोणमिति-माप-स्तम्भ (Government Trigonometrical Servey Piller) कायम किया गया है।

जल-प्रपात—जिले का सबसे सुन्दर जल-प्रपात मोती झरना है। यह राजमहल पहाड़ी में महाराजपुर रेलवे स्टेशन से दो मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक पहाड़ी नदी से दो स्थानों पर—एक स्थान पर ५० फीट और दूसरे स्थान पर ६० फीट की ऊँचाई से, पानी गिरता है। सिंघपुर में ब्राह्मणी नदी से और कुसमीरा गाँव के पास बंसलोई नदी से जल-प्रपात बनते हैं। पहले स्थान में १० फीट की ऊँचाई से पानी गिरता है और दूसरे स्थान पर १२ फीट की ऊँचाई से।

झरना— पाकुर और दुमका सबडिविजन में बहुत-से गर्म जल के झरने हैं। पाकुर सबडिविजन का सबसे गर्म झरना लौलौदह है। यह महेशपुर थाने के शिवपुर गाँव के पास बोरू नदी के किनारे है। इसी थाने में बरकी गाँव के पास एक दूसरा गर्म झरना है जो बरहमसिया कहलाता है। संथाल लोग इसे भुभुक कहते हैं।

दुःमका सबडिविजन में ६ गर्म झरने हैं— (१) गोपी कन्दर के पास झरिया पानी, (२) पलासी के पास भुरभुरी नदी के किनारे तातलोई, (३) केन्दघाट के नजदीक ननबिल, (४) कुमराबाद के निकट मोर नदी के किनारे तापत पानी, (५) बाघमारा गाँव के पास मोर नदी के ही दूसरे किनारे पर सुसुम पानी और (६) रानी बहल के समीप इसी नदी पर भुभका। नुनीहाट के नजदीक पातालगंगा भी एक मुख्य झरना है। इन झरनों को हिन्दू और आदिम जाति के लोग धार्मिक दृष्टि से पवित्र समझते हैं।

जंगल—इस जिले के अन्दर बहुत-से स्थानों में जंगल पाये जाते हैं। सरकारी जंगल खास महाल दामिन-इ-कोह में है। दामिन-इ-कोह की खेती योग्य सभी जमीन जोती-बोयी जाने लगी है। इसलिये, जंगल केवल पहाड़ और पहाड़ी जगहों में ही रह गये हैं। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर ३१,४२९ एकड़ सरकारी रिजर्व्ड फारेस्ट और २,४७,०४५ एकड़ प्रोटेक्टेड फारेस्ट थे।

नदियाँ

यह जिला साधारण तौर पर उत्तर-पच्छिम से दक्षिण-पूरब की ओर ढालू है। लेकिन, राजमहल पहाड़ी और भागलपुर जिले की सीमा के बीच का भाग उत्तर-पच्छिम की ओर ही ढालवाँ है; इसलिये यहाँ का पानी उसी ओर गंगा में मिलता है। गंगा के सिवा जिले की सभी नदियाँ पहाड़ी नदियाँ हैं और इनमें गर्मी के दिनों में बहुत थोड़ा पानी रह जाता है। जिले की मुख्य नदियाँ ये हैं :—

गंगा— गंगा इस जिले को पहले पहल तेलिया गढ़ी से कुछ पच्छिम छूती है और सकरीगली तक पूरब की ओर बह-कर दक्षिण-पूरब की ओर मुड़ जाती है। उधुआ नाला से कुछ आगे बढ़ने पर यह इस जिले को छोड़ देती है। गंगा की औसत चौड़ाई करीब तीन मील है।

गुमानी— जिले के उत्तर में सबसे मुख्य नदी गुमानी है। यह गोड्डा सबडिविजन के बिलकुल पूरब राजमहल पहाड़ी से निकलकर उत्तर-पूरब को ओर बहती है। बरहैत के पास मोरल नदी उत्तर को ओर से आकर इससे मिल गयी है। यहाँ से यह नदी दक्षिण और पूरब की ओर बहती हुई जिले के बाहर गंगा में मिलती है।

बंसलोई—यह नदी गोड्डा सबडिविजन के बाँस पहाड़ से निकलती है और पूरब की ओर बहकर दुमका सबडिविजन की उत्तरी सीमा का काम करती है। महेशपुर के पास यह जिले को छोड़कर भागीरथी में मिल जाती है।

ब्राह्मणी— यह नदी दुमका सबडिविजन के उत्तरी भाग में दुधुआ पहाड़ी के पच्छिम से निकलती है और फरसेमुल तथा सँकरा होकर बहती हुई दुमका-दामिन की दक्षिणी सीमा का काम करती है। दारिन मौलेश्वर के पास यह इस जिले को छोड़कर वीरभूम जिले में भागीरथी से मिल जाती है। गुमरो और एरो इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

मोर—यह नदी देवघर सबडिविजन के तियूर (त्रिकूट) पहाड़ से निकली है। यह उत्तर-पच्छिम कोने पर दुमका सब-डिविजन में प्रवेश कर दुमका और कुमराबाद होती हुई दक्षिण-पूरब की ओर बहती है। अमजोरा के पास यह इस सबडिविजन को छोड़कर वीरभूम जिले में घुसती है और अन्त में भागीरथी

से मिल जाती है। प्रारम्भ में कुछ दूर तक इसका नाम मोतीहारी है, लेकिन भुरभुरी नदी से मिलने के बाद इसका नाम मोर हो गया है। इसका दूसरा नाम मोराखी या मयुराची है। इसका जल मयूर की आँखों के समान स्वच्छ समझा जाता है।

मोर की कई सहायक नदियाँ हैं। भुरभुरी नदी दुधुआ पहाड़ी के पूरब से निकलकर नवादा में मोर से मिलती है। धोवै नदी गोड्डा सबडिविजन से निकलकर भागलपुर-सूरी सड़क को पार करती हुई भुरभुरी-संगम के कुछ दूर पहले ही मोर से मिल जाती है। तिपरा नदी पच्छिम से आकर फुलजोरी के पास मोर से मिलती है। पुसरो नदी धुरिया तालुका में और भमरी नदी बेलुदबर में मोर से मिलती है। ननबिल नदी देवघर सबडिविजन से निकलकर दुमका सबडिविजन होकर बहती हुई जामतारा सबडिविजन में सिद्ध नदी से मिल जाती है। सिद्ध नदी भी देवघर सबडिविजन से ही निकलती है और दक्षिण-पूरब तथा पूरब की ओर बहकर जामतारा और दुमका सबडिविजन होकर वीरभूम की सीमा के पास मोर से मिल जाती है। दौना नदी सँकरा तालुका से निकलकर रामपुर हाट सड़क और सूरी सड़क को पार करती हुई मोर से मिलती है।

अजय—अजय नदी मुँगेर जिले से आकर देवघर सबडिविजन के मध्य भाग होकर बहती है। रास्ते में पथरो और जयन्ती नदी हजारीबाग जिले से आकर इसके दाहिने किनारे पर इससे मिली हैं। कजरा के पास अजय जामतारा सबडिविजन में प्रवेश करती है और दक्षिण की ओर बहकर बर्दवान जिले में प्रवेश कर जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

संथाल परगने में राजमहल पहाड़ी से पूरब की भूमि बंगाल की भूमि की तरह सर्द रहती है। देवघर से राजमहल तक का भाग विहार के अन्य भागों की तरह गर्म है। सब मिलाकर जिले के अन्दर गर्मी के दिनों में तापमान छायादार स्थानों में १२०° तक जाता है। दुमका में जाड़े के दिनों में औसत तापमान ६४° रहता है। कभी-कभी यहाँ इतना जाड़ा पड़ता है कि रात में बाहर रखे हुए पानी का बहुत-सा अंश बर्फ बन जाता है। गर्मी के दिनों में यहाँ का तापमान १००° तक जाता है। जिले के अन्दर साल में वर्षा लगभग ५० से ५५ इंच तक होती है।

मलेरिया, बरसात के दिनों में गंगा के किनारे नीची भूमि में और गोड्डा तथा पाकुर सबडिविजन के अन्दर दामिन-इ-कोह के हिस्से में अधिक होती है। गर्मी के दिनों में राजमहल और गोड्डा सबडिविजन के अन्दर तथा देवघर में हैजे की शिकायत अधिक रहती है। चेचक की शिकायत हर जगह है। इस जिले में प्लेग पहले पहल १९०१ ई० में साहेबगंज में हुआ था। जिले के अन्दर प्रमुख स्थानों में सरकारी अस्पताल हैं।

देवघर में एक राजकुमारी-कुष्टाश्रम है जिसे १८९५ ई० में डा० महेन्द्र लाल सरकार ने अपनी स्त्री के नाम पर कायम किया था। स्वास्थ्य और सफाई के ख्याल से देवघर के यात्रियों के निवासगृह के सम्बन्ध में कानून बने हुए हैं। कोई निवासगृह डाक्टर की सिफारिश पर लाइसेन्स लेने पर ही खोला जा सकता है। यहाँ की सफाई की देखभाल के लिये डाक्टर नियुक्त रहते हैं।

सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस जिले के अन्दर कोढ़ियों की संख्या २,०५६, अंधों की संख्या १,९६८, बहरे-गूँगों की संख्या ११०० और पागलों की संख्या ३०२ है। कोढ़ियों की अधिक संख्या यहाँ के कुष्टाश्रम के कारण भी है, जिसमें दूसरे जिले के कोढ़ी भी रहते हैं।

जानवर

संथाल परगने में जंगलों की अधिकता से मवेशियों के लिये चारे की कमी नहीं रहती। यहाँ के मवेशियों की हालत साधारणतः अच्छी है। दुमका में जानवरों का अस्पताल है। सरकारी डाक्टर घूम-घूमकर भी जानवरों का इलाज करते हैं। पहले इस जिले में बाघ, चीते, भालू, हरिण, जंगली हाथी, जंगली सूअर वगैरह हर जगह पाये जाते थे; लेकिन अब जंगलों में भी बहुत कम मिलते हैं। १८९३ ई० में यहाँ एक जंगली हाथी मारा गया था। उसके बाद फिर कोई जंगली हाथी यहाँ दिखायी नहीं पड़ा।

संथाल लोग जंगली जानवरों का शिकार खूब करते हैं। कभी-कभी तो वे सौ-पचास का दल बाँधकर शिकार के लिये निकलते हैं और लगातार कई दिनों तक शिकार करते रहते हैं। जंगलों में बाघ तो अब बहुत कम पाये जाते हैं, लेकिन चीते सब जगह मिलते हैं। भालू अधिकतर ऊँची पहाड़ी पर रहते हैं। हरिण कोरचो आदि पहाड़ियों पर थोड़े बहुत पाये जाते हैं। जंगली सूअर भी कम मिलते हैं। संथाली लोग सूअर का मांस बहुत पसन्द करते हैं, इसलिये ये जहाँ कहीं सूअर को देखते हैं उसको मारकर ही दम लेते हैं।

इतिहास

प्रस्तर-युग—संथाल परगने में प्रस्तर युग की बहुत-सी चीजें मिली हैं, जैसे कुल्हाड़ी, हथौड़ा, तीर का फल, खेती के औजार आदि। यहाँ कुछ ऐसी चीजें भी मिली हैं जो मलय प्रायद्वीप, इरावदी की घाटी और छोटानागपुर में भी पायी गयी थीं। इन बातों से बहुत-से लोगों का अनुमान है कि मोन या मुंडा लोगों की उत्पत्ति और उपर्युक्त स्थानों के लोगों की उत्पत्ति किसी एक ही जाति से है, या प्राचीन काल में इन लोगों का काफी सम्बन्ध और एक दूसरे के यहाँ आना-जाना था।

पौराणिक युग—इस जिले का अधिकांश भाग प्राचीन काल में अंग राज्य के अधीन था, क्योंकि अंग राज्य का विस्तार पूर्व की ओर राजमहल तक बताया जाता है। राजमहल के पूरब का भाग वंग या प्राग्ज्योतिषपुर के अधीन रहा होगा। भविष्यत्-पुराण के ब्रह्माण्ड-खंड में इस भू-भाग को नरीखंड लिखा है और यहाँ के निवासियों, जंगलों, पहाड़ों, नदियों और खानों का विशद वर्णन दिया है। देवघर सबडिविजन के वैद्यनाथधाम, तपोवन और अनूढ़ेश्वरी (बूढ़ेश्वरी) देवी, दुमका सबडिविजन के वासुकी नाथ, गोड्डा सबडिविजन के सिंहेश्वर नाथ, तथा राजमहल सबडिविजन के गजेश्वरी नाथ आदि शिवलिंग का वर्णन पुराणों में आया है।

ऐतिहासिक युग—यहाँ के सबसे प्राचीन निवासियों में, जिनका कुछ जिक्र इतिहास में पाया जाता है, मलेर या सौरिया पहड़िया हैं। ईसा के ३२० वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त के दरबार में आये हुए ग्रीक विद्वान मेगास्थनीज ने जिस मल्ली जाति का वर्णन किया है, कहते हैं, वह मलेर ही है। दूसरे ग्रीक विद्वानों ने सुआरी जाति का वर्णन लिखा है। कुछ लोग सौरिया पहाड़िया

को ही सुआरी समझते हैं, लेकिन बहुतों का विश्वास है कि सुआरी असल में उड़ीसा के सवर लोग हैं।

इसके बाद ह्वनुच्वाङ् (ह्वेनसन) के वृत्तान्त से ७वीं सदी के मध्य का यहाँ का कुछ हाल जाना जाता है। उसने लिखा है कि चम्पा (भागलपुर) के पूरब क्यू-यू-उ-खी-लो था। जेनरल कनिंघम ने इसे वर्तमान संथाल परगने का भाग बताया है। संथाल परगने को पहले जंगल-तराई या राजमहल जिला भी कहते थे। इसका और भी पुराना नाम कांकजोल था। जिले का यह नाम इस नाम के शहर के कारण पड़ा था जहाँ इसकी राजधानी थी। राजमहल से १८ मील दक्षिण यह शहर अब गाँव के रूप में है। ह्वनुच्वाङ् लिखता है कि पड़ोस के राजा की चढ़ाई से यह शहर उजाड़ पड़ गया था और लोग भागकर गाँवों में बसने लगे थे। वह यह भी लिखता है कि इसकी उत्तरी सीमा पर गंगा के पास ईंट और पत्थर की बनी एक ऊँची मीनार थी। जेनरल कनिंघम ने इस स्थान को तेलियागढ़ी बताया है और इस इमारत को बौद्धकालीन इमारत समझा है, क्योंकि इसके चारों ओर बौद्ध मूर्त्तियाँ थीं। बंगाल के रास्ते पर यह स्थान बहुत पुराने समय से ही एक सैनिक अड्डा रहा है।

मुसलमानी युग—इस जिले के सिलसिलेवार इतिहास का पता मुसलमानी युग से चलता है जब कि तेलियागढ़ी के रास्ते से मुसलमानी सेना बंगाल आने-जाने लगी। यह स्थान बंगाल की कुंजी या सिंहद्वार था। यहाँ कितनी ही लड़ाइयाँ हुईं। बादशाह हुमायूँ के विरुद्ध बलवा करने पर शेरशाह ने १५३८ ई० में इस स्थान पर किला बनवाया था। १५७३ ई० में जब दाऊद खाँ ने सम्राट अकबर की अवहेलना कर अपने को बंगाल का बादशाह घोषित किया तो मुनीम खाँ के अधीन शाही सेना

ने तेलियागढ़ी पर कब्जा कर लिया। कई बार हार खाते रहने पर दाऊद खाँ ने अकबर की अधीनता स्वीकार की; लेकिन १५७५ ई० में मुनीम खाँ के मरने पर वह फिर बलवा कर बैठा। इसपर हुसैन कुली खाँ के अधीन टोडरमल के साथ फिर सेना भेजी गयी। दाऊद खाँ राजमहल में ठहरा और तेलियागढ़ी की रक्षा के लिये ३,००० सेना भेजी। कुछ महीनों तक यह सेना राह रोकती रही, लेकिन अन्त में लड़ाई हुई। दाऊद खाँ का प्रधान सहायक काला पहाड़ जब मारा गया तो अफगान सेना भाग निकली। अन्त में दाऊद खाँ पकड़ा गया और उसका सिर काटकर बादशाह के पास भेज दिया गया। मुगलों की इस विजय से बंगाल पर अफगानों का आधिपत्य जाता रहा और बंगाल मुगल साम्राज्य का एक अधीनस्थ प्रान्त हुआ।

१५९२ ई० में राजमहल बंगाल की राजधानी बनाया गया। करीब आधी शताब्दी पहले शेरशाह ने भी इसे राजधानी बनाना चाहा था, लेकिन सम्राट अकबर के राजप्रतिनिधि मानसिंह के हाथों यह काम पूरा हुआ। यहाँ उसने किले और महल बनवाये। राजमहल का पहला नाम आगमहल था। मानसिंह ने इसका नाम बदलकर राजमहल किया। मुसलमान इसे 'अकबर नगर' कहते थे। १६०८ ई० में नवाब इस्लाम खाँ ने यहाँ से हटाकर ढाका में राजधानी बनायी।

जब शाहजहाँ ने अपने पिता जहाँगीर के विरुद्ध बलवा करके बंगाल पर चढ़ाई की तो बंगाल का सूबेदार इब्राहीम खाँ, जो नूरजहाँ का भाई और शाहजहाँ का मामू था, ढाका से राजमहल की ओर बढ़ा। तेलियागढ़ी में दोनों में घमासान युद्ध हुआ जिसमें शाहजहाँ की जीत हुई, पीछे वही दिल्ली का बादशाह हुआ। १६३९ ई० में शाहजहाँ का दूसरा लड़का शाहशुजा जब

बंगाल का सूबेदार हुआ तो राजमहल फिर इस प्रान्त की राजधानी बनाया गया। उसने किले और महल की मरम्मत करायी और शहर की सजावट के लिये बहुत रुपये खर्च किये। दूसरे ही साल गंगा की बाढ़ ने शहर को तहस-नहस कर डाला। तब भी १६६० तक राजमहल में राजधानी बनी रही। शाहशुजा ने अपने पिता की मृत्यु के बाद जब दिल्ली की गद्दी पर अपने भाई औरंगजेब को कब्जा करते देखा तो वह सेना लेकर दिल्ली की ओर बढ़ा, पर रास्ते में ही हार खाकर राजमहल लौट आया। यहाँ उसने तेलियागढ़ी और सकरी गली के किले की मरम्मत करायी। लेकिन, शाही सेना ने उसका पीछा कर इन दोनों किलों पर दखल करती हुई राजमहल पर भी चढ़ाई कर दी। मीर जुमला ने पहाड़ी रास्ते से पहुँचकर दूसरी ओर से भी राजमहल पर आक्रमण किया। शाहशुजा ६ रोज तक शाही सेना का मुकाबला करता रहा, पीछे टन्डाह भाग गया। बरसात शुरू हो जाने पर मीर जुमला को राजमहल में चार महीने तक रह जाना पड़ा। अन्त में उसने शाहशुजा पर आक्रमण कर उसे पूरी तरह हराया। इसके बाद राजधानी राजमहल से ढाका हटा ली गयी। राजमहल में सिर्फ एक फौजदार रखा गया। हाँ, सिक्का ढालने का काम कुछ और दिनों तक यहीं होता रहा। बंगाल के नवाबों के लिये यहाँ की पहाड़ी पर बर्फ भी बनती थी।

अँगरेजों का आगमन—राजमहल व्यापार का एक मुख्य केन्द्र था। इसलिये, जब अँगरेज इस देश में आये तो उन्होंने यहाँ अपना व्यापार जमाना चाहा। शाहशुजा के वक्त में एक अँगरेज डाक्टर बाउटन यहाँ रहता था। कहते हैं कि उसने शाही घराने की एक स्त्री को एक कठिन रोग से आराम किया था,

इसलिये वह नवाब का बहुत प्रिय हो गया था। इसके कारण यहाँ अँगरेजों को व्यापार करने में आसानी हुई। १६७६ ई० में अँगरेजों ने राजमहल में एक एजेन्सी कायम की और अपने काम के लिये यहीं के टकसाल में रुपये ढलवाने लगे। उन दिनों लोग सोना, चाँदी देकर सरकारी टकसाल में रुपये ढलवा लेते थे।

१६९६ ई० में सूबा सिंह और उड़ीसा के कुछ अफगानों ने विद्रोह मचाकर राजमहल को दखल कर लिया और अँगरेजों की सब सम्पत्ति छीन ली। दूसरे साल नवाब इब्राहीम खाँ ने अपने बेटे के अधीन सेना भेजकर राजमहल पर फिर अधिकार जमाया; पर अँगरेजों की सम्पत्ति नहीं लौटायी। इसके बाद जब औरंगजेब ने सारे हिन्दुस्तान में यूरोपियनों की गिरफ्तारी का हुक्म निकाला, तो १७०२ ई० में यहाँ भी अँगरेज सारी सम्पत्ति के साथ गिरफ्तार किये गये। औरंगजेब के मरने के बाद नवाब अजीम-उस-शान जब अपने पिता शाहआलम (बहादुर शाह) को गद्दी पाने में मदद देने गया, तो वह अपने लड़के फरुकसियर, घर की कुछ औरतों तथा खजाने को राजमहल में ही छोड़ता गया। जब अजीम-उस-शान लौटकर फिर राजमहल पहुँचा, तो अँगरेजों ने उसके पास १५,०००) रुपये और तीन आइने उपहार के तौर पर भेजकर बंगाल में बिना कर दिये व्यापार करने की इजाजत माँगी। लेकिन, इतने पर इजाजत देना कबूल नहीं किया गया। दूसरे साल जब शेर बुलन्द खाँ नवाब होकर आया, तो इसने ४५,००० रुपये पर अँगरेजों को बंगाल में बिना कर दिये व्यापार करने की आज्ञा दी। १७१० ई० में फरुकसियर अपने पिता का प्रतिनिधि बनकर राजमहल पहुँचा था। दूसरे साल इज्जुद्दौला नायब नवाब बनाकर यहाँ भेजा गया। १७१२ ई० में जब

हूल के नाम से जानते हैं। कहते हैं कि संथाली लोग इस जिले के आदि निवासी नहीं हैं। ये लोग इस जिले में सन् १७९० से १८१० ई० के बीच वीरभूम, सिंहभूम आदि जिलों से आये। इन लोगों ने जंगल काटकर यहाँ की जमीन आबाद की, इसलिये इन्होंने समझा कि इस जमीन पर पूरा अधिकार इन्हीं का होना चाहिये, जमींदार या सरकार का नहीं। उधर जमींदार, महाजन और सरकारी अफसर उनपर अत्याचार कर रहे थे। इस कारण ये उभड़ पड़े। बहुत दिनों तक चारों ओर भीषण उपद्रव रहा। अन्त में सैनिक लोग बहुत बड़ी संख्या में पहुँचे और संथालों को दबाया।

जिले का निर्माण—संथाली विद्रोह के फलस्वरूप १८८५ ई० में ऐक्ट न० ३७ पास हुआ, जिसके अनुसार दामिन-इ-कोह और वह भाग जहाँ संथाल लोग रहते थे, भागलपुर और वीरभूम जिले से अलग कर संथाल परगने के नाम से एक अलग जिला कायम किया गया। यह एक नन-रेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट हुआ और यहाँ का शासन और जिलों से कुछ भिन्न तरीके पर चलाया जाने लगा।

सिपाही-विद्रोह—१८५७ के सिपाही-विद्रोह के समय इस जिले में भी कुछ उपद्रव मचा था। रोहिनी के तीन सिपाहियों ने तीन अँगरेज अफसरों पर हमला किया था, जिनमें एक मारा भी गया। देवघर के सैनिकों ने अपने अफसर लेफ्टिनेन्ट कूपर और असिस्टेन्ट कमिश्नर रौलेण्ड को मार डाला। पीछे पूरे दमन के साथ विद्रोह शान्त किया गया।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में संथाल परगने की जनसंख्या १५,६४, ६६० थी। सन् १९३१ में आकर यह २०,५१,४७२ हुई। इस तरह पिछले पचास वर्षों में यहाँ ४,८६,७८२ आदमी अर्थात् प्रति सैकड़े ३१ आदमी बढ़े। वर्तमान जनसंख्या में १०,२५,९२१ पुरुष और १०,२५,५५१ स्त्रियाँ हैं। इस जिले में एक वर्ग मील के अन्दर औसतन ३७६ आदमी रहते हैं। गोड्डा सबडिविजन में एक वर्गमील में ४५६, राजमहल सबडिविजन में ४१३, पाकुर सबडिविजन में ३९४, देवघर सबडिविजन में ३६४, जामतारा सबडिविजन में ३५२ और दुमका सबडिविजन में ३१९ आदमी हैं। जिले के अन्दर गाँवों की संख्या १०,१६० और शहरों की संख्या ५ है। यहाँ के अधिकांश गाँव बहुत छोटे-छोटे होते हैं। शहरों के अन्दर साहेबगंज, देवघर, दुमका, मधुपुर और राजमहल की गिनती है। इन शहरों की कुल आबादी ५२,२२१ है। कमाने या बसने के लिये पूरब जाने की प्रवृत्ति संथाली लोगों में बहुत है; इसलिये इस जिले से बाहर गये हुए लोगों की संख्या अधिक रहती है। सन् १९३१ में इसकी गणना नहीं हुई थी। सन १९२१ में इस जिले से बाहर गये हुए लोगों की संख्या २,९७,९१३ और बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ७९,२२६ थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में हिन्दुस्तानी भाषा बोलनेवालों की संख्या ९,४२,७७७ है जो कुल जनसंख्या का फी सैकड़े ४६ है। यहाँ हिन्दुस्तानी भाषा की बोली छीकाछीकी है। इसपर जिले में पच्छिम की ओर मगही का और पूरब की ओर बँगला का प्रभाव पड़ा है। जिले में बँगला बोलनेवालों की संख्या २,५२,२०३ है जो कुल जनसंख्या का सैकड़े १२ है। यहाँ की बँगला बोली के दो भेद हैं—राढ़ी और माल-पहड़िया। यहाँ

अन्य भारतीय आर्य भाषाओं में १,६४१ आदमी मारवाड़ी, १११ पंजाबी, १०४ उड़िया, ८२ नेपाली, २४ गुजराती तथा २ अन्य भाषाएँ बोलनेवाले हैं। मुंडा भाषाओं में संथाली इस जिले की एक मुख्य बोली है जिसे ७,६१,६८८ आदमी अर्थात् जिले की कुल आबादी के सैंकड़े ३७ आदमी बोलते हैं। अन्य मुंडा भाषाओं में ८,११४ व्यक्ति कारमाली, ६,२४८ माहिली, १,३०९ कोरा और ४८७ मुंडारी बोलनेवाले हैं। द्राविड़ भाषाओं में ६७,०५२ व्यक्ति माल्टो और ५,७६२ ओराँव (कुरुख) बोलते हैं। अन्य भाषाओं में अँगरेजी बोलनेवाले ५०५, दूसरी यूरोपीय भाषाएँ बोलनेवाले ४४, पश्तो बोलनेवाले १३ और भारतीय भिन्न एशियाई भाषाएँ बोलनेवाले ५ हैं।

संथाल परगने में भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बियों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	९, ४६, १६८	ईसाई	१३,३४६
आदिमजाति	८, ६५, १२८	सिक्ख	७३
मुसलमान	२, २३, ७०२	जैन	२५

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से हिन्दू फी सैकड़े ४७, आदिम जाति ४२ और मुसलमान ११ हैं। हिन्दुओं में सबसे अधिक जोलाहा हैं जो सवा लाख से कुछ अधिक हैं। ग्वालों की संख्या भी करीब सवा लाख है। तेली करीब ५५ हजार और शेष दूसरी जातियाँ इससे कम हैं। मुसलमानों में अधिकांश लोग नीची श्रेणी की हिन्दू जाति या आदिम जाति से मतपरिवर्त्तन द्वारा बने हुए मुसलमान हैं। इनका रहन-सहन और रीति-रिवाज हिन्दू या आदिम जाति से इतना मिलता-जुलता है कि उन लोगों के बीच ये मुश्किल से पहचाने जाते हैं। ईसाइयों

की संख्या जिले में दिनों-दिन बहुत बढ़ रही है। १८७२ ई० में यहाँ केवल ३९२ ईसाई थे, १८८१ ई० में ३,०५६ हुए। इधर पचास वर्षों में संख्या बहुत ही बढ़ी और १९३१ ई० में ये १३,३४६ हो गये। इनमें ३२९ यूरोपियन आदि और २०४ एंग्लो-इण्डियन हैं। जिले में ईसाई मिशनरियों के दर्जनों अड्डे हैं, जिनके कायम किये हुए बहुत-से स्कूल और दवाखाने हैं।

हिन्दू और आदिम जातियों में ठीक-ठीक फर्क बताना मुश्किल है, क्योंकि आदिम जातियों में बहुत-से लोग अपने को हिन्दू बताते हैं और बहुत-से नहीं भी। वास्तव में व्यापक अर्थ में ये हिन्दू ही हैं। ये लोग अधिकतर जिले के पहाड़ी और जंगली भागों में रहते हैं। इस जिले के सबसे पुराने निवासी पहाड़िया समझे जाते हैं। इनकी दो शाखाएँ हैं। पहली शाखा मलेर लोगों की है जो माल पहाड़िया या सौरिया पहाड़िया भी कहलाते हैं। ये लोग राजमहल पहाड़ी के उत्तर भाग में पाये जाते हैं। दूसरी शाखा माल पहाड़िया लोगों की है जो राजमहल पहाड़ी के दक्षिण भाग में तथा जिले के दक्षिण और पच्छिम हिस्से के जंगली और पहाड़ी भागों में पाये जाते हैं। संथाल लोग मलेर को मुंडा और हिन्दू लोग पहाड़िया कहते हैं। इनका कद नाटा, नाक चिपटी तथा बाल बड़े और घुँघराले होते हैं। मलेर लोग मुर्दों को गाड़ते हैं, पर माल पहाड़िया शाखा के लोग जलाते हैं। माल पहाड़िया हिन्दू संस्कृति में आये हुए लोग हैं। इन लोगों ने हिन्दुओं की भाषाएँ भी सीख ली हैं और अपभ्रंश बँगला बोली बोलते हैं। इनमें कुछ लोग अपने को कुमारभाग कहते और जाति के क्षत्रिय बताते हैं। दामिन-इ-कोह से बाहर के लोग अपने को नैया या पुजहर भी कहते हैं। जिले के दूसरे आदि-निवासी भुइयाँ हैं। ये लोग द्राविड़ हैं, पर अब अपने को क्षत्रिय

बताने लगे हैं। खेतौरी भी अपने को क्षत्रिय या खत्री कहते हैं। आदिम जातियों में सबसे अधिक संथाली हैं जो जिले के कुल निवासियों में एक तिहाई से भी अधिक हैं। तीर-धनुष लिये जंगलों और पहाड़ों में शिकार करते फिरना या बंशी बजाते हुए स्वतन्त्रता-पूर्वक विचरण करना इन्हें अधिक पसन्द आता है। ये नाच-गान के भी बड़े प्रेमी होते हैं। आदिम जाति के लोग यहाँ गैर आदिम जाति के लोगों को दिक्कू कहते हैं।

खेती और पैदावार

संथाल परगना जिले का रकबा ३५,१२,६६५ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १७,१५,६०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ३०७,८२० एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,९३,३४५ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। २,७८,३०० एकड़ में जंगल था, ८,१७,६०० एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ५८ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका करीब छठा भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ११ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता। सैकड़े ८ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े २३ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ११ भाग में दो फसलें होती हैं।

संथाल परगने की जमीन मुख्यतः दो प्रकार की है—धानी और बारी। नीची जमीन, जहाँ धान उपजता है, धानी कहलाती है और ऊँची जमीन बारी। जोती-बोयी जानेवाली जमीन करीब बराबर-बराबर ही इन दो हिस्सों में बँटी है। धानी जमीन भी साधारण तौर पर तीन भागों में बाँटी जाती है। नीची सतह की जमीन, जो प्राकृतिक रूप से या बाँध आदि के द्वारा सुरक्षित रहती है और जिसे झरने आदि से बराबर पानी मिला करता है, अव्वल दरजे की धानी जमीन मानी जाती है और इसे अव्वल, बहाल या जोल कहते हैं। इस जमीन में मुख्यतः अगहनी धान की फसल होती है; पर बूट, तीसी, खेसारी तथा दूसरी रब्बी फसल भी कभी-कभी बोयी जाती है।

पहाड़ी के ढालुए स्थान की नीची सतह की धानी जमीन दूसरे दरजे की धानी जमीन समझी जाती है और इसे दोयम, कानाली या सकरत कहते हैं। इस जमीन में अधिकतर भदई धान ही होता है, अगहनी धान बहुत कम क्योंकि वर्षा कम होने पर अगहनी धान के खराब होने का डर रहता है। इसमें गेहूँ, जौ, तीसी, खेसारी, रब्बी आदि फसल तो कभी-कभी ही होती है। तालाब या नदी किनारे पर ऊख की खेती होती है।

पहाड़ी के ढालू स्थान की ऊँची सतह की धानी जमीन तीसरे दरजे के अन्दर आती है और इसे सेम या बाद कहते हैं। इस जमीन में भदई धान होता है।

बारी जमीन भी दो दरजों में बाँटी गयी है। गाँव के पास या नदियों के किनारे की ऊँची जमीन, जिसमें दो फसल होती है, अव्वल बारी जमीन समझी जाती है। इस जमीन में कपास, तम्बाकू, सरसों, रेंड़ी, ऊख, मकई, अरहर आदि कीमती फसल होती है। गाँव से दूर की जमीन, जिसमें एक ही फसल होती

है, दूसरे दरजे की बारी जमीन मानी जाती है और इसे दंगल बारी कहते हैं। इसमें कोदो, कुरथी, मरुआ, तिल, पटुआ वगैरह बोये जाते हैं।

जिले के भिन्न-भिन्न भागों में एक ही तरह की मिट्टी के भिन्न-भिन्न नाम हैं—हिन्दी, बँगला और संथाली के नाम अलग-अलग हैं। भारी और काली मिट्टी को करार कहते हैं। जब इसका रंग कुछ पीला-सा होता है तो इसे इन्तेल, चीतल माटी या संथाली में जेतंग हासा कहते हैं। यह अच्छी मिट्टी नहीं होती। जिले की प्रधान मिट्टी केवाल या काली माटी है। इसे संथाली में हेन्दे हासा कहते हैं। इसमें धान खूब होता है। बिन्डी माटी, दोनलसा, बलथर, बलकसी, बेले, बलसुन्दर, लाल माटी, नूना माटी—ये भिन्न-भिन्न मिट्टियों के नाम हैं। गाँव के पास की जमीन को भीठा या वास्तू और न उपजनेवाली जमीन को ऊसर कहते हैं। नदी किनारे की जमीन को, जिसमें हर साल बालू या मिट्टी पड़ती रहती है, दियारा कहते हैं।

सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले के अन्दर उपजाऊ जमीन में सैकड़े ४२ भाग में रब्बी, ४० भाग में अगहनी और ३० भाग में भदई फसल होती है। उपजाऊ जमीन के आधे से अधिक भाग में धान की खेती होती है। इसमें अधिकतर अगहनी धान होता है। धान के बाद मकई का स्थान है। इसके बाद क्रम से बाजरा, बूट, जौ, अरहर, मरुआ, गेहूँ आदि का। तेलहन में सरसों, तीसी, तिल की खेती अच्छी होती है। यहाँ कुछ रूई भी उपजायी जाती है।

इस जिले में कुल जोत जमीन के सैकड़े १६ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार संथाल परगने के अन्दर हजार आदमियों में ५२६ आदमी कमानेवाले और शेष उनके आश्रित हैं। कमानेवाले ५२६ आदमियों में ४७८ खेती और पशुपालन में, १४ उद्योगधंधों में, १० व्यापार में, २ पंडापुरोहित, डाक्टर वैद्य, वकील-मुखतार, लेखक, शिक्षक आदि के पेशे में, २ गमनागमन अर्थात् डाक, तार, रेल, जहाज, नाव, सड़क, सवारी आदि के कामों में तथा २० दूसरे-दूसरे कामों में लगे हैं। सैकड़े के हिसाब से यहाँ के कमानेवालों में सैकड़े ९१ आदमी खेती का काम करते हैं। खेती के काम में लगे इतने अधिक आदमियों की संख्या चम्पारण जिले को छोड़ विहार के और किसी जिले में नहीं है। और जगहों की तरह यहाँ भी अधिकांश लोग अपने जातीय पेशे में लगे हुए हैं। यहाँ के मुख्य उद्योगधंधों में कोयला, लोहा, पत्थर, चीनी मिट्टी आदि की खान, लाह, सावै तथा तस्सर के काम हैं।

कोयले की खान— जिले के अन्दर कोयले की खान के मुख्य मैदान ये हैं— (१) ब्राह्मणी नदी के किनारे मोसनिया और सलदाहा के बीच ब्राह्मणी मैदान, (२) बंसलोई घाटी के अन्दर पचवारा मैदान, (३) गुमानी घाटी के अन्दर चपरभीठा मैदान और (४) राजमहल पहाड़ी के उत्तरीय भाग में सीमरा के उत्तर और दक्षिण हूरा मैदान। १९०८ ई० में बरगो १, बरगो २ दामनपुर, भलकी, घाटचोर, कटमरकी, सकजमा, सरसाबाद और सुलतानपुर नामक स्थानों में कोयले की खानें चालू थीं। उस समय सबसे अधिक कोयला सुलतानपुर की खान से निकलता था और उसके बाद कटमरकी की खान से।

उस साल सुलतानपुर से ७२ हजार मन और कटमरकी से ४२ हजार मन कोयला निकला था । बाकी खानों से सिर्फ दो-चार हजार मन, बल्कि दो खानों (घाटचोर और सकलमा) से तो सिर्फ कई सौ मन कोयला ही मिला था । मदनकट्ट और पलास्थल में भी कोयले की खानें हैं। संथाल परगने का कोयला बहुत मामूली दरजे का होता है।

पत्थर—ईस्ट इण्डियन रेलवे के लूप लाइन के किनारे पहाड़ से पत्थर काटने का काम बहुतायत से होता है। महाराजपुर और उधुआ नाला इसके लिये प्रसिद्ध स्थान हैं। यह काम धीरे-धीरे दक्षिण की ओर अर्थात् राजमहल से पाकुर की ओर बढ़ रहा है। पत्थर खासकर रेलवे और सड़क बनाने के काम में आता हैं ।

चीनी मिट्टी— १८९२ ई० से ही मंगल घाट में एक प्रकार के पत्थर से चीनी मिट्टी तैयार की जाती है जो बर्तन बनाने के काम के लिये कलकत्ता भेजी जाती है । यह मिट्टी जर्मन या जापानी चीनी मिट्टी से घटिया दरजे की नहीं होती। कटंगी (बसकिया के पास), करनपुर और दोधानी में भी चीनी मिट्टी पायी जाती है जो बुकनी के रूप में बिलकुल उजले रंग की होती है। यह कॉरनिश चीनी मिट्टी से मिलती-जुलती है ।

ईंट की मिट्टी— राजमहल पहाड़ी के पच्छिमी हिस्से में उजले, नीले आदि कई रंग की एक खास तरह की मिट्टी मिलती है जिससे अव्वल दरजे की ईंट बनायी जा सकती है। इसकी बनी हुई ईंट स्टोर-ब्रिज-ईंट के मुकाबले की होती है। यदि इस मिट्टी का पूरा उपयोग किया जाय तो सारे हिन्दुस्तान में स्टोर-ब्रिज-ईंट की जितनी माँग है, उसकी पूर्त्ति इस मिट्टी की ईंट से की जा सकती है।

शीशे के लिये बालू—सन् १६०७-०८ में कहलगाँव के पास गंगा की बालू से शीशा बनाकर देखा गया था तो पता लगा कि इससे गहरे हरे रंग का शीशा बन सकता है जो सस्ते काले रंग के बोतल बनाने के लिये उपयोगी होगा। इस बालू में मैंगनीज नामक धातु मिलाकर भूरापन लिये लाल रंग की बोतल या शीशा तैयार किया जा सकता है। मंगल हाट और पीरपहाड़ में तथा हूरा और चपरभीठा के कोयले की खान के मैदान में एक प्रकार का बलुआही पत्थर मिलता है जिससे शीशा बनाया जा सकता है।

लोहा—कोल जाति के लोग बहुत दिनों से एक तरह के खनिज पदार्थ से लोहा तैयार करने का काम करते आ रहे हैं। इस लोहे से कुल्हाड़ी, छुरी, हल का फाल आदि तैयार किये जाते हैं।

लाह— लाह का कारबार इस जिले में करीब एक शताब्दी से है। कहते हैं, पहले पहल पहड़िया लोगों ने इस कारबार को मानभूम जिले से इस जिले में फैलाया। जब इंगलेण्ड और अमेरिका में लाह की माँग बढ़ी तो १८७० ई० से यहाँ के लाह के कारबार की उन्नति होने लगी। इस समय दुमका, पाकुर आदि कई स्थानों में लाह तैयार करने के कारखाने हैं। लाह के कीड़े अधिकतर पलास और बैर के पेड़ पर पाले जाते हैं। इसकी दो फसल होती है एक वैशाख में, दूसरी आसिन में।

तसर—पहड़िया, संथाल और खेतौरी लोग आसन के पेड़ पर तसर के कीड़े पालते हैं। आसिन महीने में कीड़े पेड़ पर फैलकर एक बड़े अंडे के रूप में कोआ तैयार करते हैं। कोए मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—(१) सरिहन, (२) लंगा, (३) मूगा और (४) फूका। इनमें मूगा सबसे अच्छा समझा जाता है। कोए

बाहर भी भेजे जाते हैं और इस जिले में भी इससे कपड़े तैयार किये जाते हैं।

सूती कपड़ा— मामूली करघे पर सूती कपडे भी इस जिले में काफी तैयार किये जाते हैं, क्योंकि यहाँ के आदिम जाति के लोग यहीं के बने कपड़े अधिक पसन्द करते हैं।

सावै घास—जितनी सावै इस जिले में उपजायी जाती है उतनी बंगाल-विहार के अन्दर किसी जिले मे नहीं उपजायी जाती। राजमहल सबडिविजन के अन्दर हजारों एकड़ में इसकी खेती होती है। इससे रस्सी बनती है और कागज भी तैयार किया जाता है।

अन्य उद्योग-धंधे— और जगहों की तरह पहले नील का कारबार यहाँ भी बहुत था, पर अब नहीं है। महाराजपुर में यूरोपियन तरीके पर ईंट तैयार की जाती है। छोटे-मोटे और भी कई तरह के कारबार यहाँ हैं जैसे गुड़ तैयार करना, सरसों और महुआ वगैरह का तेल तैयार करना आदि।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ ई० में जिले के अन्दर १२ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी ऐक्ट लागू था। इनमें ६ चावल, दाल, आटा और तेल की, १ लाह की और एक पत्थर खरादने की फैक्टरी थी।

व्यापार—इस जिले से मुख्यतः खैहन अन्न, तेलहन, सावै, पत्थर, चपड़ा, रूई, तम्बाकू, तसर, लाह, चीनी मिट्टी आदि बाहर भेजे जाते हैं और कपड़ा, किरासन तेल, नमक, कोयला तथा छोटी-बड़ी तरह-तरह की विदेशी चीजें बाहर से आती हैं। चमड़े का कारबार गोड्डा और पाकुर सबडिविजन में होता है। साहेबगंज व्यापार का मुख्य केन्द्र है। जिले के अन्दर बहुत-से स्थानों में मेले और हाट लगते हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—संथाल परगने के उत्तर-पूरब भाग में ई० आई० आर० की लूप लाइन और दक्षिण-पश्चिम भाग में कार्ड लाइन गयी है। पहली लाइन सन् १८५६ में और दूसरी लाइन सन् १८७१ में चालू हुई थी। लूप लाइन राजगाँव स्टेशन के पास इस जिले में प्रवेश कर मिरजा चौकी के पास जिले को छोड़ती है जिसकी लम्बाई ६५ मील है। यह लाइन पाकुर और राजमहल सबडिविजन होकर गयी है और इसपर राजगाँव, पाकुर, कोतालपोखर, बरहरवा, बाकूडीह, तीनपहाड़, तलझरी, महाराजपुर, सकरीगली, साहेबगंज और मिरजा चौकी, ये ११ स्टेशन हैं। इस लाइन पर एक ओर पहाड़ का दृश्य है तो दूसरी ओर आगे चलकर गंगा नदी का। बरहरवा से कुछ दूर पर सीता पहाड़ को काटकर उसके भीतर से लाइन लायी गयी है। तीन पहाड़ से राजमहल तक, ७½ मील और सकरगली से सकरीगली घाट तक शाखा लाइनें गयी हैं। सकरीगली घाट और गंगा के दूसरे किनारे ई० बी० रेलवे के मनिहारी घाट के बीच रेलवे स्टीमर चलता है।

कार्ड लाइन इस जिले में मिहिजाम स्टेशन से लेकर जसीडीह स्टेशन के कुछ आगे तक गयी है जिसकी लम्बाई करीब ६० मील होगी। यह लाइन जामतारा और देवघर सबडिविजन होकर जाती है और इसपर मिहिजाम, जामतारा, करमाटाँड़, मधुपुर और जसीडीह स्टेशन हैं। मधुपुर से एक शाखा-लाइन गिरिडीह की ओर गयी है जिसमें एक स्टेशन जगदीशपुर इस जिले के अन्दर है। फिर जसीडीह से दूसरी शाखा-लाइन वैद्यनाथधाम (देवघर) को गयी है जिसकी लम्बाई ४ मील है।

सड़क—इस जिले में करीब एक हजार मील लम्बी सड़कें हैं। इनमें पक्की सड़कें बहुत थोड़ी हैं। कुछ हिस्सों को छोड़ यहाँ की जमीन कुछ ऐसी सख्त है कि कच्ची सड़कें भी बहुत असुविधाजनक नहीं होतीं। जिले की मुख्य सड़कें दुमका से भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं और इसे रेलवे लाइन से मिलाती हैं। इन सड़कों में भागलपुर-सूरी सड़क (५३ मील), दुमका-रामपुरहाट सड़क, (३३ मील) और दुमका-देवघर सड़क (३६ मील) मुख्य हैं।

जलमार्ग—इस जिले के अन्दर केवल गंगा नदी में ही नावें और स्टीमर चलते हैं। बाकी दूसरी नदियाँ पहाड़ी नदियाँ हैं और उनमें बरसात के बाद पानी नहीं रह जाता है। गंगा में दीघा से ग्वालन्दों तक तो स्टीमर चलते ही हैं, साथ ही राजमहल से मनिहारी, राजमहल से मानिकचक और बरसात के दिनों में राजमहल से कालिन्दी नदी होकर इंगलिश बाजार तक भी स्टीमर आने-जाने का प्रबन्ध है जैसा पहले कहा जा चुका है। सकरीगली घाट से मनिहारी घाट तक रेलवे स्टीमर चलता है। यह राजमहल से धुलियाँ तक भी सप्ताह में दो बार आता-जाता है।

शिक्षा

सन् १८७३ ई० में संथाल परगने में सब मिलकर ११६ स्कूल थे; जिनमें १,१६६ लड़के-लड़कियाँ शिक्षा पा रही थीं। स्कूलों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गयी और सन् १६०८ में आकर कुल १,०३० स्कूल हो गये, जिनमें २७,३२६ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे।

१६०८ ई० में जिले के अन्दर ६५३ प्राइमरी स्कूल थे। सन् १६३५-३६ में प्राइमरी स्कूलों की संख्या १,१०६ हो गयी है जिनमें ४१,६८८ लड़के-लड़कियाँ पढ़ रही हैं।

सन् १९०८ में इस जिले में १४ मिड्ल वर्नाकुलर और ११ मिड्ल इंगलिश स्कूल थे। सन् १६३७-३८ मे आकर कुल ३४ मिड्ल स्कूल हो गये हैं जिनमें ३२ मिड्ल इङ्गलिश और २ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल हैं।

इस जिले में सन् १६०८ में हाई स्कूलों की संख्या ५ थी। इस समय यहाँ १० हाई स्कूल हो गये हैं। देवघर में दो हाई स्कूल हैं तथा जामतारा, दुमका, पाकुर, गोड्डा, मधुपुर, राज-महल, साहेबगंज और अजमोरा में एक-एक। देवघर के दो हाई स्कूलों में एक लड़कियों का स्कूल है।

ईसाई मिशनरियों ने यहाँ बहुत दिनों से स्त्री-शिक्षा के लिये विशेष प्रबन्ध कर रखा है। १६०८ ई० में यहाँ कुल ३४ कन्यापाठशाएँ थीं जिनमें ४ मिड्ल वर्नाकुलर, २ अपर प्राइमरी और शेष लोअर प्राइमरी कन्या-पाठशालाएँ थीं। कुछ लड़-कियाँ लड़कों के स्कूल में भी पढ़ती थीं। इस तरह उस समय पढ़नेवाली लड़कियों की कुल संख्या १,४७१ थी। सन् १९३५-३६ में यह संख्या ६,०९० हो गयी है। इस समय प्राइमरी स्कूलों के अलावे २ मिड्ल इंगलिश और २ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल भी हैं। जिटाडो और पाकुर में मिड्ल इंगलिश स्कूल तथा धरमपुर और महारो में मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल हैं। ये चारों स्कूल ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाये जा रहे हैं। देवघर में ईसाई मिश-नरियों का स्थापित लड़कियों का एक हाई स्कूल भी है।

इस जिले में आदिम जाति की शिक्षा के लिये भी विशेष प्रबन्ध किया गया है। संथाल-स्कूलों के लिये सालाना खास

रकम मंजूर है और उन स्कूलों को देखने के लिये स्कूल सब-इन्सपेक्टर अलग होते हैं जो साधारणतः संथालों में से ही लिये जाते हैं। मिशनरियों ने संथाली भाषा को लिखित भाषा का रूप दिया है और इसमें प्राइमरी स्कूलों की किताबें प्रकाशित हो रही हैं। पहड़िया स्कूलों को देखने के लिये मिशनरी सोसाइटी की ओर से अलग इन्सपेक्टर रहते हैं।

हिन्दी साहित्य की विशेष शिक्षा के लिये देवघर में गोवर्द्धन-साहित्य-महाविद्यालय खुला है। इसके अधीन कई छोटे-छोटे विद्यालय भी हैं।

इस जिले के अन्दर उल्लेख-योग्य अन्य शिक्षा-संस्थाओं में देवघर के गुरुकुल, रामकृष्ण-मिशन स्कूल, वैद्यनाथ संस्कृत-महाविद्यालय तथा बालेश्वरी संस्कृत-महाविद्यालय हैं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ५४,४०८ और स्त्रियों की संख्या ५,०९१ है। यहाँ अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ९,८५२ और स्त्रियाँ १,०५६ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से संथाल परगने में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े २,०४१ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर स्कूलों में ५५,१९३ लड़के-लड़कियों के नाम दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े २.७ हैं।

शासन-प्रबन्ध

संथाल परगना भागलपुर कमिश्नरी के अन्दर एक नन-रेगुलेटेड डिस्ट्रिक्ट है। यहाँ का शासन साधारण कानून के अलावे कुछ विशेष कानून से किया जाता है। कहते हैं कि यहाँ की कुछ पिछड़ी हुई जातियों की रक्षा के लिये तथा उनको

कुछ विशेष दशा या परिस्थिति के कारण ऐसा प्रबन्ध किया गया है। यहाँ जिला-अफसर कलक्टर नहीं कहलाकर डिप्टी कमिश्नर कहलाता है। पहले जिला चार सबडिविजनों में बाँटा गया था—दुमका, देवघर (जामतारा सहित), गोड्डा और राजमहल (पाकुर सहित)। पीछे जामतारा और पाकुर भी अलग सबडिविजन कायम किये गये। सबडिविजन भिन्न-भिन्न थानों में बँटे हुए हैं।

न्याय—जिले और सबडिविजनों के सदर दफ़्तरों में फौजदारी और दीवानी कचहरियाँ हैं। प्रारम्भ में इस जिले के लिये कानून का कोई विस्तृत और निश्चित रूप नहीं रख-कर साधारण कानून के भावों का ही पालन किया जाता था। शासन और शासितों के बीच वकील-मुख्तार आदि मध्यस्थ रखने का नियम नहीं था। परन्तु, अब इस सम्बन्ध के प्रचलित नियमों और दस्तूरों में काफी फर्क पड़ा है, तो भी साधारण कानूनों से शासित जिलों के न्याय-विभाग की तरह यहाँ का न्याय-विभाग नहीं है। लगान-कानून, सम्पत्ति के हस्तान्तर-सम्बन्धी कानून, वकील-सम्बन्धी कानून यहाँ के लिये कुछ भिन्न हैं। भागलपुर का सेशन जज ही वहाँ का सेशन जज होता है। मुकदमों को सुनने के लिये यहाँ भी और जगहों की तरह मजिस्ट्रेट और मुन्सिफ होते हैं।

पुलिस—संथाल परगने के अन्दर दुमका शहर और देवघर सबडिविजन में तथा गोड्डा, पाकुर और राजमहल सबडिविजन के उन हिस्सों में जो दामिन-इ-कोह के बाहर हैं, सरकारी पुलिस रखे गये हैं। बाकी हिस्सों में अर्थात् दुमका शहर को छोड़ सारे दुमका सबडिविजन और जामतारा सबडिविजन में तथा गोड्डा, पाकुर और राजमहल

सबडिविजन के दामिन-इ-कोह में गाँव के मुखिया ही पुलिस का काम करते हैं। कई मुखियों पर एक सरदार होता है, जिसका पद दारोगा के समान होता है। गाँवों के अन्दर चौकीदार हैं। जिले का सबसे बड़ा पुलिस अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। थाने के अफसर इन्स्पेक्टर या सब-इन्स्पेक्टर होते हैं जो दारोगा भी कहलाते हैं। थाने में कुछ कान्स्टिबिल भी रहते हैं। सन् १९३६ में इस जिले के अन्दर ८ इन्स्पेक्टर, ४२ सब-इन्स्पेक्टर, ३२ असिस्टन्ट सब-इन्स्पेक्टर, १ सर्जेन्ट मेजर, १७ हवलदार, ४०६ कानिस्टेबिल और ४,०४० गाँव के पुलिस चौकीदार आदि थे।

जेल—दुमका में जिला-जेल है, जिसमें १३१ पुरुष कैदियों और ७ स्त्री कैदियों के रहने की जगह है। देवघर, गोड्डा, राजमहल, जामतारा और पाकुर में छोटे जेल हैं। इन छोटे जेलों में क्रम से २१, १६, २३ और १७ पुरुष कैदी तथा ३, ६, ३, ३ और ४ स्त्री कैदी रखने का प्रबन्ध है।

रजिस्ट्री आफिस—इस जिले के अन्दर नया दुमका, देवघर, गोड्डा, जामतारा, पाकुर और राजमहल में रजिस्ट्री आफिस हैं, जहाँ जमीन की खरीद-बिक्री आदि की रजिस्ट्री होती है।

डिस्ट्रिक्ट कमिटी—इस जिले में सड़क, पुल वगैरह बनवाने, मिडिल तक की शिक्षा का प्रबन्ध करने, अस्पताल वगैरह खुलवाने तथा घाट, फाटक (अड़गला) आदि के इन्तजाम के लिये डिस्ट्रिक्ट रोड कमिटी है, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड नहीं। इसके सदस्य शासनाधिकारियों द्वारा नामजद होते हैं, प्रजा द्वारा चुने हुये नहीं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—जिले के अन्दर देवघर, साहबगंज,

दुमका और मधुपुर में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। पहली म्युनिसिपैलिटी सन् १८६६ में, दूसरी सन् १८८३ में, तीसरी सन् १९०३ में और चौथी सन् १९०९ में कायम हुई थी। इनके मेम्बर क्रम से १५, १०, १५ और १२ हैं।

दुमका (नया दुमका) या सदर सबडिविज़न

यह सबडिविजन जिले के मध्य में २३°५९′ और २४°३९′ उत्तरीय अक्षांश तथा ८६°५४′ और ८७°४२′ पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसके अन्दर रेलवे लाइन नहीं है। इसका क्षेत्रफल १,४६३ वर्गमील और जनसंख्या ४,६६,१५७ है। यहाँ नया दुमका ही एक शहर है। गाँवों की संख्या २,६८१ है। इसके अन्दर दुमका और दुमका दामिन ये दो रेवेन्यू थाने हैं। सबडिविजन के उल्लेखयोग्य स्थान नीचे लिखे हैं—

दुमका (नया दुमका)—दुमका शहर २४°१६′ उत्तरीय अक्षांश और ८७°१५′ पूर्वीय देशान्तर पर है। संथाली विद्रोह के समय सैनिकों ने दुमका नामक पुराने गाँव से कुछ दूर इस स्थान पर अपना डेरा डाला था, इस कारण इसका नाम नया दुमका पड़ गया। १८५५ ई० में यह संथाल परगने का सदर दफ्तर बनाया गया। पर, कुछ दिनों के लिये यहाँ से सदर दफ्तर उठ गया और यह केवल एक सब-डिस्ट्रिक्ट रह गया। लेकिन, सन् १८७२ में फिर यहीं सदर दफ्तर आया। १९०३ में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम की गयी। यहाँ एक टीले पर तालाब के अन्दर एक पत्थर का स्तम्भ है जो तालाब खुदवानेवाले डा० केली का स्मारक है। इस शहर से रेलवे लाइन बहुत दूर है। यहाँ से रामपुर हाट करीब ३९ मील

और देवघर ४१½ मील है। दुमका शहर की जनसंख्या ६,४७१ है, जिसमें ७,६८८ हिन्दू, १,२०६ मुसलमान, ३६० आदिम जाति के लोग और १८७ ईसाई हैं। दुमका रेवेन्यू थाने की जनसंख्या ४, २१, ७३५ है, जिसमें २,११,०४६ आदिम जाति वाले १,६१,४२४ हिन्दू, १६,१३३ मुसलमान, ३,१२४ ईसाई और ५ अन्य जाति के लोग हैं। इस रेवेन्यू थाने के अंदर ६१ छोटे-छोटे थाने या सरकारी हलके हैं।

दुमका दामिन—यह एक रेवेन्यू थाना है जो दामिन-इ-कोह के अंदर है। इसकी जनसंख्या ४४, ४२२ है, जिसमें ३४,३७६ आदिम जातिवाले, ७,५५४ हिन्दू, १,४१६ मुसलमान, ९,०६६ ईसाई और १ अन्य जाति के लोग हैं। इस रेवेन्यू थाने के अंदर ६ छोटे-छोटे थाने या बँगले हैं।

नया दुमका—दे० दुमका।

महुआगढ़ी—राजमहल पहाड़ी में यह एक पहाड़ी है जो १,५०० फीट ऊँची है। इसकी चोटी पर पोखरिया नाम का एक पहाड़ी गाँव है जिसका नाम वहाँ के एक पत्थर से बँधे पोखर के कारण पड़ा। यहाँ एक पत्थर के किले का भी भग्नावशेष है जो एक राजपूत राजा खुशियाल सिंह का बताया जाता है।

सँकरा—यह एक स्टेट है जो १८ वीं सदी में वीरभूम जिले के नागर के राजा जयसिंह के अधिकार में था। सँकरा एक गाँव है जहाँ पहले इस वंश के लोग रहते थे।

हंडवे—यह एक परगना है जो पहले मुँगेर जिले के खड़गपुर राज्य के अधीन था। १७६२ ई० में खेतौरी वंश के सुभान सिंह यहाँ के इस्तमरारी मुकर्ररीदार थे। इस समय हंडवे

परगने के २२ तालुकों में १ तालुके का अधिकारी हंडवे राज्य है जो सुभान सिंह के वंशजों के हाथ में है।

गोड्डा सबडिविजन

यह सबडिविजन जिले के उत्तर-पश्चिम भाग में २४°३०' और २५° १४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°३' और ८७°३६' पूर्वीय देशान्तर के बीच है, १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस का क्षेत्रफल ८५० वर्गमील और जनसंख्या ३,८७,८०१ है। इसके अन्दर कोई शहर नहीं है, यहाँ के गाँवों की संख्या १,६२२ है। इस सबडिविजन में गोड्डा और गोड्डा दामिन, ये दो रेवेन्यू थाने हैं, सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

गोड्डा—यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इसका सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन भागलपुर-मन्दार हिल लाइन पर पँजवारा रोड है जो यहाँ से १४ मील है। गोड्डा रेवेन्यू थाने की जनसंख्या २,९८,२१७ है, जिसमें १,८७,५४९ हिन्दू, ६६,४८१ आदिम जातिवाले, ४३,५५६ मुसलमान और ६३१ ईसाई हैं। यह रेवेन्यू थाना तीन छोटे थानों में बँटा है—गोड्डा, महगाँवा और परेयाहाट।

गोड्डा दामिन—गोड्डा सबडिविजन के दामिन-इ-कोह के अन्दर गोड्डा दामिन एक रेवेन्यू थाना है। यहाँ की जनसंख्या ८९,५८४ है, जिसमें ६९,३०४ आदिम जातिवाले, १५,६८४ हिन्दू, ४,१८१ मुसलमान और ४१५ ईसाई हैं। इस रेवेन्यू थाने के अन्दर १७ छोटे थाने हैं।

पातसुंडा—दे० बरकूप।

बरकूप—यह गाँव एक पुराना स्थान है जहाँ १२ पुराने कुएँ हैं। बारह कूप से बरकूप शब्द बना। कहते हैं, यहाँ पहले नट राजा लोग रहते थे। बादशाह अकबर के वक्त में यहाँ खेतौरी लोगों का अधिकार हुआ। राजपूतों के आक्रमण से खड़गपुर (मुँगेर) का एक खेतौरी सरदार देव बर्म भागकर पातसुंड़ा पहुँचा और विहार के मुगल राजप्रतिनिधि से पातसुंडा और बरकूप तप्पे की जागीर ली। १६८७ ई० में जागीर मणि बर्म और चन्द्र बर्म नाम के दो भाइयों में बँट गयी। पहले को बरकूप तप्पा और दूसरे को पातसुंडा तप्पा मिला। बरकूप तप्पे के वस्तारा, कुरमा, बोदश, शालपुर और कपोता गाँव में पुराने मकान हैं।

मनिहारी—यहाँ पहले खेतौरो घराने के लोग राज करते थे। बुकानन है मिल्टन ने लिखा है कि मँझवे घाटी में दरियार सिंह नाम का एक नट राजा लकरागढ़ नामक एक किला बनवाकर रहता था। रूपकरण नामक एक खेतौरी सरदार ने अकबर के सेनापति राजा मानसिंह की सहायता पाकर उसे हटा दिया। इसके वंशज १८३८ ई० तक मानसिंह की दी हुई जागीर भोगते रहे। मनिहारी का नया नाम कसवा है, यहाँ कई सूखे तालाब हैं जिनसे पुराने मकानों की चीजें और पत्थर पर खोदी मूर्त्तियाँ मिली हैं। कहते हैं, मनिहारी तप्पे के मानगढ़ नामक गाँव में राजा मानसिंह का बनवाया एक किला था। विक्रमकिता में विमलीगढ़ नामक एक किले का भग्नावशेष है जो वहाँ के वीरेन्द्र सिंह नामक एक सरदार की स्त्री के नाम पर बना था। यहाँ पत्थर पर खोदी दो मूर्त्तियाँ हैं जो भगवान बुद्ध की मूर्त्तियाँ मानी जाती हैं। यहाँ पहड़िया नामक चट्टान पर एक पत्थर के किले का भग्नावशेष है।

जामतारा सबडिविजन

यह सबडिविजन जिले के दक्षिण भाग में २३°४८' और २४°१०' उत्तरीय अक्षांश तथा ८६°३०' और ८७°१८' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इस सबडिविजन का क्षेत्रफल ६६२ वर्गमील और जनसंख्या २,४३,८५८ है। यहाँ कोई शहर नहीं है। गाँवों की संख्या १,०७० है। इसके अन्दर सिर्फ एक रेवेन्यू थाना जामतारा है।

जामतारा—यह स्थान ई० आई० आर० की कार्ड लाइन पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर है। सबडिविजन के अन्दर जामतारा ही एक रेवेन्यू थाना है। इस थाने या इस सबडिविजन के अन्दर २,४३,८५८ मनुष्य रहते हैं, जिनमें १,२०,८५० हिन्दू, ६६,३६३ आदिम जाति के लोग, २२,१४८ मुसलमान और १,४६७ ईसाई हैं। इस रेवेन्यू थाने के अन्दर २८ छोटे-छोटे थाने, सरदारी या बँगले हैं।

देवघर सबडिविजन

जिले के दक्षिण-पच्छिम भाग में यह सबडिविजन २४°३' और २४°३८' उत्तरीय अक्षांश तथा ८६°२८' और ८७°४' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ६५२ वर्गमील और जनसंख्या १९३१ की गणना के अनुसार ३,४६,६४६ है। इसके अंदर दो शहर देवघर और मधुपुर हैं। गाँवों की संख्या २,३८४ है। इस सबडिविजन में देवघर और मधुपुर ये ही दो रेवेन्यू थाने हैं।

देवघर—यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इसका दूसरा नाम वैद्यनाथ धाम भी है। जसीडीह

जंक्शन से ४ मील लम्बी एक छोटी लाइन यहाँ आयी है। इस शहर के उत्तर में दाता नामक जंगल, उत्तर-पूरब में नन्दाहा पहाड़, ७ मील पूरब की ओर तियूर या त्रिकूट पर्वत, तथा दक्षिण-पूरब, दक्षिण और दक्षिण-पच्छिम की ओर १२ मील के अन्दर पहाड़ ही पहाड़ है। पच्छिम की ओर यमुना-जोर नामक एक छोटी नदी बह रही है। वहाँ से आधा मील और पच्छिम धरुआ नदी है जो बहकर शहर के दक्षिण भी आयी है। शहर का दृश्य बहुत सुन्दर है। यह स्थान स्वास्थ्य-कर समझा जाता है। बहुत-से लोग यहाँ स्वास्थ्य-सुधार के लिये आते हैं। यहाँ एक कुष्टाश्रम है। इस शहर की जन-संख्या १४,२१७ है, जिसमें १३,३८० हिन्दू, ५७४ मुसलमान, १५२ ईसाई, ६० आदिम जातिवाले और २१ जैन हैं। देवघर एक रेवेन्यू थाना भी है जिसकी जनसंख्या १,६१,४२२ है, जिसमें १,३७,११२ हिन्दू, १२,०८० आदिम जाति, ११,६५१, मुसलमान, २०८ ईसाई और ७१ अन्य जाति के लोग हैं। इस रेवेन्यू थाने के अन्दर एक और छोटा थाना सरवन है।

वैद्यनाथ महादेव को लेकर इस स्थान की प्रसिद्धि सारे भारतवर्ष में है। भारत के भिन्न-भिन्न भागों के लोग महादेव के दर्शन के लिये यहाँ आया करते हैं। शिवपुराण, पद्मपुराण आदि में इस स्थान की महत्ता बतायी गयी है। पुराणों में लिखा है कि त्रेतायुग में लंका का राजा रावण कैलाश पर्वत से शिवजी को लंका ले जाना चाहता था। शिवजी इस शर्त पर जाने को तैयार हुए कि रास्ते में कहीं जमीन पर उन्हें रखा नहीं जाय। रावण जब ज्योतिर्लिंग को कैलाश से ले चला तो देवता लोग घबड़ाये। अन्त में जलदेवता वरुण रावण के उदर में प्रवेश कर गये जिससे उसे पेशाब करने की इच्छा जोरों से मालूम

पड़ने लगी। रावण आकाश-मार्ग से नीचे उतरा और एक बटोही ब्राह्मण को ज्योतिर्लिंग रखने देकर पेशाब करने लगा। उसे पेशाब करने में बड़ी देर लगी। ब्राह्मण ने कुछ देर के बाद ज्योतिर्लिंग को पृथ्वी पर स्थापित कर अपना रास्ता लिया। पीछे रावण ने उस लिंग को उखाड़कर ले जाना चाहा; पर वह इसमें बिलकुल असमर्थ रहा। वही ज्योतिर्लिंग आज बैजनाथ या वैद्यनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। यह ज्योतिर्लिंग बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक समझा जाता है। कहते हैं कि बैजू नामक एक भक्त के नाम पर यहाँ के महादेव का नाम बैजनाथ या वैद्यनाथ पड़ा। यहाँ बैजू की एक समाधि भी बतायी जाती है जो केवल २०० वर्ष की पुरानी मालूम पड़ती है। कुछ लोग सत्ययुग से ही वैद्यनाथ महादेव का वहाँ रहना बताते हैं। कहते हैं कि दक्षयज्ञ में मरी हुई सती की देह को जब शिवजी कंधे पर लिये फिरते थे तो विष्णु ने चक्र से उस देह को खंड-खंड कर दिया था जो ५२ स्थानों में जा गिरे थे। कलेजे का भाग यहीं गिरा हुआ बताया जाता है। लेकिन, इसके स्मारक-स्वरूप यहाँ कोई मंदिर नहीं है। वैद्यनाथजी के मंदिर के एक शिला-लेख से मालूम पड़ता है कि इस मंदिर को सन् १५९६ में गिद्धौर महाराज के पूर्वज पूरनमल ने बनवाया था। लेकिन, कहते हैं कि पूरनमल ने मंदिर बनवाया नहीं, केवल उसकी मरम्मत करायी। उस समय के पुजारी रघुनाथ का भी एक लेख मंदिर में है। मंदिर के फाटक पर बँगला लिपि में एक लेख है। मंदिर के मुख्य फाटक के सामने चन्द्रकूप नाम का कुआँ है जिसमें पृथ्वी पर के सभी तीर्थों का जल होना माना जाता है। कहते हैं, इन मंदिरों के अन्दर तीन बौद्ध मूर्त्तियाँ हैं जिन्हें लोग हिन्दू मूर्त्तियाँ मानकर पूजते हैं। शिवगंगा नामक जलाशय और कर्मनाशा

वैद्यनाथ का मंदिर, देवघर

राजमहल के पास हदफ की जामा मस्जिद

राजमहल पहाड़ी का एक मनोहर दृश्य

नामक धारा यहाँ की दर्शनीय वस्तुओं में है। कहते हैं, कर्मनाशा की उत्पत्ति रावण के पेशाब से हुई थी। देवताओं के घर के अर्थ में इस स्थान का नाम अब देवघर पड़ा है। पहले इस स्थान को हार्दपीठ, रावणवन, केतकीवन, हरीतकीवन और वैद्यनाथ धाम कहते थे।

मधुपुर—संथाल परगने का यह एक शहर है जहाँ की जनसंख्या ८,६६५ है। यहाँ ई० आई० आर० की कॉर्ड लाइन का जंकशन है। यहाँ से एक लाइन गिरिडीह की ओर गयी है। यह स्थान बहुत स्वास्थ्यकर समझा जाता है। मधुपुर एक रेवेन्यू थाना है जिसके अन्दर एक छोटा थाना सरथ है। मधुपुर थाने की जनसंख्या १,८५,५२४ है, जिसमें १,१२,७०७ हिन्दू, ४२,७०६ आदिम जातिवाले, २६,३६३ मुसलमान, ७१४ ईसाई और ४ अन्य जाति के लोग हैं।

वैद्यनाथ धाम—दे० देवघर।

पाकुर सबडिविजन

जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में यह सबडिविजन २४°१४' और २४°४६' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°२३' और ८७°५३' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका क्षेत्रफल ७०० वर्गमील और जनसंख्या सन् १६३१ की गणना के अनुसार, २,७५,५७४ है। इस सबडिविजन में कोई शहर नहीं है। यहाँ के गाँवों की संख्या १,११२ है। इसके अन्दर पाकुर और पाकुर दामिन, ये दो रेवेन्यू थाने हैं।

पाकुर—यहाँ पाकुर सबडिविज़न का सदर दफ्तर है। यहाँ

एक मारटेलो टावर है जिसकी ऊँचाई ३० फीट और घेरावा २० फीट है। यह सन १८५६ में विद्रोहियों के बलवे से सरकारी और रेलवे अफसरों को बचाने के लिये बनाया गया था। संथाल-विद्रोह के समय यहाँ बहुत मार-काट और लूट-पाट मची थी। पाकुर रेवेन्यू थाने के अन्दर १,६७,१७७ आदमी रहते हैं, जिनमें १,०१,४७६ आदिम जाति के लोग, ४६,८६५ हिन्दू, ४३,८७६ मुसलमान और १,६२४ ईसाई हैं। इस रेवेन्यू थाने में चार छोटे थाने हैं—पाकुर, पकुरिया, महेशपुर और हिरनपुर बाजार।

पाकुर दामिन—यह एक रेवेन्यू थाना है, जहाँ की जनसंख्या ७८,३६७ है। इसमें ६६,२३७ आदिम जाति के लोग, ८,०२८ हिन्दू, ३,८०८ मुसलमान और ३२४ ईसाई हैं। इस रेवेन्यू थाने के अन्दर १२ छोटे थाने हैं।

अम्बर—पाकुर सबडिविजन के उत्तर-पूरब भाग में यह एक स्टेट है। इसका अधिपति बहुत दिनों से एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण-परिवार है। जब मानसिंह सुन्दरवन के राजा प्रतापादित्य का विद्रोह दबाने आये तो अम्बर स्टेट के वर्त्तमान मालिक के पूर्वज ने उनकी बड़ी मदद की थी। राजा मानसिंह के निवास-स्थान अम्बर (राजपुताना) के नाम पर इस स्थान का नाम पड़ा। १८०६ ई० में इस स्टेट के स्वामी पृथ्वीचन्द साही थे, जो संस्कृत के एक विद्वान, कवि और लेखक बताये जाते हैं।

सुलतानाबाद—इस स्थान को सुलतान शाह नामक एक मुसलमान सरदार ने बसाया था। कहते हैं कि गोरखपुर के आबू सिंह और बाकू सिंह नामक दो भाइयों ने सुलतानाबाद को जीतकर यहाँ अपना राज्य कायम किया। बड़े भाई बाकू सिंह महेशपुर में अपनी राजधानी बनाकर महेशपुर-राजवंश के

संस्थापक हुए। सन् १७५४-५८ में गरजन सिंह इस वंश के नामी आदमी हुए। इनके समय में मराठे सैनिकों के दल के दल सुलतानाबाद होकर गुजरते थे। कुछ सैनिकों को इन्होंने परास्त भी किया था। इनके वंशज अब भी इस स्टेट के मालिक हैं। सुलतानाबाद परगने में हरिपुर, शिवपुर, गढ़बारी, देवी नगर, कोताल पोखर और अकदासाल प्रसिद्ध गाँव हैं।

राजमहल सबडिविजन

जिले के उत्तर-पूरब भाग में यह सबडिविजन २४°४३' और २५°१८' उत्तरीय अक्षांश तथा ८७°२७' और ८७°५७' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इस सबडिविजन का क्षेत्रफल ८०१ वर्ग-मील और जनसंख्या ३,३१,१३६ है। इसमें राजमहल और साहेबगंज, ये दो शहर हैं। गाँवों की संख्या १,२६१ है। रेवेन्यू थाना राजमहल और राजमहल दामिन हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान ये हैं—

राजमहल—यह शहर इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है जो जिले के उत्तर-पूरब भाग में गंगा के किनारे है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ३,६८५ है, जिसमें २,४६२ हिन्दू, १,०५६ मुसलमान, ११४ आदिम जाति के लोग और २३ ईसाई हैं। यह शहर मुसलमानी वक्त में बहुत दिनों तक बँगाल-विहार की राजधानी था। उस समय का शहर वर्त्तमान शहर से ४ मील पच्छिम था। यहाँ की बहुत-सी पुरानी इमारतें अब खँडहर के रूप में हैं। बहुतों का तो अब कुछ पता भी नहीं है। यदि हम पूरब की ओर से देखना शुरू

करें तो पहले हमें सबरजिस्ट्री आफिस के पास एक पुराना शिवा-लय और रेलवे कम्पनी के कब्जे में एक पुराना और बड़ा कुआँ मिलेगा। कहते हैं कि शाहशुजा के परास्त होने पर उसके घर की औरतों ने इसी कुएँ में अपने कीमती जवाहरात को डाल रखा था। इसके पच्छिम रेलवे कम्पनी का एक मकान है जिसका निचला भाग बहुत पुराने समय का है। इसके बाद एक पुराने हम्माम या स्नानागार का भग्नावशेष है। कचहरी के मकान के नीचे का भाग भी पुराने वक्त का है। यहाँ जमीन के अन्दर कोठरियाँ भी मिली थीं। आगे चलकर एक पुरानी कब्रगाह है जिसके पच्छिम एक संगदालान है जो मानसिंह का बनवाया बताया जाता है। कहते हैं, इसमें भी जमीन के नीचे कमरे थे। इस समय रेलवे कम्पनी इसे गुदाम के काम में ला रही है। इससे ५० गज की दूरी पर एक पुरानी मस्जिद है जो रेलवे कम्पनी के अधिकार में है और जिसे इसने अस्पताल के काम के लिये दे दिया है। कहते हैं कि यह मस्जिद बादशाह अकबर के लिये बनी थी। यहाँ मैना बीबी की एक कब्र और एक मैना तालाब है जो मुर्शिदाबाद के नवाब के अधिकार में है। इसके ३०० गज दक्खिण एक कब्रगाह है जिसके पूरब एक तालाब और पच्छिम अनन्त सरोवर या अन्ना सरोवर नाम की एक झील है। इस झील के अन्दर शाहशुजा के वक्त की इमारत का भग्नावशेष है। इस झील के दक्खिण शाहशुजा के एक बाग और जनानखाने की इमारत का खँडहर है। यहाँ पर भी जमीन के अन्दर कोठरियाँ बतायी जाती हैं। इस झील पर ६ फीट ऊँचे एक पुराने पुल का टुकड़ा है। बाग के सामने एक ईदगाह है। यह झील उधुआ नाला तक चली गयी है। अस्पताल के पास एक अँगरेज की कोठी है जिसकी दीवाल पुरानी है। यहाँ

से एक दीवाल दो मील पच्छिम जगत सेठ के बँगले तक गयी थी। अँगरेज की कोठी के अहाते में बारहदरी नाम की एक इमारत है जो फतह जँग खाँ नामक एक पुराने जमींदार की बतायी जाती है। कहते हैं कि जब मानसिंह ने यहाँ जामा मस्जिद की नींव दी तो फतह जंग खाँ ने बादशाह अकबर को झूठ ही लिख भेजा कि मानसिंह अपना महल बनवा रहे हैं। इसपर मानसिंह ने क्रोध में आकर उसके घर को तोप से उड़ा दिया। राजमहल बाजार से आधा मील पच्छिम नवाब मीरजाफर खाँ के लड़के मीरन की कब्र है। इसके ४०० गज पच्छिम पत्थरगढ़ नामक महल का भग्नावशेष है। कुछ लोग कहते हैं कि मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध धनी जगतसेठ के लिये यहीं रुपया ढाला जाता था। इसके पच्छिम एक पुराना शिवालय है जिसके पास नवाब ड्योढ़ी में जगत सेठ का एक मकान था। यहाँ से कुछ दूर पच्छिम मुर्शिदाबाद के नवाब घराने के लोगों का मकान और एक इमामबाड़ा था। इसके पास दो मस्जिदें हैं जिनमें एक रौशन मस्जिद अब भी अच्छी हालत में कायम है। नवाब ड्योढ़ी से दो मील पच्छिम मानसिंह का बनवाया जामा मस्जिद है। कहते हैं कि मस्जिद से लेकर संगदालान तक जमीन के अन्दर से जाने का रास्ता था। मस्जिद के पास एक शिवालय है, वह भी मानसिंह का ही बनवाया बताया जाता है। यहाँ भी बारहदरी नामक एक मकान का भग्नावशेष है। जामा मस्जिद से एक मील दक्षिण-पूरब और अन्ना सरोवर से पच्छिम ३० फीट के घेरे का एक कुआँ है जो मानसिंह का बनवाया बताया जाता है। जामा मस्जिद से ८०० गज उत्तर-पच्छिम मुसलमानी वक्त का एक पुराना पुल है। यहाँ से आधा मील उत्तर पहाड़ पर एक पीर की कब्र है जिससे वह पीर

पहाड़ कहाता है। इसके पच्छिम एक पहाड़ी टील्हे पर कन्हाई थान है जिसे लोग श्रीकृष्ण के सम्बन्ध से पवित्र स्थान मानते हैं।

राजमहल रेवेन्यू थाने की जनसंख्या १,३१,८६२ है। इसमें ८२,३५२ हिन्दू, ३५,८६८ मुसलमान, १३,०६७ आदिम जाति, ५०१ इसाई और १४ अन्य जाति के लोग हैं। यह रेवेन्यू थाना ३ छोटे थानों में बँटा हुआ है—राजमहल, बरहरवा और साहेबगंज।

राजमहल दामिन—दामिन के अन्दर यह एक रेवन्यू थाना है जिसको जनसंख्या १,६६,२७४ है। इसमें १,४८,६५३ आदिम जाति के लोग, ३६,०४३ हिन्दू, ११,३३६ मुसलमान, २,६३६ ईसाई और ३ अन्य जाति के लोग हैं। इसके अन्दर २४ छोटे थाने हैं।

उधुआ नाला—राजमहल से ६ मील दक्षिण गंगा के किनारे यह एक गाँव है। इसी के पास सन् १७६३ के ५ सितम्बर को मीरकासिम और अँगरेजों के बीच एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई थी जिसमें मीरकासिम की हार हुई थी। यहाँ नाला पर एक पुराने पुल का चिह्न अब भी मौजूद है।

कांकजोल—राजमहल से ८ कोस दक्षिण यह एक गाँव है। पहले यह एक शहर था जो उस समय के सुविस्तृत राजमहल जिले की राजधानी था। गंगा के पूरब का बहुत बड़ा हिस्सा पहले इसी जिले में था, क्योंकि यह भाग पहले गंगा के पच्छिम था। गंगा उस समय बहुत दूर पूरब गौड़ के पास से बहती थी जहाँ इस समय भागीरथी की धारा है। इस प्रकार पुराने कांक-जोल इलाके का कुछ भाग पूर्णिया जिले में और कुछ मालदह जिले में पड़ता है। कांकजोल शहर के नाम पर एक परगने का

भी नाम पड़ गया है । पूर्णिया जिले में भी कांकजोल नाम का एक परगना है जो सम्भवतः इसी परगने का एक भाग हो ।

तेलियागढ़ी—साहेबगंज से ७ मील पूरब रेलवे लाईन के किनारे एक अधित्यका पर तेलियागढ़ी नामक एक टूटा-फूटा किला है । अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण इस स्थान की पहले बड़ी महत्ता थी और यह बंगाल की कुंजी या बंगाल का द्वार कहलाता था । पहले किले के किनारे ही गंगा नदी बहती थी । कहते हैं कि किले की दीवाल पर बैठकर सैनिक लोग गंगा में मछली मारा करते थे । अब गंगा नदी यहाँ से बहुत दूर हट गयी है । किले के उत्तर, पूरब और पच्छिम की दीवाल अब भी देखने में आती है जो करीब २५० फीट लम्बी है । दक्षिण की ओर पहाड़ी ही इसकी रक्षा करती थी । पूरब और पच्छिम की ओर फाटक हैं । किले के भीतर बहुत-से पुराने मकानों के भग्नावशेष दिखाई पड़ते हैं । सम्भवतः तेलिया पत्थर से बने होने के कारण गढ़ी का नाम तेलियागढ़ी पड़ा । कुछ लोग यह भी कहते हैं कि एक तेली जमींदार के नाम पर, जो पीछे मुसलमान हो गया था, इस गढ़ी का नाम पड़ा था ।

सकरीगली— साहेबगंज से ६ मील पूरब गंगा के किनारे यह एक गाँव है । इस गाँव का नाम सकरीगली घाटी के नाम पर पड़ा । मुसलमानी वक्त में इस घाटी की बड़ी महत्ता थी और यहाँ कितनी ही लड़ाइयाँ हुई थीं । कहते हैं कि इसमें ६ से १२ फीट चौड़ी सड़क थी जो पहाड़ काटकर बनायी गयी थी । बिहार से बंगाल जाने का मुख्य मार्ग यही था । यहाँ पुराने किले का अब कोई चिह्न नहीं रह गया है । हाँ, यहाँ एक पुरानी कब्र है जो सैयद अहमद मकदुम की समझी जाती है । कहते हैं कि इसको औरंगजेब के सम्बन्धी और सेनापति साइस्ता खाँ

ने बनवाया था। सकरीगली गाँव के पास पलटनगंज एक बाजार है जो पहले क्लीवलैंड के पहड़िया सैनिकों का एक अड्डा था।

साहेबगंज—यह संथाल परगने का सबसे बड़ा शहर है जो गंगा के किनारे पर है। यहाँ की जनसंख्या १५,८८३ है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यह व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है।

दामिन-इ-कोह

जिले के उत्तर-पूरब भाग में सरकार का यह खास महाल है, जिसका रकवा जिले के रकबे का करीब एक चौथाई भाग है। इसके अन्दर राजमहल, पाकुर, गोड्डा और दुमका इन चारों सबडिविजनों के कुछ-कुछ हिस्से हैं। दामिन-इ-कोह फारसी का शब्द है जिसका अर्थ है पहाड़ी अंचल। इसके अन्दर राज-महल पहाड़ी भाग के अलावे उसके चारों ओर की कुछ समतल भूमि भी है। सन् १८२३ में दामिन-इ-कोह से जमींदारी प्रथा उठाने और इसे सरकार का खास महाल बनाने का प्रस्ताव पास हुआ। सन् १८२४ से सन् १८३२ तक इसका अहाता कायम किया जाता रहा। कहते हैं कि दामिन-इ-कोह को खास पहड़िया लोगों के लिये सुरक्षित रखने का विचार था, पर उन लोगों ने पहाड़ पर से हटकर मैदान को आबाद करना और वहाँ बसना पसन्द नहीं किया। तब बाहर से संथाल लोग यहाँ आये और जंगल साफ कर यहाँ की जमीन आबाद करने लगे। धीरे-धीरे यहाँ खेती बढ़ने लगी और लगान भी बढ़ चला। सन् १८३६-३७ में यहाँ का लगान सिर्फ २,६११ रु० था। तब से अब लगान सौ

गुना से भी अधिक बढ़ गया है। जिले का सरकारी जंगल-विभाग दामिन के अन्दर ही है ।

सन् १६३१ की गणना के अनुसार दामिन की जनसंख्या ४,११,६७७ है, जिसमें ३,१८,८७३ आदिम जाति के लोग ६७,३०६ हिन्दू , २०,७४४ मुसलमान, ४,७४७ ईसाई और ४ अन्य जाति के लोग हैं। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ लगभग ७८ फी सैकड़े आदिम जातिवाले, १६ फी सैकड़े हिन्दू, ५ फी सैकड़े मुसलमान और १ फी सैकड़े ईसाई हैं। आदिम जातियों में भी आधे से अधिक संथाली हैं, उसके बाद पहड़िया और तब भुइयाँ, खेतौरी आदि का स्थान है।

सरकार दामिन-इ-कोह को सदा आदिम जातियों के लिये सुरक्षित समझती रही है। गैर-आदिम जाति या विदेशियों को दामिन के अन्दर बहुत ही कम आने और बसने दिया जाता है। बाहर के लोग आम तौर से यहाँ जमीन नहीं ले सकते हैं। यहाँ आदिम जातियों में जमीन का बन्दोबस्त ग्राम-सम्प्रदाय के हाथ में किया गया है, व्यक्ति के हाथ में नहीं।

संथाल परगना जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की क्रमानुसार जनसंख्या (सन् १९३१)

जाति	जनसंख्या	जाति	जनसंख्या
संथाल	७,५४,८०४	मुसहर	१५,७३९
जोलाहा	१,२५,४९९	बनिया	१४,९९०
ग्वाला	१,२३,१७७	ताँती	१३,१४६
भुइयाँ	७०,७५९	धानुक	१२,२२८
सौरिया पहरिया	५९,८९१	भूमिहार ब्राह्मण	११,०२७
तेली	५४,६७९	दुसाध	१०.९५९
चमार	४२,७७४	रजवार	१०,८६६
ब्राह्मण	४२ ६६८	कायस्थ	१०,५६९
डोम	३९,२४८	बरही	८,९२२
माल पहड़िया	३७,४३७	धोबी	८,४४९
कुम्हार	३१,२३३	केवट	६,००८
खेतौरी	२६,७८७	मोची	५,८२७
कमार	२६,४१२	ओराँव	५,८१६
बौरी	२३,८९१	तूरी	३,६४४
हजाम	२३,४९७	हारी	३,४२४
कुरमी	२२,६३०	पासी	३,३१२
राजपूत	२१,२००	कोरा	३,३०४
कहार	१९.११५	माली	२,९१९
कोयरी	१८,६२९	काँदू	२,४९७
महली	१७,६८७	करमाली	३६१
		मुंडा	२३०

राँची जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

राँची जिला छोटानागपुर कमिश्नरी का दक्षिण-पच्छिम भाग है। यह २२°२१' और २३°४३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°०' और ८५°५४' पूर्वीय देशान्तर के बीच है।

इस जिले के उत्तर में पलामू और हजारीबाग के जिले हैं। इधर सुवर्णरेखा नदी बहुत दूर तक प्राकृतिक सीमा का काम करती है। पूरब में मानभूम जिला पड़ता है। दक्षिण में सिंहभूम जिला और उड़ीसा का गंगपुर स्टेट है। पच्छिम में मध्य प्रान्त के जसपुर और सुरगुजा ये दो स्टेट हैं। पलामू जिले का भी कुछ हिस्सा इस ओर है।

इस जिले का क्षेत्रफल ७,१०२ वर्गमील है। यह प्रान्त भर में सब से बड़ा जिला है। इसके बाद का जिला हजारीबाग है, जिसका रकबा ७,०२१ वर्ग मील है। प्रान्त के सब से छोटे जिले पटने से राँची जिला करीब ३½ गुना बड़ा है।

प्राकृतिक बनावट

अधित्यकाएँ—राँची जिला तीन अधित्यकाओं में बँटा हुआ है। पहली और सब से ऊँची अधित्यका जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में है जो चैनपुर और बिसनपुर थाने में तथा लोहरदग्गा थाने के पच्छिम भाग में पड़ती है। पालकोट और गुमला

पहाड़—जिले के बिलकुल पच्छिम में ओरिया, बरदग, उदनी, हुतार और कोइआपत मुख्य पहाड़ हैं। लोहरदग्गा के उत्तर और उत्तर-पच्छिम में सलगीपाट, दुधिया, बुलबुल और जलकदिया मुख्य हैं। दुधिया और बुलबुल की पंक्ति में ही सारू पहाड़ है जो जिले के अन्दर सब से ऊँचा है। इसकी ऊँचाई समुद्रतल से ३६१५ फीट है। दूसरी अर्थात बीच की अधित्यका में जहाँ तहाँ पहाड़ हैं। इनमें मुख्य मरंगबुरु, बरियातू और राँची पहाड़ी हैं। मरंगबुरु को मुंडा लोग बहुत पवित्र मानते हैं। राँची पहाड़ पर हिन्दुओं का एक मंदिर है, इस अधित्यका के पूर्वी भाग में पैन और कुटम पहाड़ प्रधान हैं। जिले की दक्षिण-पूरब की अधित्यका में सोनपत घाटी को अलग करनेवाली पर्वत श्रेणी एक स्थान में करीब ३,००० फीट ऊँची हो गयी है। बीरू पर्वतमाला में सब से ऊँची चोटी भौंर पहाड़ और आलू पहाड़ हैं।

जल-प्रपात—राँची जिले के जल-प्रपात प्रान्त के सब से बड़े और प्रसिद्ध जल-प्रपातों में हैं। यहाँ जल-प्रपात को घाघ कहते हैं। सबसे बड़ा और सुन्दर हुंड्रू का जल-प्रपात है जो हुंड्रू घाघ कहलाता है। यह राँची से २४ मील उत्तर-पूरब है जहाँ सुवर्णरेखा नदी ३२० फीट की ऊँचाई से गिरती है। बरसात के दिनों में जब बढ़ी हुई नदी का लाल पानी इतनी ऊँचाई से गिरता है तो दृश्य अत्यन्त ही मनोरम हो जाता है। राँची से २२ मील दक्षिण-पूरब एक दूसरा जलप्रपात दासो घाघ है। यहाँ कांची नदी ११४ फीट की ऊँचाई से गिरती है। गुमला सबडिविजन में दो पेरुआ घाघ हैं, एक बसिया थाने में और दूसरा कोचदेगा थाने में। इन घाघों के पास चट्टानों की दरारों में सैकड़ों जंगली परेवा (कबूतर) रहते हैं इसलिये लोग

इन घाघों को पेरुआ घाघ कहने लगे। राजादेरा अधित्यका से शंख नदी बरवे के मैदान में गिरती है। इससे जो जलप्रपात बना है उसको सदनी घाघ कहते हैं। यह भी अत्यन्त सुन्दर है।

जलाशय—इस जिले में कोई प्राकृतिक झील या तालाब नहीं है। हाँ, नदियों में बाँध बाँधकर कुछ कृत्रिम जलाशय बनाये गये हैं। इनमें सबसे बड़ा राँची झील है जो राँची शहर के बीच में है। रातू में तथा गुमला थाना के अन्दर टोटो में भी ऐसे जलाशय हैं।

जंगल—राँची जिले में जंगल बहुत हैं। जंगलों में अधिकतर साल, गँभार, केंद, सेमल, महुआ, तून, सीसो, हर, करम, कुसुम, बैसार, धारै, पियार, सीध, खैर, अमलताश और बाँस पाये जाते हैं। इस जिले के अन्दर सन् १९३५-३६ में सरकार का २२,०७१ एकड़ रिजर्ब्ड फारेस्ट, ३१७ एकड़ प्रोटेक्टेड फारेस्ट और ५०,५४१ एकड़ दूसरी तरह के जंगल थे।

नदियाँ

राँची जिले के अन्दर सुवर्णरेखा, शंख, उत्तर कोयल और दक्षिण कोयल ये चार मुख्य नदियाँ और बाकी उनकी सहायक धाराएँ हैं। इस जिले की नदियों में नावें नहीं चलतीं। साल के अधिकांश समय में लोग नदियों को आसानी से पार कर जाते हैं।

सुवर्णरेखा— राँची शहर से १० मील दक्षिण-पच्छिम नागरी और हटिया गाँवों के बीच से कुछ पहाड़ी धाराएँ निकलती हैं जो कुछ दूर के बाद एक साथ मिलकर सुवर्णरेखा नदी

बनाती हैं। यह नदी टेढ़ी-मेढ़ी होकर पूरब की ओर बढ़ती है और अंत में हुंड्रू प्रपात द्वारा अधित्यका से नीचे उतरती है। यहाँ से यह दक्षिण की ओर मुड़ कर ३५ मील तक राँची और मानभूम के बीच सीमा का काम करती है। यह फिर पूरब की ओर मुड़ कर सिहभूम, मयूरभंज और मेदिनीपुर जिला होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। कहते हैं कि इस नदी के तथा इसकी कुछ सहायक नदियों के बालू में सोने के कण मिलते हैं, इसलिये इसका नाम सुवर्णरेखा नदी पड़ा।

इसकी तीन मुख्य सहायक नदियाँ हैं—कोकरो, काँची और करकरी। ये सभी पूरब की ओर बहती हैं और खूँटी सबडिविजन के जल को बहा ले जाती है।

दक्षिणी कोयल—सुवर्ण रेखा नदी जिस पहाड़ी से निकलती है उसी पहाड़ी की उत्तरी ढाल से दक्षिणी कोयल नदी निकल कर उत्तर-पच्छिम की ओर राँची-लोहरदग्गा सड़क के समानान्तर में बहती है। लोहरदग्गा से ८ मील उत्तर-पूरब यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और दक्षिण तथा दक्षिण-पूरब की राह से सिंहभूम जिला में प्रवेश कर अन्त में गंगपुर स्टेट में शंख नदी से मिल जाती है। इस सम्मिलित धारा का नाम ब्राह्मणी नदी पड़ता है और यह कटक जिला होकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। छोटानागपुर में नदी को कोयल कहते हैं जिसका अर्थ है अनिश्चित।

दक्षिण कोयल की मुख्य सहायक नदियाँ कारो, चत, बोनाय और परास हैं। पहली तीन नदियाँ खूँटी सबडिविजन के पच्छिम भाग का और अन्तिम नदी सिसै थाने का जल अपने साथ लाती हैं।

शंख— शंख नदी जिले के उत्तर-पच्छिम से निकलती है। पहले यह राजादेरा अधित्यका के मध्य भाग होकर उत्तर की तरफ बहती है। कुछ दूर के बाद यह बिलकुल दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और सदनी घाघ नामक मनोहर जलप्रपात द्वारा बरवे की समतलभूमि में उतरती है। दक्षिण-पच्छिम की ओर बहकर बरवे के मैदान को पार करने के बाद यह बिलकुल दक्षिण दिशा की ओर बहती है और कुछ दूर तक राँची जिला और जसपुर स्टेट की सीमा का काम करती है। तब यह बरवे के मैदान को बोरू से अलग करनेवाली पहाड़ियों से होकर पच्छिम की ओर बहती है और समसेरा गाँव के पास गंगपुर स्टेट में प्रवेश कर दक्षिणी कोयल नदी से मिल जाती है। इस सम्मिलित धारा का नाम ब्राह्मणी हो गया है। कहते हैं कि शंख नदी में हीरे के टुकड़े पाये जाते हैं। कुछ स्थानीय सरदारों के पास हीरे होने तथा कुछ मुसलमानों के पुराने लेखों में इस बात का उल्लेख होने से इस किंवन्दति की सत्यता पर विश्वास किया जाता है। कोचेदेगी नामक स्थान से १० मील उत्तर पेरूआ घाघ के पास दंगधी ढाब या हीरा ढाब नामक स्थान है। स्थानीय लोग बताते हैं कि यहाँ पहले हीरे मिलते थे।

शंख की सहायक नदियाँ पलमन्द और बोमपै हैं। ये बीरू के पानी को अपने साथ बहा ले जाती हैं।

उत्तर कोयल—उत्तर कोयल नदी शंख नदी के उद्गमस्थान के पास से ही निकलती है और बिसनपुर की तंग घाटी से पलामू जिले में प्रवेश कर सोन नदी में मिल जाती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

राँची जिले की जलवायु विहार के सभी जिलों से अच्छी है। समुद्रतल से इसकी औसत् ऊँचाई २,००० फीट से भी अधिक रहने के कारण और जिलों की अपेक्षा यहाँ का तापमान कम रहता है। वैशाख-जेठ में दिन के समय यहाँ का तापमान १००° रहा करता है, हाँ कभी-कभी अधिक से अधिक १०४° या १०७° तक भी चला जाता है। गर्मी के दिनों में दिन कुछ गर्म रहने पर भी रात ठंढी रहती है। अन्य कितने पहाड़ी स्थानों की अपेक्षा यह स्थान बरसात के दिनों में भी अधिक सुखद और स्वास्थ्यप्रद रहता है। यहाँ वर्षा कुछ पहले से शुरू होती और देर में समाप्त होती है। यहाँ साल में वर्षा ५०'–६० इंच होती है। जाड़े के दिनों में यहाँ ठंढ खूब पड़ती है। पूस-माघ में ऊँचे और खुले स्थान में प्रायः सुबह में घास आदि पर पाला नजर आता है। पूस-माघ में अधिक से अधिक औसत तापमान ७२°, जेठ-वैसाख में ६६° और बरसात में ८४° रहा करता है। गर्मी के दिनों में नमी या आर्द्रता सैकड़े करीब ५०, बरसात के आरम्भ में करीब ७०, बरसात में करीब ६० और जाड़े में करीब ६० रहा करता है।

रोगों की शिकायत विहार के और जिलों की अपेक्षा यहाँ कम है। प्लेग यहाँ कभी नहीं हुआ। हैजे की शिकायत जब-तब थोड़ी-बहुत हो जाती है। चेचक का प्रकोप भी बहुत नहीं होता। १६३१ की गणना के अनुसार यहाँ बहरे-गूँगों की संख्या १,२४६, अंधों की संख्या २,५२४, कोढ़ियों की संख्या २६८ और पागलों की संख्या १,८८७ है। पागलों की इस बढ़ी हुई संख्या का कारण यहाँ काँके में पागलखाना का रहना है, जहाँ विहार

के सभी पागल इलाज के लिये भेजे जाते हैं। यूरोपियनों का भी यहाँ एक पागलखाना है, जहाँ उत्तर भारत के यूरोपियन पागल भी लाये जाते हैं। इटकी में खास तौर से क्षय रोग के लिये एक अस्पताल खुला है, जहाँ प्रान्त भर के इस रोग के रोगी इलाज के लिये आते हैं। सन् १६३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के १६ अस्पताल थे।

जानवर

राँची जिले में जानवरों को दशा अच्छी नहीं है। यहाँ के जानवर बहुत छोटे कद के होते हैं। गर्मी के दिनों में उन्हें और भी तकलीफ होती है। आदिम जाति के लोग मवेशियों को बाहर ही चराते हैं, घर पर प्रायः उन्हें चारा नहीं देते। चारा के लिये केवल धान का पुआल रहता है। ये लोग दूध के लिये गाय नहीं पालते हैं। खास कर मुंडा जाति के लोग गाय का दूध पीना पाप और गुनाह समझते हैं। उनका कहना है कि गाय का दूध केवल गाय के बच्चों के लिये छोड़ देना चाहिये। यहाँ गाय को लोग हल में जोतते हैं और उन्हें गुंदरी कहते हैं। भैंस पालने और उनकी नसल बढ़ाने की चाल यहाँ नहीं है। कड़े दोन खेतों को जोतने के लिये लोग बाहर से भैंस या भैंसे मँगाते हैं। हिन्दू लोग गाय या भैंस का दूध व्यवहार में लाते हैं। आदिम जाति के लोग गाय का मांस प्रायः खाते हैं, पर मांस के लिये वे गाय-बैल को मारते नहीं। ये लोग मांस के लिये भेड़ और बकरियों को पालते हैं। सूअर का मांस इन्हें बहुत प्रिय है। ये धार्मिक कार्यों में सूअर की बलि चढ़ाते और उनका मांस परिवार या गाँव के लोग मिलकर खाते हैं। इसलिये इनके

गाँवों में सूअर बहुत पाले जाते हैं। राँची में जानवरों का अस्पताल है। सरकारी डाक्टर घूम-घूम कर भी जानवरों का इलाज करते हैं।

जंगली जानवरों की तादाद यहाँ बहुत है। सैकड़ों आदमी और मवेशी हर साल इनके शिकार होते हैं। सन् १९११ से १९१३ तक यहाँ १७७ आदमी और १,१२२ मवेशी केवल बाघ से तथा १७२० मवेशी चीते से मारे गये थे। इस दरमियान में इस जिले में ३४ बाघ, २०७ चीते और १० भेड़िये मारे गये थे, जिसके लिये सरकार की ओर से इनाम बँटा था। यहाँ भालू भी बहुत पाये जाते हैं। ये भी खतरनाक जानवर होते हैं। यहाँ के जंगलों में जंगली साँढ़, जंगली कुत्ते, नीलगाय, हरिण वगैरह भी मिलते हैं।

इतिहास

प्राचीन काल— प्राचीन काल में इस जिले में अनार्यों या आदिम जाति के लोगों का निवास-स्थान था। आर्य लोग यहाँ बहुत पीछे आये। अब भी यहाँ आदिम जाति के लोगों की ही प्रधानता है। मुंडा लोगों की दन्तकथाओं से मालूम पड़ता है कि पहले असुर लोगों ने यहाँ आकर यहाँ के मूल-निवासियों पर विजय प्राप्त की। जिले के भिन्न-भिन्न भागों में बहुत से टील्हे मिलते हैं। मुंडा लोगों का कहना है कि ये टील्हे असुरों के समाधिस्थान पर ही बनाये गये थे। इनमें से कुछ टील्हों के अन्दर प्राचीन सभ्यता की बची-खुची चीजें मिली हैं। पास के अन्य जिलों की भाँति इस जिले मे भी प्रस्तर युग की कुछ वस्तुएँ मिली हैं। सन् १८६७ ई० में तमार थाने के बूढ़ाडीह नामक

स्थान में सुन्दर ढंग से बना हुआ एक काटने का औजार मिला था। हाल में भी पत्थर के बने हुए काटने के औजार बहुत जगहों में मिले हैं। ऐसे औजार ताँबे के बने हुए भी हैं। ताम्र-युग की कुछ और भी चीजें मिलती हैं। यहाँ मिट्टी के घड़े के अन्दर ताँबे और पीतल के टुकड़े मिले हैं, जो गहनों के बचे अंश मालूम पड़ते हैं। मिट्टी के ये बर्तन मुंडा लोगों के यहाँ बने हुए बर्तनों से बिलकुल भिन्न प्रकार के हैं। ये अधिक मजबूत भी हैं और इन पर चित्रकारी का काम भी है। इन सब चीजों से मुंडा लोगों की दन्तकथा की बातें बहुत कुछ सत्य मालूम पड़ती हैं और यह बात सिद्ध होती है कि कोल लोगों के आने के बहुत पहले यहाँ सभ्य जाति के लोगों का निवासस्थान था।

आज के छोटानागपुर नाम से प्रसिद्ध भूभाग का उल्लेख पुराने इतिहासकारों ने भी किया है। यूनानी इतिहासकार प्लीनी ने लिखा है कि पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र-पटना) के दक्षिण भीतरी भागों में मोंडे और सोरी जाति के लोग रहते थे। ये दोनों नाम वर्तमान मुंडा और सबर जाति के समझे जाते हैं। एक दूसरे इतिहासकार टोलेमी नें भी इन दो जातियों को मंडलै और सुब्रै नाम से लिखा है। जेनरल कनिंघम का कहना है कि सातवीं सदी के चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) ने जिस कर्ण सुवर्ण राज्य का उल्लेख किया है वह राँची जिला ही है, क्योंकि सुवर्णरेखा नदी के कारण यही स्थान कर्ण सुवर्ण पहचान में आता है।

मुंडा और ओराँव— मुंडा और ओराँव लोग यहाँ कब और कहाँ से आये इस विषय में मतभेद है। कुछ मानव-शास्त्रियों का कहना है कि मुंडा लोग भारत में उत्तर-पूरब से और द्राविड़ लोग उत्तर-पच्छिम कोने से आये। लेकिन इस

बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं है। अनुसंधान से यह भी पता चलता है कि यहाँ के द्राविड़ लोगों का सम्बन्ध भारत के दक्षिण और पूरब के द्वीपों की जातियों से है। लेकिन मुंडा और हिन्दुओं की दन्तकथाओं से मालूम होता है कि भारत के उत्तर-पच्छिम भाग में उपर्युक्त दोनों जातियों की मुठभेड़ आर्यों से हुई थी और आर्यों ने उन्हें परास्त कर धीरे-धीरे पूरब की ओर भगा दिया था।

मुंडा और ओराँव छोटानागपुर में कब आकर बसे इसका पता नहीं है, लेकिन इतना ठीक है कि पहले यहाँ मुंडा लोग आये और जिले के पच्छिम और उत्तर-पच्छिम भाग से आकर यहाँ बसे। ओराँव लोगों की दन्तकथा से मालूम होता है कि ये लोग यहाँ रोहतास की अधित्यका से आये जहाँ मुंडा लोग भी पहले रह चुके थे। कहते हैं कि जब अधिक शक्तिशाली जाति चेरो या खरवार लोगों के उत्पात से ये लोग वहाँ से भागे तो ये दो शाखाओं में बँट गये। एक शाखा राजमहल पहाड़ी में जाकर बसी, जिसकी सन्तान आज माले नाम से प्रसिद्ध है। दूसरी शाखा राँची जिला आकर बसी। यहाँ मुंडा और ओराँव लोग बहुत हेल-मेल से रहने लगे। मुंडा लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे लोग रिशा मुंडा के नेतृत्व में पहले-पहल मुरिमा नामक गाँव में आकर बसे थे। रिशा का एक अनुयायी कोरूम्बा वहाँ से हट कर एक दूसरे गाँव में बसा जो आज कोराम्बे कहलाता है। इसी तरह दूसरे अनुयायी सुतिया ने सुतियाम्बे गाँव बसाया। इन लोगों की एक शाखा दक्षिण कोयल नदी होकर सिंहभूम में जा बसी जिसकी सन्तान आज हो कहलाती है।

मुंडा लोगों के गाँव को हातू कहते थे। हातू के धार्मिक सरदार को पाहान और सामाजिक सरदार को मुंडा कहते थे।

कुछ लोग कहते हैं कि इसी मुंडा शब्द से जाति का नाम मुंडा पड़ गया। जब बहुत से गाँव बस गये तो उसके समुदाय को परहा या पट्टी कहने लगे और उसके सरदार को मानकी। ओराँव लोगों का भी इसी तरह का संगठन था। दन्तकथाओं से मालूम होता है कि ईसा की छठी शताब्दी में इन मानकियों ने मिलकर सुतियाम्बे के मानकी को प्रधान मानकी या राजा बनाया जिसके वंशज छोटानागपुर के नागवंशी राजा हैं। इस राजघराने की अपनी पारिवारिक कहानी तथा ओराँव और मुंडा की दन्त-कथाओं में बहुत कुछ समता है। पारिवारिक कहानी के अनुसार इस वंश के प्रथम नरेश के पिता नागों के देवता पुंडरीक नाग और माता काशी के एक ब्राह्मण की पुत्री पार्वती थीं। दोनों जब पुरी की यात्रा कर रहे थे तो रास्ते में सुतियाम्बे गाँव में पार्वती को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। अपनी स्त्री के आग्रह करने पर जब पुंडरीक नाग ने अपना असली परिचय दिया तो वह अचानक नाग (सर्प) हो गया। उसकी स्त्री शोक के मारे चिता में जल-कर सती हो गयी। तब उसके नवजात बच्चे को वहाँ के प्रधान मानकी ने अपने यहाँ रख लिया और उसका नाम पड़ा फणि मुकुट राय। वह तीक्ष्ण बुद्धि का था इसलिये मानकी ने अपना उत्तराधिकारी उसे ही बनाया। गरचे यह घटना ६४ ई० की बतायी जाती है पर दूसरे प्रमाणों से यह छठी शताब्दी की बात मालूम पड़ती है। कहते हैं कि नागवंशियों के कारण ही इस भूभाग का नाम नागपुर पड़ा। कुछ लोग कहते हैं कि भोंसला के नागपुर से इसका पार्थक्य प्रगट करने के लिये लोग इसे छोटानागपुर कहने लगे। परन्तु कुछ लोग यह भी बताते हैं कि राँची के पास के छुटिया गाँव के कारण, जहाँ पहले नाग-वंशी सरदार लोग रहते थे, इस भूभाग का नाम छोटानागपुर

पड़ा। सन् १७९२ के रोनेल के बनाये नक्शे और सन् १८१५ के हैमिल्टन के गजेटियर में छोटानागपुर शब्द मिलता है।

आर्यलोग छोटानागपुर को जंगलतराई को झारखण्ड के नाम से जानते थे। आर्य लोगों का यहाँ कब प्रवेश हुआ, यह ठीक-ठीक बताना कठिन है। कहते हैं कि छोटानागपुर के राजा ने अपनी सहायता के लिये राजपूत, ब्राह्मण तथा दूसरी हिन्दू जातियों को यहाँ बुलाया था। बाहर के हिन्दू राजाओं के साथ यहाँ के राजा का कैसा सम्बन्ध था इसका भी पता नहीं है।

मुसलमान-काल—मुसलमानी काल में पहले-पहल शेरशाह ने झारखंड के राजा पर चढ़ाई करने के लिये सेना भेजी थी। चढ़ाई का उद्देश्य राजा से श्यामचन्द्र नामक एक उजला हाथी लेना था, जो अपनी सूँड़ से अपने बदन पर धूल कभी नहीं फेंकता था। जब शेरशाह की विजय हुई और वह हाथी पा सका तो उसने समझा कि अब वह दिल्ली का बादशाह जरूर होगा। इसके करीब पौन शताब्दी बाद इस भूभाग को मुसलमानी राज्य में मिलाने के लिये इस पर चढ़ाई हुई। आइन-ए-अकबरी में इस भूभाग को कोकराह लिखा है। यह नाम अब भी इस जिले के मुख्य परगने का है। उसमें लिखा है कि अकबर के राज्य के तीसवें वर्ष सन् १५८५ में शाहबाज खाँ ने कोकराह में एक सेना भेजी। वहाँ के राजा ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

मुसलमान लोग इस प्रान्त को नागपुर या कोयरा उड़ीसा के नाम से भी जानते थे। यह स्थान हीरे के लिये प्रसिद्ध होने के कारण मुसलमानों के लिये आकर्षक था। इस स्थान पर विजय प्राप्त करने के बाद बिहार का सूबेदार बार-बार यहाँ सेना भेजता था और यहाँ से दो-तीन हीरे पाकर सन्तुष्ट हो जाता था।

यहाँ के राजा ने बादशाह के लिये भी काम किया। १५९१ ई० में कोकराह के मधु और लक्ष्मीराय ने युसुफ चक काश्मीरी के अधीन झारखण्ड होकर मेदिनीपुर जानेवाली सेना में काम किया था। यह सेना उड़ीसा की विजय के लिये मानसिंह की अधीनस्थशाही सेना में शामिल होने गयी थी।

हीरे के लोभ के कारण मुसलमान बादशाहों की नजर इस भूभाग पर बेतरह गड़ी थी। उनका विश्वास था कि यहाँ के हीरे लाख-लाख रुपये के होते हैं। नजराना आदि के तौर पर थोड़े-थोड़े हीरे मिलने से उन्हें सन्तोष नहीं हो रहा था। इस लिये बादशाह जहाँगीर ने इब्राहीम खाँ के बिहार के सूबेदार नियुक्त होने पर उसे इस भूभाग पर कब्जा कर वहाँ के राजा को मार भगाने का हुक्म दिया। इब्राहीम खाँ ने १६१६ ई० में छोटानागपुर पर चढ़ाई की। इस पर यहाँ के राजा ने उसके पास कुछ हीरे और हाथी भेजे। लेकिन इतने से इब्राहीम राजी नहीं हुआ। उसने राजा को कैद कर उसके सारे हीरे और २३ हाथियों के साथ उसे दिल्ली भेज दिया। छोटानागपुर राज्य की पारिवारिक कहानी के अनुसार यह राजा इस वंश का ४५ वाँ राजा दुरजनसाल था। वह दिल्ली से ग्वालियर भेज दिया गया जहाँ वह बारह वर्ष तक कैद रहा। एक बार उसके हीरे पहचानने के गुण पर प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे छोड़ दिया। वह फिर से छोटानागपुर का राजा बना दिया गया और उसे ६,००० रुपया सालाना कर देने का हुक्म हुआ। डेढ़ सौ वर्षों तक राजा का मुसलमानों के साथ कोई झगड़ा-तकरार नहीं हुआ। हाँ, कर की वसूली के लिये कभी-कभी बादशाह को सेना भेजनी पड़ती थी। १७२४ ई० में पटना के सूबेदार ने छोटा-नागपुर पर चढ़ाई की पर एक लाख रुपया नजराना मिलने पर

वह लौट गया। इसमें साढ़े चार हजार रुपये नकद थे और बाकी हीरे। १७३१ ई० की चढ़ाई भी इसी तरह रोकी गयी। लेकिन इस बार सूबेदार को यहाँ राजा के साथ खास मुकाबला करना पड़ा था। आखिर इस बात पर समझौता हुआ कि राजा की ओर से रामगढ़ का घटवाल सूबेदार को बारह हजार रुपया दे। इस समय राजा का आधिपत्य रामगढ़ और पलामू के घटवाल पर भी हो गया था, गरचे यह आधिपत्य शायद नाम-मात्र का ही था।

इस समय तक यहाँ बहुत से हिन्दू और मुसलमान बस गये थे। जिले के अन्दर जहाँ-तहाँ बहुत-सी ऐसी बस्तियाँ हैं जहाँ सब के सब मुसलमान ही हैं। मुसलमान लोग तो अपना सिक्का जमाने के लिये यहाँ आ बसे थे, पर हिन्दुओं को राजा ने अपना आधिपत्य आदिम जातियों पर ठीक तरह से कायम रखने के लिये बुलाया था। राजा ने अपने हिन्दू सहायकों को आसान शर्तों पर जागीरें दी थीं। ये जागीरदार राजा को भीतरी या बाहरी शत्रु से बचाने के लिये अपने यहाँ सैनिक रखते थे। जिले के भिन्न-भिन्न स्थानों के हिन्दू मन्दिरों से पता चलता है कि इस समय राजा ने हिन्दू धर्म फैलाने की बहुत चेष्टा की थी। दोयसा का राजमहल और मंदिर १६८३ से १७७१ ई० के बीच बना था। छुटिया के मंदिर पर १६८५ ई० की और जगन्नाथ पुर के मंदिर पर १६६१ ई० की तारीख दी हुई है। बोरियो के मंदिर पर लिखा है कि यह १६६५ ई० में बनना आरम्भ हुआ था और सन् १६८२ ई० में पूरा हुआ था और इसके बनने में १४,००१ रुपया खर्च पड़ा था। तिमली में नागवंशी ठाकुरों के किले के एक कुएँ में १७३७ ई० की तारीख है। राज-दरबार के ब्राह्मणों को भी जमीन या गाँव वृत्ति में मिले थे। कहते हैं कि

इन्हीं जागीरदारों के उत्पात से आगे चलकर १६ वीं सदी में आदिम जातियों ने कई बार बलवा मचाया।

अंगरेजी काल—१७६५ ई० में जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल-बिहार की दीवानी मिली तो यह जिला भी अंगरेजों के हाथ में चला गया। १७७२ ई० में छोटानागपुर के राजा दीप-नाथ साही ने कैप्टेन कैमेक से मिलकर अंगरेजों की अधीनता स्वीकार की। राजा को पगड़ी बदलौअल की रस्म में जवाहरों से जड़ी अपनी बेशकीमती पगड़ी कैमेक को देनी पड़ी। राजा का सालाना कर ६ हजार से १२ हजार और फिर १५ हजार बढ़ा दिया गया। सन् १७८० में जब रामगढ़ जिला कायम किया गया तो छोटानागपुर राज्य को उसके अधीन होना पड़ा। उस वक्त इस जिले के अन्दर वर्तमान हजारीबाग और पलामू जिले, गया, मानभूम और मुंगेर जिले के कुछ अंश तथा खास छोटा-नागपुर राज्य थे। पारी-पारी से शेरघाटी (गया जिला) और चतरा (हजारीबाग जिला) में जिले का सदर आफिस रहता था। पहले न्याय और पुलिस का इन्तजाम स्थानीय जमींदारों के हाथ में रहता था; पीछे अंगरेजी सरकार ने इसके लिये अलग इन्तजाम किया।

सन् १८३१-३२ में मुंडा, ओराँव आदि आदिम जाति के लोगों ने हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्ख जागीरदारों और महाजनों से ऊब कर जोरों का बलवा मचाया था। बलवे को दबाने के बाद सन् १८३४ में खास छोटानागपुर, पलामू, खड़ग-डीहा, रामगढ़, कुंडू, जंगलमहाल (बिसनपुर, सैन पहाड़ी और शेरगढ़ छोड़कर) दालभूम परगना और कुछ अधीनस्थ स्टेटों को मिलाकर दक्षिण-पच्छिम सीमाप्रान्त एजेन्सी कायम की गयी और साधारण कानून से यहाँ का काम होना बन्द किया

गया। इस एजेन्सी का सदर दफ्तर किसनपुर (वर्तमान राँची जिला के अन्दर) बनाया गया और यहाँ के प्रधान अफसर को गवर्नर जेनरल का एजेन्ट कहा जाने लगा। पहला एजेण्ट कैप-टेन टॉमस विलकिनसन हुआ। इस एजेन्ट के तीन मुख्य सहायक थे जिनके हाथ में मानभूम, लोहरदगा और हजारी-बाग के विभाग रखे गये। लोहरदगा विभाग के अन्दर मोटे तौर पर वर्तमान राँची और पलामू जिले थे। इसका सदर आफिस लोहरदगा (राँची जिला) में ही था। १८५४ ई० में एजेन्ट का पद उठा दिया गया और उसकी जगह कमिश्नर का पद कायम हुआ। १८६१ ई० से लोहरदगा जिले का प्रधान अफसर डिपटी कमिश्नर कहलाने लगा। जिले का सदर आफिस १८४२ ई० में ही लोहरदगा से राँची चला आया। ईसाई मिशन १८४२ ई० में इस जिले में पहुँचा और कुछ ही वर्षों के बाद बड़ी तेजी से लोगों को ईसाई बनाने का काम उसने शुरू किया।

सिपाही-विद्रोह—१८५७ के सिपाही विद्रोह के समय रामगढ़ सैनिक दल का सदर आफिस राँची ही था। जब हजारीबाग के सैनिकों के बीच अशान्ति की बात सुनी गयी तो उनके हथियार छीनने के लिये लेफ्टिनेन्ट ग्राहम के अधीन कुछ सैनिक राँची से रवाना हुए। रास्ते में ही जब उन्हें मालूम हुआ कि हजारीबाग के सैनिकों ने बलवा कर दिया है तो उनमें से पैदल सैनिक दल बिगड़ खड़ा हुआ और कमिश्नर कर्नल डाल-टन के चार हाथी तथा तोप-बन्दूक छीन कर राँची को वापस चला। विद्रोहियों के राँची वापस होने की बात सुनकर कमि-श्नर डालटन और दूसरे अफसर राँची छोड़कर हजारीबाग भागे। राँची पहुँच कर विद्रोही लोगों ने कुछ अफसरों के

बंगलों और कचहरियों में आग लगा दी, जेल तोड़कर कैदियों को छोड़ दिया, खजाना लूट लिया और जर्मन मिशन चर्च पर बन्दूक चलायी। करीब डेढ़ महीने तक शहर में अड्डा जमाये रहने के बाद विद्रोही लोग कुंवरसिंह से मिलने के लिये रोहतासगढ़ की ओर चल पड़े। कुछ दिन के बाद सहायक सेना के पहुँच जाने पर कर्नल डालटन राँची लौटे और फिर यहाँ अपनी सल्तनत जमायी।

फिर उपद्रव—सन् १८८७, १८८९ और १८९५ में जिले के अन्दर आदिम जातियों की पुरानी शिकायतों को लेकर फिर विद्रोह मचा। इनमें १८९५ का बिरसा द्वारा चलाया विद्रोह प्रसिद्ध था। विद्रोह किसी तरह शान्त किया गया।

सर्वे सेटलमेन्ट—बलवे के बाद आदिम जातियों की शिकायतों को दूर करने के लिये १९०२ से १९१० ई० तक जिले की जमीन की नाप की गयी और रैयतों के स्वत्वाधिकार का रजिस्टर तैयार किया गया। लगान कानून में भी कुछ सुधार हुए।

लोग, भाषा और धर्म

राँची बिहार का सबसे बड़ा जिला है, लेकिन यहाँ की जनसंख्या बिहार के सब से अधिक जनसंख्यावाले जिले दरभंगे से करीब आधी है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १५,६७,१४९ है, जिसमें ७,७७,०६३ पुरुष और ७,९०,०८६ स्त्रियाँ हैं। इससे ५० वर्ष पहले यहाँ की जनसंख्या १०,५७,८३१ थी। इस तरह इधर आधी शताब्दी में यहाँ ५,०९,३१८ आदमी अर्थात फी सैकड़े ४८ आदमी बढ़े। राँची जिले में फी

वर्ग मील के अन्दर औसतन २२१ आदमी रहते हैं, जहाँ प्रान्त के सबसे सघन जिले मुजफ्फरपुर में फी वर्ग मील के अन्दर ६६६ आदमी हैं। सदर सबडिविजन में फी वर्ग मील में २८३, खुँटी सबडिविजन में २४२, गुमला सबडिविजन में १८३ और सिमदगा सबडिविजन में १६३ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में इस जिले में बाहर से आये हुए लोगों की संख्या २७,४५२ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या ३,४८,१७२ थी। सन १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं की जा सकी थी। इस जिले में राँची, लोहरदगा और बुंदू ये तीन शहर तथा ३,८३८ गाँव हैं। इन शहरों की कुल जनसंख्या ६४,५८१ है।

भाषा—सन १९३१ की गणना के अनुसार जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य भाषाओं के अन्दर ७,१४,०२० लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी १४,१७१ की बंगला ७,८९७ की उड़िया, १०८२ की मारवाड़ी, ३१७ की नेपाली और १५० की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; मुंडा भाषा श्रेणी के अन्दर ३८३,०३५ की मुंडारी, ६६,१८५ की खड़िया, २,१८४ की असूरी, ६९० की तूरी, ५४८ की संताली, ५०२ की कोरवा, ८७ की माहिली, २१ का बिरहोर और १४की हो; द्राविड़ भाषा श्रेणी के अन्दर ३,७५,३१८ की ओराँव और ७६ की तामिल, तेलगू आदि अन्य द्राविड़ भाषाएँ; २५ की अन्य भारतीय भाषाएँ; १० की भारतीय भिन्न एशियाई भाषाएँ; ७१३ की अंगरेजी और १०४ की अन्य यूरोपीय भाषाएँ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से सैकड़े ४५ आदमी हिन्दुस्तानी, २९ मुंडा भाषाएँ और २४ द्राविड़ भाषाएँ बोलने वाले हैं।

इस जिले में हिन्दुस्तानी भाषा की बोली भोजपुरी का अपभ्रंश रूप है लेकिन इस पर मगही का भी प्रभाव पड़ा है जो

इसे तीन ओर से घेरे हुए है। इसके पच्छिम में बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी बोली का भी प्रभाव इस पर है। इसके शब्द-भंडार में अनार्य भाषाओं के भी शब्द आये हैं। भोजपुरी के इस अपभ्रंश रूप को साधारण तौर पर नागपुरिया अर्थात छोटा नागपुर की बोली कहते हैं। राँची जिले में इसे सदान या सदरी भी कहा जाता है। आदिम जाति के लोग इसे 'दिकू काजी' अर्थात् दिक्कुओं या बाहरी लोगों की भाषा कहते हैं। 'नोट्स आन नागपुरिया हिन्दी' नाम की एक किताब प्रकाशित हुई है जिसे रेवरेण्ड ई० एच० हिटले ने लिखा है। रेवरेन्ड पी० इड-नोज ने बाइबल का अनुवाद भी नागपुरिया में किया है। जिले के पूरब भाग के अन्दर पाँच परगनों की एक उप-अधित्य का में लोग नागपुरिया नहीं बोलते। यहाँ की बोली मगही का एक रूप है जिसे पाँच-परगनिया कहते हैं। जिले के दक्षिण-पूरब कोने में जैनियों का एक समुदाय पच्छिमी बंगला की एक बोली बोलता है जिसे मराक्की कहा जाता है। जिले के उत्तर भाग में हजारीबाग से आये हुए लोग अब भी मगही बोलते हैं।

राँची जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है—

हिन्दू	८,६६,४६२	सिक्ख	१६
आदिम जाति	३,६८,२४७	बौद्ध	१३
ईसाई	२,६२,६०८	पारसी	४
मुसलमान	६६,०४७	आर्य्य	२१
जैन	६६८		

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ हिन्दू प्रति सैकड़े करीब ५६, आदिम जाति २३, ईसाई १७ और मुसलमान ४ हैं।

हिन्दू जाति के लोगों में संख्या के हिसाब से कमार, ग्वाला, तेली, राजपूत, कुम्हार, ब्राह्मण आदि मुख्य हैं। मुसलमानों में जोलाहा मुख्य हैं उसके बाद शेख और पठान। आदिम जातियों में यहाँ सबसे अधिक ओराँक हैं, तब मुन्डा। उसके बाद खड़िया, कुरमी आदि का स्थान है। आदिम जाति के भिन्न भिन्न फिरकों के कुछ लोग अपने को आदिम जाति, कुछ हिन्दू और कुछ ईसाई बताते हैं। ऐसे फिरकों में चिकबरैक, घासी, गोंद, महली, पन, लोहार, भोगता, झोरा ,रौतिया, गोरैत आदि मुख्य हैं। दर असल निम्न श्रेणी के हिन्दू और आदिम जाति में फर्क बताना कठिन है। व्यापक अर्थ में सभी आदिम जातियों को हिन्दू कहना गलत नहीं है। तब भी जो लोग मुख्य रूप से आदिम जाति में गिने जाते हैं वे हैं—मुन्डा, ओराँव, खड़िया, तूरी, असुर, कोरवा, बिरहोर, नगेसिया आदि। लेकिन इन लोगों में भी बहुतेरे अपने को हिन्दू कहते हैं। जिले की प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की संख्या अलग दी गयी है।

ईसाई—इस जिले में ईसाइयों की संख्या प्रान्त के सभी जिलों से अधिक है, बल्कि बिहार प्रान्त में जितने ईसाई हैं उनमें आधे से अधिक राँची जिले में हैं। यहाँ जिले की जनसंख्या का छठा भाग ईसाई हो गया है। ईसाई होने वाले मुख्यकर आदिम जाति के लोग हैं। जमींदारों, तालुकेदारों, महाजनों और पुलिसवालों के अत्याचार से शरण पाने की आशा से ही अधिकांश लोग यहाँ ईसाई हुए हैं। यहाँ एक एक बार गाँव के गाँव ईसाई हो जाते हैं। प्रारम्भ में लोग ईसाइयों का विरोध करते थे और उन पर पत्थर फेंकते थे। करीब १८४२ ई० में यहाँ ईसाई मिशन आया था औ पाँच सात वर्षों के प्रचार के बाद वह यहाँ दो चार ईसाई बना सका था। यहाँ पहला

ईसाई चर्च १८५५ ई० में बना था। धीरे धीरे यहाँ ईसाइयों की संख्या बढ़ती गयी। इस समय यहाँ २,६२,६०८ ईसाई हैं जिनमें ६३० यूरोपियन आदि, २०५ एंगलो इण्डियन और बाकी भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

राँची जिले का रकबा ४५,४५,०४३ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से १८,५३,२०० एकड़ जमीन जोती बोयी गयी थी और ६,३७,२६० एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,८१,७१३ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १२,५२,३४७ एकड़ में जंगल था। ४,२०,५२३ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़ें का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ५५ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका करीब चौथाई भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ८½ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता। सैकड़े २७½ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े ९ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े सिर्फ २ भाग में दो फसल होती है।

इस जिले की जोती बोयी जानेवाली जमीन दो श्रेणियों में बाँटी जाती है—दोन और टाँड़। दोन नीची जमीन को कहते हैं, जिसमें केवल धान पैदा किया जाता है। टाँड़ ऊँची जमीन को कहा जाता है जहाँ मोटा धान तथा रब्बी और दलहन-

तेलहन उपजाया जाता है। खूंटी सबडिविजन में इन दो प्रकार की जमीन को क्रम से लोयोंग और पीरी कहते हैं।

सब से नीची या गहरी दोन जमीन को गहरा दोन कहा जाता है। इसमें भी सब से अच्छी जमीन को कुदर कहते हैं। पंच परगना के उस भाग में, जहाँ बंगला बोली जाती है, गहरा दोन को बहल या दवर कहते हैं। गहरा दोन से कुछ ऊँची जमीन को सोकरा और उससे कुछ ऊँची तथा टाँड़ से कुछ नीची जमीन को चौरा या बदे कहा जाता है। सेटलमेन्ट रिपोर्ट में यहाँ की दोन जमीन को चार भागों में बाँटा गया है—एक वह जमीन जो सदा सर्द रहती है, और जिसमें जाड़ा और गर्मी दोनों ऋतुओं में धान पैदा होता है। दूसरी वह जमीन जिसमें अगहन में कटनेवाला धान उपजता है, तीसरी वह जमीन जहाँ कार्तिक में धान कटता है और चौथी वह जमीन जिसमें भादो और आसिन में कटनेवाला धान पैदा किया जाता है। यह चार प्रकार की जमीन कुदर, गहरा, सोकरा और चौरा दोन नाम की जमीन ही है।

टाँड़ जमीन भी उपजाऊपन के ख्याल से कई भागों में बाँटी जाती है। गाँव के बिलकुल पास की जमीन को डिहरी डाँड़ कहते हैं। घर के बगल की बाड़ी, जिसमें तरकारी मसाला पैदा होता है, और बीरी बाड़ी, जिसमें धान वगैरह की बीज बोयी जाती है, इसीमें शामिल है। गाँव से दूर सब से खराब जमीन को रुगरी टाँड़ कहते हैं। सेटलमेन्ट रिपोर्ट में टाँड़ जमीन को तीन भागों में बाँटा गया है। पहले भाग में बाड़ी जमीन, दूसरे में गाँव से दूर की अच्छी जमीन और तीसरे में गाँव से दूर की बुरी जमीन आती है।

यहाँ की भिन्न भिन्न प्रकार की मिट्टियों के नाम पँकुआ (पाँकी), नगरा (काली पाँकी मिट्टी), खिरसी (बालू मिट्टी बराबर २ मिली हुई), रुगरी (कंकड़ीली); बल (बलुआही) और बल मटिया हैं।

जिले की कुल जोत जमीन के सैकड़े ५३½ भाग में भदई, ३४ भाग में अगहनी, १२ भाग में रब्बी और २½ भाग में कन्द-मूल और फल तरकारी होती है। जिले की मुख्य उपज धान है। ऊँची जमीन में होनेवाले धान को गोरा धान कहते हैं। नीची जमीन में भदई और अगहनी धान होता है। अगहनी फसल में यहाँ धान मुख्य है। भदई फसल में भी कुछ धान होता है। भदई के अन्दर गोंदली, सुरगुजा, उरीद, मरूआ, उपजता है, यहाँ रब्बी की फसल मुख्य नहीं है। रब्बी में गेहूँ और जौ अधिक पैदा नहीं होता। रब्बी की फसल में रहर और सरसों प्रधान हैं। तम्बाकू पंच परगना में होता है। अब ऊख की खेती कुछ बढ़ी है। मसाला, तरकारी और मकई लोग बाड़ी की जमीन में लगाते हैं। यहाँ कपास विहार के और जिलों की अपेक्षा अधिक पैदा होता है। क्योंकि आदिम जाति के लोग प्रायः अपने यहाँ के कपास से अपने यहाँ तैयार हुए मजबूत कपड़े ही पहनना पसन्द करते हैं। राँची और लोहरदगा के आसपास लोग फल और तरकारी की खेती विशेष रूप से करते हैं। यूरोपीय ईसाइयों के उद्योग से आदिम जाति के ईसाई लोग टोमैटो बहुत उपजाते हैं। हिन्दू लोग घर के आस-पास केला, पपीता, अमरूद वगैरह लगाते हैं। यहाँ हिन्दू घरों की पहचान प्रायः यही रहती है। करंज वृक्ष के फल से तेल तैयार किया जाता है जो दवा के काम में, दीपक में जलाने के काम में तथा घून से बचाने के लिये लकड़ी रंगने के काम में आता है।

राँची जिले में चाय की भी खेती होती है। यहाँ पहले पहल १८६२ ई० में चाय की खेती शुरू हुई थी। चाय अधिकतर राँची के पास होतवार और पलान्दू नामक स्थानों में पैदा की जाती है। इस समय जिले के अन्दर पचीसों चाय बागान हैं और करीब दो हजार एकड़ में इसकी खेती होती है। इस जिले में कहवा भी उपजाया जाता है।

यहाँ खेती के लिये सिंचाई का प्रबन्ध विशेष कुछ नहीं है। कुल जोत जमीन के सैकड़े सिर्फ १ भाग में सिंचाई होती है।

पेशा, उद्योग-धंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार राँची जिले में हजार आदमियों में ३२६ आदमी कमानेवाले और ६७४ आदमी उनके आश्रित हैं। उपर्युक्त ३२६ आदमियों में २७४ आदमी कृषि और पशुपालन में, २० उद्योग-धंधे में, ८ व्यापार में, ३ वकील मुख्तार, डाक्टर वैद्य, पंडा पुरोहित आदि के पेशे में, १ सेना और पुलिस में, १ गमनागमन जैसे रेल, सड़क, डाक आदि में तथा १९ विविध कार्यों में लगे हुए हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों में सैकड़े ८४ आदमी खेती का काम करते हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधे और व्यापार भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में हैं और ये केवल गाँवों की साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हैं। यहाँ के मुख्य उद्योग-धंधों में तसर, लाह और चाय तैयार करना है।

तसर—इस जिले में मुख्यकर तमार और खूँटी थाने में

तसर के कीड़े पाले जाते और उनके कोये से धागे तैयार किये जाते हैं। जंगली कोये बहुत कम मिलते हैं। तसर के कीड़े साधारणतः आसन के वृक्ष पर पाले जाते हैं। ईसाई मिशन अपने धर्म में आये हुये लोगों को इस उद्योग-धंधे में लगने के लिये प्रोत्साहित करता है।

सूती कपड़े—आदिम जाति के लोग प्रायः अपने यहाँ बने मोटे और मजबूत देशी कपड़े पहनना ही पसन्द करते हैं। इसलिये यहाँ कपास भी उपजाये जाते हैं, स्त्रियाँ सूत कातती हैं और जहाँ-तहाँ जुलाहे, चिक बरैक और पन लोग छोटे-छोटे करघों पर कपड़ा तैयार करते हैं। मुंडा लोग इस व्यवसाय को बहुत नीच काम समझते हैं। ईसाई मिशन ने नये ढंग के करघे लाकर इन लोगों को इस काम में लगने को उत्साहित किया था, पर इसमें सफलता न हो सकी।

लाह—लाह तैयार करने का काम जिले भर में होता है पर खूँटी सबडिविजन में और सदर सबडिविजन के कुछ अंश में विशेष रूप से होता है। लाह के कीड़े पलास, कुसुम और बैर के पेड़ों पर पाले जाते हैं। जब वृक्ष की टहनियों पर लाह जम जाती है तो उन्हें काटकर निकाल लिया जाता है और फिर कई क्रियाओं द्वारा विशुद्ध लाह तैयार की जाती है। इसकी फसल बैसाख और कातिक में तैयार होती है। पहले लोग पेड़ों पर स्वाभाविक रूप से जमी हुई लाह को ही काटकर इकट्ठा करते थे पर अब इसका व्यापार बढ़ जाने से इसके कीड़े खास तौर से पाले जाते हैं।

लोहा—खान से कच्चा लोहा निकालने का कार्य मुख्यतः असुर और लोहरा तथा कभी कभी ओराँव और मुंडा लोग भी करते हैं। लोहे की टाँगी (कुल्हाड़ी) या फरसा तथा दूसरे औजार तैयार

करने का काम लोहरा और लोहार लोग करते हैं। यहाँ का लोहा बहुत मामूली किस्म का होता है।

हीरा और सोना—इतिहास में यहाँ हीरा पाये जाने का उल्लेख बहुत आया है, पर इस समय यह कहीं नहीं पाया जाता। सोनपत घाटी में सोना तैयार करने का व्यवसाय बढ़ाने की बहुत बार चेष्टा की गयी पर सफलता कभी नहीं हुई। यहाँ इस काम के लिये लायी गयी मशीन अब भी बुरी अवस्था में पड़ी नजर आती है। शंख तथा दूसरी नदियों में झोरा लोग अब भी बालू से सोना निकालने का काम करते हैं। मगर दिन भर परिश्रम करने पर सोना मिलता भी है तो सिर्फ तीन-चार आने मूल्य का ही।

फैक्टरियाँ—इस जिले के अन्दर सन् १९३९ में १२ फैक्टरियाँ थीं, जिनमें फैक्टरी एक्ट लागू था। इनमें ४ लाह की, ३ चाय की, २ चावल, दाल, आटा और तेल की तथा १-१ इंजिनियरिंग, शराब और सिमेन्ट-चूना की फैक्टरियाँ थीं।

अन्य उद्योग-धंधे—बिरहोर तथा दूसरे लोग जंगली घासों से रस्सी तैयार करते हैं। तूरी और डोम टोकड़ी बिनते हैं। लकड़ी का काम कमार और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम कुम्हार करते हैं। इसी तरह और भी छोटे-छोटे काम लोगों में बँटे हैं।

व्यापार—जिले में राँची, लोहरदगा, गुमला, पालकोट, गोविन्दपुर, बुंदू आदि व्यापार के केन्द्र हैं। यहाँ से चावल, तेलहन, लाह, चमड़ा, चाय, लकड़ी, आदि बाहर जाता तथा नमक, चीनी, किरासन तेल, कोयला, कपड़ा तथा बहुत सी छोटी बड़ी चीजें बाहर से आती हैं।

आने जाने के मार्ग

रेलवे—राँची जिले में बी० एन० आर० (बंगाल नागपुर रेलवे) की लाइन १६०५ ई० में बनने लगी थी और १६०७ ई० के नवम्बर में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर एन्ड्रयू फ्रेजर ने इसका उद्घाटन किया था। यह लाइन पुरुलिया से पच्छिम की ओर राँची और फिर वहाँ से लोहरदगा को गयी है। लाइन की चौड़ाई सिर्फ २½ फीट है। पुरुलिया से राँची तक इस लाइन की लम्बाई ७२½ मील है, जिसमें ३६½ मील राँची जिले में पड़ती है। पुरुलिया से राँची के बीच १३ रेलवे स्टेशन हैं, जिनमें मुरी. सीली, कीता, बरबादाग, जोनहा, ताती, सिलवई और नामकोम राँची जिले में हैं। राँची से लोहरदगा जानेवाली लाइन सन् १६११ में बनने लगी थी और सन् १६१३ में वह पूरी हो गयी थी। राँची से लोहरदगा तक लाइन की लम्बाई ४२¾ मील है और इन दोनों के बीच में अरगोरा, पिरुका, इटकी, तांगेर बांसली, नरकोपी, नागजुआ और दूरगाँव रेलवे स्टेशन हैं। जिले की उत्तरी सीमा के पास ईस्ट इण्डियन रेलवे की बरकाकाना लूप लाइन पर जिले के अन्दर राय, खलारी और मैक्लास्कीगंज ये तीन रेलवे स्टेशन हैं।

सड़कें—सन १८३४ में जब इस भूभाग के शासन के लिये एजेन्सी कायम हुई तो राँची से आसपास के जिलों के प्रधान शहरों में जाने के लिये सड़कें बनायी गयीं। १८७० ई० में यहाँ १७५ मील लम्बी सड़कें थीं। इनमें मुख्य थीं—राँची से सीली और राँची से बरखेता जानेवाली सड़कें। १८८८ ई० में यहाँ कच्ची-पक्की ७०० मील सड़कें हो गयीं। सन् १६३५-३६ में जिले के अन्दर ८७० मील सड़कें हुई जिनमें ५४ मील पक्की सड़कें,

५८४ मील कच्ची सड़कें और २३२ मील और छोटी-छोटी सड़कें थीं।

राँची से चार पक्की सड़कें पुरुलिया, हजारीबाग, डाल्टनगंज और चाइबासा को गयी हैं। राँची-पुरुलिया सड़क ७४½ मील लम्बी है जिसमें ३८½ मील राँची जिले में हैं। इस सड़क पर सब जगह पुल हैं। राँची-पुरुलिया रेलवे लाइन के खुल जाने से इस सड़क की उपयोगिता बहुत घट गयी है। राँची से हजारीबाग जानेवाली सड़क भी पक्की है और इस पर भी सब जगह पुल हैं। इसकी लम्बाई ५८ मील है, जिसमें २० मील राँची जिले में पड़ता है। राँची से १८ मील बाद यहाँ से एक सड़क फूट कर इंचदाग पहाड़ी (समुद्रतल से ३५०० फीट ऊँची) को गयी है। राँची-चाइबासा सड़क ८८ मील लम्बी है जिसमें ३८ मील राँची जिले के अन्दर है। इसमें सुवर्णरेखा, काँची और तजना नदियों पर पुल हैं। इस सड़क के किनारे खूंटी नामक स्थान में सबडिविजनल आफिस खुल जाने से इसकी महत्ता बढ़ गयी है। राँची-डाल्टनगंज सड़क ३६¾ मील तक राँची जिले में है। इस सड़क पर कुरु नामक स्थान से एक दूसरी सड़क लोहरदगा को गयी है। ये सड़कें पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट की बनायी हुई हैं।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड की बनायी हुई भी बहुत सी सड़कें हैं। एक सड़क राँची से बेरो और सीसै होकर गुमला को गयी है, जो ५६ मील लम्बी है। लोहरदगा और गुमला के बीच भी घघरा होकर एक सड़क गयी है। दूसरी सड़क राँची से कारा, बसिया और कोलेबीरा होकर कोचेदगा को गयी है। बसिया से एक सड़क पालकोट और गुमला को गयी है। घाघरा से एक सड़क नेटारहाट को जाती है। खूंटी से एक सड़क टोरपा होकर बसिया की ओर गयी है। राँची से एक सड़क दक्षिण-पश्चिम

की ओर तमार को जाती है। ये सब जिले की मुख्य सड़कें हैं।

जलमार्ग—यहाँ की नदियाँ बहुत छोटी-छोटी हैं, और इनमें नावें नहीं चलतीं। बरसात के दिनों में बड़ी नदियों को लोग 'डोंगा' से पार करते हैं। यह वृक्ष के धड़ को खोखला बनाकर तैयार किया जाता है।

शिक्षा

सन १८३४ में एजेन्सी कायम होने पर राँची में एक सरकारी स्कूल खुला था। सन १८५७ तक यहाँ वही एक स्कूल रहा जिसमें ६७ लड़के पढ़ते थे। सन १८७१-७२ में आकर स्कूलों की संख्या २२ हुई और उनमें पढ़नेवाले लड़के ९८६ हुए। १८७२ ई० में जार्ज कैम्पवेल की शिक्षा-योजना लागू होने पर सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या बढ़कर १७८ हुई। उस साल खानगी स्कूल ५७ थे। इन सबों में कुल ५,१३३ लड़के पढ़ते थे। स्कूलों और लड़कों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई और सन १९१५ में स्कूलों की संख्या १३०० से कुछ अधिक और उनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या करीब ४०,००० हो गयी। तब से स्कूलों की संख्या बढ़ी नहीं है मगर छात्रों की संख्या बढ़ी है।

सन १९३५-३६ में आकर इस जिले में सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त प्रायमरी-स्कूलों की संख्या १२५३ हो गयी है। इनके अलावे उस साल ७ खानगी स्कूल भी थे। इन स्कूलों में कुल ४४,९२७ छात्र पढ़ते थे। छोटानागपुर कमिश्नरी के अन्दर इतने स्कूल या इतने छात्र किसी दूसरे जिले में नहीं हैं।

बल्कि विहार के और कई जिलों से भी यहाँ स्कूल अधिक हैं। इन स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशालाएँ, उर्दू प्राइमरी मकतब और कन्या पाठशालाएँ भी शामिल हैं। इस जिले में आदिम जातियों की प्रधानता होते हुए भी यहाँ की शिक्षा की वृद्धि का कारण ईसाई मिशनरी का प्रचार है। ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा प्रचार का अच्छा उद्योग किया है।

राँची जिले में मिड्ल स्कूल भी इस कमिश्नरी के और जिलों से अधिक हैं, बल्कि गया, संथालपरगना और पूर्णियाँ में भी उतने स्कूल नहीं हैं जितने यहाँ, गरचे इन जिलों की जनसंख्या यहाँ से कहीं अधिक हैं। यहाँ सन १६३७-३८ में ३१ मिड्ल इंगलिश स्कूल और १३ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल थे। इनमे पाँच मिड्ल इंगलिश और १ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल लड़कियों के लिये थे।

इस जिले में हाई स्कूलों की संख्या भी सन्तोषप्रद है। यहाँ ११ हाई स्कूल हैं जिनमें ७ राँची में और एक-एक खूंटी, लोहरदगा, गुमला और समतोली में है। इनमें अधिकाँश स्कूल ईसाइयों द्वारा ही कायम हुए हैं। राँची के ७ स्कूलों में एक सेन्ट मारग्रेट गर्ल्स हाई स्कूल है। बाकी पाँच स्कूलों के नाम हैं जिला स्कूल, सेंट पाल हाई इंगलिश स्कूल, सेंट जॉन हाई इंगलिश स्कूल, गोसनर हाई स्कूल, बालकृष्ण हाई इंगलिश स्कूल और एडवर्ड बंगाली स्कूल।

इस जिले में कालेज नहीं है। यहाँ के लड़के कालेज की शिक्षा पाने के लिये प्रायः हजारीबाग जाते हैं।

ईसाई मिशनरियों के प्रबन्ध से इस जिले में स्त्री-शिक्षा का

प्रबन्ध प्रान्त के सभी जिलों से अच्छा है। एक गर्ल्स हाई स्कूल अलावे यहाँ पाँच गर्ल्स मिडूल स्कूल हैं। इतने गर्ल्स मिडूल स्कूल प्रान्त में कहीं नहीं हैं। मिडूल स्कूलों में दो राँची में और एक-एक बसीटा, चैतपुर और सिमदगा में है। सिमदगा में मिडूल वर्नाकुलर स्कूल है। बहुत से प्राइमरी गर्ल्स स्कूल भी हैं। इनके अलावे लड़कों के स्कूलों में भी बहुत सी लड़कियाँ पढ़ती हैं। सन १६३५-३६ में इस जिले में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या १४,५२३ थी।

राँची में एक औद्योगिक स्कूल है जिसमें सैकड़ों लड़के पढ़ते हैं। जिले के अन्दर मुरहू में भी एक औद्योगिक स्कूल है। बूंदू का स्कूल अब तोड़ दिया गया है। राँची में एक कमर्शियल स्कूल है जहाँ लड़के शार्ट-हैंड और टाइप-राइटिंग वगैरह सीखते हैं। यहाँ अन्धे लड़कों के लिये भी एक स्कूल चल रहा है। ईसाइयों ने स्त्रियों को लेस बनाना सीखने के लिये स्कूल खोला है।

सन १६३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ३५,१६३ और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या ८,१६३ है, अंग्रेजी पढ़े-लिखे पुरुष ४,७१५ और स्त्रियाँ ६८२ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े २.७६ है। सन १६३५-३६ में इस जिले के अन्दर ६५,५०१ हिन्दुस्तानी लड़के लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जो कुल भारतीय जनसंख्या के सैकड़े ४ हैं।

शासन-प्रबन्ध

शासन—छोटानागपुर कमिश्नरी का सदर आफिस राँची है। गर्मी के दिनों में बिहार सरकार का सदर आफिस भी यहीं चला आता है। कमिश्नरी के काम के लिये यहाँ कमिश्नर, पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के इंजीनियर, इक्जिक्युटिव इंजीनियर, स्कूल के इन्सपेक्टर और असिस्टेंट इन्स्पेक्टर तथा इन्सपेक्ट्रेस हैं।

छोटानागपुर कमिश्नरी के पाँच जिलों में राँची एक जिला है। कमिश्नरी के अन्य जिलों की भाँति यह जिला नन-रेगुलेटेड या सेड्यूल्ड डिस्ट्रिक्ट कहलाता है। यहाँ कुछ मामलों में साधारण कानून लागू नहीं किये जाकर विशेष कानून लागू किये जाते हैं। दूसरे जिलों की अपेक्षा यहाँ के शासन-अफसर को न्याय का अधिकार अधिक दिया गया है। यहाँ का जिला अफसर कलक्टर-मजिस्ट्रेट नहीं कहलाकर डिपटी कमिश्नर कहलाता है। डिपटी कमिश्नर और उसके अधीनस्थ डिपटी कलक्टरों को छोटानागपुर लगान कानून के मुताबिक लगान सम्बन्धी तथा ऐसे अन्य मामलों को देखने का अधिकार है जहाँ कि यह अधिकार दूसरे जिलों में सब-जजों और मुन्सिफों को है।

सन् १९०२ तक सारे जिले का शासन राँची से होता था। उसी साल गुमला में एक सबडिविजन कायम किया गया। सन् १९०७ में खूंटी में तथा सन् १९१५ में सिमदगा में सबडिविजनल आफिस कायम हुए। जिले के सदर दफ्तर में शासन कार्य में जिला अफसर डिपटी कमिश्नर की सहायता के लिये कई डिपटी और सबडिपटी कलक्टर तथा असिस्टेन्ट कलक्टर रहते हैं। सबडिविजनों का शासन सबडिविजनल अफसरों द्वारा होता है

जिनकी सहायता के लिये सब-डिपटी कलक्टर और मुन्सिफ रहते हैं ।

न्याय—छोटानागपुर कमिश्नरी का जुडिसियल कमिश्नर ही, जिसका सदर दफ्तर राँची में है, राँची जिले का सेशन-जज होता है । फौजदारी मामले को सुनने के लिये जिले का यही सबसे बड़ा अफसर है । डिपटी कमिश्नर और डिपटी मजिस्ट्रेट भी कुछ फौजदारी मामलों को सुनते हैं । मजिस्ट्रेट पहले, दूसरे और तीसरे इन तीन दरजे के होते हैं । सबडिवि-जनों के अन्दर सबडिविजनल अफसर और उनके अधीनस्थ डिपटी मजिस्ट्रेट फौजदारी मामले को सुनते हैं । कुछ स्थानों में आनरेरी-मजिस्ट्रेट छोटे-छोटे मामले को देखते हैं । दीवानी मुकदमे के लिये सबसे बड़ा अफसर जुडिसियल कमिश्नर ही होता है । उसके बाद सबार्डिनेट जज और मुन्सिफ होते हैं । सबडिविजनों में सबडिविजनल अफसर या मुन्सिफ दीवानी मामले को देखते हैं ।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये यह जिला ३१ थानों में बँटा हुआ है । सदर सबडिविजन में ११, गुमला में ८, खूंटी तथा सिमदगा में ६, ६ थाने हैं । पहले थाना और पुलिस का इन्तजाम जमींदारों के हाथ में था, पीछे सरकार ने सीधे अपने हाथ में ले लिया । इस समय पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है । उसकी सहायता के लिये डिपटी और असिस्टेन्ट-पुलिस-सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं । थाने का सबसे बड़ा अफसर पुलिस-इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जिसे दारोगा भी कहते हैं । थाने में दारोगा की सहायता के लिये हवलदार और कई कानिस्टबिल रहते हैं । गाँव के अन्दर रात में पहरा देने तथा चोरी डकैती और जन्म-मरण आदि की

रिपोर्ट थाने में पहुँचाने के लिये चौकीदार होते हैं। छोटानागपुर के कई जिलों में रास्तों की रक्षा के लिये घटवाल रहते हैं, वे घटवाल इस जिले में भी हैं। सन १९३६ में इस जिले के अन्दर ७ इन्सपेक्टर, ५५ सब-इन्सपेक्टर, ४४ असि० सब-इन्सपेक्टर, १ सरजेन्ट मेजर, १ सरजेन्ट, २७ हवलदार, ५०६ कानिस्टबिल और २,५४२ चौकीदार आदि हैं।

जेल—राँची में जिला जेल तथा सब-डिविजनों के सदर दफ्तरों में छोटे जेल हैं।

रजिस्ट्री आफिस— इस जिले के अन्दर सन १९३६ में राँची, खूँटा, गुमला, सिमदगा और लोहरदगा में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड— इस जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड १९०० ई० में कायम हुआ था। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबंगला वगैरह बनवाना, प्राइमरी और मिडिल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब कुंआ वगैरह खुदवाना, घाट, अस्पताल, फाटक (अरगला) आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २८ मेम्बर हैं जिनमें २१ चुने हुए, ३ नामजद किये और ४ पदकी हैसियत से रहते हैं। यहाँ के चेअरमैन नामजद किये सरकारी अफसर होते हैं। इस जिले में लोकल-बोर्ड नहीं है।

म्युनिसिपैलिटियाँ— गाँवों के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के जो काम हैं वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों के हैं। इस जिले में राँची, लोहरदगा और दोरंद में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। राँची में सन १८६९ ई० में और लोहरदगा में सन १८८८ में म्युनिसिपैलिटियाँ कायम हुई थीं। दोरंद की म्युनिसिपैलिटी को 'नोटिफाइड एरिया कमिटी' कहते हैं। यह १९२४ ई० में

कायम की गयी थी। तीनों के मेम्बरों की संख्या क्रम से २५, १० और ६ है।

राँची (सद्‌र) सबडिविजन

राँची या सद्‌र सबडिविजन जिले के उत्तर भाग में २२°२१' और २३°४३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°०' और ८५°५४' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। सन १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल २,०५२ वर्गमील और जनसंख्या ५,८१,६३६ है। सद्‌र सबडिविजन में राँची और लोहरदगा दो शहर तथा १,३८९ गाँव हैं। सिल्ली, जोनहा और नागरी में अच्छे बाजार हैं। सबडिविजन के अन्दर राँची सदर, राँची कोतवाली, अनगढ़, ओरमाँझी, कुरू, बुड़मू, माँडर, लापुंग, लोहरदगा, बेरो और सिल्ली ये ११ थाने हैं। यहाँ के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं :—

राँची—यह शहर समुद्रतल से २,१२८ फीट ऊँचा है और २३°२३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°२३' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ छोटानागपुर कमिश्नरी और राँची जिले का सदर दफ्तर है। गर्मी के दिनों में विहार-सरकार का दफ्तर भी यहीं चला आता है। सरकारी आफिस दोरंद महल्ले में है। सन १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ५०,५१७ है, जिसमें २७,७१७ हिन्दू, १२,०९६ मुसलमान, ७,५६६ ईसाई, ३,०४६ आदिम जाति, ७७ जैन, ८ सिक्ख और ७ अन्य जाति के लोग हैं। राँची शहर अँगरेजी काल में बसा है। जब सन् १८३४ में दक्षिण-पच्छिम सीमा प्रान्त एजेन्सी कायम की गयी तो उसके पहले एजेन्ट विल्किन्सन ने किसनपुर गाँव में अपना सदर

रॉंची शहर का एक दृश्य

रॉंची का जर्मन मिशन चर्च जिसे प्रथम मिशनरियों ने अपने हाथों से बनाया

हुंड्रू जलप्रपात (राँची)

दफ्तर बनाया । जहाँ इस समय इक्जक्युटिव इंजीनियर का आफिस है उसी स्थान पर उसका कोर्ट था । किसुनपुर नाम के और भी कई स्थान थे इसलिये सदर दफ्तर के स्थान का नाम एक दूसरे गाँव राँची के नाम पर रखा गया । इस गाँव को अब भी लोग पुरानी राँची कहते हैं । १८४३ ई० में एजेन्ट के मुख्य सहायक का सदर दफ्तर भी लोहरदगा से हटकर राँची ही चला आया । उस काल के बने हुए शहर के अन्दर बहुत से मकान हैं । ईसाई मिशनरियों के भी कई पुराने मकान हैं । १८६९ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी । यहाँ अँगरेजों और हिन्दुस्तानियों के लिये पागलखाने हैं जो बिहार में एक ही है । यहाँ कुछ घुड़सवार सैनिकों का भी अड्डा है ।

यहाँ दो थाने हैं एक राँची कोतवाली और दूसरा राँची सदर । कोतवाली थाना शहर के लिये है जहाँ की जनसंख्या ऊपर दी जा चुकी है । राँची सदर में, जो मुफस्सिल थाना है, १,४३, ४९० आदमी रहते हैं, जिनमें ९८,८९९ हिन्दू, २०,६२५ आदिम जाति, १३,५७० मुसलमान, १०,३५५ ईसाई और ४१ अन्य जाति के लोग हैं ।

अंगारा—राँची से उत्तर-पूरब की ओर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है । इस थाने में ३४,४३७ आदमी रहते हैं । इनमें २३,०२३ हिन्दू, ९,७८६ आदिम जाति, ९३१ ईसाई और ६९७ मुसलमान हैं ।

ओरमाँझी—राँची-हजारीबाग सड़क पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है । इस थाने की जनसंख्या २२,२६१ है, जिसमें १५,६१२ हिंदू, ३,८९८ आदिम जाति, २,६६२ मुसलमान और ८९ ईसाई हैं ।

-यह स्थान जिले की उत्तरीय सीमा पर राँची-डाल्टन-

सन् १८३४ में एजेन्सी कायम होने के बाद ही रामगढ़ सैनिक दल, जो १७५८ ई० में चतरा में कायम किया गया था, दोरंडा लाया गया। सन् १८५७ में यहाँ के पैदल सैनिकों ने विद्रोह किया। १९०५ ई० में यहाँ से सेना हटा दी गयी। सैनिकों के रहने के मकान पुलिस कालेज और पुलिस ट्रेनिंग स्कूल के काम में आने लगे। १९१० ई० में फिर एक नया मकान बना। विहार उड़ीसा के अलग प्रान्त बनने पर पुलिस कालेज यहाँ से हजारीबाग हटा दिया गया और यहाँ गर्मी के मौसम के लिये प्रान्तीय सरकार का दफ्तर रखने का प्रबन्ध हुआ।

बुड़मू—राँची से उत्तर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने के अन्दर २७,४७५ आदमी रहते हैं। इनमें १९,०६२ हिन्दू, ६,६२४ आदिम जाति, १,६७५ मुसलमान और ११४ ईसाई हैं।

बेरो—राँची से पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४३,०१० है, जिसमें २७,४१३ हिन्दू, ८,१६३ आदिम जाति, ३,८७० ईसाई और ३,५६४ मुसलमान हैं।

माँड़र—राँची-डाल्टनगंज सड़क पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने के अन्दर ५८,१३३ आदमी रहते हैं। इनमें २९,७१५ हिन्दू, १६,३६३ आदिम जाति, ६,४४३ मुसलमान और ५,६१२ ईसाई हैं।

मुरहू—राँची से २८ मील दक्षिण इस स्थान पर ईसाई मिशनरियों का जबरदस्त अड्डा है। यहाँ १८८७ ई० का बना एक चर्च है। मिशनरियों ने यहाँ अस्पताल और स्कूल भी खोल रखे हैं। यह स्थान व्यापार का केन्द्र है।

लापुंग—सदर सबडिविजन के दक्षिण-पच्छिम कोने में

इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है । इस थाने की जन-संख्या २७,२६४ है। यहाँ १२,५४२ आदिम जाति, ११,०४७ हिन्दू, ३,५७८ ईसाई और ९७ मुसलमान रहते हैं।

लोहरदगा—सदर सबडिविजन में यह एक शहर है, जहाँ की जनसंख्या सन् १९३१ की गणना के अनुसार ७,५७७ है, जिसमें ४,८४० हिन्दू, २,००१ मुसलमान, ३७६ ईसाई और ३६० आदिम जाति के लोग हैं। १८४३ ई० तक लोहरदगा एक जिला था जिसके अन्दर वर्तमान राँची और पलामू जिले थे। इसका सदर आफिस यही शहर था। १८८८ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम हुई। इस समय भी यह शहर एक व्यापारिक केन्द्र है। सन् १९१३ में राँची से यहाँ तक बी० एन० आर० की लाइन खुल जाने से इसकी महत्ता और बढ़ गयी है। यहाँ सबरजिस्ट्री आफिस, आनरेरी मजिस्ट्रेट का दफ्तर और एक हाई स्कूल है। यहाँ ईसाई मिशनरी का स्थापित कुष्टाश्रम है।

सिल्ली—जिले की पूर्वी सीमा पर रेलवे लाइन के पास इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४३,३४९ है। यहाँ ४२,३५९ हिन्दू, ६९८ मुसलमान, १९८ आदिम जाति और ९४ ईसाई हैं।

सुतियाम्बे—राँची से उत्तर पिथौरिया के पास सुतियाम्बे एक छोटा-सा गाँव है, छोटा नागपुर के नागवंशी राजाओं का यह आदि-स्थान समझा जाता है। इस वंश के राजाओं की जहाँ-जहाँ राजधानी रही वहाँ-वहाँ भादो के महीने में एक पर्व के अवसर पर ४० फीट लम्बे स्तम्भ पर राजाओं की स्मृति में दो छत्र लगाये जाते हैं। सुतियाम्बे में पहला छत्र प्रथम राजवंशी राजा के पालक पिता मद्रा मुंडा की यादगारी में रहता है।

खूँटी सबडिविजन

खूँटी सब जिले के दक्षिण-पूरब भाग में २२° ३८' और २३° १८' उत्तरीय अक्षांश, तथा ८४° ५६' और ८५° ५४' पूर्वी देशान्तर के बीच है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,५४५ वर्गमील और जन संख्या ३,७३,८०० है। इसमें बूंदू नामक एक शहर तथा १,०७३ गाँव हैं। सबडिविजन में खूँटी कर्रा, तमार, तोरपा, बुंदू और सोनाहातू ये ६ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

खूँटी—राँची से दक्षिण राँची चाइबासा सड़क पर इस स्थान में सन् १६०५ से सबडिविजनल आफिस है। ईसाइयों ने लड़कियों के लिये यहाँ एक स्कूल खोल रक्खा है जिसमें कपड़े में लगाने के लिये लेस बनाना भी सिखाया जाता है। खूँटी थाने में ८६,८४० आदमी रहते हैं जिनमें ४६,०२२ आदिम जाति, २२,७२८ हिन्दू, १४,३०६ ईसाई, ७४२ मुसलमान तथा ४२ दूसरी जाति के लोग हैं।

कर्रा—खूँटी से पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। यहाँ की जनसंख्या ४३,१६६ है, जिसमें २३,५६६ आदिम जाति, ११,६३६ हिन्दू, ६,९४६ ईसाई और ७१८ मुसलमान हैं।

चोकाहातू—खूँटी से उत्तर-पूरब की ओर सोनाहातू थाने में यह एक गाँव है। जहाँ मुंडा लोगों का एक विशाल समाधि स्थान या कब्रगाह है।

तमार—खूँटी से पूरब इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं जो तमार परगने के मालिक हैं। तमार थाने की जन संख्या १,०७,०२४ है।

यहाँ ८२,७०१ हिन्दू, १७,५५० आदिम जाति, ५,८४० ईसाई, ५६० मुसलमान और ३४३ अन्य जाति के लोग हैं।

तिलमी—कर्रा थाने में यह एक गाँव है जहाँ नागवंशी ठाकुरों के एक किले का भग्नावशेष है। किले के अन्दर पत्थर के एक कुएँ पर देवनागरी अक्षर और संस्कृत भाषा में लिखा है कि इसे अकबर ठाकुर ने सम्बत् १७६४ (१७३७ ई०) में बनवाया था।

तोरपा—खूँटी से दक्षिण-पश्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ६०,४६८ आदमी रहते हैं। इन में २६,५५३ आदिम जादि, १७,५४४ ईसाई, १६,०३० हिन्दू, ३३० मुसलमान और ११ अन्य जाति के लोग हैं।

बूंदू—खूँटी से १८ मील उत्तर-पूरब यह एक शहर है। यहाँ की जनसंख्या ६,४८७ है, जिसमें ६,१४६ हिन्दू, २९३ मुसलमान और ४५ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ अस्तपाल, थाना और मिड्ल स्कूल है। यह स्थान लाह की फैक्टरी के लिये प्रसिद्ध है। इस थाने की जनसंख्या ३२,८८२ है, जिसमें २८,४५५ हिन्दू ३,३६८ आदिम जाति, ४४६ ईसाई, ३८८ मुसलमान और २२५ अन्य जाति के लोग हैं।

सोनपत—खूँटी सबडिविजन के दक्षिण-पूरब कोने पर यह एक घाटी है जो सात मिल लम्बा और ६ मील चौड़ी है। यहाँ कुछ सोना पाये जाने के कारण यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है। सोना निकालने के लिये कई बार यहाँ कम्पनियाँ बनीं और काम भी शुरू हुआ पर, इसमें सफलता नहीं हुई। कुछ लोग अब भी इस काम में लगे रहते हैं पर दिन भर परिश्रम करने पर कभी कभी दो चार आने का सोना पा जाते हैं।

सोनहातू—खूँटी से उत्तर-पूरब स्थान में यह थाने का सदर

आफिस है। इस थाने में ४३,४१७ आदमी रहते है, जिनमें ४२, ७६४ हिन्दू, ४१३ आदिम जाति, २३६ मुसलमान और १ अन्य जाति के लोग हैं।

गुमला सबडिविजन

गुमला सबडिविजन जिले के पच्छिम भाग में है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल २,०५७ वर्गमील और जनसंख्या ३,७५,४७६ है। यह जिले का सबसे बड़ा सबडिविजन है, पर सदर सबडिविजन भी करीब करीब इतना ही है। गुमला सबडिविजन में कोई शहर नहीं है। यहाँ के गाँवों की संख्या ६३२ है। यहाँ गुमला, घाघरा, चैनपुर, पालकोट, बसिया, रईडीह, बिसुनपुर और सिसई ये ८ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं।

गुमला—यह स्थान लोहरदगा से ३२ मील दक्षिण २३°२' उत्तरीय अक्षांश और ८४°३३' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ गाय बैल बहुत बिकते हैं। कहते हैं कि यहाँ गौओं का मेला लगने से ही इस स्थान का नाम गुमला पड़ गया। गुमला थाने की जनसंख्या ५६,८६१ है। यहाँ २८,८४० आदिम जाति, २३,१०७ हिन्दू, २,७३७ ईसाई और २,२०७ मुसलमान हैं।

घाघरा—गुमला से उत्तर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३८,६३७ है। इसमें २१, ५०८ आदिम जाति, १५,४९५ हिन्दू, १,२३४ ईसाई और ४०० मुसलमान हैं।

चैनपुर—गुमला से उत्तर-पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ५६,२७२ आदमी रहते हैं।

जिनमें ३२,३६२ ईसाई, २१,८१७ हिन्दू, १,५८९ आदिम जाति और ५०४ मुसलमान हैं।

ढैसानगर—सिसई थाने के अन्दर यह एक गाँव है जहाँ छोटानागपुर के राजाओं का एक टूटाफूटा किला है। यह किला जिसका नाम नवरत्न है, पाँच महल का था और हर एक महल में नौ कोठरियाँ थीं। किले के चारों ओर बहुत से मन्दिर हैं जिनमें एक मंदिर में जमीन के अन्दर भी कोठरियाँ बनी हैं। जगन्नाथजी के मंदिर के द्वार पर एक लेख है जिससे मालूम होता है कि यह मंदिर सम्वत् १७३६ (१६८३ ई०) में बना था। कपिलनाथ के मंदिर पर सम्वत् १७६७ का उल्लेख है। छोटा नागपुर के राजाओं की पुरानी राजधानी जिले के अन्दर चुटिया, खुखरा, ढैसा, पालकोट, और भरनो इन पाँच स्थानों में कहीं बतायी जाती है। इस समय इस वंश के लोग रातू में रहते हैं।

नागफेनी—सिसई थाना में यह एक गाँव है जो कोयल नदी के पास है। गाँव के समीप एक पहाड़ी पर बहुत-से खुदे हुए पत्थर मिलते हैं। एक पत्थर पर सम्वत् १७६१ (१७०५ ई०) का उल्लेख है। कहते हैं कि कोई राजा यहाँ महल बनवा रहा था पर महल के तैयार होने के पहले ही वह मर गया। एक कब्र के पत्थर पर कुछ चित्र हैं जिसे लोग राजा, उसकी सात रानियाँ और एक कुत्ते का चित्र बताते हैं। पहाड़ी पर का एक पत्थर नागफेन के समान है इसलिये इस स्थान का नाम नागफेनी पड़ा।

पाट—जिले की उत्तर-पच्छिम सीमा पर यह एक पहाड़ है जो समुद्रतल से ३६०० फीट ऊँचा है। इसकी ऊँचाई सब जगह एक-सी है। यह पहाड़ पच्छिम की ओर बढ़कर सरगुजा और जसपुर स्टेट की ओर गया है।

पालकोट—गुमला से दक्षिण-पूरब इस स्थान में एक बड़ा बाजार और थाना है। डैसा से हटने पर छोटानागपुर के राजा यहीं रहने लगे थे। यहाँ उनका रहना १८ वीं सदी के आरम्भ में बताया जाता है। १८६७ ई० में ये यहाँ से भरनो नामक स्थान में चले गये। यहाँ राजा का टूटा-फूटा महल अब भी देखने में आता है। इस स्थान से एक मील उत्तर एक प्राकृतिक स्तम्भ है जिसे ओराँव लोग 'पाल' (दाँत) और मुंडा 'पहल' (हल का फाड़) कहते हैं। कहा जाता है कि इसी के नाम पर स्थान का नाम पालकोट पड़ा। पालकोट थाने की जनसंख्या ३३,०८१ है जिसमें १७,८११ हिन्दू, १०,०५३ आदिम जाति, ५,०७० ईसाई और १४७ मुसलमान हैं।

बरवे—यह स्थान गुमला से उत्तर-पच्छिम शंख नदी के किनारे है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। यह स्टेट पहले सुरगुजा राज्य के अधीन था। १८०१ ई० में यह छोटानागपुर राज्य के अधीन हुआ।

बसिया—गुमला से दक्षिण-पूरब यह स्थान कोयल नदी के किनारे है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७०,५१४ है, जिसमें २८,०८२ हिन्दू, २२,०६९ ईसाई १९,९८३ आदिम जाति और ३८० मुसलमान हैं।

बिसुनपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसख्या १८,३७० है। यहाँ १२,२०६ हिन्दू, ४,५१८ आदिम जाति, १,६१५ ईसाई और ३१ मुसलमान हैं।

मझगाँव—यह गाँव चैनपुर थाना के पच्छिमी भाग में है। यहाँ तांगीनाथ नामक पहाड़ी टील्हे के ऊपर कुछ टूटे-फूटे मंदिर, पत्थर की मूर्त्तियाँ, स्तम्भ के टुकड़े और जमीन में गड़ा लोहे का एक बड़ा त्रिशूल है।

रईडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३१.५१६ आदमी रहते हैं, जिनमें २०,१७७ हिन्दू, ११,११४ ईसाई, २०८ मुसलमान और २० आदिम जाति के लोग हैं।

सिसई—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ७०,१६२ है। यहाँ ४६,७२६ हिन्दू, १५,२१३ आदिम जाति, २,७५४ ईसाई और २,४६६ मुसलमान रहते हैं।

सिमदगा सबडिविजन

सिमदगा सबडिविजन जिले के दक्षिण-पश्चिम कोने में है। यह जिले का सबसे छोटा सबडिविजन है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,४४८ वर्गमील और जनसंख्या २,३६,२३४ है। यहाँ कोई शहर नहीं है, गाँवों की संख्या ४४४ है। इसमें सिमदगा, ठेठई टाँगर, कुरदेग, बोलबा, कोलेबीरा और बानो ये ६ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

सिमदगा—यह पहले कोचेदगा थाने के अन्दर एक गाँव था। सन् १९१५ में यहाँ सबडिविजन आफिस खोला गया और कोचेदगा थाना भी उठकर यहीं चला आया। इस समय इस थाने की जनसंख्या ५१,६३७ है, जिसमें २६,४३५ ईसाई, २२,०२२ हिन्दू, २,७३६ आदिम जाति और ४४१ मुसलमान हैं।

कुरदेग— यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३५,२३० आदमी रहते हैं। इनमें १८,०५२ ईसाई, १५,८६४ हिन्दू, १,०४८ आदिम जाति और २३६ मुसलमान हैं।

कोलेबीरा—इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६१,७२१ है, जिसमें २४,१०३ हिन्दू, २१,१७२ ईसाई, १६,११८ आदिम जाति और ३२८ मुसलमान हैं।

ठेठईटाँगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३६,०५२ आदमी हैं, जिनमें २०,०६२ ईसाई, ११,७५६ हिन्दू, ३,७६७ आदिम जाति और ४३४ मुसलमान हैं।

बानो—यह स्थान सिमदगा के पूरब है जहाँ थाना आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४०,३४९ है। यहाँ १७,३८० हिन्दू, १२,५३५ आदिम जाति, १०,१०४ ईसाई और ३३०मुसलमान हैं।

बीरू—यह गाँव सिमदगा से १० मील उत्तर है जो इस नाम के परगने के अन्दर है। इस परगने के मालिक एक पुराने घराने के लोग हैं जो अपना सम्बन्ध पुरी के महाराज से बतलाते हैं। कहते हैं कि महाराज के पुत्र हिताम्बर देव सम्बलपुर आकर बसे। उनके पुत्र हरिदेव सन् १५५७ में उस स्थान को छोड़कर केसलपुर परगने में आये जो छोटानागपुर के महाराज के अधीन था। एक सुन्दर हीरा उपहार में देने के बदले में महाराज की ओर से उन्हें वह परगना जागीर में मिल गया, तथा उन्हें राजा की पदवी भी मिली। उनके वंशज भीमसिंह महाराज दुरजनसाल के साथ मुसलमानों द्वारा गिरफ्तार कर दिल्ली ले जाये गये थे। कहते हैं कि उन्हीं की सहायता से दुरजनसाल हीरे की पहचान करने से छुटकारा पा सके थे। इसीसे खुश होकर महाराज ने उन्हें बीरू परगना दे दिया था। पीछे उनके एक वंशज से नाखुश होकर महाराज ने उनसे राजा की पदवी छीन ली और उसके बदले उन्हें बहेरा की पदवी दी। पर स्थानीय लोग अभी तक उनके वंशज को राजा कहते हैं।

बोलबा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ११,२४५ आदमी रहते हैं। इनमें ५,९२७ ईसाई, ४,५५७ हिन्दू, ७३१ आदिम जाति और ३० मुसलमान हैं।

राँची जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जनसंख्या (सन् १६३१)

ओरांव	४,४०,१००	कोयरी	६,१४५
मुंडा	३,८६,४२०	तूरी	७,५२४
खड़िया	७५,०८३	किसान (नगेसिया)	६,३०५
कुरमी	६२,१६८	भुइयाँ	५,८४५
कमार	५४,४६७	कहार	५,७०५
ग्वाला	३६,४८६	धोबी	५,६६३
तेली	३५,६६२	गोरैत	५,६८२
चिक बरैक	२६,७३६	बिझिया (बिंझवार)	५,३३०
जोलाहा	२७,६७४	कायस्थ	५,१७४
राजपूत	२४,१०८	चमार	४,३६८
कुम्हार	२१,०७४	डोम	४,२००
घासी	२०,६०६	बनिया	४,१०१
भोगता	१८,५६५	असुर	१,६४०
महली	१७,००२	दुसाध	१,६८३
ब्राह्मण	११,३७६	कोरवा	१,४६५
गोंद	११,२६२	भूमिज	१,४४२
पन (पनिका)	११,१०५	संथाल	६०१
हजाम	६,७८१	बिरहोर	४४१
		विरजिया	२४५

हजारीबाग जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

हजारीबाग जिला छोटानागपुर कमिश्नरी के उत्तर-पूरब का भाग है जो २३°२५' और २४°४८' उत्तरीय अक्षांश तथा ८४°२९' और ८६°३८' पूर्वीय देशान्तर के बीच है।

इस जिले के उत्तर में गया और मुंगेर के जिले, पूरब में संथाल परगना और मानभूम के जिले, दक्षिण में रांची जिला तथा पच्छिम में पलामू और गया जिले हैं। पूरब की ओर अधिकांश भाग में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। उत्तर की ओर हजारीबाग की अधित्यका मोटे तौर पर सीमा का काम करती है। पच्छिम की ओर जहाँ मोरहर नदी बहती है उस भाग को छोड़ कर शेप भाग में प्राकृतिक सीमा बदलती रही है। दक्षिण की ओर राँची की अधित्यका अनियमित रूप से सीमा का काम करती है। इस ओर कहीं कहीं दामोदर और सुवर्ण रेखा नदी भी सीमा बनाती है।

इस जिले का क्षेत्रफल ७०२१ वर्गमील है। प्रांत भर में सबसे बड़ा जिला राँची है, उसके बाद हजारीबाग।

प्राकृतिक बनावट

भारत के मध्य भाग में, पच्छिम में नर्मदा और पूरब में सोन नदी के दक्षिण जो अधित्यका फैली हुई है उसी का पूर्वी भाग छोटानागपुर की अधित्यका है। हजारीबाग जिला छोटानागपुर की अधित्यका का ही एक टुकड़ा है। इस जिले में आकर जमीन की सतह धीरे-धीरे नीची हो गयी है और नदियों का बहाव भी पूरब की ओर हो गया है। साधारण तौर पर यह जिला तीन प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है—(१) नीची अधित्यका (२) ऊँची अधित्यका और (३) दामोदर नदी की तराई।

(१) पच्छिम से पूरब तक फैला हुआ जिले का उत्तरीय भाग नीची अधित्यका है। पास के गया जिले की सतह से यह भाग करीब ८०० फीट ऊँचा है। पूरब की ओर इसकी सतह धीरे-धीरे नीची हो गयी है और वहाँ बहुत सी छोटी-छोटी नदियाँ बहती हैं। इस अधित्यका की पच्छिमी सीमा लीलाजान नदी है। साधारणतः इसकी ऊँचाई १,३०० फीट है। इसके दक्षिण भाग की वर्षा का पानी जमुनिया नदी होकर दामोदर नदी में जाता है। इस अधित्यका के बाद दक्षिण की ओर ऊँची अधित्यका शुरू होती है।

(२) ऊँची अधित्यका जिले के मध्य भाग में है, जो पश्चिम से पूरब तक ४० मील में और उत्तर से दक्षिण तक १५ मील में फैली हुई है। इसकी औसत ऊँचाई २,००० फीट है। इसका उत्तर-पूरबी और दक्षिणी भाग अधिकांशतः बहुत ऊँचा-नीचा है। पच्छिम की ओर यह बहुत तंग होकर सिमरिया और जबरा के पास धीरे-धीरे नीचे उतर गयी है। यहाँ यह दक्षिण

की ओर मुड़ जाती है और टोरी परगना होकर राँची अधित्यका से मिल जाती है।

(३) ऊँची अधित्यका के दक्षिण दामोदर नदी की तराई है। इस तराई का मुख्य भाग राँची और हजारीबाग की अधित्यका के बीच का लम्बा जलाशय है। यह जलाशय लगातार नहीं है बल्कि इसके बीच में पहाड़ भी हैं।

पहाड़—यों तो हजारीबाग पहाड़ी जिला ही है, लेकिन इसमें भी मुख्य पहाड़ ऊँची अधित्यका के पहाड़ हैं। इस अधित्यका के पच्छिम भाग में कासियातू, हेसातू और हुदुआ गाँव के पहाड़ सब से ऊँचे हैं। इसकी ऊँचाई अधित्यका की सतह से ६०० फीट है। इसके पूरब अधित्यका की दक्षिणी सीमा होकर एक लम्बी पर्वतमाला दामोदर नदी तक गयी है। यहाँ यह अश्व पहाड़ में समाप्त हो जाती है। अधित्यका के दक्षिण-पूरब कोने से जिलिंग पहाड़ी बोकारो नदी तक गयी है। यहाँ पहले चाय के बागान थे। अधित्यका के पूरब भाग में महावीर जारियो और और बरसोत पहाड़ी है। उत्तर-पच्छिम भाग में सेन्द्रैली और माहुद मुख्य पहाड़ी हैं। हजारीबाग शहर के पास चार पिहाड़ियाँ है जिनमे सब से ऊँची पहाड़ी चेन्द्वार है।

तण्डवा से दक्षिण पलामू जिले की सीमा के पास सतपहाड़ी नाम की एक पहाड़ी है, जो त्रिकोणाकार में है। इसके पूरब माहुदी पहाड़ी है। यहाँ भी चाय की खेती करने की आजमाइश की गयी थी। मांडू से बहुत दूर पूरब लुगू नामक पहाड़ी है। दामोदर नदी की दक्षिणी सतह रांची की अधित्यका की सतह के बराबर ही है। जिले की दक्षिणी सीमा के पास इसकी सब से ऊँची पहाड़ी बड़ीगाय या मरंगबुरु है। गोला से पूरब एक त्रिकोणाकार पहाड़ है।

जिले के पूरब मानभूम जिले की सीमा पर ग्रैंड-ट्रंक-रोड के पास कई मील तक पार्श्वनाथ की पहाड़ी है जिसकी ऊँचाई ४,४८१ फीट हैं। जिले की सबसे ऊँची पहाड़ी यही है। जैनधर्म के २३ वें तीर्थंकर पार्श्व या पार्श्वनाथ ने अपने पहले के ९ तीर्थंकरों की तरह यहीं निर्वाण प्राप्त किया था। इस कारण यह पहाड़ी बहुत प्रसिद्ध है।

पूरब की ओर मुंगेर जिले की सीमा पर घोरंजी पहाड़ी और उत्तर की ओर सीमा पर सतपहाड़ी मुख्य हैं। सकरी नदी की तराई से उत्तर मुख्य पहाड़ी रेबा और भंदेश्वर है। सकरी नदी के दक्षिण महावर पहाड़ी है जो गया जिले में भी घुस गयी है। गया जिले की सीमा के पास मारामोको, दुर्वासा, लोहाबर और कुलुहा पहाड़ी मुख्य हैं। कोडरमा के पास नेरो और बंदा पहाड़ी हैं।

जंगल—हजारीबाग जिले में पहले बहुत जंगल थे पर अब ये धीरे-धीरे कटते जा रहे हैं, जंगली पेड़ों में सखुआ, अमलतास, पलास, आसन, केंद, करम, बर, पीपल, डुमर, महुआ, सेमल, नीम, सिरिस, सीसू, ताड़, खजूर, बैर, बाँस आदि मुख्य हैं। इस जिले के अन्दर सन् १९३५-३६ में १,३८,२६४ एकड़ जंगल सरकार के खास प्रबन्ध में था, जिसे रिजर्व्ड फारेस्ट कहते हैं। ३७,०५५ एकड़ जंगल प्रोटेक्टेड फारेस्ट अर्थात सरकार द्वारा रक्षित जंगल था।

झरना—इस जिले के पाँच झरना समूहों का जल साधारण तापमान से अधिक समझा जाता है। सब से प्रसिद्ध झरना सूर्यकुंड है जो बरहकट्टा थाने में है। इसका तापमान १९०° है और यहाँ माघ मास में मेला लगता है। बिरनी थाने के बेको गांव के झरने का तापमान १८२° है। मोहिनी नदी के किनारे दुआरी के झरने का तापमान ११०°, राँची-हजारीबाग

सड़क के किनारे इन्द्रजरबा के झरने का तापमान १०२° और रामगढ़ के पास कंकी गाँव के झरने का तापमान ९२° है ।

नदियाँ

हजारीबाग जिले की नदियाँ पहाड़ी नदियाँ हैं। वर्षा के दिनों में इनमें अचानक खूब बाढ़ आ जाती है, पर और दिनों में इनमें बहुत कम पानी रहता है। इन नदियों में नावें बराबर नहीं चलतीं, मछलियाँ भी कम पायी जाती हैं और इनसे सिंचाई का काम भी नहीं हो सकता है। हाँ, सकरी और लीलाजान नदियों के निचले भाग से कुछ सिंचाई का काम लिया जाता है। दामोदर नदी में सब दिन नावें चल सकती हैं। जिले की मुख्य नदियाँ नीचे लिखी हैं:—

दामोदर—दामोदर का दूसरा नाम देव-नद है। यह नदी हजारीबाग जिले के दक्षिण भाग में पच्छिम से पूरब की ओर बहती है। यह जिले की सबसे बड़ी नदी है। यह हजारीबाग जिले की सीमा से २५ मील दूर पलामू जिले से निकलती है और हजारीबाग जिले में ९० मील तक चलकर राजादेरा के पास जिले को छोड़ती है और कलकत्ता के बाद हुगली नदी में मिल जाती है।

दामोदर की सहायक नदियाँ—हजारीबाग जिले में दामोदर की पहली सहायक नदी गरही या टण्डवा है। यह उत्तर की ओर कासिआतू पहाड़ी के पास से निकलकर टण्डवा थाना होकर दामोदर से आ मिली है। इसके बाद माहुदी पहाड़ी से पूरब करम-पुरा घाटी के जल को लाती हुई हहरो नदी इससे मिलती है।

पश्चात् दक्षिण की ओर से नैकारी, उत्तर की ओर से मारामरह और फिर दक्षिण की ओर से भेर नामक धाराएँ इससे मिली हैं। उत्तर की ओर से कोनार नदी अपनी सहायक धाराओं सिवानी और बोकारो के जल को लेती हुई ज़रीडीह के पास दामोदर से मिली है। इसके बाद दक्षिण की ओर से खंजरो नदी इसमें मिलती है। दामोदर की अन्तिम मुख्य सहायक नदी जमुनिया है, जो बिसुनगढ़ के पास निकलकर ग्रैंड-ट्रंक-रोड के पास से बहती हुई कुछ दूर तक हजारीबाग और मानभूम जिले के बीच सीमा का काम करती है।

बराकर—बराकर नदी ऊँची अधित्यका से निकलकर उत्तर की ओर बहती हुई ग्रैंड-ट्रंक-रोड के पास पहुँचती है। बरही से दो मील पच्छिम इसपर लोहे का पुल है। इसके बाद यह पूरब और फिर दक्षिण की ओर मुड़ती है। पार्श्वनाथ पर्वतमाला से उत्तर की ओर बहती हुई दामोदर से मिलने के ३२ मील पहले यह हजारीबाग जिले को छोड़ देती है। उत्तर की ओर से लेरुज गोखान, अकटा, किसको, बरेतो, अरगा और उसरी नामक धाराएँ इससे आ मिली हैं। पिछली दोनों धाराएँ बड़ी धाराएँ हैं। दक्षिण की ओर से मिलनेवाली बराकर की मुख्य सहायक धारा बरहकथा है।

सकरी—सकरी नदी नीची अधित्यका से निकलकर उत्तर की ओर बहती हुई गया जिले में प्रवेश कर जाती है। इसमें ८१० वर्गमील का पानी आता है।

मोहिनी—यह हजारीबाग से १२ मील की दूरी पर से निकलती है और अपने साथ ऊपरी अधित्यका के पच्छिम भाग का जल लाती है। इटखोरी के पास यह चतरा चौपारन सड़क को

पार करती है। इसके बाद उत्तर की ओर बहती हुई ग्रैंड-ट्रंक-रोड को पार कर गया जिले में प्रवेश कर जाती है।

लीलाजान—लीलाजान या नीलांजन नदी सिमरिया के उत्तर से अपनी यात्रा शुरू करती है और उत्तर की ओर बहती हुई गया जिले में प्रवेश कर जाती है। गया शहर से ६ मील दक्षिण लीलाजान और मोहिनी ये दोनों धाराएँ मिल जाती हैं और इस सम्मिलित धारा का नाम फलगू पड़ता है।

जलवायु और स्वास्थ्य

हजारीबाग जिला पहाड़ी प्रदेश है, इसलिये यहाँ की जलवायु विहार के अ-पहाड़ी प्रदेश की जलवायु से बहुत भिन्न है। यहाँ का औसत तापमान साधारणतः कम रहता है और बरसात के दिनों में भी यहाँ शुष्कता अपेक्षाकृत अधिक रहती है। यहाँ की आबहवा बहुत स्वास्थ्यप्रद है और राँची जिले की आबहवा से बहुत मिलती जुलती है। यहाँ आसिन से ही जाड़ा पड़ने लग जाता है और फागुन चैत तक बना रहता है। विहार की अपहाड़ी भूमि की अपेक्षा यहाँ जाड़ा अधिक पड़ता है। गर्मी के दिनों में भी यहाँ गर्मी बहुत नहीं पड़ती। गर्मी की रातें अक्सर ठंढी ही रहती हैं। गर्मी के दिनों में यहाँ दिन का तापमान प्रायः १०७° से कभी अधिक नहीं रहता और जाड़े के दिनों में प्रायः ४०° से नीचे नहीं जाता है। यहाँ की औसत नमी या आर्द्रता करीब ५१ रहती है जब कि कलकत्ते की करीब ७६। बरसात के दिनों मे यहाँ दक्षिण-पच्छिम की ओर से, जाड़े के दिनों में पच्छिम की ओर से और गर्मी के दिनों में उत्तर-पच्छिम की ओर से हवा चलती है। वर्षा साल में प्रायः ५० इंचों से कुछ अधिक होती

है। लेकिन, इसमें कभी-कभी कमीबेशी भी हुआ करती है जैसे सन् १९११ में ७५ इंच वर्षा हुई थी, तो १९१५ में सिर्फ ४०½ इंच।

इस जिले में रोगों की शिकायत विहार के अधिकांश जिलों की अपेक्षा कम है। यहाँ के जंगली भागों में मलेरिया की कुछ शिकायत रहती है। १९०१ ई० में यहाँ जोरों का प्लेग फैला था। उसके बाद इसका विशेष प्रकोप नहीं देखा गया। सन् १९०८ में इस जिले में हजार पीछे करीब ७ आदमी हैजा से मर गये थे। चेचक भी जब-तब फैल जाता है। इस जिले में पागलों की संख्या २३१, बहरे-गूंगों की १.०६४, अंधों की १,६७३ और कोढ़ियों की २४४ है। इस जिले में सन् १९३५-३६ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ११ अस्पताल थे।

सियार आदि हर जगह देखे जाते हैं। सन् १९१५ में ५७ आदमी बाघ से, ७ चीते से, ४ भालू से, ३ भेड़िये से, १४४ साँप से और ६ दूसरे-दूसरे जानवरों से मरे थे। उस साल जंगली जानवरों को मारने के लिये ३,३३८ रुपये बाँटे गये थे।

इस जिले में पालतू जानवरों की दशा अच्छी नहीं है। पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, घोड़ा, बकरी आदि मुख्य हैं। हजारीबाग और गिरिडीह में पशुओं का अस्तपाल है।

इतिहास

प्राचीन काल—हजारीबाग जिले के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में विशेष बातों का पता नहीं चलता। यह जिला प्राचीन काल में जंगलों से भरा था और यहाँ केवल संथाल, मुण्डा आदि आदिम जाति के लोग रहते थे। अब भी यहाँ इन लोगों की संख्या बहुत है। ये लोग यहाँ के मूल निवासी हैं या बाहर से आये इस सम्बन्ध में मतभेद है। अगर बाहर से आये तो भारत के उत्तर-पच्छिम भाग से आये या उत्तर-पूरब भाग से यह भी निश्चित नहीं है। कुछ लोग उत्तर-पच्छिम भाग से इनका आना बताते हैं तो कुछ लोग उत्तर-पूरब भाग से। पर अब अधिकांश लोग उत्तर-पूरब के भाग से ही इनका आना मानने लगे हैं। हजारीबाग जिले के अन्दर पाँच रास्ते ऐसे हैं जिनसे होकर इन लोगों के आने और फैलने का अनुमान किया जाता है।

आदिम जाति के सम्बन्ध में पुरानी बातों का कुछ पता उनकी दन्त-कथाओं से लगता है। ये दन्त-कथाएँ भी परस्पर विरोधी हैं, इसलिये निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। डा० कैम्पबेल ने इन दन्तकथाओं के आधार पर लिखा है कि संथाल लोग

पहले-पहल हिहरी पिपरी नामक स्थान में रहते थे। यहाँ से ये लोग क्रम से सुइ, हरदत, खोजकामन, चाये और चम्प नामक स्थानों में फैले और वहाँ बहुत दिनों तक रहे। वहाँ उन लोगों के सरदारों ने अपने रहने के लिये किले भी बनवाये। वहीं उन लोगों में वर्तमान जाति-विभेद हुआ। वहाँ से वे लोग माधोसिंह के (जो आधा संथाल और आधा बिरहोर था) भय से भागकर ऐरो काइन्दे पहुँचे। जो लोग वहाँ रह गये उनके वंशज बेदिया जाति के कहलाये। ऐरो काइन्दे से वे लोग संग और असेर नदियों को पार कर सिंघदूर और बहीदूर नामक स्थानों में जा पहुँचे। पर वहाँ से भी बढ़कर वे भेलवाघाट, चितरी, हतूप, मरूपगोडा, अम्बर, काकेर, बारे, बड़ागाँव, कद्मवेद, बेलौंग, सिर और सिखर नामक स्थानों में फैल गये। सिखार से वे लोग पालगंजो (हजारीबाग), तुण्डी और पंड्रा (मानभूम) पहुँचे। कुछ लोग संथाल परगना और दिनाजपुर को भी गये।

एक दूसर लेखक कर्नल डाल्टेन ने अपने मानव-विज्ञान विषयक एक पुस्तक में एक दूसरी दन्तकथा के आधार पर लिखा है कि संथाल लोग अहिरी पिपरी नामक स्थान में रहते थे। वहाँ से ये लोग हरदत्ती आये जहाँ इनका नाम खरवार हुआ। यहाँ से भी ये खैरगढ़ और हुरदगढ़ी गये। इसके बाद हजारीबाग जिले के छै और चाम्प नामक स्थान में आ बसे। यहाँ ये लोग कई पुश्त तक रहे पर, पीछे माधोसिंह नामक एक बिरहोर के भय से छोटानागपुर चले गये। लेकिन यहाँ से भी ये झलदा, पाटकुम, सौत और शिसर को गये और फिर पच्छिम की ओर बढ़े। सौंत में ही रहते वक्त इनका नाम सौंताल या संथाल पड़ा। रिजले नामक लेखक की 'पिपुल्स आफ इण्डिया' नामक पुस्तक में इस सम्बन्ध की एक दूसरी ही दन्तकथा लिखी है। इन दन्तकथाओं के वर्णित

स्थान कहाँ हैं और ये कथाएँ किस समय की हैं इसका कुछ पता नहीं चलता।

श्री एस० सी० राय ने मुंडा जाति के विषय में जो पुस्तक लिखी है उसमें बताया है कि मुंडा लोग पहले अजबगढ़ में रहते थे। वहाँ से वे कालंजर, गढ़चित्रा, गढ़पाली, गढ़पिपरा, मन्दार पहाड़, बिजयगढ़, हरदीनगर, लखनौरगढ़, नन्दनगढ़, रिजगढ़, रुइदासगढ़, और आमेदण्ड नामक स्थानों को गये। राय महाशय का कहना है कि रोहतास गढ़ ही रुइदासगढ़ है और यहाँ रहते वक्त तक सन्ताल और मुंडा साथ ही रहते थे। यहीं पर खरबार सरदार माधोदास ने उन लोगों को पूरब की ओर मार भगाया। ये लोग गया, पलामू, और हजारीबाग में आ बसे। कर्नल डाल्टन ने मुंडों के आदि-स्थान और पूर्व में उनके फैलने की जगह आदि का पता लगाना बहुत कठिन बताया है। उसने छोटानागपुर राजवंश के पुराने कागजों के आधार पर लिखा है कि मुंडा लोग पहले पिपरा, पालीगढ़, जैपुर, चित्तौर, सिमलिया और रुइदास में रहते थे। लेकिन इन स्थानों का भी ठीक पता कहना मुश्किल है।

चैनगढ़, पलानी, जागेसर और करनपुरा परगने में कुछ पुराने किलों के भग्नावशेष हैं। पूर्व काल में गोला, दुर्गापुर, पिरगुल और चोटी नामक स्थानों में भी राजाओं के रहने की बात सुनी जाती है। पर ये पुराने किले कब के हैं और ये राजे किस समय हुए इसका ज्ञान अब लोगों को नहीं है। आर्य लोगों के यहाँ आने और बसने के समय का भी कुछ पता नहीं चलता। हाँ, इतना जरूर मालूम पड़ता है कि आर्य लोग छोटानागपुर के पहाड़ी भाग में बहुत पीछे आये। यह पहाड़ी और जंगल भाग उस समय झारखंड के नाम से प्रसिद्ध था। भारतीय अनुसंधान-

विभाग ने यहाँ के पुराने भग्नावशेषों की काफी खोज नहीं की है, और जो कुछ भी की है उससे यहाँ के प्राचीन इतिहास का कुछ पता नहीं चलता है।

मुसलमान काल—गरचे १३ वीं सदी के आरम्भ में ही विहार पर मुसलमानों का कब्जा हो गया था, लेकिन इस भूभाग के शासन में उन लोगों ने १६ वीं सदी के अन्त में दखल दिया। पहले पहल १५८५ ई० में अकबर ने छोटानागपुर के राजा पर आक्रमण करने के लिये शाहबाज खाँ के अधीन एक सेना भेजी। राजा को अकबर का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा। १५९१ ई० में इस राजा ने उड़ीसा की लड़ाई में मुसलमानों का साथ दिया। १६१६ ई० में छोटानागपुर पर मुसलमानों की दूसरी चढ़ाई हुई। इस बार बादशाह जहाँगीर के सेनापति इब्राहीम खाँ ने राजा को गिरफ्तार कर ग्वालियर भेज दिया। १६३२ ई० में शाहजहाँ ने छोटानागपुर को पलामू की जागीर में मिला दिया और १,३६,-०००) सालाना कर पर पटना के सूबेदार के हाथ बन्दोबस्त किया। १६८६ ई० में यहाँ का सालाना कर बढ़ाकर १,६१,०००) कर दिया गया। नागपुर और करनपुरा का सालाना कर ४०,-५०५) था। छोटानागपुर राज्य का बचा हुआ भाग वर्तमान राँची जिले में पड़ता है।

औरंगजेब के वक्त में हम एक बार झारखंड के पहाड़ी भाग होकर ही शाही सेना को बंगाल की ओर जाते हुए पाते हैं। १६५९ ई० में जब औरंगजेब ने इलाहाबाद के पास शाहशुजा को परास्त किया था तो शाहशुजा भागकर मुँगेर चला आया था और यहाँ उसने औरंगजेब की सेना का मुकाबला करने की तैयारी की थी। इसपर औरंगजेब का लड़का शाहजादा मुहम्मद मीर जुमला के साथ १२,००० घुड़सवार लेकर आगे बढ़ा। उसने गंगा के

किनारे से बंगाल जाने के आम रास्ते को छोड़ दिया और वह झारखंड के अन्दर शेरघाटी की राह से जाकर मुँगेर के पूरब की ओर से शाहशुजा पर हमला कर बैठा।

मुसलमानी वक्त में हजारीबाग जिले के अन्दर कुंडा, रामगढ़ छै, केन्दी, और खड़गडीहा ये पाँच मुख्य छोटे-छोटे राज्य थे। कुंडा राज्य हंटरगंज के दक्षिण था जिसकी स्थापना औरंगजेब के एक कर्मचारी रामसिंह द्वारा हुई बतायी जाती है। कहते हैं कि रामसिंह बुन्देलखंड के एक राजपूत थे, लेकिन कुछ लोगों का यह भी कहना है कि रामसिंह एक स्थानीय खरवार सरदार थे। १६६९ ई० में मराठे, बरगियों और पिंडारियों के आक्रमण रोकने के लिये मुसलमानों ने उन्हें बबलटार, पिंझरी, बनवाडीह और नगदर्रा के मार्ग की रक्षा का भार लेने को मजबूर किया।

रामगढ़ राज्य की स्थापना १३६८ ई० में सिंहदेव और बाघ-देव नामक दो भाइयों द्वारा हुई बतायी जाती है। कहते हैं ये दोनों भाई बुन्देलखंड के राजपूत थे और यहाँ छोटानागपुर के महाराजा के यहाँ नौकरी करने आये थे। पीछे उनका महाराजा से झगड़ा हो गया और वे करनपुरा परगना (वर्त्तमान थाना बड़का गाँव) के एक सरदार कप्परदेव को हराकर वहाँ के मालिक बन बैठे। बाद में धीरे-धीरे उन्होंने २१ और परगनों पर कब्जा जमा लिया। उनकी राजधानी पहले सिसुआ में थी, पीछे यह क्रम से उरद, बादम और फिर रामगढ़ में कायम हुई। बादम में राजा हेमत सिंह ने पटना के एक कारीगर द्वारा १६४२ ई० में किला और महल बनवाया था। यह स्थान मुसलमानों के छोटानागपुर जाने के रास्ते के पास ही पड़ता था। इसलिये मुसलमानों के उत्पात के भय से १६७० ई० में राजधानी वहाँ से हटाकर ३० मील पूरब रामगढ़ लागी गयी। १७२४ ई०. में पटना के सूबेदार ने

छोटानागपुर के राजा पर चढ़ाई की और उससे बहुत से हीरे और नकद रुपये नजराना में लिये। १७३१ ई० में फिर दूसरी चढ़ाई हुई। लेकिन इस बार रामगढ़ का राजा बीच में पड़ गया और उसने अपने दक्षिण के पड़ोसी छोटानागपुर के राजा की ओर से १२,०००) सूबेदार को दिया। इसके बाद से लेकर अंगरेजी राज्य के आरम्भ तक रामगढ़ के राजा द्वारा ही छोटानागपुर राज्य की ओर से सूबेदार को कर दिया जाता रहा। धीरे-धीरे रामगढ़ राज्य का बल बहुत बढ़ गया था, इसलिये १७४० ई० में हिदायत अली खाँ के अधीन इस राज्य पर चढ़ाई करने के लिये सेना भेजी गयी। रामगढ़ किले पर कब्जा कर लिया गया; लेकिन जब बंगाल पर मराठों की चढ़ाई होने की खबर मिली, तो मुसलमानों ने उसे छोड़ दिया। ३० वर्ष बाद इस वंश के राजा मुकुन्द सिंह ने छै परगने को भी अपने राज्य में मिला लिया।

छै वर्तमान दनुआ घाटी के ऊपर है। १७७० ई० के लगभग जब मुकुन्द सिंह ने छै राज्य को अपने रामगढ़ राज्य में मिला लिया था, उस समय यह पाँच भागों में बँटा हुआ था—(१) रामपुर, (२) जागो डीह, (३) परबरिया, (४) इटखोरी और (५) पितिज। जागो डीह के राजा को बाकी चारो राजा सालाना कर दिया करते थे। यहाँ के राजा लाल खाँ को मुकुन्द सिंह ने ननकार के रूप में १२००) का सालाना वृत्ति देकर हटा दिया और समूचे छै राज्य को अपने राज्य में शामिल कर लिया।

केन्दी राज्य चतरा थाने में था। इसके पच्छिम में रामगढ़ राज्य के अधीन परगना दन्तार और पूरब में छै का राज्य था। १७०० ई० के लगभग मुसलमानों ने आक्रमण कर इस राज्य की स्वतन्त्रता छीन ली और यह एक जमीन्दारी की तरह रह गया।

खड़गडीहा राज्य पन्द्रहवीं सदी में कायम हुआ था। इस

राज्य के संस्थापक हंसराज भूतदेव कहे जाते हैं। कहते हैं कि ये दक्षिण भारत से यहाँ आये थे। इन्होंने यहाँ बन्दावत जाति के एक राजा को हटाकर हजारीबाग और गया जिले में ६०० मील लम्बा एक राज्य कायम किया। इस वंश के लोगों ने उत्तर विहार के भूमिहार ब्राह्मण जमींदारों से विवाह-शादी कर ली। अब ये लोग खड़गडीहा से हटकर धनवार में चले आये हैं। १७६५ ई० के पहले मुसलमानों ने इस राज्य की अन्दरूनी बातों में कभी दस्त-न्दाजी नहीं की थी। लेकिन, उस साल नरहट (गया जिला) के जमींदार कामगार खाँ के लड़के अकबर अली खाँ ने खड़गडीहा पर चढ़ाई कर वहाँ के राजा मोदनारायण को हटा दिया। मोद-नारायण और उसका लड़का देश निकाले की हालत में रामगढ़ में मर गया। लेकिन, १७७४ ई० में उसका पोता गिरिवर नारायण देव ने अकबर अली खाँ को राज्य से हटाने में अंगरेजों को मदद दी।

अंगरेजी काल—जब बादशाह शाह आलम ने ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी को बंगाल और विहार की दीवानी दी, तो उसके साथ हजारीबाग जिला भी अंगरेजों के अधिकार में आया। अपना सिक्का जमाने के लिये अंगरेजों ने पहले पहल इस जिले में खड़गडीहा के पूर्वी भाग पर धावा किया। लेकिन उस समय कोई मुख्य बात नहीं हुई। उस समय १७६९ ई० में कप्तान कैमेक मुंगेर के दक्षिण भाग में उपद्रव शान्त करने के लिये आया था। कैमेक का दूसरा धावा कुंडा राज्य पर हुआ। उस वक्त वह राजा गोपाल राय को फिर से गद्दी पर बैठाने के लिये पलामू जाने के रास्ते पर था। उसने कुंडा के सरदार राजा धीरजनारायण सिंह को अपने साथ ले लिया। पलामू के किले को तोप से उड़ाने में राजा के चार सम्बन्धी मारे गये। इस क्षति के लिये कुंडा राज्य का लगान

पहले की भाँति माफ कर दिया गया । लगान वहाँ अबतक भी माफ ही है ।

पलामू की चढ़ाई के समय छोटानागपुर का राजा कप्तान कैमेक से आकर मिला था और उसको कुछ सहायता भी दी थी। मगर कहते हैं कि रामगढ़ का राजा मुकुन्द सिंह अंगरेजों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा था। इसलिये छोटानागपुर के राजा ने कैमेक से अर्ज किया कि अब तक उसका लगान रामगढ़ राज्य के द्वारा जो लिया जा रहा था वह अब सीधे उसी से लिया जाय। कैमेक ने इसे स्वीकार कर लिया । इसी समय रामगढ़ के राजा मुकुन्द सिंह का एक सम्बन्धी तेज सिंह गद्दी के लिये दावा कर बैठा और अंगरेजों से जा मिला। पहले लिखा जा चुका है कि इस वंश के संस्थापक सिंहदेव और बाघदेव नामक दो भाई थे। चूंकि मुख्यतः बाघदेव ने ही इस राज्य को कायम किया था, इसलिये उनके वंशज ही करीब सौ वर्ष से गद्दी के अधिकारी होते चले आ रहे थे। मुकुन्द सिंह बाघदेव की दसवीं पीढ़ी के थे और तेज सिंह सिंहदेव की दसवीं पीढ़ी के । तेज सिंह का यह दावा था कि चूंकि सिंहदेव और बाघदेव में बड़े सिंहदेव ही थे इसलिये गद्दी का अधिकारी दर असल मुझे होना चाहिये न कि मुकुन्द सिंह को। गरचे १०० वर्ष के बाद इस तरह का दावा पेश करने का कोई विशेष मूल्य नहीं था तोभी चूंकि अंगरेज मुकुन्द सिंह को दबाना चाहते थे इसलिये उन्होंने तेज सिंह के दावे को स्वीकार कर लिया। १७७२ ई० में लेफ्टिनेन्ट गोडार्ड ने तेजसिंह को साथ लेकर रामगढ़ पर चढ़ाई कर दी। दक्षिण से छोटानागपुर के राजा ने भी दबाया । फलतः मुकुन्द सिंह गद्दी छोड़ कर भाग गये। तेज सिंह राज्य के मुस्ताजिर बनाये गये और पीछे राजा भी हो गये ।

इसके बाद अंगरेजों का ध्यान खड़गडीहा की ओर गया। पहले लिखा जा चुका है कि नरहट स्टेट का अकबर अली खाँ वहाँ के पुराने हिन्दू राजे को हटाकर खुद वहाँ का मालिक बन बैठा था। खड़गडीहा ३८ गद्दियों में बँटा था जिनके सरदार टिकैत कहलाते थे। अंगरेजों ने इन टिकैतों की सहायता से अकबर अली खाँ को भगाना चाहा। कप्तान जेम्स ब्राउन १७७४ ई० में एक सेना लेकर पहुँच गया। २६ टिकैतों ने अँगरेजों का साथ दिया, १० तटस्थ रहे और २ विरुद्ध खड़े हुए। यहाँ के पुराने राजघराने के गिरिवर नारायण देव ने भी अंगरेजों की सहायता की। आखिर अकबर अली को यहाँ से हटना पड़ा।

वर्त्तमान छोटानागपुर में पहले कप्तान कैमेक का सैनिक-शासन था, लेकिन १७८० ई० में उसकी जगह पर चैपमैन मुल्की शासक बनाकर भेजा गया। यह भाग उस समय विजीत प्रान्त या रामगढ़ जिला कहलाता था और इसके अन्दर रामगढ़, केन्दी, कुंडा और खड़गडीहा (जो मिलकर वर्त्तमान हजारीबाग जिला कायम करते हैं) तथा सारा पलामू, खड़गडीहा के पूरब का भाग चकाई (जो वर्तमान मुंगेर जिले में है) रामगढ़ के पूरब का भाग पञ्चेट और शेरगढ़ के आस-पास के भाग थे। इसके साथ वर्त्तमान राँची जिला करद राज्य की तरह शामिल किया गया। चैपमैन अपना कोर्ट कभी शेरघाटी में और कभी चतरा में लगाता था। उसकी सहायता के लिये रामगढ़ सैनिक दल तैयार किया गया था, जिसका पड़ाव हजारीबाग में था। चैपमैन का काम दीवानी और फौजदारी मामले को सुनना और लगान का काम देखना था। उसकी अधिकार-सीमा १८,००० वर्गमील तक थी लेकिन उसके इन कामों में सहायता के लिये कोई यूरोपियन सहायक नहीं था। उसके दीवानी और फौजदारी सम्बन्धी फैसले

की अपील गवर्नर जेनरल के पास होती थी और उसका लगान संबंधी काम देखने के लिये कलकत्ते की रेवेन्यू कमिटी थी। १७९३ ई० में यहाँ की दीवानी और फौजदारी अपील सुनने का काम पटने के प्रान्तीय कोर्ट को दिया गया। सन् १८१७ से १८२९ के बीच यहाँ के रेवेन्यू सम्बन्धी कामों की देख-रेख का भार पटना डिविजन के रेवेन्यू कमिश्नर के हाथ में रहा।

रामगढ़ जिले में सन् १८२० और १८३१ में विद्रोह मचा। लेकिन यह विद्रोह वर्तमान हजारीबाग जिले के अन्दर नहीं था। १८३१ ई० के कोल-विद्रोह के बाद यहाँ की शासन-पद्धति बदल दी गयी। सन १८३३ के रेगुलेशन नं० १३ के अनुसार सन् १८३४ में रामगढ़ जिला, जंगल महाल, और दालभूम का इस्टेट (जो पहले मिदनापुर जिले के अन्दर था) मिलाकर दक्षिण-पच्छिम सीमाप्रान्त एजेन्सी कायम की गयी और साधारण कानून से यहाँ का काम होना बन्द हुआ। यहाँ का सबसे बड़ा अफसर गवर्नर जेनरल का एजेन्ट कहा जाने लगा। रामगढ़, खड़ग-डीहा, केन्दी और कुंडा को मिलाकर वर्तमान हजारीबाग जिला कायम किया गया। यहाँ का शासन-केन्द्र शेरघाटी और चतरा से हटाकर हजारीबाग लाया गया, जहाँ पहले से सैनिकों का अड्डा था। यहाँ का प्रधान अफसर गवर्नर जेनरल के एजेन्ट का प्रिन्स-पल असिस्टेन्ट (मुख्य सहायक) कहलाने लगा। १८५४ ई० में दक्षिण-पच्छिम सीमाप्रान्त एजेन्सी का नाम छोटानागपुर पड़ा और यहाँ का सब से बड़ा अफसर गवर्नर जेनरल का एजेन्ट न कहलाकर कमिश्नर कहलाने लगा। यह कमिश्नरी बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के अधीन कर दी गयी।

सिपाही-विद्रोह—१८५७ के अगस्त में हजारीबाग के सैनिक दल में विद्रोह मच गया। इसकी खबर राँची भेजी गयी। राँची

से लेफ्टिनेन्ट ग्राहम एक छोटी-सी सेना लेकर विद्रोहियों को दबाने के लिये चल पड़ा, लेकिन रास्ते में उसके सैनिक भी बिगड़ पड़े और विद्रोहियों से बुरमू के पास जा मिले। वहाँ से विद्रोही लोग राँची की ओर बढ़े। यहाँ के कमिश्नर कैप्टेन डाल्टन ने जब देखा कि दोरांद में बाकी बचे देशी सैनिक भी साथ नहीं देंगे तो वह सभी यूरोपियनों को लेकर रामगढ़ रोड से हजारीबाग, और फिर वहाँ से बागोदर चला गया। वहाँ उसने ग्रैंड-ट्रंक-रोड से आनेवाली अपनी सहायक सेना की प्रतीक्षा की। जैसे ही वहाँ सिक्खों की सेना आ पहुँची वैसे ही कर्नल डाल्टन ने हजारीबाग पर कब्जा कर लिया और वहाँ से विद्रोहियों की गति-विधि को देखता रहा। विद्रोही लोग राँची में एक महीना तक ठहरे। उसके बाद वे कुंवरसिंह से मिलने रोहतासगढ़ की ओर बढ़े। स्थानीय राजभक्त जमींदारों ने उन्हें दो घाटों पर रोका, लेकिन वे अपने तोप के बल से बढ़ते हुए पलामू जिले के चन्दवा और बालूमठ नामक स्थान होकर चतरा आ पहुँचे। यहाँ पर अंगरेजी सेना ने इनपर हमला किया। १५० विद्रोही मारे गये तथा उनके तोप और हथियार आदि छीन लिये गये। बाकी लोग शेरघाटी की ओर भाग गये।

संथाल-विद्रोह—सिपाही-विद्रोह के बाद संथाल-विद्रोह उठ खड़ा हुआ। संथाल लोग अपने महाजन आदि के अत्याचार से पीड़ित थे। सिपाही-विद्रोह के कारण शासन के कमजोर पड़ जाने से संथालों का बल बढ़ गया। वे लूट-पाट मचाने लगे। खड़ंगडीहा में गोला और चास के बीच, रामगढ़ रोड पर कुजू में और बागोदर के पास झरपो में उपद्रव मचा। माँडू में कुछ जमींदारों के उभाड़ने पर संथालों ने उपद्रव मचाया था, इसलिये वे जमींदार फाँसी पर लटका दिये गये। यह विद्रोह बहुत

संगठित और व्यापक रूप से नहीं था इसलिये आसानी से दबा दिया गया। जिले के उत्तर भाग में कुछ भुइयाँ टिकैतों ने भी उत्पात मचाया था, मगर वह तुरत ही बन्द हो गया।

इसके बाद जिले में कोई मुख्य घटना नहीं हुई। १९०८ से १९१५ के बीच यहाँ की जमीन का नाप हुआ और उनके स्वत्वाधिकार का दाखला तैयार किया गया।

लोग, भाषा और धर्म

हजारीबाग जिले का रकबा दरभंगा जिले के रकबे से दूना है, लेकिन यहाँ की जनसंख्या दरभंगा जिले से आधी ही है। सन् १८८१ ई० में हजारीबाग जिले में ११,०४,७४२ आदमी थे लेकिन सन १९३१ मे आकर यहाँ की जनसंख्या १५,१७,३५७ हो गयी। जिसमें ७,५१,९५६ पुरुष और ७,६५,४०१ स्त्रियाँ थीं। इस तरह इधर आधी शताब्दी में यहाँ ४,१२,६१५ आदमी अर्थात् फी सैकड़े करीब ३७ आदमी बढ़े। हजारीबाग जिले के अन्दर फी वर्गमील मे औसतन २१६ आदमी रहते हैं। गिरिडीह सबडिविजन में औसतन २७९ आदमी, सदर सबडिविजन में २०८ आदमी, और चतरा सबडिविजन में १५३ आदमी रहते हैं। सन् १९२१ मे इस जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ३६,३०५ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,४,७५३५ थीं। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में हजारीबाग, गिरिडीह और चतरा ये तीन शहर और ६०८७ गाँव हैं। इन शहरों की कुल जनसंख्या ५०,८५७ है।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य भाषाओं के अन्दर १३,७२,६४१ लोगों की मातृ-

भाषा हिन्दुस्तानी, ११,२७१ को बंगला, १,५१४ को मारवाड़ी, ८१७ की पंजाबी, ४४८ को नेपाली, ३१७ को उड़िया, २७३ को की गुजराती, और ५६ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; मुंडा भाषा-श्रेणी के अन्दर १,२३,८४४ की संताली, ८३१ की मुंडारी, ४११ को कोरवा, माहिलो, हो, कारमाली आदि अन्य मुंडा भाषाएँ; द्राविड़-भाषा-श्रेणी के अन्दर ४,१०८ की ओराँव (कुरुख) और ३७८ की तामिल आदि अन्य द्राविड़ भाषाएँ; ७२ की अन्य एशियाई भाषा और ३७३ की यूरोपीय भाषाएँ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से सैकड़े ९० आदमी हिन्दुस्तानी और ८ मुंडा भाषाएँ बोलनेवाले हैं।

यहाँ की हिन्दुस्तानी भाषा का रूप मगही बोली है। गोला से दक्षिण-पूरब के भाग की बोली को हेंठगोला भी कहते हैं। यह मगही बोली का ही एक रूप है, परन्तु इस पर बंगला भाषा का काफी प्रभाव पड़ा है। आदिम जाति के लोग प्रायः आपस में ही अपनी बोली बोला करते हैं। जब उन्हें दूसरों के साथ बोलने का मौका लगता है तो वे हिन्दुस्तानी भाषा बोलते हैं। मर्द, औरत, बच्चे सभी हिन्दुस्तानी समझते हैं और थोड़ा बहुत बोल भी सकते है।

हजारीबाग जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है :—

हिन्दू	१२,०८,०९९	जैन	७९४
मुसलमान	१,७१,६९४	बौद्ध	२२१
आदिम जाति	१,३३,१५६	सिक्ख	२२१
ईसाई	३,१६९	अन्य	३

फी सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ हिन्दू फी सैकड़े ८०, मुसलमान ११, और आदिम जाति के लोग ९ हैं। मुसलमानों

में जोलाहों की संख्या सब से अधिक है। इसके बाद शेख, कलाल और पठानों का स्थान है। और जगहों की तरह यहाँ भी बहुत से लोग अपने को जोलाहा कहलाना पसन्द नहीं करते। वे अब अपने को शेख कहने लग गये हैं।

निम्न श्रेणी के हिन्दू और आदिम जाति में फर्क बताना कठिन है, क्योंकि एक ही जाति के कुछ लोग अपने को हिन्दू बताते हैं तो कुछ लोग आदिम जाति। जो लोग हिन्दुओं के ऐसा रहन-सहन रखते और अपने को हिन्दू कहते हैं उनकी गणना हिन्दुओं में हो जाती है और जो लोग अपनी पुरानी रीति रस्म बरतते हुए अपने को आदिम जाति का बताते हैं उनकी गणना आदिम जाति में होती है। बहुत सी ऐसी जातियाँ हैं, जिनके लिये यह कहना ही मुश्किल हो जाता है कि दरअसल यह हिन्दू जाति है या आदिम जाति। व्यापक अर्थ में सभी को हिन्दू कहना गलत नहीं है। जिले में कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जनसंख्या अलग दी गयी है।

इस जिले में ईसाइयों के बहुत से अड्डे हैं। उन लोगों ने यहाँ स्कूल, कालेज, अस्पताल आदि भी खोले हैं। हजारीबाग का कालेज ईसाइयों का ही कायम किया हुआ है। उनके हाई, मिड्ल और प्रायमरी स्कूल भी स्थापित किये हुए हैं। जिले के ३,१६९ ईसाइयों में २५९ यूरोपियन आदि, १०८ एंग्लो इंडियन और शेष भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

हजारीबाग जिले का रकबा ४४,७१,०२० एकड़ है। सन् १९३६–३७ में इसमें से ९,३९,८०० एकड़ जमीन जोती बोयी गयी थी और ३,७५०६७ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। २६६,२६३ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। २५,२४,५९१ एकड़ में जंगल था। ३,६५,२९९ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब २९ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका एक चौथाई से कुछ अधिक भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े ६ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता बोया नहीं जाता। सैकड़े ५७ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े ८ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ९ भाग में दो फसल होती है।

यहाँ की जमीन के दो भाग किये जाते हैं, एक तो दोन या धनखेत जो जमीन होती है और दूसरे टाँर जो ऊँची जमीन होती है। हरेक भाग की जमीन भी फिर तीन दरजे में बाँटी जाती है। दोन या धनखेत के पहले दरजे की जमीन को गहेर या गैर, बहियार और जोबी कहते हैं। सदा भींगी रहनेवाली जमीन को जोबी कहा जाता है। दूसरे दरजे की जमीन को कनाली, दोरस, कन्दी, सिंघ और गोगरी कहा जाता है। तीसरे दरजे की जमीन बैद या बाद, तर्ख, साठिन या टाँरखेत कहलाती है। दूसरे भाग की ऊँची या टाँर जमीन के तीन दरजों में पहले दरजे को बारी या घरबारी कहते हैं। दूसरे दरजे की जमीन को मरुआबारी,

चीरवारी, बहिरवारी या भीठ कहा जाता है। तीसरे दरजे की जमीन टाँर ही कहलाती है।

इस जिले के खेत की भिन्न-भिन्न तरह की मिट्टियों के नाम हैं केवाल, ललकी माटी, दुधिया माटी, कंकरैली माटी, कारी माटी, नग्र और रेहर। नग्र और रेहर उस मिट्टी को कहते हैं जो खाद देने पर भी अच्छी नहीं होती। खाद वगैरह देकर अच्छी बनायी हुई मिट्टी की किस्म को केवाल, गोरी माटी, पोंड्री या भुसरी और मगहिया कहा जाता है। जब ललकी और दुधिया माटी में खाद दिया जाता है तो उसको गोरी माटी कहते हैं। गोरी माटी को ही जब और अच्छा बनाया जाता है तो वही पोंड्री या भुसरी कहलाती है। बढ़िया बनायी हुई मिट्टी को प्रायः मगहिया कहा जाता है। इसका अर्थ है ऐसी अच्छी मिट्टी जैसी मगह की।

इस जिले में उपजाऊ जमीन के सैकड़े ६९ भाग मे भदई, २६ भाग मे रब्बी और १७ भाग में अगहनी फसल होती है। उपजाऊ जमीन के करीब आधे भाग में धान उपजता है। भदई फसल में मकई, मरुआ और बाजरा, रब्बी में जौ, बूट और गेहूँ तथा अगहनी में धान मुख्य फसल हैं। यहाँ तेलहन की भी खेती अच्छी होती है। थोड़ी रूई भी उपजती है।

इस जिले में जोत जमीन के सैकड़े सिर्फ एक भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है। अधिकतर जमीन कुँओं से सींची जाती है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार हजारीबाग जिले में हजार आदमियों में ३९४ आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। ३९४ आदमियों में ३२३ आदमी कृषि और पशु-

पालन में, १४ खान में, १२ उद्योग-धंधे में, ८ व्यापार में, ४ गमनागमन जैसे रेल, सड़क, डाक आदि में, २ वकील-मुख्तार, डाक्टरवैद्य, पंडा पुरोहित, लेखक शिक्षक आदि के पेशे में, १ शासन कार्य में और ३० विविध कार्यों में लगे हुए हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों में सैकड़े ८२ आदमी खेती का काम करते हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधा या व्यापार मुख्यतः भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ मे है। यहाँ का लाह और कत्थ का कारबार प्रसिद्ध है। यहाँ के कुछ खान सम्बन्धी काम भी मुख्य हैं जिनका वर्णन अलग है।

लाह—लाह अधिकतर गोला, हंटरगंज और सिमरिया थानों में तैयार की जाती है। लाह के कीड़े पलास, बैर और कुसुम के पेड़ों पर पाले जाते हैं। जब वृक्ष की टहनियों पर लाह जम जाती है तो उन्हे काटकर निकाल लिया जाता है और फिर कई क्रियाओं द्वारा विशुद्ध लाह तैयार की जाती है। इसकी दो फसल होती है, एक बैसाख में और दूसरी कातिक में। बैशाख की फसल कातिक की फसल से दूनी होती है और बढ़ियाँपन में भी बढ़ी रहती है। शुद्ध लाह तैयार करने के लिये जिले के अन्दर एक दो फैक्टरियाँ हैं, पर अधिकतर लाह कच्चे माल के रूप में ही बाहर भेजी जाती है।

कत्थ—खैर के वृक्ष की लकड़ियों को पानी में उबालकर और फिर उसके रस को जमाकर कत्थ तैयार किया जाता है।

फैक्टरियाँ—सन् १९३६ में जिले के अन्दर सिर्फ ४ फैक्टरियाँ थीं जिन पर फैक्टरी एक्ट लागू था।

व्यापार—इस जिले में हजारीबाग, चतरा, गिरिडीह, इचाक, पीरगंज, पचम्बा, कोडरमा, टण्डवा, हंटरगंज और गोला ये

व्यापार के मुख केन्द्र हैं । यहाँ से कोयला, अबरक, लकड़ी, तेलहन, महुआ, लाह, हरीतकी (हर्रे) आदि चीजं बाहर जाती हैं और बाहर से कपड़ा, किरासन तेल, नमक, चावल, तम्बाकू, मसाला तथा आजकल की आवश्यकता की छोटी-बड़ी देशी-विदेशी चीजे यहाँ आती हैं। चतरा और लोवालाँग में साल में मेला लगता है जहाँ मवेशियों की खरीद-बिक्री होती है ।

खान

हजारीबाग जिले में कोयला और अबरक की खान विस्तृत क्षेत्र में है । लोहा, टीन, ताम्बा तथा कुछ दूसरे खनिज पदार्थ भी यहाँ पाये जाते हैं, लेकिन बहुत थोड़े परिमाण मे ही ।

कोयला की खान—इस जिले में कोयला की खान के सात बड़े मैदान हैं (१) बोकारो, (२) रामगढ़, (३) उत्तर करन-पुरा, (४) दक्षिण करनपुरा, (५) चोपे, (६) इटखोरी, और (७) गिरिडीह ।

बोकारो—जहाँ झरिया का कोयले का मैदान समाप्त होता है उसके दो तीन मील पच्छिम बोकारो के कोयला का मैदान शुरू होता है । पूरब से पच्छिम तक इस मैदान की सबसे बड़ी लम्बाई ४० मील और उत्तर से दक्षिण तक इसकी सबसे बड़ी चौड़ाई ६½ मील है । इसका कुल रकबा २२० वर्गमील है । यहाँ का कोयला वैसा अच्छा नहीं समझा जाता जैसा झरिया का । इस मैदान के अन्दर सबसे अधिक कोयला जिले की पूर्वी सीमा और कोनार नदी के बीच पाया जाता है । कहते हैं कि इस मैदान से १½ अरब टन कोयला प्राप्त किया जा सकता है ।

रामगढ़—कोयले का यह मैदान बोकारो के मैदान से ५ मील दक्षिण दामोदर नदी के किनारे है। इसका रकबा ४० वर्गमील है। यहाँ ५० लाख टन कोयला होने का अनुमान किया जाता है। इस मैदान में कहीं तो बहुत अच्छा कोयला पाया जाता है और कहीं बहुत खराब।

उत्तर और दक्षिण करनपुरा—कोयले का यह विस्तृत मैदान हजारीबाग अधित्यका के दक्षिण भाग में बोकारो और रामगढ़ के मैदान से पच्छिम है। उत्तर करनपुरा मैदान का रकबा ४७२ वर्गमील और दक्षिण करनपुरा का रकबा ७२ वर्गमील है। पहले में करीब ८¾ अरब टन और दूसरे में करीब ७½ करोड़ टन कोयला होने का अनुमान किया जाता है। यहाँ का अधिकांश कोयला बहुत बढ़िया दरजे का है।

चोपे—कोयले का यह छोटा मैदान हजारीबाग से ८ मील की दूरी पर है और इसका रकबा सिर्फ पौन मील है। यहाँ बहुत थोड़ा कोयला है और वह भी बहुत मामूली दरजे का। इस कोयले से केवल ईंट पकायी जा सकती है और चूने का कंकड़ जलाया जा सकता है।

इटखोरी—इटखोरी का मैदान चोपे से २० मील उत्तर मोहिनी नदी के किनारे है। इसका रकबा सिर्फ आधा वर्गमील है और यहाँ सिर्फ २० लाख टन कोयला मिल सकने का अनुमान है। यहाँ का भी कोयला बहुत मामूली दरजे का है और इससे सिर्फ ईंट और चूना तैयार किया जा सकता है।

गिरिडीह—गिरिडीह कोयले का मैदान गिरिडीह शहर के पास ही करीब ७ वर्गमील में फैला हुआ है। पहले इसका नाम 'करहरवारी कोयले का मैदान' था। करहरवारी एक गाँव का नाम है जहाँ पहले इस कोयले के मैदान के अधिकांश और पच्छिमी

की खानों में अधिकाधिक काम होने लगा और अबरक यहाँ से यूरोप और अमेरिका भेजा जाने लगा। इस समय टिसरी, कोडरमा, दबौर, ढाब, डोमचांच, गाँवाँ, बेंदी और चरकी अबरक के उद्योगधंधे के मुख्य केन्द्र हैं। बढ़ियापन के ख्याल से अबरक के कई भेद होते हैं और उनकी कीमत में बहुत का फर्क होता है।

लोहा—१८७५ ई० की रिपोर्ट से मालूम होता है कि उस वक्त इस जिले में लोहा गलाने का काम काफी तौर से होता था। टण्डवा, लूगू पहाड़ी और खड़गडीहा में पुराने वक्त में लोहा गलाये जाने के बहुत से चिन्ह मिलते हैं। करनपुरा में बहुतायत से कच्चा लोहा मिलता है। लेकिन इस समय लोहा तैयार करने का काम शायद कहीं नहीं होता, क्योंकि इंगलैण्ड से सस्ती दर पर बढ़िया लोहा आने लगने पर यहाँ का काम बन्द हो गया है।

टिन—बराकर नदी के दक्षिण किनारे पालगंज इस्टेट के एक गाँव नरंगा में टिन बनाने की धातु मिलती है।

ताम्बा—उपर्युक्त स्थान के बारगन्द नामक गाँव के पास पहले ताम्बा बहुत तैयार होता था लेकिन अब उसका काम बन्द है।

कंकड़—कंकड़ सब जगह बहुतायत से पाया जाता है। इसको जलाकर चूना बनाया जाता है तथा यह सड़क बनाने के काम में भी आता है।

अन्य खनिज द्रव्य—हजारीबाग जिले में और भी कई प्रकार के खनिज द्रव्य मिलते हैं, लेकिन व्यावसायिक दृष्टि से उनका विशेष महत्व नहीं है।

आनेजाने के मार्ग

रेलवे—हजारीबाग जिले में ईस्ट इण्डियन रेलवे की तीन लाइनें आयी हैं। इनमें सबसे पुरानी लाइन वह है जो संथाल-परगने के मधुपुर जंकशन से इस जिले में महेशमुंडा होकर गिरिडीह को आयी है। दूसरी ग्रैंड कार्ड लाइन जिले के बीच दक्षिण-पूरब की ओर से उत्तर-पच्छिम की ओर गयी है। जिले के अन्दर इसकी लम्बाई करीब ६० मील है। इसपर निमियाघाट, पारसनाथ, चौधरीबांध, चिचकी, हजारीबाग रोड, चोबे, परसाबाद, करमाटाँड़, हीरोडीह, कोडरमा और गझंडी ये ११ स्टेशन है। हजारीबाग रोड और कोडरमा से हजारीबाग को पक्की सड़कें गयी हैं। तीसरी लाईन बरकाकाना लूप लाइन है जो जिले के दक्षिण भाग में पूरब से पच्छिम की ओर गयी है। यह आगे बढ़कर पलामू जिला में प्रवेश करती है। इस लाइन पर हजारीबाग जिले के अन्दर ये सब स्टेशन हैं—तेलो, चन्द्रपुरा, फुसरो, अमलो, बरमो, जरंगडीह, गोमिया, दनिया, चैनपुर, रांची रोड, अरगदा, बरकाकाना, भुरकुंडा, पतरानू और हेंडेगिर।

सड़क—इस जिले में ग्रैंड ट्रंक रोड निमियाघाट के पास प्रवेश करती है और पच्छिम की ओर ७५ मील चलकर दनुआघाट के पास इस जिले को छोड़ती है। हजारीबाग में ६ पक्की सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं—रामगढ़ होकर एक राँची की ओर, एक बड़कागाँव की ओर, दो चतरा की ओर, एक कोडरमा होकर डोमचाच की ओर और एक जमुआ की ओर। चतरा से एक सड़क सिमरिया को, एक चौपारन को, एक हंटरगंज होकर गया जिले की ओर और एक पलामू जिले को गयी है। गिरिडीह से एक सड़क खड़गडीहा

की ओर, दूसरी पिरटाँर की ओर, तीसरी मीरगंज की ओर और चौथी मानभूम जिले की ओर गयी है। पिरटाँर से एक सड़क डुमरी की ओर और दूसरी निमियाघाट की ओर गयी है। प्रायः ये सब सड़कें पक्की हैं। कुछ और भी अच्छी सड़कें खड्गडीहा, डोमचांच, इटखोरी, कोडरमा, पेतरवार, इटखोरी, सिमरिया, जोरी खुर्द आदि प्रसिद्ध स्थानों को भिन्न-भिन्न स्थानों से मिलाती हैं। सन १९३५-३६ की रिपोर्ट के अनुसार इस जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की कुल १०३४ मील लम्बी सड़कें हैं जिनमें १५६ मील पक्की सडकें, ५९२ मील कच्ची सड़कें और २८६ मील छोटी-छोटी देहाती सड़के हैं।

जलमार्ग—इस जिले मे केवल एक दामोदर नदी में छोटी-छोटी नावे चलती हैं। नीलांजन (लीलाजान) नदी होकर बाँस बहाकर गया जिला भेजा जाता है। अन्य नदियों से आने-जाने का काम प्रायः नहीं लिया जा सकता है।

शिक्षा

सन् १८६५ के पहले इस जिले में कोई सरकारी स्कूल नहीं था। पाँच वर्ष के बाद सरकार की सहायता से ८ स्कूल चलने लगे। हाँ, छोटी-छोटी खानगी पाठशालाएँ जगह-जगह पर मौजूद थीं। १८७२ ई० में जार्ज कैम्पबेल की शिक्षा-योजना काम में आने लगने पर सरकारी या सरकारी सहायता-प्राप्त स्कूलों की संख्या ७७ हो गयी। सन १९१५-१६ में सब मिलाकर ७६५ सरकारी शिक्षा-संस्थाएँ थीं जिनमें २१,३२३ छात्र और छात्राएँ पढ़ती थीं। इनके अलावे २५ स्कूल ऐसे थे जिनको सरकारी शिक्षा विभाग से कोई सरोकार नहीं था।

सन् १६१५-१६ में प्रायमरी स्कूलों की संख्या ६७० थी जिनमें १७,२४१ लड़के पढ़ते थे। सन १९३५-३६ मे आकर इन स्कूलों की संख्या घटकर ६२० हो गयी और उनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या बढ़कर २१,०६४ हुई। इन स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशालाएँ और उर्दू प्राइमरी मकतब भी शामिल हैं।

सन १९१५-१६ मे यहाँ मिड्ल इंगलिश स्कूलों की संख्या ७ और मिड्ल वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या ४ थी। सन १९३७-३८में यहाँ मिड्ल इंगलिश स्कूलों की संख्या १९ और मिड्ल वर्नाकुल स्कूलों की संख्या ७ हो गयी है।

१९१५-१६ ई० में इस जिले में हाई स्कूलों की संख्या ४ थी जिनमें ८८३ लड़के पढ़ते थे। इस समय भी बस वही चार स्कूल हैं, दो हजारीबाग में और दो गिरिडीह मे। हजारीबाग में एक जिला स्कूल और एक कालिजियेट स्कूल है। गिरिडीह के दो स्कूलों में एक गर्ल्स (कन्या) हाई स्कूल है।

हजारीबाग में सेंट कोलम्बा के नाम पर स्थापित एक कालेज है जहाँ बी० ए० तक की पढ़ाई होती है।

प्रान्त के अधिकांश जिलों की अपेक्षा इस जिले में स्त्री-शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है। इसका श्रेय ईसाई मिशनरियों को है। जिले के अन्दर ईसाई मिशनरियों के प्रबन्ध से तीन मिड्ल इंग-लिश और एक मिड्ल वर्नाकुलर गर्ल्स स्कूल चल रहे हैं। तीनों मिड्ल इंगलिश स्कूल हजारीबाग में और मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल पचम्बा में है। गिरिडीह में एक गर्ल्स हाई स्कूल भी है, जिसका जिक्र पहले हो चुका है। गर्ल्स स्कूल के अलावे बहुत-सी लड़-कियाँ लड़कों के स्कूलों में भी पढ़ती है। सन १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर पढ़नेवाली लडकियों की संख्या ३,६४६ थी।

हजारीबाग में एक रिफोर्मेटरी स्कूल (सुधारक विद्यालय)

है, जहाँ प्रायः कैद की सजा पाये हुए व्यक्ति पढ़ाये जाते हैं। पढ़नेवाले सैकड़ों की संख्या में रहते हैं। प्रायः छोटी उम्र के कैदी ही यहाँ पढ़ने के लिये भेजे जाते हैं।

गिरिडीह में ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी की कोयले की बहुत सी खानें हैं, इसलिये कम्पनी ने अपने कर्मचारियों की सन्तानों को पढ़ाने के लिये कुछ निःशुल्क पाठशालाएँ खोली हैं।

सन १९३१ की गणना के अनुसार जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ३५,२१८ और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या २,७९१ है। अंगरेजी पढ़े लिखे पुरुप ५,२११ और स्त्रियाँ ६०१ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले मे पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े २.५० है। सन १९३५-३६ मे इस जिले के अन्दर २९,८०० हिन्दुस्तानी लड़के लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े २ हैं।

शासन प्रबन्ध

हजारीबाग छोटानागपुर कमिश्नरी का एक जिला है जिसका सदर आफिस हजारीबाग है। सन् १८३४ से इस कमिश्नरी के सभी जिले नन-रेगुलेटेड या सेडयुल्ड डिस्ट्रिक्ट समझे जाते हैं। इन जिलों के अन्दर कुछ मामलों में साधारण कानून लागू नहीं किये जाकर विशेप कानून लागू किये जाते हैं। यहाँ का जिला-अफसर कलक्टर-मजिस्ट्रेट नहीं कहलाकर डिपटी कमिश्नर कहलाता है। शासन-कार्य में इनकी सहायता के लिये और जिलों की तरह कई डिपटी और सब-डिपटी कलक्टर, आबकारी महाल के डिपटी कलक्टर, सिविल सर्जन, इंजीनियर आदि रहते हैं। यह जिला तीन सब-डिविजनों में बँटा है:—हजारीबाग, गिरिडीह

और चतरा। गिरिडीह सब-डिविजन १८७० ई० मे कायम हुआ। पहले इसका आफिस गिरिडीह से ४ मील उत्तर करहरबारी में था। दूसरे साल यह पचम्बा लाया गया और उसके दस वर्ष के बाद गिरिडीह। चतरा सब-डिविजन १९१४ मे कायम हुआ। १८७० मे बरही मे भी एक सब-डिविजन आफिस खुला था लेकिन वह दो वर्ष के बाद उठा दिया गया। सब-डिविजन का शासन-भार सब-डिविजनल अफसर (एस० डी० ओ०) के ऊपर रहता है। उसकी सहायता के लिये डिपटी और सब-डिपटी कलक्टर होते हैं।

न्याय—जिले के दीवानी और फौजदारी मामलों को सुनने के लिये सबसे बड़े अफसर जुडिसियल कमिश्नर होते है जिनका आफिस राँची मे रहता है। ये समय-समय पर अपना आफिस हजारीबाग मे करते है और सेशन्स जज की हैसियत से फौजदारी मामलों को सुनते हैं। जिले के डिपटी कमिश्नर भी बहुत से मुकदमों को सुनते है। इस काम के लिये कई सब-जज, स्पेशल सबोर्डिनेट जज, डिपटी या सब-डिपटी मजिस्ट्रेट और मुन्सिफ आदि भी होते हैं। छोटे-छोटे मुकदमों को सुनने के लिये जहाँ-तहाँ आनरेरी मजिस्ट्रेट हुआ करते है। सन् १८३४ ई० मे मायापुर, चतरा, छै, बिसुनगढ़ और खडगडीहा में मुन्सिफ रहा करते थे मगर पीछे चतरा को छोड़ सब जगहों से मुन्सिफ हटा लिये गये।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये यह जिला ३५ थानों में बटाँ हुआ है। सदर सबडिविजन में १४, गिरिडीह में १३ और चतरा में ८ थाने हैं। पहले थाना और पुलिस का इन्तजाम स्थानीय जमींदारों के हाथ में था। १८६४ ई० से सब जगह सरकारी थाने खुले। जिले के अन्दर पुलिस का सब से बड़ा अफसर पुलिस-

सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। उसकी सहायता के लिये डिपटी या असिस्टेन्ट पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है। थाने का सबसे बड़ा अफसर पुलिस-इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जिसे दारोगा भी कहते हैं। थाने में दारोगा की सहायता के लिये हवलदार और कई कानिस्टबिल होते हैं। प्रत्येक गाँव में एक दो चौकीदार रहते है। इस जिले के अन्दर सन १९३६ में ८ इन्सपेक्टर, ५९ सब-इन्सपेक्टर, ५२ असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर, १ सर्जेन्टमेजर, २० हवलदार, ५०९ कानिस्टबिल और २७०२ चौकीदार थे।

जेल—हजारीबाग में सेन्ट्रल जेल है, जिसमें लम्बी सजा पाये हुए कैदी रखे जाते है। प्रान्त के ऊँचे दरजे के कैदी प्रायः यहीं भेजे जाते हैं। यहाँ ११५६ पुरुप कैदियों और ३२ स्त्री कैदियों के रहने की जगह है। गिरिडीह और चतरा के जेल सन् १९१६ से काम में लाये जा रहे हैं। गिरिडीह जेल में ४० पुरुष-कैदी और ५ स्त्री-कैदी तथा चतरा जेल मे १८ पुरुष-कैदी और २ स्त्री-कैदी रखे जा सकते है। हजारीबाग के रिफारमेटरी जेल में बंगाल, आसाम, विहार और उड़ीसा के छोटी उम्र के कैदियों को लिखना पढ़ना और उद्योग-धंधा सिखाया जाता है।

रजिस्ट्री आफिस—सन् १९३६ में जिले के अन्दर हजारीबाग, गिरिडीह, चतरा और गोला में रजिस्ट्री-आफिस थे।

डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड—इस जिले में डिस्ट्रिक्टबोर्ड १९०० ई० में कायम हुआ था। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबंगला वगैरह बनवाना, प्रायमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब, कुंआ वगैरह खुदवाना, घाट, अस्पताल, फाटक (अड़गला) आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्टबोर्ड का काम है। यहाँ के डिस्ट्रिक्टबोर्ड के २८ मेम्बर होते हैं जिनमें २१ चुने हुए,

५ नामजद किये और २ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब १० लाख रुपया है। बोर्ड के चेयरमैन नामजद किये सरकारी अफसर होते है। इस जिले में केवल गिरिडीह में लोकलबोर्ड है जिसमें ९ निर्वाचित और ३ नामजद किये मेम्बर रहते है। लोकलबोर्ड डिस्ट्रिक्टबोर्ड के अधीन उसका छोटा-मोटा काम करता है।

म्युनिसिपैलिटियाँ—देहातों के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड का जो काम है वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों का है। इस जिले के अन्दर हजारीबाग, चतरा और गिरिडीह में म्युनिसिपैलिटियाँ है। पहले दोनों म्युनिसिपैलिटियाँ सन् १८६९ में और तीसरी सन् १९०२ में कायम हुई थी। इनके मेम्बरों की संख्या क्रम से २०, १५ और २० है।

हजारीबाग (सदर) सबडिविजन

हजारीबाग सबडिविजन जिले के मध्य भाग में है और यह जिले का सब से बड़ा सबडिविजन है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल ३,४६० वर्गमील और जनसंख्या ७,२०, १९६ है। इसमें सिर्फ एक शहर हजारीबाग और २,१७३ गाँव हैं। इस सबडिविजन में हजारीबाग, इचाक, बरही, बरहकट्ठा, बागोदर, बरकागाँव, टण्डवा, रामगढ़, गोला, गुमिया, माँडू, पेतरबर, कोडरमा और जयनगर ये १४ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं :—

हजारीबाग—जिले का प्रधान शहर हजारीबाग २३°५९' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°२५' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। इसके आसपास कई पहाड़ियाँ हैं, जिनमें

चन्दवार या सीतागढ़ पहाड़ी २, ८१५ फीट ऊँची है। १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या २०,९७७ है जिनमें १४,६४८ हिन्दू, ४,९७५ मुसलमान, ८६० ईसाई, २६१ आदिम जाति, २१३ जैन, १८ सिक्ख और २ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ से ६ पक्की सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। यहाँ रेलवे लाइन नहीं पहुँची है। जिले के उत्तर भाग से आनेवाले लोग ग्रैंड कार्ड लाइन के कोडरमा या हजारीबाग-रोड स्टेशन पर उतर कर मोटर लॉरी आदि सवारी से यहाँ आते हैं।

हजारीबाग बहुत पुराना शहर नहीं है। यहाँ पहले हजारी नाम का एक गाँव था, जहाँ एक बड़ा बाग था। उसीके कारण इस स्थान का नाम हजारीबाग पड़ गया। १७७२ ई० में जब रामगढ़ के राजा ने यहाँ रहने के लिये एक राजमहल बनवाया तो धीरे-धीरे इस स्थान की प्रसिद्धि हो चली। १७८० ई० मे जब रामगढ़ सैनिकदल कायम किया गया तो उसका अड्डा यहीं रखा गया। पीछे सन् १८३४ ई० में यह नवनिर्मित हजारीबाग जिले का सदर दफ्तर भी बना दिया गया। यहाँ से सैनिक छावनी कई बार हटायी गयी और फिर कई बार लायी गयी। इस शहर में जिले के सरकारी आफिसों के अलावे एक कालेज, दो हाई स्कूल, जनाना अस्पताल, सेन्ट्रल जेल, रिफारमेट्री स्कूल और पुलिस ट्रेनिंग कालेज हैं। हजारीबाग थाने की जन-संख्या ७८,८९४ है। इसमे ६२,११५ हिन्दू, १५,०८९ मुसलमान, १,१४२ ईसाई, ३०४ आदिम जाति और २४४ अन्य जाति के लोग है।

इचाक—यह स्थान हजारीबाग से ८ मील उत्तर है। १७७२ ई० में जब अंगरेजों ने रामगढ़ पर कब्जा कर लिया तो वहाँ के राजा तेज सिंह भागकर इचाक आये। उनके उत्तराधिकारियों ने अपने रहने के लिये यहाँ एक तिमंजिला गढ़ बनवाया जो अब

भग्नावस्था में है। इचाक में इस समय थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३१,९७९ है, जिसमें २८,९६२ हिन्दू, २,२४५ मुसलमान, ७३० आदिम जाति, १८ ईसाई और २४ अन्य जाति के लोग हैं।

कोडरमा—कोडरमा रेलवे स्टेशन से यह गाँव ४ मील उत्तर-पूरब है। यहाँ सरकार का सुरक्षित जंगल है जो अबरक की खान के लिये प्रसिद्ध है। कोडरमा में थाना, ईसाई चर्च और डाकबंगला भी हैं। इस थाने की जनसंख्या ७४,०८९ है। जिसमें ६५, ३७४ हिन्दू, ८,३९७ मुसलमान, ११० ईसाई, ९७ आदिम जाति और १११ अन्य जाति के लोग हैं।

गुमिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४४,५८० है, जिसमें २९,५६५ हिन्दू, ११,१७६ आदिम जाति, ३,४२५ मुसलमान, १६५ ईसाई और २४९ अन्य जाति के लोग हैं।

गोला—यह स्थान जिले के दक्षिण भाग में है। यहाँ पहले एक सबोर्डिनेट जज का आफिस था जो हजारीबाग और राँची दोनों जिलों के मामलों को सुनता था। लेकिन यह प्रबंध कुछ दिन के बाद ही उठा दिया गया। यह स्थान इस समय व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ थाना और रजिस्ट्री आफिस भी हैं। इस थाने की जनसंख्या ४०,०१४ है, जिसमें २९,९५२ हिन्दू, ७,६०९ आदिम जाति, २,४४७ मुसलमान और ६ ईसाई हैं।

जयनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ की जनसंख्या ३२,९६३ है, जिसमें २८,०५० हिन्दू, ४,८९७ मुसलमान, १३ ईसाई और ३ अन्य जाति के लोग हैं।

टण्डवा—जिले की पच्छिमी सीमा के पास गरही नदी के किनारे यह स्थान व्यापार का एक केन्द्र है। इसके पास की

जमीन में कोयला पाया जाता है। यहाँ थाना और अस्पताल भी है। इस थाने की जनसंख्या २५,४२८ है, जिसमें २२,९२६ हिन्दू, १,४५४ मुसलमान और १,०४८ आदिम जाति के लोग हैं।

पदमा—१८६६ ई० मे रामगढ़ राजवंश के लोगों के बीच बचीखुची जमींदारी के लिये झगड़ा चला। अंत में तेजसिंह फौजदार की दूसरी स्त्री के लड़के की जीत हुई। वे पदमा आकर बसे और उन्होंने यहाँ महल बनवाया। यह स्थान हजारीबाग से १४ मील उत्तर है।

पेटरवार—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ८३,६४३ है। यहाँ ५१.६३२ हिन्दू, २६,८३१ आदिम जाति, ५,१४१ मुसलमान, २९ ईसाई और १० अन्य जाति के लोग हैं।

बरकागाँव—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४७,९४२ है, जिसमें ४०,३३७ हिन्दू, ४,८१५ मुसलमान, २,७५५ आदिम जाति, ३१ ईसाई और ४ अन्य जाति के लोग रहते हैं।

बरहकट्टा—ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने मे २७,७८० आदमी रहते हैं। इनमें २२,९८५ हिन्दू, २,८९० मुसलमान, १,८५९ आदिम जाति और ४६ ईसाई है।

बरही—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे है। यहाँ पहले सबडिविजनल-आफिस था जो १८७२ ई० में उठा दिया गया। आफिस और जेल के भग्नावशेष अब भी मौजूद हैं। यहाँ थाना, अस्पताल, रजिस्ट्री आफिस और सैनिकों के पड़ाव का मैदान है। इस स्थान में पहले अफीम की खेती होती थी। यहाँ से पक्की सड़क हजारीबाग और कोडरमा रेलवे स्टेशन को गयी है। बरही

थाने की जनसंख्या ३१,३३० है, जिसमे २७,७३१ हिन्दू, और ३,५९९ मुसलमान हैं।

बागोदर—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक रोड के किनारे है। यहाँ थाना और डाकबँगला हैं। इस थानेमें ८४,०४९ आदमी रहते हैं जिनमें ६९,६६१ हिन्दू, ९,९६६ मुसलमान, ४,३५२ आदिम जाति, २० ईसाई और ५० अन्य जाति के लोग रहते है।

बादम—यह गाँव बरकागाँव थाने में है। पहले बहुत दिनों तक वर्तमान रामगढ़ राज्य की राजधानी यहीं थी। यहाँ राजा हेमन्त सिंह ने पटना के एक कारीगर द्वारा यहाँ सन १६४२ में किला और महल बनवाया था जिसका भग्नावशेष अब भी मौजूद है। मुसलमानों के उत्पात के भय से १६७० ई० में यहाँ से राजधानी हटाकर रामगढ़ ले जायी गयी। बादम से ५ मील दक्षिण-पच्छिम माहुदी पहाड़ी में एक गुफा है जिसे हिन्दू संयासियों ने १६६० ई० में तैयार किया था। उस गुफा के शिलालेखों में बादम के राजाओं का भी जिक्र है।

माहुदी पहाड़ी गुफा—दे० **बादम**।

मांडू—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४७,०७८ आदमी रहते है जिनमें ३३,४९१ हिन्दू, १०,०३२ आदिम जाति, ३,३०६ मुसलमान और २४९ ईसाई है

रामगढ़—यह स्थान जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में दामोदर नदी के किनारे है। यहाँ १६७० ई० से लगायत एक सौ वर्ष तक एक राजवंश के लोग रहते थे। यह राजवंश रामगढ़ राज्यवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामगढ़ राज्य की स्थापना १३६८ ई० में सिंहदेव और बाघदेव नामक दो भाइयों द्वारा हुई बतायी जाती है। इसकी राजधानी पहले सिसुआ में और उसके बाद बादम में थी। बादम से ही १६७० ई० में यहाँ राजधानी

आयी। यहाँ उनके किले और राजमहल के भग्नावशेष अब भी दिखायी पड़ते हैं। १७७२ ई० के बाद इस राज्य के मालिक तेजसिंह इचाक जाकर बसे जिससे यहाँ का किला उजाड़ पड़ गया। इचाक जाने के बाद इस राज्य के कई टुकड़े हो गये, पर अन्त में तेजसिंह की दूसरी स्त्री के लड़के को प्रीवी कौसिल के फैसले के अनुसार यह स्टेट मिला। वे पद्मा जाकर बसे। उन्हीं के वंशज इस समय इसके अधिकारी हैं। रामगढ़ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ७०,४२७ आदमी रहते हैं। इनमें ६०,४२४ हिन्दू, ७,८४२ मुसलमान, १,९८३ आदिम जाति, १४३ ईसाई और ३४ अन्य जाति के लोग हैं।

सूर्यकुंड—बरहकट्ठा थाने में ग्रैण्ड-ट्रंक-रोड के २२९ वें मील पर रोड से आधा मील दक्षिण एक गर्म जल का झरना है जो सूर्यकुंड कहलाता है। इसका तापमान १९०° है। यहाँ ठंढे और गर्म जल के और कई झरने हैं। यहाँ माघ मास में मेला लगता है।

गिरिडीह सबडिविजन जिले के पूरब भाग में है। सन १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल २,००२ वर्गमील और जन-संख्या ५,५८,२८७ है। इसमें सिर्फ एक शहर गिरिडीह और २,५३० गाँव हैं। इस सबडिविजन में गिरिडीह, बेंगाबाद, गंडे, डुमरी, नवडीह, पीरटाँड़, बरमो, गावाँ, सतगाँवा, जमुआ, देवरी धनवर और बिरनी ये १३ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

गिरिडीह—यह एक शहर है जहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। पास के करहरबारी कोयले के मैदान के कारण यह शहर बसा है। सबडिविजनल आफिस पहले पास के

पचम्बा नामक स्थान में था जो रेलवेस्टेशन से ३ मील की दूरी पर है। १८८१ ई० में पचम्बा से सबडिविजनल आफिस उठकर गिरिडीह चला आया। १९०२ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी कायम हो गयी। अब गिरिडीह शहर बढ़ते-बढ़ते पचम्बा को ही अपना एक महल्ला बना रहा है। यहाँ एक अस्पताल तथा दो हाईस्कूल हैं जिनमें एक लड़कों का और दूसरा लड़कियों का है। इस शहर की जनसंख्या २१,१२२ है जिसमें १५,२०२ हिन्दू, ५,६५४ मुसलमान १९२ ईसाई, ४७ जैन, २५ आदिम जाति और २ अन्य जाति के लोग हैं। गिरिडीह थाने के अन्दर ८४,४०९ आदमी रहते हैं जिनमें ५९,६९० हिंदू, १५ ८३५ मुसलमान, ८,४६० आदिम जाति, ३७२ ईसाई और ५२ अन्य जाति के लोग हैं।

खड़गडीहा—यह स्थान गिरिडीह से २७ मील उत्तर है। १८३४ ई० से लेकर कुछ दिनों तक यहाँ मुन्सिफ की कचहरी भी थी। यहाँ पहले अफीम की खेती बहुत होती थी। अब यह व्यापार का केंद्र भी नहीं रहा। पंद्रहवीं सदी मे यहाँ एक राज्य कायम हुआ था जो खड़गडीहा राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस समय इस राजवंश के लोग धनवार में रहते हैं।

गावाँ—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ५२,७६२ आदमी रहते हैं जिनमें ४०,७२६ हिंदू, ६,३१७ आदिम जाति, ५,६४० मुसलमान और ७९ ईसाई हैं।

गंडे—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की आबादी ३८,२०२ जिसमें २०,५१३ हिंदू, ११,२१२ आदिम जाति, ६,५५८ मुसलमान और १९ ईसाई हैं।

जमुआ—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने के

अंदर ५७,५२५ आदमी रहते हैं। इनमें ४९,०१७ हिंदू, ८,१०५ मुसलमान, ४०२ आदिम जाति और १ ईसाई हैं।

डुमरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४१,११८ है। यहाँ २८,८९३ हिंदू, ६,४३६ मुसलमान, ५,७८८ आदिम जाति और १ ईसाई रहते हैं।

देवरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४१,५८५ आदमी हैं। इसके अंदर ३३,२५४ हिंदू, ५,०७५ आदिम जाति और ३,२३० मुसलमान और २६ ईसाई हैं।

धनवार—गिरिडीह से ३५ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है। खड़गडीहा राजवंश के लोग अब यहीं रहते हैं। अब उनकी जमींदारी को लोग धनवार स्टेट के नाम से जानते हैं। यह स्थान व्यापार का एक केंद्र है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने की जनसंख्या ५३,०५० है, जिसमें ४२,५६४ हिंदू, १०,०७३ मुसलमान और ४१३ आदिम जाति के लोग हैं।

नावाडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३६,५५० है जिसमे २८,१७१ हिंदू, ४,३७५ आदिम जाति, ३,९८९ मुसलमान और १५ ईसाई हैं।

पचम्बा—दे० गिरिडीह।

पारसनाथ—हिमालय से दक्षिण कई सौ मील तक में सबसे ऊँचा पहाड़ पारसनाथ है। यह हजारीबाग जिले के दक्षिण-पूरब कोने पर मानभूम जिले की सीमा के पास ही है। इसकी ऊँचाई ४,४८१ फीट है। ग्रैंड ट्रंक लाइन का जिले में दूसरा स्टेशन पहाड़ के पास ही है। पार्श्वनाथ जैनियों का एक प्रधान तीर्थ-स्थान है। कहते हैं कि जैनियों के २३वें तीर्थंकर पार्श्व या पार्श्वनाथ ने अपने पहले के ९ तीर्थंकरों के समान इसी पहाड़ पर निर्वाण प्राप्त किया था। कहा जाता है कि उनका जन्म बनारस में हुआ था

और उन्होंने अपने १०० वर्ष की उम्र में अपने ३० साथियों के साथ यहाँ उपवास कर शरीर त्याग किया था। २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर का भी इस स्थान से विशेष संबंध था। यहाँ जैनियों के बहुत से मंदिर हैं। एक मंदिर पर १७६५ ई० की तारीख लिखी है।

पीरटाँड़—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में २७,०५१ आदमी रहते है। इनमें १३,७८७ हिंदू ११,६९३ आदिम जाति, १,१६४ मुसलमान, २०७ ईसाई तथा २०० अन्य जाति के लोग हैं।

बिरनी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ३४,११५ है, जिसमें २८,२४७ हिंदू, ५,३९० मुसलमान और ४७८ आदिम जाति के लोग हैं।

बेंगाबाद—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३२,८८३ आदमी रहते हैं। इनमें २२,६९९ हिंद,६,२२५ आदिम जाति, ३,९२४ मुसलमान, ३४ ईसाई और १ अन्य जाति के लोग हैं।

बेरमो—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की आबादी ३९,२३८ है। यहाँ ३३,१६१ हिंदू, ३,३४० आदिम जाति, २,२४२ मुसलमान, ४११ ईसाई और ८४ अन्य जाति के लोग हैं।

सतगाँवा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १९,७९९ है, जिसमें १७,९७६ हिन्दू, १,८०५ मुसलमान और १८ आदिम जाति के लोग हैं।
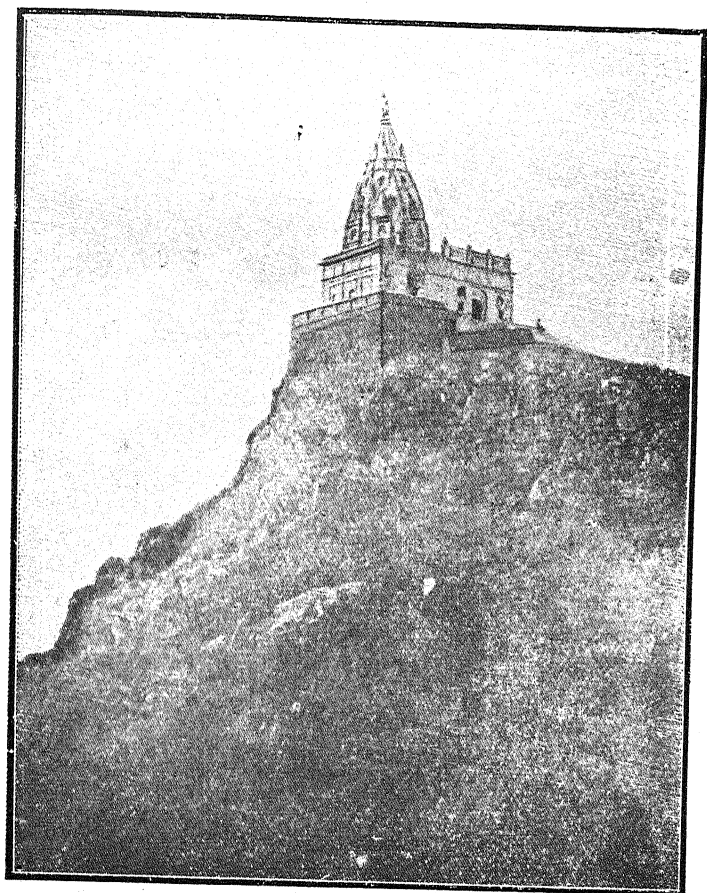
पार्श्वनाथ का मंदिर, पार्श्वनाथ पहाड़ी (हजारीबाग)

कोल्हुआ पहाड़ी में जैनमूर्त्तियाँ (हजारीबाग)

चतरा सबडिविजन

चतरा सबडिविजन जिले के पच्छिम भाग में है और यह जिले का सबसे छोटा सबडिविजन है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,५५९ वर्गमील और जनसंख्या २,३८,८७४ है। इसमें सिर्फ एक शहर चतरा और १,३८४ गाँव हैं। इस सबडिविजन में चतरा, गिद्धौर, चौपारण, इटखोरी, हंटरगंज, प्रतापपुर, सिमरिया और लोवालोंग ये ८ थाने हैं। इस सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं।

चतरा—यह एक शहर है जहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इस शहर की जनसंख्या ८,७५८ है। यहाँ ६,३०३ हिन्दू २,४०९ मुसलमान, २४ जैन १९ ईसाई तथा ३ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ रेलवे लाइन नहीं पहुँची है। यहाँ से भिन्न-भिन्न स्थानों को जाने के लिये बहुत-सी कच्ची-पक्की सड़कें हैं। यह स्थान व्यापार का केंद्र है। जब १७८० ई० में रामगढ़ जिला कायम किया गया था तो शेरघाटी और चतरा ये दोनों स्थान बारी-बारी से जिले के सदर आफिस रहते थे। यह प्रबंध १८३४ ई० तक रहा। उस साल जब हजारीबाग एक अलग जिला कायम किया गया तो इस जिले का सदर दफ्तर हजारीबाग हुआ। चतरा में अब केवल मुन्सिफी कचहरी रहने लगी। १९१४ में आकर यहाँ सबडिविजनल आफिस कायम किया गया। पीछे शहर के प्रबन्ध के लिये म्युनिसिपैलिटी भी कायम हुई। १८५७ के सिपाही-विद्रोह में जब हजारीबाग और राँची के सैनिक चतरा होकर कुंवरसिंह से मिलने भोजपुर की ओर बढ़े थे तो चतरा में अँगरेजों के साथ उनकी मुठभेड़ हुई थी। वहाँ डेढ़ सौ सिपाही मारे गये थे, और कुछ अँगरेज भी मरे थे। वहाँ

मरे हुए अँगरेजों की कब्र अब भी मौजूद है पर उन देशभक्त सिपाहियों की यादगारी में कुछ नहीं है।

चतरा थाने के अन्दर ४२,७५३ आदमी रहते हैं, जिनमें ३७,८६६ हिन्दू, ४,८३४ मुसलमान, १९ ईसाई तथा ३४ अन्य जाति के लोग हैं।

इटखोरी—चतरा से एक सड़क इटखोरी होकर चौपारन में ग्रैण्ड-ट्रंक-रोड से मिल गयी है। १७७० ई० के पहले यहा छै के राज्य राजे रहते थे। उनके महल का भग्नावशेष अबभी दिखलायी पड़ता है। इस गाँव से एक मील पच्छिम मोहानी (मोहिनी) नदी के किनारे जंगल के बीच कुछ पुराने मकानों के खँडहर हैं जहाँ दो टूटे फूटे मंदिरों में कुछ काले पत्थर की मूर्त्तियाँ हैं। इटखोरी में थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने में २८,२७४ आदमी रहते है, जिनमें २६,२१३ हिन्दू और २०६१ मुसलमान हैं।

कुंडा—यह स्थान चतरा से पच्छिम है, जहाँ एक पुराने खानदान के जमींदार हैं। कुंडा राज्य औरंगजेब के समय मे रामसिंह नामक एक व्यक्ति द्वारा कायम हुआ था।

कुलुआपहाड़ी—यह पहाड़ी हंटरगंज से ६ मील दक्षिण-पच्छिम है। इसकी ऊँचाई १,५७५ फीट है। यहाँ कुछ टूटे-फूटे मंदिर तथा दूसरे मकान हैं। इस स्थान को यहां के हिन्दू तीर्थ-स्थान मानते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि ये मंदिर और मकान जैनियों के बनवाये हुए हैं क्योंकि यह जैनियों के दसवें तीर्थंकर शीतल स्वामी का जन्मस्थान है। कहते हैं कि पहले जैन लोग यहाँ तीर्थ के लिये आते थे। लेकिन अब उनका यहाँ आना नहीं होता। बहुत से स्थानीय हिन्दू इस स्थान का संबंध पाण्डव भाइयों से बताते हैं।

केंदी—यह स्थान चतरा थाने में है। यहाँ एक पुराने खान-

दान के जमींदार रहते हैं। १७०० ई० में मुसलमानों ने चढ़ाई कर कैंदी राज्य की स्वतंत्रता छीन ली थी। तब से यह एक जमींदारी की तरह रह गया है।

गिद्धौर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या १५,१८९ है। इसमें १४,०१२ हिन्दू, ११७५ मुसलमान और २ ईसाई हैं।

चौपारन—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ४२,७५३ है। यहाँ ३७,८३६ हिन्दू, ४,८३४ मुसलमान, १९ ईसाई तथा ३४ अन्यजाति के लोग हैं।

छै—यह स्थान चौपारन के पास यहाँ से चतरा जानेवाली सड़क पर है। यहाँ पुराने समय में एक राजा का निवासस्थान था। छै राज्य १७७० ई० के लगभग रामगढ़ राज्य में मिला लिया गया। उस समय यह पाँच हिस्सों में बँटा हुआ था।

प्रतापपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या २५,६५८ है, जिसमें २२,२२६ हिन्दू और ३,४३२ मुसलमान हैं।

लोवालौंग—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में १३,५१० आदमी रहते हैं जिनमें १२,९१४ हिंदू, ५९० मुसलमान और ६ आदिम जाति के लोग हैं।

सिमरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या २२,८२४ है। इसमें १६,९५४ हिंदू, २,३९५ मुसलमान और ४७५ आदिम जाति के लोग हैं।

हंटरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४५,३०० आदमी रहते हैं, जिनमें ४२,३३१ हिंदू, २,८६१ मुसलमान और १०८ अन्य जाति के लोग हैं।

हजारीबाग जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की क्रमानुसार जनसंख्या (सन् १९३१)

ग्वाला	१,५६,४३०	धोबी	१३,७८१
संथाल	१,२९,१०३	कमार	१३,२५३
जोलाहा	१ १०,४१८	बनिया	१२,२१८
कुरमी	१,०५,७२५	कायस्थ	१२ ०७५
भुइयाँ	८५,१३८	रजवार	९,४८०
तेली	६५,८३५	ओराँव	७,०१४
चमार	६५,६७५	करमाली	६,९३९
कोयरी	६३,६३२	काँदू	६,४५०
घटवार	५४,७४४	घासी	४ ९०३
ब्राह्मण	३६,८०४	पासी	४,७६९
राजपूत	३५,७६०	महली	४,५९२
बरही	३४,४५२	डोम	४,४८४
कुम्हार	३३,८२६	मुसहर	४,१४२
हजाम	३३,१४१	केवट	३,३४९
भागता	३१,१०३	ताँती	१,८५७
कहार	३१,५०१	मल्लाह	१,६१८
तूरी	३०,६३४	माली	१ ५०१
दुसाध	२८,७८४	हाड़ी	१ ४७९
भूमिहार ब्राह्मण	२१,४६७	बिरहोर	१ १४३
मुंडा	१८,६९५	भूमिज	२००

पलामू जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

पलामू जिला छोटानागपुर कमिश्नरी के उत्तर-पच्छिम कोने पर २३° २०' और २४° ३९' उत्तरीय अक्षांश तथा ८३° २२' और ८५°००' पूर्वीय देशान्तर के बीच स्थित है। इसका सदर आफिस डालटनगंज है।

इस जिले का पलामू नाम क्यों पड़ा, यह ठीक-ठीक नहीं बतलाया जा सकता। कुछ लोग कहते हैं कि पलायन शब्द से पलामू बना। शायद इसका अर्थ हो भागने का स्थान। एक पुरानी सनद में भी जिले का यह नाम पाया गया है, लेकिन यह भी कहा जाता है कि पलामू या पाला मू शब्द "पाला से मारा हुआ" के अर्थ में है। क्योंकि जाड़े के दिनों में इसके बहुत-से हिस्सों में खूब पाला पड़ता है। बहुतों का यह भी मत है कि पलामू द्राविड़ भाषा का शब्द है और यह पल्ल-अम्म-उ शब्द से बना है। कहते हैं कि यहाँ इस नाम का एक गाँव था, जहाँ चेरो राजा की राजधानी थी।

इस जिले के उत्तर में शाहाबाद और गया जिले हैं। सोन नदी इसको शाहाबाद से अलग करती है। पूरब में गया और हजारीबाग के जिले पड़ते हैं। दक्षिण में केवल एक राँची जिला है। पच्छिम में मध्य प्रान्त का सरगुजा स्टेट और युक्त प्रान्त का मिरजापुर जिला है।

पलामू जिला मोटे तौर पर समानान्तर चतुर्भुज के रूप में है। इसके पूरब और पच्छिम का भाग अधिक लम्बा है तथा उत्तर और दक्षिण का भाग कम। इसका क्षेत्रफल ४,६१६ वर्गमील है।

प्राकृतिक बनावट

पहले लिखा जा चुका है कि पलामू जिला मोटे तौर पर समानान्तर चतुर्भुज के रूप में है। कोयल नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहकर जिले को करीब दो बराबर भागों में बाँटती है। जिले के अन्दर पूरब से पच्छिम की ओर फैली हुई बहुत-सी समानान्तर पर्वतश्रेणियाँ हैं, जिनके भीतर से घुसती हुई कोयल नदी दक्षिण से चलकर जिले की उत्तरी सीमा पर सोन नदी से मिलती है। केवल दक्षिणी सीमा के पास की पर्वत श्रेणी को यह नदी पार नहीं करती है; पर उसे पार करती है इसकी एक सहायक नदी, जो बूढ़ी नदी कहलाती है। यह नदी दक्षिण के छेछरी घाटी के पानी को बहा ले जाती है। समानान्तर पर्वत-श्रेणियों के बीच की, खास कर सोन, कोयल और अमानत नदियों के किनारे की भूमि उपजाऊ है। बाकी भाग, जो जिले का अधिकाँश भाग है, पहाड़ों और जंगलों से भरा है और उसके बीच-बीच में पहाड़ी धाराएँ बहती हैं। इस जिले की भूमि औसतन समुद्र तल से १२०० फीट ऊँची है; लेकिन दक्षिण की कुछ चोटियाँ ३००० फीट से अधिक ऊँची हैं। जिले के अन्दर सबसे ऊँची चोटी नेटारहाट अधित्यका की चोटी है, जो ३,६९६ फीट ऊँची है।

जिला प्राकृतिक रूप से चार भागों में बँटा है। चारों का अलग-अलग अपना परगना है। इनमें सबसे बड़ा परगना पलामू है, जो जिले के अधिकांश भाग को छेंकता है। परगना टोरी जिले के दक्षिण-पूरब कोने पर है। यह ऊँची-नीची जमीन है; पर इसके बहुत-से स्थानों में अच्छी खेती होती है। बीच-बीच में जहाँ-तहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ भी हैं। जिले के उत्तर-पच्छिम कोने पर परगना बेलौंजा है। यह परगना पलामू से मिलता-जुलता है। परगना जपला जिले के उत्तर-पूरब कोने पर है। यह समतल भूमि है और यहाँ पहाड़ प्रायः नहीं है।

पर्वत श्रेणियों के अलावे जिले के अन्दर कुछ छिट-फुट पहाड़ भी हैं जिनमें अधिकांश का कोई खास नाम नहीं है। प्रायः पास के गाँव के नाम पर ही लोग उन्हें जानते हैं। ऐसे कुछ पहाड़ों के नाम हैं—मदगीर, चेतग, लतेहर (२,०५१ फीट), बीजका (२,४७६ फोट), खैरा (१,७००), बूढ़ा पहाड़ (३,०००), कोटम और कुमानडीह (दोनो ढ़ाई-तीन हजार फीट)।

जंगल—यह जिला पहले जंगलों से भरा था, लेकिन धीरे-धीरे अब जंगल कटते जा रहे हैं और आबादी बढ़ती जा रही है। तोभी हजारीबाग और राँची जिले में जितनी तेजी से जंगल कटते जा रहे हैं, उतनी तेजी से यहाँ नहीं। पिछली सेटलमेन्ट रिपोर्ट के समय जिले के रकबे ४,९१६ वर्गमील में ३,२०० वर्ग-मील जंगल था, जिसमें २,००० वर्गमील खेती के लायक नहीं था। सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर सरकार का २,१३,५४० एकड़ रिजर्वड फारेस्ट और २५,२५३ एकड़ प्रोटेक्टेड फारेस्ट था। बहुत-से जंगल निजी हैं। इनके अलावे कुछ खालसा जंगल हैं। खास महाल के जंगल को खालसा जंगल कहते हैं। इसकी

गिनती सरकारी जंगल के अन्दर नहीं है और इसपर प्राय: नियंत्रण नहीं रहता है।

खास सरकारी जंगल डाल्टनगंज से दक्षिण लतेहर और महुआदाँड़ थाने में १००० फीट से ३५०० फीट की ऊँचाई पर है। इस जंगल के सैकड़े ५३ भाग में केवल साल के वृक्ष हैं। बाकी में बाँस तथा दूसरे-दूसरे वृक्ष हैं। संरक्षित जंगल डाल्टनगंज, लतेहर और महुआदाँड़ थाने के भिन्न-भिन्न स्थानों में तथा कुछ लेसलीगंज थाने में भी है। पहले पहल १८७९ ई० में सरकार ने इस जिले के १७९ मील जंगल को अपने खास इन्तजाम में लाया। इसके बाद धीरे-धीरे बाकी जंगल का इन्तजाम हुआ। यहाँ के जंगली पेड़ों में मुख्य ये सब पेड़ हैं—साल, सनै, पियार, आसन, करम, खैर, औरा, धौता, बीया, गुरी, सीधा, काजी, कुसुम, महुआ, गँभार, चिलविल, सन्दन, सीमल, रोहन, पनरार, बेल, ककोर, गिंजन, केंकर, गलगल, तेंदु, भुरकुल, क्योंजी, पपेर, तून और बाँस।

जंगलों से लकड़ी और बाँस मिलने के अलावे और भी कई आर्थिक लाभ हैं। खैर के पेड़ से कथ तैयार किया जाता है। कुसुम, पलास, बैर आदि के पेड़ पर लाइ के कीड़े पलते हैं। महुआ का फल खाने और बीज तेल बनाने के काम में आता है। सावै आदि घासों से रस्सियाँ तैयार होती हैं और वह कागज बनाने के लिये बाहर भी भेजी जाती है। जंगलों में मधु बहुत मिलता है। कुछ पेड़-पौधे ओषधियों के काम में आते हैं, कुछ के रंग बनते हैं, कुछ का गोन्द तैयार होता है और कुछ की छाल से रस्सियाँ बनती हैं। इस तरह जंगल बहुत उपयोगी होते हैं।

नदियाँ

पलामू जिले की मुख्य नदियाँ सोन, कोयल, औरंगा, अमानत और कनहर तथा इन सबों की सहायक नदियाँ है। जिले का सब पानी अन्त में सोन नदी में गिरता है।

सोन—सोन नदी ४५ मील तक जिले की उत्तरी सीमा का काम करती हुई इस जिले को शाहाबाद से अलग करती है। यह मिरजापुर जिले से आकर इस जिले को उत्तर-पच्छिम कोने पर छूती है और फिर पूरब की ओर बहने लग जाती है। कुछ दूर के बाद जिले की मुख्य नदी कोयल दक्षिण दिशा से बहती हुई इससे आ मिलती है। इसके बाद इसकी धारा उत्तर-पूरब की ओर हो जाती है। यहाँ पर इसकी चौड़ाई बढ़कर एक-दो मील तक हो गयी है। सोन में २१,३०० वर्गमील के रकबे की पहाड़ी भूमि का पानी बहकर आता है, इस कारण बरसात में इसका बड़ा भयंकर रूप हो जाता है। यह बहुत वेग से बहने लगती है और वर्षा होने पर इसमें अचानक बड़ी बाढ़ आ जाती है। लेकिन, गर्मी के दिनों में इसकी धारा छोटी रहती है और यह धीमी चाल से बहती है। गर्मी के दिनों में इसमें छोटी-छोटी नावें चलती हैं; पर बरसात में नावों का चलना मुश्किल हो जाता है। इस नदी होकर साधारण बाँस और लकड़ियाँ बहा ले जायी जाती हैं।

कनहर—यह नदी मध्यप्रान्त के सरगुजा स्टेट में उत्पन्न होती है। यह कोयल नदी के समानान्तर में बहती हुई करीब ५० मील तक इस जिले की पच्छिमी सीमा का काम कर इस जिले को सरगुजा स्टेट से अलग करती है। यहाँ से यह मिरजा-

पुर जिले में प्रवेश कर वहीं सोन नदी में मिल जाती है। इस नदी की धरातल पहाड़ी भूमि है।

उत्तर कोयल—उत्तर कोयल नदी राँची जिले में उत्पन्न होती है और दक्षिण की ओर रूद नामक स्थान में, पलामू जिले में प्रवेश कर, अपनी टेढ़ी-मेढ़ी चाल से जिले के बीच होकर बहती हुई जिले की उत्तरी सीमा पर हैदरनगर के पास सोन नदी से मिल जाती है। रास्ते में बहुत-सी सहायक नदियाँ और छोटी-छोटी धाराएँ इससे आ मिली हैं। इनमें मुख्य औरंगा और अमानत हैं। औरंगा डाल्टनगंज से १० मील दक्षिण और अमानत डाल्टनगंज से ५ मील उत्तर कोयल नदी में मिल जाती है। सिगसिगी गाँव के पास एक चट्टान नदी के आर-पार गया है, जो इस स्थान पर नावों का चलना बन्द कर देता है। वर्षा होने पर इसमें अचानक बड़ी बाढ़ आ जाती है। यह ३,५०० वर्गमील का पानी लाकर सोन को देती है। गर्मी के दिनों में इसमें नावें नहीं चल सकतीं।

औरंगा—यह नदी इसी जिले में सोहेदा नामक स्थान के पास निकलती है और ५० मील तक उत्तर-पच्छिम को ओर बहती हुई केचकी नामक स्थान के पास कोयल नदी में मिल जाती है। इसका धरातल पहाड़ी भूमि है, इससे बरसात के दिनों में इसमें नावें नहीं चल सकतीं। गर्मी के दिनों में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है और इस कारण नावों का चलना असम्भव हो जाता है। सकरी और घघरी इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

अमानत—अमानत हजारीबाग जिले से निकलती है और टेढ़ी-मेढ़ी चाल से पच्छिम की ओर बहती हुई डाल्टनगंज से ५ मील उत्तर कोयल नदी से मिल जाती है। यह जिले के पूरब

भाग की मुख्य नदी है और बहुत उपजाऊ घाटियों में होकर बहती है। इसकी प्रधान सहायक नदियाँ जिनजोय, मैला, और पीरी हैं। कुछ और भी छोटी-छोटी धाराएँ इससे आ मिली हैं।

अन्य नदियाँ—जिले के अन्दर और भी कई छोटी-छोटी नदियाँ हैं। इनमें मुख्य बूढ़ी नदी, सरबदह, तहलेह, बाँकी, दनरो, कररवार, पन्दो, उन्द्रा, हाँथू और बटबहनी हैं।

जलवायु और स्वास्थ्य

पलामू जिले की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्य-प्रद है। जाड़े के दिनों में यहाँ खूब जाड़ा पड़ता है। पूस-माघ में तो अक्सर पाला गिरा करता है। रात के समय बाहर पड़ा हुआ पानी कभी-कभी एक इंच की मुटाई तक जम जाता है। इन दिनों वर्षा होने पर प्रायः बनौरी (पत्थर) जरूर गिरती है। गर्मी के दिनों में गर्मी भी यहाँ अच्छी पड़ती है। दिन के समय छाया-दार स्थान में प्रायः तापमान ११२°—१४° रहता है। कभी-कभी गर्मी इससे भी अधिक बढ़ जाती है। वर्षा जिले के उत्तरीय भाग की अपेक्षा दक्षिणी भाग में अधिक पड़ती है, क्योंकि दक्षिणी भाग में पहाड़ अधिक हैं। उत्तरीय भाग में जहाँ साल में औसतन ४०-४५" वर्षा होती है, वहाँ दक्षिणी भाग में ४५-५०"। जिले भर का औसत साधारणतः ४५" रहता है। वर्षा सावन-भादो में सबसे अधिक होती है। इन दिनों नमी या आर्द्रता करीब ८६ प्रति सैकड़ा तक रहती है। बैसाख-जेठ में आर्द्रता केवल करीब ४६ प्र० सै० रह जाती है। साल भर की औसत आर्द्रता ७२ प्रति सैकड़ा है। हवा में पूर्वी और पच्छिमी हवा मुख्य है।

जिले के अन्दर रोगों की कोई खास शिकायत नहीं है। हाँ, मलेरिया की शिकायत बरसात के दिनों में प्रायः हर जगह रहती है। गरू, महुआदाँर और भवनाथपुर थाने में मलेरिया की शिकायत सब दिन रहती है। १६१८ ई० में इन्फ्ल्यूएञ्जा, १६२० में चेचक और १६१८ से १६२१ तक हैजा यहाँ जोरों से हुआ था। प्लेग पहले पहल १६०१ ई० में फैला था। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस जिले मे पागलों की संख्या १६५, बहरे-गूँगों की संख्या ४०६, और कोढ़ियों की संख्या २२१ है। ये तीनों संख्याएँ सिहभूमि को छोड़ विहार के सभी जिलों से कम हैं। इस जिले के अंधों की संख्या १,७६७ है। भागलपुर, पूर्णिया, संथालपरगना और सिंहभूमि में यहाँ से कम अन्धे हैं, बाकी सभी जिलों में अधिक।

इस जिले के अन्दर सन् १६३५-३६ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २२ अस्पताल थे।

जानवर

इस जिले में पशुओं की दशा अच्छी नहीं है। हजारीबाग और राँची में भैंस कम पायी जाती हैं मगर यहाँ ऐसी बात नहीं है। यहाँ गाय भैंस दोनों काफी पाये जाते हैं। हल में प्रायः बैल ही जोते जाते हैं, भैंसे बहुत कम। हाँ, ओराँव लोग प्रायः भैंसे ही हल में जोतते हैं। यहाॅ १० एकड़ उपजाऊ जमीन पर एक हल है, जहाँ राँची में ८ एकड़ और हजारीबाग में ६½ एकड़ पर। भेड़ और बकरियाँ भी यहाँ बहुत हैं। सवारी के काम के लिये लोग घोड़े पालते हैं। छोटी जाति के लोग खाने के लिये सूअर पोसा करते हैं।

इस जिले में जंगल का बहुत बड़ा रकबा होने से जंगली जानवर भी काफी तायदाद में पाये जाते हैं। जंगली जानवरों में बाघ, चीते, भालू, सूअर, जंगली कुत्ते, भेड़िये, हरिण, नीलगाय, बन्दर आदि हैं। बाघ और चीते सब जगह पाये जाते हैं। सन् १६२२ में ३४ आदमी बाघ से और ३८ चीते से मारे गये थे। सन् १६२४ मे क्रम से १४ और ७ आदमी इन दोनों जानवरों से मारे गये। इस तरह हर साल कुछ न कुछ आदमी इन जंगली जानवरों के शिकार होते हैं। मवेशी तो सैकड़ों की संख्या में हर साल बाघ और चीतों से मारे जाते हैं। भालू अधिकतर जिले के दक्षिणी भाग मे पाये जाते हैं। ये महुआ, गूलर, जंगली मधु आदि अधिक खाते हैं और मकई की फसल को भी बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। जंगली कुत्ते भी मवेशियों के लिये खतरनाक होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं, बड़े और छोटे। छोटे को मुनीकोइया और बड़े को राजकोइया या बड़ा कोइया कहते हैं। राजकोइया कभी-कभी बाघ पर भी धावा कर बैठते हैं। हरिण कई प्रकार के होते हैं।

इतिहास

प्राचीन काल—पलामू जिले के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चलता; लेकिन खरवार, ओराँव और चेरो इन आदिम जातियों की दन्त-कथाओं का सम्बन्ध इस जिले से काफी जान पड़ता है। 'खरवारों की दन्त-कथा बताती है कि पुराने जमाने में खरवार लोग रोहतासगढ़ के शासक थे और वहीं से ये पलामू जिले में आये। शिला-लेखों के अनुसंधान से मालूम होता है कि खरवारों का यह दावा निर्मूल नहीं है।

रोहतासगढ़ का एक शिला-लेख खयार्वल वंश के एक सरदार प्रतापधवल का उल्लेख करता है। ऐतिहासिकों का कहना है कि खयार्वल ही आज के खरवार हैं। इस सरदार का एक दूसरा शिला-लेख शाहाबाद में पाया गया है जिससे प्रगट होता है कि प्रतापधवल कम से कम पलामू के उत्तर भाग का शासक था और सोन के पच्छिम भाग में भी उसकी काफी धाक थी। ११६६ ई० का फुलवारी का एक शिला-लेख बताता है कि उसने रोहतास की अधित्यका तक सड़क बनवायी थी और वह जपिला का नायक अर्थात सरदार था। सम्भवतः पलामू जिले के उत्तर भाग का जपला स्थान ही उस समय जपिला कहलाता था। ससराम के पास ताराचंडी स्थान पर भी इस सरदार का एक शिला-लेख है। सोन के पच्छिमी किनारे पर तिलोथू नामक स्थान से ५ मील पच्छिम तुतरहा के जल-प्रपात के समीप ११५८ ई० का एक शिला-लेख बताता है कि प्रतापधवल अपने सारे परिवार, पाँच दासियाँ, कोषाध्यक्ष, द्वारपाल और दरबारी पण्डित के साथ तीर्थ करने यहाँ आया था। रोहतास का एक शिला-लेख प्रतापधवल के एक उत्तराधिकारी प्रताप द्वारा गढ़ के अन्दर एक कुँआ बनाने का उल्लेख करता है। इन उल्लेखों से साफ मालूम होता है कि १२वीं सदी में पलामू के उत्तरीय भाग पर खरवार सरदारों का शक्तिशाली राज्य था। रोहतास के किले पर भी इन्हीं लोगों का अधिकार था और इनका आधिपत्य दक्षिण शाहाबाद तक फैला हुआ था।

ओराँव लोग भी कहते हैं कि वे यहाँ रोहतासगढ़ से आये। वे अपना मूल-निवास कर्नाटक बताते हैं, जहाँ से वे नर्मदा नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ से बढ़ते-बढ़ते वे बिहार आये और सोन नदी के किनारे बस गये। यहाँ उन लोगों ने रुइदास या

(रोहतास) में किला बनवाया। एक बार शत्रुओं के हमले से वे यहाँ से भी भाग खड़े हुए। कुछ लोग राजमहल की ओर गये जो माले कहलाये और कुछ लोग पलामू, हजारीबाग, राँची आदि जिलों में फैल गये।

चेरो लोगों का भी कहना है कि इनके पूर्वज यहाँ शाहाबाद जिले से आये। शाहाबाद जिले में इनके पुराने मकानों और किलों के भग्नावशेष बताये जाते हैं। कहते हैं कि रोहतासगढ़ पर भी इनका कब्जा था। यहाँ से ये लोग पलामू आये और यहाँ के शासक रक्सेल राजपूतों को भगाकर यहाँ बस गये। इसमें सन्देह नहीं कि १६वीं सदी के मध्य तक दक्षिण विहार में चेरो लोग बड़े शक्तिशाली थे। तारीख-इ-शेरशाही में लिखा है कि एक बार १५३८ ई० में शेरशाह ने एक चेरो सरदार मरहठा चेरो को दबाने के लिये अपने एक सेनापति खवास खाँ को भेजा था। यह सरदार सर्वत्र बड़ा उपद्रव मचाये हुए था और उत्तर-भारत से गौड़ और बंगाल जाने के रास्ते को भी रोके हुए था। वाकियात-इ-मुश्तकी नामक ग्रन्थ में खवास खाँ द्वारा इस चेरो सरदार के दबाये जाने को बहुत महत्व दिया है और शेरशाह के तीन महत्वपूर्ण कामों में इसको भी एक गिना है।

चेरो लोगों की पलामू विजय के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न दन्त-कथाएँ हैं। एक दन्त-कथा बताती है कि चेरो लोगों ने रोहतास से आकर कुछ राजपूत सरदारों की सहायता से, जिनके वंशज रंका और चैनपुर में हैं, पलामू पर आक्रमण किया। यहाँ का रक्सेल राजपूत राजा भागकर सरगुजा चला गया और चेरो लोगों ने यहाँ अपना राज्य जमाया। कहते हैं कि उस समय पलामू में खरवार, गोंद, भार, कोरवा, पहाड़िया और किसान लोग थे। इनमें खरवार सबसे मुख्य थे। खरवारों का

१८,००० और चेरो लोगों का १२,००० परिवार था। एक दूसरी दन्त-कथा बताती है कि खरवार लोग विजित जाति के नहीं थे, बल्कि वे चेरो के साथ ही यहाँ विजय करने आये थे। छेछरी घाटी में तामोलगढ़, अमानत नदी के पास तरहसी और कोट रक्सेल राजा के बताये जाते हैं। उसी तरह लोग कहते हैं कि पलामू का पुरना शहर, दण्ड, लखना और मरहटिया गाँव को माल लोगों ने बसाया था। माल लोग अब इस जिले में प्रायः नहीं हैं। कहते है कि चेरो लोग पहले हिमालय के पास मोरंग देश में रहते थे। वहाँ से वे कुमायूँ और तब भोजपुर आये। यहाँ ये लोग सात पुस्तों तक शासन करते रहे। पाँचवें शासक सहबल राय ने चम्पारण पर चढ़ाई की, पर वहाँ से अपने चैनपुर के किले में लौटने पर वह जहाँगीर की सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उसका लड़का भागवत राय पूरनमल नामक एक राजपूत सरदार के साथ पलामू चला आया और यहाँ रक्सेल राजा मानसिह के यहाँ नौकरी करने लगा। एक बार जब राजा सरगुजा गया था, तो भागवत राय उसके सब सम्बन्धियों को मारकर १६१३ ई० में खुद राजा बन बैठा और पूरनमल को अपना दीवान बनाया। भागवत राय के वंशज ने २०० वर्षों तक पलामू जिले में राज्य किया। भागवत राय के बाद अनन्त राय और उसके बाद मेदनी राय ने राज्य किया। मेदनी राय ने अपना आधिपत्य गया, हजारीबाग और सरगुजा तक फैलाया। छोटानागपुर के राजा पर उसने चढ़ाई की। पलामू के पुराने किले पर भी इसने दखल जमाया। उसके लड़के प्रताप राय ने यहाँ एक दूसरा किला बनाना आरम्भ किया था; पर वह उसे पूरा न कर सका। वह ज्यों का त्यों अब भी पड़ा है।

मुसलमानी काल—मुसलमानों का आधिपत्य इस जिले में सम्राट् अकबर के समय में जमा। महाराज सिताब राय ने पटने के सूबेदारी रजिस्टर से पता लगाया था कि पलामू जिले पर अकबर के सेनापति मानसिंह ने चढ़ाई की थी और यहाँ सेना रक्खी थी; पर १६०५ ई० में अकबर के मरने पर वह सेना भगा दी गयी। १६२६ में शाहजहाँ ने अहमद खाँ को पटना का सूबेदार बनाया और उसे पलामू तथा उसके आस-पास की जमीन जागीर में दी। उसने इस भू-भाग पर १,३६,००० रुपया सालाना कर बाँधा; पर पलामू के चेरो सरदारों ने यह कर देने से आनाकानी की। इसपर मुसलमानों ने पलामू पर तीन बार चढ़ाइयाँ कीं।

पहली चढ़ाई सन् १६४१ के अक्टूबर में चेरो राजा प्रताप राय के समय में हुई। औरंगजेब के चाचा और बिहार के सूबेदार शाइस्ता खाँ ने १५,००० पैदल सैनिकों और ५०,०० घुड़-सवारों को लेकर चेरो लोगों पर आक्रमण किया। पहाड़ों और जंगलों के बीच घुसकर लड़ना कठिन काम था। दोनों ओर से बहुत-से लोग मारे गये। अन्त में प्रताप राय ने ८०,००० रुपया देकर शाइस्ता खाँ से सन्धि कर ली। १६४२ ई० की फरवरी में शाइस्ता खाँ लौट गया। इसके बाद प्रताप राय के परिवार में ही फूट पैदा हो गयी। उसके चाचा तेजराय और दरिया राय भीतर ही भीतर मुसलमानों से मिल गये। तेज राय प्रताप राय को गद्दी से उतारकर खुद राजा बन बैठा। लेकिन, तेजराय के गद्दी पर बैठने पर दरिया राय उसके खिलाफ रहकर स्वयं राजा बनने के लोभ से चुपचाप मुसलमानों से मिला रहा। उसने देवगन का किला १६४३ ई० में मुसलमानों के हाथ सुपुर्द कर दिया। सूबेदार जबरदस्त खाँ अब आगे बढ़ने की तैयारी करने

लगा। तेजराय ने ७,००० पैदल और ६०० घुड़सवार उसके विरुद्ध भेजा, लेकिन जबरदस्त खाँ ने सबों को परास्त किया। इसी समय प्रताप राय छूट गया और उसने पलामू के किले पर दखल कर लिया। जबरदस्त खाँ पलामू की ओर बढ़ा। प्रताप राय ने विजय की कोई आशा नहीं देखकर सन्धि कर ली। वह पटना गया और वहाँ उसने एक लाख सालाना कर देना स्वीकार किया। पीछे शाहजहाँ ने उसे एक हजार घुड़सवारों का अध्यक्ष बनाया और खर्च के लिये पलामू का इलाका सुपुर्द किया। इसका जमा २½ लाख रुपया निश्चित हुआ।

दो-दो बार मुसलमानों के हाथों पराजित होने पर भी चेरो सरदार कर देने का केवल वादा करके ही रह गये, कर कभी दिया नहीं। दूसरी बार पराजित होने के करीब २० वर्ष बाद तक यही दशा रही। कर के लिये बार-बार तकाजा करने से तंग आकर विहार के सूबेदार दाऊद खाँ ने चढ़ाई कर उनके राज्य पर बिलकुल कब्जा कर लेना ही चाहा। इस चढ़ाई का आलमगीरनामा में विशद वर्णन दिया गया है। उसमें लिखा है कि चेरो राज्य गया जिले के दक्षिण तक फैला हुआ था। पलामू का उत्तरी हिस्सा पटना से सिर्फ ५० मील दक्षिण था। चेरो सरदार की राजधानी पलामू एक बड़ा शहर था और उसके अन्दर दो किले थे। एक पास की पहाड़ी के ऊपर और दूसरा खुले मैदान में। औरंगा नदी उसके पास में बहती थी। शहर के चारों ओर पहाड़ियाँ और घने जंगल थे। राज्य की सीमा पर कोठी, कुंडा और देवगन इन तीनों स्थानों में किले थे। दाऊद खाँ पहले इन्हीं पर आक्रमण करने को आगे बढ़ा। वह १६६० ई० में एक जबरदस्त सेना लेकर कोठी पहुँचा, जो इमामगंज (गया) से ६ मील दक्षिण है। लेकिन वहाँ जाकर उसने देखा कि किला

बिलकुल खाली पड़ा है। उसके बाद वहाँ से वह १४ मील दक्षिण-पूरब कुंडा की ओर बढ़ा। रास्ता घने जंगलों से इस तरह भरा था कि इतनी थोड़ी दूरी को पार करने में भी उसे पूरा एक महीना लग गया। लेकिन वहाँ भी पहुँचकर उसने यही देखा कि किला सूनसान पड़ा है। किले को तोड़कर उसने मिट्टी में मिला दिया। इस समय बरसात शुरू हो गयी थी इससे आगे बढ़ना उसके लिये मुश्किल हुआ। वह कोठी और कुंडा के बीच पड़ाव डालकर बरसात भर वहीं रह गया। बरसात के बाद वह फिर आगे बढ़ा। जब वह लोहारसी पहुँचा तो सन्धि की चर्चा शुरू हुई, पर फल कुछ नहीं हुआ। दाऊद खाँ के पलामू पहुँचने पर बहुत दिनों तक दोनों ओर से घनघोर लड़ाई होती रही। अन्त में पलामू और देवगन के किले मुसलमानों के हाथ आ गये। दाऊद खाँ वहाँ एक मुसलमान फौजदार रखकर पटना लौट गया। १६६६ ई० में फौजदार वहाँ से हटा लिया गया और पलामू सीधे विहार के सूबेदार की देख-रेख में रहा।

उत्तर पलामू मुसलमानों के अधिकार में आया सही, परन्तु दक्षिण पलामू में चेरो सरदार स्वतन्त्र रूप से राज्य करते ही रहे। १८ वीं सदी के आरम्भ में उत्तर पलामू में मुख्य घराना सोनपुर के राजा का था। मुसलमानी सरकार ने उसे जपला और बेलौंजा परगने का जमींदार स्वीकार किया था। पर वह कुछ दिनों के बाद ही जमींदारी से हटा दिया गया। बादशाह मुहम्मदशाह ने दोनों परगने शेर-उल-मुताखरीन के लेखक गुलाम हुसैन खाँ के परिवार को दिये। गुलाम हुसैन खाँ का पिता नवाब हयादत अली खाँ किसी समय विहार का नायब सूबेदार था। हुसैनाबाद इसी का बसाया हुआ है।

गोपाल राय ने उदवन्त राय को मरवा डाला। इसपर लेस्लीगंज से अँगरेजी सेना ने आकर गोपाल राय को गिरफ्तार कर लिया और वह गिरफ्तारी की हालत में १७८४ ई० में पटने में मर गया। उसके मरने पर उसका छोटा भाई बसन्त राय और बसन्त राय के मरने पर उसका सौतेला छोटा भाई चुरामन राय राजा बनाया गया। इसके समय में चेरो लोगों ने ज्यादती से ऊबकर १८०० ई० में विद्रोह मचाया। अँगरेजी सेना ने आकर इस विद्रोह को शान्त किया, पर स्थिति सुधरी नहीं। राजा दिवालिया हो चुका था और शासन-कार्य में भी गड़बड़ी मची थी। कुछ दिनों से लगान वसूली का काम सजावल नामक अफसर को दिया गया था; लेकिन अब यह काम मि० पैरी नामक एक असिस्टेन्ट कलक्टर के सुपुर्द किया गया। इसने चुरामन राय की सनद छीन ली। गरचे सरकार ने इस कार्य का विरोध किया तो भी इसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गयी। सभी बातें अनिश्चित सी रहीं और लगान बाकी पड़ने लगा। १८१४ ई० में राज्य की निलामी हुई और सरकार ने ५१ हजार रुपये में इसे खरीद लिया।

१८०० ई० तक पलामू लगान के मामले में रामगढ़ के अधीन था। उस साल यह विहार के अधीन कर दिया गया। १८१६ ई० तक यहाँ के असिस्टेन्ट कलक्टर ने विहार के कलक्टर के साथ चिट्ठी-पत्री जारी रखी; लेकिन, उसी साल उसे सीधे बोर्ड ऑफ रेवेन्यू से चिट्ठी-पत्री रखने का हुक्म हुआ। दूसरे साल यह बनारस-विहार के बोर्ड आफ कमिश्नर के अधीन कर दिया गया और असिस्टेन्ट को विहार के कलक्टर के द्वारा बोर्ड से चिट्ठी-पत्री रखने की आज्ञा हुई। १८१६ ई० में, जबकि पलामू सरकार के खास प्रबन्ध में आ गया था, रामगढ़ में कलक्टर

की नियुक्ति हुई और पलामू उसी के अधीन कर दिया गया। १८३२ ई० में सुप्रसिद्ध कोल-विद्रोह हुआ। यह विद्रोह सबसे अधिक राँची में हुआ था; लेकिन, पलामू के चेरो और खरवार लोग भी इसमें शामिल हुए थे। अँगरेजी सेना पलामू पहुँची और लतेहर, के पास विद्रोही परास्त किये गये। इसके बाद १८३४ में दक्षिण-पच्छिम सीमाप्रान्त एजेन्सी कायम की गयी और पलामू लोहरदगा जिले के अधीन कर दिया गया। जिले का आफिस पहले लोहरदगा में था, पीछे राँची गया। १८५२ से १८५६ ई० के बीच कोरान्द में (सरगुजा स्टेट की सीमा पर) सबडिविजनल अफसर का आफिस कायम हुआ। लेकिन, पीछे आफिस के लिये यह स्थान उपयुक्त नहीं समझा गया। पलामू एक अलग सबडिविजन बना। पहले तो इसका आफिस लेस्लीगंज में था, पर पीछे १८६२ ई० में डाल्टनगंज में कायम किया गया।

सिपाही-विद्रोह—१८५७ ई० के अगस्त महीने में रामगढ़ सैनिक दल के कुछ सैनिकों ने हजारीबाग में विद्रोह किया। जब राँची से लेफ्टिनेन्ट ग्राहम उसकी ओर बढ़ा तो वे सब पलामू होकर कुँवर सिंह से मिलने जगदीशपुर (शाहाबाद) चले। पलामू में नीलाम्बर और पीताम्बर नामक दो भाई विद्रोहियों के सरदार थे। पहले इन लोगों ने चैनपुर, शाहपुर और लेस्लीगंज पर धावा किया। इसपर लेफ्टिनेन्ट ग्राहम ने थोड़े-से सैनिकों की सहायता से उन्हें मार भगाया ; लेकिन, ग्राहम पीछे खुद ही घिर गया। उसकी सहायता के लिये मेजर काटर सेना लेकर पहुँचा। कैप्टेन डाल्टन भी मेजर मैकडोनल्ड के सेनापतित्व में कुछ सैनिकों को लेकर यहाँ आया। विद्रोही और राजभक्त दोनों ही एक दूसरे के गाँवों को लूटते-पाटते, आग लगाते तथा लोगों को कत्ल करते थे। पर अन्त में अँगरेजी सरकार की ही विजय

हुई। विद्रोही लोग सब जगह परास्त किये गये। उनके सरदार नीलाम्बर और पीताम्बर पकड़े गये और फाँसी पर लटका दिये गये। राजभक्तों के सरदार ठाकुर राय, रघुवरदयाल सिंह (चैनपुर), ठाकुरराय, किसुनदयाल सिंह (रॉका) और भिखारी सिंह (मनका) को जागीरें दी गयीं।

जिले का निर्माण—सिपाही-विद्रोह के बाद, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पलामू एक अलग सबडिविजन कायम किया गया और इसका आफिस अन्त में डाल्टनगंज में रहा। १८७१ ई० में जपला और बेलौंजा परगने, जिनका रकबा ६५० वर्गमील था, गया जिला से काटकर पलामू में मिला दिये गये। पीछे तोरी परगना भी इसमें शामिल किया गया। १८९२ ई० की जनवरी से पलामू राँची जिला से अलग कर दिया गया और यह एक जिला कायम हुआ।

लोग, भाषा और धर्म

पलामू एक काफी बड़ा जिला है। प्रान्त के अन्दर राँची, हजारीबाग, संथाल परगना और पूर्णिया केवल ये ही चार जिले इससे बड़े हैं। तोभी यहाँ की जन-संख्या प्रान्त के सभी जिलों से कम है। केवल सिंहभूमि जिले की जन-संख्या यहाँ की जन-संख्या से थोड़ा अधिक है, बाकी सभी जिलों की जन-संख्या इससे करीब दूनी, तिगुनी या चौगुना है। सन् १८८१ ई० में इस जिले में केवल ५,५१,४१३ आदमी थे। १९३१ ई० में आकर यहाँ ८,१८,७३६ आदमी हो गये, जिसमें ४,०६,७७८ पुरुष और ४,०८,६५८ स्त्रियाँ थीं। इस तरह पिछले पचास वर्षों में यहाँ २,६७,३२३ आदमी अर्थात् फी सैकड़े ४८ आदमी बढ़े। जन-

संख्या की सघनता में विहार प्रान्त के अन्दर पलामू जिले का अन्तिम स्थान है। जहाँ प्रान्त के सबसे सघन जिले मुजफ्फरपुर में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ६६६ आदमी रहते हैं, वहाँ इस जिले में सिर्फ १६७ आदमी हैं। सदर सबडिविजन के अन्दर एक वर्गमील में औसतन १६६ और लतेहर सबडिविजन में १०८ आदमी रहते हैं। सन् १६२१ में इस जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ३१,३५८ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या ३५,८०३ थी। सन् १६३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में डाल्टनगंज और गढ़वा ये दो शहर और ३,१३४ गाँव हैं। इन शहरों की कुल जन-संख्या २४,०२५ है।

भाषा—सन् १६३१ की गणना के अनुसार जिले की जन-संख्या में भारतीय आर्य-भाषाओं के अन्दर ७,४७,२४६ लोगों की मातृभाषा हिन्दुस्तानी, ५८६ की बँगला, २७४ की मारवाड़ी और १८७ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; मुंडा भाषा श्रेणी के अन्दर ११,२२१ की कोरवा, ८१६ की मुंडारी, ६१२ की बिरजिया, ५८३ की असुरी, १३२ की बिरहोर और ३७ की अन्य मुंडा भाषाएँ; द्राविड़ भाषा श्रेणी के अन्दर ५६,६४७ की ओराँव और ४ की अन्य द्राविड़ भाषाएँ; २२ की पश्तो और ६६ की अँगरेजी आदि यूरोपीय भाषाएँ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से पता चलता है कि सैकड़े ६१ आदमी हिन्दुस्तानी बोलनेवाले, ७ द्राविड़ भाषाएँ बोलनेवाले और १ मुंडा भाषाएँ बोलनेवाले हैं।

हिन्दुस्तानी भाषा में अधिकतर लोग भोजपुरी बोली बोलते हैं, लेकिन जिले के उत्तर-पूरब में मगही बोली बोली जाती है। शुद्ध भोजपुरी केवल सोन नदी के पास के गाँवों में बोली जाती

है। और जगह की भोजपुरी अपभ्रंश भोजपुरी है जिसपर मगही और छत्तीसगढ़ी का प्रभाव पड़ा है । छत्तीसगढ़ी इसके पच्छिम में और मगही शेष भागों में बोली जाती है। इसमें मुंडा और द्राविड़ भाषाओं के शब्द भी आये हैं। इस अपभ्रंश भोजपुरी को लोग 'नागपुरिया' अर्थात् छोटानागपुर की बोली भी कहते हैं। इसका एक नाम 'सदरी' भी है । अनार्य लोग इसे 'दिक्कू काजी' अर्थात् विदेशियों की भाषा कहते हैं । अक्सर यहाँ के बाशिन्दे लोगों की बोली को सदरी कहा जाता है। यहाँ हिन्दू संस्कृति में आये हुए कोरवा लोगों की बोली को 'सदरी कोरवा' कहा जाता है जो छत्तीसगढ़ी का अपभ्रंश है।

पलामू जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	६,६६,६६१	ईसाई	८,६०७
मुसलमान	७४,५०१	सिक्ख	११
आदिम जाति	६५,६४७	जैन	६

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ हिन्दू प्रति सैकड़े ८०, मुसलमान ६ और ईसाई १ हैं। मुसलमानों में सबसे अधिक जोलाहा हैं, उसके बाद पठान, शेख और सैयद । निम्न श्रेणी के हिन्दुओं और कुछ आदिम जाति के लोगों में फर्क बताना कठिन है। बहुत-से आदिम जाति के लोग अपने को हिन्दू कहने लगे हैं। व्यापक अर्थ में आदिम जातियों को हिंदू कहना गलत भी नहीं है। आदिम जाति के बहुत-से लोग अपनी मूल जाति के नाम से पुकारे जाने पर भी धर्म के हिसाब से हिन्दू, आदिम जाति और ईसाई भी कहलाते हैं। जिले की प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की संख्या अलग दी गयी है।

इस जिले में ईसाई लोगों का अड्डा १६ वीं सदी के अन्त में जमा ; लेकिन इन थोड़े दिनों में ही यहाँ सौ में एक आदमी ईसाई बना लिये गये। ईसाइयों की उपर्युक्त संख्या में ४२ यूरोपियन, २० ऐंग्लो इंडियन और शेष भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

पलामू जिले का रकबा ३१,३८,५६० एकड़ है। सन् १६३६-३७ में इसमें से ४,८६,४०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी है और ६,५६,८६६ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ४,६६,६५६ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। १२,२७,२६२ एकड़ में जंगल था। २,६५,०४० एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े ३६½ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका आधा से अधिक हिस्सा प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े १६ भाग ऐसा है, जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता। सैकड़े ३६ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़ें ८½ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत जमीन के सैकड़े ११ भाग में दो फसल होती है। खेती की जमीन मुख्यतः दो प्रकार की है, एक तो अमानत, कोयल और सोन नदियों की घाटी की जमीन और दूसरी पहाड़ी जमीन। घाटी की जमीन बहुत उपजाऊ है। इसमें अधिकतर धान पैदा होता है और कुछ गेहूँ, जौ और बूट भी। पहाड़ी जमीन की सतह अक्सर पतली और कंकरीली होती है।

इसमें जंगल बहुत हैं। यह जमीन उपजाऊ कम है और इसमें मकई, मरुआ आदि अधिक होते हैं।

जिले की सबसे उपजाऊ मिट्टी केवाल है जो कड़ी मिट्टी होती है। इसमें अधिकतर धान, गेहूँ और जौ बोया जाता है। गरिया केवाल कुछ उजली और कंकरीली मिट्टी को तथा डोमा केवाल कड़ो काली मिट्टी को कहते हैं। सिचाई होने पर इसमें धान अच्छा होता है; पर रब्बी फसल अच्छी नहीं होती। बलसुन्दर मिट्टी में सिंचाई होने पर धान होता है। दोरस मिट्टी में भी धान उपजता है, पर केवाल से कम। पवार मिट्टी में, जिसमें बालू मिला रहता है, धान कम, पर जौ, बूट और मरुआ अधिक होता है। अकरौत मिट्टी में बालू और कंकड़, तथा गंगटी में कंकड़ मिला रहता है। पथली या अँकड़ी मिट्टी कुछ ललाई लिये होती है और इसमें भी कंकड़ होता है। लाल माटी काफी लाल रंग की होती है और जिले के दक्षिण में पायी जाती है।

उपज के हिसाब से जमीन दो तरह की है, एक तो धनखेत या नीची जमीन, दूसरी टाँड़ या ऊँची जमीन। दोनों तरह की जमीन के तीन दरजे हैं। धनखेत के पहले दरजे को जमीन को गहरा, बरियार या घोघरा कहते हैं। इसमें अगहनी धान अधिक उपजाया जाता है और यहाँ सिचाई का प्रबन्ध भी बराबर रहता है। दूसरे दरजे को जमीन को सिघा, दोहर, चौर, कंडी या घुघरी कहते हैं। इसमें भी अगहनी धान होता है। तीसरे दरजे की जमीन को बद, तरखा, सठियार, तरखेत या बधियान कहा जाता है। इसमें असिना धान पैदा होता है। टाँड़ जमीन धनखेत से करीब चार गुना अधिक है। इसके पहले दरजे की जमीन को बाड़ी या घरबाड़ी कहते हैं जो घर के पास होती है और जिसमें करीना फसल पैदा की जाती है। दूसरे दरजे की जमीन

को भीठा, मरुआबाड़ी, बहिरबाड़ी या चीरा कहते हैं। इसमें दो फसल पैदा होती है। तीसरे दरजे की जमीन को टाँड़ कहा जाता है। इसमें केवल एक फसल होती है।

सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की उपजाऊ जमीन के सैकड़े ७३½ भाग में भदई, ३१ भाग में रब्बी, २१ भाग में अगहनी और ½ भाग में कन्दमूल और फल तरकारी होती है। अगहनी में धान और ऊख मुख्य है, भदई में धान, मरुआ कोदो, गोंदली और मकई, तथा रब्बी में बूट, जौ, जई और दलहन। सबसे अधिक भाग में धान पैदा किया जाता है। यह १,७६,००० एकड़ में उपजाया जाता है। इसमें १,२७,००० एकड में भदई धान और शेष में अगहनी तथा दूसरा धान होता है। तेलहन में तिल, सरगुजा और तीसी मुख्य हैं। दूसरे अनाजों में ज्वार, सावाँ, कोदो, चीना उरीद, कुरथी, रहर, खेसारी और मसूरी हैं। ऊख भी बहुत उपजाया जाने लगा है। रुई की फसल पहले काफी होती थी, इसकी खेती अधिकतर आदिम जाति के लोग करते थे; पर अब इसकी खेती बहुत घट गयी है। इसकी खेती दो प्रकार से की जाती है। एक को कछवा और दूसरे को डाहा कहते हैं। उपजाऊ जमीन को साधारण तौर पर जोत-बोकर कपास उपजाने का कछवा और जंगलों में आग लगाकर कपास के लिये जमीन तैयार करने को डाहा कहते हैं। जंगलों में बहुत तरह के कंद, मूल और फल भी होते हैं जो खाने के काम में आते हैं। जंगली फल में महुआ, बैर, पियार आदि हैं। जंगली लोग हल-बैल से खेती नहीं करते, किसी नोकीली चीज से जमीन में थोड़ा-थोड़ा छेद कर उसीमें अनाज बो देते हैं। इस तरह की खेती को यहाँ बेओरा कहते हैं।

सिचाई का मुख्य साधन अहर, कुँआ और पैन है। जिले

के अन्दर कुल जोत-जमीन के सैकड़े ८ भाग में सिंचाई होती है। अहर से ८१,००० एकड़, कुँआँ से ७,५००० एकड़ और पैन से १,६०० एकड़ जमीन सींची जाती है। सींची जानेवाली जमीन के ६ में से ८ हिस्से में धान होता है। लेकिन, जिले के धनखेत के आधे हिस्से में सिंचाई का प्रबन्ध हो पाता है। पैन में मुख्य कररवार पैन है जो इसी नाम की नदी से सन् १६०५ में निकाला गया है। कररवार सोन की सहायक नदी है। हड़गढ़वा और सरबदह नदी से भी पैन निकाला गया है।

पेशा, उद्योगधंधा और व्यापार

सन् १६३१ की गणना के अनुसार पलामू जिले में' हजार आदमियों में ४६५ आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। इनमें ३८८ आदमी कृषि और पशुपालन में, २४ उद्योग-धंधा में, १६ व्यापार मे, ४ गमनागमन जैसे रेल, सड़क, डाक आदि के काम में, २ पंडा-पुरोहित, वकील-मुख्तार, डाक्टर-वैद्य आदि के पेशे में, १ शासन-कार्य में और ३० विविध कामों में लगे हुए हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकडे का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों मे सैकड़े ८४ आदमी खेती करते हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधे और व्यापार मुख्यतः भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में हैं। जिले के मुख्य उद्योग-धंधे में सिमेन्ट, कत्थ, लाह और रेशम तैयार करना, लोहा गलाना तथा कोयले की खान संबंधी काम हैं।

लोहा गलाना—लोहा गलाने का काम अगरिया जाति के हाथ में है। ये लोग खान से कच्चा लोहा लाकर उसे टुकड़ा-टुकड़ा कर चक्की में पीसते हैं और तब भट्ठी में गलाकर शुद्ध लोहा

तैयार करते हैं। कच्चा लोहा तीन प्रकार का होता है—बाली, बीजी और घेरहुर। गलाने के पहले केवल बाली के टुकड़े को पीसना पड़ता है, बाकी दोनों लोहे के केवल टुकडे कर लिये जाते हैं। जब से विदेश से सस्ता लोहा आने लगा है, यह काम बहुत मन्दा हो गया है। इस काम में लगे हुए लोगों को जीविका चलने योग्य मजदूरी नहीं मिलती है। यहाँ के लोहे से कुल्हाड़ी, फाड़ वगैरह बनते हैं। पहले इससे बन्दूक भी तैयार की जाती थी।

कोयला की खान—इस जिले में कोयले के चार मैदान हैं—डाल्टनगंज का मैदान, हुतार का मैदान, औरंगा का मैदान और करनपुरा का मैदान।

डाल्टनगंज का मैदान २०० वर्गमील में फैला हुआ है, लेकिन, कोयला बहुत थोड़ी जगह में ही पाया जाता है। अमानत के पास एक-दो छोटे गड़हे हैं जिनसे स्थानीय लोग जमीन के मालिक को थोड़ी-सी रॉयल्टी देकर कोयला खोद ले जाते हैं। यहाँ की मुख्य खान रोभड़ा की खान है जो १८४७ ई० में खोदी गयी थी। यह खान बंगाल कोल कंपनी के कब्जे में है। १६०१ ई० में यहाँ रेलवे लाइन के पहुँचने पर काम ठिकाने से होने लगा। १६१५ ई० में यहाँ ८५५ आदमी काम करते थे और यहाँ से उस साल ८६,००० टन कोयला निकला था। पर पीछे धीरे-धीरे यह बन्द हो गया, मगर तब भी १६२३ ई० में यहाँ से ५,००० टन मामूली कोयला निकाला गया था।

हुतार कोयले का मैदान डाल्टनगंज से दक्षिण और औरंगा नदी से पच्छिम है। यह ७६ वर्गमील में फैला हुआ है। यह भी बंगाल-कोल-कंपनी के अधिकार में है।

औरंगा कोयले का मैदान जिले के दक्षिण-पूरब भाग में

औरंगा नदी के किनारे ६७ वर्गमील में फैला हुआ है। यहाँ ९ करोड़ टन कोयला होने का अनुमान किया जाता है।

करनपुरा का कोयले का मैदान हजारीबाग जिले में है। इसका एक छोटा-सा हिस्सा पलामू जिले के दक्षिण-पूरब भाग में घुस आया है। यह मैदान औरंगा के मैदान से ६ मील पर है।

अन्य खनिज पदार्थ—यहाँ व्यापारिक रूप से और कोई खनिज पदार्थ नहीं निकाला जाता है। हाँ, चूने का पत्थर और ग्रेफाइट यहाँ मिलता है। नेटारहाट के पास आलमिनियम भी पाया जाता है। यहाँ ताँबा भी देखने में आता है। मगर इतने तायदाद में नहीं कि इसको निकालकर फायदा उठाया जा सके।

सिमेन्ट—१९२२ ई० से जपला में पोर्टलैण्ड सिमेन्ट कंपनी ने सिमेन्ट तैयार करने का काम शुरू किया है। सोन नदी के पार शाहाबाद जिले से आकाशी रोप-वे के द्वारा चूने का पत्थर लाया जाता है। इस फैक्टरी से हजार टन सिमेन्ट हर हफ्ता तैयार हो सकता है। यहाँ तीन-चार सौ आदमी काम करते हैं।

कत्थ—कत्थ तैयार करने के लिये प्रायः गया आदि जिले से हर साल मल्लाह लोग इस जिले में आते हैं और कत्थ के पेड़ के पास अपना पड़ाव डालते हैं। कत्थ के पेड़ की लकड़ी का टुकड़ा-टुकड़ा कर वे उसे पानी में उबालकर रस तैयार करते हैं। उसी रस को जमाने से कत्थ तैयार होता है। यह काम जाड़े में किया जाता है। मामूली कत्थ को खैर और बढ़िया कत्थ को पखरा कहते हैं। १९२२ ई० में यहाँ १,५०० मन और १९२४ ई० में ३,००० मन कत्थ तैयार हुआ था।

लाह—इस जिले में लाह का कारबार एक मुख्य कारबार है। एक बार गणना करने पर मालूम हुआ था कि इस कारबार में ४१,००० आदमी लगे हुए हैं और वे १७,३८,८५० पेड़ पर

लाह के कीड़े पालते हैं। इसके लिये सबसे अधिक पलास का पेड़ काम में लाया जाता है। पेड़ों की उपर्युक्त संख्या में १७,०१,०१० पलास के, ३०,११६ बैर के, ४,१७६ कुसुम के, १०६४ पीपल, बैर, गूलर और पाकर के, तथा २,४८४ दूसरे-दूसरे पेड़ थे। लाह की फसल बैशाख और कातिक में होती है। पलास पर की लाह की मुख्य फसल बैशाख में और कुसुम की लाह की मुख्य फसल कातिक में होती है। कुसुम पर की लाह बहुत कीमती होती है, पर अधिक नहीं होती। जिले के अन्दर लाह की बहुत-सी फैक्टरियाँ हैं। ये फैक्टरियाँ डाल्टनगंज और गढ़वा के पास हैं। इनके मालिक मिरजापुरी और मारवाड़ी लोग हैं। करीब ७२,००० मन कच्ची लाह और १२,००० मन शुद्ध लाह रेलवे द्वारा जिले से हर साल बाहर जाती है।

रेशम—रेशम के कीड़े पालना भी इस जिले का एक मुख्य व्यवसाय था, पर अब वह बन्द-सा हो गया है। चेरो राजाओं को इस व्यवसाय पर के टैक्स से अच्छी आमदनी होती थी। पर इस समय सरकार को खास महाल में इस व्यवसाय पर के टैक्स से सिर्फ सौ-दो-सौ रुपये आते हैं।

व्यापार—इस जिले से कोयला, सिमेन्ट, लाह, कत्थ, चमड़ा, घी और तेलहन बाहर जाता है तथा कपड़ा, चावल, रब्बी का अनाज, नमक, पीतल के बर्तन, चीनी, तम्बाकू, किरासन तेल और आधुनिक सभ्यता की छोटी-बड़ी चीजें बाहर से आती हैं। डाल्टनगंज, गढ़वा, हुसैनाबाद, हरिहरगंज, पंकी, सतबरवा, लतेहर, शाहपुर, चैनपुर और उन्तारी व्यापार के मुख्य केन्द्र हैं। बहुत-से स्थानों में साल में एक बार मेला भी लगा करता है, जिसमें लोग चीजों का खरीद-फरोख्त करते हैं।

आने-जाने के मार्ग

सड़क—१८८० ई० में पलामू जिले के अन्दर दो ही सड़कें थीं, एक तो डाल्टनगंज से राँची जानेवाली और दूसरी डाल्टनगंज से डेहरी जानेवाली। लेकिन, इन सड़कों की भी दशा अच्छी नहीं थी। १८६३ ई० में सरकार ने विहार-काटन-रोड बनाया। उस समय अमेरिकन गृह-युद्ध के कारण रूई की माँग बढ़ गयी थी, इस कारण सरगुजा स्टेट और पलामू जिले से रूई बाहर भेजने के लिये एक अच्छी सड़क बनाने की आवश्यकता हुई थी। डाल्टनगंज का सम्बन्ध ग्रेंड-ट्रंक-रोड से जोड़ने के लिये, जिसकी दूरी ७० मील है, यह सड़क बनाने का विचार किया गया था; पर यह सड़क पूरी नहीं हो सकी। उसके बाद से लेकर अब तक जिले के अन्दर कई अच्छी-अच्छी सड़कें बन गयी हैं। सन् १९३५-३६ में यहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ६६ मील पक्की, ४५५ मील कच्ची और ४७ मील छोटी-छोटी ग्रामीण सड़कें थीं। जिले की मुख्य सड़कें डाल्टनगंज और गढ़वा से सब ओर गयी हैं।

डाल्टनगंज से राँची जानेवाली सड़क ६५ मील तक पलामू जिले में पड़ती है। यह डाल्टनगंज से दक्षिण-पूरब की ओर सतबरवा, मनका, लतेहर और चन्दवा होकर गयी है। डाल्टनगंज से गढ़वा जानेवाली सड़क २१ मील लम्बी है। कोयल, दनगो आदि कई नदियाँ इसके रास्ते में मिलती हैं। डाल्टनगंज से एक सड़क छत्तारपुर और हरिहरगंज होकर गया जिले में औरंगाबाद तक गयी है। पलामू जिले में इसकी लम्बाई ४३½ मील है। रास्ते में इसे अमानत आदि कई नदियाँ मिलती हैं। छत्तारपुर से एक सड़क उत्तर-पच्छिम की ओर हुसेनाबाद और फिर जपला को गयी है। डाल्टनगंज से एक सड़क उत्तर-पूरब की

ओर लेस्लीगंज होकर मनातू को जाती है। यही पुराना विहार-कॉटन-रोड है। यहाँ से यह सड़क शेरघाटी को गयी है। लेस्लीगंज से एक सड़क पूरब की ओर पनकी को गयी है, जहाँ से हजारीबाग जाने का रास्ता है। जिले के दक्षिण-पूरब काने में चंदवा से एक सड़क ठीक उत्तर की ओर बालूमठ होकर हजारीबाग जिले में चतरा तक गयी है। राँची जानेवाली सड़क के सातवें मील से एक सड़क दक्षिण को ओर औरंगा नदी पार कर केर और गरू तक जाती है। गरू से एक सड़क दक्षिण-पूरब की ओर फूटकर रूद और मरवै को और दूसरी सड़क दक्षिण-पच्छिम की ओर फूटकर बरेसाँढ़ और महुआदाँड़ को गयी है।

गढ़वा से पाँच मुख्य सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। एक डाल्टनगंज की ओर गयी है जिसका जिक्र पहले हो चुका है। दूसरी सड़क उत्तर की ओर हुसेनाबाद को, तीसरी उत्तर-पच्छिम की ओर रमना और उन्तरी होकर मिरजापुर जिले को, चौथी दक्षिण को ओर राँका होकर सरगुजा स्टेट को और पाँचवीं गढ़वा रोड स्टेशन को गयी है।

रेलवे—इस जिले में ईस्ट-इण्डियन रेलवे की बरकाकाना लूप लाइन करीब १६० मील तक गयी है। यह लाइन जिले के दक्षिण-पूरब की ओर महुआ-मिलन स्टेशन के पास जिले में प्रवेश कर उत्तर की ओर नावाडीह के बाद जिले को छोड़ती है। इस बीच में तोरी, रिचुघुटा, लतेहर, कुमानडीह, छिपदोहर, बरवाडीह, केचकी, डाल्टनगंज, रफरा, गढ़वारोड, सिगसिग़ी, उन्तारी रोड, महम्मदगंज, कोसियारा, हैदरनगर और जपला रेलवे स्टेशन हैं। उत्तर की ओर से डाल्टनगंज तक की लाइन सन १६०२ में ही खुली थी। दक्षिण-पच्छिम से आकर डाल्टन-

गंज में मिलनेवाली लाइन सन् १९२५ में बनी। पीछे समूची लाइन बरकाना लूप-लाइन कहलाने लगी।

जलमार्ग—जिले अन्दर सोन और कोयल ये ही दो नदियाँ ऐसी हैं जिनमें धारा बहुत तेज नहीं रहने पर छोटी-छोटी नावें चल सकती हैं। इन नदियों में बाँस के बेड़े बहुत बहा ले जाये जाते हैं। बरसात के दिनों में कोयल नदी में डाल्टनगंज, रेहला, सिरहे और मुहम्मदगंज में तथा अमानत नदी में सिंगरा और तरहसी में घटही नावें चलती हैं। सोन नदी में दिगम्बर, डेवढ़ी, रानीदेवा, सुनरीपुरा, सोनपुरा, हरिहरपुर, कधवन, बुधुआ, परती, खोखा और गारा में घटही नावें चलती हैं।

शिक्षा

सन् १८९१-९२ में, जब पलामू जिला कायम किया गया था, यहाँ १०९ स्कूल थे, जिनमें १ हाई स्कूल, २ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल, ७६ प्राइमरी स्कूल और ३० खानगी स्कूल थे। इन स्कूलों में सब मिलाकर २,८१४ लड़के पढ़ते थे। दस वर्ष बाद यहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कायम हुआ। सन् १९०१-०२ में यहाँ २७३ स्कूल हुए, जिनमें ७,२१७ लड़के थे। १९२४-२५ में स्कूलों की संख्या ४८४ और उनमें पढ़नेवालों की संख्या १५,२६६ हुई।

सन् १९३५-३६ में आकर इस जिले में सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त प्राइमरी स्कूलों की संख्या ४५८ रह गयी है। इनके अलावे एक खानगी प्राइमरी स्कूल भी है। इन स्कूलों में कुल १५,१०९ छात्र पढ़ते हैं। इन स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशाले, उर्दू प्राइमरी मकतब और कन्या पाठशालाएँ भी शामिल हैं।

सन् १९२४-२५ में यहाँ मिडूल इंगलिश स्कूलों की संख्या ५ और मिडूल वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या ४ थी। लेकिन, १९३७-३८ में आकर यहाँ मिडूल इंगलिश स्कूलों की संख्या ९ और मिडूल वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या १० हुई है।

सन् १९२४-२५ में जिले के अन्दर केवल एक हाई स्कूल डाल्टनगंज में था, वह था जिला स्कूल। लेकिन, इस समय गढ़वा और हुसैनाबाद में भी हाई स्कूल खुल गये हैं। डाल्टनगंज में एक और हाई स्कूल खुला है, जिसका नाम है गिरिवर हाई इंगलिश स्कूल। इस तरह यहाँ ५ हाई इंगलिश स्कूल हो गये हैं।

यहाँ कोई कालेज नहीं है। कालेज की शिक्षा पाने के लिये लड़के अधिकतर हजारीबाग और पटना जाते हैं।

डाल्टनगंज में लड़कियों के लिये दो मिडूल वर्नाकुलर स्कूल हैं, जिनमें एक ईसाइयों का कायम किया हुआ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले में स्कूलों के अन्दर २,५३३ लड़कियाँ पढ़ती थीं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार पलामू जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या १८,३९० और पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या १,४८५ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष १,३७७ और स्त्रियाँ ५६ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े करीब २.४२ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर २०,६१९ हिंदुस्तानी लड़के लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जो कुल जन-संख्या के सैकड़े २.५० हैं।

शासन-प्रबन्ध

पलामू छोटानागपुर कमिश्नरी का एक जिला है। कमिश्नरी के अन्य जिलों की तरह यह जिला भी ननरेगुलेटेड या सेड्युल्ड डिस्ट्रिक्ट समझा जाता है। यहाँ कुछ मामलों में साधारण कानून लागू नहीं किये जाकर विशेष कानून लागू किये जाते हैं। यहाँ का जिला अफसर कलक्टर-मजिस्ट्रेट नहीं कहलाकर डिप्टी कमिश्नर कहलाता है। यहाँ पहले कोई सबडिविजन नहीं था। सन् १९२४ के अक्टूबर में लतेहर में सबडिविजनल आफिस कायम हुआ। जिले का सदर दफ्तर डाल्टनगंज है। यहाँ शासन-कार्य में डिप्टी कमिश्नर की सहायता के लिये कई डिप्टी और सब-डिप्टी कलक्टर रहते हैं। सबडिविजनों का शासन सबडिविजनल अफसरों द्वारा होता है जिनकी सहायता के लिये सब-डिप्टी कलक्टर और मुन्सिफ होते हैं।

न्याय—जिले का फौजदारी मामला सुनने का काम जिला-अफसर डिप्टी कमिश्नर को है, जिसे फौजदारी दण्ड-विधान की ३० वीं धारा के अनुसार विशेष अधिकार रहता है। उसकी सहायता के लिये डिप्टी मजिस्ट्रेट रहते हैं जो पहले, दूसरे और तीसरे इन तीन दरजे के होते हैं। सबडिविजन के लिये सब-डिविजनल अफसर और सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट होते हैं। डिप्टी कमिश्नर ही पद की हैसियत से सबोर्डिनेट जज होता है और दीवानी मामला भी सुनता है। एक डिप्टी मजिस्ट्रेट को भी सब-जज का अधिकार रहता है जो दीवानी मामलों के प्रारम्भिक बातों को सुनकर फाइल स्पेशल सब-जज के पास भेज देता है। स्पेशल सब-जज राँची, हजारीबाग और पलामू के लिये एक ही होता है और यह अपनी कचहरी आवश्यकतानुसार साल में तीन-चार बार डाल्टनगंज में लगाता है। डाल्टनगंज में

मुन्सिफ भी रहते हैं। लगान सम्बन्धी मामले को डिप्टो कलक्टर भी सुनता है।

पुलिस—पुलिस के काम से जिला २० थानों में बँटा है। सदर सबडिविजन में १४ और लतेहर सबडिविजन में ६ थाने हैं। जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस-सुपरिन्टेएडेन्ट कहलाता है। इसके नीचे असिस्टेन्ट और डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट होते हैं। थाने का अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जो दारोगा भी कहलाता है। गाँवों के अन्दर रात में पहरा देने तथा चोरी-डकैती और जन्म-मरण आदि की रिपोर्ट थाने में पहुँचाने के लिये चौकीदार होते हैं। पुलिस में घटवाल भी शामिल हैं, जब जमींदारों के हाथ में पुलिस का इन्तजाम था उस समय डाकुओं और लुटेरों से मुसाफिरों की रक्षा के लिये रास्ते में घटवाल बहाल किये जाते थे। वह प्रथा अब भी जारी है, लेकिन अब घटवालों की संख्या बहुत घट गयी है। इस जिले के अन्दर सन् १९३६ में ४ इन्सपेक्टर, ३६ सब-इन्सपेक्टर, ३१ असिस्टेण्ट सब इन्सपेक्टर, १ सरजेण्ट मेजर, ९ हवलदार, २९२ कानिस्टबिल और १,२६१ चौकीदार, घटवाल आदि थे।

जेल—डाल्टनगंज में पहले जिला-जेल था। सन् १९२२ में जिला-जेल टूटकर यहाँ एक छोटा जेल रह गया है। लेकिन, अब फिर यहाँ का छोटा जेल जिला-जेल की तरह काम में लाया जा रहा है। लतेहर में छोटा जेल है।

रजिस्ट्री आफिस—जिले के अन्दर सन् १९३६ में डाल्टनगंज, हुसैनाबाद और लतेहर में रजिस्ट्री आफिस थे।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड—इस जिले में डिस्ट्रिक्टबोर्ड सन् १९०० में कायम हुआ था। इस समय बोर्ड में २४ मेम्बर होते हैं, जिनमें

१८ निर्वाचित, ३ नामजद किये और ३ पद की हैसियत से रहते हैं। चेअरमैन नामजद किये सरकारी-अफसर होते हैं। बरवाडीह और गारू थाना मिलकर एक तथा रंका और भंडारिया थाना मिलकर एक प्रतिनिधि चुनते हैं। बाकी थाने अपने एक-एक प्रतिनिधि भेजते हैं। बोर्ड का सालाना करीब ४-५ लाख रुपये का आमद-खर्च है। इस जिले में लोकल बोर्ड नहीं है, लेकिन हुसैनाबाद, गढ़वा आदि कई स्थानों में युनियन बोर्ड हैं। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबँगला वगैरह बनवाना, प्राइमरी और मिडूल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब, कुँआ वगैरह खुदवाना, घाट, अस्पताल, फाटक आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्टबोर्ड का काम है।

म्युनिसिपैलिटी—गाँवों के अन्दर डिस्ट्रिक्टबोर्ड के जो काम हैं वही काम शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों के हैं। पलामू जिले के अन्दर केवल डाल्टनगंज में म्युनिसिपैलिटी है जो १८८८ ई० में कायम हुई थी। इसके १५ मेम्बर होते हैं।

डाल्टनगंज (सदर) सबडिविजन

जिले का अधिकांश भाग सदर सबडिविजन के अन्दर है जो जिले का उत्तरीय भाग है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल ३,२७१ वर्गमील और जन-संख्या ६,४१,१२२ है। इसमें डाल्टनगंज और गढ़वा ये दो शहर और २,४०४ गाँव हैं। इस सबडिविजन में डाल्टनगंज, लेस्लीगंज, पनकी, गढ़वा, उन्तरी, राँका, भंडरिया, छतारपुर, हरिहरगंज, पाटन, बिसरामपुर, मनातू, हुसैनाबाद और भवनाथपुर, ये १४ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

डाल्टनगंज—यह शहर जिले का सदर आफिस है जो २४°३' उत्तरीय अक्षांश और ८४°४' पूर्वीय देशान्तर पर कोयल नदी के किनारे बसा है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जन-संख्या १२,०४० है, जिसमें ९,४६१ हिन्दू, २,३६९ मुसलमान, १४० ईसाई, ५८ आदिम जाति, ९ जैन और ३ सिक्ख हैं। इस शहर को १९८१ ई० में छोटानागपुर के कमिश्नर कर्नल डाल्टन ने बसाया था, इसी कारण इसका नाम डाल्टनगंज पड़ा। लोग इसका अपभ्रंश नाम लालटेनगंज भी कहते हैं। शहर के सामने कोयल नदी के दूसरे किनारे पर शाहपुर एक गाँव है जहाँ पलामू के राजा गोपालराय ने १८ वीं सदी के अन्त में एक महल बनवाया था। वह टूटे-फूटे रूप में अब भी देखने में आता है।

डाल्टनगंज थाने की जन-संख्या ८६,८३४ है जिसमें ७३,९०८ हिन्दू, ८,७१८ मुसलमान, ४,०४४ आदिम जाति, १५२ ईसाई और १२ अन्य जाति के लोग हैं।

अली नगर—जिले के उत्तर-पूरब कोने में यह गाँव हुसैनाबाद से, ५ मील पूरब है। यहाँ एक छोटा-सा किला है। लोग इसे रोहिल्ला किला कहते हैं और इसे मुसफ्फीखाँ का बनाया बताते हैं, जिसका वास्तविक नाम मुजफ्फरखाँ समझा जाता है। यह कौन था, पता नहीं। किला एक छोटी पहाड़ी के ऊपर आयताकार में है। हरेक कोने पर एक वर्गाकार कमरा है। किले की दीवाल पत्थर और ईंट की बनी है। आंगन में एक वर्गाकार कुआं पहाड़ी के पूरबी ढाल पर है जिसके नीचे एक सुरंग गयी है। किला अब टूटी फूटी हालत में है।

उन्तरी—यह स्थान जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में है। यहाँ थाना, डाक बंगला, अस्पताल और एक पुराने घराने के जमींदार

का गढ़ है। यह घराना भैया साहब घराने के नाम से प्रसिद्ध है और सोनपुरा के सूर्य्यवंशी राजपूत घराने की एक शाखा है। कहते हैं कि सोनपुरा के ४४ वें राजा की बड़ी स्त्री की संतान यहाँ आ बसी थी। उनके लड़के को बेलौंजा में स्टेट मिला था और भैया की पदवी दी गयी थी। भैया खानदान के तीसरे व्यक्ति ने १७ वीं सदी में मुगल बादशाह के हुक्म पर उन्तरी को जीतकर उसे बादशाह से जागीर के तौर पर लिया था। बृटिश सरकार ने भी करीब सौ वर्ष पहले इस जागीर को कबूल किया था। इस स्थान का पूरा नाम नागरी उन्तरी है।

उन्तरी थाने की जन-संख्या ५२,५११ है, जिसमें ४३,३५५ हिन्दू, ५,४४७ मुसलमान और ३,७०६ आदिम जाति के लोग हैं।

कनरी—सोनपुरा से ३ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक गाँव है, जहाँ अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो है।

कुटकू—इस स्थान पर कोयल नदी उत्तर की ओर मुड़ जाती है और पहाड़ी होकर अपना रास्ता बनाती है। यहाँ का दृश्य बहुत सुन्दर है। यहाँ एक फॉरेस्ट बंगलो है।

गढ़वा—यह एक शहर है जो डाल्टनगंज से १६ मील उत्तर-पच्छिम और गढ़वा-रोड स्टेशन से ६ मील पच्छिम है। यह दनरो और सरस्वती इन दो नदियों के किनारे बसा है। यहाँ से कई सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो और एक हाई स्कूल है। यहाँ पहले म्युनिसिपैलिटी और आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरी थी। इस समय एक यूनियन बोर्ड है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ११, ६८५ है, जो करीब डाल्टनगंज की संख्या के बराबर ही है। यहाँ

१०,०२३ हिन्दू, १,६२८ मुसलमान और ३४ आदिम जाति के लोग हैं।

गढ़वा थाने की जन-संख्या ७७,७७५ है, जिसमें ६२,११७ हिन्दू, १२,५१६ मुसलमान, ३,१३६ आदिम जाति और ३ ईसाई हैं।

चैनपुर—यह गाँव डाल्टनगंज से २ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है। यहाँ चेरो राजाओं के दीवान के वंशज रहते हैं। यह घराना अब भी प्रसिद्ध और प्रभावशाली है। इस घराने के लोग ठाकुराय कहलाते हैं। ये लोग राजा दुःशासन सिंह को अपना पूर्वज बताते हैं, जो दिल्ली से ३०० मील दक्षिण-पश्चिम सुरपुर नामक स्थान में रहते थे। उनके लड़के शार्ङ्गधर सिंह रोहतासगढ़ के एक रक्षक बनाये गये थे और उन्हें मुगल बादशाह की ओर से दाउदाँड़ और तिलौथू तालूके जागीर के रूप में मिले थे। दाउदाँड़ में उन्होंने अपने लिये किला बनवाया था। उसके उत्तराधिकारी मक्खनसिंह उर्फ देव साही हुए, जिन्होंने चेरो राजा भागवतराय को शाही सेना से हार खाकर भागने पर शरण दी थी। देवशाही के लड़के ठाकुराय पूरनमल ने भागवतराय को पलामू जीतने में मदद दी। अँगरेजी राज्य के आरम्भ तक पूरनमल के वंशज पलामू राज्य के दीवान रहे। इस वंश के लोगों के पास आलमगीर मुहम्मदशाह और फरुकशियर, इन तीन बादशाहों के द्वारा जागीर दिये जाने के फरमान अब भी मौजूद हैं। इस वंश में ठाकुराय अमरसिंह एक नामी आदमी हुए, जिन्होंने १७२१ ई० में चेरो राजा रणजीतराय को हटाकर जयकिसुन राय को गद्दी पर बैठाया था। अमरसिंह ने पिंडारियों से एक नकारा छीना था, जो अब भी इनके वंशजों के पास है।

इनके मरने पर फूट पैदा होगयी। राजा ने ठाकुराय सैनाथसिंह को धांखेबाजी से मरवा डाला। इसपर इनके चचेरे भाई जयनाथसिंह ने सेना इकट्ठो की और जयकिसुन राय को मारकर १७६४ ई० में चित्रजितराय को गद्दी पर बैठाया। जबसे अँगरेजों ने पलामू को जीता तबसे इस वंश के लोगों का दीवानी का पद जाता रहा, पर ये लोग अँगरेजों के बड़े खैरखाह रहे। १८०२ ई० की सरगुजा की चढ़ाई, १८३२ के कोल-विद्रोह और १८५७ के सिपाही-विद्रोह में इन लोगों ने अँगरेजों की बड़ी मदद की और इनाम में जागीर और खिताब भी पायी। चैनपुर स्टेट का रकबा ३६५ वर्ग मील है।

छत्तारपुर—डाल्टनगंज से २८ मील उत्तर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। थाने की जन-संख्या ४१,६२७ है, जिसमें ३८,५५३ हिन्दू, २,३१० मुसलमान और ६२७ आदिम जाति और २ अन्य जाति के लोग हैं।

जयपुर—राटन थाने से ६ मील पूरब इस गाँव में देवगाँव स्टेट के मालिक का गढ़ या महल है।

जपला—जिले के उत्तरी सीमा के पास हुसैनाबाद एक स्थान है, उसीका पुराना नाम जपला है। परगने का नाम जपला अब भी चल रहा है। एक शिला-लेख से मालूम होता है कि यहाँ पहले खरबार सरदारों की राजधानी थी। शाहजहाँ के वक्त में जपला परगना रोहतासगढ़ के रक्षक के अधिकार में था। आइन-ए-अकबरी में भी इसका जिक्र है। सन् १८७१ में यह परगना गया जिले से पलामू में मिलाया गया।

देवगन—यह स्थान जिले के उत्तर-पूरब भाग में है। यहाँ चेरो राजा के एक पुराने किले का भग्नावशेष है। कहते हैं कि किसी समय यह स्थान एक उन्नतिशील शहर था, जिसमें ५२

सड़क और ५३ बाजार थे। इस नाम का तप्पा और स्टेट भी है जो ३२७ वर्गमील में फैला हुआ है। यह स्टेट पहले किसी एक भारत राय और उसके अधिकारियों के हाथ में था, पीछे यह पलामू के महाराजा जयकिसुन राय के भतीजे को भरण-पोषण के लिये दिया गया। उन्हीं से यह वर्तमान अधिकारियों के हाथ में आया।

नागर उन्तरी—दे० उन्तरी।

पनकी—यह स्थान डाल्टनगंज से २८ मील पूरब अमानत नदी के किनारे है। यहाँ थाना, अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बँगलो हैं। पनकी थाने की जन-संख्या ३१,१५४ है, जहाँ २५,४५६ हिन्दू, ३,५८० मुसलमान और २,११५ आदिम जाति के लोग हैं।

पाटन—डाल्टनगंज से १५ मील उत्तर-पूरब इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४१,०२८ आदमी रहते हैं, जिनमें ३६,४३७ हिन्दू, ३,५२५ मुसलमान और १,०६६ आदिम जाति के लोग हैं।

विश्रामपुर—यह स्थान गढ़वा-रोड स्टेशन से ५ मील की दूरी पर है। यहाँ एक बबुआन परिवार का गढ़ है। इस वंश के संस्थापक नृपतराय कहे जाते हैं जो पलामू के राजा जयकिसुनराय (१७५० ई०) के भाई थे। नृपतराय के लड़के गजराजराय ने १७७२ ई० में पलामू किला को जीतने में अँगरेजों को मदद दी थी। विश्रामपुर थाने की जन-संख्या २९,३६१ है, जिसमें २६,४१६ हिन्दू, २,७७० मुसलमान और १२२ आदिम जाति के लोग हैं।

भंडरिया—जिले के दक्षिण-पच्छिम भाग में यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में १०,०५७ आदमी रहते हैं,

जिनमें ७,४८१ हिन्दू, २,३२५ आदिम जाति और २५१ मुसलमान हैं।

भवनाथपुर—जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ६५,३८६ है, जिसमें ५९,४०३ हिंदू, ४,१५२ मुसलमान और १,८३४ आदिम जाति के लोग हैं।

मनातू—यह स्थान डाल्टनगंज से ३६ मील उत्तर-पूरब है जहाँ थाना, अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बँगलो हैं। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार का एक गढ़ है। मनातू थाने में ३७,१०६ आदमी रहते हैं, जिनमें ३१,६०७ हिन्दू, ४,५६९ मुसलमान, ६३२ आदिम जाति और १ ईसाई हैं।

रझरा—डाल्टनगंज से १० मील उत्तर इस स्थान पर सन् १८४७ में कोयले की खान खोदी गयी थी, पर अब यह खान बन्द है।

राँका—यह स्थान गढ़वा से १४ मील दक्षिण है। यहाँ थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बँगलो और राँका स्टेट के मालिक का गढ़ है। राँका थाने की जन-संख्या ३७,२०५ है, जिसमें २८,८८५ हिन्दू, ५,८५० आदिम जाति और २,४७० मुसलमान हैं।

लादी—डाल्टनगंज थाने के इस गाँव में एक पुराने जमींदार का निवास-स्थान है।

लेस्लीगंज—यह स्थान डाल्टनगंज से १० मील पूरब है। इसका नाम रामगढ़ के कलक्टर के नाम पर पड़ा था। पहले यहाँ सेना की छावनी थी, इस कारण अब भी स्थानीय लोग इसको छावनी कहते हैं। १८५६ ई० में पलामू सबडिविजन का आफिस कोरंडा से हटकर लेस्लीगंज ही लाया गया था, पर

१८६२ ई० में डाल्टनगंज ले जाया गया। यहाँ थाना, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बँगला और सरकारी महाल का तहसील आफिस है। लेस्लीगंज थाने की जन-संख्या ३१,७७२ है। यहाँ २८,२५२ हिन्दू, २,४७७ मुसलमान और १,०४३ आदिम जाति के लोग हैं।

शाहपुर—दे० डाल्टनगंज।

सतबरवा—डाल्टनगंज से १७ मील की दूरी पर राँची रोड के किनारे यह एक गाँव है जहाँ कुछ पुराने मंदिरों के भग्नावशेष हैं।

सोनपुरा——सोन नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ सोनपुरा स्टेट के मालिक का गढ़ है। कहते हैं कि इस वंश के संस्थापक गोरखपुर जिलावासी राजा नरनारायण थे। इस वंश के नवें राजा रामनारायण शाहाबाद जिले आये। १८वीं सदी के आरम्भ में किडरसाही ने, जो इस वंश की ५० वीं पीढ़ी के व्यक्ति थे, दिल्ली के बादशाह से जपला और बेलौंजा ये दो परगने प्राप्त किये और सोनपुरा को निवास-स्थान बनाया। १८०१ ई० में जब अंगरेजी सेना सरगुजा को गयी थी तो सोनपुरा के राजा भूपनाथ साही ने अंगरेजों की मदद की थी। इस वंश के लोगों के पास कई मुगल बादशाहों और पुराने गवर्नर जेनरलों के वक्त के कागजात मौजूद हैं।

हरिहरगंज—यह स्थान डाल्टनगंज से ४३ मील उत्तर है जहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या २१, ०१७ है। यहाँ १९,९२० हिन्दू, १,०२८ मुसलमान और ६९ आदिम जाति के लोग है।

हुतार—यह स्थान कोयले की खान के लिये प्रसिद्ध है।

हैदर नगर—जिले के उत्तर-पूरब भाग में यह गाँव इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास है। इसे १८ वीं सदी में सैयद नकी

अलीखाँ ने बसाया था। इसका पिता हेयादत अली खाँ विहार का नायब नवाब था।

हुसैनाबाद—यह स्थान जिले के उत्तर-पूरब कोने पर सोन नदी के किनारे है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस गाँव को शेर-उल-मुताखरीन के लेखक के पिता विहार के नायब नवाब सैयद हेदायत अली खाँ ने १८ वीं सदी के आरम्भ में बसाया था। इनके वंशज अब भी यहाँ रहते हैं। यह एक पुराना गाँव जपला दिनारा के स्थान पर बसा है। रेलवे स्टेशन का नाम अब भी जपला है। हुसैनाबाद से ३ मील की दूरी पर सोन के किनारे डेहरी में जपला सिमेन्ट वर्क्स है। हुसैनाबाद थाने की जनसंख्या ७८,०८८ है, जिसमें ६७,३८२ हिन्दू, १०,४४६ मुसलमान, २२७ आदिम जाति और ३० ईसाई हैं।

लतेहर सबडिविजन

जिले का दक्षिण-पूरब भाग लतेहर सबडिविजन है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,६४५ वर्गमील और जन-संख्या १,७७,६१४ है। इसमें कोई शहर नहीं है। यहाँ के गाँवों की संख्या ७३० है। इस सबडिविजन में लतेहर, बरवाडीह, बालूमठ, चन्दवा, महुआदाँड़ और गरू ये ६ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं:—

लतेहर—यह स्थान डाल्टनगंज से ४१ मील की दूरी पर राँची-रोड पर है। सन् १९२४ से यहाँ सबडिविजनल आफिस खुला है। यहाँ अस्पताल, डिस्ट्रिक्टबोर्ड बंगलो और सरकारी स्टेट का तहसील आफिस है।

लतेहर थाने के अन्दर ४३,५५४ आदमी रहते हैं जिनमें ३२,४४६ हिन्दू, ८,३१० आदिम जाति, २,६६३ मुसलमान और १०५ ईसाई हैं।

कुमानडीह—लतेहर से १२ मील पच्छिम यह एक पहाड़ी है जो २,५३० फीट ऊँची है।

केचकी—यह औरंगा और कोयल नदी के संगम पर है। यहाँ से अधिकतर बाँस कोयल नदी होकर बहा ले जाया जाता है।

केर्ह—यह स्थान बरवाडीह थाने में है। पहले केर्ह में ही थाने का सदर आफिस था।

गरू—यह स्थान केर्ह से १६ मील दक्षिण कोयल नदी के किनारे है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या ८,४५६ है। यहाँ ४,४७८ हिन्दू, ३,६२० आदिम जाति, १८२ मुसलमान और १७६ ईसाई हैं।

चन्दवा—डाल्टनगंज से ५७ मील दूर राँची-रोड पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २६,१४५ है, जिसमें १६,७२१ हिन्दू, ८,५२८ आदिम जाति, ८०१ मुसलमान, ८६ ईसाई और ६ अन्य जाति के लोग हैं।

तामोलगढ़—जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में छेछरी तप्पे के अन्दर एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर तामोलगढ़ का किला है, जो रकसेल राजपूत का बनवाया हुआ है।

नारायणपुर—मनकेरी तप्पा में यह एक गाँव है, जहाँ एक पुराना किला है।

नेटारहाट—जिले के दक्षिण में यह एक अधित्यका है, जिसकी सबसे ऊँची चोटी समुद्रतल से ३,६६६ फीट ऊँची है। यह अधित्यका ४ मील लम्बी और २½ मील चौड़ी है। इसका
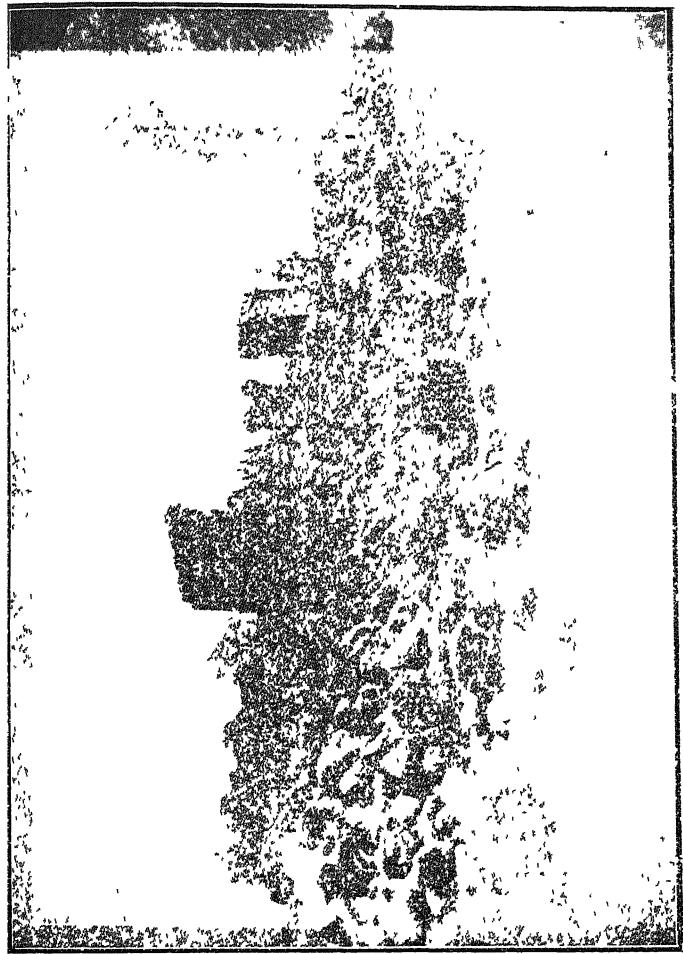
अली नगर के किले का भग्नावशेष (पलामू)
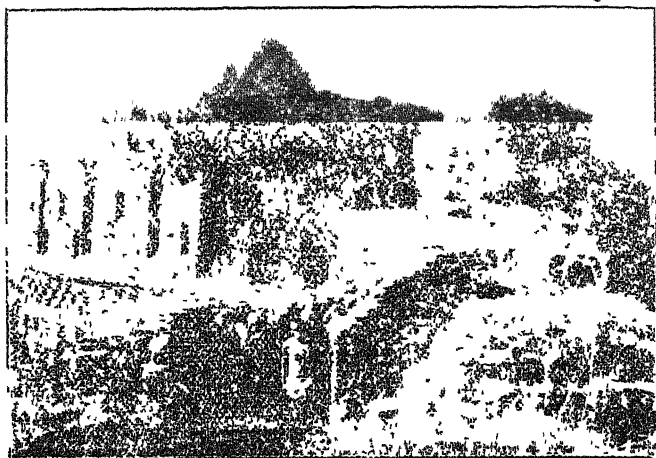
पलामू का नया किला

पलामू के पुराने किले की मस्जिद

दृश्य बहुत सुन्दर है। यहाँ इस नाम के गाँव में अस्पताल, सरकारी बँगलो और डिस्ट्रिक्टबोर्ड बँगलो हैं। यहाँ कई बार थाना भी रह चुका है।

पलामू—डाल्टनगंज से १५ मील दक्षिण-पूरब औरंगा नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ किसी समय चेरो राजाओं की राजधानी थी। यहाँ दो बड़े किले के भग्नावशेष हैं, जिन्हें चेरो राजाओं ने बनवाया था। इन किलों को पहले मुगलों ने और पीछे अँग्रेजों ने जीतकर चेरो लोगों को दबाया था। इनमें से एक किले को पुराना किला और दूसरे को नया किला कहते हैं। चेरो राजाओं की इसी राजधानी नगरी के नाम पर पीछे जिले का नाम पलामू पड़ा। ऐतिहासिकों और पुरातत्व-प्रेमियों के लिये यह स्थान जिले के अन्दर सबसे आकर्षक स्थान है।

पलामू के दोनों किले सरकार के रिजर्व्ड फारेस्ट के अन्दर हैं। किले को सुरक्षित रखने के लिये पास के जंगल-झाड़ों को समय-समय पर काटते रहना पड़ता है, तब भी बाघ, चीते आदि जंगली जानवर यहाँ, खासकर पुराने किले के पास, अक्सर आया ही करते हैं। पुराने किले की दीवालों पर अनेक स्थानों में तोप के गोलों की निशानी हैं। नये किले में नागपुरी फाटक बहुत सुन्दर है। कहते हैं कि पलामू के सबसे शक्तिशाली राजा मेदिनीराय ने बहुत व्यय करके छोटानागपुर के महाराज का महल विध्वंस करने के बाद इस फाटक को वहाँ से यहाँ लाया था। लेकिन जिस तरफ यह फाटक लगाया गया वह बहुत अशुभ समझा जाने के कारण पीछे ईंट से बन्द करवा दिया गया; पर अब इसे सुरक्षित रखने के लिये खुलवा दिया गया है।

सन् १९०३-०४ की आरक्योलॉजिकल रिपोर्ट (पुरातत्त्व सम्बन्धी विवरण) में लिखा है कि पलामू के दोनों किले जंगल

के अन्दर पास ही पास हैं। यद्यपि इनमें एक को पुराना किला और दूसरे को नया किला कहते हैं, पर देखने में दोनों एक ही समय के मालूम पड़ते हैं। किले की दीवाल और मकान की बनावट रोहतासगढ़ और शेरगढ़ की दीवाल और मकान की बनावट से इतनी अधिक मिलती-जुलती है कि यह आसानी से कहा जा सकता है कि दोनों एक ही समय के अर्थात् मुगलकाल के आरम्भ के बने हुए हैं। पुराना किला आयताकार में है और उसका घेरा एक मील है। किला क्रमशः ऊँचे बने हुए टील्हे पर कायम है। किले की ऊँची जगह और नीची जगह के बीच एक दीवाल है जिसके बीच में एक फाटक है। उसके सामने एक कुआँ है जिसके नीचे एक सुरंग गयी है। किले की दीवाल पत्थर की बनी है जो कहीं-कहीं ८ फीट तक मोटी है। किले के चारों फाटक बड़े मजबूत और सुरक्षित हैं और हरेक के ऊपर निगरानी के लिये बुर्ज हैं। किले के भीतर चार दो मंजिले महल और एक मस्जिद के भग्नावशेष हैं। मकानों की दीवालें प्लास्तर की हुई हैं। उन पर जहाँ-तहाँ चित्रकारी अब भी नजर आती है। यहाँ बौद्ध और हिन्दू मूर्त्तियाँ भी मिली थीं, पर कहीं मन्दिर का पता नहीं चला है।

नया किला एक त्रिभुजाकार पहाड़ी की ढाल पर बना है। यहाँ वर्गाकार में बनी हुई किले की दोहरी दीवालें हैं। भीतरी दीवाल पहाड़ी की चोटी को घेरती है और बाहरी दीवाल उससे कुछ नीचे है। यहाँ की दीवालें वैसी ही हैं जैसी कि पुराने किले की दीवालें। बाहरी दीवाल अधिक मोटी है, १८ फीट मोटी। किले के भीतर कोई अलग मकान नहीं है। किले की दीवाल से लगे ही कुछ मकान हैं जो कहीं-कहीं कई मंजिले भी हैं। यहाँ की सबसे आकर्षक वस्तु पत्थर को खोद कर बनायी गयी १५

फीट की ऊँची खिड़की है। रोहतासगढ़ या शेरगढ़ में ऐसी कोई चीज नहीं है। ऐसी एक और टूटी-फूटी खिड़की पास में भी पड़ी है। दोनों किले सरकार द्वारा संरक्षित हैं।

बरवाडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जन-संख्या २०,२५० है। यहाँ १६,८४२ हिन्दू, १,७४२ मुसलमान, १,६६१ आदिम जाति और ५ ईसाई हैं।

बरेसाँड़—बरेसाँड़ तप्पा में बरेसाँड़ एक गाँव है। यहाँ एक फारेस्ट बँगलो है। पहले यहाँ थाने का सदर आफिस था।

बालूमठ—जिले के दक्षिण-पूरब भाग में इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ५४,७०६ आदमी रहते हैं, जिनमें ३६,०१४ हिन्दू, ११,६५७ आदिम जाति, ३,६८५ मुसलमान और ५० ईसाई हैं।

मनका—डाल्टनगंज से २४ मील पर राँची-रोड के किनारे यह एक गाँव है जहाँ एक चेरो जमींदार रहते हैं।

महुआदाँड़—जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में इस गाँव में थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्टबोर्ड बँगलो, और रोमन कैथोलिक मिशन है। महुआदाँड़ थाने की जन-संख्या २४,५०० है। यहाँ १०,६०२ हिन्दू, ७,६६३ ईसाई, ४,७६६ आदिम जाति और ८३६ मुसलमान रहते हैं।

रूद—जिले के दक्षिण इस गाँव में एक फॉरेस्ट बँगलो है।

लादी—यह गाँव डाल्टनगंज से ४ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक राजपूत जमींदार का गढ़ है। ये लोग अपने को गोरखपुर जिले के मझौलिया राज-परिवार की एक शाखा बताते हैं। ये लोग १८ वीं सदी के मध्य में पलामू जिले में आये थे।

हरहंज—बालूमठ थाने के इस गाँव में घटवाली बँगलो है।

पलामू जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

भुइयाँ	९७,३८६	बरही	९,३५९
खरवार	६३,१२४	रजवार	९,१८८
ओराँव	५७,८७७	काँदू	८,९५१
ग्वाला	५०,२६८	धोबी	८,५०३
जोलाहा	४४,५२५	भोगता	७,४८६
चमार	४३,०७२	किसान (नगेसिया)	६,२९३
दुसाध	३८,१५७	कुरमी	५,९८५
कहार	३५,४८९	कायस्थ	४,६३३
ब्राह्मण	३५,१२१	धानुक	३,७७८
राजपूत	३३,३८५	मुंडा	३,७२९
कोयरी	२८,१२४	तूरी	२,९२३
तेली	२१,२९६	भूमिहार ब्राह्मण	२,५०३
चेरो	१७,९०६	डोम	२,४५८
मल्लाह	१५,६७०	घासी	२,०८६
कमार	१५,१७२	बनिया	२,०४५
कुम्हार	११,४०३	पासी	१,९१८
कोरवा	११,३०३	बिरजिया	१,३०५
हजाम	१०,५४५	बिरहोर	१४१
पढैया	९,६७१	असुर	८४

मानभूम जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

मानभूम जिला छोटानागपुर कमिश्नरी का पूर्वी भाग है। यह २२°४३' और २४°४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°४९' और ८६°५४' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका मुख्य शहर पुरुलिया २३°२०' उत्तरीय अक्षांश और ८६°२२' पूर्वीय देशान्तर पर है।

जिले का नाम एक परगने के नाम पर पड़ा है। इस परगने का मुख्य स्थान मानबाजार या मानभूम खास १८३३ से १८३८ ई० तक जंगल महाल का मुख्य स्थान रहा है। मानभूम नाम की उत्पत्ति कैसे हुई इसके बारे में कुछ निश्चित रूप से कहना कठिन है। कुछ लोग मल्लभूमि से मानभूम बना बताते हैं तो कुछ लोग प्रतिष्ठित भूमि के अर्थ में मानभूम मानते हैं। कुछ लोग माल या माले नामक आदिम जाति के नाम पर मानभूम का नाम पड़ना कहते हैं। बहुत-से लोग यह भी बताते हैं कि राजा मानसिंह के नाम पर मानभूम नाम पड़ा है।

जिले के उत्तर में हजारीबाग और संथाल परगना, पूरब में बर्दवान, बाँकुरा और मेदिनीपुर के जिले, दक्षिण में सिंहभूम जिला, और पच्छिम में राँची और हजारीबाग जिले हैं। उत्तर की ओर बराकर नदी प्राकृतिक सीमा का काम करती है। दक्षिण में सुवर्णरेखा नदी कुछ दूर तक जिले की सीमा बनाती है।

यह जिला मोटे तौर पर समानान्तर चतुर्भुज के रूप में है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ६० मील और पूरब से पच्छिम तक इसकी चौड़ाई ६० मील है। इसका क्षेत्रफल ४,०९५ वर्गमील है।

प्राकृतिक बनावट

दामोदर नदी पच्छिम से पूरब की ओर बहकर मानभूम जिले को दो प्राकृतिक भागों में बाँटती है। उत्तर का भाग धनबाद सबडिविजन है और दक्षिण का सदर सबडिविजन। दक्षिण का भाग उत्तर के भाग से ढाई गुना बड़ा है। इस जिले में छोटा-नागपुर की अधित्यका बंगाल की नीची भूमि की ओर उतरना शुरू करती है। मध्यभारत की ऊँची भूमि का यहीं अन्त हुआ है। यहाँ पहाड़ की कितनी ही श्रेणियाँ है और जहाँ-तहाँ छिट-फुट पहाड़ भी हैं। जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में दामोदर और बराकर नदी के बीच दो पर्वत-श्रेणियाँ हैं जो हजारीबाग की पारसनाथ की श्रेणी से निकली हैं। इसके दक्षिण में हजारी-बाग की ही ओर से खासपेल और जयनगर परगने की ओर एक दूसरी पर्वत श्रेणी आयी है। पास के झालदा परगने से कुछ पहाड़ियाँ श्रेणीबद्ध होकर गयी हैं। यही और दक्षिण जाकर बाघमुंडी या अयोध्या पर्वत-श्रेणी कायम करती हैं। इस पर्वत-श्रेणी की अधित्यका पर कितनी ही बस्तियाँ हैं। जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में भी राँची जिले से पर्वत-श्रेणियाँ आयी हैं। इनमें मुख्य दालमा पर्वत-श्रेणी है। पारसनाथ की पहाड़ी सबसे ऊँची है। इसकी ऊँचाई ४,४८१ फीट है, लेकिन इसका मुख्य भाग हजारीबाग जिले में है। इस जिले के अन्दर सबसे

ऊँची चोटी दलमा पर्वत-श्रेणी की है, जिसकी ऊँचाई ३,४०७ फीट है। जिले के दक्षिण-पच्छिम कोने में सबई पहाड़ २,६३७ फीट और चाराजुरल पहाड़ २,४१२ फीट ऊँचा है। पास की आली पहाड़ी की ऊँचाई २,१०८ फीट, कराँती पहाड़ी की १,९३२ फीट और चाटम की १,७६६ फ़ीट है। बाघमुंडी पर्वत-श्रेणी में गजबुरु पहाड़ी की ऊँचाई २,२२० फीट है। इस पर्वत-श्रेणी की उत्तरी छोर पर बाँस पहाड़ १,७८६ फीट ऊँचा है। जिले के उत्तर-पूरब कोने में पंचकोट या पंचेट पहाड़ी १,६०० फीट ऊँची है। बिलकुल उत्तर की ओर तुंडी पर्वत-श्रेणी में दोमुंडा नाम की मुख्य चोटी है।

जिले के अन्दर कोई बड़ा जलाशय या प्राकृतिक झील नहीं है। लेकिन, बहुत-से स्थानों में बाँध द्वारा पहाड़ी जल को रोक-कर कृत्रिम जलाशय बनाये गये हैं। इनमें सबसे बड़ा पुरुलिया का साहब बाँध है। बरसात के दिनों में यह जलाशय करीब ५० एकड़ में फैल जाता है। यह १८४८ ई० में बनाया गया था। वृक्षों से घिरा रहने के कारण इसकी शोभा बहुत बढ़ गयी है। गोविन्दपुर में भी इसी तरह का एक छोटा बाँध है। पान्डू, जयपुर, बाबूडोह, रानीमाटी और आद्रा में भी बाँध हैं।

इस जिले के अन्दर सरकारी जंगल छोटानागपुर के और जिलों की अपेक्षा बहुत कम हैं। सन् १९३५-३६ में सरकार का ९७८ एकड़ रिजर्ब्ड फारेस्ट और ९,१९६ एकड़ प्रोटेक्टेड फारेस्ट था।

सात के दिनों में दामोदर में नावों का चलना मुश्किल हो जाता है। बाँस और लकड़ियाँ नदी होकर बहा ले जायी जाती हैं।

बराकर—बराकर नदी जिले की उत्तरी सीमा पर बहती हुई कुछ दूर तक पूर्वी सीमा पर भी आ जाती है। यह चिरकुंडा और बराकर से कई मील दक्षिण आकर दामोदर नदी में मिल गयी है। संगम से कुछ दूर पूर्व खुदिया नदी पच्छिम से आकर इसमें मिलती है। खुदिया पारसनाथ और तुंडी पर्वतश्रेणियों के बीच से निकली है।

धलकिशोर और सिलई—ये दो नदियाँ दामोदर और कासाई नदियों के बीच बहती हैं। ये परगना लुधुरका से निकलती हैं और वहाँ के जल को अपने साथ बहा ले जाती हैं। इस जिले में ये थोड़ी ही दूर तक बहती हैं और यहाँ बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं।

कासाई—जिले के मध्यभाग में यह सबसे मुख्य नदी है। यह झालदा से उत्तर जिले के पच्छिम भाग की पहाड़ियों से निकलकर दक्षिण-पूरब दिशा में बहने लगती है। यह पुरुलिया को कुछ मील उत्तर की ओर छोड़ती हुई अपनी ६० मील की यात्रा तय कर बाँकुरा जिले में प्रवेश करती है। यह बाघमुंडी से पूरब और दालमा पर्वत-श्रेणी से उत्तर जिले के समूचे मध्य-भाग और दक्षिण-परब भाग के पानी को अपने साथ बहा ले जाती है। मान बाजार के बाद जिले के बाहर जाने पर कुमारी नदी इससे आ मिली है। कुमारी नदी टटको और नेंगसाई, इन दो सहायक नदियों के साथ दालमा पर्वतश्रेणी के उत्तरी भाग के जल को अपने साथ बहा ले जाती है। कासाई नदी में नावें नहीं चलतीं।

सुवर्णरेखा—बाघमुंडी पर्वत-श्रेणी के पच्छिम और दालमा पर्वतश्रेणी के दक्षिण केवल एक मुख्य नदी सुवर्णरेखा है। यह नदी राँची से आती हुई कुछ दूर तक राँची और मानभूम के बीच सीमा का काम करती है। इसके बाद यह जिले की सीमा के समानान्तर बहती हुई जिले की दक्षिणी सीमा को छूती है। यहाँ पर यह पूरब दिशा में सीमा पर ही बहती हुई कपाली के पास सिंहभूम जिले में प्रवेश कर जाती है। मानभूम जिले में इसकी सहायक नदी है करकरी। यह राँची जिले से निकलकर पाटकुम परगने को २० मील तक दो भागों में बाँटती हुई इचाकगढ़ से कुछ मील पूरब सुवर्णरेखा नदी में मिलती है।

जलवायु और स्वास्थ्य

मानभूम जिले की जलवायु बंगाल की जलवायु की अपेक्षा शुष्क है, पर वैसी शुष्क नहीं जैसी कि छोटानागपुर के अन्य जिलों की जलवायु है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद समझी जाती है। यहाँ के शहर और गाँव ऊँचे स्थानों पर बसे हैं, जहाँ से पानी आसानी से बह जाता है जिससे बहुत तरह के रोग फैलने नहीं पाते और मृत्यु-संख्या कम रहती है। जाड़े के दिनों में यहाँ का अधिक से अधिक औसत तापमान ७६° से ७९° तक रहता है। गर्मी के दिनों में यह १०३° तक जाता है और बरसात के दिनों में घटकर करीब ९०° रह जाता है। वर्षा साल में यहाँ ५० से ५५ इँच तक होती है। जिले के उत्तर, पच्छिम तथा दक्षिण भाग में, जहाँ पहाड़ हैं, वर्षा स्वभावतः कुछ अधिक होती है और मध्य

इस जिले में रोगों की बहुत शिकायत नहीं है। लेकिन, तोपचाँच, दलमा और बाघमुंडी के पहाड़ी भागों में और बड़ाबाजार थाने में मलेरिया की कुछ शिकायत रहती है। चेचक और हैजे का प्रकोप यहाँ कभी-कभी रहता है। सन् १९०६-७ में झरिया में प्लेग की कुछ शिकायत देखी गयी थी, पर उसके बाद फिर कहीं कुछ नहीं हुआ। झरिया के कोयले के मैदान में, जहाँ बहुत-से लोग काम करते हैं, सफाई कायम रखने और किसी तरह का संक्रामक रोग न फैलने देने का खास खयाल रखा जाता है। सन १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले में पागलों की संख्या ४४७, बहरे-गूँगों की संख्या १,६१४, अंधों की संख्या ३,३९४ और कोढ़ियों की संख्या ३,०३२ है। यहाँ प्रान्त के सब जिले से अधिक कोढ़ियों के होने का कारण यहाँ पुरुलिया में दो अच्छे कुष्टाश्रमों का रहना है, जहाँ दूसरे जिलों से भी कोढ़ी आया करते हैं।

जिले के अन्दर सन् १९३५-३६ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के २९ अस्पताल थे।

जानवर

मानभूम जिले में मवेशियों की दशा अच्छी नहीं है। यहाँ के मवेशी छोटे और कमजोर होते हैं। इसका मुख्य कारण है यहाँ चारे की कमी होना। पथरीली भूमि में घास अच्छी नहीं जमती है। यहाँ अच्छे साँढ़ भी नहीं पाये जाते हैं। हाँ, जिले के उत्तर और पच्छिम भाग में हजारीबाग के कुछ अच्छे साँढ़ मिल जाते हैं। सब मवेशियों में यहाँ भैंस अधिक उपयोगी समझी जाती है और जिले के बहुत-से भागों में यह हल में और गाड़ी में भी जोती जाती है। भेंड़ भी अच्छी जाति की नहीं

पायी जातीं। ये कद में छोटी होतीं और बहुत मामूली ऊन देती हैं। घोड़े बहुत कम पाये जाते हैं। घरेलू जानवरों में बकरियाँ और घरेलू सूअर की संख्या अधिक है। पुरुलिया और धनबाद में जानवरों का अस्पताल है।

जंगलों के कटते जाने से जंगली जानवर अब यहाँ कम मिलने लगे हैं। तब भी पहाड़ों और घने जंगलों में बाघ, चीता, भालू, जंगली सूअर, भेड़िया, लंगूर, लोमड़ी, हरिण आदि मिलते ही हैं। कुछ दिन पहले यहाँ जंगली हाथी भी देखे जाते थे। यहाँ हर साल कुछ न कुछ आदमी और मवेशी जंगली जानवरों के शिकार होते हैं।

इतिहास

प्राचीन काल—मानभूम जिले के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में लोगों को निश्चित रूप से कुछ मालूम नहीं है। किसी तरह की कोई पुरानी लिखी चीजें नहीं मिलतीं। कोई शिला-लेख या ताम्रपत्र भी नहीं पाया जाता है। इस जिले की मुख्य आदिम जाति भूमिज है, जिसका मुंडा जाति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यूनानी इतिहासकार प्लीनी ने लिखा है कि मगध के दक्षिण में मुंडा, माले और सवर लोग रहते थे। इसलिये यह अनुमान किया जा सकता है कि पुराने समय में मानभूम जिले में इन्हीं जातियों की प्रधानता रही होगी।

ईसा की सातवीं सदी में चीनी यात्री य्वन्च्वाङ् (ह्वेनसन) द्वारा लिखा यहाँ का कुछ वृत्तान्त मिलता है, जिससे पता चलता है कि उत्तर में मगध, दक्षिण में उड़ीसा, पूरब में चम्पा और

पच्छिम में महेशवार (मध्य भारत के अन्दर) के बीच कर्ण-सुवर्ण (कियेे-लो-ना सु-फा-ला-ना) नामक एक राज्य था। सम्भवतः सोने-जैसी बालूवाली नदी सुवर्णरेखा के कारण इस राज्य का यह नाम पड़ा हो। जेनरल कनिंघम का कहना है कि इस राज्य के अन्दर पूरब में मेदिनीपुर, पच्छिम में सरगुजा, उत्तर में दामोदर नदी का उद्गम स्थान और दक्षिण में वरतारिणी नदी के उद्गम स्थान के बीच की सभी पहाड़ी भूमि होगी। इस राज्य की राजधानी कोई तो बड़ा बाजार (परगना वराभूम) में और कोई दालमी (परगना पाटकुम) में बताता है। दालमी में अब भी बहुत-से खँड़हर दीख पड़ते हैं। एक इतिहासकार मि० बेगलर करनपुरा को य्वन्च्वाङ्-वर्णित राज्य किये-लो-ना बताता है और दालमी से १० मील उत्तर-पच्छिम साफारान (सु-फा-ला-ना) को उसकी राजधानी समझता है। सभी के मत से इतनी बात निश्चित है कि इस राज्य की राजधानी इसी जिले के अन्दर कहीं सुवर्णरेखा नदी के किनारे थी। कहते हैं कि उस समय यह राज्य बंगाल के राजा शशांक के अधीन था।

दालमी के भग्नावशेषों को देखने से पता चलता है कि यहाँ पहले बौद्ध या जैन सभ्यता की प्रधानता थी, पीछे ब्राह्मण धर्म का प्रचार हुआ। बेगलर का कहना है कि पूरब में तामलुक (ताम्रलिप्ति) से पटना, गया, राजगिरि और बनारस को सड़कें गयी थीं और इन सड़कों के किनारे कितने ही बड़े-बड़े शहर थे जिनके भग्नावशेष अब भी देखने में आते हैं। मानभूमि जिले में दामोदर नदी के किनारे तेलकुप्पी में और बराकर नदी के किनारे पालगंज में भग्नावशेष बहुत दूर तक फैले हुए हैं। इसी तरह रघुनाथपुर, पाकबीरा, बुद्धपुर, मानबाजार, दालमी,

साफारन, सुसई, बलरामपुर, चर्रा, पारा, चेचाँवगढ़, कतरास, अरसा, करनडोही आदि स्थानों में भी जैन और ब्राह्मण-काल के भग्नावशेष हैं। लेकिन, इस पहाड़ी भूभाग में बस्तियाँ वैसी घनी नहीं बसी थीं जैसी मगध में। कर्नल डाल्टन का कहना है कि यहाँ जैनियों में सवर जाति के और आदिम जातियों में भूमिज जाति के लोग प्रधान थे। पाकबीरा में एक मूर्त्ति है जिसे लोग भीरम की मूर्त्ति कहते हैं। यह मूर्त्ति जैनियों के २४ वें तीर्थंकर की समझी जाती है। कहते हैं कि इन्होंने कुछ दिनों तक उस भूभाग में भ्रमण किया था—जहाँ वज्र-भूमि और सुधि-भूमि जाति के लोग रहते थे, जिन्होंने इनको बहुत सताया था। वज्रभूमि को ही आजकल लोग भूमिज बताते हैं।

छोटानागपुर का भूभाग मुसलमानी काल तक झारखण्ड के नाम से प्रसिद्ध था। भविष्यत् पुराण में इस भूभाग का वर्णन आया है। इस पुराण को कुछ लोग १५ वीं या १६ वीं सदी का बना मानते हैं। इसमें लिखा है कि बाराह भूमि एक ओर तुंगभूमि से मिली हुई है तो दूसरी ओर शेखर पर्वत से। इसके अन्दर बराभूमि, सामन्तभूमि और मानभूमि हैं। इसमें साल आदि वृक्षों के घने जंगल पाये जाते हैं। वराभूमि की सीमा पर दरीकेशी नदी बहती है। यहाँ के पर्वतों में ताँबा, लोहा और टीन पाये जाते हैं। यहाँ के अधिकांश लोग क्षत्रिय हैं जो बड़े अधार्मिक और जंगली हैं तथा मदिरा और मांस का सेवन करते हैं। स्त्रियाँ भी राक्षसी के रूप में रहती हैं। ऊपर जिस भूभाग का वर्णन आया है वह इस समय बाँकुरा जिले के चातन थाने में और मानभूम जिले के बराभूम और मानभूम परगने में पड़ता है। तुंगभूमि बाँकुरा जिले का रायपुर

थाना और शेखर पर्वत पारसनाथ या पांचेट की पहाड़ी है। पहले पांचेट राज्य के सभी अधिकारी अपने नाम के आगे शेखर शब्द लगाते थे। इस राज्य के एक अंश का नाम अब भी शेखर है। कुछ लोग समूचे राज्य को ही शेखर-राज्य कहते हैं।

मुसलमानी काल—मुसलमानी काल के आरम्भ से भी इस जिले का सिलसिलेवार इतिहास नहीं मिलता है। हाँ, अकबर के समय से कुछ बातों का पता चलता है। १५८५ ई० के लगभग अकबर ने कोकराह अर्थात् छोटानागपुर के राजा पर चढ़ाई करने के लिये सेना भेजी थी। आईन-ए-अकबरी में हजारीबाग का एक हिस्सा छै चम्पा सूबा विहार का एक परगना माना गया है। उस वक्त तक उत्तर में वीरभूम और पूरब में विष्णुपुर तक का भाग मुसलमानों के कब्जे में आ गया था। सन् १५९० के करीब राजा मानसिंह भागलपुर से बर्द्-वान की पच्छिमी पहाड़ी होकर उड़ीसा जीतने गया था। दो वर्ष बाद इसने अपनी सेना झारखण्ड होकर मेदिनीपुर भेजी। इस यात्रा में वह मानभूम जिला होकर ही गया हुआ मालूम पड़ता है। पंचेट (पंचकोट) किला शायद इसी समय का बना था।

३० वर्ष बाद सन् १६३२ या १६३३ में हमलोग पादशाह-नामा में पंचेट राज्य का जिक्र पाते हैं। उसमें लिखा है कि यह राज्य सूबा विहार में शामिल था। यहाँ का जमींदार वीर नारायण, जो ३०० घुड़सवारों का अध्यक्ष था, गद्दी पर बैठने के छठे वर्ष में मर गया। इस बात का कोई उल्लेख नहीं मिलता कि १६५८ ई० के पहले पंचेट राज्य को कर देना पड़ता था। पीछे तो मुसलमानों का अधिकार इस भूभाग पर ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों त्यों कर भी बढ़ता गया। १७०० ई० के लग-भग मुसलमानों के कारण राजा पंचेट का किला छोड़कर किसी

दूसरे सुरक्षित स्थान में चला गया। मुसलमानों ने लड़कर यह किला लिया या डर से राजा के भाग जाने पर इसपर अधिकार जमा लिया, यह निश्चित नहीं मालूम पड़ता। १८ वीं सदी के आरम्भ में मुर्शिद खाँ ने बहुत-से हिन्दू जमींदारों को तबाह किया था। लेकिन, पंचेट और मानभूम जिले के दक्षिण और पच्छिम भाग के जमींदारों पर मुसलमानों का कब्जा हुआ हो, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। किसी मुसलमानी वक्त के इतिहास मे यहाँ के जमींदारों का जिक्र नहीं आया है। यहाँ की दन्तकथाओं या मकानों के भग्नावशेषों से भी यह पता नहीं चलता कि यहाँ कभी मुसलमानों का अधिकार रहा हो। मालूम पड़ता है कि पहाड़ों और जंगलों के कारण यहाँ उनका प्रवेश नहीं हो सका। इस काल में यहाँ के राज्यों की क्या स्थिति थी, यह ठीक ठीक बताना मुश्किल है। लेकिन, इतना मालूम है कि वराभूम और मानभूम के राज्य बहुत दिनों से अपनी स्वतन्त्र स्थिति कायम रखे हुए थे।

अँगरेजी काल—सन् १७६५ ई० में बङ्गाल-विहार की दीवानी मिलने के बाद इस भूभाग पर अँगरेजों का कब्जा हो गया। इस समय तक भी पंचेट को छोड़ इस जिले के और भागों के सम्बन्ध में विशेष बातें मालूम नहीं होतीं। इस समय पंचेट राज्य में झालदा मिलाया गया था। वराभूम और मानभूम के राज्य नाम के लिये मेदिनीपुर में शामिल थे। पाटकुम और बाघमुंडी रामगढ़ के अन्दर थे। उसी तरह सम्भवतः नावगढ़, कतरास, झरिया और तुंडी भी रामगढ़ के ही साथ थे। उत्तर के बाकी स्टेट पर वीरभूम के जमींदार का कब्जा था।

यहाँ के राज्यों पर आधिपत्य जमाने के लिये अँगरेजों को बहुत झंझटें उठानी पड़ी थीं और सेना लेकर चढ़ाइयाँ करनी

पड़ी थीं। मानभूम, वराभूम और पास के दूसरे राज्यों पर मेदिनीपुर के कलक्टर के आदेश पर १७६७ ई० में लेफ्टिनेन्ट फरगुशन ने चढ़ाई की थी। घाटशिला या धालभूम के जगन्नाथ धाल ने अँगरेजों को आधिपत्य जमाने में सबसे अधिक रुकावट डाली थी। पीछे वराभूम और मानभूम के राजा ने कर देना स्वीकार किया। लेकिन, अंग्रेजों को चैन लेने नहीं दिया गया। सन् १७६९ में वराभूम और घाटशिला के बीच की पहाड़ियों के निवासी चुआर लोगों ने बलवा मचाया। इसको दबाने के लिये अँगरेजी सेना पहुँची। बलवाई कभी तो दब जाते थे और कभी फिर संगठित होकर उपद्रव मचाने लगते थे। इस तरह कई वर्ष बीते। अन्त में वराभूम में अँगरेजों को स्थायी सेना रखनी पड़ी और बलवाइयों के केन्द्र-स्थान में कैलापाल से तीन मील की दूरी पर एक किला बनवाना पडा। बलवाइयों में मुख्य थे धद्का के चुआर सरदार शाम-गजँन, कैलापाल के सुबल सिंह और वराभूम राजा के बड़े लड़के दुबराज। मानभूम और घाटशिला के राजा आदि की सहायता से किसी तरह बलवाई दबाये गये। लेकिन, १७७३ ई० में जब धालभूम के राजा ने बलवा मचाया तो मानभूम के आसपास भी कुछ अशान्ति मची।

अँगरेजी राज्य के आरम्भ में जिले के और भागों में विशेष उपद्रव नहीं रहा। कुछ दिनों तक पंचेट राज्य बिसनपुर और वीरभूम के साथ कर दिया गया था, पर पीछे झालदा सहित अलग कर दिया गया। १७८२ ई० में पंचेट राज्य होकर सैनिक-सड़क बनायी गयी थी। उसी साल झालदा और तमार में उपद्रव मचा। नावगढ़ और झरिया के जमींदारों ने भी लूट-मार शुरू की। मेजर क्राफोर्ड ने आकर सबों को दबाया। इसी

समय दक्षिण में चुआर लोगों ने फिर उपद्रव करना शुरू किया। वहाँ भी अँगरेजी सेना भेजी गयी।

१७८६ ई० में झालदा और तमार में फिर बलवा मचा। १७९५ ई० में पंचेट राज्य का कर बाकी पड़ जाने पर वह नीलाम कर दिया गया। इसी बात को लेकर यहाँ फिर उपद्रव खड़ा हुआ और बहुत दिनों तक जारी रहा। अन्त में पंचेट राज्य पुराने जमींदार को वापस मिला। पर, अब इसका सम्बन्ध रामगढ़ जिले से हटाकर मेदिनीपुर जिले के साथ कर दिया गया। इस समय जिले के दक्षिण-पच्छिम में भी कुछ झंझट थी। पाटकुम राज्य को लेकर उसके उत्तराधिकारियों में झगड़ा चल रहा था। बाघमुंडी राज्य को सरकार ने जप्त कर लिया था, लेकिन प्रजा के प्रबल विरोध से राज्य का एक हिस्सा पुराने जमींदार को लौटाना पड़ा।

१७९८ ई० में वराभूम राज्य के मालिक रघुनाथ नारायण के मरने पर उसके दो नाबालिग लड़कों के बीच बड़ा झगड़ा चला। सरकार ने राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया था, तब भी कुछ सरदार एक लड़के की ओर, तो कुछ दूसरे लड़के की ओर होकर खूब लड़-झगड़ रहे थे और सब जगह अशान्ति थी। अन्त में कोर्ट के फैसले से बड़े लड़के को राज्य मिला और झगड़ा किसी तरह शान्त हुआ।

लगान वसूल न हो सकने के कारण पंचेट राज्य वीरभूम के अधीन कर दिया गया, पर सन् १८०५ के कानून के अनुसार जंगल महाल एक अलग ही जिला कायम किया गया और इसका सदर आफिस बाँकुरा में रहा। झालदा और रघुनाथपुर में सेना रखी गयी और जगह-जगह पुलिस का इन्तजाम हुआ। पंचेट को छोड़ सभी जगह जमीन्दार ही दारोगा का काम

करते थे। पंचेट बहुत बड़ा हलका होने के कारण वहाँ जमींदार के अलावे एक दूसरा दारोगा रखा गया और थाने की प्रथा जारी हुई। लेकिन, थाने का खर्च जमींदार को ही देना पड़ता था। दारोगा के अधीन दिगवार और घटवार वगैरह होते थे।

१८३२ ई० में जिले में फिर उपद्रव मचा। यह उपद्रव गंगा-नारायण-हंगामा के नाम से प्रसिद्ध है। यह हंगामा छोटानागपुर के अन्य जिलों के कोल-विद्रोह के बाद ही आरम्भ हुआ था। सरकारी प्रबन्ध के समय लगान का बढ़ाना और महाजनों का अपने कर्जदारों को बुरी तरह सताना ही हंगामा के मुख्य कारण थे। हंगामा वराभूम राज्य से शुरू हुआ। इसका तात्कालिक कारण हुआ राज्य के लिये आपस का झगड़ा। वराभूम के राजा बालकनारायण के मरने पर उसके दो लड़के रघुनाथ और लछुमन सिंह आपस में लड़ने लगे। रघुनाथ पिता का ज्येष्ठ पुत्र होने से गद्दी का दावा करता था तो लछुमन सिंह राजा की पट-रानी का लड़का होने से। लेकिन अन्त में गद्दी रघुनाथ को मिली। रघुनाथ के मरने पर उसके दो लड़के गंगागोविन्द और माधव सिंह में इसी तरह का झगड़ा मचा। आखिर गंगागोविन्द राजा बनाया गया और माधव सिंह दीवान। माधव सिंह ने लछुमन सिंह के लड़के गंगानारायण से तकरार मचायी और उसकी पंच-सरदारी छीन ली। माधव सिंह के अत्याचार से सब लोग तंग थे, उसने सब घटवालों पर लगान बढ़ाया था, प्रत्येक घर पर घरटकी-टैक्स बैठाया था और महाजनी करके रैयतों को बहुत सताता था, इससे सब लोग उसके विरोधी हो गये थे। एक बार गंगानारायण ने घटवालों की सहायता से उसपर चढ़ाई कर दी और उसे मार डाला। अब वह हर जगह लूट-मार मचाने लगा। सताये हुए लोगों ने उसका पूरी तरह साथ दिया।

बड़ा बाजार जाकर विद्रोहियों ने बाजार को लूट लिया। मुन्सिफ और नमक-दारोगा की कचहरियों तथा थाने में आग लगा दी। तीन हजार चुआरों को लेकर गंगानारायण ने मजिस्ट्रेट रसेल की सेना पर भी चढ़ाई कर दी। बार-बार की चढ़ाई से तंग आकर सेना वराभूम छोड़कर बाँकुरा चली गयी। अब गंगानारायण ने अकरो, अम्बिकानगर, रायपुर, श्यामसुन्दरपुर और फुलकुसमा के राज्यों पर भी चढ़ाई कर दी, जो इस समय बाँकुरा जिले में हैं। तमाम तहलका मच गया। अन्त में अँगरेजी सेना विद्रोहियों को दबाने को पूरी शक्ति के साथ लौटी। उसने सब जगह विद्रोहियों को दबाया। गंगानारायण सिंहभूम भाग गया।

स्थितिके कब्जे में आ जाने पर यहाँ की शासन-प्रणाली बदल दी गयी। १८३३ के रेगुलेशन नं० १३ के अनुसार यहाँ साधारण कानून से काम लेना बन्द किया गया और दक्षिण-पच्छिम-प्रान्त-एजेन्सी कायम की गयी। जंगल महाल जिला तोड़ दिया गया। सेनपहाड़ी, शेरगढ़ और बिसुनपुर के स्टेट बर्दवान में मिला दिये गये। मानभूम एक अलग जिला कायम हुआ और उसका सदर आफिस मान बाजार में रक्खा गया। इसके अन्दर जिले के वर्तमान भूभाग के अलावे सुपुर, रायपुर, अम्बिकानगर, सिमलापाल, भेलाहीडीह, फुलकुसमा, श्यामसुन्दरपुर और धालभूम के स्टेट शामिल किये गये। १८३८ई० में सदर आफिस हटाकर पुरुलिया लाया गया, क्योंकि उस समय यह जंगलों का केन्द्र-स्थान समझा जाता था। १८५४ के एक्ट के अनुसार दक्षिण-पच्छिम-सीमाप्रान्त-एजेन्सी तोड़कर कमिश्नरी बना दी गयी और यहाँ का एजेन्ट कमिश्नर कहलाने लगा। कमिश्नरी के और जिलों के साथ-साथ पुरुलिया का अफसर प्रिन्सपल असिस्टेन्ट नहीं कहला कर डिप्टी कमिश्नर कहलाने लगा।

सिपाही-विद्रोह—सन् १८५७ में सिपाही-विद्रोह के समय इस जिले में ६४ सैनिक सिपाही और १२ घुड़सवार थे। इन लोगों की बुरी रंगत देखकर डिपटी कमिश्नर पुरुलिया छोड़कर रानीगंज चला गया। विद्रोही सैनिक खजाना लूटने और जेल का द्वार खोलने को आगे बढ़े। उसके बाद वे लोग बिना कहीं लूटपाट किये राँची चले गये। विद्रोह की आशंका होने पर ही बहुत-से भले लोग शहर छोड़कर चले गये थे। जब कोई अधिकारी या सैनिक नहीं रहे तो कैदियों और कुछ बदमाशों ने शहर में और रघुनाथपुर जानेवाली सड़क पर उत्पात मचाया। कचहरी और वहाँ के कागजात जला दिये गये। कहते हैं कि इनका सरदार पंचेट राज्य-परिवार का एक व्यक्ति था। डिप्टी कमिश्नर कैप्टेन ओक ने पंचेट के राजा से सहायता करने की अपील की, पर राजा सहायता करने को तैयार नहीं हुआ। इस पर एक महीने के बाद यह काफी सेना लेकर पहुँचा और राजा को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद सब जगह शान्ति रही। संथालियों ने जयपुर के जमींदार पर हमला किया था, पर वे दबा दिये गये।

जिले का निर्माण—मानभूम जिला, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, १८३३ ई० में कायम किया गया। उस समय इसमें धालभूम भी शामिल था जो १८४५ ई० में सिंहभूम में मिला दिया गया। बाँकुरा का बहुत-सा हिस्सा और बर्दवान का शेरगढ़ भी इसी जिले में था। १८४६ में शेरगढ़, चौरासी, महिसार, चेलियामा, चातन, नलीचाँद, बनखंडी और बारपार, तथा बनचाँस और पार के कुछ हिस्से फौजदारी कामों के लिये बाँकुरा जिले में मिला दिये गये, पर लगान के काम के लिये ये मानभूम जिले में ही रहे। इस समय जिले का रकबा ७,८९६ वर्गमील था और इसमें ३१ जमींदारियाँ थीं। १८७१ ई० में

पाँड़ा का वह हिस्सा जो बराकर नदी के पूरब था तथा शेरगढ़ बर्दवान जिले में मिला दिया गया। चाँतर और महिसार, बाँकुरा जिले में मिलाये गये। पहले जो थोड़े-से स्थान फौजदारी कामों के लिये बाँकुरा जिले में मिलाये गये थे उनमें से बचे हुए स्थान सभी कामों के लिये मानभूम जिले के अन्दर ही रहे। सन् १८७९ में सुपुर, रायपुर, अम्बिकानगर, सिमलापल, बेलाहीडीह, फुलकुसुमा और श्यामसुन्दरपुर परगने (जो रायपुर, खातर और सिमलापल थाने के अन्दर पड़ते थे) बाँकुरा में मिला दिये गये। इस तरह मानभूम जिला वर्तमान रूप में लाया गया।

लोग, भाषा और धर्म

सन् १८८१ ई० में मानभूम जिले में १०,५८,२८८ आदमी थे, सन् १९३१ में आकर १८,१०,८९० आदमी हो गये, जिसमें ९,४०,००९ पुरुष और ८,७०,८८१ स्त्रियाँ थीं। इस तरह पिछली आधी शताब्दी में ७,५२,६६२ आदमी अर्थात् सौ में ७१ आदमी बढ़े। इस जिले में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ४४२ आदमी रहते हैं। सदर सबडिविजन की अपेक्षा धनबाद सबडिविजन की आबादी करीब-करीब दूनी सघन है। सदर सबडिविजन में एक वर्गमील के अन्दर औसतन ३९० आदमी रहते हैं, पर धनबाद सबडिविजन में ६६२ आदमी। सन् १९२१ में इस जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या १,५३,३२४ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,१७,६७३ थी। सन् १९३१ में इस संबंध में गणना नहीं हुई थी। मानभूम जिले में पुरुलिया, धनबाद, रघुनाथपुर और झालदा, ये चार शहर और ४,६४२

गाँव हैं। यहाँ के शहरों की कुल जनसंख्या ५६,३६३ है।

भाषा—सन् १९३१ की गणना के अनुसार जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य भाषाओं के अन्दर १२,२२,६८६ लोगों की मातृभाषा बँगला, ३,२१,६९० की हिन्दुस्तानी, १,६१२ की गुजराती, १,७७४ की मारवाड़ी, १,५६३ की उड़िया, ६६२ की नेपाली, ६६१ की पंजाबी और १५७ की अन्य भारतीय आर्य भाषाएँ; मुंडा-भाषाश्रेणी के अन्दर २,४२,०६१ की संताली, ४,६२३ की कोरा, २,११८ की भूमिज, १,९६५ की खड़िया, १,५६८ की करमाली, ७८९ की मुंडारी, ३१२ की माहिली, ६८ की बिरहोर, ५७ की हो और २६ की अगरिया; द्राविड़-भाषाश्रेणी के अन्दर १,३३२ की तेलगू, ६४३ की ओराँव, ५२५ की तामिल और १ की अन्य द्राविड़ भाषाएँ; १७६ की पश्तो, ३ की जिप्सी, १४८ की भारतीय-भिन्न एशियाई भाषाएँ; २,१०० की अँगरेजी और १०१ की अन्य यूरोपीय भाषाएँ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से जिले के अन्दर सौ में ६७ आदमी बँगला बोलनेवाले हैं। पर, यहाँ की बँगला बोली अपभ्रंश बोली है जिसको राढ़ी बोली कहते हैं। फिर, इसके भी कासाई पारी, खासपोनी, तामाड़ी आदि कई भेद हैं। यहाँ की हिन्दुस्तानी भाषा की बोली मगही की अपभ्रंश है। आदिम जाति के लोग अपनी बोली बोलने के अलावे हिन्दी या बँगला बोलना भी जानते हैं।

धर्म के हिसाब से मानभूम जिले में लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	१५,६२,५२७	जैन	८३
मुसलमान	१,१३,३७७	सिक्ख	७६
आदिम जाति	६६,१६०	बुद्ध	६
ईसाई	७,६५६	अन्य जाति	२

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ हिन्दू प्रति सैकड़े क़रीब ८८, मुसलमान ६ और आदिम जाति ५ हैं। कुछ निम्न श्रेणी के लोगों में यह बताना कठिन है कि वे हिन्दू हैं या आदिम जाति। बहुत-से आदिम जाति के लोग अपने को हिन्दू कहने लगे है। व्यापक अर्थ मे आदिम जातियों को हिन्दू कहना गलत भी नहीं है। आदिम जाति के बहुत-से लोग अपनी मूल जाति के नाम से पुकारे जाने पर भी धर्म के हिसाब से हिन्दू, आदिम जाति और ईसाई भी कहलाते हैं। जिले की प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की संख्या अलग दी गयी है।

इस जिले में कई ईसाई मिशनरियाँ काम कर रही हैं। ईसाई धर्म-प्रचार का कार्य यहाँ १८६४ ई० से हो रहा है। पुरुलिया, सिरकाबाद, इलू, तुँतरी, आद्रा, झरिया, धनबाद और पोखुरिया में इसके केन्द्र हैं। जिले के ७,६५६ ईसाइयों में १,१५६ यूरोपियन आदि, १,११० एंग्लो इण्डियन और शेष भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

मानभूम जिले का रकबा २६,२०,८०० एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से ४,९७,५०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ८,८०,४२२ एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ३,७७,३८१ एकड़ जमीन जोती-बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। ५,०२,२६६ एकड़ में जंगल था। ३,६३,२३१ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ५२½

भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका दो तिहाई भाग प्रायः परती ही रह जाता है। सैकड़े १४½ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता। सैकड़े १९ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े १४ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत-जमीन के सैकड़े ३ भाग में दो फसल होती है।

यहाँ की मिट्टियाँ मुख्यतः चार प्रकार की हैं। पहले प्रकार की मिट्टी को कादा या चीटा मिट्टी कहते हैं। इसके भी तीन भेद हैं—गोबर-चीटा, दूधी-चीटा और धव-चीटा। गोबर-चीटा मिट्टी देखने में काली और बहुत कड़ी होती है। इसमें धान, तेलहन, बूट और रूई पैदा की जाती है। दूधी-चीटा मिट्टी का रंग उजला या लाल होता है और इसमें चूने का पत्थर मिला रहता है। इसमें कोई फसल पैदा नहीं होती। धव-चीटा को करना भी कहते हैं। यह दूधी-चीटा मिट्टी से मिलती-जुलती है। इससे चूना तैयार किया जाता है। दूसरे प्रकार की मिट्टी के दो भेद हैं—दोरस और पली। दोरस मिट्टी पहाड़ी के ऊपर और पहाड़ी के आसपास पायी जाती है। ऊँची भूमि से पानी में बहकर आयी हुई मिट्टी को पली कहते हैं। जिस मिट्टी में कादा का अंश ज्यादा और बालू का कम रहता है उसको पली-वाली और जिसमें बालू का अंश ज्यादा और कादा का कम रहता है उसको वाली-पली कहते हैं। यहाँ बलुआही मिट्टी को वाली कहा जाता है, जो अधिकतर नदी के गर्भ में वा नदी किनारे पायी जाती है। यही तीसरे प्रकार की मिट्टी है। चौथे प्रकार की मिट्टी आखिरी दर्जे की मिट्टी है जो खेती के लायक नहीं होती। रंग के हिसाब से इसके कई भेद हैं। जैसे—सादी माटी, काली माटी, लाल माटी, कंकर माटी, पत्थर माटी आदि।

स्थान के हिसाब से जमीन के कई भेद हैं। धान के खेत के तीन भेद बताये जाते हैं। सबसे नीची और अच्छी जमीन को, जिसमें सिंचाई का प्रबंध भी रहता है, बहाल जमीन कहते हैं। कुछ ऊँची जमीन को, जिसमे पानी अधिक नहीं जमता, कनाली कहते हैं। ऊँची जमीन को बाद जमीन कहते हैं। इसमें फसल होना बिलकुल वर्षा पर निर्भर करता है। इसमें अच्छी फसल नहीं होती। इस जिले में ऐसी जमीन बहुत है। ऊँची जमीन को साधारण तौर पर दाँग या टाँर कहते हैं। कभी-कभी इसको गोरा भी कहा जाता है। यह अक्सर चार या पाँच वर्ष में जोती-बोयी जाती है। घर के पास की जमीन को वास्तु, उदवास्तु या वास्तुवारी कहते हैं। स्वाभाविक तौर से खाद पड़ते रहने से यह बड़ी अच्छी जमीन होती है।

सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार इस जिले में उपजाऊ जमीन के सैकड़े ५३ भाग में अगहनी, ४८ भाग में भदई और ७ भाग में रब्बी की फसल होती है। अगहनी में मुख्यतः धान; भदई में मकई, मरुआ, कोदो, ज्वार आदि और रब्बी में अरहर, बूट आदि होते हैं।

सिंचाई—जिले की कुल जोत-जमीन के सैकड़े १४¾ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है। २,०१,०२३ एकड़ जमीन तालाब से, ६०८ एकड़ जमीन कुओं से और ६५१ एकड़ जमीन अन्य जरियों से सींची जाती है।

उद्योग-धन्धा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार मानभूम जिले में हजार आदमियों में ३६० आदमी काम करनेवाले और बाकी उनके आश्रित हैं। इनमें २३९ आदमी कृषि और पशु-पालन में, ४० आदमी खान में, १९ आदमी उद्योग-धन्धे में, १४ व्यापार में, ११ गमनागमन, जैसे रेल, सड़क, डाक आदि के काम में, ३ पंडा-पुरोहित, वकील-मुख्तार, डाक्टर-वैद्य आदि के पेशों में, १ शासन-कार्य में और ३३ विविध कार्यों में लगे हुए हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों में सैकड़े ६८ आदमी खेती करते हैं। भिन्न-भिन्न घरेलू उद्योग-धन्धे और व्यापार मुख्यतः भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में हैं। जिले के प्रधान उद्योग-धन्धों में कोयला और सोना निकालना, लोहा गलाना, लाह तैयार करना, तसर और सूती कपड़ा बिनना, पत्थर काटना इत्यादि हैं।

कोयला—हिन्दुस्तान के अन्दर सबसे अधिक कोयला मानभूम जिले मे पाया जाता है। यहाँ झरिया का कोयले का मैदान बहुत प्रसिद्ध है। इसकी प्रसिद्धि विदेशों में भी है। यों तो यहाँ कोयले का व्यवहार लोग थोड़ा-बहुत पहले से करते थे, लेकिन १७७४ ई० से यह काम विस्तृत रूप से होने लगा। उस साल छोटानागपुर के अँगरेज कलक्टर ने बंगाल के कोयले की खान का पता लगाया और कई साझीदार खड़ा करके गवर्नर-जेनरल वारेन हेस्टिंग्स की अनुमति से इसका कारबार करने लगा। इस जिले में पहले पहल चाँच और लूचीबाद में कोयले की खान खोदी गयी। यह खान रानीगंज मैदान के अन्दर पड़ती है। चाँच, लूचीबाद और दोमुरकोण्डा में १८५८ ई० में

४½ लाख मन कोयला निकाला गया था। १८९४ ई० में यहाँ रेलवे लाइन के खुलने पर इस कारबार की वृद्धि हुई। लाइन ज्यों-ज्यों फैलती गयी खानों की संख्या भी बढ़ती गयी। १८९४ ई० में झरिया की खानों से १,२८,६८६ टन कोयला निकाला गया था। १९०३ ई० में जिले के अन्दर झरिया के मैदान में १४१ खानें और रानीगंज के मैदान के उस भाग में जो मानभूम जिले में पड़ता है, २६ खानें थीं। झरिया की खानों से २७,४६,००० टन कोयला निकला था, और रानीगंज मैदान की खानों से २,४६,००० टन। और, १९०८ ई० में मानभूम जिले के अन्दर कुल २८१ खानें थीं, जिनमें २२२ झरिया के मैदान में और ५९ रानीगंज के मैदान में। इन खानों से ७०,६२,००० टन कोयला निकाला गया था और इस काम में ७२,००० आदमी लगे हुए थे। भारत के कुल निकले हुए कोयले में यहाँ के कोयले का भाग आधे से भी अधिक था।

फैक्टरियाँ—पास के बर्दवान जिले में कोयले के मैदान के आसपास जितनी फैक्टरियाँ हैं उतनी यहाँ नहीं हैं। बराकर का आयरन एण्ड स्टील वर्क्स (लोहा और इस्पात का कारबार) जिले की सीमा के पास ही है। इसे कच्चा लोहा और कोयला वगैरह मुख्यतः इसी जिले से मिलते हैं। इस कारखाने में यहाँ के कुली भी बहुत बड़ी संख्या में काम करते हैं। मानभूम जिले के अन्दर सन् १९३६ ई० में ४५ फैक्टरियाँ थीं जिनमें फैक्टरी ऐक्ट लागू था। इन फैक्टरियों में ८ लाह की, ८ इंजीनियरिंग की, ७ रेलवे की, ६ ईंट और टाइल आदि की, ५ चावल, आटा दाल और तेल आदि की, ४ बिजली की, १·१ लोहा और सिमेन्ट तथा ५ दूसरी-दूसरी चीजों की फैक्टरियाँ थीं।

लाह— जिले के अन्दर कोयले के बाद लाह का कारबार

मुख्य है। सन् १९०९ में इस जिले से २,००,३११ मन लाह बाहर भेजी गयी थी जिसकी कीमत थी ४०.५० लाख रुपया। पेड़ पर लाह के कीड़े पालनेवाले व्यक्तियों की संख्या बताना कठिन है, क्योंकि जिले के अधिकांश भाग में छोटे-छोटे गृहस्थ भी कुछ न कुछ पेड़ों पर कीड़े पालते हैं। १९०८ ई० में जिले के अन्दर लाह तैयार करने की ११८ फैक्टरियाँ थीं जिनमें करीब ६,००० आदमी काम करते थे। फैक्टरियाँ अधिकतर झालदा, पुरुलिया, बलरामपुर, चँदिल, चास, मानबाजार, तुलिन और गोविन्दपुर में हैं। लाह के कीड़े पलास, कुसुम, बैर आदि के पेड़ पर पाले जाते हैं। इसकी दो फसल होती है, एक वैशाख में और दूसरी कातिक में। इनमें वैशाख की फसल मुख्य है। लाह अधिकतर कलकत्ता भेज दी जाती है।

रेशम और तसर—रेशमी और तसर का कपड़ा तैयार करना यहाँ का पुराना व्यवसाय है। रघुनाथपुर, सिंघबाजार और नयागढ़ इसके मुख्य केन्द्र रहे हैं। सन् १९०८ ई० में यहाँ ६५ करघे चलते थे और उस साल २० हजार गज रेशमी और तसर के कपड़े तैयार हुए थे। पहले रेशमी या तसर के कोए जंगलों में स्वाभाविक रूप से पाये जाते थे। जंगलों के कट जाने से अब ये नहीं मिलते। अब कीड़े पालकर कोए तैयार किये जाते हैं या दूर के जंगलों से लाये जाते हैं। यहाँ के कपड़े कलकत्ता, बर्दवान आदि स्थानों में भेजे जाते हैं। पुरुलिया और मानबाजार के बीच केंदा नामक स्थान में रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। कीड़े साधारणतः आसन, सिंध और धौ नामक पेड़ों पर पलते हैं जिनसे तसर तैयार होता है। रेशम के लिये कीड़े तूत के पेड़ पर पाले जाते हैं।

सूती कपड़ा— बाहर से कपड़े आने लगने पर यहाँ सूती

कपड़े अब बहुत कम तैयार होते हैं । यहाँ के बने कपड़े मोटे और मजबूत होते हैं, इसलिये खासकर, आदिम जाति के लोग इसे अधिक पसन्द करते हैं। ये लोग कुछ रूई भी उपजाते हैं, पर अब रूई अधिकतर बाहर से आने लगी है।

लोहे का सामान—ग्रामीण लोगों के काम के लिये जिले के अन्दर हर जगह पुराने ढंग पर लोहे की छोटी-छोटी चीजें बनती हैं । झालदा और तनासी में बन्दूक, गुप्ती, छड़ी आदि चीजें तैयार होती हैं । पहले यहाँ यह कारबार उन्नतावस्था में था। कहते हैं कि १८५७ के तथा दूसरे विद्रोहों के अवसर पर लोग हथियार यहीं से खरीद ले जाते थे। यहाँ की बनी बन्दूक करीब-करीब मुँगेर की बन्दूक के मुकाबले में होती थी । अब इस कारबार की बहुत बुरी हालत है । कुछ जगहों में लोहा गलाने का काम होता है। इस काम को अधिकतर कोल लोग करते हैं।

पत्थर काटना— पत्थर काटने और उसपर खोदाई करने का काम यहाँ पहले बहुत होता था । इस कला का नमूना अब भी यहाँ के पुराने मंदिरों में मिलता है । दालमी तथा जिले के दक्षिण में एक-दो जगहों में इस समय भी यह काम चल रहा है। यहाँ पत्थर की तस्तरी, कटोरो, मूर्त्तियाँ वगैरह बनती हैं। पाटकुम और चंडिल आदि स्थानों में काला पत्थर मिलता है।

सोना, ताम्बा, सीसा—इस जिले के दक्षिणी पहाड़ में जहाँ-तहाँ कुछ सोना पाया जाता है। पाटकुम में बड़े पैमाने पर सोना निकालने का काम शुरू किया गया था । ऐसी चेष्टा मानभूम परगने के दक्षिण में भी हुई थी, पर लाभ न देखकर तुरत ही काम बन्द कर देना पड़ा था । अब भी कुछ लोग नदियों के बालू से सोना निकालने का काम करते हैं । अगर संयोग लगा तो दिन भर की मेहनत से चार-पाँच आने का सोना निकलता

है । पुरुलिया से ३० मील दक्षिण पुद्रागाँव में और ३२ मील पच्छिम कल्याणपुर गाँव में ताँबा पाया जाता है । जिले के दक्षिण-पच्छिम कोने मे धधका से दो मील की दूरी पर टेकिया गाँव में सीसा मिलता है।

चूना— पंचकोट पहाड़ और गौरांगडीह आदि स्थानों में तथा दामोदर नदी के किनारे चूने का पत्थर पाया जाता है। पुरुलिया में पहले चूने का एक बड़ा कारखाना था।

व्यापार— इस जिले से सबसे अधिक कोयला बाहर जाता है। उसके बाद लाह का स्थान है । ये दोनों चीजें बहुत बड़े परिमाण में बाहर भेजी जाती हैं। करीब करोड़-डेढ़ करोड़ रुपये का कोयला, ४०-५० लाख रुपये की लाह और दो-चार लाख रुपये के अन्न यहाँ से बाहर जाते हैं ! बाहर से आयी हुई चीजों में अनाज, चीनी, नमक, कपड़ा, किरासन तेल, तम्बाकू और आधुनिक सभ्यता की छोटी-बडी चीजें मुख्य हैं । जिले के अन्दर पुरुलिया, झालदा, रघुनाथपुर, धनबाद, झरिया, कतरास, चिरकुंडा, बलरामपुर, चंडिल, मानबाजार, बड़ा बाजार, बागदा, हुंडा, चास और गौरांगडीह व्यापार के मुख्य केन्द्र हैं।

आने-जाने के मार्ग

सड़क— १८५४ ई० में जिले के अन्दर केवल एक पक्की सड़क थी ग्रैण्ड-ट्रंक-रोड, जो बराकर ब्रिज के पास जिले में प्रवेश कर पारसनाथ पर्वत के पास तक ४३ मील की दूरी तय करती है । राँची जिले की सीमा के पास सीली से लेकर एक सड़क पुरुलिया होकर बाँकुरा गयी थी । पुरुलिया से एक सड़क रघुनाथपर होकर रानीगंज को जाती थी जहाँ ईस्ट इण्डियन रेलवे

शिक्षा

सन् १८५५ में इस जिले में केवल एक अँगरेजी स्कूल था, क्योंकि शिक्षा पर अँगरेजी सरकार ने प्रारम्भ में ध्यान नहीं दिया था। सन् १८७०-७१ में सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल २३ हुए जिनमें ६६० लड़के पढ़ते थे। दूसरे साल जब सब जगह स्कूलों को सरकारी सहायता देने की जार्ज कैम्प-बेल की योजना लागू हुई तो स्कूलों की संख्या कुछ और बढ़ी। सन् १८७२-७३ में आकर स्कूलों की संख्या १८२ और उनमें पढ़नेवाले छात्रों की संख्या ५,२७१ हुई। यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ती ही गयी। सन् १६०८-०६ में कुल ७६८ स्कूल हुए जिनमें २६,६२४ छात्र पढ़ते थे।

सन् १६०८-०९ में इस जिले के अन्दर ६७६ प्राइमरी स्कूल थे, जिनमें २२,२८५ लड़के-लड़कियाँ शिक्षा पा रही थीं। सन् १६३५-३६ में आकर प्राइमरी स्कूलों की सख्या १,१०६ हो गयी है। इनमें ७१ स्कूलों में सरकारी सहायता नहीं मिलती है। इन स्कूलों में कुल ४४,६४८ लड़के-लड़कियाँ पढ़ती हैं। इन स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशालाएँ, उर्दू प्राइमरी मकतब और कन्या-पाठशालाएँ भी शामिल हैं।

सन् १६०८-०६ में यहाँ मिड्ल स्कूलों की संख्या १६ थी जिनमें १२ मिड्ल इङ्गलिश स्कूल और ७ मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल थे। लेकिन, १९३७-३८ में आकर यहाँ मिड्ल इंगलिश स्कूलों की संख्या ३६ और मिड्ल वर्नाकुलर स्कूलों की संख्या १ हो गयी है।

सन् १६०८-०९ में यहाँ पुरुलिया में दो हाई स्कूल तथा चिर-कुंडा, रघुनाथपुर, झरिया और पंड्रा में एक-एक हाई स्कूल थे। इस समय तक धनबाद में दो हाई स्कूल तथा कतरासगढ़, आद्रा

और गदीबेरो में एक-एक स्कूल खुले हैं। इस तरह यहाँ ११ हाई स्कूल हो गये हैं।

यहाँ कोई कालेज नहीं है। कालेज की शिक्षा पाने के लिये लड़के हजारीबाग, पटना या बंगाल जाते हैं।

सन् ११०८-०९ में यहाँ लड़कियों के लिये ४ अपर प्राइमरी और २५ लाअर प्राइमरी स्कूल थे जिनमें ८४७ लड़कियाँ पढ़ती थीं। इनके अलावे १,१५० लड़कियाँ लड़कों के स्कूल में थीं।

सन् १९३५-३६ में पढ़नेवाली लड़कियों की संख्या ६,३५३ हो गयी था। इस समय यहाँ लड़कियों के लिये तीन मिड्ल इंगलिश स्कूल हो गये हैं जो पुरुलिया, धनबाद और आद्रा में है।

इस जिले में कई औद्योगिक स्कूल चल रहे हैं। झालदा और तनासो में लोहे की चीजें बनाना सिखाने के लिये स्कूल हैं। किरकेन्द में खान का काम सिखाया जाता है। पोखुरिया में ईसाई मिशन की ओर से कपड़ा बिनना सिखाने के लिये स्कूल है। मिशन ने स्त्रियों को लेस बनाना सिखाने के लिये भी स्कूल खाला है। पुरुलिया के कुष्टाश्रम में भी औद्योगिक विभाग हैं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार मानभूम जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ७७,४६६ है और पढ़ी-लिखो स्त्रियाँ ७,०७६ हैं। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष १२,३३० और स्त्रियाँ १,२१९ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लागों की संख्या सैकड़े ४.६६ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर ५७,६८८ हिन्दुस्तानी लड़के-लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जा कुल भारतीय जनसंख्या के सैकड़े ३ हैं।

शासन-प्रबन्ध

मानभूम छोटानागपुर कमिश्नरी का एक जिला है। कमिश्नरी के अन्य जिलों की तरह यह जिला भी ननरेगुलेयूटेड या सेड्यूल्ड डिस्ट्रिक्ट समझा जाता है। यहाँ कुछ मामलों में साधारण कानून लागू नहीं किये जाते, बल्कि विशेष कानून लागू किये जाते हैं। यहाँ का जिला-अफसर कलक्टर मजिस्ट्रेट नहीं कहलाकर डिपटी कमिश्नर कहलाता है। इसे फौजदारी-दण्ड-विधान की ३० वीं धारा के मुताबिक कुछ विशेष अधिकार रहता है। यह लगान के मामलों पर भी विचार करता है। यह जिला धनबाद और सदर, इन दो सबडिविजनों में बँटा है। जिले का सदर दफ्तर पुरुलिया में है। यहाँ शासन-कार्य में डिपटी कमिश्नर का सहायता के लिये कई डिपटी और सबडिपटी कलक्टर रहते हैं। सबडिविजनों का शासन सबडिविजनल अफसरों द्वारा होता है, जिनकी सहायता के लिये सबडिपटी कलक्टर और मुन्सिफ रहते हैं।

न्याय—फौजदारी मामला देखने का काम डिपटी कमिश्नर का रहता है। उसकी सहायता के लिये कई डिपटी या सब-डिपटी मजिस्ट्रेट होते हैं। मजिस्ट्रेट पहले, दूसरे और तीसरे, इन तीन दरजों के होते हैं। सबडिविजन के लिये सबडिविजनल अफसर और डिपटी या सबडिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं। छोटानागपुर का जुडिशियल कमिश्नर सन् १९१० के मार्च तक यहाँ का डिस्ट्रिक्ट और शेसन जज था। इसके बाद मानभूम, सिंहभूम और सम्बलपुर के लिये एक अलग जज नियुक्त हुआ, जिसका सदर आफिस पुरुलिया में ही रहा। जिले में एक ही व्यक्ति सेशन जज की हैसियत से फौजदारी मामले को

सुनता है और डिस्ट्रिक्ट जज की हैसियत से दीवानी मामले को। दीवानी मामलों को सुनने के लिये मुन्सिफ भी रहते हैं। मुन्सिफ पुरुलिया और धनबाद के अलावे रघुनाथपुर में भी हैं। १८७६ ई० तक मान बाजार में भी मुन्सिफ की कचहरी थी, उस साल वह उठकर बड़ा बाजार आयी। १८९८ ई० में वहाँ से भी वह उठा दी गयी। इस समय पुरुलिया, झालदा, रघुनाथपुर और आद्रा में आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये जिला ३१ थानों में बँटा है। सदर सबडिविजन में २१ और धनबाद में १० थाने हैं। जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। इसके अधीन डिपटी या असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं। थाने का अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जो दारोगा भी कहलाता है। दारोगा के नीचे थाने में हवलदार और कानिस्टबिल रहते हैं। गाँवों के अन्दर रात में पहरा देने तथा चोरी-डकैती और जन्म-मरण आदि की रिपोर्ट थाने में पहुँचाने के लिये चौकीदार होते हैं। घाटों अर्थात् रास्तों की रक्षा के लिये घटवाल रहते हैं, जो पुलिस में ही शामिल हैं। जब जमींदारों के हाथों में पुलिस का प्रबन्ध था, उस समय से ही डाकुओं और लुटेरों से मुसाफिरों की रक्षा के लिये घटवाल रखने की प्रथा है। घटवालों के कई दरजे होते हैं जो तरफ सरदार, सदियाल, सरदार, तावेदार, दिगवार और नायब दिगवार कहलाते हैं। इनको मेहनताना प्रायः जमीन के रूप में मिलता है। इस जिले के अन्दर सन् १९३६ ई० में २ सुपरिन्टेन्डेन्ट, कई असिस्टेन्ट और डिपटी सुपरिन्टेन्डेन्ट, ७ इन्सपेक्टर, ६७ सब-इन्सपेक्टर, ५७ असिस्टेन्ट सब-

इन्सपेक्टर, २ सरजेन्ट मेजर, १ सरजेन्ट, ३४ हवलदार, ६४६ कानिस्टबिल और ४,२८६ चौकीदार थे।

जेल—पुरुलिया में जिला-जेल और धनबाद में छोटा जेल है। जिला-जेल में २८१ और धनबाद जेल में ४७ कैदियों के रहने की जगह है। जिला-जेल में १६२ कैदियों के रहने की जगह फिर बनी है।

रजिस्ट्री आफिस—जिले के अन्दर सन् १९३६ की रिपोर्ट के अनुसार पुरुलिया, धनबाद, रघुनाथपुर, झालदा और बलरामपुर में रजिस्ट्री आफिस हैं।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड—इस जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड सन् १९०० ई० में कायम हुआ था। यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ३४ मेम्बर होते हैं, जिनमें २६ चुने हुए, ५ नामजद किये और ३ पद की हैसियत से मेम्बर होते हैं। बोर्ड का सालाना आमद-खर्च करीब ८ लाख रुपया है। बोर्ड के चेअरमैन निर्वाचित गैर सरकारी अफसर होते हैं। गाँवों के अन्दर सड़क, पुल, डाकबँगला वगैरह बनवाना, प्राइमरी और मिड्ल स्कूलों का इन्तजाम करना, तालाब, कुँआ वगैरह खुदवाना, घाट, अस्पताल, फाटक आदि का प्रबन्ध करना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काम है। सबडिविजनों में लोकल बोर्ड हैं जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन उसके छोटे-मोटे काम करते हैं। पुरुलिया लोकल बोर्ड के १३ चुने हुए और ३ नामजद किये तथा धनबाद लोकल बोर्ड के १३ चुने हुए और ३ नामजद किये मेम्बर होते हैं। बोर्ड के अधीन बलरामपुर और चास में यूनियन कमिटियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटियाँ—गाँवों के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के जो काम हैं वही शहरों के अन्दर म्युनिसिपैलिटियों के हैं। इस

जिले में पुरुलिया, झालदा, रघुनाथपुर और धनबाद में म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। पहली म्युनिसिपैलिटी १८७६ ई० में, दूसरी, तीसरी १८८८ ई० में और चौथी १९१९ ई० में कायम हुई थी। चारों के मेम्बरों की संख्या क्रम से २०, १०, १५ और २० हैं।

पुरुलिया (सदर) सबडिविजन

जिले का तीन चौथाई से भी अधिक भाग सदर सबडिविजन के अन्दर है, जो जिले का दक्षिणी भाग है। यह २२°४३' और २३°४४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°४९' और ८६°५४' पूर्वीय देशान्तर के बीच पड़ता है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल ३, ३०८ वर्गमील और जनसंख्या १२,८९,७९८ है। इसमें पुरुलिया, झालदा और रघुनाथपुर, ये तीन शहर, और ३,२५५ गाँव हैं। इस सबडिविजन में पुरुलिया, बलरामपुर, हूरा, अरसा, पंचा, झालदा, जयपुर, बाघमुंडो, चंडिल, ईचागढ़, वराहभूम, पतामदा, बंदुआन, मान बाजार, रघुनाथपुर, सन्तूरी, निठुरिया, काशीपुर, पारा, चास और चन्दन क्यारी, ये २१ थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं।

पुरुलिया—जिले का प्रधान शहर पुरुलिया २३°२०' उत्तरीय अक्षांश और ८६°२२' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ १८३८ ई० से जिले का सदर आफिस है। म्युनिसिपैलिटी १८६९ ई० में कायम हुई थी। यहाँ बी० एन० आर० का स्टेशन है। यहाँ से एक छोटी लाइन राँची गयी है। यहाँ से कई सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। रेलवे लाइन बनने के पहले बंगाल के लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिये यहीं आते थे। यहाँ साहब बाँध नाम का एक बड़ा जलाशय है। यहाँ दो हाई स्कूल और दो

कुष्टाश्रम चल रहे हैं। बड़ा कुष्टाश्रम ईसाई लोगों का है। यहाँ तेल की कई मिल और लाह की कई फैक्टरियाँ हैं। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या २५,९७४ है, जिसमें २२,१२८ हिन्दू, २,९६४ मुसलमान, ८७९ ईसाई और ३ आदिम जाति के लोग हैं।

पुरुलिया थाने के अन्दर १,२०,२०३ आदमी रहते हैं। इनमें १,०८,८४५ हिन्दू, ९,०६२ मुसलमान, १,८४० ईसाई और ४५६ आदिम जाति के लोग हैं।

अरसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४८,७८८ आदमी रहते हैं। इनमें ४५,२७८ हिन्दू, २,२१८ मुसलमान, १,२०८ आदिम जाति और ८४ ईसाई हैं।

आद्रा—यहाँ बंगाल-नागपुर रेलवे का बड़ा जंकशन है। यहाँ इस रेलवे का एक कारखाना और इसके अफसरों के रहने की कोठियाँ हैं।

ईचागढ़—ईचागढ़ में पातकुम राज्य के राजा रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने की जनसंख्या ४४,५०५ है, जिसमें ४२,९४७ हिन्दू, १,२९७ मुसलमान, १४५ ईसाई, ५४ आदिम जाति और ६२ अन्य जाति के लोग हैं।

काशीपुर—यहाँ पंचेट (पंचकोट) के जमींदार रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने का रेवेन्यू थाना गोरांडी है। काशीपुर थाने में ६३,४४१ आदमी रहते हैं, जिनमें ४८,८७१ हिन्दू, १३,०४३ आदिम जाति, १,४८६ मुसलमान और ४१ ईसाई हैं।

केशरगढ़—यह कसाई नदी के किनारे है। यहाँ पहले पंचकोट राज्य की राजधानी थी। यहाँ कई पुराने मन्दिर हैं। यह लाह और हर्रे के लिये प्रसिद्ध है।

गोलमारा—पुरुलिया से ८ मील उत्तर गोलमारा नामक स्थान में कुछ प्राचीन मूर्त्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक बड़ी मूर्त्ति जैन मूर्त्ति है। यह यहाँ से हटाकर पटना म्यूजियम में रखी गयी है।

चंडिल—जिले के दक्षिण इस स्थान पर बी० एन० आर० का जंकशन है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने में ७८,६१० आदमी रहते हैं, जिनमें ६४,६६५ हिन्दू, १३,०६२ आदिम जाति, ७८४ मुसलमान और ३९ ईसाई हैं।

चन्दनक्यारी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६१,६२६ है, जिसमें ५७,०६८ हिन्दू, ३,८१२ मुसलमान, ८४२ आदिम जाति और २०४ ईसाई हैं।

चर्रा—पुरुलिया से ४ मील उत्तर-पूरब इस गाँव में कई पुराने पत्थर के मन्दिर हैं। इनमें हिन्दू-मन्दिर के अलावे बौद्ध और जैन मन्दिर भी हैं। यहाँ बौद्ध और जैन मूर्त्तियाँ भी मिलती हैं।

चाकलतर—पुरुलिया से ७ मील दक्षिण इस गाँव में पहले पचकोट राज्य की राजधानी थी। इस राजवंश के कुछ लोग अब भी यहाँ रहते हैं। पुराने महल और मन्दिर के भग्नावशेष इस समय भी देखने में आते हैं। यहाँ भादो पूर्णिमा के अवसर पर ७ दिन तक एक बड़ा मेला लगता है।

चास—यह स्थान व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है। इस थाने में ७२,५५२ आदमी रहते हैं, जिनमें ६६,६९७ हिन्दू, ५,८२२ मुसलमान और ३३ ईसाई हैं।

जयपुर—यहाँ थाना आफिस और रेलवे स्टेशन है। इस थाने की जन-संख्या ९७,०९७ है, जिसमें ९२,८६८ हिन्दू, ३,९२५ मुसलमान, २८८ ईसाई और १६ आदिम जाति के लोग हैं।

झालदा—जिले की पच्छिमी सीमा के पास राँची जानेवली रेलवे लाइन पर यह एक शहर है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ६,६२४ है। यहाँ १८८८ ई० में म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। यहाँ लाह की बहुत-सी फैक्टरियाँ हैं। बन्दूक, तलवार वगैरह चीजें भी यहाँ बनती हैं। यहाँ कई औद्योगिक स्कूल हैं। झालदा में एक पुराने ज़मींदार का निवासस्थान है। कहते हैं कि पंचकोट राज्य की सबसे पुरानी राजधानी यहीं थी। झालदा थाने की जनसंख्या ३३,२७२ है, जिसमें ३०,९९२ हिन्दू, २,२७१ मुसलमान और ९ ईसाई हैं।

तेलकुप्पी—यह स्थान दामोदर नदी के दक्षिण चेलियामा परगने के अन्दर है। यहाँ बहुत-से टूटे-फूटे पुराने मंदिर और बहुत-से पत्थर या ईंट के टील्हे हैं जो मंदिरों के टूटने से बने हुए मालूम पड़ते हैं। प्रायः सभी हिन्दू मंदिर हैं। इनमें सबसे पुराना १० वीं सदी का मालूम पड़ता है। कहते हैं कि राजा मानसिंह ने यहाँ के कुछ मंदिरों की मरम्मत करायी थी। दन्तकथा है कि राजा विक्रमादित्य जब यहाँ आये थे, तो यहीं तेल लगाकर दालमी के पोखर में स्नान किया करते थे जिससे इस स्थान का नाम तेलकुप्पी पड़ा। यहाँ चैत और पूस में मेला लगता है।

दालमा—जिले के अन्दर सबसे ऊँचा पहाड़ दालमा है। इसकी ऊँचाई समुद्रतल से ३,४०७ फीट है।

दालमी या दियापुर दालमी—सुवर्णरेखा नदी के उत्तर किनारे पर इस स्थान में पुराने जमाने में एक बड़ा नगर बसा हुआ था। कई मीलों तक मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष मालूम पड़ते हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ भी मिली हैं। यहाँ के
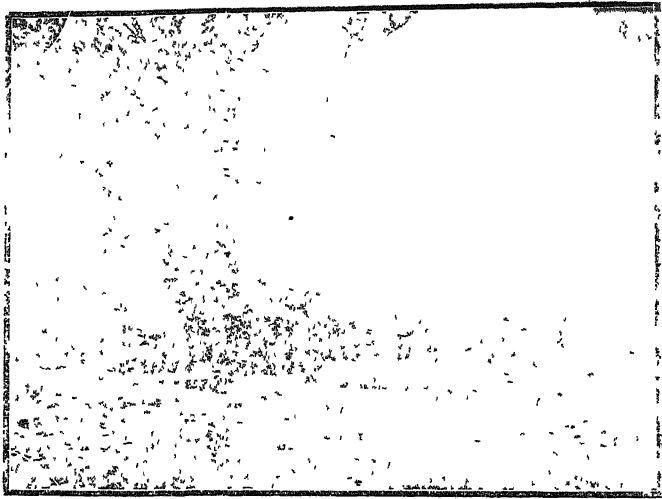
तेलकुप्पी के मंदिर का भग्नावशेष (मानभूम)

दालमी के मंदिर का भग्नावशेष (मानभूम)
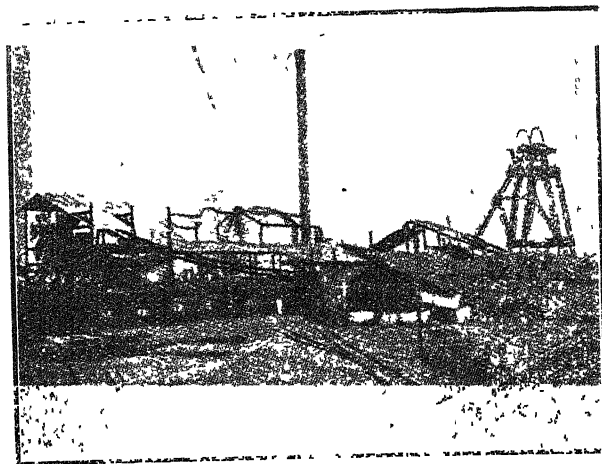
कोयले की खान का ऊपरी दृश्य, झरिया (मानभूम)
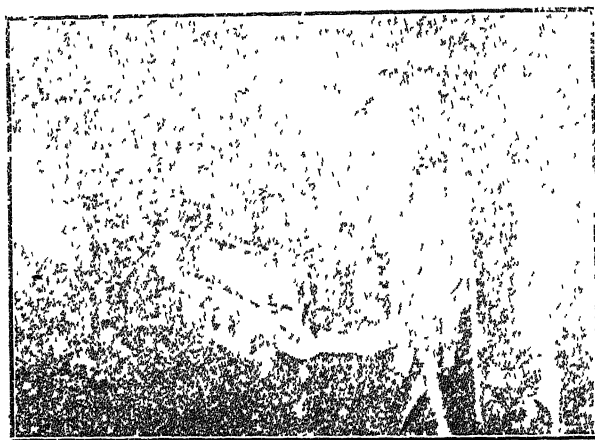
खान के अन्दर कोयला काटने की मशीन, झरिया

मंदिरों और मूर्त्तियों में कुछ तो बौद्धों और जैनों की और कुछ ब्राह्मण धर्मावलम्बी हिन्दुओं की जान पड़ती हैं।

यहाँ आदित्य देव की मूर्त्ति पर एक लेख है जो दसवीं सदी का जान पड़ता है। मि० बेगलर का कहना है कि यहाँ ९ वीं और १० वीं शताब्दी में जैनियों की प्रधानता थी। इसके बाद ११ वीं सदी में हिन्दू धर्मावलम्बियों की प्रधानता रही। यहाँ एक किले का भग्नावशेष है जो विक्रमादित्य का किला कहा जाता है। यहाँ एक पोखर है जिसका नाम छाता-पोखर है। यहाँ दो स्तम्भों पर छाते के आकार का पत्थर है, जिससे इसका नाम छाता पोखर पड़ा। कहते हैं कि इसके नीचे राजा विक्रमादित्य स्नान करके पूजा किया करते थे। यहाँ भूमिजों के बहुत-से पुराने समाधि-स्थान हैं। दालमी से ६ मील की दूरी पर पाटकुम के वर्तमान जमींदार अपने को विक्रमादित्य के वंशज बताते हैं। इस समय दालमी में पत्थर के बर्तन बनने के कारण इस स्थान की प्रसिद्धि है।

दालमी से कुछ मील उत्तर-पच्छिम सफारन नामक स्थान है। बेगलर का कहना है कि ह्वनच्वाङ् द्वारा वर्णित किरण सुफालाना स्थान यही है जहाँ बंगाल के राजा शशांक की राजधानी थी। सफारन में बहुत-से टील्हे हैं। इसके पास देवली और सुइसा में जैनियों की बहुत-सी पुरानी चीजें मिलती हैं। सुइसा में भूमिजों का एक बहुत बड़ा समाधि-स्थान भी है।

निठुरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४०,०५४ आदमी रहते हैं, जिनमें ३५,१६१ हिन्दू, २,६०८ आदिम जाति, २,०७४ मुसलमान, ११८ ईसाई और ६३ अन्य जाति के लोग हैं।

पंचा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की

जनसंख्या ४६,७७६ है। यहाँ ४५,२३३ हिन्दू, १,४२५ मुसलमान और ११८ आदिम जाति के लोग हैं।

पंचेट या पंचकोट—यह एक पहाड़ी है जो ३ मील लम्बी और समुद्रतल से १६०० फीट ऊँची है। यहाँ एक पुराना किला है जहाँ पहले पंचेट के राजा रहते थे। पंचेट शब्द पंचकोट से बिगड़कर बना है, जिसका अर्थ है पाँच कोट (घेरा) वाला किला। किले के हरेक घेरे के बाद खाई थी जो पहाड़ी जल से भरी रहती थी। इसके चिह्न अब भी देखने में आते हैं। किले के कई द्वार थे जिनमें चार के चिह्न अब भी देखने में आते हैं। इनके अलग-अलग नाम हैं, जैसे आँख द्वार, बाजार महल द्वार या देश बाँध द्वार, खोरीबारी द्वार और द्वार बाँध। द्वार बाँध सबसे अच्छी हालत में है। ये द्वार मुसलमानी ढंग पर बने थे और सब लगभग एक ही से थे। ये द्वार लोगों के आने-जाने तथा पानी बहने के लिये थे।

किला बहुत बड़ा है, इसके आखिरी घेरावे की लम्बाई ५ मील है। लेकिन, लोग कहते हैं कि असल में आखिरी घेरावा इससे भी बड़ा था और वह पहाड़ी को छोड़कर १२ वर्गमील के रकबे को घेरता था। किले के अन्दर बहुत-से खँड़हर हैं जो राजा का महल, रनिवास तथा दूसरे भवनों के चिह्न बताये जाते हैं। एक-दो मंदिर के भग्नावशेष अच्छी हालत में हैं। लेकिन, सभी मुसलमानी काल के बाद के मालूम पड़ते हैं। पहाड़ी के पास कुछ पुराने मंदिर हैं जिनमें सबसे बड़े को रघुवर मंदिर कहते हैं। राजा रघुवर वर्तमान जमींदार के आठ पीढ़ी पहले हुए बताये जाते हैं। ये करीब १५६० ई० से १६२६ ई० तक शासन करते रहे।

किले का समय इसके दो द्वार—द्वार बाँध और खोरिबारी के लेख से निश्चित किया जाता है। इन द्वारों पर बँगला लिपि में

श्री वीर हमीर का उल्लेख है और उसमें सम्वत् १६५७ या १६५६ लिखा है। यह वीर हमीर बिसुनपुर राज का राजा समझा जाता है। इसने १५६० ई० में मानसिंह के उड़ीसा पर चढ़ाई करते समय उसकी बड़ी मदद की थी। यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि इस किले को वीर हमीर ने बनवाया था और पीछे पंचेट के राजा ने ले लिया। सम्भव है, पंचेट राजा ने ही वीर हमीर या मुसलमानों से रक्षा के लिये इसे बनवाया हो। यह किला क्यों छोड़ दिया गया, इसका ठीक पता नहीं चलता। भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न तरह की बात बताते हैं। पंचेट के बाद इस राज्य की राजधानी क्रम से चाकलतर, केशरगढ़ और काशीपुर को गयी। वर्तमान राजा के पारिवारिक इतिहास के अनुसार इस राज्य के पहले राजा दामोदर शेखर-सिंह देव हुए जो ८० ई० में उज्जैन के बारहवें महाराज थे। कहते हैं, वर्तमान राजा उनके ६७ वीं पीढ़ी के हैं।

पतामदा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ ६०,१२८ आदमी रहते हैं। इनमें ५८,६०१ हिन्दू, ७५६ मुसलमान, ४६७ आदिम जाति और ४ ईसाई हैं।

पवनपुर—यह स्थान वराभूम परगने में है। यहाँ बहुत-से पुराने मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष हैं जो बढ़कर भूला गाँव तक चले गये हैं। भूला गाँव में भूमिजों का एक बड़ा समाधि-स्थान भी है। कुछ लोग पवनपुर के भग्नावशेष का सम्बन्ध पाटकुम राजा के पूर्वज विक्रमादित्य से भी बताते हैं। दालमी और तेलकुप्पी के भग्नावशेषों से भी इस विक्रमादित्य का संबन्ध बताया जाता है। यहाँ दो फीट का एक छोटा मंदिर मिला है जिसके चारों ओर तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ हैं। मालूम पड़ता है कि दालमी तथा अन्य स्थानों की भाँति यहाँ पहले जैनियों और

तक फैला हुआ था तथा इसके अन्दर वराभूम, सामन्तभूम (बाँकुड़ा में चातन थाना) और मानभूम सम्मिलित थे। वराहभूम थाने की जनसंख्या ६६,४७६ है, जिसमें ६३,२२५ हिन्दू, २,९७५ मुसलमान, २७० आदिम जाति और ६ ईसाई हैं।

वराहभूम—दे० बड़ा बाजार।

बलरामपुर—यह स्थान पुरुलिया से ३ मील दक्षिण-पूरब कसाई नदी के किनारे है। यहाँ पुराने मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४९,७०६ है, जिसमें ४७,३५० हिन्दू, २,०९९ मुसलमान, २३७ आदिम जाति और २० ईसाई हैं।

बाघमुंडी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ४७,३४४ आदमी रहते हैं, जिनमें ४५,८१२ हिन्दू, १,२९६ मुसलमान और २३६ ईसाई हैं।

बुधपुर—यह स्थान मानबाजार से ४ मील उत्तर कसाई नदी के उत्तरी किनारे पर है। यहाँ बहुत-से पुराने मंदिर हैं, जिनमें सबसे बड़ा अब भी अच्छी हालत में है। यहाँ बहुत-सी बौद्ध और जैन मूर्त्तियाँ भी पायी गयी थीं।

बोरम—राँची लाइन के जयपुर स्टेशन से यह स्थान ४ मील दक्षिण कसाई नदी के किनारे है। यहाँ बहुत-से टूटे-फूटे पुराने मंदिर और मूर्त्तियाँ हैं।

मान बाजार—जिले की पूर्वी सीमा के पास यह स्थान पुरुलिया से २८ मील की दूरी पर है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार का निवास-स्थान है जिन्हें लोग मानभूम का राजा कहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि इसी स्थान के नाम पर जिले का नाम पड़ा। १८३३ से १८३८ ई० तक इस जिले का

(उस समय जंगल महाल-जिला का) सदर आफिस यहीं था। मुन्सिफ की कचहरी यहाँ १८७९ ई० तक रही। इस समय यहाँ थाना-आफिस है। इस थाने की जनसंख्या १,०६,५६० है, जिसमें १,०७,३४६ हिन्दू, २,२२७ मुसलमान, ११ ईसाई और ६ आदिम जाति के लोग हैं।

रघुनाथपुर—यह एक छोटा शहर है जो आद्रा से ३½ मील की दूरी पर है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ७,१३६ है। यहाँ १८८८ ई० में म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। यहाँ मुन्सिफ और आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरियाँ हैं। यहाँ रेशमी और सूती कपड़ा तैयार होता है। रघुनाथपुर थाने की जनसंख्या ८३,३५४ है, जिसमें ७६,५७८ हिन्दू, ४,५२९ मुसलमान, १,३३६ ईसाई और ६११ आदिम जाति के लोग हैं।

सन्तूरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में २८,६७२ आदमी रहते हैं। इनमें १७,४१७ हिन्दू, १०,२३५ आदिम जाति, ६७८ मुसलमान और ४२ ईसाई हैं।

हूरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४७,६६० है। यहाँ ४६,०१५ हिन्दू, १,७९९ मुसलमान, १४५ आदिम जाति और १ ईसाई हैं।

धनबाद सबडिविजन

धनबाद सबडिविजन जिले का उत्तरी भाग है। यह सदर सबडिविजन की एक चौथाई से भी छोटा है। यह २३°३८' और २४°४' उत्तरी अक्षांश तथा ८६°७' और ८६°५०' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। १६०८ ई० की जुलाई तक यह गोविन्दपुर

सबडिविजन कहलाता था, क्योंकि इसका सदर आफिस पहले गोविन्दपुर में था। १८४६ ई० के पहले कुछ दिनों तक सबडिविजन का सदर आफिस ग्रैंड-ट्रंक-रोड पर बागसुमा गाँव में था। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल ७८७ वर्ग मील और जनसंख्या ५,२१,०९२ है। इसमें एक शहर धनबाद और १,३८७ गाँव हैं। इस सबडिविजन में धनबाद, झरिया, केंदुआडीह, गोविन्दपुर, तोपचाँची, बाघमारा, कतरास, निरसा, चिरकुंडा और तुंडी, ये १० थाने हैं। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं :—

धनबाद—सन् १९०८ से यह स्थान इस नाम के सबडिविजन का सदर आफिस हुआ है। यहाँ ईस्ट इण्डियन ग्रैंड कॉर्ड लाइन का जंकशन है। सरकारी कचहरियाँ और दफ्तर स्टेशन से आधे मील की दूरी पर हीरापुर गाँव में हैं। खान-विभाग का सरकारी आफिस यहीं है। यहाँ खान-सम्बन्धी बातें सिखाने के लिये एक स्कूल है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या १६,३५६ है, जिसमें १२,२०२ हिन्दू, ३,३८१ मुसलमान, ७२५ ईसाई, ४४ आदिम जाति और ४ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ दो हाई स्कूल चल रहे हैं। शहर में म्यूनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है।

धनबाद थाने में ४०,२४६ आदमी रहते हैं। इनमें ३४,७४८ हिन्दू, ४,३९७ मुसलमान, ७३३ ईसाई, ३५६ आदिम जाति और १२ अन्य जाति के लोग हैं।

कतरास या कतरासगढ़—यह स्थान इस नाम के स्टेशन से १½ मील की दूरी पर है। स्टेशन के पास एक बड़ा बाजार बस गया है, जहाँ थाना, अस्पताल, डाक और तारघर तथा हाईस्कूल भी हैं। इसके आस-पास कोयले की खानें हैं। इस

स्थान को लोग पँचगढ़ी कहते हैं। कतरास में एक पुराने खान-दान के जमींदार हैं। कहते हैं कि यहाँ झरिया राज का सदर दफ्तर था, पीछे यह राज कतरास, झरिया, और नावगढ़, इन तीन हिस्सों में बँट गया। कतरास में पुराने मन्दिरों और मकानों के भग्नावशेष हैं। यहाँ झींझी पहाड़ी पर एक मन्दिर है जहाँ चैत में मेला लगता है। कतरास से ८ मील दक्षिण दामोदर नदी के दोनों किनारे पर चेचगाँवगढ़ और बेलौंजा में दूर तक फैले हुए बहुत-से पुराने मंदिर हैं जहाँ किसी समय बौद्ध, जैन और पीछे ब्राह्मण धर्म का अड्डा रहना जान पड़ता है।

कतरास थाने की जनसंख्या ५५,२१८ है। यहाँ ४८,२७६ हिन्दू, ५,८२४ मुसलमान, ६४३ आदिम जाति और १७५ ईसाई रहते हैं।

केंदुआडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ५५,३१४ आदमी रहते हैं, जिनमें ४८,४५२ हिन्दू, ५,६४९ मुसलमान, ६२२ आदिम जाति, २८० ईसाई और ११ अन्य जाति के लोग हैं।

गोविन्दपुर—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक-रोड पर है। यहाँ १६०८ ई० तक सबडिविजन का सदर आफिस था। आफिस के हट जाने पर यह स्थान उजाड़ पड़ गया। इस समय यहाँ थाना-आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ५०,८२३ है, जिसमें ३१,३०३ हिन्दू, ६,८४३ आदिम जाति, ९,६७६ मुसलमान और १ ईसाई हैं।

चिरकुंडा—चिरकुंडा में कोयले की खान है। यहाँ थाना और हाई इंगलिश स्कूल भी हैं। इस थाने में २४,०४० आदमी रहते हैं। इनमें १७,४६० हिन्दू, ३,७५६ आदिम जाति, २,५०१ मुसलमान, ३१६ ईसाई और ७ अन्य जाति के लोग हैं।

झरिया—यह स्थान कोयले की खान के लिये हिन्दुस्तान भर में प्रसिद्ध है। यहाँ बहुत-सी कोठियाँ, कारखाने, एक सुंदर बाजार, थाना, अस्पताल और हाई स्कूल हैं। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार का निवास-स्थान है। पास की एक पहाड़ी पर एक पुराने किले का भग्नावशेष है, जिसे लोग झरियागढ़ कहते हैं। कुछ लोग बताते हैं कि इसी के नाम पर पुराने जमाने में समूचे छोटानागपुर और विहार के कुछ हिस्से का नाम झार-खण्ड पड़ा था।

झरिया थाने की जनसंख्या १,१६ ४०६ है, जिसमें १,०१,०७६ हिन्दू, १२,७१२ मुसलमान, २,१६० आदिम जाति, ४१८ ईसाई और १० अन्य जाति के लोग हैं।

तुंडी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४४,९३९ है। यहाँ २१,७६७ आदिम जाति, २०,२७६ हिन्दू, २,०९२ मुसलमान और ८०४ ईसाई हैं।

तोपचाँची—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ३२,३६६ आदमी रहते हैं, जिनमें २४,६८० हिन्दू, ४,३३४ मुसलमान, २,८७४ आदिम जाति और २०८ ईसाई हैं।

निरसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने में ६०,४०३ आदमी रहते हैं। इनमें ४४,०८८ हिन्दू, ११,८६८ आदिम जाति, ४,४०५ मुसलमान और १२ ईसाई हैं।

बाघमारा—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ४१,३०७ है। यहाँ ३६,६१६ हिन्दू, ३,४५३ मुसलमान, ८४१ आदिम जाति, ८६ ईसाई और ५ अन्य जाति के लोग रहते हैं।

मानभूम जिले की कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जनसंख्या (सन् १९३१)

कुरमी	३,२३,०६८	कहार	१४,०८४
संथाल	२,८२,३१५	ताँती	११,७१३
बौरी	१,२१,३२१	महली	१०,८५०
भूमिज	१,०३,९०१	बनिया	१०,०७६
ब्राह्मण	८३,०१९	कोयरी	९,७४०
कुम्हार	५६,९६८	चमार	९,१७०
जोलाहा	५६,४७७	केवट	९,००२
तेली	४८,४५७	दुसाध	७,१७३
ग्वाला	४०,९९६	घासी	६,७५३
रजवार	३८,९३०	मुसहर	५,५७१
कमार	३५,२७९	भूमिहार ब्राह्मण	४,६२४
भुइयाँ	३३,७४३	खरिया	४,३९८
राजपूत	३०,७७६	ओराँव	३,७२४
हजाम	२४,९३६	बरही	३,६४२
डोम	२४,६७३	तूरी	२,६०७
हारी	२०,७८६	पासी	२,५०७
घटवार	१७,८२४	मुंडा	२,१६४
मोची	१६,९६०	मालो	१,७५१
कोरा	१५,५१८	बिरहोर	३०८
कायस्थ	१४,४८७	पहिरा	१४०
धोबी	१४,२४५	करमाली	७३

सिंहभूम जिला

स्थिति, सीमा और विस्तार

सिंहभूम जिला छोटानागपुर कमिश्नरी के दक्षिण-पूरब का भाग है। यह २१°५८' और २२°५४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°०' और ८६°५४' पूर्वीय देशान्तर के बीच है। इसका सदर आफिस चाइबासा में है।

इस जिले का सिंहभूम नाम पड़ने के सम्बन्ध में लोगों के भिन्न भिन्न मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि किसी समय इस भूभाग पर पोराहाट के राजा का बहुत दबदबा था। वे लोग सिंह उपाधिधारी थे। इसलिये उनकी अधीनस्थ भूमि सिंहभूमि नाम से प्रसिद्ध हुई; जैसे कि धाल उपाधिधारी राजा की भूमि धालभूमि नाम से प्रसिद्ध है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि मुंडा लोग सूर्य देवता को सिंगबोंगा कहते हैं और उन्हीं को विश्व-निर्माता मानते हैं; इसलिये वे इस भूमि को सिंगबोंगा की भूमि कहने लगे, इसीसे सिंहभूमि नाम पड़ गया। पर यह मत सर्व-मान्य नहीं है। कुछ लोग राजा मान सिंह के नाम पर इसका सिंहभूमि या सिंहभूम नाम पड़ना समझते हैं, पर इनमें सबसे अधिक पहला मत ही ग्राह्य मालूम पड़ता है।

इस जिले के पूरब में मेदिनीपुर, दक्षिण में उड़ीसा के मयूर-भंज, क्योंझर और बोनाय के देशी राज्य, पच्छिम में गंगपुर राज्य और राँची जिला, तथा उत्तर में राँची और मानभूम जिले

हैं। जहाँ तहाँ पहाड़ और नदियाँ जिले को प्राकृतिक सीमा का काम करती हैं।

पूरब से पच्छिम तक इस जिले की सबसे अधिक लम्बाई १२४ मील और उत्तर से दक्षिण तक सबसे अधिक चौड़ाई ६४ मील है। इस जिले का क्षेत्रफल ३,८७९ वर्गमील है।

सिंहभूम जिले के बीच में सराय-केला, खरसावाँ, ये दो देशी राज्य हैं। कराय-केला एक अलग भू-भाग है जिस पर सराय केला के राजा का ही अधिकार है।

प्राकृतिक बनावट

यह जिला छोटानागपुर की अधित्यका का दक्षिणी भाग है जो ऊँची पहाड़ी भूमि है। यहाँ कहीं तो जंगलों से भरा पहाड़, कही घाटियाँ और कहीं नदियों के किनारे की समतल या ऊँची नीची भूमि है। प्राकृतिक रूप से जिला चार भागों में बँटा है। पहला भाग संजय नदी की घाटी है जिसके अन्दर पोराहाट स्टेट का कुछ हिस्सा, परगना कराय-केला, परगना चक्रधरपुर, केरा का कुछ भाग और खरसावाँ स्टेट का दो तिहाई हिस्सा है। यह भाग सजय नदी के उत्तर है। यह नदी इस भाग और कोलहान स्टेट के बीच सीमा का काम करती है। दूसरा भाग पूरब की ओर धालभूम स्टेट है जो सुवर्ण-रेखा नदी की घाटी है। तीसरा भाग पोराहाट और चौथा भाग कोलहान है। कोलहान का दक्षिण-पच्छिम भाग सारन्द पीर कहलाता है। पीर सिंहभूम की बोली में इलाके को कहते हैं।

जिले की उत्तरी सीमा पर जो पर्वत माला है उसमें टटकोरा की चोटी समुद्रतल से २,९१० फीट ऊँची, बीचा की चोटी २,७७६

फीट और ननजी की चोटी २,४९१ फीट ऊँची है। जिले के अन्दर सबसे ऊँची चोटी बुदा, है जो मनोहरपुर रेलवे स्टेशन से ७ मील दक्षिण-पूरब है। नोट, कुरुनडीहा, हरारांगा, साकरुहुरू की चोटियाँ २५०० फीट से कुछ ऊँची हैं। इसके बाद अदालखाम, दिनदाबुरु, लोंजो, उत्तरी, संगाहातू, पटान, अंगारबोरा, बोमैबुरु, रागरा, हिंडिया, कोतुआर, उमै आदि की चोटियाँ हैं जिनकी ऊँचाई समुद्रतल से २,००० से २,४०० फीट तक है।

इस जिले में जंगल बहुत विस्तृत क्षेत्र में हैं। कोलहान और पोराहाट में सरकारी जंगल हैं। सन् १९३५-३६ की रिपोर्ट के अनुसार यहाँ ७३४ वर्गमील रिजर्व्ड फारेस्ट, ४०७ वर्गमील प्रोटेक्टेड फारेस्ट तथा २०८ वर्गमील दूसरे प्रकार के जंगल हैं।

नदियाँ

सुवर्णरेखा—सुवर्णरेखा सिंहभूम जिले की सबसे बड़ी नदी है। यह इस जिले में ७० मील तक दौड़ती है और २,००० वर्गमील का पानी अपने साथ बहा ले जाती है। यह नदी राँची जिले से निकलती है और उत्तर-पच्छिम दिशा से आती हुई कुछ दूर तक मानभूम और सिंहभूम जिले के बीच सीमा का काम करती है। तब यह दक्षिण-पूरब को ओर धालभूम सबडिविजन होकर बहती हुई जिले को दक्षिण-पूरब कोने पर छोड़ती है। इस नदी में सोना पाये जाने और इसकी बालू के सोना-सी चमकने के कारण इसका नाम सुवर्णरेखा पड़ा है।

खरकै—सुवर्णरेखा की मुख्य सहायक नदी खरकै है, जो कोलहान पर्वत-श्रेणी के पूर्वी भाग से निकलनेवाली तरलो और कोरंजै नामक दो धाराओं के मिलने से बनी हुई है। तरलो जिले की

सीमा पर कोरंजै से मिलती है। संगम के चार मील के बाद इसका नाम खरकै हो गया है। खरसाँवा और धालभूम की सीमा पर यह सुवर्णरेखा नदी से मिल जाती है। गमहरिया रेलवे स्टेशन से ५ मील दक्षिण की ओर इससे संजय नदी मिली है। खास खरकै की लम्बाई ५० मील है। कोलहान पहाड़ी से बहुत-सी छोटी छोटी धाराएँ इससे आ मिली हैं, जिनमें इलीगारा, जमीरगारा और रोरो के नाम लिये जा सकते हैं।

रोरो—रोरो या रारो नदी की लम्बाई ३६ मील है। चाइबासा के बाद इससे जमीरा नदी आ मिली है। चाइबासा रोरो नदी के पूर्वी किनारे पर बसा है।

वैतरणी—वैतरणी नदी ८ मील तक कोलहान गवर्नमेंट स्टेट और क्योंझर स्टेट के बीच सीमा का काम करती है। छोटी छोटी धाराओं द्वारा यह गवर्नमेंट स्टेट के ४०० वर्गमील का पानी लेती है। इन धाराओं में मुख्य कोंगरा है। यह भी कुछ दूर तक कोलहान और क्योंझर के बीच सीमा बनाती है। ब्राह्मण लोग इसको पुराण-प्रसिद्ध वैतरणी नदी बताते हैं, पर बहुतों का कहना है कि यह शब्द अवितरणी शब्द से बना है जिसका अर्थ है नहीं पार करने योग्य। जैंतगढ़ से ४ मील पच्छिम इस नदी के जलप्रपात से एक गहरा जलाशय बन गया है जिसको लोग राम-तीर्थ कहते हैं। कहते हैं कि सीता की खोज में दक्षिण जाते समय रामचन्द्रजी यहाँ ठहरे थे।

दक्षिण कोयल—यह नदी राँची के कुछ दूर पच्छिम से निकलती है और बेलसियनगढ़ के पास १२० फीट ऊँचे सुन्दर जलप्रपात में राँची अधित्यका को छोड़ती है। यह पच्छिम की ओर से सिंहभूम जिले में प्रवेश करती है और १२ मील तक पूरब की दिशा में बहने पर गुदली से कुछ मील दक्षिण उत्तर कारो नदी

को अपने में मिलाती है। इसके बाद यह १२ मील तक दक्षिण की ओर बहती है और आनन्दपुर के पास दक्षिण-कारो नदी को अपने साथ लेती है। फिर १२ मील दक्षिण बहने पर मनोहरपुर के पास कोदूना नदी को यह अपने में मिलाती है। अन्त में यह पच्छिम का ओर मुड़कर गंगपुर स्टेट को चली जाती है। यहाँ यह शंख नदी से मिल जाती है। इस तरह कोयल नदी अर्द्ध-वृत्ताकार में करीब ३६ मील तक सिंहभूम जिले में बहती है।

उत्तर और दक्षिण कारो—उत्तर कारो भी राँची के पास से ही निकल कर सिंहभूम जिले में करीब १२ मील तक बहती है। इसमें पोराहाट पहाड़ी का जल आता है। इसकी मुख्य सहायक नदी फुलझुर है। दक्षिण-कारो क्योंझर से निकलती है और सारन्द पहाड़ी होकर सिंहभूम जिले में ३७ मील तक बहती है।

देव—देव नदी गमहरिया अधित्यका के पच्छिमी भाग में कोलहान से निकलती है और करीब ३५ मील बहकर दक्षिण कारो नदी में मिल जाती है। सन्तरा से आती हुई फुलगरा नदी देव नदी में मिली है।

काइना—कोइना नदी सारन्द के बिलकुल दक्षिण-पूरब भाग से निकलती है। यह पहले उत्तर की ओर और फिर पच्छिम की ओर बहकर मनोहरपुर में दक्षिण-कोयल नदी में गिरती है। इसकी लम्बाई करीब ३६ मील है। इसमें बहुत-सी छोटी-छोटी धाराएँ आ मिली हैं।

जलवायु और स्वास्थ्य

सिंहभूम जिले की जलवायु शुष्क है, लेकिन इसके धालभूम सबडिविजन का भाग कुछ आर्द्र रहता है। गर्मी के दिनों में गर्म पच्छिमी वायु खूब तेज चलती है। उस समय गर्मी कभी-कभी ११२° तक पहुँच जाती है। जाड़े के दिनों में यहाँ जाड़ा खूब पड़ता है। उन दिनों यहाँ का तापमान गिरकर सिर्फ ४३° रह जाता है। रात में अक्सर पाला भी पड़ा करता है। बरसात दक्षिण-पच्छिम की मानसून से शुरू होती है। उस समय अक्सर जोरों की गोल आँधी आती है। यहाँ साल भर में करीब ५८ इंच वर्षा होती है। साधारण तौर पर जिले के पच्छिम और दक्षिण-पच्छिम भाग में वर्षा अधिक होती है। पहाड़ों के कारण यहाँ सब जगह वर्षा एक-सी नहीं होती। कभी ऐसा भी देखने में आता है कि कहीं अतिवृष्टि है तो कहीं अनावृष्टि।

इस जिले मे रोगों की शिकायत विहार के सभी जिलों से कम है। हाँ, जिस भाग में जंगल है, वहाँ मलेरिया का कुछ प्रकोप रहता है। मनोहरपुर थाने में, कोलहान के पच्छिम और दक्षिण में, चक्रधरपुर थाने के उत्तर और पच्छिम में तथा घाटशिला थाने के दक्षिण में प्रायः मलेरिया फैलता है। तब भी छोटानागपुर के और जिलों से मलेरिया यहाँ बहुत ही कम है। हैजा और चेचक भी जब-तब ही फैलता है। पागलों, अन्धों, बहरे-गूँगों और कोढ़ियों की संख्या भी विहार के सभी जिलों से कम है और बहुत ही कम है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ पागलों की संख्या ९६, बहरे-गूँगों की संख्या १५९, अन्धों की संख्या ५५४ और कोढ़ियों की संख्या १५३ है।

सन् १९३५-३६ में जिले के अन्दर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के ९ अस्पताल थे।

जानवर

सिंहभूम जिले में जानवरों की दशा साधारणतः अच्छी नहीं है। हो आदि आदिम जाति के लोग उनकी नसल सुधारने की कोशिश नहीं करते। गाय, बैल और भैंस खेती के काम में आती हैं। जंगलों के कारण तथा बीच बीच में वर्षा होते रहने से हरी घास के कारण चारे की कमी यहाँ नहीं होने पाती। लेकिन चक्रधरपुर और पोराहाट के कुछ हिस्सों में, केरा और चैनपुर में, तथा बन्दगाँव के कुछ भागों में मवेशी के लिये काफी चारा नहीं मिलता। यहाँ के लोगों को चराने के लिये अपने मवेशी बहुत दूर ले जाने पड़ते हैं। जमशेदपुर में जानवरों का अस्पताल है।

पहाड़ों और जंगलों की अधिकता के कारण इस जिले में जंगली जानवर बहुत पाये जाते हैं। जिले के पच्छिम भाग में और पोराहाट स्टेट में बाघ बहुत मिलते हैं। कोलहान गवर्मेन्ट स्टेट में भी ये कम नहीं मिलते। हर साल पचासों आदमी बाघ से मारे जाते हैं। चीते तो गाँव के आस-पास भी पाये जाते हैं, लेकिन ये उतना नुकसान नहीं पहुँचाते। भालू छोटी-छोटी पहाड़ियों में मिलते हैं। जंगली सूअर सब जगह बहुत हैं और ये फसल को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। हरिण भी बहुत पाये जाते हैं। नील गाय जहाँ तहाँ मिलती हैं। पहले इस जिले में जंगली हाथी भी मिलते थे।

इतिहास

प्रस्तर युग—सिहभूम बंगाल-विहार के उन थोड़े से जिलों में है जहाँ प्रस्तर युग की चाकू आदि चीजें मिली हैं। कुछ चीजें तो ऐसी हैं जो बर्मा में मिली हुई चीज़ों से बिलकुल मिलती-जुलती हैं। इससे कुछ लोग अनुमान करते हैं कि ये चीजें शायद बाहर से ही आयी हों। मगर जिन पत्थरों से ये बनी हैं वे यहाँ भी पाये जाते हैं। इससे ये चीजें यहाँ की बनी हुई भी कही जा सकती हैं। इरावती की घाटी में, जहाँ बर्मी चीजें मिली है, मोन नामक जाति रहती है, जिनकी भाषा सिंहभूम की मुंडा भाषा से बहुत समता रखती है। इन बातों से अनुमान किया जाता है कि इन दो दूरवर्ती स्थानों की दो जातियों में पुराने जमाने में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था या ये दो जातियाँ किसी एक ही मूल जाति की हैं।

प्राचीन सभ्यता—बाद के इतिहास में हमें इस जिले के अन्दर रोम के सम्राटों के सिक्के मिलते हैं। इन सिक्कों मे कुछ तो सम्राट कॉन्सटैन्टाइन, गोरडियन आदि के सोने के सिक्के हैं। ये सिक्के सिंहभूम जिले की दक्षिणी सीमा से थोड़ी दूर पर मयूरभंज स्टेट के बामन घाटी नामक स्थान के पास पाये गये थे। विश्वास किया जाता है कि ये सिक्के तामलुक—प्राचीन बन्दरगाह ताम्रलिप्ति—से यहाँ आये होंगे, क्योंकि पुराने समय में बामन घाटी और पोराहाट होकर वहाँ जाने का व्यापारिक मार्ग था। चाइबासा से कुछ मील दक्षिण गुलका नामक स्थान में एक बर्तन के अन्दर ताम्बे के सिक्के मिले हैं, जिनमें एक सिक्का स्पष्ट रूप से इंडो-सीथियन है। जिले की दक्षिणी सीमा पर बेणुसागर नामक स्थान में बहुत-से पुराने मन्दिरों और मकानों के

भग्नावशेष पाये गये हैं। वहाँ की खोदाई में जो चीजें मिली हैं वे नवीं और दसवीं सदी की बनी ऐसी चीजों से विशेष सुन्दर मालूम पड़ती हैं। छ सात मील की दूरी पर क्योंझर के किचांग नामक स्थान मे भी ऐसी चीजें मिली हैं जिनका सम्बन्ध सातवीं सदी के बंगाल के राजा शशांक से बताया जाता है। चीनी यात्री ह्वनत्वाङ्ग (ह्वेनसन) ने लिखा है कि शशांक कर्ण-सुवर्ण का राजा था। जेनरल कनिंघम का कहना है कि कर्ण-सुवर्ण नगर अवश्य ही कहीं सिंहभूम या बराभूम मे सुवर्णरेखा नदी के किनारे रहा होगा।

यहाँ की पुरानी सभ्यता के प्रमाण में बामनघाटी में पाये गये दो ताम्रपत्र भी हैं। ये ताम्रपत्र १२ वीं सदी की देवनागरी लिपि मे लिखे हुए हैं। इनमें भंजवंश के राजाओं द्वारा बहुत-से ग्राम दिये जाने का उल्लेख है। यह भंजवंश मयूरभंज राजवंश समझा जाता है। इस वंश के संस्थापक यहाँ के तपोवन के राजा वीरभद्र बताये गये हैं। यहाँ की सभ्यता के और चिह्न यहाँ के पुराने मकानों के खंडहर और ताँबे की पुरानी खानों में मिलते हैं। ये पुरानी खानें बृन्दावन, रुआमगढ़ और महादेव आदि स्थानों मे हैं। इनको देखने से पता चलता है कि ये निश्चय ही बहुत सभ्य जाति के लोगों द्वारा खोदी गयी होंगी; क्योंकि वर्तमान असभ्य जातियों का यह काम नहीं हो सकता। लेकिन एक दन्त-कथा में रुआमगढ़ की खान वहाँ के रुआम राजा द्वारा खोदवाई हुई कही गयी है जो वर्णन के अनुसार सम्भवतः नागवंशी कोल राजा मालूम पड़ता है। पर दूसरे प्रमाणों से यह पता चलता है कि इस भूभाग पर किसी समय सरक (श्रावक) जाति का आधिपत्य था जो जैन-धर्मावलम्बी थी। कहते हैं कि अपने अत्याचारों के कारण श्रावकों को वहाँ से पीछे भागना पड़ा था।

कोलहान में अब भी बहुत-से तालाब हैं जिन्हें हो लोग सरक तालाब कहते हैं। जैनियों में साधु लोग यति और गृहस्थ लोग श्रावक कहलाते है। मानभूम जिले में बहुत-से जैन-मंदिर हैं। इससे अनुमान किया जाता है कि यतियों और श्रावकों का वहाँ अड्डा था, पर श्रावक लोग इधर सिंहभूम की ओर भी आ बसे थे और यहाँ खान का काम करने लगे थे। मानभूम के मंदिर १४ वीं या १५ वीं सदी के मालूम पड़ते हैं; इसलिये उसी काल में यहाँ श्रावकों के आने का भी अन्दाज लगाया जाता है।

आदिम जाति—जिले के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में और कोई बात मालूम नहीं होती। इस समय इस जिले के मुख्य अधिवासी आदिम जाति के लोग हैं जिनमें हो जाति के लोग प्रधान हैं। मालूम पड़ता है कि हो लोग छोटानागपुर के दूसरे भागों से यहाँ आये और भुइयाँ लोगों को भगाकर यहाँ बस गये। इन लोगों ने दक्षिण के घने जंगलों में रहना पसन्द किया जहाँ इन्हें स्वतन्त्रता कायम रखने में आसानी थी। लड़ने-भिड़ने के स्वभाव के कारण लोग इन्हें लड़का (लड़ाका) कोल कहने लगे। जिले का उत्तर भाग पोराहाट के सिंहवंशी राजाओं के हाथ मे आया। ये लोग सिंहभूम के राजा कहलाते थे। इस वंश के लोग राठौर राजपूत होने का दावा करते है। कहते हैं कि इस वंश के पूर्व पुरुष तीन भाई थे और वे अकबर के सेनापति राजा मान-सिंह के अंगरक्षक का काम करते थे। ये लोग भुइयों का पक्ष लेकर हो लोगों से लड़े और उन्हें जिले के उत्तर भाग से हटाकर यहाँ के मालिक बन बैठे। किसी समय सिंह राजा उस भाग पर भी शासन करते थे जो इन दिनों सरायकेला और खरसाआँ राज्य के अन्दर है। इन लोगों का पहले कोलहान पर भी आधिपत्य रखने का दावा है, पर हो लोग इस बात को नहीं मानते। जहाँ

तक पता चलता है, हो लोगों को जीतने के लिये तीन बार भयंकर चेष्टा की गयी, पर तीनों बार असफलता ही रही। एक बार तो छोटानागपुर के राजा द्रीपनाथ ने सिंहभूम के राजा की सहायता से २० हजार सेना लेकर चढ़ाई की थी, दूसरी बार भी छोटानागपुर के ही राजा जगन्नाथ साही ने १७७० ई० में आक्रमण किया था, तीसरी बार बामनघाटी (मयूरभंज) का महापात्र नामक सरदार चढ़ आया था, पर सभी को हो लोगों ने बुरी तरह परास्त किया।

अँगरेजों का आगमन—इस भूभाग का कभी मुसलमान शासकों से सम्बन्ध रहा या नहीं, इसका पता नहीं चलता। अँगरेज लोगों ने १७६७ ई० में यहाँ चढ़ाई की। पहले पहल धालभूम के राजा पर हमला हुआ। धालभूम के राजा को लोग घाटशिला का राजा भी कहते थे। राजा ने २,००० आदमियों को लेकर बेन्द के पास अँगरेज सैनिकों का मार्ग रोकना चाहा, पर वह सफल नहीं हो सका। अन्त में वह किला छोड़कर भाग गया। अँगरेजी सेनापति फरगुशन ने किले (सम्भवतः नरसिंह गढ़) को दखल करके राजा को पकड़ने के लिये सेना भेजी। राजा गिरफ्तार कर मेदिनीपुर भेज दिया गया और उसका भतीजा जगन्नाथ धाल ५½ हजार रुपया सालाना कर देने की शर्त पर राजा बनाया गया। लेकिन वह अँगरेजों के दबदबे में रहने को तैयार नहीं हुआ। कुछ ही महीनों के बाद फरगुशन फिर आया और उसने किले को कब्जे मे कर लिया। जगन्नाथ धाल जंगल भाग गया पर शीघ्र ही लौटकर अपने को उसने अँगरेजों के सुपुर्द किया। लेकिन, अँगरेजों की हुकूमत उसे बरदाश्त नहीं हुई, वह स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगा। इस पर दूसरे ही साल सन् १७६८ में लेफ्टिनेन्ट रूक और पीछे कैप्टेन मोरगैन

यहाँ भेजा गया। राजा तो फिर जंगल भाग गया, पर उसका भाई नीमू धाल पकड़ लिया गया और पीछे वही राजा माना गया। वह अँगरेजों के हाथ की कठपुतली था। पर राज्य में शान्ति नहीं रही। १७६९ ई० में चुआर या भूमिज लोगों ने नये राजा के विरुद्ध उत्पात मचाया। इसपर मेदिनीपुर से कैप्टेन फारबिस के अधीन सेना आयी जिसने उपद्रवियों को मार भगाया। अब कुचांग में (जो सरायकेला राज्य के अन्दर है) कुछ सैनिक रखे गये, लेकिन कैप्टेन फारबिस के लौटते ही वे सब के सब मार डाले गये। इसपर लेफ्टिनेन्ट गुडियर यहाँ पहुँचा। कुचांग का जमींदार हटा दिया गया और यह स्थान बामनघाटी के जमींदार के अधीन किया गया। शर्त यह रही कि वह मेदिनीपुर के रेजिडेन्ट के हुक्म के मुताबिक काम करेगा और कम्पनी के हल्के के अन्दर सभी तरह के उपद्रव के लिये जवाबदेह होगा, और इस शर्त का पालन नहीं हुआ, तो वह कुचांग से ही नहीं, बामनघाटी से भी हटा दिया जायगा। १७७३ ई० में जगन्नाथ धाल ने बहुत बड़ी सेना लेकर अपने राज्य पर चढ़ाई की। और साल की अपेक्षा इस साल उसकी बड़ी तैयारी थी, लेकिन कैप्टेन फारबिस ने आकर सबों को भगा दिया। अब नरसिंहगढ़ के अलावे हालुदपोखर में भी सेना रखी जाने लगी। पर जगन्नाथ धाल ने दूसरे साल भी जोरों का उपद्रव मचाया। आखिर तंग आकर अँगरेजों ने १७७७ ई० मे फिर जगन्नाथ धाल को ही राजा बनाया। इसने अँगरेजों को पहले साल दो हजार, दूसरे साल तीन हजार और तीसरे साल चार हजार रुपया कर देना स्वीकार किया। १८०० ई० में यह स्टेट ४२६७ रु० साल पर स्थायी रूप से बन्दोबस्त कर दिया गया।

पोराहाट पर दबाव—पोराहाट का राजा पहले सिंहभूम का

राजा कहलाता था। सन् १७६७ में वहाँ का राजा जगन्नाथ सिंह अपने चचेरे भाई के कब्जे में पड़ गया था, इसलिये उसने अँग-रेजों को लिख भेजा कि वह सालाना कर दिया करेगा, उसके राज्य की रक्षा की जाय। लेकिन, वे लोग अभी इसके लिये तैयार नहीं हुए। १७७३ ई० में जब कैप्टेन फारबिस धालभूम आया, तो उसने इस मौके पर पोराहाट के राजा को भी दबाना चाहा। बात यह थी कि नमक के व्यापारी मेदिनीपुर से, जो अँगरेजों के कब्जे में था, कर के डर से नमक नहीं लेकर उड़ीसा से (जो मराठों के हाथ में था) नमक लेते थे और उसे सिंहभूम होकर लाते थे। कैप्टेन फारबिस ने पोराहाट के राजा को अपने यहाँ आने को मजबूर किया और उससे शर्त करायी कि वह कम्पनी को लाभ से वंचित रखने के लिये व्यापारियों को सुविधा नहीं दे और हल्दी पोखर में उपद्रव न होने की गैरेन्टी करे। इसी प्रकार १७९३ ई० में खरसावाँ के सरदार ठाकुर और सरायकेला के सरदार कुँवर से शर्त करायी गयी कि वे अँगरेजों के इलाके से भागे हुए विद्रोहियों को शरण नहीं देंगे। १८०३ में मराठों के साथ लड़ाई छिड़ी। गवर्नर जेनरल लार्ड वेलेस्ली ने सरायकेला के कुवर से कहा कि उसके राज्य से कर नहीं लिया जायगा, वह इस लड़ाई में अङ्गरेजों की मदद करे।

कोलहान पर चढ़ाई—१८२० में पोराहाट के राजा ने अङ्ग-रेजों की अधीनता स्वीकार की और १०१ रुपया सालाना कर देना कबूल किया। अधीनता स्वीकार करने का उद्देश्य यह था कि यह खरसावाँ और सरायकेला का अधिपति माना जाय और कोलहान के हो लोग भी उसका आधिपत्य स्वीकार करें। लेकिन अङ्गरेजों ने उसकी पहली शर्त पर ध्यान नहीं दिया, हाँ वे हो लोगों को दबाने को राजी हुए। पोलिटिकल एजेन्ट मेजर रफसिज

ने हो लोगों पर चढ़ाई करने की तैयारी की। पर हो लोगों का भय राजा को इतना था कि उनके विरुद्ध कुछ किये जाने की बात से ही वे बिलकुल डर गये और तुरत मत बदल कर चढ़ाई न करने की आरजू करने लगे। पर अङ्गरेज कब माननेवाले थे, उन्होंने हो लोगों पर चढ़ाई कर ही दी। साल-डेढ़ साल की मार-काट के बाद हो लोगों ने बृटिश सरकार की अधीनता स्वीकार कर ली।

कोल-विद्रोह—१८३१ ई० में हो लोग कोल-विद्रोह में शामिल हुए। कोल या मुंडा लोगों की जमीन बाहरी लोगों के हाथ बन्दोबस्त करने के कारण उनमें बहुत दिनों से असन्तोष फैला हुआ था। ये बाहरी लोग मुसलमान, सिक्ख आदि थे। ये लोग यहाँ के आदि निवासी स्त्री-पुरुषों पर तरह-तरह का अत्याचार कर रहे थे। फल यह हुआ कि अन्त में सिंहभूम और राँची के हो और मुंडा लोगों ने भयंकर बलवा मचा दिया। धीरे-धीरे यह बलवा समूचे छोटानागपुर में फैला। ये सभी झुंड के झुंड दल बाँध-कर घूमने लगे और गैर आदिम जाति के लोगों के माल-असबाब लूटने, उनके घरों में आग लगाने और उन्हें कत्ल करने में लग गये। सब जगह भारी तहलका मच गया। आखिर हजारीबाग, बारकपुर, दानापुर आदि स्थानों से अङ्गरेजी सेना यहाँ पहुँची और कई महीने बाद बलवाइयों को दबा सकी।

गंगानारायण-विद्रोह—इस विद्रोह के बाद ही मानभूम के भूमिज लोगों ने बलवा मचाया, जिसका सरदार गंगानारायण था। १८३२ के नवम्बर में गंगानारायण भागकर सिंहभूम चला आया और यहाँ के लोगों को मिलाना चाहा और इसके लिये हो लोगों के दुश्मन खरसावाँ के ठाकुर पर चढ़ाई की। लेकिन वह इस चढ़ाई में मारा गया। इस विद्रोह के फलस्वरूप धालभूम मेदिनी-

पुर से हटाकर उत्तर-पच्छिम सीमाप्रान्त के एजेन्ट के इलाके में रखा गया।

कोलहान पर कब्जा—दच्छिण-पच्छिम सीमाप्रान्त के एजेन्ट सर टामस विलकिन्सन ने देखा कि जब तक कोल्हान पर अँगरेजों का कब्जा नहीं हो जाता तब तक हो लोग दबाये नहीं जा सकते, इसलिये गवर्नमेन्ट की सलाह से उसने १८३६ ई० में बहुत बड़ी सेना वहाँ भेजी। हो लोग आसानी से वश में आ गये। उनपर शासन करने के लिये चाइबासा में एक अफसर रखा गया। पोराहाट के राजा का इस भूभाग से सम्बन्ध तोड़ दिया गया और तब से यह बराबर गवर्नमेन्ट स्टेट बना रहा।

सिपाही विद्रोह—सन १८५७ ई० की जुलाई में राँची और हजारीबाग में सिपाही विद्रोह होने की खबर ज्योंही चाइबासा पहुँची, यहाँ का प्रिन्सपल असिस्टेन्ट कमिश्नर भाग कर रानीगंज चला गया और यहाँ का भार सरायकेला के राजा चक्रधारी सिंह पर छोड़ गया। सितम्बर महीने में यहाँ के सिपाहियों ने भी बलवा मचाया। उन लोगों ने जेल का द्वार खोल दिया, खजाना लूट लिया और अपने साथियों से मिलने को वे राँचो रवाना हुए। मगर बाढ़ के कारण वे संजय नदी को पार नहीं कर सके, साथ ही हो लोगों ने उनसे वसूले हुए कर को राँची ले जाने से रोका। इसी समय पोराहाट के राजा अर्जुन सिंह ने उनका नेता बनना स्वीकार किया जिससे वे सब खजाना के साथ उसके पास पहुँच गये। कुछ दिनों के बाद लेफ्टिनेन्ट बिर्च प्रिन्सपल असिस्टेन्ट कमिश्नर की जगह पर नियुक्त हुआ। वह खरसाँवा और सरायकेला के राजा तथा ३००० कोलों को लेकर चाइबासा पहुँचा। पीछे कुछ सिक्ख सेना भी उसकी सहायता में आ गयी। अब उसने पोराहाट के राजा को आत्म-समर्पण करने के लिये चाइबासा बुला

भेजा। राजा ने राजभक्त बने रहने का बारबार वादा तो किया, पर डर से आत्म-समर्पण करने के लिय नहीं आया। इससे उस पर चढ़ाई कर दी गयी, उसका दीवान जागू तो मारा गया, पर राजा भाग निकला। उसने कोल लोगों की सहायता से बीच बीच में उपद्रव करना शुरू किया। इस पर और भी अँगरेजी सेना बुलायी गयी। बहुत दिनों तक दोनों ओर से खूब मारकाट होती रही। आखिर करीब दो वर्षों के बाद १८५९ ई० में मजबूर होकर राजा ने आत्म-समर्पण किया तब जाकर उपद्रव शान्त हुआ।

बिरसा आन्दोलन—१८९५ ई० में राँची जिले के बिरसा नामक एक मुंडा ने एक आन्दोलन खड़ा किया, जिसका असर सिंहभूम जिले पर भी पड़ा। उसने अपने को अवतार घोषित किया और तरह-तरह की भविष्यवाणी करने लगा। उसके आन्दोलन का उद्देश्य एक तो मुंडों के लिये मुंडा-राज्य स्थापित करना और दूसरे ईसाई धर्म का विरोध करना था। बहुत-से मुंडा इसके साथ हुए और जहाँ-तहाँ उपद्रव मचाने लगे। बिरसा दो बार गिरफ्तार हुआ और अन्त में वह जेल में ही मर गया। उसके बाद विद्रोह शान्त हुआ।

शासन में परिवर्त्तन—इस जिले में पहले-पहल धालभूम अँगरेजों के हाथ में आया। यह पहले मेदिनीपुर के हलके में था, १८३३ ई० में यह मानभूम में मिलाया गया। उस साल के रेगुलेशन नं० १३ के मुताबिक यहाँ का शासन-कार्य साधारण कानून से बन्द किया जाकर विशेष कानून से किया जाने लगा। कोलहान पर कब्जा हो जाने के बाद सभी हो इलाके सीधे अँगरेजी सरकार के अधीन रखने का विचार हुआ। इसके लिये चाइबासा में एक प्रिन्सपल असिस्टेन्ट की बहाली हुई और उसके अधीन मयूरभंज और सरायकेला के चार-चार, सिंहभूम के सोलह और

खरसाँवा के एक पीर (इलाके) रखे गये। १८४८ ई० में धालभूम भी उसके अधिकार मे कर दिया गया।

१८५४ ई० के एक्ट के अनुसार छोटानागपुर का दक्षिण-पश्चिम सीमा-प्रान्त तोड़ दिया गया और इसे एक कमिश्नरी बनायी गयी। यहाँ के अफसर गवर्नर जनरल के एजेन्ट नहीं कहलाकर कमिश्नर कहलाने लगे और बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के अधीन किये गये। कमिश्नरी के और जिलों की तरह सिंहभूम जिले का अफसर डिपटी कमिश्नर कहलाने लगा।

लोग, भाषा और धर्म

१८८१ ई० में इस जिले में सिर्फ ४,५३,७७५ आदमी थे। सन् १९३१ मे आकर यहाँ ९,२९,८०२ आदमी हो गये, जिनमें ४,६९,४२१ पुरुष और ४,६०,३८१ स्त्रियाँ थीं। इस तरह आधी सदी में यहाँ की जनसंख्या दूनी से भी कुछ अधिक हो गयी। इस जिले में एक वर्गमील के अन्दर औसतन २४० आदमी रहते हैं। सदर सबडिविजन में २४० और धालभूम सबडिविजन में ३४० आदमी रहते हैं। सन् १९२१ में इस जिले के अन्दर बाहर से आये हुए लोगों की संख्या ७७,३१७ और बाहर गये हुए लोगों की संख्या १,००,८४९ है। सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में गणना नहीं हुई थी। इस जिले में जमशेदपुर, चक्रधरपुर और ,जुगसलाय ये चार शहर और ४,६४२ गाँव हैं। इन शहरों की कुल जनसंख्या १,१४,४३५ है।

भाषा—सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस जिले की जनसंख्या में भारतीय आर्य भाषाओं के अन्दर १,७१,८८७ लोगों की मातृभाषा उड़िया, १,४७,५१७ की बँगला, ८१,०४७ की हिन्दु-

स्तानी, ५,२८४ की पंजाबी, १,४४२ की गुजराती, १,४०० की नेपाली, ८५६ की मारवाड़ी, ६९७ की मराठी और १५७ की सिंधी; मुंडा भाषा-श्रेणी के अन्दर ३,०५,२५७ की हो, १,०३,७०३ की संथाली, ५४,४०८ की मुंडारी, ३०,१७९ की भूमिज, २,००१ की माहिली, १,४६६ की खरिया और ११ की कोरवा; द्राविड़ भाषा श्रेणी के अन्दर १०,११२ की ओराँव, ५,७६९ की तेलगू, २,११ की तामील, ९९५ की गोंडी, ३५५ की मलायलम, ३८ की कनाड़ी और ८ की कंधी ; भारतीय अन्य भाषाओं में ५७१ की जिप्सी, ४६३ की पश्तो और ८ की अन्य भारतीय भाषाएँ ; ६९ की अन्य एशियाई भाषा और १,९९१ की यूरोपीय भाषाएँ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब लगाने से यहाँ सैकड़े ५३ मुंड भाषाएँ, १८ उड़िया, ६१ बगला, ९ हिन्दुस्तानी और २ द्राविड़ भाषाएँ बोलनेवाले लोग हैं। इस तरह इस जिले में कई भाषाएँ प्रमुख हैं।

आदिम जाति के लोग अपनी बोलियाँ प्रायः आपस में ही बोलते हैं। कचहरी का काम, व्यापार का काम तथा अन्य बाहरी कामों के लिये उन्हे हिंदी और बँगला जानने की जरूरत पड़ती है और वे बड़ी तेजी के साथ इन भाषाओं को सीख रहे हैं। धालभूम की कचहरी की भाषा बंगला और जिले के शेष भाग की हिंदी है। स्कूलों में हिन्दी और बंगला द्वारा शिक्षा दी जाती है, पर कहीं-कहीं लोगों की इच्छा पर उड़िया भी पढ़ायी जाती है।

सिंहभूम जिले में धर्म के हिसाब से लोगों की संख्या इस प्रकार है:—

हिन्दू	४,६०,०७५	सिक्ख	३४,९८
आदिम जाति	४,१९,३३८	बुद्ध	२३२
मुसलमान	२६,७५४	जैन	१८६
ईसाई	१९,५५२	पारसी	१६७

प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ हिन्दू प्रति सैकड़े ४९, आदिम जाति ४५, मुसलमान ३ और ईसाई २ हैं। निम्न श्रेणी के हिन्दुओं में कुछ आदिम जाति के लोगों में फर्क बताना कठिन है। बहुत-से आदिम जाति के लोग अपने को हिन्दू कहने लगे हैं। व्यापक अर्थ में आदिम जातियों को हिन्दू कहना गलत भी नहीं है। आदिम जाति के बहुत-से लोग अपनी मूल जाति के नाम से पुकारे जाने पर भी धर्म के हिसाब से हिन्दू, आदिम जाति और ईसाई भी कहलाते हैं।

इस जिले में ईसाई मिशनरियों का काम १८६४ ई० से ही शुरू हुआ। इस समय यहाँ चाइबासा, तदक, तुजुर, बन्दगाँव, चक्रधरपुर, कुचांग, आनन्दपुर, काठुबारी, ताँगर पोखरिया, सोसोपीरी मोरोंगुटु आदि कितने ही स्थानों में ईसाइयों के अड्डे हैं। सन् १९०१ में यहाँ ६,९६१ ईसाई थे; मगर इधर तीस वर्षों में इससे तिगुने ईसाई हो गये हैं। ईसाइयों की वर्तमान संख्या में ९६७ यूरोपीय आदि, १,००८ एंग्लो इंडियन और शेष भारतीय ईसाई हैं।

खेती और पैदावार

सिंहभूमि जिले का रकबा २४,९७,४८४ एकड़ है। सन् १९३६-३७ में इसमें से ४,२६,६०० एकड़ जमीन जोती-बोयी गयी थी और ४,०३,०६० एकड़ जमीन जोत के अन्दर रहने पर भी उस साल परती पड़ी थी। ४,६१,०८६ एकड़ जमीन जोती बोयी जाने लायक होने पर भी बराबर से परती पड़ी थी। ४,६९,०११ एकड़ में जंगल था। ७,३७,७२७ एकड़ जमीन नदी और पहाड़ आदि के कारण खेती के काम में नहीं लायी जा सकती थी। सैकड़े का

हिसाब जोड़ने से मालूम होता है कि जिले की सैकड़े करीब ३३ भाग जमीन जोत के अन्दर है, मगर इसका करीब आधा हिस्सा प्राय: परती ही रह जाता है। सैकड़े १८½ भाग ऐसा है जो जोत में आने लायक होने पर भी कभी जोता-बोया नहीं जाता। सैकड़े १९ भाग में जंगल है। इसके अलावे सैकड़े २९½ भाग तो खेती के काम आने लायक है ही नहीं। जिले के अन्दर जोत-जमीन के सैकड़े ३ भाग में दो फसल होती है।

सिंहभूमि जिले के भिन्न भिन्न भागों में खेती की दशा भिन्न-भिन्न है। जिले का उत्तर और पूरब का भाग मुख्यत: लम्बा और संकीर्ण भाग है, इसमें जो स्थान पहाड़ी नहीं है उसकी ऊँचाई समुद्रतल से ४०० से ७०० फीट है। इसके बाद की भूमि ऊँची होती हुई दक्षिणी सीमा के पास १,००० फीट तक ऊँची होती गयी है। पच्छिम और दक्षिण-पच्छिम की ओर जंगलों से भरा पहाड़ी भाग है। इस तरह जिले के तीन भाग हुए। पहला वह जो अपेक्षाकृत समतल भूमि है, दूसरा वह जहाँ पहाड़ियों के बाद घाटियाँ और घाटियों के बाद पहाड़ियाँ हैं और तीसरा वह जो जंगलों से भरा ऊँचा-नीचा पहाड़ी स्थल है। इस तीसरे भाग में पहले जंगली लोग खेती करते थे, जो जंगल काटकर एक हिस्से में खेती करके फिर दूसरे हिस्से में चले जाते थे। इस तरह जंगल को उजाड़ होने से रोकने के लिये बहुत बड़ा जंगली भाग सरकारी प्रबंध में ले लिया गया है। पहली समतल भूमि में धान की खेती होती है। दूसरे मध्य-भाग की नीची भूमि में धान और ऊँची भूमि में मकई, तेलहन और कभी-कभी धान होता है।

यहाँ की जमीन मुख्यत: तीन प्रकार की है—बेरा, बाद और गोरा। बेरा वह जमीन है जो घाटी के बिलकुल नीचे रहती है, जहाँ पहाड़ के ढालू भाग से बहुत-सी चीजें बहकर आती हैं और

खाद का काम करती हैं और जहाँ स्वाभाविक और कृत्रिम रूप से सिंचाई का प्रबन्ध रहता है। यह सबसे अच्छी जमीन है, जहाँ मुख्यतः अगहनी धान और कभी-कभी तीसी, जौ और दलहन भी होते हैं। ढालू पर की जमीन बाद कहलाती है, जिसमें भदई. धान, जौ, गेहूँ, दलहन आदि पैदा होते हैं। ऊँची जमीन, जहाँ हलकी मिट्टी होती है, गोरा कहलाती है। गाँव के पास की गोरा जमीन अच्छी होती है और इसमें दो फसल उपजती है। गाँव से दूर की गोरा जमीन अच्छी नहीं होती और इसमें कोदो, सिरगुजा वगैरह मामूली अन्न उपजाया जाता है। कोलहान में बेरा और बाद की यह भी विशेषता समझी जाती है कि वह घेरी हुई हो। पोराहाट में घिरी हुई धान की जमीन को दोन कहते हैं। इसके तीन भेद को बेरा या गड़हा, नाली या अधगड़हा और बाद कहा जाता है। धालभूम में जमीन को इन तीन भागों में बाँटते हैं—बहाल, कनाली और बाद। सबसे नीची जमीन को जहाँ धान खूब उपजता है बहाल कहते हैं। छोटे-छोटे नालों या धाराओं के बीच की धान की जमीन कनाली या नाली कहलाती है। साधारण तौर पर ऊँची पर गोरा से नीची जमीन को बाद कहते हैं। बाद के अन्दर बाधा और काली मिट्टी भी शामिल है। घर के पास की जमीन को बास्तु, उद्वास्तु और बारी कहते हैं।

खेती का काम आदिम जाति के लोग बड़ी लापरवाही से करते हैं, वे अधिक मेहनत करने को तैयार नहीं होते। लेकिन, हिंदू लोग खेती में मन लगाते हैं। जहाँ हिंदू लोग हैं, वहाँ खेती की दशा अच्छी है। जिले में खेती दिनों-दिन बढ़ रही है। पिछली आधी शताब्दी में यहाँ खेती तीन-चार गुना बढ़ गयी है। सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की जोत जमीन के सैकड़े

५३ भाग में भदई, करीब ३५ भाग में अगहनी और १७ भाग में रब्बी की फसल होती है।

खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती है। पहाड़ों के कारण जिले में सब जगह एक-सी वर्षा नहीं होती। आनन्दपुर और कोलहान में सबसे अधिक वर्षा होती है, लेकिन चक्रधरपुर और पोराहाट स्टेट में बहुत कम। नदियों और छोटी-छोटी धाराओं से सिंचाई का काम बहुत कम लिया जाता है। सिंचाई का काम अधिकतर बाँध से बाँधे हुए पहाड़ी जल से लिया जाता है। कोलहान सरकारी महाल में करीब एक हजार और पोराहाट में करीब चार सौ ऐसे जलाशय हैं। कुओं से सिंचाई का काम बहुत कम लिया जाता है। सन् १९३६-३७ की रिपोर्ट के अनुसार जिले की जोत-जमीन के सैकड़े १२$\frac{१}{४}$ भाग में सिंचाई का प्रबन्ध है।

उद्योगधंधा, पेशा और व्यापार

सन् १९३१ की गणना के अनुसार सिंहभूम जिले में हजार आदमियों में ३३६ आदमी काम करनेवाले और ६६४ आदमी उनके आश्रित हैं। काम करनेवालों में २२८ आदमी कृषि और पशु-पालन में, ४६ उद्योग-धंधे में, १२ व्यापार में, ७ खान में, ७ गमनागमन जैसे रेल, तार, डाक, सड़क आदि में, ३ डाक्टर, वैद्य, वकील, मुख्तार, पंडा-पुरोहित आदि के पेशे में, १ शासन में और ३२ विविध कार्यों में लगे हैं। लोगों की मुख्य जीविका खेती है। सैकड़े का हिसाब जोड़ने से यहाँ के काम करनेवाले व्यक्तियों में सैकड़े ६८ आदमी खेती करते हैं। भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधे और-व्यापार भिन्न-भिन्न जातियों के हाथ में हैं। इस जिले में ताँबा,

सोना, लोहा, मैंगनीज और अब्ररक की खानें हैं। यहाँ चूने का कंकड़ और बर्तन आदि बनाने के पत्थर भी मिलते हैं। लाह और रेशमी वस्त्र तैयार करना यहाँ के मुख्य कामों में है।

ताँबा—पुराने समय में ताँबा के खान-सम्बन्धी व्यवसाय इस जिले में बहुत उन्नत अवस्था में थे। इस बात का अनुसंधान करनेवाले अँगरेजों ने भी स्वीकार किया है। अँगरेजों ने यहाँ ताँबा की खान होने का अनुमान १८३३ ई० में लगाया। इसके बाद कुछ वर्षों तक धालभूम और सरायकेला के जमींदार ४०-५० मन कच्चा ताँबा खानों से निकलवाते रहे। १८५७ ई० में इस काम के लिये एक अँगरेजी कम्पनी कायम हुई। इसने लांडू और जामजोरा में काम शुरू किया और यह महीने में १२-१३ सौ मन ताँबा कलकत्ता भेजने लगी। खर्च अधिक पड़ने के कारण कम्पनी को अधिक दिनों तक काम चलाना मुश्किल हुआ, इसलिये वह १८५९ में तोड़ दी गयी। १८६२ ई० में फिर दूसरी कम्पनी २० लाख की पूँजी से कायम हुई, लेकिन इसने भी दो वर्षों के बाद काम बन्द कर दिया। इसके बाद जमींदार लोग अपने तरीके पर कुछ ताँबा निकालते रहे। सरकार के भूगर्भ-अनुसंधान विभाग की ओर से ताँबे के सम्बन्ध में समय-समय पर बहुत अनुसंधान होता रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यहाँ पचासों मील तक ताँबे की खान पड़ी है।

सोना—कहते हैं कि इस जिले में पहले सोना भी बहुत निकलता था। जहाँ-तहाँ छोटे-छोटे गड्हे हैं, जिन्हें लोग सोने की पुरानी खान बताते हैं। कहीं-कहीं कुछ ऐसे पत्थर मिलते हैं जिनके विषय में लोगों का कहना है कि ये सोना तैयार करने के काम में आते थे। १८८८ ई० में सिंहभूम के उत्तर सोनपत घाटी में कुछ सोना मिला था, जिससे यहाँ सोने की बड़ी खान

होने का अनुमान किया गया। इस ओर लोगों का ध्यान इतना गया कि दो वर्षों के अन्दर पाटकुम, पटपट, दधका, सोनपत आदि स्थानों में सोना निकालने के लिये ३२ कम्पनियाँ कायम हो गयीं, जिनकी कुल पूँजी करीब १½ करोड़ थी। लेकिन सोना मिलने में सफलता नहीं होने से देखते ही देखते सब कम्पनियाँ खतम हो गयीं। पर पुराने तरीके पर कहीं-कहीं नदियों की धारा में सोना निकालने का काम चल ही रहा है, गरचे इस काम में लोगों को तीन-चार आना रोज से अधिक नहीं मिलता। अब भी मनोहरपुर और अनकुआ के बीच तथा सोनपत और सौसल के बीच सोना मिल सकने का विशेषज्ञों का अनुमान है।

लोहा—कच्चा लोहा इस जिले में बहुत पाया जाता है। इसके लिये अधिक गहराई में जाने की जरूरत नहीं पड़ती। यहाँ की तुरमडीह, तलसा, कुदहा और हकगारा की खानें बंगाल आयरन स्टील-कम्पनी के अधिकार में हैं। सन् १९०८ में इन खानों में १८,९०७ टन कच्चा लोहा निकाला गया था और औसतन ६६६ आदमी रोजाना काम करते थे। मार्टिन कम्पनी और टाटा कम्पनी के खुलने पर लोहे की खान का काम बहुत बढ़ा है।

मैंगनीज—सन १९०७ ई० में यहाँ से २००० टन मैंगनीज निकाला गया था, जिसकी कीमत ३) प्रति टन थी। पीछे मार्टिन कम्पनी ने यहाँ मैंगनीज, लोहा और क्रोमाइट निकालने का लाइसेन्स लिया। मैंगनीज शीशा तैयार करने के काम में आता है। क्रोमाइट भी एक धातु है जो लोहा-जैसी चीज है।

अबरक—१९०७-०८ ई० में धालभूम में अबरक निकालने की चेष्टा की गयी थी, लेकिन सिर्फ ७-८ मन हरा अबरक निकला। अबरक के ऊपर कड़े पत्थर की तह रहने से इस काम में सफलता नहीं मालूम पड़ी।

सोपस्टोन—यह एक प्रकार का पत्थर है जो धालभूम में पाया जाता है। इससे बर्तन, खिलौने और मूर्त्तियाँ बनती है। १९०७-०८ में यहाँ इसकी ११ खानों में काम हो रहा था और इस काम में ३१० मजदूर लगे हुए थे। उस साल १६,५०० रुपये के बर्तन यहाँ तैयार हुए।

कंकड़—सतना स्टोन एण्ड लाइम कम्पनी ने लोटा पहाड़ी के कंकड़ से चूना तैयार करने का ठीका लिया है। सन् १९०७-०८ में यहाँ से २२५ टन चूना बाहर भेजा गया था, जिसकी कीमत २,००६ रु० थी। होर एण्ड कम्पनी को चाइबासा में चूना तैयार करने का ठीका है।

ताता आयरन एण्ड स्टील वर्क्स—ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड सन् १९०७ ई० में २$\frac{1}{3}$ करोड़ की पूंजी से कायम हुई थी। इसने उस समय मयूरभंज स्टेट और मध्यप्रान्त के रायपुर जिले में लोहे की खान का, झरिया में कोयले की खान का, और जबलपुर मे कंकड़ की खान का बन्दोबस्त लिया। कारखाने के लिये कालीमाटी के पास सुवर्णरेखा और सरकई नदी के किनारे २० वर्गमील जमीन ली गयी। इस समय यह हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा कारखाना है और दुनिया के भी बड़े-बड़े कारखानों में इसकी गिनती है। कारखाना के कारण यहाँ एक बड़ा शहर बस गया है जो जमशेदजी ताता के नामपर जमशेदपुर या तातानगर कहलाता है।

तसर—सिंहभूम और आसपास का भाग ही हिन्दुस्तान में तसर कपड़ा तैयार करने का मुख्य केन्द्र है। सिंहभूम में भी सबसे अधिक यह कोलहान में तैयार होता है, इस जिले में तसर का कोआ सबसे अच्छा होता है और सबसे अधिक परिमाण में पाया जाता है। भागलपुर, पटना, वीरभूम, हजारीबाग, बांकुरा

बर्द्वान, मुर्शिदाबाद, विलासपुर, सम्बलपुर, और दक्षिण के मराठा देश के लोग चाइबासा आकर कोआ खरीद ले जाते हैं। कोआ तैयार करने का काम मुख्यतः हो लोग करते हैं। केवल कोलहान में करीब ४,००० आदमी इस काम में लगे हुए हैं। कोए भिन्न-भिन्न तरह के होते हैं। इनमें बड़े और जंगली कोए को मूगा कहा जाता है।

लाह—लाह के कीड़े मुख्यतः पलास, बैर और कुसुम के पेड़ पर पाले जाते हैं। लाह भी इस जिले में काफी तैयार होती है।

तेल—जंगल के महुआ, करंज, नीम, सुतरनी, कुसुम आदि के फलों या बीजों से तेल तैयार करने का काम यहाँ बहुत होता है। यह काम मुख्यतः तामारिया लोगों के हाथ में है।

सूती कपड़ा—जहाँ तहाँ करघे पर मोटे सूती कपड़े और कम्बल तैयार होते हैं। टिकाऊ होने के कारण इन मोटे कपड़ों को आदिम जाति के लोग विशेष पसन्द करते हैं।

फैक्टरियाँ—इस जिले के अन्दर सन् १९३६ में कुल २३ फैक्टरियाँ थीं, जिनमें फैक्टरी-ऐक्ट लागू था। इनमें ६ चावल, दाल, आटा और तेल की, ५ इंजीनियरिंग की, ३ लोहा की, २ रेलवे की, १-१ प्रेस, बिजली और ताम्बा की, १ लकड़ी चीरने की और २ दूसरी-दूसरी चीजों की फैक्टरियाँ थीं।

व्यापार—इस जिले से लोहा और स्टील की चीजें, चूना, तसर का कपड़ा और कोआ, लाह, चमड़ा, सावै-घास, चावल, दलहन और तेलहन बाहर जाते हैं। बाहर से आनेवाली चीजों में कपड़ा, नमक, तम्बाकू, पीतल के बर्तन, चीनी, किरासन तेल, कोयला और आधुनिक सभ्यता की छोटी बड़ी चीजें हैं। जमशेदपुर, चाइबासा, चक्रधरपुर, जैंतगढ़, जगन्नाथपुर, कोतवारी, मनोहरपुर, नागरा, चाकुलिया आदि व्यापार के केन्द्र हैं।

आने-जाने के मार्ग

रेलवे—बंगाल नागपुर रेलवे की मुख्य लाइन सिंहभूमि जिला और सरायकेला तथा खरसावाँ स्टेट होकर पूरब से पच्छिम तक करीब १३० मील तक गयी है। इस लाइन पर पूरब की ओर से रेलवे स्टेशन इस प्रकार हैं—चकुलिया, धालभूमगढ़, घाटशिला, गालूडीह, राखा, असानबोनी, तातानगर-जंकशन, गमहरिया, सीनी-जंकशन, महलीमरूप, राज खरसावाँ-जंकशन, बाराबम्बो, चक्रधरपुर, लोटा पहाड़, सोनुआ, गोयलकेरा, पोसोयटा, मनोहरपुर और जरायकेला। पुरुलिया से एक शाखा लाइन सीनी-जंकशन तक आयी है। इस लाइन पर जिले के अन्दर कन्द्रा एक रेलवे स्टेशन है। कन्द्रा से एक लाइन गमहरिया स्टेशन में मिलायी गयी है। ताता जंकशन से एक लाइन दक्षिण की ओर मयूरभंज स्टेट को गयी है। जिले के अन्दर इस लाइन पर हालुदपोखर एक स्टेशन है। खरसावाँ जंकशन से भी एक लाइन दक्षिण की ओर गयी है। इस लाइन पर उत्तर की ओर से पंड्रासाली, चाइबासा, झिकपानी, केन्दपोसी, मलुका, दंगुआपोसी, नोआमुंडी, बाराजमदा और गुआ रेलवे स्टेशन हैं। मनोहरपुर से एक छोटी लाइन बुदा और नोटू पहाड़ी तक लायी गयी है।

सड़क—इस जिले में सड़कें बहुत थोड़ी हैं। सन् १९३५-३६ मे जिले के अन्दर सिर्फ ५७८ मील लम्बी सड़कें थीं, जिनमें ९ मील पक्की और शेष कच्ची सड़कें थीं। जिले की सबसे मुख्य सड़क राँची-चाइबासा-सड़क है। इसकी कुल लम्बाई ८८ मील है, पर सिंहभूमि जिले के अन्दर यह केवल ४७ मील पाड़ती है। यह चाइबासा से चक्रधरपुर होकर बन्दगाँव के पास जिले को छोड़ती है। जिले में अन्य कई मुख्य सड़कें हैं। (१) मयूरभंज सड़क

जिसकी लम्बाई ३६ मील है, चाइबासा से दक्षिण की ओर क्योंझर स्टेट की सीमा पर जैतगढ़ तक जाती है। (२) मेदिनी-पुर सड़क, चाइबासा से बेंद तक ७३ मील लम्बी है। यह पहले पूरब की ओर और पीछे दक्षिण-पूरब की ओर होकर मेदिनीपुर को गयी है। (३) पुरुलिया जानेवाली सड़क चाइबासा से सुवर्णरेखा नदी तक ३१ मील लम्बी है। (४) चाइबासा से कोतबारी जानेवाली सड़क २० मील लम्बी है। यह आगे मयूरभंज स्टेट को जाती है। (५) चाइबासा से आमदा स्टेशन जानेवाली सड़क १३ मील लम्बी है।

जलमार्ग—यहाँ की नदियों मे नावे नहीं चलतीं। दामोदर, सुवर्णरेखा और कोयल आदि नदियों में बरसात के दिनों मे घाट का प्रबन्ध रहता है। इन नदियों से लकडियाँ भी बहा ले जायी जाती हैं।

शिक्षा

सिंहभूम जिले में पहले पहल अंगरेजी सरकार ने खास कर हो लोगों के लिये चाइबासा में एक स्कूल खोला था, जिसमें अंग-रेजी और हिन्दी की पढ़ाई होती थी। लेकिन स्कूल की उन्नति असन्तोषजनक बताकर १८५१ ई० में वह बन्द कर दिया गया। इसके बदले में धालभूम के अन्दर घाटशिला में, कोलहान स्टेट के अन्दर चाइबासा, चर्री और जैंतगढ़ में तथा सरायकेला स्टेट के अन्दर उसके सदर स्थान में बंगला स्कूल खोले गये। कोला-हान में थोड़े से को छोड़ बाकी सभी लोगों का हिन्दी से सम्बन्ध था, क्योंकि देहातों में कागजात हिन्दी में लिखे जाते थे, इसलिये ये बंगला स्कूल भी नहीं चल सके। कुछ दिनों के बाद

फिर स्कूल खुले। सन् १८७१-७२ में यहाँ ३४ सरकारी मिड्ल और प्रायमरी स्कूल थे जिनमें सब मिलाकर १,०२२ लड़के पढ़ते थे। इनके अलावे ४३ खानगी स्कूल और ३ मिशन के स्कूल थे। दूसरे साल जार्ज कैम्पवेल की वर्नाकुलर शिक्षा की योजना लागू होने पर सरकारी स्कूल ६३ हो गये, जिनमें कुल ३,१४४ लड़के पढ़ते थे। सन् १९०८ में आकर सरकारी और गैरसरकारी सब मिला कर ४२३ स्कूल हुए जिनमें लड़कों की संख्या १४,६३० हुई।

जिले के अन्दर सन् १९०८ में प्राइमरी स्कूल ४१० थे। सन् १९३५-३६ तक घट बढ़ कर ठीक उतने ही स्कूल रहे। मगर जहाँ पहले इन स्कूलों में १३,२९९ लड़के थे वहाँ अब २०,६१२ हो गये। प्राइमरी स्कूलों के अन्दर संस्कृत प्राइमरी पाठशालाएँ, उरदू प्राइमरी मकतब और कन्या पाठशालाएँ भी शामिल हैं।

सन् १९०८ में यहाँ मिड्ल इंगलिश स्कूल ५ और मिड्ल वर्नाकुलर स्कूल ७ थे, पर सन् १९३७-३८ आकर मिड्ल इंगलिश स्कूल २२ हुए हैं और मिड्ल वर्नाकुलर घट कर ४ रह गये।

सन् १९०८ मे जिले के अन्दर सिर्फ एक हाई इंगलिश स्कूल था—जिला स्कूल चाइबासा ; मगर इस समय तक चार और हाई स्कूल खुल गये हैं, जो जमशेदपुर, चक्रधरपुर, बहरागोरा और सरायकेला में हैं।

सन् १९०८ ई० में जिले के अन्दर लड़कियों के लिये २९ प्राइमरी स्कूल थे जिनमें एक अपर प्राइमरी स्कूल था। इन स्कूलों में कुल ८७३ लड़कियाँ पढ़ती थीं। इस समय जिले मे लड़कियों के लिये दो मिड्ल इंगलिश स्कूल हैं। एक साकची (जमशेदपुर) में और दूसरा चाइबासा में। सन् १९३५-३६ में स्कूलों के अन्दर इस जिले में ३,६७८ लड़कियाँ पढ़ती थीं।

इस जिले में कई औद्योगिक स्कूल भी हैं जिनमें कपड़ा बिनना, खिलौने बनाना, पत्थर और लकड़ी पर चित्रकारी करना, लोहार और बढ़ई का काम तथा सीना-पिरोना आदि सिखाये जाते हैं।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार सिंहभूम जिले में पढ़े-लिखे पुरुषों की संख्या ३६,२९२ और पढ़ी लिखी स्त्रियों की संख्या ४,८४४ है। अँगरेजी पढ़े-लिखे पुरुष ९,८१८ और स्त्रियाँ १,२०३ हैं। प्रति सैकड़े का हिसाब जोड़ने से इस जिले में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या सैकड़े करीब ४·४२ है। सन् १९३५-३६ में इस जिले के अन्दर २९,४३५ हिन्दुस्तानी लड़के-लड़कियों के नाम स्कूलों में दर्ज थे जो कुल जनसंख्या के सैकड़े ३ हैं।

शासन-प्रबन्ध

सिंहभूम छोटानागपुर कमिश्नरी का एक जिला है। कमिश्नरी के और जिलों की तरह यह जिला भी ननरेगुलेटेड या सेड्यूल्ड डिस्ट्रिक्ट समझा जाता है। यहाँ कुछ मामलों में साधारण कानून लागू नहीं किये जाते, बल्कि विशेष कानून लागू किये जाते हैं। यहाँ का जिला अफसर कलक्टर मजिस्ट्रेट नहीं कहलाकर डिपटी कमिश्नर कहलाता है। जिला दो सबडिविजनों में बँटा है—सदर सबडिविजन और धालभूम सबडिविजनल। जिले का सदर दफ्तर चाइबासा में है। यहाँ शासन कार्य में डिपटी कमिश्नर की सहायता के लिये कई डिपटी और सबडिपटी कलक्टर रहते हैं। सबडिविजनों का शासन सबडिविजनल अफसरों द्वारा होता है जिनकी सहायता के लिये सबडिपटी कलक्टर और मुन्सिफ होते हैं।

न्याय—जिले का फौजदारी मामला सुनने का काम जिला अफसर डिपटी कमिश्नर को है जिसे फौजदारी दण्डविधान की ३०वीं धारा के अनुसार विशेष अधिकार रहता है। उसकी सहायता के लिये डिपटी मजिस्ट्रेट रहते हैं जो पहले, दूसरे और तीसरे इन तीन दरजों के होते हैं। सबडिविजनों के लिये सब-डिविजनल अफसर और सबडिपटी मजिस्ट्रेट होते हैं। जिले में एक ही व्यक्ति सेशन जज की हैसियत से फौजदारी मामले को सुनता है और डिस्ट्रिक्ट जज की हैसियत से दीवानी मामले को। फौजदारी मामले को सुनने के लिये मुन्सिफ भी रहते हैं। छोटे-छोटे मामलों को देखने के लिये कई जगहों में आनरेरी मजिस्ट्रेट है।

पुलिस—पुलिस के काम के लिये जिला ११ थानों में बँटा है। सदर सबडिविजन में ३ और धालभूम सबडिविजन में ८ थाने हैं। जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है। इसके अधीन डिपटी और असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट रहते हैं। थाने का अफसर इन्सपेक्टर या सब-इन्सपेक्टर होता है जो दारोगा भी कहलाता है। थाने में दारोगा के अधीन हवलदार और कई कानिस्टबिल होते हैं। कोलहान में मुण्डा और मानकी लोग भी पुलिस का काम करते हैं। गाँव के सरदार को मुण्डा और कई गाँवों के सरदार को मानकी कहते हैं। मानकी का इलाका पीर कहलाता है, पर एक पीर में कई मानकी भी रहते है। पहले ये ही लोग यहाँ पुलिस का काम करते थे, पर पुलिस की नियुक्ति के बाद इनका काम अब बहुत घट गया है। पोराहाट में भी पहले इसी तरह का इन्तजाम था, पीछे चौकीदारी प्रथा जारी हुई। तब से यहाँ के मुण्डा और मानकी का काम चौकीदारों से काम कराना और थाने में रिपोर्ट भेजना

म्युनिसिपैलिटियाँ—चाइबासा में मुनिसिपैलिटी सन् १८७५ ई० में कायम हुई थी। चक्रधरपुर में १९१८ ई० में तथा जुगसलाई और जमशेदपुर में १९२४ ई० में म्युनिसिपैलिटियाँ कायम हुई थीं। पिछली दो म्युनिसिपैलिटियों को नोटिफाइड एरिया कमिटी कहते हैं। इन म्युनिसिपैलिटियों के मेम्बर क्रम से १५,१०,८ और ११ हैं।

चाइबासा (सदर) सबडिविजन

इस सबडिविजन के अन्दर जिले का पच्छिमी भाग है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल २,७१९ वर्ग-मील और जनसंख्या ५,३५,२०७ है। इसमें चाइबासा और चक्रधरपुर ये दो शहर और १,५८२ गाँव हैं। यहाँ चाइबासा, चक्रधरपुर और मनोहरपुर ये तीन थाने हैं। चाइबासा का रेवेन्यू थाना कोलहान कहलाता है। सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं :—

चाइबासा—यह शहर २२°३३' उत्तरी अक्षांश और ८५°४९' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर दफ्तर है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १०,७८५ है जिसमें ८,०३१ हिन्दू, १,६९९ मुसलमान, ५९५ ईसाई, ४५४ आदिम जाति, ५ सिक्ख और १ जैन हैं। यह शहर रोरो नदी के किनारे बसा है। दिसम्बर के तीसरे हफ्ते से यहाँ एक महीने के लिये मेला लगता है। यह स्थान तसर के व्यवसाय के लिये प्रसिद्ध है। चाइबासा के नाम के सम्बन्ध में कई तरह का अनुमान किया जाता है। चाइबासा का अर्थ आराम का स्थान, छाया का स्थान, चोरों का स्थान या

चाई नामक एक मुंडा का स्थान लगाया जाता है। चाइबासा थाने की जनसंख्या ३,३५,६४४ है। इस थाने में २,३०,०३६ आदिम जाति, १,००,३९८ हिन्दू, ३,०२१ मुसलमान, २,१७० ईसाई और १६ अन्य जाति के लोग हैं।

आनन्दपुर—पोराहाट राज्य के अन्दर यह एक जागीर है जिसका रकबा १८८ वर्गमील है। यह जागीर पोराहाट के राजा काला अर्जुन सिंह के दूसरे लड़के को मिली थी। इस वंश के लोग ठाकुर कहलाते हैं।

केरा—केरा की जागीर पोराहाट के राजा अर्जुन सिंह के छोटे लड़के अजम्बर सिंह को मिली थी। इसका रकबा ७५ वर्गमील है।

केसनागढ़—कोलहान के बिलकुल दक्षिण-पूरब में यह एक गाँव है जहाँ दूर तक फैला हुआ मिट्टी का एक टील्हा है जो किले का भग्नावशेष मालूम पड़ता है। कहते हैं कि यह राजा केसना का किला था।

कोलहान—कोलहान एक गवर्न्मेन्ट स्टेट है जिसका सदर आफिस चाइबासा में है। यह स्टेट १९५५ वर्गमील के रकबे में है। यहाँ के अधिवांश बाशिन्दे हो जाति के लोग हैं जो कोल की एक शाखा है। कोल से ही कोलहान शब्द बना है।

कोहलान पीर—दे० पोराहाट।

गोयलकेरा—कोलहान में यह एक गाँव है जहाँ रेलवे स्टेशन है। यहाँ से लकड़ी बहुत बड़ी तायदाद में बाहर भेजी जाती है। यहाँ लाह का कारबार भी होता है। यहाँ से ४ मील की दूरी पर पहाड़ के अन्दर एक लम्बी सुरंग है जिससे होकर रेलगाड़ी जाती है।

चक्रधरपुर—पोराहाट स्टेट के अन्दर संजय नदी के किनारे यह शहर है, जहाँ १६३१ की गणना के अनुसार ११,१६१ आदमी रहते हैं। इनमें ७,५१३ हिन्दू, २,२३८ मुसलमान १,०५४ ईसाई, ३८१ आदिम जाति, और ५ सिक्ख हैं। यहाँ की आबादी चाइबासा से अधिक है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी, हाई स्कूल, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, डाक और तार घर, थाना, डाकबंगलो, पब्लिकवर्क्स-डिपार्टमेन्ट-बंगलो, रोडसेस-इन्सपेकशन-बंगलो, पोराहाट के राजा का महल और लाह की कई फैक्टरियाँ हैं। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ से चावल, तेलहन, लाह, तसर का कोआ, चमड़ा, साबै घास, चूने का कंकड़ और मैंगनिज बाहर भेजा जाता है। यहाँ बी० एन० रेलवे के डिस्ट्रिक्ट ट्रैफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट का आफिस है। यहाँ रेलवे अफसरों के रहने के लिये बहुत से बँगले हैं। उनलोगों का एक शहर जैसा चकला बस गया है। चक्रधरपुर में ईसाइयों का भी जबरदस्त अड्डा है। चक्रधरपुर थाने की जनसंख्या १,३३,३३५ है, जिसमें ७७,१७३ आदिम जाति, ४६,११३ हिन्दू, ६,६७७ ईसाई, ३,३६७ मुसलमान और ५ अन्य जाति के लोग हैं।

चैनपुर—पोराहाट स्टेट के अन्दर यह एक जागीर है जिसका रकबा १०½ मील है। सैनिक सहायता पहुँचाने के लिये यह जागीर स्टेट की ओर से रामचन्द्र महापात्र नामक एक व्यक्ति को मिली थी।

जगन्नाथपुर—यह गाँव कोलहान में है। चाइबासा से झंकपानी होकर यहाँ की दूरी २४ मील है। यहाँ मिडल स्कूल, अस्पताल, डाकघर, रोडसेस-इन्सपेकशन-बंगलो और फारेस्ट-बंगलो हैं। पोराहाट के राजा जगन्नाथ सिंह ने यहाँ एक किला बनवाया था जिसका चिन्ह अब भी देखने में आता है।

जैंतगढ़—कोलहान में यह गाँव वैतरणी नदी के किनारे चाइबासा से ३६ मील दक्षिण है। यह व्यापार का एक केन्द्र है। पोराहाट के एक पुराने राजा काला अर्जुन सिंह ने क्योंझर के चमकपुर नामक स्थान को जीत कर यहाँ एक गढ़ बनवाया था। गढ़ वैतरणी नदी के किनारे एक सुन्दर स्थान पर बना है, जैंतगढ़ से ४ मील पच्छिम वैतरणी के ही किनारे रामतीर्थ नाम का एक तीर्थस्थान है। कहते हैं कि रामचन्द्रजी लंका जाते समय यहाँ ठहरे थे। यहाँ एक कुंड है जिसमें ९ फीट ऊँचे जलप्रपात से पानी आता है। नदी के उस पार जैंतगढ़ के सामने चम्पा नामक स्थान में क्योंझर स्टेट का सबडिविजनल आफिस है।

बाँद्गाँव—पोराहाट स्टेट के अधीन यह एक छोटा स्टेट है जो जिले के बिलकुल उत्तर-पच्छिम भाग में है। इसका रकबा २५ वर्गमील है।

वेणुसागर—कोलहान के दक्षिण-पूरब भाग में मयूरभंज की सीमा पर यह एक गाँव है। गाँव के उत्तर एक बड़ा तालाब है जिसको वेणुसागर कहते हैं। इसी के नाम पर गाँव का भी नाम पड़ा। तालाब के किनारे बहुत से मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। ये मंदिर ७ वीं सदी के बताये जाते हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ मिलती हैं। इनमें एक जैनमूर्त्ति, एक जैन या बौद्ध मूर्त्ति और बाकी सब शिव, दुर्गा, गणेश आदि की मूर्त्तियाँ हैं। कहते हैं कि इस तालाब को केसनागढ़ के राजा केसना के पुत्र राजा वेणु ने बनवाया था। तालाब के पास एक छोटे गढ़ का भग्नावशेष दिखायी पड़ता है।

पोराहाट—पोराहाट स्टेट जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ४०

मील और पच्छिम से पूरब तक अधिक से अधिक चौड़ाई ३६ मील है। इसके अधीनस्थ स्टेट आनन्दपुर, केरा, बाँदगाँव और चैनपुर लेकर इसका क्षेत्रफल ८१३ वर्गमील है। यहाँ के राजा पहले सिंहभूम के राजा कहलाते थे। इस राजवंश की स्थापना के सम्बन्ध में तरह-तरह की दन्तकथाएँ कही जाती हैं, लेकिन, इस राजवंश के लोग अपने को राजपूत बताते हैं। इस वंश के प्रथम राजा काशीनाथ सिंह और द्वितीय राजा छत्रपति सिंह बताये जाते थे। छत्रपति सिंह के लड़के काला अर्जुन सिंह हुए। इनके छोटे लड़के माधव प्रताप सिंह आनन्दपुर जाकर बसे और बड़े लड़के जगन्नाथ सिंह राजा हुए। इनके लड़के पुरुषोत्तम सिंह हुए। इन्होंने अपने छोटे लड़के विक्रम सिंह को राज्य का वह भाग दिया जो आज सरायकेला कहलाता है। विक्रम सिंह के वंशज ही आज सरायकेला और खरसावाँ के राजा हैं। इनके बड़े भाई अर्जुन सिंह पोराहाट के राजा हुए। अर्जुन सिंह के दो लड़के हुए अमर सिंह और अजम्बर सिंह। अमर सिंह तो राजा हुए और अजम्बर सिंह को केरा की जागीर मिली। अमर सिंह के बाद जगन्नाथ सिंह गद्दी पर बैठे। इनके समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल बिहार की दीवानी मिल चुकी थी और वह इस भूभाग पर अपना आधिपत्य जमा रही थी। १८२० ई० में यहाँ के राजा घनश्याम देव को अँगरेजी सरकार की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। घनश्याम देव के बाद क्रम से अच्युत सिंह, चक्रधर सिंह और अर्जुन सिंह राजा हुए। अर्जुन सिंह सिपाही विद्रोह में भाग लेने से १८५६ ई० गिरफ्तार कर बनारस भेज दिये गये। राज्य के कुछ हिस्सों को अँगरेजों ने अपने सहायकों में बाँटा और बाकी हिस्सा सीधे अँगरेजी सरकार के प्रबन्ध में आ गया। १८६५ ई० में राज्य अर्जुन सिंह के बेटे

कुमार नरपत सिंह को दिया गया। राज्य के जिस भाग पर सीधे राजा का अधिकार है वह खास पोराहाट कहलाता है और १० पीरों (इलाकों) में बँटा है—अरिंग, चक्रधरपुर, दुरका, गोयलकेरा, गुदरी, झिलरूआन, कुंदरुगुट्टु, लगुरा, पोराहाट और सोंगरा। इनमें चक्रधरपुर और पोराहाट को सदन्त पीर और बाकी को कोलहान पीर कहते हैं। कोलहान पीर का रकबा २१४ वर्गमील और सदन्त पीर का १०४ वर्गमील है। राज्य की तहसील करीब ४२ हजार रुपया है।

मनोहरपुर—जिले के दक्षिण-पच्छिम भाग में कोयना और और कोयल नदी के संगम के पास इस स्थान में रेलवे स्टेशन, थाना और फारेस्ट-बंगलो हैं। यहाँ से लकड़ियाँ बहुत बड़ी तायदाद में बाहर भेजी जाती हैं। मनोहरपुर थाने की जनसंख्या ५६,२२८ है, जिसमें ४१,८५३ हिन्दू, १७,७६८ आदिम जाति, ६,००६ ईसाई, ५६५ मुसलमान और ३ अन्य जाति के लोग हैं।

सदन्तपीर—दे० पोराहाट।

सारन्द—जिले के दक्षिण-पच्छिम में जंगलों से भरा यह एक पहाड़ी भाग है। इसका रकबा ४५५ वर्गमील है जिसके ३३५ वर्गमील में रिजर्व्ड फारेस्ट है और बाकी कोलहान के सारन्द पीर के अन्दर है। इसकी ऊँचाई ३०० फीट है।

सारन्दगढ़—जहाँ पोंगा और कोयना नदी मिलती हैं उससे थोड़ी ही दूर। ५८ पोंगा नदी के किनारे छोटानागरा गाँव में यह एक टूटा-फूटा गढ़ है जो सारन्द के किसी पुराने राजा का बताया जाता है। मनोहरपुर से इसकी दूरी २० मील दक्षिण-पूरब है। यहाँ गाय की एक मूर्त्ति है जिसे हिन्दू लोग पूजते हैं। पास के जंगल में लोहे के दो बड़े नगारे है। कहते हैं कि जब राजा अपनी प्रजा को किले में बुलाना चाहता था तो इन्हें बजवाता था।

धालभूम (दालभूम) सबडिविजन

धालभूम को कुछ लोग दालभूम भी कहते हैं। धालभूम एक स्टेट है, करीब-करीब उसी स्टेट भर का रकबा अभी हाल में एक सबडिविजन बना दिया गया है। धालभूम पहले मेदिनीपुर जिले के अन्दर था। १८३३ ई० में यह मानभूम जिले में मिलाया गया। इसके बाद १८४६ ई० से यह सिहभूम जिले में आ गया। इस सबडिविजन का सदर आफिस घाटशिला में है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इसका क्षेत्रफल १,१६० वर्गमील और जनसंख्या ३,६४,५६५ है। इसके अन्दर जमशेदपुर और जुगसलाई ये दो शहर और १,४३१ गाँव हैं। यहाँ घाटशिला, बिस्टोपुर, जुगसलाई, साकची, गोलमुरी, बहरागोरा, कालिकापुर और स्वासपुर ये ८ थाने हैं। इस सबडिविजन के मुख्य स्थान नीचे लिखे हैं—

धालभूमगढ़—इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है। यहाँ पहले धालभूम स्टेट के राजा रहते थे। यहाँ के राजा अपने नाम के आगे धाल उपाधि लगाते थे। धालराजाओं के कारण ही इस भूभाग का नाम धालभूम पड़ा। इस स्टेट का रकबा १,१८७ वर्गमील है। स्टेट की १३ वर्गमील जमीन मेदिनीपुर जिले में भी पड़ती है। इस स्टेट के मालिक अपने को राजपूत बताते हैं। अँगरेजों ने पहले-पहल १७६७ ई० में इस स्टेट पर चढ़ाई की थी और यहाँ के राजा को वे गिरफ्तार कर मेदिनीपुर ले गये थे। उसकी जगह पर उन्होंने जगन्नाथ धाल को राजा बनाया पर उसके साथ भी उनका बनाव नहीं हो सका, इससे वह भी राज्य से हटा दिया गया और उसकी जगह वैकुंठ धाल राजा बनाया गया। पर प्रजा उससे सन्तुष्ट नहीं थी। इसलिये फिर जगन्नाथ धाल ही गद्दी पर बैठाया गया और उसके

साथ १८०० ई० में राज्य का दमामी बन्दोबस्त हुआ। वह १२ रानियों और २ नाबालिग लड़कों को छोड़कर मरा। बड़े लड़के रामचन्द्र धाल ने सयाने होने पर १८८३ ई० में कोर्ट आफ वार्ड्स से अपना राज्य वापस लिया, पर वह १८८७ ई० में मर गया। उसके बाद शत्रुघ्न धाल राजा हुआ।

घाटशिला—यह स्थान सुवर्ण रेखा नदी के किनारे है जहाँ धालभूम सबडिविजन का सदर आफिस है। यहाँ बी० एन० रेलवे का स्टेशन भी है। यहाँ पहले धालभूम राजा की राजधानी थी। राजा ने अब अपना महल नरसिंहगढ़ में बनवाया है। घाटशिला में राज्य की अधिष्ठात्री देवी रंकिनी का मन्दिर है। कहते हैं कि रंकिनी का मंदिर पहले महुलिया के पास एक पहाड़ी में था जहाँ नरबलि चढ़ायी जाती थी। सिंहभूम के डिपटी कमिश्नर डा० विलियम हेज ने नरबलि रोकने के लिये रंकिनी की मूर्त्ति घाटशिला थाना के अहाते में मँगा ली। भादो में यहाँ एक 'बिन्दा परब' मनाया जाता है और इस अवसर पर १५ दिनों तक मेला लगता है। आसिन में इंद्र परब मनाया जाता है जब कि साल के एक लम्बे खम्भे पर धालभूम के राजा एक छाता लटकाते हैं। दसवें दिन खम्भा उखाड़ कर पानी में दे दिया जाता है। घाटशिला से ६ मील उत्तर धरगिरि में २० फीट ऊँचा जलप्रपात है, और ३ मील उत्तर-पच्छिम पंच-पाण्डव नामक स्थान में एक पत्थर पर पाँच आदमियों की मूर्त्ति खुदी मिलती है। घाटशिला से ८ मील की दूरी पर टिकरी में पत्थर के बर्तन बनते हैं। घाटशिला थाने की जनसंख्या १,१७,०८२ है।

कालिकापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने की जनसंख्या ६४,६८७ है, जिसमें ४८,४४१ हिन्दू, १५,१३० आदिम जाति, ६६६ मुसलमान और १५० ईसाई हैं।

स्वर्णरेखा नदी का एक दृश्य (सिंहभूमि)
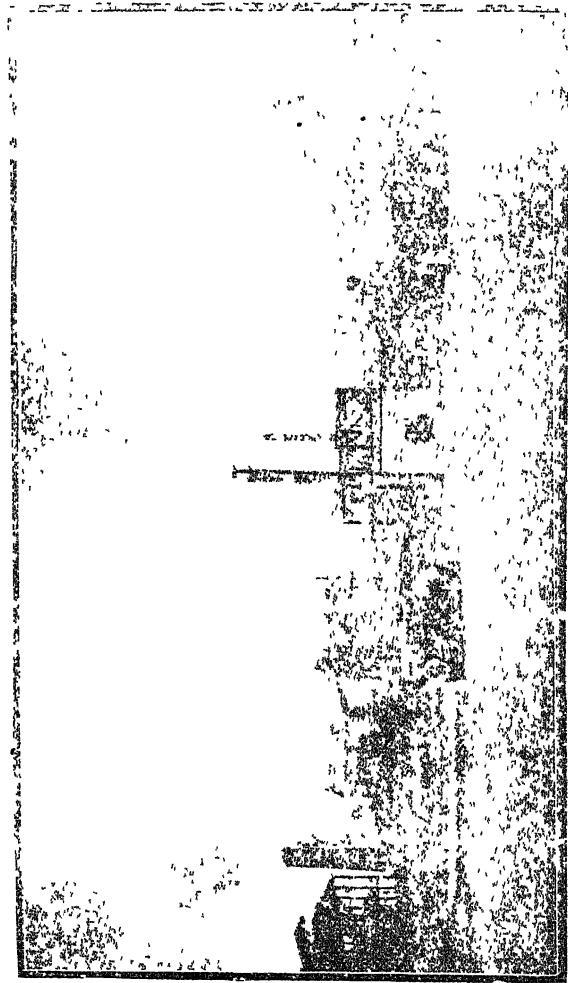
ताता कम्पनी के कारखाने का एक दृश्य, जमशेदपुर (सिहभूम)

कालिमाटी—दे० जमशेदपुर।

गोलमुरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने के २६,५६६ आदमियों में १७,१३१ हिन्दू, ३,६२६ आदिम जाति, ३,१३३ मुसलमान, १,४३४ ईसाई और ६७२ दूसरे लोग हैं।

चकुलिया—जिले की पूर्वी सीमा पर इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है। यहाँ के जमींदार ने अँगरेजों को पहले-पहले धालभूम में घुसते समय बड़ी बहादुरी से रोका था।

जमशेदपुर—कालीमाटी रेलवे स्टेशन के पास पहले इस नाम का एक गाँव था। सन १६०७ में ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी ने यहाँ एक बहुत बड़ा कारखाना खोला जो आज हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा कारखाना है। कारखाने के कारण अब यहाँ एक बड़ा शहर बस गया है जो जमशेदजी ताता के नाम पर जमशेदपुर या तातानगर कहलाता है। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम कालीमाटी से बदल कर तातानगर जंकशन हो गया है। यहाँ से एक लाइन मयूरभंज की ओर गयी है। जनसंख्या के हिसाब से जमशेदपुर बिहार के शहरों में चौथा स्थान रखता है। १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ के ८३,७३८ आदमियों में ६०,४९४ हिन्दू, १३,७६७ मुसलमान, ३,७४८ ईसाई, ३,१३० सिक्ख, २,१३३ आदिम जाति, १७५ जैन और २६१ दूसरे लोग हैं। यहाँ एक हाई स्कूल है। म्युनिसिपैलिटी की जगह पर यहाँ नोटिफाइड एरिया कमिटी है।

जुगसलाई—जमशेदपुर के पास ही यह एक शहर है जहाँ की जनसंख्या ८,७२१ है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी के स्थान में नोटिफाइड एरिया कमिटी है। यहाँ थाना आफिस भी है। इस थाने के २९,८७२ आदमियों मे १६,८०७ हिन्दू, ८,७६५ आदिम जाति, २,९३७ मुसलमान, ३३१ ईसाई, और २०२ अन्य जाति के लोग हैं।

तातानगर—दे०—जमशेदपुर।

बहरा गोरा—चकुलिया स्टेशन से २० मील दक्षिण यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ थाना और हाईस्कूल है। इसके पास कलसीमोहन गाँव में एक कुंड है जहाँ बारुणी के अवसर पर दो हफ्ते तक मेला लगता है। खानमोंदा गाँव में लोहा या ताम्बा गलाने के पुराने बड़े बर्तन दिखाई पड़ते हैं। बहरागोरा थाने के ७२,६३१ आदमियों में ५२,४६६ हिन्दू, १६,६६३ आदिम जाति, १६० मुसलमान और ६ ईसाई हैं।

बिस्टोपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने के ३०,८७६ आदमियों में २१,३३५ हिन्दू, ५,८३२ मुसलमान, १,७०८ ईसाई, २३८ आदिम जाति और १,७६३ दूसरे लोग हैं।

रुआम—गाल्डीह स्टेशन से कुछ दूरी पर इस स्थान में कुछ पुराने खंडहर दिखाई पड़ते हैं। मालूम पड़ता है कि यहाँ पहले जैनों का निवास-स्थान था। पर कुछ लोग बताते हैं कि यहाँ रुआम नामक राजा रहता था और उसका यहाँ किला था।

साकची—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने के २३,५६२ आदमियों में १७,४२९ हिन्दू, ४,०४८ मुसलमान, ७६६ आदिम जाति, ४६७ ईसाई और ८२२ अन्य जाति के लोग हैं।

स्वासपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस थाने के ३०,०८९ आदमियों में २६,१६२ हिन्दू, ३,६२८ आदिम जाति, २४१ मुसलमान, १९ ईसाई और ६ अन्य जाति के लोग हैं।

हालुद या हल्दी पोखर—तातानगर जंकशन से १२ मील दक्षिण यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ से चमड़ा और साबै घास बाहर जाती है। यहाँ से ५ मील की दूरी पर दासी और कदल नामक स्थान में पत्थर के बर्त्तन बनते हैं।

सिंहभूम जिले की (देशी राज्य छोड़कर) कुछ प्रमुख हिन्दू और आदिम जातियों की जन-संख्या (सन् १९३१)

जाति	संख्या	जाति	संख्या
हो	३,०१,१५८	बनिया	४,५४३
संथाल	१,०८,८९०	डोम	४,४४४
भूमिज	५३,०५८	महली	४,४०६
मुंडा	५०,९६३	चमार	४,३३५
गौरा	४६,८४६	हजाम	३,८२९
ताँती	३८,०३८	केवट	३,२६९
ग्वाला	३५,२८५	माली	३,२०२
कुरमी	२२,४६३	खंडैत	२,६९१
भुइयाँ	१८,२७३	हारी	२,६४७
कमार	१७,४०१	कहार	१,६२२
ब्राह्मण	१५,९००	जोलाहा	१,४८०
कुम्हार	१३,८५५	मल्लाह	१,३८०
राजपूत	१२,९७७	बरही	१,३२३
तेली	१२,१८८	करमाली	१,२५९
ओराँव	१०,१११	बथूरी	,९९८
कायस्थ	९,६४७	करन	८९६
घासी	७,५८२	सवर	७६२
गोंद	७,०२६	कोरवा	२२३
धोबी	५,८८५	मोची	७६
खरिया	५,८७९	बिरहोर	१२

खरसावाँ

खरसावाँ राज्य सिंहभूम जिला के अन्दर २२°४१' और २२° ५३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°३८' और ८५°५५' पूर्वीय देशान्तर के बीच है जिसका क्षेत्रफल १५३ वर्गमील है। इस का सदर आफिस खरसावाँ इस नाम के स्टेशन से कुछ ही दूरी पर सोना नदी के किनारे है। इस राज्य के उत्तर में राँची और मानभूम जिला, पूरब में सरायकेला राज्य, दक्षिण में सिंहभूम का कोलहान गवर्न्मेन्ट स्टेट और पच्छिम में पोराहाट स्टेट हैं। उत्तर की ओर ऊँची पर्वतश्रेणी है जिसकी ऊँचाई समुद्रतल से २,४३१ फीट है। राज्य के अन्दर भी जहाँ-तहाँ पहाड़ियाँ हैं। दक्षिण की ओर संजय नदी इसकी प्राकृतिक सीमा का काम करती है। इसकी दो सहायक नदियाँ बिञ्जय और संकुआ राज्य के अन्दर उत्तर-पच्छिम से दक्षिण-पूरब की ओर बहती है।

पोराहाट (पूर्वप्रसिद्ध सिंहभूम) के राजा पुरुषोत्तम सिंह ने अपने छोटे लड़के विक्रम सिंह को अपने राज्य का एक छोटा-सा हिस्सा सिंहभूम पीर दिया था जिसका रकबा ५० वर्गमील था। इन्होंने पाटकुम के राजा से और कई स्थानों के साथ ही खरसावाँ और असनतलिया पीरों को भी जीत कर अपने अधिकार में किया। विक्रम सिंह ने खरसावाँ पीर अपने दूसरे लड़के को और असनतलिया पीर तीसरे लड़के को दिया। खरसावाँ के वर्त्तमान राजा इस दूसरे लड़के के वंशज हैं, असनतलिया पीर पीछे पुरुष-उत्तराधिकारी के अभाव से खरसावाँ राज्य में ही मिला लिया गया। अंगरेजों के साथ इस राज्य का सम्बन्ध १७९३ ई० में हुआ।

खरसावाँ ने कर कभी नहीं दिया, लेकिन अँगरेजों का

आधिपत्य स्वीकार किया। कोलहान को अपने कब्जे में कर लेने पर अँगरेजों ने सरायकेला की तरह इस पर भी पूरा नियन्त्रण रखना चाहा और इसे चाइबासा के प्रिन्सपल असिस्टेन्ट के अधीन कर दिया। लेकिन अब खरसावाँ बृटिश भारत का भाग नहीं समझा जाता है। बृटिश सरकार के साथ इसका सम्बन्ध १८६६ ई० की सनद से कायम है। राज्य के लिये अलग कोर्ट, जेल, थाना और पुलिस है। थाना खरसावाँ और कुचाई में हैं। गाँव के प्रधान और कोतवाल गाँव की पुलिस का काम करते हैं। खरसावाँ और सरायकेला सन् १९३४ के अप्रैल से ईस्टर्न स्टेट्स एजेन्सी के अधीन कर दिये गये हैं।

खरसावाँ में १९७ गाँव हैं। सन् १८८१ में यहाँ की जन-संख्या ३१,१२७ थी। सन् १९३१ ई० में यह ४३,०९७ हो गयी है। यहाँ एक वर्गमील में औसतन २८२ आदमी रहते हैं। धर्म के हिसाब से यहाँ ३०,१९६ हिन्दू, १२,२४५ आदिम जाति, ५८२ मुसलमान, ५३ ईसाई और २१ सिक्ख हैं। यहाँ लोहा, और ताम्बा की खाने हैं। सोना नदी के बालू से कुछ सोना निकाला जाता है। चूना का कंकड़ और बर्तन बनाने के पत्थर भी मिलते हैं। तसर का कोआ और लाह भी यहाँ तैयार होती हैं। बी० एन० आर० की लाइन इस राज्य होकर गयी है, और इसके अन्दर महलीमरूप, राज-खरसाँवा-जंकसन और बारा-बम्बो ये तीन स्टेशन हैं। खरसावाँ-जंकसन से एक लाइन दक्षिण की ओर गयी है। राज्य के अन्दर कई मिडूल और प्राइमरी स्कूल हैं।

सरायकेला

सरायकेला राज्य एक तरह से सिंहभूम जिला के अन्दर २२°२९' और २२°५४' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°५०' और ८६°११' पूर्वीय देशान्तर के बीच है, जिसका क्षेत्रफल ४४६ वर्ग-मील है। इसका सदर आफिस खरकै नदी के किनारे सराय-केला है। राज्य के उत्तर में मानभूम जिला, पच्छिम में खरसावाँ राज्य और कोलहान गवर्नमेंट स्टेट, दक्षिण में मयूरभंज स्टेट तथा पूरब में धालभूम सबडिविजन हैं। यह राज्य सात पीरों (इलाकों) में बँटा हुआ है—बंकसै, दुगनी, गमहरिया, इचा, कन्दरा कुचांग और सदन्त पीर। राज्य की सीमा के बाहर ५२ वर्गमील के रकबे का एक स्टेट है करायकेला, वह इस राज्य के ही अधीन है। उत्तर में एक ऊँची पर्वतश्रेणी है जो सरायकेला को मान-भूम से अलग करती है। इसकी कुछ चोटियाँ समुद्रतल से १२०० फीट से भी ऊँची हैं। पूरब में सुवर्णरेखा नदी १२ मील तक सीमा का काम करती है। जिले की अन्य मुख्य नदियों में खरकै और संजय हैं। दुगनी के पास सोना नदी संजय से मिलती हैं।

सरायकेला राज्य की स्थापना पोराहाट (पूर्वप्रसिद्ध सिंहभूम) के राजा पुरुषोत्तम सिंह के छोटे लड़के विक्रम सिंह ने की थी। विक्रम सिंह को पिता ने सिंहभूम पीर दिया था जिसके अन्दर १२ गाँव थे और जिसका रकबा ५० वर्गमील था। इन्होंने और इनके वंशजों ने राज्य को बढ़ाया। १७७० ई० में सरायकेला राज्य का अँगरेजों के साथ सम्पर्क हुआ। १८०३ ई० में गवर्नर जेनरल वेलेस्ली ने यहाँ के राजा कुंवर अभिराम सिंह से कहा कि उसके राज्य से कर नहीं लिया जायगा, वह मराठों की लड़ाई में अँगरेजों की मदद करे। लार्ड मिन्टो ने भी